

अध्यसम्बद्धिः प्रस्कित्वित् । १ अस्तर्भाविद्यः स्वयं सन्त्रम् । सदेव शिक्षः अभ्यत्मानः । श्रीधः अस्तर्यक्षेत्र सम्बद्धाः । अस्त्रे त्याकः याजारयज्ञसम्बद्धाः सर्वे पहित्यापुत्र सूर्वेद्यभिभाविद्धाः । स्वयः प्रसीरोधः वयः। सारायणमेहितः । यसम्बद्धाः । सामान् प्राप्ति क्षाः (सप्तार्थः प्राप्ताः व्याप्ताः स्वयः स्वयः

कि विद्वाल नाथ शेकूत क ईक

W. Hiest

~ 一本海 (部)のマー

विकाल कल्ल

李明 建精

3363 4 8

ক্লিক্তি।
আদি নাজননার যতে

শ্রীকানিদাদ চন্নবর্তী ঘাণা
ঘটিত ও প্রকাশিত।
ধন্য প্রবৃতিবর রোড।

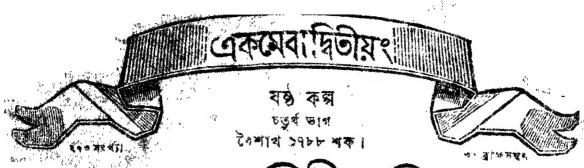
ক্ষাৰ ১৯৪২। কৰিবতাৰ ৪২৮৬। ১ টেজ শ্ৰিকার। প্ৰায় ১৯৪২। কৰিবতাৰ ৪২৮৬।

তত্ত্বাধিনী পত্রিকার একাদশ কম্পের তৃতীয় ভাগের স্ফীপত্র ৴৹

The Conditional Addition of the Condition of the Condition of the Condition of Cond		the second control of the second	parter a data machinida teleproperty. An
दिनाथ ७०० मः था।		আবিন ৫০৬ সংখ্যা।	
शान "	, >		. 5.0
न्दर्दं वाक्रममेव	3	The second secon	5+4
क्रीडिटर्रात जैलहेनन	•	বাস্ত গুণ তক	5.5
ত্রান্ধর্ম নীতি	9	नोक्सतर्थ-मीडि	550
প্রাচীন ভারতে শিক্ষা		याशाब-मध्या	, >>°
	72		252
দাংখ্য স্তের অনুধান	58	का । । अर्थ देश महस्रा	
MATTER	*s 9	वाजारभव उत्रस्थ	340
প্র ার্কনা	プ .	3 1100 11 1 2 2 4 1 1 2 1 1 1 2 1 1 1 1 1 1 1	304
ন্ববর্দ্ধের অক্ষমকীত	26	The state of the s	37,5
প্রাপ্তি শীকার	3.3		000
नगरनाज्ञ.	33	বন্ধ- ওণ্ডত্ব বিশ্বেপ্পদ ব্যক্ষণ	202
देखार्छ ४०२ मध्यत ।		विकास १ मर	394
লববর্ষের <u>ত্রাক্ষ</u> ম্মাল	52	। अक्तितारी भ नितासित प्रतित छक्ति	7:01
कार्पार्वात के बारा गांव	-	ি দেবগুত্থে দৈন্দ্ৰ লিপ	50% 584
	2.2	পতাহায়ন ৫০৮ সংখ্যা।	2 ನ ಇ
भन्म क्रिय गटश यक शिक्ष	+3	মাচাশোর উপদেশ	
পাটীন জারতে শিক্ষা	্ ভ	भारतिविक्स् अनः व्यासाविक वय	\$8.9
শাম্বাজার আজস্মাজ	90	वित्यत्भिनी मुख्	386
াজের গোক কে ?	36,	त्राभा-को वस	५७४ ५७८
नमारकारका .	ক্ত	ব্যাথান মঞ্রী	7.90
' আঘাত ৫০৩ সংখ্যা।		প্রাণ্ডি স্বীকার	568
"অতিপি	35	পৌর ৫০৯ সংখন।	•
আচাযোর উপদেশ	83	আভাগোর উপদেশ	
সোণার সেহিগি।	88	কাষ্য কাৰ। তত্ত্ব	4.0°C
भुजीष्ट्रे नांदीय व्यथान इत्रव	おけ	धर्म-अन्त्राक अन्तर्भाष्ट्रमन	>43
अवेष्णश्यं-नै। छि	40	नामान सङ्गी	>b* >b*
লাংখ্য স্বেৰৰ অভ্ৰাদ্	3/0	উঘ্ভ	:5%
ব্যাপ্যান-মঞ্জনী ইভিয়ান মুশ্রার ই	લે છ	गांच ৫১० मरशा।	
	¢ %	खान मात्रदत	
ভাবিশ ৫০৪ সংখ্যা।		শাচাটোর উপদেশ	585 585
াৰ্ছাং পুৰুষ	હ	उ क् ए	دهد دهد
আচাহধ্যর উপদেশ	43	ত্তাষা-বশ্ব-মাতি	200
থাটীর পার্য্যস্থাতে পাপ ও প্রাথন্ডিত	৬৪	वर्णशाम मध्यो	≥ 0.4
হৈজ্ঞানিক ধর্ম অবং আধ্যাত্মিক ধর্ম	400	(मवशृंद्ध देमनिमन निभि	. 204
উপাধ্যান সাংগ্য স্থেক্স অস্থ্ৰাদ	98	' किन ६३३ मध्या।	
नारका रूप्यम अञ्चलात सामग्राम-मक्षती	99	মাসিক ব্রাশ্বসমাজ	₹+≥
ব্যাস্থ্য ব্যাস্থ্য	95	রা ক্ষদনি	422
महोत्राचित अवन	930	সাংবৎসব্রিক ত্রন্ধোৎসব	326
প্রাপ্তি দ্বীকার	93	टिन्दा ७५२ मध्यत ।	1. w ⁴
ज्ञात ८०० मध्यत।	,	ज गिर्द	२२৯
		আচার্যোর উপদেশ	222
wished a grant		নাংক-হতের বদ ্যা	२७२
गर्यात्माञ्चा गर्नाष्ट्र अनिदासमा जेगामना		নবাবন্দের উৎপত্তি স্থিতি এবং গতি	રજા
The state of the second	1	স লী ত	₹8%
	205	अ ग्रेश	286

do অকারাদি বর্ণক্রমে একাদশ কম্পের তৃতীর ভাসোর <mark>স্টা</mark>পত্র

Commence of the state of the st		eire erare	antigation to the same	The second secon	-	Note to
	4	मर्भग	পৃষ্ঠা	***	সংখ্যা	10101
অভিখ্নি .	*.	600	63	প্রাপ্ত দীকার	0.45	4 205
আচার্য্যের উপদেশ		a • >	•	বলে পঞ্চ প্রাক্তণ	£ • 9	300
আচাযোর উপদেশ		802	55 ",	বস্ত-গুণ-তত্	£ • •	202
षां हार्या विभाग		600	82	বস্থ- তৰ	409	203
আচার্যোর উপদেশ		to8	45	বিজ্ঞান ও ধর্ম	2.9	202
श्योद्यात ने भरतन		202	b3 .	বিছাৎ পুরুষ	8 • 3	15.5
অভিতর্য্যর উপদেশ		C 0 3	200	বৈজ্ঞানিক ধর্ম এবং আগাংগ্রিধ	भक् ८०८	60
े व्याठाटगाँव छेलान		609	200	वाःशान-मक्रयी	@n :	sp.
ष्याद्वादयात्र छे अटन्स		C 0 5	285	काशान-मध्ये	Ann	96
चाहित्यात डेशस्य		200	200	नाचान-गङ्गी	4.5	** ****
गात छेनाम		\$:, "	26 %	্ব্যাখ্যান সঙ্গণ	(i' / "yy	5 50
जा का विश्वास		@ > 4.	120	वाशान मकते	400	8 42
हेिकान भागकात	1.5	C o D	# %	याचित्रान-मञ्जी	250	\$ a 4 <u>b</u>
উন্ত		600	2512	ব্ৰাহ্ম-ভানেন	4.5	24%
উদ্ভ	d) /	224	202	चाम हिं∉	¢ • 8	5,55
উপাধ্যান '		4.08	14	া, মধ্য নাডি	e . 5	4
ক্ডের শোক কে ৪	,	11 11 12	9%	<u>व्यक्तित्तरम्</u> भौतिक	C+3	40
काही कांब- एक		(io)	505	लाकामण-मीतिल	6.03	558
হৈ(রএরকিনী সভা	1	, a cb	:07	उ जिन्त्य ना ह	220	200
A Sold		033	२८४	লাখনমাজের মাতৃভাব	4 e ?	シャト
ि खन्†िस ∖		¢ > >	222	বংশ্বন্	6\$5	255
ब्ट नी रमन		609	3000	चौका को भी भी श शक	Cos Ext	202
रमयगुरह मिनन्तिन लि		404	380	ेयम यदन्यमदश्चमआक्रः	G o 2.	₹8
দেবগুহে গ্ৰৈনন্দিন লি	Ħ	600	201	मनः तालाग ভलन	4 - 8	939
ৰত্মপদ 🏄		4.03	23	भागिक-अ: क्रमाक	422	అంప
सर्थ-छातात्र ७ श्रामीर	শ্ব	600	200	শান্বাজার ব্রাক্ষমান	₹ ∘₹	৩৽
भाग	.w.	602	>	ন্দ্ৰীত -	.425	₹8\$
নবাবভের উৎপত্তি ছি	ত এবং পতি	*	1	সভাষ্ট নারীর প্রধান ভূষণ	CoD.	8 1-
নববৰে বা চ্যাৰ		602	3	मगांत्ना एना	Cob	\$2
নববহের বাজস্গাত	*	C+2 .	25	नमारनाह्ना	202	, ७৯ ° /
নৰ্ভৰের ত্ৰস্পীত		8 5 2	· b *	नमादनावभा "	e o c	bet.
প্ৰিটিবিভাষ্ এবং আধ		600	324	गर्भा हिना	6.6	525.
गटकिरिकम् एवर जान		603	284	শাকার ও নিয়াকার উপাসনা	606	38
क्षेत्रिन खात्राचे निका	"	6.5	. 1	ना काबयोगी अनिवा का वानीब क	& C#3	302
াচীন ভারতে শিকা		4.5		मार्क्ष स्वाद श्रहताम	2.5	T
वाशिम वाधाममादव ॰	নশ ও			नारशा राजक सञ्चान	C . W.	410
প্রায়ক্তিয়	· ·	4.8	1	नात्था एरजत्र पहुंचान	#18	A
वामि मागदब	40	65n.	0 45	मारबा एक्का वार्या	432	*432
क्रीर्वन		@05 (%)	9.3.	नारमञ्जूक उत्कादनव	333	R > b
क्षांच रोनीर भा	The second second	C • 5	>*	त्यानाच त्याराणा	£+0 .	4
and Mais		€ +8	95	Glening	\$ - C -	"大大"



তভারোধিনীপ্রতিকা

होंके विविक्रियम्भाक्षिक्षां नाष्ट्र किकाराणिक विवर्ध नार्थामाध्य । ज्यान मिळाए आहान गराध्य । वेट प्रक्रक विवय प्रशासिकीय भव्यवद्याणि मर्कि सिवक्क्ष्माकी व्यवस्थिय भव्यामाक्षिमम् आहार पूर्वस्था । स्वित्र विवयक्ष्माकी प्रव पाव विकरमें केवक काकक्षाविक । क्षिमस्था किकार्यका (विधिकां मान्यक क्ष्मण स्वाप्त स्वाप्त ।

ঋণেুদ সংহিতা।

প্রথমনওলনা ত্রনোদশামুরাকে সপ্তমং সূক্তং।

গোডমগ্নবিঃ পংক্তিজ্বন ইন্দোনেবত। ।

১১ ইনে চিত্তৰ ফ্নাবে বেপেতে ভিষ্যা মুহী। যদিকে বজিলো জনা বৃত্তং মুক্ত আবধীর চলি নহ কুরাজাং।

>> 'यही' महरणी 'हरम हिक्क' महार्था मृश्विद्यावित दह देख 'प्रमारव' समीपरकालांक 'जिस्सा' छीखा 'रवरलरफ' कर्म्मरफ रक 'स्क्रिक्' वजनन 'हेख' 'मझफाब् में मझकि के कर 'जक्रमा' बरनाम 'पद' यहां दुबर' 'काब्रु''। 'फहा बर्गारा मृश्विद्यां कृति छरय नाक्ष्मिमां छोटा क्यार्जा ।

া ক্রিকার ইন্তা যধন তুলি ছাধিপছা বাকটিও করিয়া বলপুর্বকে বুলাস্রকে বধ করিয়াছিলে, তথন এই বৃহৎ স্বর্গ মত্যও ভোষার কোপ-তরে কল্পিড ইইয়াছিল।

১২ কবৈপদান অন্যতেন্ত্র ং ব্-জে বিশীক্ষাত্র ক্ষতিষ্ঠান বর্জ

याध्यः मृश्यं कृषितायु । । युताको ।

১২ বৃত্তঃ 'ইন্দ্রং' ব্রক্সং!' অক্টিয়েন কম্পনেন িন্ধ বিরীভয়ণ জীভেৎ নাকরেছে। অবংশসন্তাই অক্টিয়েন মোনের গার্জনাগালন 'ন' নির্বাভনত। অবিচ ইতক্রম বিস্পত্ত আয়গর' অব্যান্তয় স্কক্রভ্নিত্ত অব্যেন্ট্রিন্ধ। রাজির্যুক্তর ব্রু-' অন্ত বৃত্তা 'অভি' ভাষ্য চ'নস্তনাভিন্দ্রয়েনীসভ্যান স্কলা পুর্বাদ্য ।

২২ বৃত্তাস্থ্র কম্পন বা গজ্জন স্থার। ইস্রেকে ।
ভীত করিতে পারে নাই; অভুতে ইক্স স্থাধি ।
পতা প্রকটন পূর্বক যে লৌক্মর সভ্তরধার
বজু নিক্ষেপ করিয়াছিলেন, ভাছা বৃত্তা ।
স্থারের অভিমুখ্যে উপস্থিত হইয়াছিল।

३० यमृ तः उर्व हा नितः राष्ट्रं ।

मुगर्याध्यः । जहिंगित् जिर्चार
मर्जा पिति एवं रम्रस् नरवार्षः

मर्थे युत्रोकाः ।

२७ ८६ 'हेला' 'यद' यमा 'गुजर' 'फत' इस्तांबर रंकत प्रमीत 'क्रमांतरर्गक' 'फ: 'बर्डलम' 'मनरवाबया' मेंबाक व्यावस्थित । उत्तांतर 'क्राहर' कांगजा रुवाबर कृत्रदर्श विवादनकः क्राहर विक्राजा 'एउ' 'उन 'मारा' बतार 'विति' 'बंबरम' बक्रर कांनुका-कर नाइन्यांगीर । मिकेंट मुक्तवर्ष ।

১৬ কে ইন্দ্র: থখন তুমি স্বীর অভুত্ব একটন পূর্বাক বৃত্তাস্থ্যতে ও তোমার প্রতি প্রক্রিপ্ত ভারার অশনিকে বজু ছারা প্রহার করিয়াছিলে, তথন নিয়াজনার্থ সমাগত লেই বৃত্রকে কননেজ্ঞায় ভোমার বল আকাশে ব্যাপ্ত হইয়াজিল।

p . 35 5

১৪ অভিষ্টনে তে অজিবে। যৎ-স্থা জগন্ধ রেজতে। মৃষ্টা চিত্ত-ব ন্নাৰ্ট প্রাজানে।

ান হৈ কোজি তান্তৰ হৈ সংগঙা ভৰ পদ্ম জিন্দীৰে নিংছ নামে মাৰি চিটো জান চা তেলছে জিলান চিটা দৰে জিছি ভদম্মত তাৰ্দ্ধি কেলান ত্ৰিয়াৰ কোলাম ভিডা ভট্টিয়া হোকিয়া চা তমা না ত্ৰিয়াৰ কোলাম ভিডা ভট্টিয়া হোকিয়া চা তমা নাম্পাদত জিন্দু নামান্ত্ৰ

চে তে এজনে বিদ্যা তোমার নিংহনাদে পানর জন্ম কাম্পত হর। বজুনিখাতা বিশ্বকর্মাণ ভোমার কোপ-ভয়ে পুনন্ধুন কম্পিড হন। ভুনি এই বংগে স্থার স্থাপ পাচ্য বিশার করিতেছা।

かじる

ः ति सहि स् यार्ग्योमगीत्तुः का-वीर्वा शहः। जिस्सा मुमू ज कर्जुः प्रता अकार्शा मर्प्यू तक्षंत्र

বি ভাগি হ'ছেই সাই ল বাপিয় বর্ত্তনানং 'ইক্সই' নেজি' 'নু' 'অনীনাম বহল নভাবগজ্ঞানঃ । বহলেবলপাই । পানং' বিলোধন সকলো কৰিছিল কৰিছেই পাকোনিক পাকত নিজ কৰিছিল পাকিছে পাকে পাকে পাকে বিলোধনিক কৰিছে কৰিছেই নিজা কৰিছেই কৰিছিল কৰিছেই কৰি

২৫ মর্পত্রগামী ইন্দ্রকে আমরা অবগত নছি।
আতি দূরে বর্তনান ইন্দ্রের নামগ্যকোন মন্ত্রযাই জানিতে পারে না; যে হেতু দেবভারা
ইন্দ্রেরত ধন,বীর্যা ও বল স্থাপন করিয়াছেন।
ইন্দ্রেরীয় আবিপভা বিস্তার করিভেছেন।

১७ गागर्थर्व। मस्रीकाला मधास्

বিশ্ নত্নত। তিশ্বন বন্ধানি প্র বণেতা উক্প। সমগাতাচ্নত্ন বরাজাং 151৫1৩5।

५५ (क.स.स.) अवलम क्रिक्स विश्व (ल्ड्रा) संसी हाए सामा-मां (१९५१ महें के प्रशिक्ष के स्वर्ध के श्री के स्वर्ध के स्वर्य के स्वर्ध के स्वर्ध के स्वर्ध के स्वर्ध के स

১৮ ইক্র পুকা পুকা খাঘিদিনের যজ্ঞের নাছে।
ভাগকা, সকলের পিতা সন্তু, ও দধাঙ্নানক
খাঘিদিপের বজ্ঞীয় অন্ন ও স্তোত্ত সকল গ্রহণ করিয়াছিলেন। এই ইন্দ্রুত্ত বধাদি খারা স্বকীয় আধিপত্তা প্রকটিত করি। তেত্তেন। ১।৫০০১।

शक्षद्याशासः समाखः।

মেদিনীপুরেগোপগিরিতে বসস্ত কালে ত্রন্ধোপাসনা।

বসস্থ ঝতু উপত্তিত, প্রতিঃ-ছুর্যা সমুদিত, গোপগিরি প্রফুল্লিত। আনরা এই
শুভ ক্ষণে এক কালে নুতন ঝতু, নুতন দিবস,
শরীর ওমনের নূতন বার্যা, লাভ করিয়াছি।
সকলই অভিনব; আমারদের উক্তি পূজা
অভিনব রূপ ধারণ পূর্বক সেই মঙ্গলময়ের
চরণে কি অপিত হইবে না? বন উপবন,
গিরি কানন, স্রোভঃস্বতী, তাঁহার মহিনা কীভূম করিতেছে; প্রিক্গণ বুক্ত-শাখার আরু
হইয়া তাঁহার গুণ গান করিতেছে; মলর
স্মারণ মন্দ প্রাহিত হইয়া তাঁহার
যশ প্রচার করিতেছে; আরু বস্তু গল্প

रिख लहेशा छाहात भूकात सना स्थानत হইরাছে; আমরাই কি কেবল তাঁহার উপা-मना इट्रेंट वित्रक शांकिय ? छिनिहें अहे নৰ ঋতু, নৰ পত্ৰ, নৰ নৰ কলিকা প্ৰেরণ कतिरहरून। चिनि वाधिरक आंदबारना. विश्रमृतक मण्यात, श्रांबश्रदक खट्त श्रातिगड करतनः, जिनिहे रामदात अकामा करतन। यिनि भीजतक वमरखं, वााधि व्यादशद्या, विश्वन् म-ম্পাদে, পরাজয় জ্ঞারে, পরিণত করেন; ভিনি কি মুতাকে অমৃতেতে পরিণত করিতে পারেন না? गেই পরেকৌকিক জাবন, वगर खत नाम जामात पिटात सबस्य स्ति छ হইবে; বাছা সূর্যা আমারলিগের ধন্দ্র এ ফাৰে যে ৰূপ দীন্তি পাইতেছে, তাহা অলেফা উজ্নতের কলে এখন তেওঁ প্র लाटक प्रामातान्त्र समात्य मीखि लाहे-বেক। যে মক্সলময় পিতা আনারদিগকে ইছ কালে ধর্মাচবণের স্থানে পর আবার शत लिएक च का भागम प्रधान कविद्या. ভাঁহার উপাননাতে সক্ষণ নিযুক্ত থাক: डीशटक श्रीं कत, डीशत श्रित कार्या माधन करा; जाहा क्ट्रेटल उनटखर क्छूम ष्या प्राची प्राचित्र क्रिया मध्या इहेटत. वगटखत भोन्नया घटलका छ०क्रके उत त्मी-ন্দর্যা ভোমারণের মুগল্লীতে প্রকাশিত रहेटत, मनश्रमभीत्र घटलकः। अकुलक्त्र শাম-প্রশাদের হিলোল তোমারদের অন্তরে निष्ण मध्यत्व कतित्व।

उँ একমেবাদিতীয়ং।

মাসিক ব্রাহ্মসানাজ। ৬ চৈত্র ১৭৮৭ শক। প্রধান আচার্ব্যের উপদেশ।

ধিনি চন্দ্র-ভারকে থাকিয়া—চন্দ্র-ভার-ক্যে শহরে থাকিয়া চন্দ্র-ভারককে নিয়মিভ ক্যিকেছেন, ভিনিই আমারদের আত্মাতে

থাকিয়া— সাত্মার অন্তরে থাকিয়া জান ধর্মে ভাষ্কে পরিধুই ও উন্নত করিতেছেন। তিনি আকাশে, তিনি আন্নাতে। ডিনি वाहित, डिल् अड्टत । डिल् गर्य-माकी, তিনি কর্মাধ্যক : তিনিই আমারনের আ-রাধ্য দেবভাঃ ভাঁহাকে দর্শন করিবার अना मृद्र याधेटक व्य ना, स्मा विद्नादम **अनुमन्नाम कडिए% हा। तो-डाहान व्या** षावाग-स्थान এই পবিত্র আলা: यिनि অপেনার আলাকে পবিত্র করেন, তিনি ভারতে অভনে লেখিতে পান: আকা-শে ৰূপ নাই: আকাশতে চল্ফে দেখা যায় না, আকাশকে হাজ গারতে পারি না---তগাপি আমার মধ্যে এই প্রিস্ত জা-দান আক্ষাত্রক আর্থন স্কুক্ষাতি অনুভব করিছেছিল। এই ধুনা আক্রা**নকে আন**র। যে কপ অনুভৱ করিতেছি, **পূ**র্ণ ঈশ্ব-রকেও দে ৰূপ অনুভব করি না—আমা-রলের এ কি নোহা মাতাশ পুনা পদার্থ— ঈথার অন্কোল, তিনি আকাশ নতেন ভিনি श्वा नदद्व , जिल्ल दिनि शुर्व, दिनि गछ।। যাকশি তঁকোর সভাতে—সেই সভাের मडाटक शूप बाह्यांटह । जगाणि हुंग আকাশকৈ আমরা যে ৰূপ অনুভা করি-তেছি, পূৰ্ব ইম্মতে নে **ৰূপ অনুভ**ৱ করি না। বিনি এই আকাশে রহিহাছেন; তিনি অবেরে যেখানে আকাশ নাই, সেখা-নেও বহিলাছেন। আকাশ নাই কোথায়? আকাশ নাই আলোতে। আপনার শরীরেয় मत्या चर्याति व्यावादक म्पन, क्षित्व स्य মেখানে আকাশ নাই। আত্মাতে আকাশ নাই--- আলা আকাশের অতীত পদার্থ। আরা স্লনহে, অণুনহে, হুস্বনহে, দীর্ঘ नद्ध , এই আয়ার মধ্যেই অনাকশি স্থ-কাশ প্রমায়া অবস্থিতি করিতেছেন। তিনি বাহিরে এই সমস্ত আকাশে ব্যাপ্ত

় লক্ষেই আমরা কার্য্য-কারণ-তত্ত্বে প্রয়োগ করিয়া পাকি; কিন্তু আমরা যতদুর প্রয়োগ ্করিতে চাই—ফলে ততদূর পারিয়া উঠি না—অনেকটা আমাদের হাতে থাকি থাকিয়া যথন আন্ত্ৰা দেখি একখণ্ড দশ্ধ কাৰ্চ পড়িয়া আছে তখনই আননা মনে করি যে, অগ্নির দাহিকা শক্তির প্রভাবেই কাষ্ঠের এইরূপ ভাব-পরিবর্ত্তন ঘটিয়াছে,-यागता परिन-कार्यात অগ্নিতে আরোপ করি; কিন্তু তাহা করিয়াই আমা-**(एत छ**। एतत आका कहा शिक्षेता। खिशु (ए দাহন করে—তাহা জেন করে? কাহার শক্তি তাহাকে দাংন-কাশ্যে প্রয়ন্ত করে ? আবাব অগ্নিকেষে দাহন-কার্য্যে প্রাব্ধত করে,—দে-ই বা কে ? এবং তাহার সেই প্রবর্ত্তনা-কার্য্যের ই বা কারণ কি ? এইরূপ ক্রমাগতই কারণের পৃষ্ঠে কারণ লাগিয়া আছে, কোখাওুভাহার অন্ত খুঁ জিয়া পাওয়া যায় না। অনেক দাশ-নিক পণ্ডিত আবোধী প্রণালী-জনুদারে , কারণের মূল-আবিফারে পরাভব মানিয়া শেষে এইরূপ এক অ্যথা সিদ্ধান্ত স্থির করিয়া বদেন যে, কার্যা-কারণ-তত্ত্ নিভান্তই বৃদ্ধির অতাত—উহার আলোচনায় খান্ত থাকাই শ্রেয়। বদি আরোহী এণালা ভিন্ন আর কোন প্রকার যুক্তি-প্রনালী না থাকিত তবে ইহাঁদের কথা অকাটা হইত; কিন্তু নিম্নে খামরা দেখাইব যে, একরূপ যুক্তি প্রণালীতে বে প্রশ্নের কিছুই নামাংসা হয় না, জার একরপ যুক্তি-প্রণালীতে ভাহার মীমাংসা षाजीव महत्व निश्नन हहेट ।

প্রমাণের বিষয় ধেমন নানা প্রকার,
প্রমাণের পদ্ধতিও দেইরপ নানা প্রকার;
কোন পদ্ধতি কোন বিষয়ে খাটে—কোন
বিষয়ে খাটে না। অতি-একটি সহজ বিষ্
রকেও যদি অনুপযুক্ত পদ্ধতি দ্বারা অনুয়ত্ত
করিতে যাও—দেখিবে ষে, তাহা কিছুতেই

ভোমাকে ধরা দিবে না। নিন্দে ইছার একটি উদাহরণ প্রদর্শন করিতেছি।

क श

মনে কর ক তুই হাত পিছাইয়া আছে,
থ দুই হাত এগিয়া আছে; আর মনে কর
যে, ক যদিও দুই হাত পিছাইয়া আছে,
তথাপি তাহা থ অপেক্ষা দিওণ বেগে চলে;
ক এক নিমেবে দুই হাত অ তবাহন করে, থ
এক নিমেবে এক হাত মাত্র অতিবাহন
করে। মনে কর, ক এবং থ উভয়েই চালতে
আরম্ভ করিল; থ এক এণ খেগে চলিতেছে—ক দিওণ পেগে চলিতেছে; এখলে
স্পান্তই দেখা মাইতেছে যে কিয়ংকাল পরেই
ক, খাকে ধারতে পারিবে,—এবং ভাহার
পারেই থাকে গুলাতে কোলিয়া এগিয়া যাইবে, কিয় আাম আমার স্ক্তি—এগালী অমুসারে প্রমাণ করিব বে, ক কথনই থাকে
বারতে পারিবে না। সে প্রণালী এইরূপ;—

क थ शध

ননে কর, ক-স্থান হইতে ক এবং খ-স্থান হইতে খ একই সময়ে চলিতে আরম্ভ করিল, এবং উভারের মধ্যে তুই হাত মাত্র ব্যব-ধান; ক সেই তুই হাত কাক্যান অতি-ক্রম করিয়া যথন ক-স্থান হইতে খ-স্থানে উপনাত হইল, খ তখন চুপ করিয়া বদিয়া नार, क रामन पूरे राज श्राज्य कार्या খ-স্থানে উপনীত হহল, খ তেমান এক হাড় পুতিক্রম করিয়া গ-ছানে উপনীত হইন, কেননা থ রের গতি-বেগ ক-অপ্রাক্ষা অক্রেক क्य। এই क्रथ क यथन थ'द्राह आवन शास्त्र অর্থাৎ খ-স্থানে—আদিবে, থ তথন তা-रात रगरे धारम जान करेटल कर राज हुएक विकाय-सारम (वर्षाद शनकाटन) वाहरत ; छा-হার পর, ক বখন লেই এক হাত অভিক্র कड़िया भृदेशत विजीध हारन (अ-शारन) वाहरक ৰ তৰন আধ হাত অতিক্ৰম ব্রিয়া ভূতীয়

ছানে (অর্থাং গ-ছান হইতে ঘ-ছানে) ধাইবে; ভাহার পর ক ষথন দেই আধ হাত অতি-জেম করিয়া **খ'য়ের** ভূতীয় স্থানে (ঘ স্থানে) ষাইবে, **ধ তথন** গিকি হাত অতিক্রম করিয়া চতুর্থ স্থানে যাইবে; ক যথন দেই সিকি ছাত অতিক্রম করিয়া, খ'রের চতুর্থ স্থানে সাইবে, ধ তথ্ন অৰ্দ্ধ দিকি হাত অভিদ্ৰেগ কৰিয়। পঞ্চম স্থানে যাইবে; ক ষণন সেই অর্দ্ধ নিকি হাত অতিক্ম করিয়া খ'লের প্রক্ম স্থানে ষাইবে, থ তথন দিকির দিকি লাচ অতি-क्तम कतिता यष्ठे काटन याईट्टाः अधिक भ उनशा गहित्वर हित्र, क ध्वदः श्रीतत्र भत्ता धायस তুই হাত ব্যব্যান ছিল; ক খথন খ'য়ের পরিতক্তে খ-স্থানে আসিল, তখন উভয়ের মধ্যে এক হস্ত বাববান বহিন; ক স্থন খ'য়ের পরিভাক্ত গ-স্থানে খাামন, তথন উভয়ের মধ্যে অর্দ্ধা হস্ত ব্যবধান বহিল; ক ষধন থ'য়ের পরিত্যক্ত ঘ-হানে আমিল তথন উভয়ের মধ্যে নিকি হস্ত পাবধান রহিল; क यथन च'रैशव प्रजूष चारन जामिल छिल्टाव মধ্যে তথন অৰ্দ্ধ দিকি হাত বাৰধান অহিল; क यथन य'रवात शक्त शारित आतित, छड-য়ের মধ্যে তথন দিকিও দিকি হাত ব্যবধান तिहल ; क्र<mark>मांगण्डे क</mark>्रेत्रल शक्त अपूनात्व উভয়ের মধ্যে অর্জেক অর্জেক করিয়া ব্যবধান किंगिएक थाकिल - किंग्स कार कार वार-ধান তিরোহিত হইল না। এক বাবধান আর-এক ব্যবধানের সিকির সিকির অর্থ্যক हरेटन जारा वात्रधान-निकित निकि इहेर्ल ७ जाहां नात्रधान, यजहे अझ ব্ৰেখান ভাবো না কেন ভাহাও ব্ৰব্ধান ভা-হার আর ভুল নাই ; – অতএব আনার যুক্তি धानानी अनुमारत श्रीजनम हहेरजस् रह, कान कारलहे क अवर च छिछतात मत्या वाबबान अक्वादतह विज्ञ इद्वेदव मा, ध वक्षेत्र वक्षे वित्रा थाक्टिनरे थाकितः

অতএব প্রমাণ হইল যে, ক—খ'লে কিচ্তেই ধরিতে পারিবে না।

উপরে শুদ্ধ কেবল স্থানিক যুক্তি প্রণালী **অবলম্বন কর। হইয়াছে,—ক হথন** গাঁলেব পরিতাক্ত স্থানে পৌছিবে খ তথন নে স্থান হইতে একটু না একটু দূরে মরিয়া গাইকে —এইরূপ স্থান-বটিত প্রাথাণ প্রায়োগ করা হইগাছে; কিন্ধ সেরূপ যুক্তি-প্রণালী এখান-কার অনুপ্রোজী ই**হা** বলা বাহুন্য। ফালিক যুক্তি-গণানতে সহজেই প্রতিগল হয় যে,. দ বখন এক নিমেদে তুই হাত আভবাইন কৰে, ভাষৰ পুই নিমেষে ক-স্থান চহতে ৪হাত দরে অগ্রানর হইবে, খার খদেই চুই নিমেয়ে ধ-ছান হটজে দ্ই হাত (সূত্রাং ক-ছান হইতে ৪ হাত) দুরে অগ্রাসর হইবে; তুই निरंगरत डेब्रंबर्ड क द्वान इंस्टेंड ३ हाज দ্রে পৌছিবে; অভএব প্রমাব হইল যে, গুষ্ট निरम्दा क थे'दक श्रांतदा।

এইরূপ দেখ। বাইতেছে যে ওদ্ধ , কেবল युक्ति-श्रगानी बादा याश कान মতেই প্রমাণ-সাধ্য নহে, কালিক যুক্তি-প্রণালী ধারা তাহ। অতি সহজে সপ্রমাণ হয়। এখন,মূল কারণের অভিত্ব-প্রমাণ সদ্পত্ত वाशास्त्र वक्कवा अरे त्यः, यनिक कावत्त्वत्र का-রণ – তদ্য কারণ – এরূপ করিয়া ঊপযুগিপরি উৰ্দ্ধে উড্ডয়ন করিতে থাকিলে কোন কালেই মূল কারণে পৌছান যায় না যদিও কালিক যুক্তি-প্রণালী অনুসারে মূল-কারণের অক্তিত্ব প্রমাণ কারতে পারা যায়না – তথাপি আমর। वाधाष्ट्रिक द्वानी वयुगात मून-कान्ररवन অ**স্তিৰ্ছ স্পৰ্টরূপে উ**পলব্ধি করিতে পারি"। উপরে আমল দেখাইয়াছি যে, যাহা স্থানিক প্রমাণ-দারা কোন মতেই সিদ্ধ হইতে পারে না, তাহা কালিক প্রমাণ দারা সিদ্ধ হইলেও .. হইতে পারে; এক্ণে আমরা দেখাইতে চাই যে, এমনও বিষয় আছে যাহা কালিক প্রমাণ

ষারা কোন নতেই সিদ্ধ হয় না, অথচ আধ্যাত্মিক প্রমাণ দারা অনায়াদেই দিদ্ধ হয়।

দৈশ-ঘটিত এমন কতক-গুলি তত্ত্ব আছে যাহা কাল-সম্বন্ধেও খাটে; ছাবার,দেশ-ঘটিত * 'এম্নও কতক-গুলি ভত্ত্ব আছে যাহা কাল-দ-সন্দে আদৰেই থাটে হা। মধ্য ভাগ অতিক্রম না করিয়া অস্ত-ভাগে পৌছানো যায় না—এ ভত্তটি দেশ কাল উভয়েতেই খাটে:, যেমন বলা ঘাইতৈ পারে যে, তুই কোশ অভিবাহন ना कतिया ठाति तकारम श्लीष्टारना भाग ना, তেমনি বলা ঘাইতে পারে যে, ভূই ঘণ্টা অতিক্রম না করিয়। চারি ঘণ্টায় পৌছানো কিন্তু যদি বলা যায় যে, অএ-ধায় না। পশ্চাৎ পরিবর্ত্তি হইলেই পার্থ গরি-বাৰ্ত্তি ছইবে, ভবে এ ভাত্ত্ৰটি কেবল দেশের मखरबारे शारा कारलात मणरफ शारा मा; দেশের সহক্ষেই বলিতে পারো যে, প্রধা-मुवा इटिशा माँ ज़िटित नहीरत व किन भाव ্**দক্ষিণ** দিকে রহে, পশ্চিম-মূলা ইইয়া লাড়া-**ইলে সেই** দক্ষিণ পার্য^{িন্}তর্হিন্ত কিরিয়া ষ্ঠা, অগ্রপশ্চাৎ পরি।ভিত ২ইলেই সেই সলে পার্থ ও পরিবার্ভি হয়। এ তত্ত্বটি কা-(लह्ने र्काप्त कहें हाना थाएँ ना, १७८६ हूं का-(मत क्षेत्र (करन अध अम्हार जारह-भाष নাই। তিম্নি আধার আত্মার একত্ব—যাহা একটি মাত্র বিন্দুর সহিত উপনেগ্র – তাহার পার্য ও নাই - ক্লাগ্রপশ্চাংও নাই, -- এই জন্য "কালের উজান বাহিয়া মূল-কারণে উঠিতে इहेर्न" এ প্রণালীটি আধ্যাত্মিক পরম কারণ मश्रदकः थारं हे ना। বলিলাম যে, আত্মার একত্ব একটি মাত্র বিন্দুর সহিত,উপমেয়, কিন্তু পর্য-কারণ-সম্বাদ্ধ তাহাও সম্পূর্ণ ক্রে ঠিক্ নহে,—আকাশ-স্থিত একটি বি-ন্তুর পারে আর একটি বিন্দু কল্পিত হইতে পারে কাল হিত একটি মৃহুর্টের পুরো-

ভাগে আর একটি মুহুর্ভ কল্লিত হইতে পারে, কিন্তু পরম-কারণের একত্ব আকাশের সক্ত বিন্দুকে এক **ম্হাকাশে**র गर्धा कर्नाम् কবিয়া রাখিয়া**ছে ও কালের দমস্ত মৃহুর্তকে** এক মহাকালের মধ্যে কবলিত করিয়া রাখি-হাছে—তাহার-পাৰ্থে বিভীৱের খান নাই: এই জনা আকানের সমস্ত বিন্দু নিলিয়া যদি একটি মাত্র বিন্দতে সম্ভুক্ত হ**ইয়া** भाग, एटन (महेक्काल-अकि विस्मृष्टे भाइमार्थिक অবৈত ভাবের লহিত উপ**নেয়। আকাশের** পার্শ-লের তবং অগ্রপশ্লাৎ-ভেদ উভয়ই আহে ; কালের পার্য-ভেদ নাই কিন্তু অগ্র প-চাং ভেদ আছে ; শর্কময় এবং সর্বাতীত প্রম একজের পার্ম ভেদ্ও নাই, **জ্ঞা পশ্**চাৎ ছেলও নাই। যেম্ন পাশ-খ**টিত কোন ত**ন্ত কাল-রাজ্যে স্থান পাইতে পারে না,মেইরূপ বতা পশ্চাং ঘটিত কোন তত্ত্ব পরম **অবৈত** রাজে স্থান পাইতে গারে না।

গালার অদৈত-প্রদেশ আমাদের দেশীয় দর্শন-শাল্যে নিরুপাধিক শকে অভিহিত হইরাছে। ক. ত প্রভৃতি **ইউ**রোপীয় দার্শ-্লিকেরা মেই প্রাদেশকে Transenscondent এই শক্তে নির্বেশ করিয়াছেন। মূল-তত্ত্ব-সকলের দৈশিক এবং কালিক প্রয়োগ (অর্থাণ **যেরূপ**ী এটোগ দেশ-কালের সম্বদেই খাটে সেইরপ প্রয়োগ) আস্থার নিরুপাধিক প্রদেশে সং-লগ্ন হয় না বলিয়। অনেকে এইরূপ দিদ্ধারে ङ्गनी उ स्हेशार्डन (य, डेङ निक्रमाधिक क्टनम मञ्चा-छाट्मत এएक गारतहे खिकात-বহিত্ত। কাল-রাজ্যে পার্ব-ঘটিত কোন ण्डार शिक्षां अख्य ना—हेक् (प्रशिक्षा আঁমরা অনায়াদে বলিতে পাছিতাম মে, কাল-রাজ্য আবাদের জ্ঞানের ক্রাধিকার-বহি-ভূত, কিন্তু তাহা কৈ। আমর। বলি না। তাহা যদি হইল তবে – অতা পশ্চাৎ মটিত दर्शन उच्च **बाजांत्र निज्ञ शाधिक आ**रम्हन **बाह्रे**

না—এইটি শুধু দেখিয়া কেমন করিয়া আমর। জানিব ষে, আত্মার নিরূপাধিক প্রদেশ
থাকেবারেই আমাদের জ্ঞানের অধিকারবহিন্তুতি।

काने वर्लिन रय, यान कार्या-कार्यन তত্ত্বকে উহার কালিক,প্রয়োগ হইতে বিযুক্ত করিবা ভাষা যায়, তবে কার্যা-কারণ তত্ত্বের किन्द्रे जात थाक ना। मन कत्र, छें छाश मः (मार्ग वत्रक गलिया कल घरेता माठे-- তেছে – কাইন অবস্থা পরিতাগ করিয়া ভবন অবসায় উপনাত ২ইতেছে; যে শ ক্তির প্রভাবে কমিন জল ভরস হইতেছে-ভাহা অপৰা পাৰ্মবক্তী কঠিন ধৰ্মা এবং পরবভা তবন অবস্থা এই দুই অবসার मिक्सिंग रहगान; किन्न यनि खे भूर्त-वर्खी शतन हो छ उधरक है नाम मिया एक মেই শক্তিটিকে খামর। ধরিতে যাই—তবে धामता गर्दन कति वर्षे (य. এইবার মৃষ্টি-मर्गा এक हो। विष्ट्र शिरेनाम,—विद्य शाल शालश **८मिय-मृ**ना ! • देखन जा: करा घथन काठ-পাত্রে অব্যাহত হয়, তথন উভয়ের সন্ধি-স্থল-বর্ত্তী রেখা-চক্রটি দিবা আমাদের দৃষ্টি-গৈচির হয়, কিছু যদি একদিকু হইতে তৈল এবং আর, একদিক্ ইইতে তল সরাইয়া লপুরা বার, তাহা হইলে সে রেখ। কোধার থাকে পি সোপাধিক কার্য্য-কারণ ৰ্থিতে পাৰি কিন্তু নিক্ষাবিক কারণকে किंत्राटभू जागरा जारन छ्रेशनिक कतिव १

কাতের এই গ্রেমটির মীনাংসা কালিক মুক্তি-প্রণালী অনুসারে অসম্ভব, ইহা আমরা মুক্ত কঠে স্বীকরি করি; এনন কি, কাল্ট আ-প্রনাই স্থীকার করিয়াছেন যে, নিরুপাধিক উত্তের পক্ষে কালিক বা সাংসারিক মুক্তি-প্রণালী বৈধ প্রণালী নাই। কাল্ট তম তম করিয়া দেখাইয়াছেন যে, সোপাধিক যুক্তি- যাইতে যাওয়া বিজ্ঞনা মাত্র—কেননা দে পথ একটি প্রকাণ্ড গোলোক গাঁদা।

্জামরা যাহা বলিতে চাই ভাহা সংক্ষেপে এই ষে, নিরুপাধিক কারণের ভাব—
দূরে কোথাও নহে—আমাদের আজার কাধীনভাতেই অন্তর্নিহিত আছে, যদি বল
"তাহার প্রমাণ কি" তবে তাহার উদ্ভন্ন এই
থে, সাধু বাজির অনুষ্ঠিত ধর্ম-কার্চাই ভাহার
গ্রাণ ; যে বাজি যত ইন্দিয় নিরপেক
গ্রমাণ করে, সে বাজি ততই আজার
অন্তর্নার নিরুপাধিক ভাব আপনার নিকট
এবং অন্যের নিকট সপ্রমাণ করে। যদি বল
যে, "কার্য-কার্বাম্য জগতে স্বাধীনতা কিরূপে সন্তরে—ইয়া আমাকে বুঝাইয়া দেও,"
তবে ভাহার উদ্ভর এই যে, ও-বিষ্যুটি বুঝা
ব্যান সহজ –বুঝানো তেমন সহজ নহে।

যাহা বিছু আকাশে বিস্তৃত ও কালে পরিবর্ত্তমান, তাহা যেমন টি আমরা বৃঝি, তেননি-টি অনাকে বুঝাইয়া দিতে পারি; যে নাক্ত পৰ্মত দেখে নাই, তাহাকে পৰ্মত আঁকিয়া দেখাইতে পারি। মেরু প্র-নেশ-শেখানে ছয় যাম ছয় যাম ক-রিয়া রাত্রিদনের উলট্পালট্ছয়, সেখান-কাৰ কোন অধিবাদী এখানকার হাত্রি নিনের পর্যায় রভান্ত জিজ্ঞান। করিলে তা-হাকে এবটি রেখা টানিয়া বুঝাইয়া দেওয়া ঘাইতে পারে যে, এই রেখাটিকে যদি ্তা-মাদের যাথাদিক দিন বলিয়া ধরা যায় তবে ইয়ার১৮০ ভাগের অর্দ্ধেকটা আমাদের দিন ও অর্দ্ধেকটা আমাদের রাত্রি। বিভিন্ন আ-কাশ-ব্যাপী বস্তুর দৈর্ঘা প্রস্থ ও বেধের আয়তন বিভিন্ন প্রকার, এজনা দেই তিনের সেই সেই আয়তন নির্দেশ করিলেই জি-জ্ঞাস্থ ব্যক্তি সেই সেই বস্তর ভাব স্থাসম ক্রিভে পারে; অমুক পুক্রিণী দীর্ঘে বিশ ছাত, প্রস্থে দশ হাত, গভীরে জ্রিশ হাত,

এই শোটি শুনিবা-মাত্র, পুছরিণীটির আ-কৃতি দিজাস্থ ব্যক্তির বোধায়ত হয়; বিভিন্ন **কাল-ব্যাপী** ঘটনার উৎপত্তি স্থিতি এবং পরিবর্ত্তন নির্দেশ কলিয়া লোককে ভাহার ভাব ব্ঝানো যাইতে পারে:—এভাতে গালের কলিকা বিক্ষিত হয়, সারা দিন তালা গেই রূপ থাকে, রাত্রিতে তাহা মসভিয়া বায়,— ইছা বলিবামার জিজ্ঞাসু ব্যক্তি ভাষাৰ ভাৰ র্ঝিতে পারে। কিন্তু আহাত সংগীনতার ना चार्ट्स कीर्या, ना चार्ट्स लाइ. ना चार्ट्स বেধ, না আছে ভাব-প্রিক্রন, কাজেই তাহা আপন-মনে ব্ৰিলেও জনাকে বুঝাইবার উপায় নহি: ৩েবে, কাগ্য-ছার। প্রকারান্তরে दशास्त्रा गारेटन भाटत.—व्यादीन कार्या हाता আছার সাধীনতা বুলানো যাইতে পারে, ⁴'কলেন প্রিচারকে"। এ স্থ**লে কেছ বলিতে** পারেন শে, 'ফনেন পরিচীদতে" যদি সত্য . হয়,তবে তো মনুনা আলাদ মস্তক পরাধীন, — যাহারা উদ্বের জালায় অস্থির ভাহাদের স্বাধানতা কোথায় ? ইহাৰ উত্তর এই যে, মনুষা মনেক অংশে পরাধীন ইহা আমি অম্বীকার করি না : তেমনি, সে যে কডক অংশে স্বাধীন ইয়া তুনিও অস্বাকার করিতে পার না; কেননা কৃমি নিজেই কার্য্য-কালে তোমার নিজের স্বাধীন বিবেচনা-শক্তি জনু-ভব করিয়া থাক। খামি বলিতেছি ভার-**उद**र्स रिमालम् चाट्ह, दूनि कनातूनात्रीट माँ ए[।] देश नित्छ "এই छ। ভারতবর্ষ, কই কোণাও তে৷ হিমালয় দেখিতেছি না"; আমি বলিতেছি "মপুষ্যে স্বাধীনতা আছে," তুমি মনুষ্যের ভৌতিক অংশ লক্ষা করিয়া ৰলিতেছ "কই এখানে তো স্বানিতার নাম-পদ্ধও দেখিতেছি না।" তোমাব জানা উ-চিত যে, ভারতবর্ষের উত্তর-প্রদেশেই ছিমা-লয়,—দক্ষিণ-প্রদেশে নহে; মনুযোর আধাা-স্বিক প্রদেশেই সাগীনত।—ভৌতিক প্রদেশে

নহে: ত্রিবং দেই স্থায়ীনতাকে কার্যো সপ্র-মাণ করাতেই মনুয়ের মনুষাত্ব।

মূল-কারণ আছেন এরিষয়ে কাহারো নংশয় থাকিতে পারে না; কেননা মূল-কারণ নাই অগচ শাখা কারণ আছে-ইহা শিরোনান্তি শিরঃগীড়ার নাার অসম্ভব। ज्य-बारवाशी <a>थानी बावा गिन बागवा মূল-কারুল পর্যান্ত উটিতে চেপ্তা করি—তা-হার পূর্ব্বেই আমাদের জানা উচিত যে. लाशार जामना कि इरल्डे कुलकार्या इहरण षाताशै अनाभी षणुभात পারিব না ৷ নহে কিন্তু আৰাজ্যিক প্ৰণালী অনুসাৱে আ-মরা মূল কাবণের অস্তিত্ব উপাদর্কি করি; সে প্রণালী এইরূপ;—স্বাধীন আড়া পর্মাস্থাতে চায়—যাহা দে চায় তাহা গে জ্**মশই পা**-ইতে থাকে—পরমান্তাকে যতই পার ততই আপনার ধ্রুব অবলম্বন পায়। এ কথাটির তাংপর্যা এই । ध्र,-- त्राधीन आँख्रात अब কোন কিছুতেই আশা-পূর্ডি **হইতে পারে না**, याधीन जाजात छएनमा महान् छएनमा ; ত্রকায় দিন ভাহাত্র নিকট এক মুহুর্ত্তও নয়, অনন্ত নাল নভোষওল তাহার কুত একটি পিঞ্রের আবরণও হইতে পারে না। পরি-পূর্ণ মহান্ প্রেগ—স্বাধীন আস্থার একমাত্র উপজাবিক।! পৃথিবীর ধূলিতে **লয়্ পাইবার** जना नहीत श्रेशाट्स, न्यापीन जात्रा जारात जना रह नारे।—वादीन जाजात बाह्रना-गङ्कि खबन जगांग-रमध्क्रभ छाहात सम्ब মহান্—তাহার গতি অনন্ত। সমীত সুগৎ ছাড়াইরা **শ্লরনান্তার** ক্রোড়ে গিয়া তবে দে তৃপ্তি লাভ করে, নিরালম পুরুষকে অব-লম্বন করিতে:পারিলে তরেই সে আপ্তকাম হয়।

यादा अञ्चल अविता बाग्यां इस्न नव् एरे जिन्नियान असे पूरे नः जिन आतित मान्य न्यारे काल सेविक कहा स्टेशांक ;



্রথম্ , পংক্তি ;—যতোগাঢ়োনিবর্তুন্তে অপ্রাপা মনদা সহ।

ৰিতীয় পংক্তি;—ঝানদং ব্ৰহ্মণো বি-দান্ন বিভেতি কৃতশ্চন।

প্রথম পংক্তির তাংপর্যা এই যে, আ-রোহী প্রধালী দারা আমরা পর বিলকে কি-ছতেই নাগাল পাইতে পারি না— মনেব মহিত বাকা উণ্চাকে না পাইয়া ভাঁচা হইতে নির্ত্ত হয়।

দিতীয় পংক্তির ভাৎপর্যা এই যে, আগানি

থিক প্রণালী অমুসাবে নুখন লামরা ভাঁহার

নিরুপানিক খানন্দকে উপলব্ধি করি, তথন

থার আনাদের ভর থাকে না। আত্মার অভা
শুর পিত মৃক্তির রাজ্য কার্যা কার্য-শুখালার

থাতি—ভাহাই নিরুপাধিক খানন্দের ছার;

—সেইখানেই আমরা খানন্দ স্থনপের অয়ভ

আষাদন করিয়া রুল্ভর বিবিত্ত গরিতা।

গাইতে পারি; কিন্তু বিষয়াগাঁতি হুইতে

নির্মুক্ত করা নিতাওই এয়োজন।

ধর্মপ্রচারক ও মহাত্মা রাম্মোহন

দিত ক এক সংখ্যক ধর্ম চারকে প্রদান
লাদ প্রীযুক্ত বাবু চক্রশেণন রস্থ প্রাক্ষণ নাজ
দেবকে অনেক কথা বলিয়াহেন। তাহার
প্রকৃতিবের অনা আমাদের বর্তমান প্রস্তাবের
লবতারণা নর। কিন্তু তিনি রাম্যোহন
নির্দ্ধে বৈদ্ধাতিন এবং তাহার যে
নাম্যুক্ত করিয়াছেন এবং তাহা দেখিলে
মাণাক্ত অনেকেরই প্রম্ হইবে যে রাম্নাহন ক্রিপ্রক্রমন অহৈত্বানী বৈদান্তিক
হলেন এবং হিন্দুশান্তের সক্রম প্রকার মতে
হির্মিকাশ্র্ম বিশাস ছিলা। এই প্রম্বা

আমাদের প্রথম কথা এই এখনকার আ লোকে রামনোহন রায়কে ব্ঝা খায় না। এখন বেরুপ্র জনসমাজ ৬০।৭০ বংগর পার্ন্ব কিছু এরূপ ছিল না। তথন শিকার ভারস্থা অতি শোচনীয়। প্রায় সাধারণেই আশ-ক্ষিত ছিল। ৰতকগুলি লোক বিষয়কার্মে উপসোগি চইবার জ্না সামানারূপ পার্নীক ভাগা শিক্ষা করিত। আর অরু সংখ্যা রো-ক্ষণ পণ্ডিত কেবল দিখি ব্যবস্থা দিবার জন্য ক ওকপ্রানি নবা খ্রাভ এবং রেছ কেছ বা নৰা নাায়শান্ত্ৰ পড়িবেন। কিন্তু জগাৰ শান্ত-দিস্কু মন্ত্ৰন করিলা উচ্চ শিক্ষা গ্ৰাপ্ত হইতেন ত্রা**সা**ণ পশুভিদিশের মধ্যে এরপে লোক ভথন বিবল ছিল। তংগানে রাম্মাইন রায়েব মহিত রাধারণের সেরপে বিচার হইয়াচিল সেই সমস্ত আলোচনা করিলে ইহার অনে-कछ। প্রমাণ পা ওয়া যায়। এইরূপ জনসমাজ রামধ্যোহন রায়ের যুদ্ধক্ষেত্র। উইহার লক্ষ ভিয়াকাও উদ্ভেদ করিয়া একেধরবাদ প্রতিষ্ঠা কুরেন। কিন্তু শাস্ত্রবিচার না করিলে ভাছার অভীই দিদ্ধি হয় না। এই জনা তিনি এই অগাধ শান্ত্রনিন্ধু মন্থন করিতে প্রবৃত্ত হন। ভাঁহার ভার্ধনি লক্ষ্য,একেশ্বরবাদ স্থাপন। এই প্রসঙ্গে তিনি তর্কেই মুখে প্রতিপোষক বাচ্য শান্তের মধ্যে বেখানে যাহা পাই-शांद्रन जागारे छकात कैतिशांद्रम्। किक् পেই সমস্ত শাস্ত্ৰীয় বচৰ পাঠিয়াতেই বোধ হুইবে যে হিন্দুশান্তের সকল কথাতেই তিনি বিশাস করিতেন। বাস্তব তাহা নহে। বে সমস্ত শাস্ত্রীয় প্রমাণ একেবর্ত্রপর প্রতি-পক্ষের অবগতির জন্য তাহা উদ্ভূত ক্রিতে পিয়া তাহার দৃদ্ধে এমন অনেক নীজায় কৰি বাহির করিয়াছেন যে গুলি পড়িলে ক্টেই वाध हेश-बिति भीव खरणात अकड मार्ग-एक्न। लाहीन करहात शक्यकानि मकन

ক্ষিতেন। কিন্তু বস্তুত ভাহাই কি ঠিক। धार्या धक्की कथा वला वित्मय चावनाक। ধ্বন ভাঁহার সহিত সর্বাসাধারণের ঘোরতর শাল্টীয় বিচার হয় তখন তিনি আপনাকে কুত্রাপি বাক্ত করেন নাই। যা কিছু বাক্ত ্রকরিয়াছেন সমস্তই শাস্ত্র। এইগুলি ধরিয়া বিচার করিলে তাঁহাকে অবশাই ঘোর বৈদা-खिक द्यान इरेटन। किख मगरा मगरा छैं।-হার আপনাকে ব্যক্ত করা আবশকে হটয়া-ছিল ৷ ভাহা আলোচনা করিলে তিনি যে কি ছি**লেন তাহা বেশ** বুঝিতে পারা যায়। তিনি লউ বৈণিকৈর সময় যখন শিক্ষা-সমিতিকে পত্ৰ লিখেন তাহাতে প্পত্তই বলি-शास्त्रम दिनास्त्र मर्गन अरमर वर्षे अल-ভাঁহার অভিপ্রায় এই কার করিয়াছে। খাছাতে সংলারের প্রতি উদাদীনা আনে **সেপ্র জনর**মাজের উপযোগি নহে কিন্তু যে ধর্মা লোকের কর্মাঠ ভাব বর্দ্ধিত করিবে 'ভাহাই नागांजिक धर्म रुअम जावनाक। এখন দেশ বেদান্ত দর্ম পত্রে পত্রে ছত্তে ছব্র বলিতেছেন কেহই কালার নয়, দকলই মায়া, এই যে জগৎ দেখিতেছ ইহারও বাস্তব গভা নাই। বেলান্ডের এই সমস্ত ভাব লোকের অস্থিমজ্জায় প্রবেশ করিলে সামান্য: উদরাল সংগ্রহের নিমিত্ত কি কাহারও প্রস্তুতি হর ? এখন দেখ রাম-যোহন রায়ের এই পত্রখানি আলোচনা कतिरन क्येन्डे तार्व इत ना रव जिनि देवना-স্তিক ছিলেন। তবে তুমি ৰলিতে পার যদি ভিনি তাহাই না হইলেন তবে বিচাৰ-মুখে প্নঃপ্নঃ বেদাছবাকা উছ্ত করিয়াছের কেন। আমরা ইতিপূর্কে বলিয়াছ এপম-কার জালোকে রাম্মোহন রায়কে বিচার कतिद्वं हिन्द्वं ना তিনি যে নময়ে **জ্ঞা**য়া ছিলেন তখন যদিও শান্তের গভী**র**ু चाटलाच्ना मुख्यात रहेताहिल किन्छ नाटसर्वे

उन्द त्नारम्ब एका विद्याल एक १ नारे। जयन गृहरं गृहर शुक्र वनारन ना প্জিত হইত। স্বার এতদেশে বেদাজের নাায় একেশ্বরপ্রতিপাদক দিতীয় এছত নাইছ দেই জন্য রামমোহন রায় লোকের **সহজে** বিশাস হইবার জনা তাহাই অবলম্বন করিয়া একেশর্বাদ প্রচার করেন। रेश क्रांक অবশ্য এমন সকল বৈদান্তিক মত উদ্ধৃত করিয়া ছিলেন যেগুলি বাদ দিয়া বলা ভাঁচার পক্ষে কালোচিত নয় বলিয়া বিবেচিত হইয়া-ছিল। কিন্তু তিনি তজ্জন্য কিছুমাত্র ইতন্তও করেন নাই। ভাঁছার প্রধান লক্ষ্য যেন তেক প্রকারেণ কর্মকাণ্ডের উচ্ছেদ ও একেশ্বরবাদ প্রচার। তিনি ভাহাই করিয়াছিলেন। বাল্ডব তিনি বৈদান্তিক নন এবং শাস্ত্রামুদারে ক্ষীও নন।

এমলে আর একটু কথা বলি ৷ কি ধর্ম-সংস্কারক কি স্থাজসংস্কারক সকলেরই সং-স্কার কার্য্যে দেশকালের অপেকা রাখা আব-শাক। নচেৎ ভিনি কৃতকার্য্য হৈতে পা-तन ना। जयन द्विश क्षि वीगरगाइन রায়ের সময় জনসমালের অবস্থাকিকা কেবল অজ্ঞানতার অন্ধকার ও শাস্ত্রে কেবল একটা অন্ধ ভক্তি 🗗 নেই অবস্থার রাম-যোহন নায় যদি শালের কোন কোন কংশ বাদলাদ দিয়া নিজের হুদরাসুগত ভ পান ন্ত্ৰের মন্দ্রীসুগত কথা ভর্কাবে স্নানিটের जारा रहेक्त त्नारक जारा अस्त कतिएज भावित वा। এই बना छिनि तम मिटक वान नारे । जिन क्षाप्तिक ध्यम क्षाप्ति त्यार कृतिशाहन कशक **कारात कृती**-शाःन खानाद्या छिएक नी क्या एक दर्भ टिंटक । किस प्रकृषि केहादात्र समा देश शाक महाउठार केंद्र केंद्रिक दहना बर् ्नमाटक में छारकातिक बर्गका स्रोतह श्रीकटक विश्वाद विष्टू है होने पूर्व कराने

ক্রিয়কাৰ্ট ইফেল করিয়া একেধনকান প্রচার . खामात छत्मना। अच्छल द्यमाख व चना (कान भाक्तीय 'श्राम 'श्रोदिक्तारिक आर्त्रेड ্থ্যাক্রনেও আমার অভিপ্রেট একেশ্যপ্র**তি**ই পাদক কথা ভাষার মর্বেমব্রে রহিয়াছে। ভার আমার বিধান ওদারটার লোকের টোতনা সম্পাদন করিবন বাস্থাইন র'য় এই বিশ্বাস 19 আল'বদু কেই চোৱা এককাব্যুগ্র কালে বেদান্ত-বাল ছার। একেলবন্দ ভাষ্ট कविष्य याचा । अथग भा - तावत तावतीः এই সেবেষ কোন উনায়ে ছউক, জন্মন্ত্রিক ग्राफ्ते करतन बान्द्रम गर्गा। शतकार्द्री मध সংব্যান কৰ্মৰ। ইংহাৰ আৰ ক্ৰানা সকল মুক্ত ক্রিণ ভাহার অভিপ্রায়ণে বিশ্বসরূপে এদ শন্তবা। মংক্ষার-কাষ্য চিরতাল এইতাপালী। তেই ইইয়া আসিতেছে। আন্নেটাংন গুলের প্রবন্ধী ধর্মাস স্কার্যক প্রধান অলোফ সংগ্রহণ ্ৰিনিন কং গালিকাৰ যে আক্ষাৰ্থ গ্ৰন্থ প্ৰস্থান কুরিয়েটভন এ**বং** প্রাধান জ্ঞান ও **জীব**ন জালা পাষাকের ককে ধে পরিবৃত্তিন আনিয়াছে চি<u>ন্নবৈশ্</u>যর বাব ভাষা আলোচনা বারল কে **'শিলো এই বাকো**র সংগঠ জ্ঞান প্রটারেন। যুক্ ক্লামমোহন রায় বে জট ভবানী ছেলেন না ভাহার প্রমাণ অনৈক আছে। , এ পুত্র প্রস্তাবে 🐒 হার সমাবেশ হইজে •পারে না। তবৈ একটা কথা বলি। তীগ खद्मात ख्रुष्य-गर्ड तियाम याकि द्वा खेला ॥ **चें श्रीमक क्रांटवंद खात** द्यान थाएक ना । विख রামনোহ্ম রায় তাক্সমাজে তক্ষের উপাদনা ্প্রতিভাকরিয়াছেন টি ভারার সময় বেদ-বারেক্ট স্থারের জ্বভি পাঠ হইত, গায়ত্রী-মন্ত্রে ভাষার ধ্যান হইত এবং বৈরাগ্য সূচক সঙ্গীতে তাঁহার প্রতি নিভারের ভাব বার্দ্ধিত করা শহস্ত। যদি জীর 'এলের একত্বে তাঁহার' বিশাসই ছিল তত্ত্বে আক্ষাসমাকে এই বিগ-ষাত্ম পদীপের আবার অবতারণা কেন।

ভাল, আরও একট্ঠ দিঁক দিয়। দেখ। तामरभाइन जास पथुन शिहीन्द्रकत कि छेजः মংগ্রাম করিখা ভিলেন তখন বাইবল ভালব অবলম্বন ছিল। তবে ভিনি কি প্রিটান স भः छ। मक्ष । जिनि दश्चिम निशा (नशेश्चित्र)-ভেন এক দ্বিপ্তই সমুসেয়ে জানকর্ত্ত। ভাতিত গিতীয় অা কিছুই নাই। তিনি গেদা**ও ও** दही्तरकत महाध दकीदान खदलसून रानिया मुननगान मगादव टारान कतिया हिरनम । किस्र डिम्स दोन्हे तिक कि अवस्त्रद्वत केलागक মুঘল্যান গ্লাভালা লাভালা আকাৰ যাতি তাহার প্রশাস সকলে দ্বস চেশে ১৩লা क्षनमगारक अहकचहराह क्रान्त्रिके। यज्ञाः। নকল ধর্মনারে এই ছটি গুট ও পচ্ছা ঙ**িয়ালে ু** ভাষার ৩০০ন ১৯টা বিদরে ভথাজালন জনাদাতি কা, গ পালে স্থন লোচে লভা প্রতি প্রহণ কলিলে দলং ২ইবে ভংক কেই ধর্মের আবোঞ্ক ভাষাৰ চন্দে দ্যস্তৃত্যু উল্লেখ্ড হটাতে গালবে। ভগনপ্রকানরপ ক্ষেডার হাতে ভাষার উন্ন িত্র পথে ক্রিক দিতে পারিবে না।

একণে আমরা চল্রন্থের বাব্রু দেখাইব বিলয়াছি দে রাম্মোহন রায় সকল ধর্মশাস্ত্র হংক্টে একেশ্বরাদ উদ্ধান করিয়াছেন। ইং দিরা কি বােধ হইলাপু যে সত্য জন্মা-ধারণ মেই বিশ্বরাপিক সভাের উপর এই আআমর্ণ্ডা প্রাংগিত। যাহা দেশ ও বালের আমারক্ত অংচ্ সকল দেশ ও সকল কালে সমান দীপ্তিতে প্রকাশ পায় তাহাই সতা। বৌল্যর্থা সেই অটল ভিত্তির উপর প্রাণই হউক কোরাণই হউক যে কোন বর্দ্মণেভ হইতে এই শিশ্বজনীন সভ্য উদ্ভ ইইলে ভাহাই আক্রুপ্তা। কিন্তু দেশভেদে ইহার বাহা পরিচ্ছদ ভিদ্ধরূপ হওয়া আবশাক। বিলতে

कि अश मा हरेटन इनिट्न मा। यटन কৰ হিন্দুখানে আমার অন্ম আমি জাতিতে হিশুল তুমি মদি বাইবল দিয়া আমার নিষ্ট সভাট কুখাইতে চাও সভাপ্রিয়তা খাৰিলেও ভদারা আমার উপকার হইবে ৰা ি হারণ বিশ্বজ্ঞনীন সভা আমার নিকট শে, পার্ডেদে আইল তালা আমার পুরুষ-প্রক্রিপারার বিপরিচিত। জ গ্রহে সকল/কথা 'ও এমন সকল ভাব আছে তাহ/ অবশ্য সত্যের অগ্নিপরীক্ষায় টেঁকি-য়াছে কিন্তু ডাছার পরিচ্ছদ খাগার অপ-ক্রিটিভূ বলিয়া ভাষা আমার প্রাণকে স্পর্ন করিতে পারিল না। স্ততরাং তদ্ধার; আমার . कान काषर इहेन ना। किस गार त्मर **দৈতা আমাদের জাত**ার গর্মা প্রত্যের মধ্য দিয়া আইল অৰ্থনি তাহা আ্যার প্রাণ্ডের স্পর্শ করি**শ**্ন কার4 জাতীয় কথা ও জাতীয় ভাব **অামাদের প্রুষপর**স্পরায় পরিচিত। ফল কথা সভাট কেবল শিক্ষার জনা নয় ইহা **मिनदाउ नारशेत जानिवाद जना।** उत्रीहा जाभाव थानक म्मन ना कदव ভুষামি কোন বলৈ ভাষাকে জীবনের সহিত মি করিব। এই প্রন্য আদি ভ্রাক্ষমগারে ব্রাহ্মপর্ম প্রয়ের। এত আদর। धरे गम्ख অষিব জা আমাদের সভা সাধনের অনুকুল क्रक्रदर्भित वास् जिनााना नगाटकत प्रक्रमा पिश्त गुनिशाटक काटन आपि खाकामशाटक अ त्वभवी हो अ स्विवादका श्वानत शाकित ना। িশ্ব আনুরা কুক্তকঠে বালতেছি হিন্দুর क. क । हिम्ब होत् शृहे वरेशा यक काम জাবিত থাকিব, পারম পুরুষার্থ মুলি হদি अभाराह श्रार्थनीत इस एत এই लाकपर्य-व्यटक निगेक द्यम्बादा क्र अधिवादका कमान जीमादमः अनामंत्र रहेट्यं न।। उठाव हसान (भूथत तात् यिन हो न त्य, शुर्क्ताला मार्क

বড় দশ্রের বারশের-বিরোধী তুমুল বাদাসুবাদ সমা জান-কাও, আবার আদিয়া
ভারতকৈ অধিকার করুক, শক্তর ভাষা,
রামানুজের ভাষা, ও বৈক্তর সম্প্রাদায়দিলের
ভাষা, আবার কোমর বাঁথিয়া রব্বলে মরতার্থ হউক্, এবং তাহার সহিত আহুনিক
ভাষাকারেরাও সঙ্গানে যাতিয়া উঠ্ন তাহা
হইলে তিনি হিন্দু-পর্মে নৃতন জীবন প্রশান
করিতে গিয়া করিবেন যাহা ভাষা আযুক্ত
স্পান্ত দেখিতেছি, এই বাকাটি সপ্রমাণ কহিবেন

ু "শুভিবিভিন্না স্বতরোধিভিন্ন নাসৌ স্নিৰ্থস্থ স্বতং ন ভিন্নং।

ব্রাগ্য-ধর্ম-নীতি।

ध्यक्त वस्ताहा।

িরিপু সংখ্**ম।**

চহুর্থ এস্তাব।

মোহ।

আনাদিগের আত্মা এই অন্তিচ্যাময় শরীরে বদ্ধ থাকা নিমিত যে সকল পী-র্থিব বস্তুতে আমাদিগের অনুরাণের উৎ-পত্তি হয় দেই অনুৱাগ নিয়মিত করিয়া, ধর্মানুসারে ভাহার বাবহার করিয়া আমরা भेरमात याजा निन्धाह कतिक, हेहा**हे अपरव** অভিপ্রায়। কিন্তু ঈখনের এই জডিপ্রায়ু উল্লেখন করিয়া আমরা যথন কোন পার্থিব ৰুক্ত বা বিষয়ের প্রতি অষ্থা ও অপ্রিমিত असूताल श्रामन कति, त्महे असूतिकात जा-তিশব্যে অন্ত হইয়া পাছি ধনং কর্তব্যানি क्रिया स्वानग्ना हहे, अपन आमान्द्रभाव जेरत-शाम्ब ज्ञानांत्र त्याद श्रीतिश्व করিয়া কেলি। পার্থিক স্থাবের প্রতিজ্ঞান্ত माल पुरुवीय नदर, किन्छ भारे च पुरास क নিনিত হইয়া পাতিলে ভাহা দারা ক্রা

हरेश यथन शामती बद्धांत निश्म किलाजन ্করি তপন আনীয়া, স্থা-ভোগ-লালমা-জনিত साइ-शतवन इरेशी जूननावाल इरे। धन নিম্পান্দর - প্রেক্তি অপুরীয়ে দ্যণীয় নহে। ক্রিন্তু দেই অনুরাগ অত্যন্ত বার্ড চাকার ধারণ -করিলৈ তাহ। বার। - ক্লারণে পরিচালিত **रहेश शायता यथने अ**त्रश्चाहत्। कृति ज्यन আমরা ধন-দ**ম্পার-লাল**দা-জনিত যোহ্পর-বশ হইয়। শোচনায় তুপতিগ্ৰ ৪২ই। জা পুত্র-পরিবার প্রভুতির প্রতি অধুবাগ-দূষ-नीप्त नरह ; कि ख यथन व्यामता । भिर्ट अयू-রাবে আমারিগকে এতনুর আবদ হইতে **দিই যে** তাহার জন্য অন্যায় আমাদিলের আত্মার নপলের প্রতি দৃষ্টিনূনা হইরা পড়ি তখন স্থানির সাংসারিক সম্বন্ধত্বিত লোছ-পরবশ হইরা আন্যাগ্নিক ভাষোগতি প্রাপ্ত হই। পার্থিব **জ্ঞাবনের** প্রতি অনুরাগ দূষ-नोव नर्ट, किन्ने तमहे अपूर्णाल मधन जानवा এতদূর আবন १२ । ए ७५५ । चन्या । ७ ४५ । ুবিরোধা কার্যো প্রস্তু হই তথন পার্থিব স্মারনের প্রতি স্বরাগ-স্থানত নোহাবিঙ্কী हरेगा जानका जागानिक रेड मान क्रिया शांक। त्यांच भाषेत अय, পাर्षित मचक्र, भार्षित व्हामान्त्रक, 🥹 कुरे भा र्थित बात्रत्नेत ध्यां छ नेत्रते धान छ चानू वाद्यात. বিহত আকার, শুউহার অপব্যবহার ও ব্যভিচার। অভ এব এই মোইরিশু সর্বভো-ভাবে পরিত্যক্রা।

लाबित धर्म, अने मण्यान, मंद्रक छ जीव-নের প্রতি সুবর-প্রদত ধর্মা-। দল যে অকুরাগ তাহ। আমাদিসের মণলের কারণ, কিন্তু হ-হার বিকৃত আকার বে মোহরিপু তাহা णाराहित्य नाना महत्रेत् ७ पनत्यंत मूल १ मिरिक विशेष करेला मेन्स मकल श्रकात कतिए हरेरक। बाक्यक याल्ड इ.न. ज्यानक शादम क्रमक रहेक शादक। त्य रें जिन्न स्थ-नामना-कानीक त्यादश्व अर्थ न इत

সে পরদার ভাতিচার এত্তি ঘোর পারে পতিত হয়; যে ধন্য স্পদসন্তোগেল विन्तृ गारित वनीकृष्ठ इय, स्न श्रवकना, চৌৰ্যা বৃত্তি প্ৰভূমাচনণ করে ষে দাংফারিক স**দন্ধের** ভাতি **অনু**রাগজীনিত মোহে অভিভূত হয় দে ঐশ্ব ও প্ৰকাল বিস্মৃতি রূপ মহাপা৻েপ নিমগ্ন হয়; যে 👫 র্থিব জাবনের প্রতি অনুরাগজনিত মোহে আক্রান্ত হয় দে আগদুগ্নিক জাবুনের উৎকর্ষ मावन करिक्क मक्कम हैय ना। स्माह-পत-বশ হইলে মানুষ যে সঞ্জ পালে পতিত হয় তথিতে যে কেবল ভাষার আবাজ্মিক অবনতি ও তুৰ্গতি দাৰিত হয় ভাৱা নীহে, আব্যাক্সিক অবনতি উন্নতিত অবশান্তাবী ফল স্থুকপ যে শার্নারিক ভ খান্সিক অনুনতি ও তুর্পার্, যুটে সে ভালারও ভালা হয়ন 🕸 সংক্ষেপতঃ, মোইরিপুর জ্বীন, হবুলে সামু-যের সর্বাদান ঘোরতর অমারন সাধিত -হইয়া থাকে 🎨

ভাষাধর্মের মহান উপদেশ এই যে পা-র্থির স্থুখ, পার্থিব ধনসম্পদ, পাাধব 🖣 দল্প ও পাথিব জাবনের শ্রুতি ইবরের উদ্দেশ্য অমু-সারে যেরপ ধর্মাগড় অতুরাগ এদর্শন করা ভাঁচত, যেরূপ নিয়ন্ত্রিত প্রানিত রক্ষা করা কত্তব্য, সেইরূপ অ্সুরাগ সেইরূপ প্রীতি রক্ষা ক্রিয়া চলিবেক, ক**থন সেই অনুরাগ্রুকে অ**প– রিমিত আকার ধারণ করিছেত দিবেক না, কথন ভাষােকে অনুমানপে চালিত ক্রিবে না, কখন তাহাঁর অপব্যবহার কান্ত্রা তাহাুকে মোহে পরিণত করিয়া কেলিবেক নাঃুমান ভূমি তাহা কর তাহা হট্টুতে ভোমারৈ ধর্মা চুতে এবং পাৰতভা ও লোদ্যালপ্ত হুইয়া হহলোকে ও প্রলোকে গুঃমহ মন্তাপুতভোগ

"बब निम्द्रकार सबार द्यारोड व्यक्तिकार न रीवर्यो होनार्थः नेकाब्रा कर पुनाटक ।

ত্যাৎ "যে ছাজ্যি মোহ হেড় হিও বাকা কাল্টি কৈ কা দীৰ্ঘদুলী হট্যা পুৰুষাৰ্থ হুট্টে ডুট্ট ইয় এবং পশ্চাৎ সন্তাপে পতিত হয়।"

ত্রীকা যিনি তিনি সকল পাথিব বস্ত ও বিষয়ের প্রতি ঈশর-প্রদক্ত অনুরাগ স্যত্ত্ব 🎙 রক্ষা করিয়া চলৈন, তিন কখন ভাগা মোহে পরিণত করিয়া ফেলেন না। তিনি পার্থিব মুখ ও ধন সম্পদের ভাতুরাগী হারেন, কিন্তু ভাহাদিদের জন্য তিনি কখন ধর্ম্বের পথ ভাগে করেন না, তিনি অন্থ্রীয় বন্ধু পরি-অনের প্রতি অনুরক্ত হয়েন, কিন্তু সেই অনুরালে অন্ধ হইয়া কোন অনাায় বা অ-ধর্মাচরণ কবেন না; তিনি পার্থিব জীবনের প্রতি অমুরাগ রকা করেন, বিস্তু সে অমু-রাগে অনুরাগী হইয়া আধ্যাত্মিক জীবনের উৎকর্ষ সাধন করিতে ভুলিয়া যান না। তিনি পৃথিবীতে থাকেন, কিন্তু পৃথিবীর বিছু-তেই তিনি মোহ-মুগ্ধ হয়েন না; পৃথিবীর সকল বিষয়ের যেরূপ নশ্বর ও আপাত-মনোরম এক্তি তাহা তিনি ঠিক্ বুঝিতে পারেন, অতএব ভাহাদিগের বাহা চাক্-চিকা ও শোভায় যোহাক হইয়া ভিনি কখন জ্ঞান হারান না। যতটুকু পৃথিবীর হওয়া আবশাক তিনি তভটুকু পৃথিবীর হইয়া ্বিআধ্যাল্যিক জ্গতের লোক হয়েন। ত্রোক্ষাধর্ম ষ্ট্রাহণ করিয়া, ত্রাক্ষাবলিয়া স্ক্রগতের নিকট পরি-**5**য় দিয়া যি ন এইরূপে মোহরিপুকে বশ ক্রিতে না পারেন, তিনি ত্রাক্ষধর্ম্মের ও ত্রাক্ষ नात्वत अवगानना करहन, जिनि क्थन ८.इ.७ 🛊 প্রোক্ত নাবের উপযুক্ত হইতে পারেম না।

উদ্বত।

সাওয়।

ৰ্যাল কো আকা সমুদ্ধ নহে, সভা বুলাও সহস্থ আলোহ বুলে। সভা বুলিকে জনতর সংগমের আবভাক। দৃঢ় নিউন্ন দৃষ্ট নিটার সহিত ভৌমাকেই সঞ্জীয় ক্ষানুস্থ করিতে হইবে, সভা ভোমার অংগরৰ করিবে 📆 ष्यामञ्जर्भयम् अन्यास्य महासार्वाका व्यक्ति, ज्ञान्त ह्या अस्ति । হইল সে কেবল আমি প্রচাম করিলাম বলিয়া। সীভেয়েই लाजि **कामता कारमक ग**मरत मुक्कियाना कहिला शिकि আমরা তাহাজে আখাদ দিলা বলি, তো্মার কিছু'় ভয় नाहे, जामि ट्यामार्ट्य थाड़ा कतियों इतिह। 🚧 ত্যের যেন রাস্তবিক কোন দাওয়া নাৰী তাই আমান্ত অন্তগ্রহের উপুত্রে দে দাবী করিতে আদিয়াছে, এবং ष्यामि काह्यदेश व्यामार्थ महर ष्याध्य निमा स्वम क्रेडॉब, করিলমি আছি ভাদবোর মধ্যে নহতাভিমান আভভাত করিলাম। এইরূপে সংভার চেঁহে বড় ইইতে সিরা আমরা সভাকে দুরী করিয়া দিই, মিথাকে আছ্রান করিরা আনি। আমরা ভূলিয়া যাই (ম, স্তা সম্ভ জগতের আত্ররহল, এ জনা সভা কোন বাজিবিশৈবের অভুগ্রহ বা তোষামোদের বশ নঙে। স্কার্যার স্বধামত আৰ্ষি যদি সভাকে বাকাইতে পারিভাষ ত সভা কি সহজ্ঞ ১ইতে পারিত ৷ কিন্তু আমি সতোর কাছে বাঁকিয়া ভারেরা ধাইতে পারি, সভা তাহার অটল সরক ভ্রমার মহিমায় পাড়াইয়া থাকে—সভা আমার মূধ তাক্টিলে: চলে না, কারণ সকলেই ভাষার মুখ ভাকাইমা আছে।

এই জনাই সভাের এত বকা সভা আমার প্রতি
নিউর করে না বলিয়াই আান সভাে এতে নিউর
কিতিত পারি। পুরুতাকে যদি, আবশাক্ষত বাকান'
বাইতে পারিত ভবে আমতা নিধা থাকেভাম কি করিয়া। '
শতা যদি কথায় কথায় খান পরিবর্তন কারত ভবে
আমতা দাঁড়াইতাম কিনের উপজে।' সভা যদি না
থাকে ভবে আয়্রা আছি কে বলিল।

ভারত পৃথিবীর হইয়া
ক হয়েন। ত্রোহ্মাপর্ম
ভারতির নিকট পরিপ্রান্তির নিকট পরিপ্রাহিত্তির বলা
ত্রাহ্মাপর্মের প্রত্রাহ্মা
ত্রাহ্মাপর্মের প্রত্রাহ্মা
ত্রাহ্মাপর্মের প্রত্রাহ্মা
ত্রাহ্মাপর্মার প্রত্রাহ্মা
ত্রাহ্মাপর্মার প্রত্রাহ্মা
ত্রাহ্মাপর্মার প্রত্রাহ্মা
ত্রাহ্মাপর্মার প্রত্রাহ্মা
ত্রাহ্মাপর্মার প্রত্রাহ্মা
ত্রাহ্মাপর্মার কর্মার
ত্রাহ্মার বিদ্যান্তর্মার বিদ্যান্তর্মার কর্মার
ত্রাহ্মার বিদ্যান্তর্মার কর্মার
কর্মার ব্রহ্মার কর্মার কর্মার
কর্মার ব্রহ্মার কর্মার কর্মার
কর্মার ব্রহ্মার কর্মার
কর্মার বর্মার কর্মার
কর্মার বর্মার কর্মার কর্মার
কর্মার বর্মার কর্মার কর্মা

कहे दृष्ट स्थाएं जं स्थिति इहें एक दिखे कि कि हिंकि एक । भटकार स्था स्था स्था विश्व बैटक शांख है है से
स्कि, निया का हात स्का निया स्था कि सम्मिति के कि कि स्था नियं के कि स्था कि

ইহার প্রানাণ কি আমবা প্রতিদিন দেখিতে পাই ना ? जामबा निशाहातीत पन आयता अधिन आहे कृष कारक निभाग कवि मा त्य, नृत्युतिक छावकमा বছ্রীত পুথিবাৰ কাছ চানতে পারে না, খাটি সভা বাবহার ফোডাবে পড়িতে যত ভাল শুনার ক'জের বেলার তিও ভাগে বেশে ছুঁল না। অধীং যে নির্মের উপর সমস্ত অগৃৎ নিডয়ে খনিদর করিয়া আছে, সে নিহমের ক্রিডির আমি মিডর ক্রিডে থাবে দুর্ব; মনে হয় আমারি ভার দে দামলাইতে পালিবে লা- চল ক্যা ভাষাতে গাখী ৰহিচাতে কিন্তু মানাকে দে ধায়ণ কাঁচতে পারিবে না, আনাকে । স বিনাধের পাপ নিকেপ क्रिकार्। जा डोमभ भिनादि सीम वहम। क्रिका खामती শভাবে এমনর স.ছেন করিরা ভারুয়াছি লে, আমানের क्रान ज्ल, भरत का वीन अनाव-भरत वह समारवह ध्यालाव भूतम् । यह सन्द **स्था**त्व भारता स्**र**्ण, ८कत्व दक्षेत्री क्रियाह विशिक्ट इहेएत। दक्षेत्रशह একমাত্র এপার। ভাল থালা মনে করে আমি কৌশল করিয়া থাকিব, ভাড়তে ক্রিয় ইইয়া থাকা ক্রেকান कारमञ्जनरह ; अ हि चरत आर्नीत विकड़ साहे, टकान खकात कभी कैब्रिया मीर्थाण्याकिएछ इटेरकुँ। छूट भा বলে মাটিকে নিতাই মাট জান করিয়া আমি অপিনা-हरे छिनात, माञाहर ; त्य कम त्कोनतन कथा नय, কিন্ত অবশেষে যে আশ্রয় ছাড্লিয়া ভাষ্টা লক্ষ্যের, নেই আশ্রমের উপনে পড়িলাই ভারেদের অভি চূর্ণ ं इदेश भाग।

মন্ত্ৰাসমাজের এই অতি বৃহত্ত প্রতিল মিল্লা বাবলাবের মধ্যে পাড়রা সভাকে অবলয়ন করা আমাদৈর
পকে কি কঠিন বাপির ইয়া অভিয়াছে। চক্ষের
উপরে চকুদিক ইইড্রেই গুলাবৃত্তি ইইডেছে—আমরা
সভাকে দেখিব কি করিয়াণ আমরা অন্যান্থিই
শুনিতাক ক্রাম্ব্যাস্থান দেই শুনি রচিত। সভ্যের
অপেকা প্রথাকে আমরা অধিক সভা বলিয়া জানি।
প্রাভাবিত ক্রাম্ব্যাস্থান স্থাকির সভা বলিয়া জানি।
প্রাভাবিত আমরা অধিক সভা বলিয়া জানি।
প্রাভাবিত ক্রাম্বাহিত্ব প্রিয়া ধরিয়াছে, আমানের

হাতে পারে শৃত্যক্রিবালে, বলপ্র দ লমাদিগতে **্রিক্তা ক**বিতে নিষেধ করিতেছে, পাছে চলাকে **অকি**্রী জিম স্বিরা আনরা সভ্ত দেখিতে পাই -বাহাকাল इरेंड आंगिमियरक नियामान, जिला, मगानात कार्ड প্রান্ত করিভেছে; নিখ্যা কথন, নিখ্যাচরণ আমানের কর্তবোর মত করিয়া শিক্ষ দিতেছে। আনিরী বুলি এক, করি এক; জানি এক, নানি এক; — স্বায়ুর বিকার পটিলে যেমন আমরা <u>ইচ্ছা</u> কবি এক রণ **অণচ** कामारतत अन्न अनकाल जाति के हिन्न , तम ने चिक्रक শিক্ষায় আমর। সভোব আলেশ পনি একুলা, অবচ মিথ্যার বশে পড়িয়া অনার্পে চালিত ২ই। প্রণা বলে অন্যায়াচরণ কর পাপাচরণ কর ভাষাতে গুলি নাই, किंद आभाव विककाधनी कांत्र मा, आया इट्टा **⊈হামার নানহানি চহাবে, জোনার** স্গালে নঠ সহাব—ু, व्यक्ति श्राजन भाग, अकि श्राजिन भ गात, भण वास्त्री कार्ष्ट्र कि हुई नया। अहे कि गामशा के लाउ का शांटियां মাজে মা<mark>রে</mark> মহৎলোকেলা জনসি*ং* নান মঠলালা কুনুশ্ৰীৰ চিৰন্তন প্ৰথা, মনাজেন সুদাৰ মহিনাগাৰ সকল ছিল কলিগা ুবাঁটৰ তথলা আনেন, ভাগদের সঙ্গে সংক্ষেত্র শত কার্যাকনা স্বান গাভ করে। **ब्लियम अ**थीन लिय मराम्युक्न, प्रवाः नुभासद আলিঙ্গনে পড়িয়া জতু শৃজ্ঞানের উপরে নাইচের প্রেম অভিযান বিষয় অনস্ত মৃত কলা ক্ৰি থাহারা বিভীবিকার স্করেপ কেন্দ্রৈ ডালচাই ভালান্য ভগ্ন কায়াপ্রাচীরের পার্লে ব্লিরা দির শৃথান বাঞ্জ বইঘা ম্জিনাতাকে গালি 🗤 ৪ ভলাবশেষের ৮ ন জুপের মব্যে পুনরার **মাপনা**র অন্তকার বাদগ্রের খনন ক্রিতে থাকে।

এই সমাজ-ধাদার মধ্যে পড়িবা আনি সং তাব বিকে

শুঁটি তির রাখিতে চাই। যেমন নান, রাণে বিচাৰত

হইলেও চুম্বন-শনাকা সবল ভাবে উত্তবের বিকে মুথ
রাক্ষে সভ্যের সহিত আয়ার বে একটি সরল চুম্বকাকর্ম যোগ আছে, সেইটি চির্দিন অক্স্কুটাবে বেন রক্ষা
করিতে পারি! ভয় হর পাছে সংসীরের সহত্র রিপার

ভাবিত্রাম সংস্পর্শে আয়ার সেই সহজ্ব চুম্বকশিকি মুই

হিরা যার! যেন এই বৃঢ় পদ থাকে যে, সত্যাত্রামের
প্রভাবে চারিবিকের জাটিলভা সকল ছির করিবা ন্মাজকে সরল করিতে হইবে। সংশ্য ভয় ভাবনা অবিশাদ
দ্র করিবাদিরা গুক্তব্বে খনিত করিতে হইবে।

শ্বামাণের জাতি ধেমন সত্যকে অবহেন। করে এমন আর কোন জাতি কবে কি না, জানি না। আমরা মিধ্যাকে মিধ্যা বলিয়া অন্তব্ করি না। মিগ্যা

ভাষী আর ভনিতে পাইনা, তাগ নিঃশস্তারই আকার ধারণ করে। এই কারণে পুরাতন সভা সকলে ে ত্ৰিতে পার না, এই কারণে প্রাতন সভা সকলে ৰ্লিতে পারে না। মহাপুরুষেগাই পুরাত্র গতা ব-বিতে পারেন--াদ গও হৈতনোবাই প্রাতন সতা ব-निट्ड क्रिटिक्ट्र अला डीझारतत काट्ड वित्रविम मुचन খাকে কারণ সত্য তাঁহাদের বথার্থ প্রিরণন। আসর। যাহাকে ভাল পাদি যে কি আমাদের কাছে কখনও পুরাতন হয়। ভাষাকে 奪 প্রতি নিমেষেই ন্তন ্করিয়া অসূভ্য করি না ? প্রথম সাক্ষাতেও নেত্র যেমন অসীম চুঞ্জ অধ্যা অপ্রিডপ্রির সহিত ভালার মুখের প্রতি আনত থাকিতে চাম, দশ বংসর সহবাদের পরেও কি নেত্র দেই প্রথম আগ্রহের সহিত ভাহা-্ৰ কেই চারিদিকে অনুসন্ধান করিতে থাকে না ? সভা बॅटाश्रूफ्यरनव भरक (महेज्रभ চित्रम्डन थिशदशः আমার কি তেমন সভাতেরম আছে বে, আল এই পুৰাত্ৰ যুগে, মানৰ-সভাতা আহ্ছানেৰ কত সংস্ৰ ৰংগর_্পরে পুলাতন সতাকে, নৃতন করিয়া কানব-হাদয়ে জাগ্ৰন্ত ক্রিতে পারিব দ

মাহারা সহভেই সভা বলিতে পারে ভাহানেত্র সে কি অসাধারণ কণ্তা! যাহারা হিসাব করিছা প্রম পারিপাটোর সহিত সতা রচনা করিতে থাকে, মতা ভাগাদের মূপে কাধিয়া বায়, তাহার। ভরণা ক্রিয়া পরিপূর্ণ সভা বলিতে পারে না। রামপ্রসাদ ঈপারর প্রিচারভূক ইইয়া সেরপ **আ**য়ার অ**স্তর্গে**র ভাষ ঈশকের সহিত মান অভিনান করিয়াছেল, অলে , কর কি বুংগাঁহসিকভার ভার করিয়া দেরপে পারে ৷ অন্য কেছ চইলে এমন এক স্বায়গায় এমন একটা শন্ধ প্রায়েগ, এমন একটা ভাবের গুণদ্ করিত, বে তং-ঋণাৎ সে ধর। পড়িত। **অমূত্ত্ব ক**রিয়া **ব**লিলে সভ্য কেমন সহজে সকাগেদপূর্ব ইইয়া ধরা দেয় তাহার এ-কটা দৃষ্ঠাত সাদার মনে পড়িতেছে। প্রাচীন ঋষি সরল कतरह दा व्यक्ति। डिकात्रण कृतिगाहित्यन 'स्वमद्धाःमा ममग्रम, उमामा या त्यां विश्वमम, ग्रैं आर्थि म दलमय, श्रातीका रीर्वा करिय किया मुन्द दुर्वत मार निहि निछार।" अनुकृष्ण निष्ठाम शैवक तार्यन मराबंधू हीतक इहेशा छित्र वह व्यर्थना टिप्तन गर्देश श्रीविक्षरम् উच्छन् छ। कात्र श्रीवन कित्र । উनिত दृष्टैया-हिं। आप यनि अपन दिशाय कविता धरे व्यक्तिना कार-मधुनारान कविद्व अस्मन, जाहा हहेत्य क्यांनात्मक হ্মদরে, আঘাত লাগে, ক্ষুত্রত ভাষাতে এই প্রার্থনা হত শতোর সংল উচ্চলত মাল হুইয়া যায়। ক্রিড ভোম।র त्य व्यनव प्रथ, তाशांत बांबी बांबाटक सुबंब। तका कत्र"

व्यार्थनात बहें। बारभद्देक् अतिवर्धन कार्रेश क्षेट्र क्य বলিরা থাকেন, "ল্মাময়, জোমার বে অপার করণা, তাখার ছারা আম্ত্রক সর্কলা রক্ষা কর।" এইরবেশ্ খাহিদিগের এই আচীন প্রাথনার কিচ্ছের করিয়া ভাগতে একটি নৃতন ভাব ৬৭০ দিবা লাগান' হই-রাছে—কিন্তু এ কি বাজনিক সালামৰ হইবা দু মরল-क्षपत्र अपि कि मिला किन्निकालन १ अरे आर्थनाव जेन्द्रत्क (य काल वना इहराहर महा इतावन अवित्र मुख দি**রা অতি সহ**জে এই সংখ্যান বাহির হটরাছে। অসতা, অন্ধকান, মৃত্যুর ৩০২ ভাত হইয়াই পৰি **ঈশ্বরকে** ভাকিতেছেন কিন্তু দেহ এ সাহারি মনের এই विद्याम् वाकः इष्ट्रेस्ट्राह्म् ८४, मछा व.छ. (आर्तिः व्याद्धः, অমৃত আছে। এই বিশাদে ওল বলিলই চেনি বলিয়া-হিলেন "রঞ ভোনার দে আদঃ ৪৬"--**এমন আখা**-मवाभी ज्यात कि ६३८७ शास्त, ज्यान भारेष्ठः स्वनि ७ नि তেছি মাধানের আর ৬০ কিং ধে ঋষু অ**সভ্যের** মবো সভা, অভকারের মধ্যে স্বোভি, মুকুর **মধ্যে** অমৃত দেখিয়াছেন, তিনিট গাঞ্জন দাক্ষণ মুখ দেখিয়াল ছেন, এবং দেই আনন্দলানতা প্রচার করিতেছেন, তিনি বলিতেছেন ভণের মধ্যে অভয়, **শাসনের মধ্যে** তেখন বিভাল কুরিতেছে। এবালে "সম্পদ্ধ" বলি**লে** दाउ प्रधा दाख्न इव मा, १म (१ दन ध्रवेषा क्षात क्षा হ্ৰমাজা ভাহোতে বল ভাবের মধ্যেও প্ৰথমতা, कार्याङ्ख राज्ञभीन । व्यवस्थ जाःस्त्र विस्थाः व नद्रय क्षाःस মলল স্বৰূপের আহি চূচ নিওৱ **এমন ফুন্দর্র**পে বাক্ত द्य ना। भ्रद्धि ७ ७ ५ छ। तिया वालम ना**रे, जेयात**य প্রদান দাক্ষণমূখ দোগতে পাইয়াছেন বলিয়াই তিনি লিভানে উত্তরকে কন্ত তালিতে পারিয়াছেন, তাহার সুত্ নিয়া সূত্য অবাধে বাছির হল্ডাছে আর অমিরা বিউন্ধ कं क्विता पृक्ति क्विता उपगत जक्ति क्वा व्यविक्त ক্রিলাম, **ভা্**ষার শ্রাগদশপ্রতা **নষ্ট হ**ইবা **গেল**ন 🦯

ইহা ইইটেই প্রমাণ হয় সছে, সতা বলা সহজ্ঞ নম। ইফুলের পড়ার মত দুঙা মুলত করিয়া সভা বলা বায়, মা। সত্যেব প্রতি ভালবালা আবা লাগে লাখনা করিতে ইইবে, ভালবালার ঘারা সভাকে বলা করিছে ইইবে, সংসারের সংশ্র কৃতিলভার মধ্যে ফদরকে নরল রাফিতে হইবে ভার পরে সভা বলা সহজ্ঞ ইইবে ভারা পরে সভা বলা সহজ্ঞ ইইবে ভারাকির করিয়ার বাদা হইজ, ভাহা ইইবেজ আবাদের ভক্ত ভারনার কারণ ছিল না। কিয় আবাদের ভক্ত ভারনার কারণ ছিল না। কিয় আবাদের অনেক ক্রেরিভিও আবাদিগকে সভাপথ ইইকে বিচলিত করিবার কার আবাদিগকৈ আবর্ষণ করিছে বালের আরাকের আরাকের আবাদের ভারতে। আরাকের আবাদের আবাদের ভারতে বালাকের বালাকের ভারতে বালাকের কারণার কারণের আবাদিগকে আবাদিগকে ভারতে বালাকের আবাদিগকের আবাদিগকের বালাকের বালাকের আবাদিগকের আবাদিগকের বালাকের বালাকের আবাদিগকের বালাকের বালাকের আবাদির বালাকের বালাকের বালাকের বালাকের আবাদির বালাকের বালা

श्लान व्यत्नक नमता व्यामाधिनक नजाने क्रिएं कही। क्तिएं शारक, वह जनारे नजाम्तागरक, वह नकन ্ আতুরাগের উপটের শিরোধার্য্য করা আবশ্যক।

व्यामात्र व्याहान्यकंग कथा लाटकत विवक्तिकनक পুরাতন ঠেকিতে পারে কিন্ত আমার একটি কথা পুরাতন হইটের বোধ করি অনেকের কর্পে অতাত্ত ্ৰতন ঠেকিভেছে। আনি বলিভেছি, সভা কথা বল, সভাচিরণ কর, কবিণ ধেশের উন্নতি তাংগতে ই হইবে। এ কথা সচরাচর গুনী, যায় না। কথাটা এভ অল, এত ৰাভ ফুরাট্যা লায়, এবং এমন প্রাচীন ফেযানের মে, ুকাহারো বলিয়া **জ্লাহ্য না, ভনিতে প্রতি**ু**হ্য না,** ইংতে তুগভীক চিজাশীলতা বা গবেদণার প্রিচন ण्लाख्या याय ना, हे**रीटि ध्यम उ**क्षीलना **उद्यक्त ना**हे যাহাতে কলভালি আকর্ষণ কলিতে পালেন, দেশ্হি-তৈষিরা কেছ বংলন দেশের উল্লিভর জনী জিলাতিক কর, কেং বলেন সভা কর, আন্দোলন কর, ভারত-मधी ह शाम कह, दक्ष बर्लन् मिथा। यह मिथामें व्यक्तात কর কিছ কেন্দ্র বলিতেছে<mark>ম্না সভা কথা বলও</mark> শেহনান্থীন কৰু। উপব্লিউ**ক্ত নকণ ক'টার ন্ত্রে** खरै कि शकायत (ben नया मध्य खनः मकल्यत (ben कवा नं छ, बहुदोर कुबूदगब ८७६व आदमाक द्वनी, ' এক শক্তের ৫০য়ে **অধিক উপেক্ষিত। সত্য সকলের** 'মোরান এবং সভা সকলের সেবে, আরি**ভে সভাবীজ** বোপন করিলে শেবে শতা ফল পাওরা, বাব, মিথ্যার ধাহতে আত্ত মিগায় তাহার শেব। আমরা যে ভীত भद्रां ५ । शर्भप्रवास नेकृष मृणिविद्याप्ती की होत् है हे साहि देश्टबद्धक भिष्मा मिन्ता कतिरम आमता पष्ट इहेय ना, আপনাদের মিল্টেক্টিলেশ্যা করিলেও আমগ্রা মন্ত হইব না। স্থানরা <mark>হে পরম্পরকৈ</mark> ক্রমাগত সক্ষৈত্র করি, অবিহাস করি, হৈব করি, খুলিরা ক্ষাক করিতে, পারে না, ক্ষারাজ্যতা ঘটিয়াছে, সেখানে নাছ্রী আসিয়া কি পরের ভতি পাইবার অন্য হা করিয়া থাকি, কথায় ক্পার আমানের দল ভাঞ্জিরা বার, ক্রান্থ আরম্ভ ক্রিতে শংশাস্থ্ৰ, কাজ ঢাগাইতে উৎসাহ গাকৈ না আমবা प यूनला नहेशा बाकि, श्रीमारि नहेशा मान् मालमान वित प्रा होनहीं विका लोक गरेवा वानिक वा प्र-লীৰ নাম বিবাদ করিতে থাকি, আড়ালে প্রস্পরের নিশা করি, নুষুধে লোবারোপ করিছত অভান্ত চত্ত্তজা ९व, छोटाव कात्रम् आनवा स्थाहासी, मुख्यात व्यासार नदन ६ मदन महि, केनाव उदमारी पु विभागनायन निह्य भागती दी जोताहीय चैन क्रानिट्टिक, छारांत पीकी महिल्मीनावित अस्कान कविद्वाहि किस छोराव राने नठा हारे, जुरे बना कन हाउ देशकाह नध रप्रमन, दे सामिशीरक दर मान भारता टकने अवने। बाला स्थानका क्षेत्र काल कालरक भावरवन । विशाणकाप्रव निक-

স্থাৰ অবলম্বন করিতে ইইনে, সেই এক স্নৱেই প্রভাবেই शास्त्र मकल इरतित् मत्या क्षेत्रा हिना नामी विक्रिया স্থর এক উদ্দেশ্য সাধিক করিতে থাকে, কেচ কাহাকেও **স্থাতিক্রম করে না,** তেমনি স্থাযরা যে কাল করি **না কেন সভ্যকে** ভাষার মূল স্থর_ু ধরিতে হইবে। আমরা বেই মূল হার ভূলিয়াছি বলিখাঁট এত কলবৰ চচতেছ, ক্রীকা প্রীশ্রালার অভ অভাব দেশা যাইতেছে। এত বিশ্বালা সংকর্ সকলে ধকালাহলই উত্তেভিত করি-दैणाहन, दिन्ह पून शरदंत थाछि वक्क कविरंड विन-তেছেন না, তাহার কারণ ইহার প্রতি সকলেও তেমন पृष् . चार्डा नारे - हेबारक डाबादा भूनकात्वत हिमाटक (मरथन निकोक्ड^ककोरमारकत रिशारक (भरवन ना। পেট্রিরটের। দেশের উন্নতির জনা নান। উপাস त्विटिक्ट्रिन, नाना दिल्लेन्ट्र द्वांगरिक इने। अ तिरक् मिथा। मोत्रदं भाषनात कांगा कतिरङ्ख, तम धीरत धीरत ষ্থাদের চরিত্রের মূল শিখিল করিয়া দিভেছে, সে জামাদের পেট্রিফ্রিগেব কেলোহলময় ব্যস্তভাকে কিছুনাত খাতির করিভেছে না। পেট্রিটেরা প্রায় ভীরে ছর্গ নির্মাণে মৃত্ত হইয়াছেন, কিন্তু মারাবিনী প্রা তাহাৰ অবিধান ধর্মোতে ভাল তলে তটভূমি জীৰ্ **কর্মিডেছে। তাই ম**াকে মাকে দেখিতে পাই আ**মাদের** পেট্রিনটদিগের বিস্তৃত আয়ে:জন মকল সহসা এক-রাতিহর মধ্যে অংগর মত অন্তর্ধান করে। যেথানে काजीय हतित्वत मूल लिथिन इरेश शियात्व, त्रवांत्म যে পাঁচ জন পেট্রিটে নিশিয়া জোড়াতাড়া, তালি, ঠেকো প্রাস্থৃতি অবলম্বন করিয়া কৌশন গেনগ্রয়া স্থায়ী কিছু করিয়া উঠিতে পারিনেন এনন (আমা) বিখাদ **হর্ম। অনভের/অনেহি**্নিরনকে কৌশলের **হারা** ঠোলবে কে ? থেথানে সভা সিংহাদনচ্যুত্ত হওয়াক্তে করিবে ৷ হান্ন, দেশ উদ্ধারের জনা বতাকে কেইই বলিষ্ট্ৰতাকে বৃদ্ধিয়ানেরা অতি প্রাচীন ধণিয়া অব-হেলা করিতেছেন। কিন্ত বালারা জীবন ন্তন আরম্ভ করিয়াছেন, বৌৰনৈর শ্রুত ছতাশন বাঁহাদের ফদরকে উদ্দীও ও উদ্দিশ করিয়া বিরাম করিতেছে থাহার গ্ৰহণ্ড শিখা দাধ্য তেকে মহত্যের দিকেই সবিপ্রায় সমূদ্র নিৰ্বেশ ক্লিভেছে, বাহাৰা বিশ্বসৰ নিথাজালে অভিত इम नार, मिणा पृक्षिक निरमान ध्वत्राहमत्र नार्वि याजास हरेशा बाद बार्ड, फ्रांशाता आ उसा करून था-र्वन) कंत्रुल दर्ग मर्फार्शिय छित्रहिन करिन शांकिएक शास्त्रम, जुरा इहेरन अभन शोधन माक्क किया छ।शाना

कांक मान मान ब्रह्मा का वाक्ता वाका कारनेत मरथा अरवन करूब, आमारमत त्यतम् अविक्रिया नात, व्यामात्वत्र व्याद्वत्र व्याद्व प्रका निश्नि व्देश भएए. **সংশয় ও জাবিখানের প্রভাবে মাংস** ক্ঞিত **হইছা** বায়। আমরা এই প্রতিজ্ঞা করিয়া সংসারের কার্ব্যক্তে ্ৰাহির হইব যে, মিথাার ক্ল্যু দেখিলেও আযুৱা স্ভাকে विश्वाम कतिव, मिणात वहा लिपिटाउ आमना मेहितक ্মাশ্রয় করিব, মিগার চক্রাক্ত ভেদ করিবার উল্লেখ্ मिथा कल वा दात कतिव ना । जामही कानि नाटक মিখ্যা আছে, চিরক্তন প্রথার মুধ্যেও মিখ্যা আছে, जाबता जानि ज्ञानक नुभव ज्यापातत हिटेल्थी जाची-বেরা মিখ্যাকেই আমাদের খ্যাথ ইভজান করিলা , कानकी वा अकानकः आमामिश्दक मिथा छेनासन ্রাদয়া পদ্ধিন। সত্যাপ্রয়াগ ছদদের বধ্যে অটল রাথিয়া भे शक्त नियात विकास मध्याम कतिर**ण हरे**रव। ক্ষুত্রাগ পদেও আমরা ভ্রমে পড়িব, কিছ দেই के निः त्यायम इंटरन, त्यह अमहे व्यामानिशतक शूनताव ने के भूथ निर्देश का तथा विदेश कि एक माज् व्यशन শ্বাস্থ্র শাস্ত্রাহ্বাস্থ্র বঙ্গতঃ যথন জনে পড়ি তথ্ন সে अम हिर्छ चार्र नामात्त्र छेवार नाह, उथन लेमरक ल्यामत्रा क्योगिशन कृतिः विश्वारक व्यिम विश्वा वत्रन वित विकास काडीम के चुकरीय रहेशा डिटर, श्र्म श्रुकर रहेर्छ किन्न श्रूकर्य मगर्क भाकाभिक रहेर्छ बारक, धहेक्श हैबानत शाहेता विनास्तत दीख मिथा व्यालन আৰু ক্রে তরে শিক্ত 'বিভার ক্রিছে থাকে भिनेते (गरे कोर्भ क्रिक्स मन्तिवर्ष गरण क्रिक्स) **কুরিসাও হর। আনাদের এই ছদিশাপর ভারতবৃর্ব সেই** ক্ষিনা বীৰ মনিবের ভরত্প। কালক্ষে বর্ম क कंद्र गुरु। येरे छात्र छ वर्ष अमिन शैकान आ श इदेश जिले (व क्षेत्र, लाख कर: अंथारे क्योरन प्रदर्शनकी) হইকা উঠিয়াছিল প্রাণীন স্বাধীন স্বাকে খ্রুদ, পাত্র व्यक्ति क्षेत्राह निक्क इहेट इसे गहिन। मिशा कियारम बाह्य अका व्यक्ति कत्रियाम १ मध्य भिया। भागानी क्या नार्धिक नार्थिक नार्थिको करा दहेबाबिन विकासिता विनयां बारकन, विवास मा-रास्त्री, नरेक नांबागान्य निरुक्ते महा बाह्य स्व न अबह विकासिको ना देशशहरण (vagan) नदा शामिक के किएक शादित मान विकास व्यक्ति के महिल के नियानी हेक्टिएत नेका स्था जिनानी नेक ब्रांकि मंबर्ध परका वावित् महिलार मात्रम प्रदेश दव বুলৈ সিত্ত কৰিছ কিন্তু কৰাত কা নিৰেত বল ক Charlest ville and and charles where

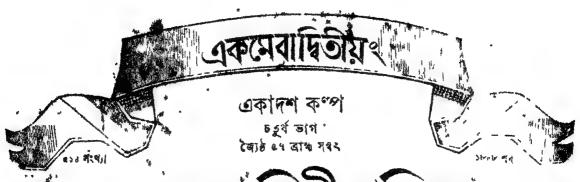
নানিব হইয়। ইড়েইন সভাচেক বিবার করিব ইর্টের কলে। সভাচর এইর সাম্থান গলার শত নাল বিবার আনিয়া আমানের বিশ্বনাত্ত্ব হিন্দুর্গরিবারে নির্দেশ আর্য সইন কেই তালাসিয়াকে রোধ করিবার হিল না তাহার কল এই হইন সভাচেক দাস করিবা আন্তর্ম নিথার দাসতে বত ইইলাম, দাস্থ করিবা আন্তর্ম দাসতে উভরোভর নামিতে আরিলাম, আত আর উল্লেখ্য আন শক্তি নাই—আল প্রথমতে পথপারে বসিরা ভিকাপাত্র হাতে লইয়া কাতর বারে ব্যাতিছি 'দৈক বারা ভীণ্ দেও।"

নব-বর্ষের গান।

देख्दता। याष्ठाम।

আমারেও কর মার্জন।
আমারেও দেহ নাথ অয়ু তর কনা।
গৃহ ছেড়ে পাথে এলে, বলে আছি চান বেশে,
আমারে। হাদরে কর আসন রচনা।
আমারেও দিতে হবে শনতলে স্থান।
আমারেও দিতে হবে শনতলে স্থান।
আপনি ভবেছি পাপে কাদিতেহি মনতাপে
ভনগো আমারে। এই মুরম্বনেনা।

ললিত। আড়াঠেকী।
বৰ্ষ গোল, বুথা গোল, কিছুই কারনি কার,
আপন শুনাডা লয়ে, জাবন বহিয়া খার।
তবুত আখার কাছে, নব রবি উনিয়াছ,
ভবুত জীবন চালি বহিছে নবীন বায়।
বহিছে বিমল উষা ডোমার আশীহ বানী,
ভোষার কবশা-স্বা ভাগমে দিভেছে আনি
বিশেষ জালত-পুরে, মোরেড কেলনি দুরে,
শ্রীয় আখানে ভাই ব্রুকে শিহতে শ্রীয়।



তভাৱোধনী পানকা

अध्यामक्षित्सम्बद्धः साम्रा यत् किथ्याभाषात् द स्यामन भन्। तद्य नित्य ज्ञाष्ट्रभन्न शिष्य खनकाद्धः वयनम्बद्धे स्वाधिः स्याप्ट्रभिष्ट् सर्वेद्धार्यं स्याप्त्रम् स्वाधिः स्याप्ट्रेस्य प्राप्ट्रम् प्राप्ट्रम् पूर्वेभग्रतम् स्वतः। एकस्य सन्तारीप जनवा पार्यिकसाद्याष्ट्रवेद्धस्यानाते । निधान् प्राप्तिस्य य प्रियकार्थ्यं साधन्य तद्पास्त्रम्य ।

वर्य-८ । य वाचानमाज।

পৃথিনী আত্মান গালন ও পৌৰণ-ক্ষেত্ৰ। ক্লক বীজকে অনুধ্যত করিবার জনা বেমন প্রথমে সুদায়ত্ত্ব ভূমিখণ্ডে তাহাকে বপন করে; তৎপারে জলবারু আলোক প্রদানে তাহাকে পরিবার্দ্ধিত করিলা ক্ষেত্রান্তরে রোপণ ক্রিয়া থাকে, কলণামন্ত্র পর্যোশর তেমনই পৃথিৱীরূপ উর্বর কেত্রে, যানব আস্থাকে শক্ষা করিয়া এখানকার জ্ঞান পর্যা প্রীতি পবি-ত্মতায় শিক্ষিত ও উন্নত করিয়া তামে তাহাকে উপযুক্ত कित्रशालन। লোকলোকাস্তরের कृषक द्यमने इंखिकात ग्रांश वीच निहिछ করিয়া দিয়া নিশিন্ত নছে, যতকাল না তীহা ज्यूतिक करेशा कृत दकते श्रे शिक्षा रेश, ভত্তিনই যথানিয়ামৈ বারিসেচন ও বাতা-जल बागान विशेषा अवावक। कतिया भारक, मिहता अन्य कान खड़ान शतरमहा विनाम শংসারের মধ্যে কুলায়তন দেহাভাতরে অমর . पांचाक निश्चि केतिया मिया धेयन है जिलू-कृत विका बार्नाहरू जिल्दा जिन जाद ভাষাৰে সংখ্যাপ্তৰ করিয়াভেন, যে দে সমুদ্ खाटने प्रतिनाक अट**न्य । या** श्री श्री हासरी पर

३।। कृषिकार्द्य क्रमत्कर्त मञ्ज एउँछ। या-কিলেও যেমন স্বৃষ্টিঃ অপেকা খাকে তেমান উলতিশীল দাবীন আক্সার দার. উমতি ও 🕮 हिक সাধনু ধনা তাহার আত্ম-চেষ্টা আত্মবল পাকিলেও তাহার সার্কভো-মিক উলভির নিমন্ত দেব-প্রাসাদের নিতাও लाशासन । भेयत रगरे बना डाईन बद्दनन ত্যান প্রোম-ছটা প্রকৃতি-পটে নিয়তই বিস্তার করিয়া রাখিলাছেন, তুর্লভ গ্রানাদবারি অকা-তরে খানব অ জার উপরে অজন্রশারে প্রতি-নিয়তই বর্ষণ করিতেছেন, জ্ঞান প্রেম দুয়া গর্মা প্রতিমানই বিতরণ করিতেছেন, জাবং ভাষাৰ খনন্ত উচ্চিত্যাধনের পর্মোৎকুত্ত আদশরণে আপনাকে তাহার হৃদয়াড়্লে निष्ठ श्रे कान कात्र उट्टिन। बुक्तवारिका যেরাপ ন্তকর পূর্ণবিকাশের স্থান নিছে, কিয়-দুৱ পৰ্যান্ত বন্ধিত হইলেই হৈমন আহা শেতাম্বরে নীত ও রোপিত হয় এবং কুলি-জ্ঞ কলফুলে শােভিত হইয়া দিক্বিতান আলোকত করে, কসইরূপ মানব আত্মার পুর্ব উত্যেষ ক্ষেত্র এই পৃথিবী শহুহ। পৃথিবী निकानाधन कान रखम केशिक और প্রবিক্তা, শাস্তি সভাবের ফলফুলে চির্ণো-

দিত উন্নত ও ৰাদ্ধিত হইলে আবাৰ উচ্চত : শিক্ষা ও মহন্তৰ উন্নতি নাধানেৰ জন্য লোকা স্তাৰে নীত হয়।

পার্থিব की है পাতস ধেমন বর্দ্ধন-উন্মুখ রক্ষলভার 🔄 গৌলহাবেনাশ করে তেমনি এখানকার পাপ ভাপ উন্নতিশীল আত্মার ্**জিনো**ষ্ঠৰ বিভ্ৰাপ ও বিক্লাত কৰিয়া। দেয়। ক্রাহারদের উপজব অত্যাচারে আত্ম এশানে । কিন্তু হইয়া পড়ে, তাহার ক্তি উদায স্থিতিয়াহিত হইত। যায়। আকাশ হইতে চল্রের ক্রিয় ছোটত, সূর্ক্তের মধল কিরণ ংমেষের স্থায়িয়া কারিয়াল জাপ্তাপ্ত হইলে গ্রেমন ক্ষণতা প্ৰাণ পায়, জেমনি অন্তরাকাশ হইতে জ্ঞান প্রেম সভা মধল সরপ ঈশ্বরের অমৃত-স্ব্যোতিক প্রেম ধারা আত্মাতে পাতত হইলে জুৰে ভাষার পাপড়াপ মোহ-বুজ্বটিক। হুন্ত-রিত ইয়। ু**ভাই**রি উমতি-পথের বিল্ল-বিপত্তিদকল বিদুরিত হইয়া যায়। मेरे रंग नवाक कलांग्छत लाटकत छना এখানে উপযুক্ত হইবার বদশক্তি লাভ कद्य ।

কৃষক থেমন কৃত বৃক্ষবাটিকরে নবজাত বৃদ্ধতে বদ্ধন হইতে দেয় না, ফলতঃ লাই তে দিয়া না, ফলতঃ লাই তে ভাইন শিক্ড নকল মৃতিকার গভীন প্রেণ না করে ভাইনটো সতর্ক থাকে; কৌনি রাহাতে আযারদের আয়া এই সংশ্রীর কলোরে নিন্দ্র হটনা না পড়ে, পার্থিক করে আনারদের আয়া আকৃষ্ট না হল স্ত্রীলার পরিবারের মান্তার শতবন্ধনে জড়িত হানা না যায়, অনন্ত উন্নত ধানের বাজী হইয়া এককালে পৃথিবীতেই আশা ভর্মা দূলক করিয়া মুকলে, কজনা করণাময় করা করিবার ক্ষেত্র কারণেই বিপথগানী হলে কথা জন্মাজিবক কারণেই বিপথগানী হলে কথা জন্মাজিবক কারণেই বিপথগানী হলে কথা জন্মাজিবক কারণেই বিপথগানী

কঠিৰ কশাঘাতে আমাদিগকে সংপাতে আই यन क**तिर्कं**षन् । कथन वा 🖄 स्पेत्र जानिकन ানয়া আমার্থনই আত্মান শতওণ সল বাহিত क्रियो चिक्ट एहम । तथम वा अन्यविद्याहम প্রেমের প্রতিমা সেহের পুত্তলিক। সকলকে অন্তরিত করিয়া দিয়া, আনাদের মোহ-অন্ধন কার বিনপ্ত করত জাগ্রত করিয়া প্রকৃত সমুদ্ ষত্বে সম্পাদনে আমারদিগকে দুট্ত্রত করিয়া তুলিতেছে। দেশ কালের মধ্যে থাকিয়া ঘটনাপটে যথন ভাঁহার অকুত্রিম স্লেহের 'মভিনয় দেখিতে পাই, তখনই বুঝিতে शांति रम यागता मरनारतत कीत नहि, विन-খর পার্থিব প্রদার্থপুঞ্জ আমারদের চিরতৃত্তি-প্রদ উপাদান নছে, আমারদের ভৃত্তি-স্থল ঈশ্ব, আমাবদের প্রাণাবাম পরভ্রম। তথ্ন ব্ৰিতে পারি যাহা কিছু তিনি প্রেরণ করেন, ভাহাই আমারদের কলার ও মন্সলের ্তখন আমন্ত্রা কেবলমাত্র তাঁহাকেই 🔩 আমারনের সংক্ষিত্ব ও ঐতিক পার্রান্ত্রক স্থাব সম্পতির কারণ জানিয়া নির্ভায় ইই। সার আমারদের সর্কেম নতে, আমর। লক্ষা পামের যাত্রী, অনন্ত কাল প্ত পতবারা বিত্তের মধ্য দিয়া আমারদিগকে **ভাহারই** 'দিকে' অতাসর হইতে হইবে। পুৰিবী সেই পথের একটি সামান্য পাছ-নিবাস মাত্র। তখনই निवानात घटना जाना भारे, त्नात्कत मर्देके সাজ্ঞা লাভ করি, সংসার-প্রহেশিকার পুট धन्य जनशातरा गमर्थ हरे अबर एक निनारमंब শ্ৰের ভাহার অভয় হস্ত **পেথিতে শাই**য়া त्नी इंतर्पा क्रमग्रदक चात्रक केश्रि। दा। ইখরের কি করণ।। তিনি দীন কুত্ৰ আখানে কত উপায়ে জে আৰু নার দিটে আকর্ণণ ক্ষিতেছেন তাহা 💸 विल्दिन।

রকের গ্লাধ্যমিন ভূপুতে, আগার বর্ব তেমন্ট উর্বাদেশ, আগান উর্বাদ-শাদ নিবাহ হার গতি আমি তুলাক হইতে দেবলোকে দেবলোক হইতে উল্লেখ্য লোকে হইতে উল্লেখ্য লোকে ক্ষাণাড়িছ বিমল্ভনিপাবিরেড্র হুইয়া নির্দ্ধিলাখ্য স্থা উপভোগের জন্য দেই স্থামন আমা লোই অনির্বাহনায় স্থামর ভিন্তার ক্ষাণাড়িছ সাংসারিক স্থাম তাহার এত এতপ্র, তাহার ক্ষাপোলা অধিক কনিত ই লাগিব অনিতা স্থামে তাহার পাতি নাই আরাল নাই। যথনই ভাগাম্ব হইয়া সংসার-ম্বীটিকায় তৃত্তি লাভ করিতে য়ায়, তথ্যতি হয়।

ব্যবেধ সভ্তেইল জেলি হইলে ফেন রক্ষের ডালাভিক বিশুল হছণা অবশেষে হত্য-মুধে লভিড হয়, ইখনের স্থেছ প্রেমের ाणि छेनाभीन हहे, ल उमिन बाजात छ-চ্ছেদ-দশা উপস্থিত হুইয়া গ**্ৰেছ।** 'আলবা श्रीन कीव इंग्रेटन हैं का मात्रक्त मान मिक বল একদুর আবক নহে, যা**হাতে** পাপ প্রাক্তনের প্রতি আক্রমণে বিষয় লাভ পরিছে পারি। জ্ঞানের ফীন্ मकल मध्देश आवत। आगातदनत शन्त्रता 🌬 ছির করিতে পারি ন।। রিপুকলের উত্তে-ভনার জাইলভাবে দণ্ডায়খান খাকা আমার-प्तत भएक **पाक**ा दश्या छिटो। दम्हे খনাই ভাষার এই প্রেম্যারের পাপ, তাপ िरवार कुल इ अगुप्ता शतिनमात मातानल থামরা নিজেই গ্রেলিড করিয়। দিয়া দ্য विनक्ष एहर छ छ ।

নামং দর কাল চলিয়া যায়, এই রজনী যাত্র হারির আছে। আমরা একাণে জ-তীত ও কবিষাতের মধাবলে দণার্মান। অতীতের কিকে দৃষ্টিপাত করিরা হান্য নির্দিধি কবিতেকে। এমন কড সমর র্ধা অতিবাহিত কবিহাতি ব্যান্তিকার

पिक पामित्व (एहे। कशिल महत्क**रे जा-**সিতে পারিতাম, এমন 🕝 সময় জামোদ श्राटम कार्णेक्सा मिया ১খন ভাঁহার পবিত্র নাম উস্নারণ করিলা আবুনকে মধু-মার করিতে পারিতাম, ও ভাষার আনিটিক ধর্মানুষ্ঠান করিয়া भ्यु*शक*(यात भ्यंति मण्यापेन विद्वित्तं भग्य १ छेल्। १०० (श्राप्त पश्चारन मुक्ष बहुआ अवाह १) সর্গ করিয়াছিলাম, তথ্য জানিতাম ন **্রের হটতে** এতদুর অন্তরে পতিত হল্ড ও আপনার উপর এড খনিক পান-মলা দ পম করিব। বাসেধ্যথ ্য কণ্ড এক বভা ष्ट्रिक जना नरका भगन करन । हाह। हामन আবোহী অনেক দৰ্বসম্বা কবিয়া বাধকে পারে মা, তেমান প্রেকা প্রস শ্রেষ-প্রতে **অ**তিক্ৰ ক্তিয়া ওখন নে কেমৰ ক্রিয়া প্রের পণ্ডে আর্নিয়া উপস্থিত হট্ছান, তাহা নির্ণয় বরিজে পারি না। যখন ব্লি-লাগ যে মেই গুণা-পর্য হইতে বহুদুর অন্তরে আ। সয়। পড়িহাছি তখন ঈশবের কূপ। ভিন্ন আর প্রত্যাবর্তনের উপায় দেখিতে পাই না, ভাষার অমোৰ সাহাধ্য বিনা পরি**রোগে**র খার গতান্তর দেখিতে পাই না।

ভবিষাতের কি কোন আশা নাই, দে পথ কি নিতান্তই অন্ধকারাছন ? অতীতের : পাপ তাপ কি ধ্বংস হইবার নহে? আমারদের মৃতবং আত্মারুকি মৃত্যঞ্জীবন উম্বধ কো-থাও নাই ? আমারদের আগ্রা অন্ত উন্নত ধামের মালা হইয়া অসহায় অবস্থায় এই মহা প্রান্তরে নিপতিত থাকিয়া কি চির-কার রোদন করিবে, চিরবন্দী ভাবে কি এখানে তুঃসহ নরক-যন্ত্রণা ভোগ করিতে থাকিরে ? না, ক্থনই না। সেই পাপ্র-ভাপহারী বিপদক্ষারালী ভাষাননের নিকটে, দেই সেহময়ী মাতা, ক্রুপান্য পিতা, যাত্রী- উন্নীলন করিয়া তাঁহাকৈ সকলে দর্শন কর, ছির হৃদরে তাঁহার আশাপূর্ণ স্লেহের আহ্বান প্রবণ কর। তিনি বলিতেছেন "বৎস। নিরাশ হইও না, এই বে আমি তোঁযার সম্মুখে; কৃত অগরার জনা আন্তরিক অসুত্রপ্র হইয়া আমার আশ্রেয় গ্রহণ কর, শ্রামি তোমাদের পাপ-মলা প্রকালিত করিয়া জন্মত পথে লইয়া ঘাইব।" জ্বার বিলম্বের প্রয়োজন নাই, আইস আমরা সকলে তাঁহার জ্বামেঘি সাহায়া প্রার্থনা করি।

হে পরমাসন্! ত্থি যে অমর আজার উন্নতি সাধনের গুরুলার যত টুকু আমার-দের হত্তে নাজ করিলাছিলে, দেখ আ-মরা ভাহাকৈ পাণের পদ্ধিন হ্রদে জুবাইয়া বিশাস্থাতকের নাায় তেগাির দিংখাননের जि**न्द**ेकिष्शिष्ठकरतितात प्रशेशमान हरे-য়াছি। ত্নি সহতা দও দাও অস্লানবদলে সহা করিব, কিন্তু তুমি আমাদিণকে পরি-তাগি কৰিউ না তোমা হইতে পলায়ন ক্রিয়া আর কোখায় গিয়া রক্ষা পাইন। পিরিভাই অরণা প্রান্তর নগর প্রায় সকল স্থানেই তোমার দিংহাদন প্রতিষ্ঠিত রাহ-श्रीरह। वित्यारी श्रका (यमन दाकाद निक्षे আর্ত্রা সমর্পণ করিয়া অভয় প্রাপ্ত হয়, সেই রূপ আমরা পাপে মলিন শোকে অর্জ-িরিত হইয়া তোমার পদত**লে** অমর আ-শ্বাকৈ আনিয়া ধারণ করিতেছি, তুমি তো-প্রায় প্রাপদ-বারি দিকনে তাহার পাপ-গলা ধ্যেত বিধাত করিয়া দাও। ভূমি তোমার ্ৰায়তময় কোছে তাহাকে স্থান দান করা ধৰোৰ অভেদা কৰচে ভাহাকে আৰুত কৰিয়া ক্রিবে আমারদের আশ্রেচ, আর আমরা তেখোর স্বান্তিত, তুমি যে জাগার-त्मत निक्री जागतात्य कामार मीन गछान, कृमि (व ब्रामिक्टिन हेस्टनाटकत ननवश পরলোকের প্রক্রান আমুক্রা তে তোমার চির

আশিত ও তোরার বারের ক্রিরতিখারী।
বংশবের প্রত্নেশ্বর চলকা যাইতেছে, আর
কতকাল তোরা ইইতে দূরে থাকিব। তুমি
যদি কুলা করিরা আমারদিগকে দর্শনি দিয়াই
আমারদিশকৈ তোরার সারহিত কর।
বাহাতে শত বাধা বিশ্ব অতিক্রম করিয়া
নিরম্ভর ভোমার দিকে অপ্রসর ইইতে পারি,
বর্ষের পর নববর্ষের আগ্রানের সঙ্গে করে।
যাহাতে আমারদের আগ্রানের সঙ্গে করে।
করিয়া আমারদিগকে এরপ ধর্মবেল ও শুভবুদ্ধি প্রশান কর। তোমার নিকটে যোড়করে এই প্রার্থনা করি।

ওঁ একমেবাদ্বিতীয়ং।

नव-वर्ध।

टिनिट्ड दिन्दिट नवदर्धत होते **डेफ्**वारेन করিয়া-আরক্তিম সূর্ব্য পূর্বাদিকে দণ্ডায়মান हरेन, चात जागात्मत जल्दत वाहित छैद्मव-यन्तित्व बात जिन्ताष्टिज हहेन ; यद्या वायन-मानीनः वित्य प्रवा छेनामरण-चार्यापन আলাধ্য দেবতা মধ্যস্থলৈ **জ্যোতির্শায় মহিষায়** আগীন রহিরাছেন নিখিন ক্রেবতারা জীহার উপাদনা করিতেছেন—আমরাও উপ্রসনার জন্য এখানে প্রেম ভক্তি সহ-কারে সন্মিলিত হইয়াছি। ভাষারই আমেশে ুপ্রত্যেক মাস, প্রত্যেক বংগর, মৃতন, মৃতন সজ্জার সজ্জিত হইয়া স্ব স্কার্যাস্থাধা कतिज्ञा निःभटक हिनता गाँदेख्य अध्यक्त **এই श्रवम** शाजाकारनत नियम विकास हिलता ना वात - अहे मूथा जगतिएक अहिन वामता कात्रमदनायादका वामाद्रक महिन **म्यात कार्यावनाम करगण क**ि বিভদ্দ মনে উৎপূৰ্য করি যেন সাধ্যমৰ

আমরা ভাহার ফল ভোগ করিতে পারি। প্রতিঃকালের প্রথমক্ষোতির কনা সরোনরের शमा (कमन लालाधिक हैंबे, ध्वर मादवत श्रापन मञ्जल कितात्वत कना आगता रमहत्त्वण स्वार्क अन्द्रत अगादन निविध्य इट्याहि - वर्षे লম্য্যে আইল আমরা আমাদের দেবতার দেৰতা প্রভুর প্রভু জীবনেরজ্ঞাবন প্ররমা-জাকে ভাজি-ভারে ধ্রাম করিয়া ধনা ও হত: স্তাণ হই, আজ তিনি অমীদিগকে বং-নারের প্রথন অমৃত ফল বিশেরণ করিবার **জন্**য লবানে ভাতৰ ন কৰিয়াছেন, আল আমাদের কতে যা, আন্দা। পাৰ্য শ্ৰণা**ত-ধ্**ৰনিতে হুড়েল প্ৰাণ বা আত্মার দিবা চমুচ বিক্ষিত স্ইয়াছে — গ্ৰমা ল্লাকে খাম্বা ধেখিজেছি— ে এবারভাগ ম উপনিস্তাই স পশ্চাই স भ्द्रश्री । संस्थान सं विकटण्ड , जिल অবেংতে নিনি ৬কে জিন প্ৰসাত ভিনে সম্মুখে ভিন্ন দাকলে ভিন্নি উভৱে, ঈশংনো অভতবংস্য তিনি স্কুত ভাষ্টোতর নিজে স্থাল সভি বঃ তেনি অন্ত বেনন কলাও ভেমনি, সমস্ত ভূত এবিদাং বর্তমান डाहाबरे ८४ (र.ब मुदोर्श नियाम, मभेख वा-कान डाहाइरे टारनद बीवल खेळ्या । 💸 প্রমাজ্য ৷ তোমার প্রায়াদে ব্যক্ত ঋতু তর লভার মর্মে মর্মে রদ গৈকন করে, গ্রীয় थ्यञ् मन्ता-मगोद्धर्य गान्धरिभकात्र करतः, वर्गा-আহু তপ্ত মেদিনাকৈ শাতল করে, শরৎ আহু ं भिक् मिभस्टित मिनि भूषे উज्ज्ञत करत, नाज खाउँ धत्रनीरक भगामानिनी करत, किछ **छ**।-मात्र ८७म-स्वाव क्यामाज व्यामात्रव ग्रज-শরীরে যেরপে প্রাণ সঞ্চার করে, আমাদের শ্রেক হাদরকে যেরূপে সরস করে আমাদের আত্মতে যেরূপ অক্ষ জীবনের ভাণ্ডার উন্মক্ত করিষ্ণা দেয়, অগতে কোঁগাও তাঁছার ্টুলনা লাই। তোমার প্রেন নিখিল অনের निश्न मुन्न-रगरे ट्यारयत धाराप-रिन्तू

আসাদের সক্ষানেশের ক্ষান ছট্রে এই জারি শায় উৎফুল্ল হট্যা ক্ষান্ত ক্ষানে সমাগত হট্যাছি — ভূগি শুস্থা বাবাং আয়াদের মনোবাস্থা পূর্ব বনুরু।

ু 🕳 একমেব্যন্ত্রিন্দির।

দর্শন-গংছিত।।

উপক্রনিকা

সঞ্জান-গলে বিৰূপ খণ ব্ৰুছে চটাটে।

তেই এতের আন পাত্রপ্য-কোন হানে
তত্বজ্ঞান-শবের পতরে উল্লেখ আছে, সেথানে দর্শন বিজ্ঞান নিতে সচরাচর ঘাহা
বুঝার তাহাই বৃদ্ধিতে হটারে। তত্বজ্ঞান বা
দর্শন কাহাকে বলে তাহা, পারে জাপনা ইইতেই প্রকাশ পাইবে—দেকুরান কোন চিন্তা
নাই। প্রকামে স্বেস এই কণানি বলিয়া রাখা
আবশ্যক গে, তত্তজ্ঞান শদের ধেরপ তর্প
এখানে ধরা হইতেতে, তাহার ভিতর ভৌতক
বিজ্ঞান বি প্রতিবিজ্ঞান তে তুনার কোননিই স্থান পাত্তে প্রেনা— উত্যাই ভাহার
আবিকার-বাহস্তি।

्क क-क्षारायत अटको देका<mark>न्य्रेषि</mark> विषय दे

তত্ত্ব-জ্ঞান-শাস্ত্রের তুইটি হওয় চাই -(১) সতা হওয়া চাই এবং (২) বৃত্তি দার।
সমর্থিত হওয়া চাই। তত্ত্জান-শাস্ত্র মান্
সতা না হয় তবে তাহাতে লোকের বিবাদ
জানিবে কদাচ; যদ্ধি ভাহা মৃভি-দারা এ মাশীকৃত না হয়, তবে সেরপে শাস্ত্র তহ্তিজ্ঞান্
স্থকে অধায়ন করিতে দেওয়া, ভার, কুবা-

^{*} অধ্যাপক ফেরিখানের ক্ত Institutes of Metaphisics.

ভূকে কাঁচা মংশ ভক্ষণ করিতে দেওয়া,
মনান,—ভাং গলাধংকরন হওয়াই ভার।
সভা তত্তভানের চরম লকা; এই জনা তত্ত্ভান শাস্ত্র সভা হওয়া চাই। তেমনি আল্লান্ত ভালের বিকাশ চন্দ্রভানের ক্ষিত্র পরিচালনার ভিল্পান্ত করে। ব্দির্ভির পরিচালনার ভিল্পান্ত ব্দির্ভির মত্তলি অবয়ব আছে, সমত্ত্র ব্রহারণ এবং শৃদ্ধলাবন্দন; এই ভালাত বর্ণান প্রত্তিত করে ভালাত ব্রহার ব্রহার ব্রহার করে ব্রহার ব্রহার ব্রহার করে ব্রহার ব্রহার করে বর্লার করে ব্রহার করে ব্রহার করে ব্র

े ते **इड्** पटनाप्रकेष विश्वतान्त्रम्पि अनिकायनव्यः

্রী উপরে ভেতুইটি প্রয়োষ্ট্রনীয় বিষয়ের कथा निना इरेन (कि ना (३) मे च इंडरा ठाई, (२) मुक्कियुक्त १७३१ हारे) छारात सुत्या লেবোক্রটি অপেকারত বলবং। তত্তালৈর পাকে সভাছপ্রা: গতই কেন আবশাক স্টুক না-বুঞ্-যুক্ত হওল ভাল অপেকাও अधिक भोतनातः, कादन, गःउ।त नाधान পাওয়া মুসুযোর ভাগো ২য়-তো কেন কা-লেই ঘটিবোনা, কিন্তু বৃদ্ধি-রভির পরিচালনা স্পান্তিই ভাষ্ট্রার অধিক্রিন্নিন্ত, এবং ভা তাহার ক্ষণার ভিতর। সেখানে চুইটি বিষয় অসুবাণে∭কলিয়। ধরিবার কথা,দেশানে, **প্রে-টি ক্রিন্চি চ \া**মাদের জালভ**্র**নাভ সে-টিকে ছাড়িল। –kt টি অুনিন্তিত (হা, তোবা अत्कवादारे प्रशानि) स्मिटिक रउ-धमावन ক্রাবিতাভই মৃতি-বিক্ল। এ ছাড়া, দীয় क्षित्र कित येपूर्णीलन येपुरणात असने अक्षि खेलके इ खेल्ला, धर्मन वात्र कि हुई नरह।

ক্রিয়ার সম্বন্ধে বিভিন্ন শাসের বিভিন্ন (ND)।

এইরাপ বিরেচনা গৈছিল তত্তভাৰ-

শাদের বিভিন্ন মূলা বাধিয়ার দুর বিভাল কিন্তুল বিভিন্ন মূলা সংক্ষাক্ত বাহাতে উপরি-উক্ত উভাল কৰিব কিন্তুল কৰিব বিভাল কৰিব কিন্তুল কৰিব বিভাল কৰিব কিন্তুল কৰিব বিভাল কৰিব কিন্তুল কৰিব কিন্

'ব্জিন্থীন শালের কোন মুগ্য নাই বেহেঞ্ ভাষা ও গুড়গুনের মাজাবিলার।

শ স্বৃক্তিহীন ভাষ্ট্রজন-শালের কোন মূলা-নাই; কারণ বুক্তির পথ দিয়া মতা ভাল্ডিরা नामरे उद्कान्। उद्कारमा मःखारे और মে শান্ত সভেঁচ উৎনীত হয়- িজ যুক্তির পথ দিয়া ৯০১, তাতা মুগাই পত্তাবে সংহ; ভাহার লোন বৈজ্ঞানিক মূলানাই। দেবৰ কথায় নিশান কৰিলা কোন মনুষ্ট অপর মনুদার নিষ্ট হটতে পতা প্রহণ করিছে বাগে নহে। সুভিহান মতেক গ্রহণ, অবি দোকানহাতের কপান বিধান করিয়া গ্রিন্ত্না, উভংই স্থান। যে শার সভা হইশাওয়ুক্তিহীন ভাহার সম্বন্ধে ভাল'র मद्या (क्लाम अहै अक कथा वला याहेएक शांदत -বে, যে শাস্ত্র জুমুর বা'র (অগাৎ না সত্য 🗕 🔻 না ধুক্তিযুক্ত) ভাষা অংশকা উহা ভাল। भू छन्दोन लोज महा उद्देशन संस्था निकास नहि । 🗥

আবার, ধু-জুইন হারজান-শার বলি দিলাও করে, তথালি তাহা সত্যের কোনাই নিদ্দান আন গামে থাকে করে না। তাহা দিলা হালেও হটতে পারে, কিন্তু তাহা নিশ্চিত নহে। বালে নিশ্চিয়তা কিছু আর মানি হর না,—বলবং প্রমাণের উপর—নিশ্চয়তা নিজ্ করে। অত্যাব ইজিকীন হাজভানের সহিত নিশ্চয়তার কোন সংখ্যা নাই।

মানি বিজ্ঞান প্রস্তুত্ব হাজিকীন হাজভানের সহিত নিশ্চয়তার কোন সংখ্যা নাই।

মানি বিজ্ঞান হাজিকীন হাজভানের বিজ্ঞান ব

नहरू नागुर्वेद तथा कर्ताचा-सद्भाग-तमा वाराम दिव व्यक्तिक मका नकरनव रिष्ट कान मूना सहि, "ন্ধ কা" অৰ্থাই ভাষাদের কোনটিকে অব্দিষ্টিই গুলিবেশ্বনা হইতে বিভিন্ন করিয়া ভর্মিলে ভাহার কোন মূলা নাই বিছিন্ন বিকাশ যায় क्षिणात्मत उत्मनिहें हैत, उद्भे दिखानिक मंडि -মক্তের মধ্যে যেরপে সার্কাদিক গুলাগ রহি-রাম্বে ভাহারই স্বেধারণ এবং আলোচনা অভাই मार्वरतत शटक हाविरांश्य छेशकाती। किन्छ यूक्तिशेन उद्यान-नाज भटरे क्न नजा রীতি-সম্বত হউক ন্ধু—তাহার বিভিন্ন অবলব-সম্ভের মধ্যে এমন কোন মন্দাভিক বৰ্ণ ৰ'ই ধাহাতে দকলেই মৰ্কের সভ্যা-সত্ত্যে ভাগী হইতে পারে। অভ এব মনকে ুস্ত্রহত এবং স্থানিক্ষত করা ধেপারে মুখা সংকল্প, দেখানে যুক্তি-হীন শান্ত নিতান্তই (MP) 7 |

শ্ভিশ্ভ শান্ত নাও যদি মতা হয়-শ্ভিন পরিচালক বলিয়াও ভারার ক্তকটা, স্লা আছে। 🤼

জীর এক দিকে দেখা যায়, যুক্তি যুক্ত শাস্ত্র সভা না হইলেও উহার কিছু না কিছু ম্ল আছে। 🖥 হা বুদ্ধির পুরিচালনা ভারা ক্রান উংপাদন করে। উক্ত সত্যে পৌছিতে না পাকুক্—সতা-প্রাতির গ্রহত পথ অনুসরণ করে। হইলে হইজে পারে উহার অঙ্গ গ্রান্তা-সঙলি সতা নীজে কিন্তু তথাপি সেই এক-একটি অস্ব আছিতেও চরম বিপাকে উত্তীৰ্ণ कविशा निवाद अकृ-अकृष्टि अन, अथवा दर-ওকটি নিবুৰচ্ছিন শৃষ্ণাৰি উপৰ চর্ম ফলের এক-একটি কড়।। বুদি কৰিত শংক্তর এক-একটি অবয়বদক ওজা কেবল এরাল এক একটি ধাপ কিলা কড়। বলিয়া ধরা যার ভাই। হইলেও বুকিছে পারা যার বে, উহা নিভান্ত निकुल नाइ ; त्रीनसा, ध्रेमितक मेहा त्रावन

রাথে, আর-এক দিকে তেগনি গানা চক্রান্তৈর মধ্য হইতে অভিত্যেত 🦠 উদ্ধার করিবার 🦈 ৰে এক পরিতীয়ে, লালা উপান্তেল বিগ্রমন **তি** বিজ্ঞানেও) রস সঞ্চার করিনে রাজী করে না, তালাও তাহাকে প্রদান করে।

ত্রী ক্রানের সংজ্ঞাত দুহিও ইহার জান্তত্ব ্যিৰ আছে।

এরপ শাস্ত্র (মর্থাৎ যাহা সত্য নহে কিন্তু यूकि-युक दारा) भूर्य-निर्दिष्ठे उद्घ छात्न সংজ্ঞা পর্যান্ত অতু উচ্চে নাগাল না পা'ক--অনাৰিধ শান্ত অংশকা (অৰ্থাৎ যাহা সভা কিন্তু যুক্তিহান, তাহা অপেকা) উহা উক্ত সংস্থার অনেকটা কান্ডাকাছি যায়। "সত্য বাভ করা হ'ইতে**ছে** কিন্তু যুক্তিরঃপথ দিয়া নহে" এ-টি খেমন তত্ত্ব জানের সংজ্ঞা-বিরুদ্ধ কার্যা, "সতেয় বঞ্চিত হ ওয়া **হইভেঁট্রে** কিন্তু যুক্তির পথ দিয়া" এটি তেমন নহে। যুক্তি-পথ ভিন্ন সত্তা-প্রাপ্তির আরো নানা পথ থাকিলেও থাকিতে পারে, কিন্তু যে শাস্ত্র তাহার কোন্টকে অবশ্যন করে, তাহা আর-যাহাই হউক্ ন: কেন-প্রকৃত পক্ষে **ভাহ। ७२**छान भाग नरह।

नका वदर रहिन्दुक इरेटे २ छना हारे।

নোভাৰ যাহা বলিয়াছি-তেত্ৰলান-শা-জের তুটিই হওয়া চাই; উহরে যেখানকার মৃত্ত প্ৰদেশ সমস্তই সভা হওয়া চাই; আর, भावावाहिक चकछि। युक्ति भवन्नेवा नावा. উহা প্রামুখ্ররপে এমানীকৃত হওয়া চাই। खरे पूरेणि श्रासनीय विषयत श्राप्तिक অভিবৃত্তি ভর করির আছে, কেই পৃথলার ই যুদ্ধি আপনাতে আপনি পর্যাপ্ত, তথালি উভায়ে একতানে মিলিত হইয়া প্রছের আ नाच चुड़ित्रा अकाहेर ध्यादनत अकहे। इति-ন্ত্রী। নেছু প্রতিষ্ঠিত করিবে। किता बेर बेरलांत नाज बादक होड़ा स्टेरिक क्ष्मिक देशकानिक करमञ्जू क्षकाना करा ষাইতে প্ৰাৰে, ভাষা এইরপ্রশান্ত।

ভত্ত নৈর প্রস্থানী অধীত হইতে পারে, বাক্যাবলী ভাগ হৈছে পারে, কিন্তু তারার একটি অক্টা যুক্তিগুক্ত শাস্ত্র ভিন্ন আর কিছুই বেশা কিন্তা শেখানো যাইতে বারে না

এ পৰ্যান্ত ভৰজনে শান্ত বৃদ্ধি হাছা বিশ্বনীয়াক হয় নাই।

ভ ভবিদ্গ**ের বির**চি**ড শাস্ত্র** স**ংক্রের** ্সত্যাসভা বিষ্ট্রে কোন কথা না বলিয়া, এ কথা আমনা অকুত্যোভরে বলিতে পারি যে, राट्मत (कानावेहे युक्तियुक्त नटह ; युक्ति-মুক্ত বলিতে আমরা এইরুণ বুঝি যে, ত্ত্ত্ব-ক্ৰি-শান্তের আদি হইতে অন্ত পর্যান্ত স্থাতি অক্ট্রে প্রমানের একটি নির্বাত্তয় পূখলা প্রশারিত থাকিবে—তবেই বলিব হে, ভাছা মুক্তিমুক্ত। পূর্মাপুর তত্ত্ব-পদীয়া তল্জা-स्मित्र शूर्टकाक जूरिक शहरा क्रमीत विचरयत धकिक नाधरन युक्ट रकन उद्यात देखन ना किछ पूर्वातं मर्दरा त्यिष्टि त्वनी मन्द्रा छक छ দিতান্ত লা হইলেই নয়, সেইটিকেই ভাঁহায়ী व्यवदेशना क्रियाद्यन । जात, देशत केन সমস্ত পৃথিবীময় গভীর অসত্তোষের অক্ট स्विन-ऋटण अयदिया क्यतियाँ भानाम् पिट्डेट्छ। निम्न अक्टिक्टरमत कथाकान थे जयमु है-स्वनित মর্পা-নিহিত ভাবটি সমাক্রপে ন। হউক যথাপরপে কাক্ত কলিতেছে।

किंपकारमञ्ज वर्जमान प्रतिहा।

ত নৰলেই এই বিলিয়া আংকল করেন বে, তাই ওমন কি, বাই। লইয়া নিবারণা বিশ্বনাধার ভ্রমান নম্বনীয় ভ্রমান নাই। চিক করা ইইভেছে, কোন দিকটাই বাংলীক করা ইইভেছে, ভাই।ও কাইটো টেশীক করা ইইভেছে, ভাই।ও কাইটো টেশীক করা করিছে করা ইইভেছে, ভাই।ও কাইটো টেশীক করা করা ইইভিছেল করা ইইভিছেল করা ইইভিছেল করা হা কাইটো করা করা ইইভিছেল করা হা কোন করা ইইভিছেল করা হা কোন করা ইইভিছেল করা হা কাইটো করা হা ভাই। করা হা হা ভাই। করা হা ভ

AND FROM COLUMN THE PERSON THE খাবে। ঠিক হয়, কেবল তাহার টাকা ই ভারোৰ বোঝা রাশীকৃত পাড়িয়া খাছে,— ক্লিকত তৰ্জান-শান্ত কোথাও নাই। नाथटक को बनान बना-गडताहाशतक टबप-বাসি বনা-জার,এখনকার তত্তভানের প্রস্থা वनीटक उकुछान-भास वला व्यविक क ক্ষা। এ সকল গ্রন্থ কেবল আর্থিক এক অসমত টিপ্পনী-রাশি,—চুর্ভাগা বশতঃ গুল এছে কেছ গে হন্তার্পণ করিবেন তা'র জে। नार - (कनन) छारा दकान चारने नारे। **धरे बनारे** मार्गनिक मंद्रत अंड रंगारमा বেশের ; বিনিই তত্তানের প্রতি প্রকি মলোনিবেশ ক্রিয়াছেন, তারী णाहार**ं अमर**साय अवेश अना की समितिहाँ। ध्यम त्कान विवाहांमत्मत्र नाम-क्ष्य है है যেগানে কোন বিবাদস্থল মীমাংসার্থে 👫 পিত হইতে পারে। এমন একটি 🕉 🚵 नाह रायात विक्वांक निद्रालक छोटेन मोन-নিকু সমস্ত মতের সংহিতা বিনাস্ত রহিয়াছে ও বৈখানে দার্ণনিক তর্কবিতর্কের মুল-সুদ্ধ ভলির সন্ধান পাওয়া যাইতে পারে। 💐 बना छद् जान एस् (व कर्तन जेक्ट्रे। मंदेलीब তাহানহে কিন্তু এইরূপ এক এছুত সংগ্রাম गार्टाएँ शहुछ रहेशा व्यवि, देशन स्थानाहें क्रमाणगरे वा कि भार विशक्तियर ना कि কোন পক্ষেরই বিবাদের ভিতি বুল বুল नंदर ; अयन कि, वाहा नहेशी विवास তেছে ভাহার জোন দিক্লাই ক্লেকা कड़ा इट्रेट्डिइ, कान पिक्टार वा किन्द्र रहेर उट्ट जाहा अवस्ति देन करे हैं कि बहे दर शूरला-राष्ट्रित स्व देशक कर कह बासीदब भावा चादब एवं, क्रिकेट क्रिकेट नार्वत्र पृष्टि करन नव । देव दक्षान गर्ज कर করা হয় তাহাও প্রকারে বর্ম হয়।

चार करा हर कि एन कि द्यारा करा बरेक — जात कि दिनाय त्य ज्ञांश करा बरेक जाश काहात्ता जनाहेता दिना सक्ति वेचन है जञ्जापाठ टार्सान करा हरू — देश का नत्जा करा नत्कर हड़ेक् वाम ज्ञास्ति नत्कर हड़ेक् — जाश ज्ञान-मृना अदिकाताव्डा तकत्य श्राह्मान च्या हर ।

अनम, १कल दन टकन किला। किला १

উপরে বাছা নিবিত ইইল তাছাতে কিছুই

কলা হুইলাছে। প্রথম ইন্ছারা তথ্বিৎ তা

কলা হুইলাছে। পর্য় ইন্ছারা তথ্বিৎ তা

কলা হুইলাছে। পরাছারা কিছিলা করি তা

কলা কলা আছিলা দিই — কিছু বাহালা

প্রেরির ইপর ত্রারাধা । ধার-রক্ষকলিপের

কলিক্যাত দুইলালালা

কলিক্যাত দুইলালালা

কলিক্যাত দুইলালালা

কলিক্যাত দুইলালালা

কলিক্যাত দুইলালা

কলিক্যাত কলিক্যাত কলিক্যাত দুইলালা

কলিক্যাত দুইলালা

কলিক্যাত কলিক্যাত

প্রথম – সাবারণ তঃ বল পাইনে পাবে ধ্ব, প্রকাশন্ত প্রধান হাজেলেনার বিষ্ণাটিব ধ্বনাহলাই উহার মূল, — লাজনান সুক্তি-হারা লমাণিত হয় না বলিয়াই ঐটি ঘটিয়াছে। বুজি-হারা নাগর্বন করা কাহাকে বনে তাহা কালে মা দেখাইয়া, গুলু কেবল কথায়বলিয়া, নুবালো ঘাইতে পারে না। কেহ ঘদি কা-কাজঃ এবং নিস্তারতঃ ইলার দৃষ্টান্ত প্রয়োগ দেখিতে ইজা করেন, তবেওঁটাহাকে আন্তরা এই প্রহের মুখা অব্যাবটির প্রতি মনোনিবেশ হারতে বলি। এ বিষরের কোন সাধারণ কালে প্রাচককে হয় তো এমন কোন কিছুই নিধাইতে পারিকে না ঘাহা। প্রকাহিতেই ভাষার ভাষা-হাই, তাহা তাহার সন্ধ্রেক

পথে জালোক গ্রান না করিয়া বরং অনৈক কা ধরিয়া ভাইক জান লালের পাং গুচির মানা মুরাইল নইয়া বেড়াইবে। জার আর কার্ক্যের ক্রিয় যুক্তিও—করিয়ালেনা বুঝানো মান-বিশ্বা তেখন বুঝানো যাল না। তত্ত্ব-জানের অসভ্যোধ-জনক অবস্থার বাবন তবে এইটিই মির যে, তাহা যুক্তি গালা সমার্থ হ হয় না।

যতক্ষণ না-ভক্তান বুক্তিগৃজি/২ইবৈভিতক্ষণ ভাহ। হতুতে কোন মুক্তের প্রত্যাশা করা হুবা।

যতক্ষা পৰ্যান্ত না ভেত্ৰভানকৈ গোড়া হইতে শক্তরণে গুমাণ করিয়া তোলা হই-তেছে ততক্ষণ পৰ্যান্ত বিবা**দ-বিশ্বশান হই**ভে ভাহার বাতে নিক্ষতি নাই; ত্তক্ৰ পৰ্যান্ত বালা এডিবাদীর মধ্যে কলতের বিরা**ম-প্রত্যালা** দূরে পারুক্ একজন এক কথা বলিজেছেন -আর-এচজন খার-এক কথা বৃধিতেছেন্-'এইরূপ বিপরাত অপ-বোধই ক্র**মাগত চলিতে** থাকিবে। সৰ নাবিক ভিন্ন ভিন্ন আদেশ অকু সারে, ভিন্ন তিন্ন প্র**েশ**, ভিন্ন ভিন্ন বারুর**্বলে**, পালি ভবে ছালয়ানে: আর, প্রতি**খনেই** আর-সক্তার সহিত এই বলিয়া কলহ কৈরি তেছে কিন ভেষেরা আষার সহিত্র 📭 भटकं ना गाउ।' हेश चटलका बादा . উত্তম রহস্য এই যে, তত্ত্তানের **এখন কো**ন. षक्त कोए। नारे याशएक छेल्य अर्थ अवसे अवसे খেনার প্রায়ভ ; দুই খেলোয়াড়ের মধেন জয় পরাজনের পুর্ই পুন-ধান, চলিতেছে, অঞ্ উভয়ের মধ্যে একজন পেলিভেছেন সতর্ঞ আর এফু জনু খেলিতেছেন পশা,—এ ছুমুই ৰা কিরূপ, আৰু এ পরাজয়ই বা কিরূপ, जारा त्या है गार्टेट एह। बहेत श शहिन्हाड़ा সংগ্রাহ্ম করে আর কিছুই নছে-তত্ত-कानर किए। हेरेर पुकित्वात अयान করিয়া ভোল হয় মাই, তাই বাদী প্রতি-वानीय मटक अयम द्वांस माधार्म विवान यम

খুঁজিয়া পাওত সার না, মীহা লইয়া উভায়ের মধ্যে বোঝ-পড়া চলিতে পারে।

७ ४ छारमत मूथ-द्वार अशेष मुस्काव ।

गगर वर्ष जातागर व्हेगा है छ इस्वासित দশা ত্ত ভাল'র বিকে না খাইয়া মন্দের দিকেই অবনত হটুস্ছে। ইহাতে। ইইবেই; গোড়ার মূলত ভ্র-সফলের মীতিমত সংখারণ नाहे—राठाव युक्ति हादां अहि चाहे तहन করা নাই—অথট বিশুদ্ধ বিজ্ঞানকৈ আগে আৰু ভাড়াইটা লইয়া চলা হটাউছে, এরপ করিলে সভেতে গাতে এস সাহা জড়ানো আছে তাহা তো আছেই, তাহার উপর অ(রো বন্ধের পর বস্ত্র ছড়।ইয়া দেওয় হয়। -জন্তভানের প্রত্যেক জিজাসাই য'র এক কি**জালোর** জাবেরণ। •চরম (আমল ব-রিতে গেলে আহিন) জিজাসাটিতে উপনীত হইতে হুইলে এ সমস্ত আর্ত-আবর্ক জি-ভাষ্য-তলিকে দ্রাইয়া ফেল। আবশক। বহিরাবরণটি সক্ষাতো আমাদের সম্মুখে দেখা त्मृष्ट नत्ते, किस जाशादकं धनः जानात नीत्तत मोटित मभए वावल छलिदक य भर्गछ ना আমরা সরাইয়া ফেলিতে পারি, সে পর্যান্ত আমরা,তাহাদের কাহারে৷ প্রকৃত মূর্যা অব-পত হইতে পারি না। এক জিজাইর পর चात्र এक जिल्लास शिनिष्टे आरमन-रिर्नि **टकवल भटिकालितऋ आवतनि अ**कि अकि। स्न महा-देश (किमिश्राहे काछ होन,--नभछ जातहर्न-जिल्क एवं अदक अदाहरा । क्ला जात-দে দিকে কাহারে। জ্রুকেপ নাই; हेहाद कल वह इस त्य, जिल्लाम वाकि श्रथम আবরণটির জটিলতা মোচন কলা দুরে থা-কুক-তাহার গাত্রে এক পোঁচ বঙ্ শাধা-हेशा अनेन, देकार्शिक आवदर्शन विश्व सम्ब क्रकि वायन्त्र कामाहेश नार्थन, - हेहादक नएउ। त नेथ न्तारभका ज्यादा करिने हरेगा लाते । वह कार्यात व्यान व्यान दर्शिक देशह

লোকের সমুশ্রে উপস্থিত হয় না বাহা নৈস্পিক ঐবং কৃতিম নানা ছদ্মবেশে উত্তেখ खार भावक नरह: सांड, अहे मुक्निकारा ্নংখ্যা ক্রমাগুরুই বাড়িতেছে : লোকে সতঃ जीलांहे गाने करत ता छड़ वस बाह्य कि मा- १७ এको छज्छारात्र क्रिकामा विषयः অপনা কোন্ত্ৰলৈ (এজনসন বিষয় ছিল 📭 किस्लामाणि क्यांत कि इसे नर---तानि-तानि मूट्कारमञ्ज এको। १८९१/म माल। अनिरंक मा मताहरन अहा अल्डाति मृथ-मनन शाख्या दर्शी। बाद ७१वि बानकाया-যাহাকে তত্ত্তানীর৷ "সহস্কাতাত" এই নান **लामान** क्रिया अभी र'म—ठाहास एकि मुक्ताम (अमन कि मृद्रकारमद समस्य प्राप्तिन-কে-দোকান বলিদেও হয়); কিন্তু ঐ শাসন টির অর্থ ভাঁহার। সিক টাব্ কি যে গেবেক — রণৰ রাশি সাজ-নজ্জার নিগাঁছনের জিলাং বস্তুটা বে কি তেও বার্জাটি কেছই লাগব দানাক ক'রয়া আমাদিগকে বলেন নু', বাঁহারা ঐত্ কোষনুখো অজ্ঞাত-বাৰ্গনিটিকৈ তাড়াইয়া বিষয় জু-পার্তিত করেন, তাঁহারাও তাখা বলেন না ভার সংখ্যম ভা**ল ক**থাস উত্তরে পা**হিত** থা: লাপ করেন, উছোরাও তাহা বলেন না ফ্লে, এ**কথা স্থানন্চি**ত গে, এই চুই-সংজ্ বংগর ধরিয়া কোন স্বস্থা একটিও দার্শনিক্র जिल्लामात त्रक्ष-मार्ट मुखीव मूर्ति आर्थीः अशास (पर्यम नारे।

দর্শনের ভূমুপ্রয় 🗽

এরপ যে, কেন হয়, তাহার মীমাংসা এই;—লোকে ভাবে যে, সন্মুখে প্দার্পন করিলেই তত্ত্তান পথে অগ্রসর হওরা যায়; কিন্তু বাস্তবিক এই যে, সে পথে অগ্রস্ক হইতে হইলে পিছাইয়া চলা আবশাক। আগে আমরা মূলে না খাইছা, অন্তে পৌছিন্ বার জনাই প্রয়াস পাইয়াছি। তত্ত্ত্বানীর। মূলতত্ত্ব-সকল করায়ত্ত না করিয়াই সিছাছেঃ

नीका नाम द्रावन प्रकार हता। हेरात क्षर प्र विदेश और मार्गिक कर्ष खनार विकास মওলাকৃতি,—কিন্তু দমুলার বিশ-জন্মত শক্তি হুইনেও তাহার নায় অত্যক্ত একটা বিপ্-লায়তন চুম্পরিক্রিয়া মণ্ডল ইইয়া উঠে বা। ममुन्ति ठिखाव श्रीम-श्राक् मम्नाय वृक्तिक मुल जुक्, नम्पाय चित्रं वित्राती वित्राती मूल উপাদান, সত্যের স্মস্ত চারি, এথমে আমা-त्मत्र भारत्रत्र नीटिहें गाँ**है** हांभा शाटकः किन्न তথন তাহার আবি্চারে স্বামাদের অধ্কার নাই। অব্যে আমাদিগকে সংস্থ মওলটি পরিজ্ঞান করিতে কইত্র, —দর্শনের সমস্ত ত্র-ক্ষাও পরিপ্রান্ত-পদে প্রয়টন করিতে **হট্**বে। এই জন্য আয়াদের প্রজ্ঞাক পদক্ষেপই শ্ৰাদিশকৈ লক্ষা স্থান হইতে দূৱে পুরে লা গায় । চিদ্ধা**ল পরেই গরে**র বী**জ** বাড় দকল--বাহা শা**মরা অস্ফু**ট আলোকেল ং ভড়াইঃ। বে**ড়াইতৈ**ছিঁ তাহা বহনূর প-কাতে পড়িয়া **পাকে, অগচ আম**রা মনে করি যে ভাহা সন্মুখন্থিত দিক্-চক্রকালে হান বা নিক্মিক্ করিতেছে। পরিতাক্ত গৃহ-দৈবঁতার ন্যায় তা**ভ্যত**ক **আম**র। অনেক দূর ছাড়িলা, আদিলাছি, অণ্ট তাহা আমরা জানি নান তবুও আমরা সন্মুখে ভর ক রিয়া এমন একটা পথে চলিতে থাকি—যাহা ঠিক পথও বটে—না-ও বটে; ঠিক্ পথ নয়, কেন না প্রত্যে**ক পদ-ক্রেপেই** আমরা সভা মইতে দুৱে পড়ি; ঠিক্ পর্ণ, কার্প তাহা িন বার আয়াদের পঞ্জি মাই। ঘাইতে पाटक तथन देश्यातन श्रीमादनत भा थात्य, रमने सामरे **भागीत्मत भाजक भा**षा ७ छत् पुन्त निन्मागरेत्र ं ने ज़ी हो। देव है। मना-नेश नात वहेट ना वहेट बामाटनत ्नब अदकवादत्र माग्या याहरू भारते। सल-নের উপরি ভাগ হটতে অগোভারে উত্তীর্ণ रहेर्दन मः नरहात चन-चंगा भागारहत शर्ब

প্রকার করিয়া বসিত্বে পারে নবং নিরাপুরে ক্ষ্যান্ত্র ক্রেট্র ক্রিক্তিক করিতে পাতে প্রথম যে আমর। পিচ্ - চিন ভাহানও ক্ষে নাই। এখন আমর। ভাগ এ দি দ্রত **उन्यान्ति छात्रह्य असन मग्रह निप्न ।** अस्ति মধ্য দিয়া ভিড ঠেলিয়া চলা ভিঃ 😘 💠 পরি নাই। ভৌতিক জগতের ন্যার লৈ । নিক জগৎ একটা গোল পদার্থ; যে সম্বে পরিবাজক মনে করিতৈছেন যে, তিনি মণু-মোর অধিক্রি, ছাড়াইয়া দুরত্তের চরম মী-থায় পৌছিয়াছেন, তাহার পরক্ষরেই তিনি দৈখেন যে, তিনি আপুন গুছে বিরাজ্যান। ভিনি ঘুরিয়া ফিরিয়া জাবার ভাঁহার মেই ১ম স্থানে আসিয়াছেন। আবার তিনি তাঁখার চিন্ন-পরিচিত প্রাতন গাইস্থা জবা নাম-প্রীতে পরিবৃত্য কিন্তু এখন চিব্র-পরিচ**ে**ইর অবজ্ঞা অস্কৃত্তির অভিজ্ঞতায় পরিণত হই-য়াছে; তদ্বভানের পরিশ্রেম তাঁহাকে স্বল করিয়াছে; এবং ভত্ত্ব-চিন্তার ফল ভাঁহাকে বিজ্ঞ করিয়া তুলিয়াছে। এখন তিনি ভূমি थुनन कतिया महजात 🛎 वि 🗟 कांत्र कतिवाते. অধিকারী ; এখন তিনি: জ্ঞানের বীক্ষ-ধাতু-•সকল **দেখিতে** এবং দেখাইতে স্ন্**ৰ্ণ**্ এখন তিনি বিশ্ব-জ্বেলাণ্ডকে নৃতন এক জ্বান-জ্যোতিতে উত্তাসিত দেখেন। প্রথম তিনি ৰে জ্যোতিতে 'দেখিতেন-এ জ্যোতি তাহা चटणका वह-शतियाण विश्वक এवः कक्ताः এইশানেই তত্তভানে এবং সহত্ত ভানেঃ কোলাকুলি হয়।

> नवेदनक रेगोकिति छत-छनि गकरनक रेग्स्ट्र ् विदिश्व हत्।

তত্ত জানের বৃক্তি হীন এবং সাধারণতঃ
আসংখ্যাব জনক জিবভার কারণ এই যে,
কোন ভক্তি জাম বাজি মুলে পৌছান
নাই: ইহারও কারণ দর্শানো ফাইতে পারে
নাই কারণের সন্ম কোন মনুষাই

দায়া নতে কেন না তাহা প্রকৃতির একটি

শবশাস্থানী নিয়ম; সে কারণ এই বেই

প্রকৃতির গণনাতে যহা প্রশাস্ত কারন

গণনাতে তাহা চর্ম হিলাল প্রকৃতির

দার একদিকে যেয়র কার্যাক আশামধ্রের

দার হাতে অব্যাহারি কার্যাক আশামধ্রের

দার হাতে অব্যাহারি কার্যাক আশামধ্রের

দার হাতে অব্যাহারি কার্যাক অব্যাহার

কানিক আজ পার্যাক কার্যাক উত্তরালের

বর্ণ-প্রিচ্ছার দার হাতির না, ক্রনই বা

ছাতিরা আলার কার্যাক বংখা বাহালা

শতিরা আলার ই হার কারণ প্রায়াকর

বাহারী আরিক পরিকাট হাইবে।

ভাষা এবং ব্যাকরণের উদাহর্থ। যত প্রকার মূলতত্ত্ব আহে সমস্তই

तित উद्यामक वर् न्यहेक्ट्य साथाक रेका वर् श्रामिका वालनारम প্রভাৰ সম্থন করে ও বিস্তার্জনে এবং क्नारक कार्या कार्या कार्या होता ইতার একটি প্রধান উপমাস্থল। ব্যাকরণের মূলতত্ত্তলৈ ভাষার মূলে এচছন থাকিয়। कारीत मश्तर्रात्मत्र छेलद्र कर्वृष कि हैराता-मकरन अक्तकाद्य से स कार्या मन्नामन करत । देशारमद कर्ज्य-वर्ग भारा যাল আকার-পরিগ্রহ করিতেছে, তখন কোন द्रशाबद्दे कृषि केशारनंत्र श्रष्ट कार्रशांत्र व्यक्ति-ৰান্ধি 🖠 জিয়া পার ন।। তথাপি বিনিই स्वार्क्षात्रा-क्रट्रण खांचा स्वरुवि कटतन, जिलिहे ৰু নকল ব্লতাৰে শভূত—অথচ ভিনি हाटनंब अविद्रवह दिन्द्-वियानि रेज्यमिक क्रिका ना किशादिक छिना एकि . धवः चित्र बाह्य निमा वरेगा वर गूर्व उरायन SINTERPORT THE PROPERTY নাধিক ভিত্তি তিলি গুলার **ক্রি**ন্তি তিলালের প্রলোচন এ

इत्सार वर्गाक्छ छ। द क्यकारम अक ভार्क विक्रम साठ शादवाचामं कावशा घटा. তেयनिकारात नामा-अनामा। जारन कारे वीक निकिश्व इंडेएक एमर्फ नार्ट्र - पाँजनव चक्रताकाम काशास्त्र। हत्क शास्त्र नारे-কাহারে। হস্ত আরণ্যক কিউটির মূলে জন-ষ্টিঞ্চন করে নাই, ক্রম-বিবর্জিত দেহ-পৃষ্টি 😉 ছাঁয়া-বিস্তারের কোখাও কোন লিখিও নিদ-শনি রক্ষিত হয় নাই—আগে এসব কিছুই হন্ত্র নাই, কিন্তু তাহার পর যথন চারিদিকের অলভাষা-গুলি মরিয়া নিঃনেষ্ঠি ইইল, অক্সাৎ বখন ভাষাটির পূর্ণ অবরৰ আবরণ-মুক্ত হইয়া সায় মহিমায় সম্মুখে দভায়মান হইল, ভাষার পল্লবে পল্লবে । বর্থন শূর-বীয় পুরুষগণের কবিতা, তত্ত্বজান, ধর্মানান্ত, পঞ্জি क्रुं हे इहेडा छैं। त, में का काए वंशनामध्य কার্য সাহিত্য এবং দেশনের ফুল প্রারিক্ত নিপতিত হইতে লাগিল—ডৰুন ভাৰ্মী শুলের খোঁজ পড়িল।

বেলা অনেকটা অভিনাৰিক হয় গেলে তবে: ভাষার বীক্ষতত্ত্ব তালির সন্ধান त्मर्व ७ छाहा पत्र वर्गा विक्र के मा वह সকল বীজ-ওড়েরই প্রসাদার ভাষার উৎপত্তি **এवः छत्रकि, हेराबारे जाया-मः गठत्नव म्म** लियामक; भारत कालन रहेना विश्व कि कि नदर दा, अ भव मूल-छन्। बादबादक देश সিত ও ব্যাকরণে লিপিবছ হইবার বহু প্রে ভাষার লোকিক বাবহার লুপ্তাবশিস্তে শাস ने इंदेडिंडिं। ध्यन देश आधि निका क-मान, रेरा ७ ভाষার अरशास अनर साम রের সহস্রাধিক বৎসর পরে তবে লোকে यत्न ও तमनाप्त न्थाडे पहिचाकि लाज करि बार्छ ; जयह औ सकत छान, बारकाद के দার-ভূত বীজ-জুলি,চাৰার উৎপান্তর গোড়া-एवं स्मि

शास्त्राच्या क्रमान्त्र। मार्थ-भावः साम्राज्यानि मृहोसः सः अनुस्रा ভাগন নাত্র-পালের কোন নিয়নই অর্কাত নছে—যুক্তি-প্রকরণ কুলিকে বলে তাহাও আনে না— সে তাহার বহু-পূর্ব-হুতে পুরু-বাদ্রজনে যুক্তি খাটাইয়া আনিয়াছে। আনি কাল-হুইতে প্রত্যেক যুক্তি-ব্যাপারেই ন্যালের মুলতত্ব-সকল কার্যা করিয়া আসি-যাছে, অথচ গোডন সে-পর্যন্ত না যুক্তির অব্যব-গুলি তল্প তথ্য করিয়া প্রদর্শন করিলেন প্রবৃহ সহজ্য ও সামান্য চিল্পা কার্মের নিয়জা-বুলী বিহুত করিলেন সে পর্যন্ত যুক্তি ক্রিটি ভাহার প্রভাব ভিন্নাল। উপলব্ধি করে নাই।

तार निष्याकत विदेश छन्।

ৰ তে-লিং **ে**র भरभग्रन-नतेषाद्व छ । दे ীপর্টে ক্রেই জ্বেশ সংগ্রাহ স্থা **दक्षतः विक्रि तक्षरभागः भारते** एक शास्त्र (स. १४) -<mark>সকল্</mark>যনিপ্রিস স্ট্রান এর ৩ বছ জারীন क्षाच्या अवस्थित राजक । महत्य (तर् १) तः । हैन्यहर्त ইল**ড়ান্নৈ** উহল কা**য়া** চলিতে খলল ৷ কিথিত ক্ষুক্তিশাল বিছু খান মাজ দিয়ন গঠি কলে <u>না,— দলে বিজ না সেংও মূলতভূপুর্নের্</u> ন্দাল্যভাগ না না কি কি কলে লাক্ষ্য कतिछ—नि। १९७ और देश देश निराम छनिएछ স্ট এচাজ যোগাতো, এক সাজ্ঞ ভাগান ণরে। সংক্রেপে, রাজ নিয়স সুংস্থাপত শাস্কাত ব্যার পছ-পর্কো উহা লোগ भराहेक, विकास अ थारक-स्टलाक-स्माजरक পরন্ত করে। । উহা স্থাপন্ত এবং পরিপাটী শন্ধলাবিশিষ্ট অবয়ৰ ্ধারণের পূর্ব্ধে অব্যক্ত একঃ প্রান্ধার করি। প্র ভিন্ন পংক্তিতে উহার সকলের আগে पहिटन, छाटमत श्रीकरक छेहाता मक-লের শেবে আইলে; কার্যের ক্রিব সূত্ त्वत्र आदेश जानिया जिनस्क इति कार्य শীয়ত হইবার স্ময় সকলের শেষে ছেখা

·元多四十八日 4 1111

ভাত্তান-স্পাদেও এক 🕟 জন্ধলানের क्ष-फद्ध छनि-अभक्ष निकास देश निहित्तत **ोक-शहर हा**गए-- ७१३ लिया १८०० ८ शहर ५ मिकी-धीश्रम किन्द्र, अन्तिम १ १८ १ । प्रतिहा मक्रामंत होती। ुष्टबुक्काम 🐇 🐦 ८०००० रेनडनानिक रुष्टिन मरमा ७ ८ 🕒 👵 🛷 🕫 বে, তত্ত্তানের মূলতাত্ত্-সকল প্রেন্ন কারেন সর্বা-এখন সন্তান - তেমনি ভিন্তা সকলে। **লেখে রাশি**-বাশি হাতিক। স্ত্রাণ মধ্য হর্তাস **উদ্ভ হ**য়। উহারা মন্ত্রের সংধ্যের রাড-**সমূহকে আন্দোকের দিকে** ঘলপ্রতি জালিখা ি কনে অথচ আপনাৰা পশ্চাতে সন্ত্ৰিত হইত। পাড়ালে পাকে। এই যে এবটা নিহম সে, प्ल**रिंग्ड यादा म**क्यागा १ वीम**र्ड** -- १ हिन ্জিতে তাহা সকলেৰ প্ৰান্তট্ নাপি এ নিয়মের বাভিচার নাই। ভাই আন্ত্রা বাল বে, বিজ্ঞান প্রপারত চলিসাই, खणना या**रा खाटना ठिक्**-पूर्विना कितिहा প্রানে আসিয়াই, অভানত ইততে পারে; অনুক্র জবিয়াৎ কাল্ট অনাদি অভীত কা-**रकद, ब्रह्मा** विद्युष अभित्त शाहर । स्वरंत, মন্ত্রা জন্মের সংখ্য ১ চুলের আবং অয়-লাচ তথনই স্থানিস্তাম হয়, যথন মেন প্রতিভিত্ত চক্র পরিভ্রমণ কবিশ্রে গভার ভার ভার ভার করি 🖏 এবং স্বছ চেতনে সমূদ্র হট্যা, স্কানে ফি-রিরা আ**দে,— আদে** কেবল ভাগের জাগিন **অভ্যন্তার অ্মা**গ্রিক মহিমাগ নিম্প্র হ্ইটার। **企业**对以 1

চরিত্র।

গ্রের প্রথম লক্ষণ ধারণ।। মনোর্ছির চুই প্রকার অক্ষা অন্তর্মুগ ও বহিন্মুগ। প্রথমটা শ্রামাগনের অনুন্ল, দিতীয়টা প্রতিক্র কুল। মনের যে বহিন্মুখ ভাব, অথাৎ বিহ-

বের প্রতি ভাষার হৈ দৈর গতি, ধর্ম তাহা शातन या ह्यां करता हेहाहे धर्मात वायगंक नकर। कि अपरनत्क यत्नद्र अहे रेख्न अपि निताध कतियात निभिन्न अतीत्रहें विदेशक दावश्री काइन। यनि हेट्टा क्ल द्व नहीं न पूर्तन हरेत यन करने मित्य **এবং নে অবস্থা ভাষাকে যে দিকে ।** নিয়োগ করা শুহিতে পারে; কিন্তু বাতৰ ইহা দার্থ ধর্ম বলের একটা ঘোর অব্যাননা পরা হর। ধর্ম শ্বরং এই কার্য্যে অসমর্থ বিলিক্টা (যেন একটা বাহা শক্তির আ্বশাকর্ডা প্লীকার করা হয়। আর গদিও স্বীকার কর শরীরশোষ্প ধর্মের একটা অভীপ্ত সিদ্ধির **খানা, ইহাড**াঠিক নয়। কারণ ধর্ম্মের প্র-ভাৰ মনে ৰে পতি আনে মনের পকে ুইহা ভা ুশিকা অর্থাৎ অন্তঃসাক্ষার, ইহা ক্লিছুতেই শাইবার নয়। কিন্তু শরীরশোষণ প্রভৃতি উপার মনে যে গতি আনে তাহা ৰাছা ব্যাপার মাত্র। ইহা শিক্ষাও নয়, সং-ক্ষারিও নয়। স্তরাং কারণের অভাবে_ককালে এই কার্ষের নাশও **আছে।** স্তর্কী **য**দিও আপু ইছা দারা কো**ন ফ**ল হয় কিন্তু তাচার স্থায়িতা নাই। পুরাণ পাঠে দেখা যায় কোন অধি দীৰ্ঘ কাল অনশনে শরীর শোষণ পুৰ্ব্বক গ্ৰীম্মেৰ উত্তাপ, বৰ্গান নৃষ্টি ও চুন্তৰ শ্বীত সহা করিয়া মনোনিগ্রহে যত্ন করিশ टब्राइन किस खोरमालया अक निर्मार क्रीहाद अस्ट अस्ति वार्थ क्रिया जिला। माठ गानिवास हैश त शहर नव নুৱ প্রাচীন ক্ষাৰ্থ ই বিজে, তাহাই বলি-श्रीटबन । क्रांत्रके अकति क्या करे, छाहाहे. প্ৰকৃত্ব পতি ৰাহা সহস্ৰ সহস্ৰ ৰিয়োগী শতিক বিষয়ে অসম পুরুতে পারে। এই कता क्रीक्षम द्रा कर्पा कि निर्द्रात्वत्र शतक चनगरक कामकाकम्बद्धानं नारे। जिन

হন কিন্তু ক্রিক্তির বিলাস মন বিরোধের।
শক্তে ধর্মবেলই পর্যাপ্ত । আর মসুও বালয়াছেন শরীরশোষণ মনের শিক্ষার পর্কেশ
প্রকৃত্তি উপার্য নয়। অতএব ধর্মই আ্যাদের
মনোন্তুত্তির বিক্ষেপ ভাব দূর করিবার এবং
তাহাকে বিষয় হইতে প্রত্যাহার করিবা
বিষয়াতীতের প্রতি লইরা গাইবার প্রকেশ
যথেষ্ট । ধর্মের এই প্রথম লক্ষণ।

দিতীয় লক্ষণ তেলেনা। ভার্থা**ৎ কর্ত**ন ব্যার্থে নিয়োগ। মনুষ্যের কি সঙ্গট ভারতাঞ হতীতের কোনও পদান্ত নাই, ভবিষাৎ নাতিপরিক্ষুট আলোকে দৃশাসান একটা গভীর অন্ধকার। আর তাহার বর্ত্ত-बात्न এই निन्छीर्भ मरमातः भरमात स्थ কি প্রহেলিকা কিছুই বুঝিবার বে। নাই। ইহাতে কেবলই বিচিত্রতা। প্রীতি ও বি-क्ष्मि, भाभ ७ भूग, इर्घ ७ विशाम, याखर ও রোগ এইরপ নানারূপ বিরোধি ভাশ ইহাতে প্র্যায়ক্রমে আসিতেছে ও বাই मनुषा माना श्रकात जिल्लाकाशाः করিণ সূত্রে অবিদ্ধ। মনুষ্য-স্থাকেরও আগ্রা মন্তক প্রস্পরের বিরোধি স্বার্থে জড়িত। এরপ অবস্থায় ধর্মের প্রেরণা-শক্তি ভাষাকে রকা করিতেছে। আমরা ধর্শের উদার বক্ষে স্কল সাথ্কে সমবেত দেখি এবং তাঁছার প্রেরণা অনুসারে চলিয়া থাকি। ইহাতে সার্থের মধ্যে গরস্পার বিরোধ ভঞ্জন 💘 এবং সংসারের স্থিতিও অব্যাহত পাকে। देशाहे धटकात (क्षातना । 🐇

এখন ধর্মাকে বাবজেন করিরা তুইনি ভার পাইলাম। প্রথম ধারণা ক্রিকির প্রেরণাঃ ধারণা ভারে মকুরা মনের প্রজ্ঞানিক ক্রিয়া বাকে। আবার ধর্মোর এই তুই উপায়ান মতুবের চরিত্রের ক্রিছে ছারণ ক্রিকেরে চরিত্রের ক্রিয়ার ব্রারণ ক্রিকেরে ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার

জের ভিতর্ভ ুদুইটা শক্তি অলকিত ভাবে तिहशादका विका दिला वह गाया हरें एउ अव-তর কে। টিতে অধাৰমায়। যদি ভৌমার বৃদ্ধি বছ বিষয়ে বিক্ষি প্রত্থাকে উত্তৰ সেইরূপ অস্থি-রতার অবস্থায় তোসার কার্যাপ্রতি ছইবে না। একতর কোটিতৈ—কোন উন্দেশ্যে তোমার স্থির হওয়া চাই। ফলত ইতা ধর্মের ধারণাগুণে ছট্যা থাকে। বিতীয় বিচারপূর্বক কার্যা। অর্থাৎ অকার্যা হইতে কার্যাকে পুণক করিয়া ভাচার অনুষ্ঠান। ইচা প্রত্যে প্রেরণাঞ্জে इहेरा भारतः। यक्तरम कथः १६८ महरत हजिज-বান হয় না কেন! ইহার এক উত্তর ভার্থ-পরত।। সার্থপরতার লাভ ৃত্তি আছে। কিন্তু চরিএবভায় অনেক্ জ্যাগন্ধীকার চাই। আবার এই ভ্যাগস্বাকার যে কিরূপ কঠিন ভাষা বৃশাইতে ধ্ইলে সমুব্যপ্রকৃতির বিষয়ে কিছু বৰা প্ৰিশ্যক। জগতে গুই প্ৰকা**র ভা**ব **আ**তে। ভগলে ক**তকগুলি কঠোর আর** ৰুত্তক'র কোমল। বে**ত্ত**লি আগুতুপ্তিকর लाइंडित विद्वाची जाश कर्रीता देशांक चा-মর। নাতি বলিলা নির্দেশ করিলাম। ে গুলি আশুভূজিকর প্রস্তুতির অনুকূল ভাহা কোষল। ইহাকে ভোগ **নামে নির্দেশ করি**-नाम। यनुषा अकृषि धरे पूरे जादवर की छ-मक ४ हेश आहि। किस त श्राहित जामू-লত কঠোরতার লোহময ক্লোড়ে **লালিভ** হর সে কোগলভার অভাব সহিতে পারে। আৰ বে ভারুতি আমূলত কোমলভার প্রান্তরণে পার্শপরিবর্তন করে তাহার পক্ষে কঠোরতা महा इराना। जगरण और भारहे रत्नरः। **उट्टर क्यम क्यम य रेक्ट्राव व्यक्तिहात (एया** यात लाहा निकात कन स्वतार विक्रम । अपन দেশ ত্যাপন্থীকার বলিতে কি বৃন্ধায় । না, স্ক-গতের বৈ সমস্ত কোমল ভার মনকে অধিকার করিয়া আছে,বার আতত্তিক সেই ওলির नयक्रताहा। रेक चरणा जातेन साभात।

কারণ যে প্রকৃতি আমূলত কঠোরতা দূর শুইতে দূরে পরিস্থার করিয়া ভাতত্তিকর কোমল ভাবের বিনিনয় ভাতার किहूर और इस ना। एन हेश यनित পুদর কিছ পেন্তুর নং। **८४८त এই** विद्यापि वार्निएक् मीमाध्मा जारह। जः মরা ইতিপূর্বের **আমূলত** একটা কথা ৮-লোগ করিয়া**ছি। তাহার উদ্দেশ্য এ**ই গে বালাই অভা**নের প্র**কৃত কাল। শংস্কার পাদারে অন্ধিত রেখার নাায় কিছু-তেই বার না। যদি বাল্যকাল হসতে কঠোর ভাবের সভিত পরিচয় হস, তাহা হইলে त्भेवत्म जागनीकारतत् किल्ल्याच यस्त्र। নাই। এই জনা প্রাচীন ভারতে বালোই নেকা**চৰ্যের বাবস্থা** ছিল। শৈশৰ কাল হইতে কাৰ কোৰ-গোভ শুভৃতি প্ৰহৃত্তি গুলিকে पगम कतियात जना शक्त-मुशार्टिक जिकाह, তেজোগাঁও নিয়োগঙ বিলাসকল। পরিহারের ৰ্যৰ্ছা দেখা যায় এবং আপনার স্বাৰ্থকে ভুচ্ছ করিয়া অন্যের কার্থকে বলবং করিতে (एशायाकः। खाञ्चनामि वर्गकः वानः इटेट्ड এইরপে পৃথিবীর সঠোর ভাব দকল আয়ত্ত ক্রিত এবঃ ইয়ারই বলে যৌরনের উদ্দাম প্রবৃত্তির উপর কর্তৃত্ব করিতে **পারিত**।

শালো কিরুপে সংনীয় হয়। আনি এই
টুকু বুঝাইবার নিমিত্ত প্রাচীন ব্রক্ষাচর্য্যের কথা
তুলিয়াছি। পুর্বের ধর্মা ও নীতিকে এক
পর্মান্তে বুঝিত। তবন বালা হইটে ক্যাল
যে ইহার শিক্ষা হইটে টোহা করে শিক্ষার
মা ত রাম্যতানত অপরিহার্যা হিল। করেন
শের বল কতি চমংকার। আক আনাম নে
কার্য্য তালা লাগিতেছে না অভ্যানের বলে
কার্য্য তালাই জীতিকর হইটা থাকে মি বিশেষত বালে এই প্রভাগ মান্ত্রিক সহকে
হয় একটা প্রতা বালোগাকে অপ্রিণিত অব-

বার ত্রি যে দিকে ইতা নোডাইতে পার কিন্তু পরিণত হইলে আ গরিবে না। ফলত মনুবার প্রকৃতিও তদ্রপ। মনুবান ভক্রণ থাকে তথন ভাহাকে গে নিক্তিলর দিতে চাও পারিবে কিন্তু যথন কৌকনের নানাভাব আসিয়া ভারার উপর আধিপতা করিতে থাকে, র্বন কিন্তু সকল কাবে পুপ্ত হয় কিন্তু তালাকি সমত করা বড় স্থলাক কান। অত্তর বালাই কঠো-

কিন্ত এখনকার সমাজের অবসা কি
শোদনীয়া খবশা, লোকে ইহা ল্ডিয়াছে
নি বাল্যকাল হইতে ধার্যশিক্ষা দেওয়া আব লিকা কিন্তু সূক্ষা বুঝিতে গোলে ধর্মের লিকাতে নয় অনুষ্ঠানেই কঠোরতা। রক্তমানে ভাষা পাম্পূর্ণ উপেকিত হইয়া খাকে। একে ভোএইরপ কঠোরতা শিক্ষায় উপেকা ভার উপর আবার জীপন হালা-বিবাহ। ছত্রাং এই ভোগান্তবন কালে চরিত্র লিকশে সভব হইবে। আর যদি চ্চিত্রই না থাকে তাল পুথিবীতে ধর্মের স্থাবিকতা কি, উপব্যেলিতাই কাছি।

স্থাজার ব্রাদ্যদাজের নায়ৎ-সরিক উৎনব উপলক্ষে ব্যাখ্যাত।

শাল আৰু কি বলিছে আৰিয়াছি।

শাল বললে এখানে আনন্দমানের ইন ন্তন্
চিক্তানাতন বার্তা ভারবার জন্য উৎস্ক হয়ের সাহিয়াজেন। কিন্তু সামি কে। আয়ি জানি। সামুদ্ধানিবার কি কারিবার আছে। আমি কিন্তু করিয়াছি যে ন্বন্তির করিয়াজি এরল হবার জন্য ন্কলকে কর্মান ক্রিয়াছি ।

সম্ভ বল্প করিয়াছি ।

স কৈৰে আপুন জনতের আৰাজ্নাত সকলতে বিজ্ঞান করিতে আসিয়াছি। আমি কহিতেও প্রক্রমা, করিতে চাহিনা। আমি কিছুই করি নাই, আমি এই পুৰিবীতেই চিলাম— তবে আৰু আমি প্রানন্দ্রামের বার্ডা কি বলিতে আসিয়াছি।

কেই হয়ত আমাকে বলিবেন তুমি ব্রি
ভানিয়া আসিয়াছ। যে সকল মহাপুরুসের।
ভাক্ষণমে বাস করিতেছিন তুমি বুঝি ভারাদের কাছে কিছু ভানিয়া আসিয়াত মুখে মুখে
সকলের কাছে ভাই প্রচার করিকে চাও।
ভাই বা কই ভানিলাম। বিনীত ইয়া ধৈর।
ধরিয়া ভাই বা ভানিতে পারিল ম কই। প্রাম
আপনার কথা প্রনাইতেই রাজ ভালানের
কথা ভানিতে আমি অবসর বার্লা কি ব্লিভে
আসিয়ালি।

जात कि ा-मकन कथा मक**रमहे जात्म** দেই কথাই আমি সকলকে **জানাইতে** আসি-গাছি। মনুষোরা কোন্ বৃহৎ **সভা না জানে**। দতোর মহারু, এেমের মহারু, দয়ার মহারু, G (क ना जारन क्ष्यिश्ता, G (कहे के क्यारन) धा मक्त कथा धनि खानारे हरेते हात हित-দিন ধরিয়া বলিতে হইছেছে কেন্ট্রিনডা-दमन क्यार नामुख्य, नेटकावरे क्या एक जिलाह জয় হয় না, এ কথা চির দিন জনৈতেছি তবু वृत्तिएण्डि ना दकन ? याञ्चवर नेर्स्स्यूर्ड क्र প্ৰাতি স্প্ৰাতি, আত্তবং সক্ষীবাৰ मिनि सिर्वम जिनिहें गेष्ट्रविक स्मर्थन এ কথা কভ দিন হইছে জুনিতেছি দিছ শসূত্ৰ করিতেছি না কেন ক্রিট সকল প্রাতন কথা প্রতিদিন মাসুবকে শুক্তর করিছা শিথিতে হইতেতে, ফাৰে ইংগালিক প্ৰায় क्षे जानाज्ये। कि केशिश हॉनक। GICIE A CASSAGE A DE VIDA DE

জানি না, আমি বাজপুণ অব্ভৱ করি মা। আমি বালড়ে পারিব না

ज्य बाबि कि विनन । नावमात्र जिल चित्कडन, नाध्मित्र द्वित्र विहात सूत्र, भेष नामी भाग भूकर्य केंद्र विदायकान आ-ুজার যে নিভত নিলয়, নেই খানেই যাহা-দৈর নিতা যাতায়াত <mark>খাছে, দেইখান ১ইতে</mark> বঁছারা জ্যোতিশান হইয়া আসিতেছেন, ভাঁহাদিগকে জিজ্ঞাসা কর ভাঁহারা কিছু वेलिट्ट शांतिर्वन—चार्यि এইगाउँ मःमात হইতে আদিতেছি, সংসারের ধুরি লইয়া श्रांमिटरुष्टि, क्यां निका निका भ्रांनि वामना লালনা সাধ্ব্যতা প্রয়োদ কোলাহলের আবর্তের মধ্য হইতে আদিতেছি, এপন ও হৃদয় ধৌত করিয়া আদি নাই, এখনও শুচি दह नारे, भाख हरे नारे, वाचि वानमश्राद्यत বার্ত্ত। কি বলিতে পারি।

ু সূত্য প্রচার করিবার **অধিকার সকলের** নাই। সত্য জনাতুত কাহার ও কাছে জাদে না। সত্য উপাৰ্জন করিতে হয় লাভ করিতে হয়, কৃষকেরা যেমন করিয়া ফললাভ করে শ্লালাভ করে তেমনি করিয়া সভা লাভ করিতে হয়। সতা **স্থপে**র মধ্যে নাই, जिल्लांत्र मट्या नार्दे, मछा कार्रवात्र मट्या आहेह। কারণ সতা ঈশ্বরের স্তা, সতা আমার সৃষ্টি मट्ट। जैचरतत्र कांट्यात मट्टा जेचटतत्र निर्मेग পালন করিয়া চলিলৈ তবে সভা লাভ করিতে পারা ৰায়। তুৰি যথাৰ্থ ভালবাস, তবে স্থবের ভালবাদা ব্রিতে পারিবে; তুরি দরা কর, ঈশরের করুণা অনুভব করিতে পারিবে; ভূমি সত্যাচরণ কর, ইপুরেই অগ্নৎ তোৰাৰ বিক্ৰছে ক্ৰাটি কৰিবে না । নেবকের निकटो छाष्ट्रम मध्यान काल्या वाक हे मदबन विति क्षेत्रक क्षेत्राह केटिक से प्रवह महा শাইবে । স্বভ্রের সেকক কে ? বিনি ट्या क्या करतम् । सिनि भिजामाजाद (स्व

করেন, প্রতিবেশীকে সাহাগ্য করেন, বিনি

ক্রমন্ত জগৎকে প্রীতি করেন আর বিনি

করেন আলুনেরা করেন হাহার কাছে সং
করের ক্রান্তিনিবে, আন্দের করা শুনিবে
না; তাঁহার কাছে রুহুত্বে প্রতি ভারবাস ও

কুদেশের প্রতি বিযার, ক্রাতের প্রতি সন্দেহ
ও নিজের প্রান্ত প্রতির বাহারে চলে আনার
তাহাতে চলে না, তিনি বলেন প্রেম

তের নির্ম কিন্তু সার্থপরতা আনার নিয়ম।

দতোর চির-উৎসারিত অনন্ত প্রস্রবণের সহিছে বাঁহাদের প্রদয়ের যোগ আছে ইছা-বা**ই সভা** পাইতে পারেন। জনগ্রের মধ্যে एटर श्रीवद थनन कतिया त्य, जामता किहू जिन ব্যবহারে গত সভা ধরিয়া রাখিতে পারি **जार शाहिल्ला। 'मरजा**त वित्र-क्षाताहिल প্রত্যাদ্দ দহিত আমাদের হনয়ের চির্যোগ तुमा बिरंज रहेरन। भूरवात निक्र रहेरज বের্ক্সনামাদিগকে চিরদিন উত্তাপ আলেকি, এহৰ নিতে হইতেছে, কোন কালেই ব-লিক্সেরি না, "ষথেষ্ট হইয়াছে, আর আ-वभाक नारे, अथन किছू फिन हिन्दा याहेरव, , এখন কিছুদিন আমি আপন উত্তাপে উত্তপ্ত पाकिक यानन चादनादक ठातिनिक चादना-विका बार्वियं — एवमि स्थात कना है अद्भार गाजा बना विव मिन्द्रिक ভের দিছে শঞ্লি প্রদীরণ করিয়া করিয়া करन विवाह महियात कना त्यम चुरिताल वाई-विकास वाता केतिएक अहेरत, चीरमान भारेतात कता अवस विकिश्व चार्टमाक छह-त्रह गाँख एक्ट त्यांग बाका छाटे द्रावाद সভোৱ ক্ষমা চিৰ্বাদন স্থানত সভোৱা সাইও नव ररेश आक्रिक स्ट्रेंटि स्टीम जारकेंद्र गर्या मध्य हरेका का किएल हेक्टर

ে বে নিজ চাতেন। ক্ষিত্র লব্যের সহিত তেওঁ অসম্ভোষা সুদ্যায় ভারন্যায়া জ্যো-

তিগ্ৰয়, মতোপাইতংগ্ৰয় ৷ অবাহাৰীপ্- ক্ৰিয়েৰ্ডং প্ৰৰং আৰ্ভাৰণ আৰ্ভাৰণ কৰ-এমি। রাদ গতে শিক্ষণং মুখা তেন মাংগ পাছি নিতাং। অসং দিতে আমাকে নাটা লইয়া যাও, হতু হইতে আনক্রি প্রতে नरेश राज। एर अध्वान श्राम निक्ते थानानित रु। अनु, रिनाई य अन्य पून, ए। इति बाबारक महिल्ला का का । विशे भारमादतत् इंग्लिट्स दिल चमाजा, दर शिक्ति নিন খ্ৰীক্ষ্ৰশৃতঃ সভোগ থাতি আকুলতাও षायारमञ्जूषाल एरेशियारिए । अरे बना ৰীৰ নিশ্ত ভীত হট্য়া নিভাত কাকুন इरिश नेभावत करान द्वापना करिशाश्रासन — রলিখাভিলেন (**ংছ সংক্রাশ,** আমার নি-কট প্ৰকাশিত হও।" আআদের মুধ্যে লে अयम जाएको दिनि ग्राप जीवा श्रे कि न ি বৰুতে প্ৰায়েন "আনি কোন স্বস্তুত চাচি না ই ছান্তবিকই কি কেন ক্ষতাকেই আ-भता शिक्ष इतिया वर्षन काम न है, जामास्नय ন্ত্রীবনের অবলম্বন করি ন.ই. কণ্ডের ক্রিক্সের কু দাভিত্ত হইয়া কি আনরা কেনে **নি**য়ভার ভাতি সেহাপূর্বক বিশ্বস্থাত নাইনী ভবে আমতা মুখে কেবল প্ৰণ্ডাৰা দলাব্য িল্যাখনা ইচ্চারণ পরিয়া সভা লাভের অবি-জানা ইইৰ বিৰূপেৰ আমাণেৰ এখানে কে ভ্ৰমন আছেন দিনি শ্ৰৱের স্থিত ক্রিতে श्रीटार्न-"रम्माङ् राण्डा मागुन् किसी न्दर्भन क्रमाय याशात नाम जाम जरू मा दहेव े छाँहों नहेंग्रा पामि कि कतिया छ। यनि ना न्त्राहिलीन कद्द सूर्य "श्टलार्गाम्बार्गम् उक्कावन क्रांबराश्चिम् स्नाहका परिचारी रहेन कि करिया र जिल्लामा करायत गाकुन्छात गृहिज्ञक्तिक्त बीनग्रीक्ट्राम "अनेट्रामा-गमानक काराबार बाद अवदिक तिमग्रा-

ৈ**শোন শোন অহতের পু**রোলা শোন, **(मार्क हिस्साम्यामीशर (मान, का**नि (मरे মহান্ প্রিষকে ক্লানিয়াছি যিনি এরকাধতে অভিক্**ষ ক**রিয়া বিরাজ কারণেডেন্!— धरण कि आमता दलिए शति।

ৰিন্ত তবুও ত খামৰা ভৰ্ক ৰবিলে ধাড়ি না । তহও ত খানবা বিষ্
া থাকি, খন-তের মুণো পুথ নাই জীতি নাই অনুক্রকে কাল্পনিত গ্রেমার সংগ্রেম করিয়া প্রেক্তা-बीच क्षाप्ताल साल आहाराज खुद भारे, १०८४ ভাষ্ট্রক এটিও করিছে পারি। বিরক্তে আমি এন অফোর করি নাই, মার্যক প্র ইসার জন্য হানয়ের মুধ্যে ব্যাপু ল**তঃ তামুভর** ८८३ २०१८ **'ठाहारक शाहेश ऋथ ना**ई ७५ गा বলিবার অধিকার **আয়াদের** দি আছে। বীতাং এক গে জানিয়াছেন, উল্লেখ্য কল-शांदलम 'कुदेशन खगर मारल क्षरण क्ष **जुगारे द्वयंभ**क्षा, बाह्य द्वल सारे। जागता অনুমানের অভ্তত। গন্তিক্তা কইয়া সে कदार ४ छिवान रविद्या गाँहे (काम् मार्था। একপ্রার্থ জাকার ভারে যে, এরভার্মার্থ র আয়তাধীন করা । যার না। - মি এ - তিনি দ্বাষাদের আমতের অভীত বলিয়াই জাঁচাতে चामारपत अञ्चाब स्थ। যাহা পাণর; পাই ভাছাতে আমাদের স্বায়ী প্রশ্ব, নাই, গাছা আমুৱা আয়ত ব্যাহতে পাহিলাভি ভাষা আমরা তাপে করিতে চাই, চিরদিন পুষ্টিয়া शहरात्क वाभाग किविषम (अव कविर्ण भारत না তাহাতেই মান্তদের আনন্দ ৷ অভন্ত কে তর্ম করিতে আসিয়াছে যে, অনতে সুর नार, गीबाटकर द्रथा है साम सामजा ना ठारियः, जथन, गुडादक नरेखा (कामरत्त्रम् मिद्रा हारे छ

याद श्रीपेनिहें वादि सीत त्नान श्रीपेना नाहें ।

तहें अक शार्थी प्रकाशनदात नम्पत्र ।
शार्थनात नमष्टि—तमहें अक श्रीपंनात मानतत्र मम्पय याना, नम्मा स्मान तिनीस हहेते।

ट्रायात निन्दी एशिक हरेटल्ड। तम

শক্ষরতানে সংশ্যম, জনসোমা জ্যোজিন্ম মু-জ্যোক্ষা সংশ্যম ।

এ নালা, বি আমানের চারিদিকে সহস্তান্তর সংস্থান কলিছা আমানের স্থান্তর স্থান্য স্থান্তর স্থান

শেষণা যে এক ার ভালবাদি ! नीटर शाष्ट्रभ र ११ शामनी निष्यासूर्य नार्फ ক্ষীরতে চাই। আনোকে আমাদের আবর্ধ क्ष्योहिन कतिया । एक्टम, असुभारतम् कूल्टा খা দৈয় ভাগের কলক ক্রিকন প্রকাশিত ংইয়া পটে, মহদা তেমিছেন্চরজাপ্রতি নেটা CF शिट्ड शाहे— दम्**यिएंड शाहि का या** दिस्क াৰ কেন্দ্ৰ দৰ্গে পড়িয়া বাঁইয়াছে, আমা-अत यानविक्तित्वक क्रीका खल्ला क्रिकाहिगाहर, उपित चारिन **जन्मन करिशास्ट** + धरे चेना चामता पारिमार ठारिमा, पार्वता चापा आंग जिरे, जीशसील अवह मी बरे करा यामृत्रा था लनतिक सीमाहरू निरंड हाई-रहर ने निरंप करने कारिया উপুত্তি হয়, অসমসানা কৰন আসিয়া बोष्ट्रम करत, तिमान क्यन जीनिता शास्त्र महा चानिएछ भागि ता। अरे जना गान

বের প্রেক্ষণ প্রাণ্ডা ার কি হ**ইতে** প্রারে তিমনোক্তরেলা ১৮০০ া তারিদিকে শাস্ত্রকার আমাধেন ক্রেটিক ১৮৪৪ । ১৮৪৮

কার্থকার হও। কাল, গুলি প্রকাশিক নতা, অসকার, ইয়া সমস্য দ্র কার্থকার কর্মানির ক্রের দ্রেই প্রকাশ প্রকাশিক কর্মানির ক্রের দ্রে ইয়া যায়, তেনার অসকার প্রকাশিক ক্রের নেই ক্রের নেই ইয়ে সামান্তির কর্মানির কর্মানির কার্থকার ক্রেক্সানির ক্রেক্সানির কার্থকার ক্রেক্সানির ক্রেক্সানির কার্থকার ক্রেক্সানির ক্রেক্সানির ক্রেক্সানির ক্রেক্সানির ক্রেক্সান ক্রিক্সানির

তি ক্রিক্টের লোক্তার করা মুবের লার।

আনাকে করাকির করির। লাও, আনার নার
নিলা করাকিরা লাও। তেক দ, আনার্কালা

কর্মির করার বোগা কোনার করে নার।

অথ্যে তারা বিনাল কর ডাল্ডর পদে তোরা।

লাক্তার প্রেলা কর ডাল্ডর পদে তোরা।

লাক্তার প্রেলা কর ডাল্ডর পদে তোরা।

শ্রেকার করার প্রেলা করে।

& SE CANTING HE IS

दिवसंदर देवमनित लिशि।

gham Hall Pulpit Vol III N 34. Their is Reinciples and Belie 165 m.

Grinciples and Belie 165 m.

Grinc

শাকাৎ করে বিজ্ প্রতি ডাজার বাবর পরি

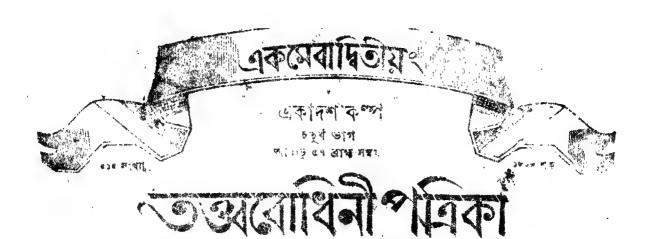
সাকাৎ করে বিজ্ লান করের সহিত সাক্ষর

করিতে বাই তথন তাহার করিত এবানকার পালা এক
লা দেখা করিতে আইটো। পর্যানকার পালার গ্রুত্ব

স্থা। কেবল দৈ চিড়া থাইতে ভাল বাসে। ওরিলার
ভাহারা বেল পড়ে, তাহার পর জানা ক্রেন্সে আনন
বেলুলাই করে না। ভবাসকের কর্মকাতীর প্রভিন
ইরিলা নার সকল সভাান করে। তাহার অর্থ প্রাত্ত করিবানা। পাণ্ডালিপের মধ্যে হই একজন লোক বিভান আছেন।

হত কাতিক—অস্য "Life of Macaulay by George
Trevelyan" পাত ছবিশ্বনাধার মেকলের জাগিনের
"নরাণামোত্রল এন: ।" বেশলের নৈথার সভ উত্থল
ভীবর্ত রগায়ক ভাব জানার, তাগিনেরের লেখাতেও
অনেক প বিমাশিত ক্র এই প্রত্থেক অস্য নেকলের
লৈপন বর্তার গাঠ জালাল। কেনলে এচোড়ে পালা
জেলে ছিলেন বিভিন্নের জালাল। কেনলে এচাড়ে পালা
ছিলেন না। তাহার বর্ত্তের ক্রান্তির কাহার বাহ্তা র্তি
ক্রাহিণ, এত র্তি ক্রান্তির কে প্রিক্রের জার্ডি
ক্রাহিণ, এত র্তি ক্রান্তির বাহার বাহিত না:

शाहिक विकास तरि वार्य वार्य स्थानिक प्रतिक वार्य करिया अपनिकास तरिया स्थानिक वार्य करिया वार्य करिया अपनिकास करिया अपन



क्षकाराज्यासः प्रश्य माप्रान्यम् एक प्रमानगर्भाद्यः सन्धे मध्यम् । सद्ये नित्ये धानमन्तरे भिनः स्वयन प्रमायमकारे सावकार्यन् वर्णनाम् १००१ नत्न । सन्धित्वमन्ति । सन्धित्वक्षिक्षिक्षिक्षिक्षिक्षिक्षिक्षिक्षेत्रम् । एकस्य सेस्विप्रस्तिकद् सन्दर्भ । स्वयम्भारकद्यामनगर्भवः सन्धितः विक्रिके विविक्षेत्रम् साथनः सः स्वयम् स्वयम् ।

कानि डा मनमाज ।

ত কৈন্তে জবিশব এখন সভাই **৫৭।**

1887 . 1974 S. . 1984 . *

কেনে না কোনু গণ্ধজনসূত্ৰে আবদ্ধ হইয়া -कान ना कान अध्योधन भारतनंत्र छै। फरण গ্রান্থা ভারা একত্র সমাজত হয়। এখানে আজ কি সম্বর-সূত্রে সমাগত হই-भाक-वासारमत लागाकनरे वा कि १ इस স্থন্ধ-সূত্রে এপানে আজি আমরা সমাপত হ্ইয়াছি তাহা অতি উচ্চতর সম্বর : (महे अवस बाहा | आजीत महिल बाजातहें मञ्चत । नतीरवर महिष्ठ भरनव মত্তর, ভাগা আমাদের কাহারে। স্থানিতে यनिश्चे नारे ; मतंदत्रें चाघा जनागित्तरे यटन जापाछ आएम, महीत्र क्रांख इटेटनई मन बारमत रहेका लट्ड, नेतीत खर रहेटनहैं यन अकुल एक । नहीं ब खर गरेनद गर्गा **এই विमधक** हेशातक भागना विल-असि কিন্তু আলাতে অ'লাতে বে শশ্ব ভাছা ভারে। উন্মতর স্বস্তু

এই উপদেশ শ্যানবাখার একেন্সনেত্র ব্যবিক

উৎসদেশ পঠিত হবরাছিল। সং

विजय (कारमें भयक । र मिन्यूल लागन दिन आहे हे हुए, निख्य दर्शन मुख रनर्देश पादा भावाएक नाए है इस । जुला য়েশালী রতের বলন হাড়াইণা উঠিয়া উর্বে कि कि है। यात्रा त्रहेत्रण लात्नेव क ष्टाष्ट्राहरू के किएक शाहितक है अन्न स्था . ज्यन्य होर। करीय गरिवाय दिवनि छ इस-उपनेरे काश हरेएड हैं एक कारनद होसि अदः विकृत् ध्यास्य नावना कृष्टिल वारिल হর। আত্মার প্রতি মসুষোর ভালবাস। गमुका गमु (शत भहात गन दिविद्यात्र नां—काका दिविद्य गाँह, नवह শরীরের উপর অবিনশ্বর আগ্রাকে ধ্বয়-যুক্ত **ट्रिंग्टळ** होता य बन्यादक जागता (मध त्य, जिल्ला नयत गतीत व्यवनयत चामारक नुधन-तक क्तिरा भटक घाटके - छेपनता लहेका ट्रम्भिक्ट है। द्वारात टाजि जानता विकास वर्षण कार , किस पाहाटक दम्बि द्यु, काराव महिनच्य जाजा भन्नीत्रमनद्वी विजन ८८६न वनी पूक्त करिया हानारेटलंट- छोडाह शकि অৰিক) আন্তৰিক ভাক্তির সহিত্য সন্তক আৰু मञ्जना कविया पाकिएक लाभि मा ; आश्चेत প্র**তি মাসু**যোর এইরূপ **আন্তরি**ক ভাল**্যা।**

আহাৰ আতি মনুকেৰে কেই যতি ভাল-বলো, ভবে টেন ভালং উদ্দেশে খন্দ্ৰেক শ্ৰ **যাইতে না** ন্ট 😁 মন্তলেও চরণ কলিত वर्षेक्षा द्वारा १९८० कता सञ्चम इत्सी পরিবাঁ হয় বলিও পর ভ্রিয়া সাধ – ভা হার পর জেমের অবেদ্য বা পাইয়া নিরুৎ-Pie ইয়,—এইরবে মনুসা বিপাকে পড়ি-हार्थे पाला **श्हेर**ल धनासूच अन्न है।हात অভাৰ বাহে, কিন্তু সভিত্ৰ অভাবেট আন স্থার প্রতি প্রত্যুক্তে প্রতিষ্ঠান হয় না ভাষা নতে কিন্তু এইটো মন তাওৰৰ ধানতে टंगियरिक भारता एविस्त ता, जनकिहै तम ী অভিছেপি ভারত। ধে অমূদ লালে আজ্ঞ ध्यान्हे तरक "जारा असव ठाउँ में हैं। १०६ শ্ৰাহা বলিয়া ৰাখনিক্ট যে বে অক্টিডায় ना जार, नारं, रस्या जम नाउ कारहा তেহ বাৰ বলেন 'শ্বামি আগতে চাই না,' उदद **म्यूक्य।** मृत्येत कथा- कारखन कथा। मिट्ट। विवास वाप्तवा (४, नार्वे मा उद्देश ें भटके- बाबाटक जानेबा गाहे में, हेक्के किकः तिक शहिना ? यागापत रेवर्ग नहि; আন্তঃ কোনের আশু ভরিভাপতার জনগ साख १रे . बायारमव भाष्ट्रम सरीविता---পার্টের স্বাভারের ; কিন্তু আন্ত পিপাসা निवृचित्र जना लागेता अके वाख (प, शारत ংক্তিরিরী দেখিবার আসাদের অংকাশ নাই---भेबी हिक्क पश्चार शुक्रांट मन्द्रवरे धार्विक रहें उहि। (भाउन मुंशकृष्ठि, श्विन व वाका, মুন্দর অস্ব জি জাল-চলন-এই ভারি^ক (पविवा-माज समिनि सोगार्गक मन् विशा क्ट्रंट (य, प्याचा देश जल्लका प्रदेक प्राह कि ध्हेट शादा। जदम विहासाजाद छहे। ৰাখাকে অবলোকন করা আমাদের অভাপন शाहिशा शाह्र ; शालाह देवपादन निष्क निद्क-उन् टमशाद्व जामन विशिष्ट्रभाषा प्रिशिष्ट्र भार ना -छाटे स्मर्थादन चाम्रादक्छ एन-"

विद्र शह मार् नार तर नामित ভিন্নতারী। বিশিয়া অমিলা তেম সংস তাহারাট আত্মাকে দৈখিতে প্রিন, বাঁচাই ্প্রেমর কৃত্রিশ বেশ ভূষা চা'ন ্ ভাছার भाग्नाविनी अविकादि आञ्चात मिहेर्रामदन আরড় দেশিলেই ভাষ্টের চক্ষ্টারভূপ মনুনের উহত প্রীর শরীর সামারে গ্রাহিম্ভি, সনুসেরে গ্রন্থা মণাতবি আঞ্চারটা ছবি, মধুযোৱ ভালনাম না ৬৪ কণা কৰি ७ एक एक पाइतरे नेहराया । लेख আৰুলৌ যে একিন্দ, আৰুৱে যে ছবি ব আ**ন্তার√**ম **গীভে**জ্যে স্থানেই আহি৷ ক'ং छाड़े जारीनक अभ्य अंतर भागिता, सामर আহার ঐ স্থান্টিরাগরণ তালিলে ব্যক্তিন ধ্যনিক আ, সাংক্রিক্সের এক্তি **আখ**ি দাকার कारा हरू है भावतः मान्यविद्यादक् — के वा हास तम प्रदेश बादादिनी अविमा जोशति जान অভিযাৰ কা য়েছে; অকিলাৰ পাপ-এজ্বাস এতে **ষ**থন সৈ ৫ ডিমুর্ডি পুলি নৃতি ৩ইশা প্ৰসংব্য ছবি - বিহ্ৰান ছইয়া যাত্ৰ, সে গী-তেও ুল বেলয় বেল্ডালা এল বৈ প্র হইয়া যায়, তথন বলি পানাদের ভ্লাভান डिझीनाय छोर। इरेटन १ सम्पः । जन उस मंत्रित क्षा भागक वर्रहे शाहित है न হাল স্বাস্থ্য করিয়া রাজ ার্থা আসিত্র शिद्ध-माष-शर्ग (म ७क वस मामाना कर्ष-**ग**िहिटके ताका थल कहिशा जाहांत छवरन ক্রেট্-জেব্-ভলি সমর্পণ করিয়া জাপনাত্ত कुछ्क्रेटार्थ भारत कोहल,—এजु श्रदेशार्थः दर्शन কাৰ্যাই দিছ হয় না। আজাই ব্ৰন আন্ধ-দৈর লক্ষ্য তথ্য আত্মা পর্যান্ত পৌছার্ক্যা চাই, নহৈলে আমাদের সমস্ত পরিভাষ বি-कल इंटेर्न, दमरनामिन्दे रक्त जान चन्द्र-কত্ত অপশ্বত হইছে।

शुट्क विनशावि एग, नवीब अनः मानव सुर्दा रायन आद्याव होन, व्याचाव व्याचाव

त्मरक्रम रिवर्केक टक्टमंड होता। यदन स्टब काम्सा मिलको दशासक अक्रमाडी इहेरसञ् क्रानक मगर जारती नह क्रिका शालत माप्ताकारन बड़ारेश शक्ता रिडक रक्षम এক সময়ে আমাদিগকে বলিয়াছিল যে শ্-उपक क्या कतित्व, किन्न अथन णागता टेम्डिक बार्टा निकारत जामिशाहि-তাহাকে শ্ৰাদের ভয় করিয়া চলিতে হই-তেছে; প্রেম বলিয়াছে ক্ষমা করিতে—কিন্ত প্রাণ চায় বিদাশ করিতে—এখন আর আ-মরা প্রেনের কথায় কর্ণপাত করিতে পারি না৷ শত্ৰ-বিনাশ দায়া যখন প্ৰাণ পরি-जुहै हहेन, **उथन** जायदा काँमिट विनास ''ছায়া প্রেৰের কথানা শুনিলাম কেন।" পৃথিনীতে প্রেম অপেক্ষা প্রাণের আদর प्यक्ति। यन जैवेर भेतीदवत सरक्ष श्राटेनद হেরূপ প্রব**ল বন্ধন—পৃথিবীতে আ**ত্যায় আন্ধায় সেরাশ প্রেম-বন্ধন সুঁজিয়া পাওয়া ভার। কিন্তু প্রাণের বন্ধন বালির বাঁধ— প্রেমের বন্ধন অদীম অগতের ভিত্তিমূল। खार्यत वक्तन मञ्जूरसाह हेर कीवनरक छाल করিয়া আরত্ত করিতে পারে না-বিভন্ত প্রেমের বন্ধন মনুর্বেক্তি ঐছিক এবং পারুত্রিক সম্বস্ত জীবন ব্যাপিয়া আপনার এভাব স্থ-র্ধন করে। প্রাণ্ঠ্রবং প্রেমের মধ্যে সাদৃশ্য এই যে, প্রাণ ধারণ বেঁমন শরীরের পক্ষে নিতান্ত প্রয়োজনীয়, প্রেশ-ধারণ সেইকুপ আত্মার পক্ষে লিতান্ত এরোজনীয়; আর, बाहा स्वयन क्षांट्यत अनुकृत, वर्ष देशहरून বিশুক ৰপ্ৰবেদ অনুকৃষ; আৰাদ, অভাৰা বেমন প্রাপের প্রতিকূল, অধর্ম সেইরূপ প্রেমের প্রতিকৃল। প্রতেদ এই বে, প্রাণ दक्तम भन्नेरतबरे मद्यत मनी—चा छाड साहे। 👊 প্ৰনা তাহা অহায়ী ; বিভন্ন শ্ৰেম শাস্থায় প্রমের স্থী—এ শ্লনা তাহা চির্ভারী 🖈 কেন খানরা প্রকৃতিকে এত ভয় করিভেছি— रतारभन वेष्य परमक चारकः क्रिक अञ्चन

ক্রেন এক পুরুব—বিশুদ্ধ প্রেম। বিশুদ্ধ **প্রেম, সাক্ষাৎ অয়ত**—ভাহাতে ভারে। ক্রিঞ্জ স্ঞান্ত স্থাসর ও মটল বল-শালী হয়— **अक्रमी दश (य, स्ड्रा**— ज्ञात जाहात निकारि আসিতে পারে सो। বিভার এএমের মভাবে আত্মার যে কি হীন-দশা হণ তাহা আর বক্তবা নহৈ, তখন আন্ত্ৰা কামে কল্যিত ক্লিবে অন্ধ, লোভে লালায়িত এবং যোছে অভিভূত হুইয়া, সর্বাদাই উন্মত্তল সর্বাদাই र्षाश्रम-गर्तामाई गलन-गर्तामाई छेविश হইয়া ইতন্তুতঃ ম্রিয়া বেড়ায়—শান্তির মুখ এক মুহূর্ত্ত প্রদৈখিতে পায় ন। ।

অভ্যাব বিশুদ্ধ প্রেমের সহন্ধ সূত্রে আ-মর যে আৰু এই পবিত্র স্থানে স্মাগত इहेराहि हेहा याबाएमत अत्य (माञाता। अथन श्रीगारनत कि ए: ह्यांबन-कि कर्डवा কার্যা ভারার প্রতি একবার প্রাণিধান করি।

বিশুদ্ধ প্রেমের সম্বন্ধ স্তেই আমরা এথাকে নামাণত ইইয়াছি, বিশুদ্ধ প্রেমের ठिविका जारान्य थायादनव थादाकन। প্রতিষ্ঠান একরার আপনাকে আপনি জি-জাগা করন "তুমি কি চাও—কঠোর কাৰ্য্য-কাৰণ শৃত্বলায় বন্ধ পাৰিতে চাতি—না তাহা হইতে মুক্তি-লাভ করিছে চাও ?' পত-পদ্দী-কীট্র-পতম্বেরা কেমন বেশ-দেখি প্রভূতির ক্রোড়ে নিজবেসে শরান শ্বাহে— कारता दक्त जाहा भारत ना 🛊 बाबाएमत रेग्नवाहात जागरा (७। दण हिलाब- ७०न बाज कि बात क बातिक बातिकार मा, एथन की अनर कवन- मर्ग अनर मक्-স্থান্ত্ৰৰ কাছে সন্ধান ছিল, স্থানাদের ক্ষেত্ৰ ছিল না, আশকা ছিল না, ভাবনা ছিল না। ত্থন তো আমরা **৫**. হৃতির क्षाहरू पिना निर्करत भूतान हिमाय- **এ**খन হুত্তিৰ ৰখন হইছে মুক্তি লাভ করিবার



^{নিপায় অবেষণ} স্করিট্ডিছি ?' শিশুর অব**র্থা** इनकि हिम्में अ कथा। यामारण एई-র্মীপ , তার কুলের সহিত 'ও-নবানর সাধুশ্য খ্যাতে, কিন্তু মাধু-প্রস্থাত প্রতিত উত্তরে জান ु शादा मानुन्ति । हे,---१ ७१ साहे ५ नदम द मानुना अपीय रिक्ष भाग धानाया-कके कत महिल विकासन कामादना मानुना मारे; শিশুর মাল লাবে মহিল বিশুজ জ্ঞান-প্রেমের নাজুল আছে, কিন্তু মাঝ-গণের क्षक विकास भारत अंडित कार्याता भाषृभा गाउँ। ११७ कार्या-कातद्वत ध्यहा-स्ट वाम विविद्ध व्यक्त कामा-काबानब কোন ভর্মই রাখে না - অনিভর্কে চন্দ্র ধরি-नात अना ६७ लागातन तरत-अपनिक অংগতে মৃষ্টিগত করিতে খাং। বিশ্বস্থ टिश्वस्थ कार्या-कार्य-कृष्णनाटक प्रजाहा करत —প্রকৃতিকে অগ্রাহা করে: ভাই ক্লিডফ্র-क्षीरिक माराम व्य**रहरू** वी बनिया हिस्से हर्ने-अद्भारकः, नंभादश्कृते पार्थाद द्मार्ग)-१,४३१-শুভালার ভাতাত গৈতির অকুজিন্দ্রিলরণ-ু ল্যানের সহিত বিশুদ্দ প্রেমের এইরূপ সাদৃশত िल्ला क्रीया गाना नाम्ना<u>ल त्यमने न श्राह्म</u>ल ८७०मि : दोक स्विक्ना गरिई जनवात । छा-क्ष्य-नगर चारतारके उद्योगित्र निखर শ্রেমারিকতা অজ্ঞান-তিমিরে আ্রাজ্বর; বি-ওম শ্রীতির আন্ধ্রিকতা জ্ঞানজ্যোতিতে (बार्षिकाम् । निश्वतः वर्गातकेला- ध्वरः विश्वक खान-दशकाह जमानिक्छ। उहे हुई कूटनत मेंशायटन विकारिनते भेही खनाहिल ছইতেছে। শিশুরীত বর্গেন্থীন হর তঙ্গ कार्यः कार्यन्मृश्रमात मिद्रुक छोट्छ गृष्टि शद्रुत्। শরিতে চুই একবার তাহার অঙ্গুলি জ্ঞ্গ হুইলেই আৰু গে অগ্নির দিকে অগ্রসর ল। । অপক্ষা ভাগকে কাল-কারপের শা-পিপাতের এশিবা নত ুকরিনে **হ**গ। भिष्युषा अगन शांच नटह :त, तम कामा-वान-

- द्वात कट्ठात मानिशाली कुर्त कृतिहा मस्तिक-নিবে; মপুষোর উল্ভেক্তীৰা কিছুতেইংল হইবার নহেঁ: ংতুষা-প্রকৃতি-রূপা পুলীৰ অবকে বিজ্ঞান-মজু দারা বন্ধন করিয়া আপনার মভাষ্ঠ ধাসে নিযুক্ত করি**তেছে**। মৰুষাই বা এলভিকে জানায়ন্ত করে কেন প্ররাই বাভাগানা করে কেন্ প্রম্ভান পোলে কে কি চিক্ল সভাৰ্ত্ত প্ৰাহাৱা কৰিছিল পাৰে, তাহাবা মুক্রে ভরস্বার হালিত হয় অবচ সমুদ ক্ষেত্ৰত গাগুনা, কিন্তু সে नगर्छः। अनुभू जीतम ५७।यभीन पादधी स्म ব্যক্তি সমুদ্রের কেশ্য মারা অবিচলিত অপ্ত সমুদ্রকে দেগনিগভরে ভাসারিত দেশিলে भाषा भए भक्षांता एक जिल्लान আছে, তাই ভাষায়। প্রকৃতিকে জ্ঞানায়ত ক্রিতে গারে না, **–মনু**ষ্য প্রকৃতির **ক**উচ্চ শ্রুদেশে গাড়াইলা পাছে তাই মে প্রাকৃতিকে জ্ঞানে আয়ন্ত করিতে সম্পা বিকাশ-ৰং ৷৷ মনুষ্য স্থাতের কাঠ্য করিব-শৃত্যাল दर्शय**८५ शाम्र-किङ** दि कूटल मांकु हैंग, মধুণ্য প্রকৃতির তির্শ্ব-লীলা অবটো কন করে, যে কন প্রক্লতির অভীত – বিষ্ক্রতাল অগনা; গৈ কুল বিশুদ্ধ-তোম্বে পাজ-বিশুদ্ধ জ্ঞানের গম্যান বিজ্ঞান মনুয়েনে ৮০০ नहें गरह—निस्त दिश्वक क्यान दश्रम भेगू দ্যের পরম গ্রীতিভাক্তর বন্ধু। সেমন দাস-বংগার সাম্পে - শেত্রগানি বিভগানের সংশ্রে নাম্পু-থোল সংহটুর সক্ষক,—আর, যেমন হাদ্ধর বন্ধুর মক্ষে– ভেননি বিওস্ক জ্ঞান-ভোমের সঙ্গে—মনুযোর অহেতুক স্থল। দাদ কি बना ? ना भियात बना ; विख्डान कि बना ? न बाहाय हानाहैवात्र बना—धरक अञ्च ক্ষিণ্র জনা—নেজু নিশ্মাণের জন্য-এক কথায় দেবার জন্য 🧎 বিশুদ্ধ-জ্ঞান-প্রেম 🔭 धना १ धर्भातन कि-मन्। धिकामात्र (कान वर्ष नाई- जेथारन कान कारनहरे कना-

ट्यम क्ष्यात्मत है क्लानिक्सा के किन्तु गर्दे किमा अटर। विश्व कोन स्टार्यन अवेद मान्ति नचरक संयुक्तात दकान साभाज-श्रदशासनीय क्राकानिक निर्देश करत में। किन्छ काश्रीत है-পর অভান্ত এগটি গুরুত্র বিষয় নির্ভর कदब-मनुदेशत मनुसाई निर्णत करत, - जाश-রাই ওবে মার্ঘা, মার্যা হয়, তাহা যাথার माहे रम-मनुगारे नरह। পশু-পক্ষারা গ্রেক্তিকে চিনিতে পারে নাই, তাই তাহারা প্রস্থাতর রাজো নিরুদেশে বিচয়ণ করি-তে:ছ—কল্য কি আহার করিবে, অদ্য তাহা চিনিয়াছে – তাই সে প্রকৃতির অবিকৃত্রী नाम कतिहा किছू छा में स्थाय नाज कतिही छ লারে না, – ালেরির সভাত প্রদেশে, আপ-নার একটা বাস খানের আমোজন না করিয়া কিছুত চই নিক্ৰিয় থাকিতে **পাঁ**বে না। আ ম্বা আয়তির অভীত এদেশের লোক— তাই আননা প্রকৃতির কঠোর শৃখলার প্রপী-ড়িচ্ইইরা 'দিবা**নিশি জেম্পন করিতেছি**র जाका भेजटलन "नश्रामं इटक अक्तर्यानीय-ट्याध्योगः। ८गार्काक मुशामानः" —श्रीत भवी-রাভান্তরে নিমগ্ন হইয়া নিতাত অসহায় 😻 म्हामान क्रिया — (नाक क्रिएड थ्राक् ''जूहेर यन। भगाजाना गीनायना महिल्लानाकि वीज्राकः," यथैन दम जामनात्र मञ्जूनीत्र অভূকে এবং তাহার মহিমাকে দেখে তথ্য ুনে লোক হইতে মুক্ত হয়। স্থানীয়ের क्षियन मुक्तिनाजा आक अथादन जाना निशादक एक्या निरंदन - जाशांक रमिशाः क्यांका बीन जटमाक रहेर-**ारे पामनो अहे माहि** यन्तित भगागे हरेश्राहि। बाबा नद्य আশ্রু পর্যাত্মাকে অবলম্বন করিছে 🚗 যুরা নির্ভয়ে বিচরণ করিব—ইহাই আয়াত श्रापन।

শাৰ তোমার আরা-

E Year

विकास करा भारती और शिवा मिन्द्र में গত হইয়াঃ েতামার মূচসজীবনী শে-जिन्दल जुमि जामापिशदक जीवन जान करा। যাহার আলোকে ভক্ত জনেরা ভোমার দর্শন शस्त्रिया **चानुम-मान्**रत निनीन स्थ चानारमञ অভান্তরে সেই চকু ফুটাইলা বেও; যাহার **्टर्श हैंनि-धीन गर्छ। यानव ८७१मात शहिमात्र** महोशान रुग्या जगत भनती कुळ तता. तमहे **প্রেম তৃত্তি আয়া**দের **হ**দহা*ভান্তরে ভিদ্*গিপন कर है स्वीयता मकटन कराया रहेश कर মনে তোমার চরণে জাণিণাত করিভেছি তুমি ভাবে না। কিন্তু মসুষ্য প্রকৃতিকে বিলক্ষ্য জ্বানানের পূকা গ্রহণ করিয়া আমাদের ব্দ্যের চিরাভিলায় পূর্ণ কর--ভোনার অ-ম্মানু শান্তি-বারিতে আযাদের সমস্ত পাপ-**ভেল্প গ্রন্ধারিক**ু কুরির। আমাদের আহাকে 'তোমার সহবাদের <mark>উপযুক্ত</mark> কর,—আমন। তোম্ব শর্ণাপন হটুতেছি—ভোম্ব বিমল ब्राज्योतिए इति योगोदक्त मगेख चक्रकात पूत्र कतिया (पश्चा

্ ও একদোৱাৰিতীয়:।

सूर्गन-मराह

11 20

मून्ड्य-नक्त वरिव छक्छ। ति इ म जावुद्ध क्रिक्ट कर् उपानि शहला धराके हैं।

এশন যে শ্ৰেষ শীক্ত বজান ভাহাৰ त्त्रेन असल् स्था (प. <u>करे</u> सालदाह-कारल क दम शृहात अव इ-मन्द्रात विनेत वााचात्र ৰঞ্জি এখন ইয়া কতিতঃ কতক প্ৰিয়ালৈ ... ৰ্বিতে ব্ৰায়া মহিনে। ঐ মূলভত্ত্তলি মূল-হিত তাই উহাদের স্থাবিকারে এত বিলয়। ক্রিছ বদিও ছবুজ্ঞানের কোন রীতিমত শাস্ত্র नार, जा' विनया चार्यका अक्रभ गत्न कतिएउ नाति ना (य, छेशत्र क्रिक्न मकल अ-यावर কাল শক্তিহীন স্তা**হীল**ু এবং সাড়া-শব্দ-হীন হইয়া চুপ কৰিয়া প্ৰতিয়াছিল; উপ্টা

হিছে বা নাটা, উহারা ব্যাস্ क्षेत्र विका क्षेत्र पड़ द्वानी टिशव गटन नाथ नव कम इत छेति हरेश छित्र। नरकाम के नान रीम-धार कान सार्म प्रारेश हैन या दछ, किन्नु बहा हिक বে, উহাদের করি উহার। অতি সংগোপনে এবং-বিঃশব্দে স্থাধা ক্রিয়া আসিতেছে। অাশ্চরা ক্ষৃতভার ক্ষতিত উহারা দৃষ্টি-পথ-षा उत्रम् कृतिया का है तिनीन स्टूडा यात्र ; अकर्ना, कं य छशहा – जाहा किहेह बाह्म ना ; "উहादमन शतिष्ठश श्रामन केवा **ब**ढ़िखान-वियहक अस्त्रनात कन्त्र नटर, खारा এমনি একটি যুক্তি-যুক্ত এছকৈ অপেক্ষা করে—বাহা म क জ্ঞান এবং তাহার মূলতত্ত্বনরলের क्रमिक वराया गदला कहारे शबेद पान प्रिकरे रुपेर-शिष्ट्र- कि प्राप्त रहे च प्रकृतात्त्व स्था अने सम्प्रकृत नाम বে-তাৰ অপেকাৰ্ড তক্তৰ এই ক্লাচ্ছ্ৰ ভার ভিতরেই জার-**এইট্** এগিয়ে **স্থানিত** बार्ट्गाल्या अरेश विनिन्दात्त्वा कता सहरेत । वनारन এই अवेदि क्या मिर्माण हैना अस्तिक शाद्य ते , जिक्कारमे के बना मानक , भागता आहरू नेव सामा भागता श्रापानणः हुन्य छहात श्रेक चित्रका छेपान-मान, खेशन लेका के क्षारमाकन, कुन्नत्य क्रिश किरमद असे असमियाद असे कराइन कतिता वर् एकन केला मन्द्रिक मन्द्रिक ना छाहा कुछ रहा। अ कुने किए या पह शक्रिकित निर्मात श्रम्म, उपनि साम्ब अवाद्य हत्य। छहात्रा मर्गन-त्माणादनत भाषात भरेले, ज्यानि लाटक पदनक का त्मत्र शत पाउ करहे जल पेशास्त्र मसान शाहेबाद्ध। छहाता छञ्ज छाटनत यूगाफि मिक वीय-वाषिय ज्लेत, इशानि व्यत्ना नराष्ट्र वाष्ट्रास्ट छन् उद्य नाहे। उप

তানের উল্লেখ্য কর্মা-এরাজ কি ক্রান্ত একটি প্রেক্ত কর্মা-ক্রেড ক্রান্ত ক্রিক্ত ইংক্তে তার সন্দেহ ঝাই নক্ষল জ্ঞানের এক ক্রম্কল সভার মূলতন্ত্-ক্রিক্ত একটা অপরিক্ষ ই আবিশ্রতার মূলতন্ত্-ক্রিক্ত একটা অপরিক্ষ ই আবিশ্রতার মূলতন্ত্-ক্রিক্ত একটা অপরিক্ষ ই আবিশ্রতার করে কেরা দিয়াছিল। ক্রিক্ত করে ক্রম্কে বিজ্ঞানিকে তাহা তাহাদের ক্রেক্ত করাক্র বিজ্ঞানিকে সাথা হয় নাই। পরিক্রার পরিচ্ছিল আর-অন্তর্কার মূথাক্রতির নায়ে তাহা ভাহাদের মৃশ্রেষ ব্যাক্রতির নায়ে তাহা ভাহাদের মৃশ্রেষ ব্যাক্রতির নায়ে তাহা ভাহাদের মৃশ্রেষ ব্যাক্র এক ভারালো অলোক্ষক স্তার করেনে ছারাচ্ছম ক্রিয়া রাধিয়াছিল।

্রথমা তথ্জান কোথাও আলোপার প্রমাণ করিয়া। তোশা দুই হয় না।

এ ব্রান্থোন স্থানেই এরপ দেখা যায় না যে, তত্ত্ত্তান আদ্যোপান্ত ক্যোতিশার विकासन्त का है तुरः, ज्यान है मानी कृष्ठ मन ्चाइ अक्षे सामाव । ওত্জান আগনাৰ कारी। के कार्य बार्ग कार्ड करने खेनलाक क्रक, व क्रिकार दम-काशी अन्नान हहेएड পাবে আহার উপায় স্থিররূপে অবধারণ্থ করুক, ছবে ছো সে ওরাপ কইবে। তাহা যতকণ ना हरेटछ क ना दम जाननात मून-তত্ব নকন আপত্তি করায়ত্ত করিতেছে, এবং ভাষাতে করিয়া ভাষাদের কার্যোর প্রানর ও अस्त्री नहीं समयहे वाननीत हत्कत म-ৰাজ বৃদ্ধিক ধরিয়া পাইতেছে, যভক্ষণ সে আন্ত্ৰনাৰ মূলতত্ব-সকলের কাছে আপনি মত-িৰ ও ইত-জ্ঞান হইয়। প্ৰড়িয়া থাকিতেছে; ভত্তপু পর্যান্ত ওরূপ অভিজ্ঞতা-লাভ ভাহার कारक चित्रव नद्द। त्योगिक मञ्जू नकत- .. ত্র-বিভাগার থাদিয় প্রবর্ত্তক-স্কল—তত্ত্ব-कारनेत्र मुक्तिका जिल्ला जिल्ला महाग्रह्य कतिरबरे (य, गर रहेन, जाहा नहरू। जाहा-দের প্রভাব, যাহা এ-যাবহু কাল ভিছত্ত্ব

ভিতরে করেয়াগনে কার্যা করিয়া আদিতেছে, ভাষা প্রকাশো-পরিষ্ঠ ইওছ চাই, তাহা হইনেই তত্ত্তান আপনার ক্রতিত্তর নিগৃত बार्क विकास प्रशिक्ति हरिया, कि कारणत कन भृषिवीटक सामिष्ठाटक जाश मनाक अवगठ इहेगा, अर मिलि दिस्तानिक पिश्विकत्यद অন্ত পরে অবিভিত্ত ইইয়া; বাহির হইতে পারে। কিন্তু রাশনিক আনোটনা অপেকা-क्र भी**र्यकाल श्रिता प**र्जी हे भएग नाशिश गा থাজিলে, ওক্ষণ **হুবজনুক** পরিণামটি স্বটিভি স্তলন হটবার নহে; কারণ, ফালে যাহা প্রথম, জ্ঞানে তাহা, চরম ৷ এজনা, এ-যাবৎ, কাল ৬ ড আন কেবল এইরূপ সর মতামতেরই ফাঙ ভইলা প্রালভেত্তে সাহার কোনটিই পোড়া হটজে: ভ্ৰমণ কৰিয়া তেনুলা নাই। নে-নব ল মতামত লেখিলে মলে হয় ষ্টে খে, ভাছাদের অপেক। শ্রুতী দত্য আর কিছুই ছইত্রে পারে না, কিন্তু দুগালি ভাহার। বোধ-क्षमा नात्यत त्याभा २८७ ; त्कनना, द्रा धातन মুক্তি দার। সমর্থিত হ উক, নয় জ্ঞানের অবশান্তানী সত্য ইউক, ভূমের না এটি— न। ७ - 🖟 - १क्षा १ इट्टिंग विद्यान-महत्त्र কোন বিছুই বোধগম্য শব্দের বাচ্য হইতে भादब ना।

অবশ্যভাবী-সভোগ আজ্যাখুলীৰ ভত্ততালৈর সামি । অকটি প্রতিষ্ঠ - কারণ শি

যুক্ত-ছীনতার প্রস্থাধীন ক্রিজানের বেরূপ অসম্পূর্ত। প্রদানিত হইল, তাহার কারণ-প্রদর্শন-ছলে আরো এই বলা যাইতে পারে যে, প্রাচীন কাল হইতে একটা প্রা-জম-শালী প্রয়ন্তি ভক্জানের বৈধ প্রস্থাত প্রতিষ্ঠা হইলা আসিভেছে। সে প্রর্তিটা সম্প্রতি কোন-কোন মহলে প্রকট-ভাব ধারণ করিয়া এইরূপ এক প্রতিভা-আকারে কেলা দিয়াছে যে, জ্ঞানের নিতান্ত অবস্থাতী তথ্য-ভলিকে বভদ্র দাধা অল্লের মধ্যে

সক্ষৃতিত করিতে হইবে,— ীহাদিগকে একে-नारवरे छेड़ारेश (नन्द्रा मा 🕫 👸 – कराउः উহাদিপকৈ বিশুদ গণিতের সংখ্য স্থাটক कतिया राथिए इस्टि—अस्या नाम्टित यारेक्ट प्रचिशा हरेक ना। उन्हारे कांड সর্ম ; কিন্তু যেমন আর আর প্রয়ের সম্পন্ত তেমনি ইহারত সক্ষেত্রলা যাইতে জাত্র যে, কভকগুলি সাধারণ মন্তব্যের লগে উ-ৰাজ মমুচিত শীমাংগা হইতে পারে না --উহার রাজিখত মানাখন ক্রিতে হট্নে বিবাদের সাম্জ্রী গুলিকে (অর্থাৎ স্থা: ১ব শান্তাবী সভ্য-গুলিকে) সাক্ষাতে জানিলা, **উপস্থিত করা চাই। এ গুলি প**ে খণ্ড হানে আনিবে। याना लाट्य, एक्ट्रांटमञ মণ্ডেই বাস্তব্য বাদাসুবাদ অথবা ভাগে लांग गतिखत शतिष्य-क्षमर्गन, जिस् कि तरमा, अथन (करन मार्गनक আলোচনার গতি-রোধক কারণ-গুলি দেখা-त्नार बामादनंत अत्मन्द्र करेतन, क्लारमंत्र অবশক্তিবী সূত্য-সকলের প্রতি হত শুদ্দা नाकि जे देखिन खिला गर्रा गर्ति धार्म मन-कुछ, **बहु क्याहे क्या**रन छाहारमंत्र श्रम् केरमय कर्ता।

भवना सायी नुष्ठा काशोरक वरत।

যাহা হউক, অবশান্তারী সভা কাহাকে রলে ভাষার বাাগা উপালকে তুই এব টি সন্তা এবানে প্রকাশ করিতে হানি নাই। তাহাকেই জানির বিলি জ্ঞানের আলে ভালা সভা বা অবশান্তারী নিয়ম ধাহার বিলে বিলি ক্যাবনীয়, হবিরোগানা বা আল্ডাবনীয়, হবিরোগানা বা আল্ডাবনীয় কাহার সংখ্যাপন-কার্য্যে প্রকাশ জাবী যাহার সংখ্যাপন-কার্য্যে প্রকাশ করিকেও করিতে পারিত বে, পৃথিবী স্থাকে নহে কিন্তু স্থা পৃথিবীয়ে প্রদাশ করিকেও এরপ কর্মনার্ছে প্রদাশক করিকে, অক্তাই এরপ কর্মনার্ছে

স্ববিরোধী কিছুই লিকিত হয় না। তুই পকই
ন্যান সম্ভবারক ছিল। কিন্তু প্রকৃতি কোন
অবস্থাতেই নিম্নলিখিত এ নিয়নটি সংস্থাপন করিছে পারিত না যে, কোন একটি
স্থান প্রইটি মাত্র সরল রেখা ভারা, পরিবেষ্টিত হইবে; কেন্টা, পরেন রেখা-ভয় যদি
কোন একটি স্থানকে পারবেউন কুরে, তবে
তাহাতে কেবল ইহাই প্রক্রিপম হইবে যে,
উভয়ের—হয় একটি—নয় তুইটিই—ব্রোক্রিণা, এইরেপে, অবশান্তারী সত্যের বিরোধী
পক্ষ আপনিই আপনাকে খণ্ডন করে।
প্রতিপক্ষের স্থিবিভ অবশান্তারী সত্যের
নিদর্শন-চিছ।

তত্ত্ব সিদ্ধির এই-যে একটি নিয়ম যে,
তত্ত্ব সপক্ষের সংস্থাপক এবং প্রতিপঞ্জের
প্রতিবেশক, * ইছাই অবশান্তারী সতোর নিদর্শন-চিক্ত। এ নিয়মটিকে সল্লা
লাচক যেরপে অবিকার দেওয় হইয়া
লাকে, উহরেক ভাহার আক করিয়া প্রদ নিম করা বাইতে লাহের। নিয়মটি এই বে,
যে বাহা - লে জাহাই ইইরেন ক যে—
বে বাহা - লে জাহাই ইইরেন ক যে—
বে বাহা - লে জাহাই ইইরেন ক যে—
বে বাহা - লে জাহাই ইইরেন ক হে—
বে বাহা - লে জাহাই হিরেন ক ভারাক করিল।
ক্রেকেন লা ভারা নিয়ম মনে কা ভানি বলিক্রেকেন পারে ইয়ান প্রভাগের এই যে

PART HICE SCHOOL STREET AND HER SET STREET S

रन शहा ना इएएक शादन के बना यादा - उँदा लोहाना इंडेक, अञामात क्यामि **अटक्वाद्वर केन बिहा जा क** ; जारा देवरक দাঁড়াইরে যে, ভৌদার কথাৰ মূলপ্র ফলিতার্থ উভয়ে পরস্পরের বিশ্রীজ স্তর্হ উভয়ের একটিকৈ এছা ক্রিক গেলে আর- একটিকে পরিত্যাগ করিছে হর। কোন্টিকে গ্রহণ করিব ? তোমার কথার व्यर्थ श्रथरम हिन, "य याश - रंग जाश. ना হইতেও গাবে" এখন তাহা উণ্টাইয়া গিল্লা এই দাঁড়াইতেছে "য যাহা—সে তাহা ভিন্ন আর কিছুই হইতে পারে না" এই তুই বিপ-দ্বীত অথের মধ্যে তুমি আমাকে একটি ছাড়িয়া ্তার একটি গ্রহণ করিতে বলিতেছ — তোমার অনিত্যুত্ত প্রথম অর্থটিই গ্রহণ করিতে বলি-হৈছে কিছু সেইটিই যে ঠিক্ অৰ্থ তাহার প্ৰশাৰ কিন বৈ যাহা সে-যদি তাহা ল। হইতে ও পারে, ভবে তোমার কথা যাহা— নৈ যে তাহাই কুটাধার প্রমাণ কি 🙎 তাধার वक्द्रे श्रमान आगादक दन्या ७ - नार्टन শানি তাহা এইৰ করিতে পারি না।" মানু-यहि हुल। हिनि श्रमान पर्नाहेर्ड भारतन ना । यस्तर किन छ।शत्र के कथां है त्त्रम, ज्यानहे किनि विना-श्रमात् अभवा मानिकालाम (म. ७ क्या याहा- छहा छा-হাই। এইটিই আমরা চাই। তত্ত্ব-সিদ্ধির निष्य भागनिरे जाननात्क शाउनक क्रिन रिक्ट । यहा अवीक्ष स्ट्रेस्थ बीक्र হয় ; কারণ, যিনি অ্যাকার করেন ভা-बादक हेश बागिएक है इस दर, जिनि चकी-কার করিতেছেন, খণ্য। যাহা একই क्षा जाहारक मानिएड इस स्व, जिनि बाहा विविद्धालन छोहार दनिराज्य वरः ठारात भएक रेशां गानिए रक **्र छोडाइ ट्रांडिंगफ सम्ब ईमार्गर जिल**

ৰাহ। বলিতে হন তাহা পনিতেছেন না—এই करेगा जाना नहें जा भीना रहा। ऐराट . बाब किছू ना दशक खादनव (এकि क्षिण्ड) कर्तनान्डांनी नजा जाटक, हेश क्त धरमः कि जकि पाकिट शास्त्र, ভবে অনেকগুলি আকিতেই বানা পারিবে क्षा करने, श्रीष्ठलक-नाष्ट्रित नियमि क खंडित कि करमाछानी नियम मा वनिशा এই বলিলে আরো ঠিক্ছয় যে, যে সব সতোর বিপরীত পদ দ্বিলাত-গর্ভ, সমন্তেরই উহা সাধারণ ধর্ম এবং অভিজ্ঞান-লক্ষণ। ইহা ৰদা বাহনা যে, প্ৰতিবক্ষ-বাহাট্ৰ ও যে নিয়ন (চি না, সে ঘাচা -দে ভাগার বিপরীত ছ্ট্তে পারে না) উলার নিজের কোন **গুণ** নাই। শুদ্ধ কেলে উচার নিজের প্রতি দৃষ্টি ক্রিনে উল্লেখন জিব্রুর **হুইতেও অকি**-কিংকর। উল্পন্থয় খবশাভাবী সতোর সংক্ষিপ্ত পরিচয়-লক্ষণ বনিয়াই উহা যাহা কিছু কাজে লাগে। অবশভাষী মত্তার পরক্ষো এই যে, চাধার প্রতিপক্ষ স্ববিঘতি-গর্ভ কি নাঃ ভাষা ধৰি হয় তবে তাহা यवार्थहे अवनाकाताः, लाहा समिना ह्य, অর্থাৎ, তাহার বিপরীত পক্ষ যদি স্থবিরোধী ना हर, তবে তारा भवना छावो नुष्ट- जारा আগন্তক মাত্র।

প্রভাবর্তন শ

এ সর বাাখ্যা-কার্মে এপন কান্ত হটুরা,
বে বিষয়টি নাকাং আমানের হতে আছে,
কিনা ভত্তভানের গতি হস্তা কারণের আমান সন্ধান, প্রভাতে প্রভাবর্তন করা যা কা এই বে এক অনুনক উপন্যাম বিনা প্রমাণে মানিলা লওয়া হয় বে, যাহাকে অবশাভাবা সভাত্যথবা আনের অবশাভাবী নিয়ম বলা বার হয় ভাহা কোন কার্য্যেরই নহে—নয় ভাহাক ক্রেয়া প্রভাত অন্ন যে ভাহা ধর্তবারু এক মিখ্যা- অপুবাদ খোষণা করা হয় যে, ও- 🕆 সক্ষাতোর অনুসভান অলৈ চৰ্চ্চা, ল সেমন **उद्खात्नत्र उ**द्याति साम्बर सान्द्**रा** ও তত্ত্বভানকে হৈছিল গান প্রিয়ুত এক-প্রকার বিজ্ঞান করিয়া জুলিবার কার্য, এমন षात किहूरे गरा। कार्यः प्रानादारी **সভোৱ অনুশীলন ছাড়িয়া** বিলে, ভঙ্জা**নে**ব প্রকৃত কীয়া পাছা-ভাতাই ছড়িল পেওম कबुकारमत भिंड (हारक कारने अ-খানে এই খালা লেখানো হটাতেছে ইছা পুর্ন্-কাথত মূল কার্নাটর একটি এনান্তর भाषा गढ़; ५७-७ जार दन करे दय, करियाद বেলায় ধাহা ওা দে, ভানের বেলায় ভারা -हत्य। स्थार । व चर्ना छात्री भारा-भक्त गाँकि छड्डासारक वाष्ट्रनाहरू कारणव বৈদায় নাডি উছারা সকলের বলেনী, जारे बर्गे चल्याट्य त्य, कार्याय व्यवस्थ উহাবা মকলের পশ্চাৎবার্তা; দৃষ্টি এড়াইসা लूकारेश **भाकिए** उ केश्री: गर्कारलकः २८३।, আর আলোকে বাছির স্ট্রার নদা উইবে স্কলের শেষে বাহির হয়। এ ছ'ড়া, ভার একটি উপরি-রক্ষের প্রতিবস্ক যাহার क्या किश्ररपूटको छटलंथ कतिशाहि, ,जाहात विकास अ अभिवादक यू विदेख स्ट्रेशाहर.— कि भार कि ना - अराहा पाकार माथा अशिंदक ना शाद्रव क्षार्थितक गवतना आर्थ नन दहहो। किंद्ध जन्म छशान जातकी बानाव नाव क्यान द्यमात्र मीलागान इहेशा किटिद, अति, क्वातका-महनाइहे नाम सा छ। न्। अमस्या पृष्ठे इहेटवृत

वनानि कदा देश्वरक छचळाटनत एतवण्।।

তব্জানের অচলিক্ষু বিশ্লাল এবং
চুরায়ত্ত অবস্থার সংক্ষেপে এই যে কারণ
দুর্গানো হইল, ইংগার উপসংহার-তহলে বলা
ঘাইতে পারে তে, কি ইংগত, কি কর্মানি,
উত্তর প্রদেশেই—অবশান্তারী প্রতানকল

विकि क्ल-विस्था अवेद जाद्भारा-निर्भाष दिहित बंधन थाटक जयानि जाशादनत रनी ্বিভেদ্ন মণ: **হইতে পারে ভাহা চই**য়াছে। তাহানের নধ্য-হইতে এক টি দল বাছিয়া ল বিষয় তাহাদের উপরেই কেবল পূর্বা-এদার্শিত **্রিতাতপক্ষ-**বিখাতের পরীক্ষা (অর্থাৎ ভাষা**টের** বিপরীত পক অবিদাত গর্ত্ত কি না ভাইার ু প্রীক্ষা) (প্রয়োগ করণনা হইয়াছে, অবশিষ্ট-**ंन देश श्रेतीका** छिलानं इहे एक क्षणमर्थ क्षथह · তাহাদিসকেও অনুনাত্তি ব্ৰিয়া ধরা হই-য়াছে-আগভঁকের দেনভাগ তাহাদিগকে স্থান দিলে ক্লিয়েন অমুচিত কাঁগা করা হইত। অবশ্যভাবী মৃত্য-মাজকেই প্রতিপক্ষ-বিঘাতের পরীক্ষা উদ্যাপন করা চাই, তাহাতে ঘাহারা পিছপাও তাহারা অবশাভাবী না-মের অবোগ্যা, পরীক্ষা-প্রয়োগের এই বে, विगुसा। वा देनियिला, এটि कारिकेन काक; ইহার ফল চইয়াছে— ঘোরতর গোলো-যোগ। ইংলভেরতভ্বিদপণ কাঁকের দুই।ত ष्यपुत्रदर्भ कि विद्यार्टिन विदश् क्लक शहियातन **जाहाक माथ अपना हार्राहर । अ**तमा हार्दी ছতের অধিশ্চিনায় ইন্তকেল করিয়। অবধি ইংলপ্তের পতিতগণ এক্লণ অবিচক্ষণত। সহ-কারে ভাহাদের শইটা ভোলা-পাড়াকরিয়া-ৈছেন, আগন্ত ক সজ্ঞানকলের সহিত তাহা-**पिन्द्रक मिनाहेश अञ्चल क्र**डिय**ि ला**काहेश-**ट्या**,पूरे ट्यापेन मटजान मट्या श्राटक याहा पाटक जाहा करकराद्वर छक्न कर्त्वा छेख-इंद्रक परमकार्ष अज्ञान व्यवस्त्री नगान विकास क्षेत्रान कतिसाट्न (स्, व्यवनेरहादी गाली हारि काराता आमर्परे यमि रहे क्षेत्र को कवित्रकन, जाहा क्रेट्टन जक्कारनेत ভাবী ব্যাসের পথ এবন্দার অপেকা মনেক করিয়াণে বিশ্বটক হুইত।*

তথকানের কলাকার করে করেয়ার কিন্তে প্রস্তাকার

पिठीय किंग्छा मा अस् (दशन कविश) क्रफ्छा दनक वर्तमान क्षेत्र (ए। य- यनक यह सूच

নদ্দিকে অহুবোধ করি বেখানে তিন নিদাক স্কুলকে ব্যেপিক (Synthetical) এবং ক্রচিক (Analytical) এই চই (শ্লেণীতে বিভক্ত করিয় উভরের স্কুলিক প্রান্তিন।

কাণ্টের মতে এরপা এক শেণীর সিদ্ধান্ত আছে বাহার বিশেষণ-পদেব অগ পূর্মা হলতেই ভালার বি-শেরা-পদে অবভূতি রচিচায়ে; বেলন এই একটি নিদ্ধান্ত एर. थिए-माजरे विश्वाहतान्। अकेटन विश्वाहत्वश्चा सक्-প্তি পূৰ্ব্ব-হইডেই পিট্ড অস্ত্ৰি বহিয়াছে; কারণ, বাহাকে বলে বিস্তুত পদাধ তালেকট বলে পিও; "লিও" **এই শব্দের** জিলেখ মান্ত্রই বুকার যে, ভাঙা বিভার-পান্; স্তরাং গিওকে বিপাববান্ বলা বাড়ার বিধা মাধায় তেল দেওল হাত। এইরপ কর সিন্ধাত্ত--থাহা নৃতন কিছুই বলে না, বিশেষ্য-প্ৰশৃষ্ বলিয়া চুকিখাচে - বিশেষণকে দিনা ভাষ্ট পুনকৃতি কলায় মাত্ত লাক্ত লাকের নাম ক্যাভেন এটিক সিজান্ত। তই কেণীর যাবতীয় সিদ্ধান্তই অবশ্লাবী गरहाई वक्ष्माकृष्ठ ; धिवर खिल्पूरकत ऋवित्यक्रि-डाई हैराइम्ब निमर्नन-छिरु; कावन, ' धक्रवात धवन পিটেগুৰ দৰে বিভাৰততা লক্ষণ কড়িত করা হইয়াকে. ডণল "পিও বিভুদ্বিন্ নহে" বলাও যা, আর, পিও भिखनाह बवाब हो। -डेस्टारे नमान।

আর-এক শ্রেমীর নিছাত আছে যাহাকে কান্ট্রিকি নামে নিকেল করেন। যৌগিক নিছাতের বিশেষা-গলের অবস্থানির আই কল এরপ নিছাত কথানা কথনো হৈরবিজিক বলিরা উক্ত হয়; বৈবৃদ্ধিক—অর্থাই নামন করে। কান্টের মতে নিছাত কানের রুমি নামন করে। কান্টের মতে নিছাত নকণ, আনার্য, আর-ছর শ্রেমীতে বিভক্ত,—(১) আগত্তক এবং (২) অবশান্তাবী। "ঘণ্ ব্রুব-সাধা" এ নিছাত্তনি আগত্তক; কেননা, ত্রুব-সাধ্যতা লকণ বাদ নিরাভ্রুবিকে জারা যাইতে পারে। "বণ্ বিভারবাদ্" এ বিছাত্তনি অবশান্তাবী; কেন না, বিভারবাদ্শ এ

এ পর্যান্ত প্রভেদ-টি বুরিতে কোন কট মাই।
ক্রিকি সিদ্ধান্ত মাত্রই অনুশান্তাবী, আর, আগত্তক ক্রিকিনাত্রই বৌগিক, এটুকু পরিকার দুঝা বাইতেছে।
ক্রিকে নাত্রই বৌগিক, এটুকু পরিকার দুঝা বাইতেছে।
ক্রিকে বৌগিক অগত অবশান্তাবী, এইরপ এক কিন্তু উল্লেখীয় সিদ্ধান্তের কথা কান্ট যথনট বিলিতে হল করিরাছেন, তখনই গোলোযোগ বাধাইরাছেন। তিনি
বলেন যে, এরণ সিদ্ধান্ত অবশান্তাবী সভ্যোর (অন্ততঃ
মহন্য-বৃদ্ধি-ছলভ অবশান্তাবী সভ্যোর) রাজপান্তান্ত, অথচ প্রতিপ্রকল স্বিয়োগিলা উল্লেখ্য বিশেষ বিলেখ বিলেখ বিলি
তাবেই ইটল যে, এলকল সিদ্ধান্তির বিলেখিক বিলেখ বিলি
ক্রিকেন নাত্রিক উল্লেখ্য বিলেখিক বিলি

শীহা বনা হইৰ ছাহার পোৰকতায় পাঠককে
সামরা কাটের নৈত ক্লিটিগ এক বিভাৱি-জনক স্থানটি

প্রতীকার সমানিক বিশ্ব সাংক্রেপে ইয়ার উত্তর এই যা, ক্লিকেজ পারপ্রমান সহকারে এমন একটি ভারকার জার া পরিশাটি

िक्ति बटनम (ग. का। का कि धन्द्र अपने श्वापा कर न्याप मुन्ठकर महमाञ्चामा देनी जिंक निवास है अधिन देनत क विद्याबिका देखामात नेविज्ञाधक नद्द । छोहान नेवान क्षेत्र "बाक बाद श्रीट बारका, रुव" धारे नि । १३छ । मिनि वानने देव, व्यक्तिशासन प्रतिधा के देवार व प्रकृति নাই। কিছ আমাদের চকে আমরা স্থাপিই দেখি Cकहि (म. ऐटात शिलियक अतिवाक-शर्ड, न नवार টেছা জানিক নিয়াপু, কারণ, যদি বলা মান গে, -कैंबाक कां १ शंप्त तरिया अरह? जोश करेरल छोवाती-স্করেইলার ন্যাল্য যে, "সাতি আছি পাচি—-সাতি ন্যা পাঁচ ৯ চা, ' াশহাে ৮ পোঁদপক বচনেব বিদেশে পদ छेड़ांत्र १८ भग, भारत अद छेल्डेहिया पिटडाई ; ग्रूमिया প্ৰতি আৰু কল লাগে ইছাৰ বিশেষণ প্ৰেৰ অৰ্থ িউহার বিশেশ পানের অস্তুতি,--বারো এ শাদের অর্থ সাত-অস্পান প্রভাতিঃ অভগ্রী এ সিমান্টট (संक्षेत्रिक मट्ड १ % १ % १ % ४ १

আস্থ্য কলা এই লে ভালশা থাবী সভাের ক্কণা-জ্বাত দিলার মারট রা লা ; ইহাদের মধ্যেকরি অনে-खन्द्रां । अस्ति । अस् ভিক্ত ব্যিকার কাল্ড এট যে, গণন বিশেষণ-পদ্ধের অর্থ विक्षाता करमा कि ते अड-मृत मिशूह आ**र्ने श्राह्म थारक** · লে আহা স্থান বুলিকে ধৰা পৰে না, তথ্য ভাছাঃ ম্পান্ত নিগাটন বাংনাখামালের জ্ঞানে একটা **নৃত্তম**ুমারি-করে সংস্থানিত কলিরা ভাগাতে বর্দি**ত করিরা ভৌচেন।** গ্রহ-পতির অক্ততিসাধি যে ধন গ্রান্ডান্সমে মুক্তিকা সর্বে প্রোথিত আছে, তাল তো তালার**ই ধন** ; তালা আবি- ' ষার কৰিয়। পাইনে গগে । শাহা তাঁহার, ছিল—আহাই ভাঁহার থাকে; অথচ ভাহাতে ভাঁহার বিলক্ষণ প্রন-वृक्षि हम ; अभिन-धाता, य मठा शृन्वं इहेटकरें आयीत्नेत কাছে আতে কিন্তু নিগুড রূপে প্রচন্ত্র, জান্ত্রাক আবি-ছারেও আমাদের জান ব্দ্ধিত হয়। তলু-বিশ্লেদে বিশে-ষণ-পদের অর্থ বিশেষা পদের ভিতর নিগুড়া**রতে**, **প্রটিছর** থাকাতেই কাডেটর মনে এইরপ ভ্রম জন্মিরাছিল যে, প্রতিপক্ষের স্থ-বিবোধিতা নৌগিক অবশ্যস্তাবী সত্যের ুণরিচারক এছে। কান্ট্ডাছার নৈয়ায়িক পদার্ঘ-সক্ষ 🍘র উপদংহার-স্থলে যে-সকল ভর্কে বৌগিক আ🕏 नास्वित् में जा विवया मः शायन के तिसाद्यान, अधानकीत এই ক্তু পরিসরের মধের তাহার স্বদ্ধে কেবল এই প্রথান্ত ইঞ্চিত করা যাইতে পারে যে, হয় জাঁহা জানের: অবশান্তাবী সত্য নহে—ময় প্রতিশক্ষের স্ববিরোধিতাই ভাহারীনিদর্শন-চিক্

া তর পিলে নানা অর্থ ব্রায়, কিন্ত উহার মূখ্য অর্থ বাহা ন্যায়-শাস্ত্র ব্যাখ্যাত হইয়াছে তাহা এই;—
তুরু মিত্রে তর্মীক্ষর দ্যা অর্থ সমূহস্য উপদেশঃ, ইহার অর্থ এই দে, পালপার-সম্বন্ধ (কর্থাৎ রাতিমত প্রণালীবন্ধ) বিষয়-সমূহের উপদেশ ; ইহার ইংরাজী প্রতিশক্ত্র System ।

ক্রিপে গুছাইয়া ভূলিতে চেঙ্গা করা হো'ক, 🔻 যাহা এক দিকে ষেমন সভা হইবে, জ্বর वंक निर्क उभिन युक्तियुक्त वस्ति—निधिन রূপে নহে কিন্তু পুঞ্জাকুরারারেও; এ ভিন্ন উহার আর-কোন উপায় নাই। "অভি-* গ্রায় ভাল' এ কলিয়া দোণের গ্রতি দহা করা হইবে না; সমুখ্য-ছন্ত্রের তুর্জালতার ছুতা গ্রাহা করা হইবে না (কারণ, সে এক:- " नाजा चात्र किङ्के मानुकरन देनगर अर्गत ভানু-কারী আলমা মাত্র); ব্যাপারতি অভি ক্ষ্টিন বলিয়া কোন একাব ব্লিফুভি—চাভয়াও इहेरव ना~रन ९° ७ इहेरव ना 1× कार्याणि ্জয় রীতি মত করা হো'ক লা হয় তে। কাদ-র্থেই না করা হোক। প্রস্তাবিত একটি ভত্তজানের দেহ-গোধক কোন ইও-প্রাবন্ধ হইলে চলিবে না। আমি তো কাট খড় ভ্রন্থতি উপকরণের আয়েনজন করিয়া নি-1-চন্ত-প্রতিষা যে গড়িবার সে গড়িবে-कतिएम इंमिट्ट न। विख्वारनत উপকরণ-সংগ্রাইকদিশের অনোকে আপনা-८न्त्र शतिझारमत श्रीक श्रीताल मेपरा-मृष्टि নিক্ষেপ করিতে কেমার্ভিৎপর। রিনরী त्माक मन । अक्जन काज-मस्त-- (व. वटन "এই नि'न यहानम् हे हैं काहे-अपन बालनात ৰাভি আপৰিই তৈয়ারি করিতে পারেন" काशटक दयन क्यावाम ना निटल है अग्रा शक्तिक वार जन्मात्नत भात-कथा-कनित একটিকেও ছাড়িবে না, প্রত ই সময়ত श्वनित्क मैंगाक्तरंश षाश्चमार,कबिल এवः হুদৃঢ় যুক্তি সূত্র অসুসূতি করিয়া তাহাদের লইয়া একটা পরিপাটী-শৃন্ধলা-বিশ্লিপ্ট সর্বর্ত্তা-কাও দাঁড় কর:ইবে। বিশাল 🔭 ভত্তজান বৃক্ষের যে-সে মূল-প্রান্থ কুইডে কর্মান্ট্র মত-শাখা প্রদারিত হইয়াছে, উহা দেই দেই श्वान क्रिक्कींक प्रथाहरत । दिवामीता निष्य---(म-मत द्वान क्वांशांस-क्वांशांकारन ना। था

ভাবিত প্রভোগ বাংখাতবা বাংশাক নাক বি হাই যে, প্রভাগনি ভারত প্রিক্তি কাটি সম্প্রকাট সম্প্রকাশনের কালে। কালে।

সভা এবং থ্কি উভয়ামুক একটি প্রতীকার ভত্ত অগতার নতে।

জিজাই ব্যক্তি মদি- যির-চিত্তে এবং ভদ্ধান্তঃকরণে জ্ঞানের । হিত-সাধন্দে যত্ন নি-যৌগ করেন, তবে সত্য আপ্রনার কাজ আপৰিষ্ট করিবে—দৈ জন্য কোন চিন্তা নাই। म्जा भाग, पर्याद (नो किकू-िस्नान्य न न क्षिक जान, यनिक निज्ञासरे कारनत निद्रताती, ত্রীপি জানের সহিত সত্যের এখনি এক স্থাবনিক ঘনিষ্ট সম্পর্ক আছে যে, জিজ্ঞাস্থ वाद्भि यनि स्थाननात लका वाशनि वयार्थकाली क्विनियं करते, श्राद् दर्भ मरण हो के ब्रिटन क्रक সকল হয়,তাহা হুইলৈ গুৰু কেবল এ প্ৰভাৰ-गिक मन्नार्कत है। दम शिक्षा कारने गहिक मजा मध्मक बहेश। यात्रा अञ्चादनत सहित् मन्भिर्के में में माना या मार्पित था शि-प्रमा जात, गेन्र्रवात छान यसैन पाटक, उपन अवने दम्हे खात्नव ग्रांनियुक्त यात्रात्र जाहाव সাধার্যক্র অতএব তর্ত্তানের বিরুদ্ধে এ क्थात दकान वलहे बाहि ना त्य, क्लादनत बर्गालयुक्त नागशांव मेन्द्रमात मानाजीज, वनक मर्कात सरिक खारनेत शार्वकृषा अवर

Michael Company of Francisco Company of Michael Michael Com

- किन्छ, क्योरनात गर्यानायक नामका व मिरे र क्षा विशा विश्व है गाम विश्व त्वन अहेगिर कठिन। अरे अरे तक किंगिक শিষ্ট বিষয়ের সম্বন্ধে ক্ত না তুরাই বি वावच। लिश्विक ३३४।८७, किस जारी আ**ল পর্বান্ত** কাহারে। এক তিল জ্ঞান-রাম্ব शुक्ति शुक्त ए ए**स्कृतित**्निक इरेश ना নিল্ল-লিখিত একটি মাত্র অনুষ্ঠান-বিশি ষথেপ্ত কার্যা-দর্শা। মহত তত্ত্তানের অ্**সুষ্ঠান** विधि धरे , -किइरे श्रीकाः कतित्व ता-क्कान যদি-না তাহাকে অবশাস্থাবা সভা বলিয়া প্রতিপাদন করে; অবশক্ত্রেরী মত্যা, অর্থাৎ যাহার প্রতিপক্ষ-কল্লন। স্বিনাত-সূতক, আর, किङ्कृहे अभी गत कतिरव ना - यम छ। हा य-বিখাত-সুঁচক না হয়, অধ্বা খাছা এন্ট কৰা িজ্ঞানের কোন এগট অবশান্তাবা সভ্যের वा व्यवसाखाती, मिशदसब तिद्वाता ना इस। এই অতুষ্ঠান-বিধিটি দুংলবেণ পালিও হউক, ভাষা হইলে তর্জ্ঞানের সংস্ত কার্যা কুশলে **নির্পাট্ড হইবে।** এই বিষ্টির ওরুত্ব— ्वष्टान नट्हे - किन्न माद्यत ।

ৰবৰ্ষন সংহিতাতত সভাবতা এবং বৃদ্ধিৰতা ব্যানতেই আপনাকে সম্বৰ্থন কৰে কিন্তু কেশীয় ভাগ বৃত্তিমতাতে।

শৈশিকত দর্শন-সংহিতা, যাহা উপরিশৈকত সাধারণ মন্তবা-গুলিকে কার্যা পারিকত
শৈরতে আয়াস পাইয়াছে, তাহার সম্বন্ধে
কুমিকাছেলে পূর্বাকে এইটি বলিয়া রাজা
ভাল বে, বলিও এ তল্ল-টি—স্তবেক্তা এব রুজিনতা দুরের কোনটিছেই আপনার সম্বন্ধি অধীকার করিতে পারে না (বলি করে তবে-দেরলে মিখল বিনয় কাহারো প্রকা-ভাজন হইবে না) ক্রবালি ক্রেন্সব্যার উপর ওও নর যত হুজি-মভার উল্লেখ্য অপর ওও নর

দংস্থাপন করিতে অভিলাধী। পদি অ্যান্য **छञ्ज बद्रशक**। छेश भेठा १३ ६६० मृक्तित छ**्रार** তন্ত্র যদি উহা-অনেক। অসত। হয়, তবে সুক্তির লোগেই ভাষা । উষ্চা-অপেকা অসত।। यनि वृक्ति वा अपि भगता सरेटा विक्रिक করা যায়, তার অনেত তপ্র বহুমান, তাল জ (भक्त (के. एन) मन राज्या जनात भारेत, जीवात्त्र अपन राज्य राज्य राजियां है।

Applied to the transport of the state of the अब्देश कर्कर सारकार धारत प्रत्यक्षन अही ्य विश्व न्रार्थ राज्य राज्य व्यक्ति वर्णा 多數 4年年以前的人创造的知识 发电人协调。 (在海南),原理"人"一种形式外围影響。 क्यू (केन्द्र) १, १५ १ । १० वर्ष भएत ५ ५ १४४, ुर अपूर्व र १० ल सम्बं अन्याद्याः . ५ ९ ८ १ हर १ १ १ ज्याचे ४ १ १ व है **मृत्या ५ दृष्टि** ্ৰবি (১০০০ তে ১৮৮ প্ৰিয়া এতীঙ্ধান লা इन्त्रे के कहार कि एक स्टब्स के **प्राप्टर** সায় মা, চলৰ চল চাই বলিয়াছি যে, সন্ত-द्वार १८ - १८५८ १८ महन्यत्र सिन्**र्मन-रिक्न** র ১৮৮ ১৯ মান ১৮৪৮ প্রারোগ এবং **তাহার** মান মধ্যে প্রিন্তিদ্র মন্তব্যান্ত্রীলয় প্রতি यान का कर्य या काल नात्रमान **-हेराटडरे** বল ৬ গালা মাইবোলা, প্রায়্ল**তত্তি যাবা**-पर यन्तम् हैं के ठक न्तर्व इहेरा সমস্ত ভন্ত্রটি ধারাহাহিক নিডাপ্ত-পরশ্বরা-फ्राम नाकानक हर्यश्रद्धः, मा निकास-ভালর কোনটিই, দৃচ প্রমাণ-বর্ণায়, জামিতির কোনো দিদ্ধান্ত অংশক্ষা কোনে। সংশে দান ন্ছে; আর, সমস্তগুলি একতে মিলিয়া রহ্দ-কার একটি-মাত্র গ্রেকাণ্য নির্ভাক্তে পর্যবসিত। ध्यक्रिक खगार्यंत भतादारी-विद्व यपि ले সিদান্ত-তলির গাজে অকিত না থাকে; যদি প্রস্তাবিত তলোৱ এক স্থানেও একটি ছিত্ৰ থাকে; যদি উহার কোন-একটি অধি-

করণ-সিদ্ধান্ত• ্জগুলু প্ৰশ্য-সিদ্ধান্ত-্ তুই আগ্র চুয়ে চার ধেননা ক্রনান্ত লক্ষরপ উল্ ভাল্পের এপেক। সভা, আর, অন্যান্য 🗼 স্থানিন্দিত সা ২৮; ভাগে 👵 ও ও ব্যাপারটা-ই भाषि, - छाडा इडेटा काडात एकी समत्त भ রি ভ্রাণ কর।ই বিধের। 'তম । লাগ। প্রোড়া व्यक्ति श्रमाद्य श्रमान्यः । १३ व्यक्ति छिलदा जामुदा जागातन्त्र अयल्ये अ विश्वित विविद्र रहि ६ । अ. का गांगिल । श्रांत ५ । श्रांब छ ताकाम घटन । जा भारीना सुमान है खन-मध हरेला मार्डेटा, पार्य मार्थात कर्ण सम्बद्धी रतम्बा २ ६६ हम प्रति ५ अगत्म भारतः असि জ্বাৰ সম্পন্ন বি ৬ ন, প্ৰাৰে জ্বে ভাষাই 門骨掛片帶同 医乙酰酚酚 如洋生

羅月中間 1

णातादिक सार्व।

শ্রহ্মাপ্রদ প্রিট বিচে চুখন গ্রেমারী নহাশর সাবারণ স্থাত্র বা মাত্র বার। সুন্ধার্ট

 অধিকর্মান্তর পরিংহ প্রিটে প্রেক্তর ৰৰো Promise ৷ গোটোৰক একটি নুৱা এই পদ্ম নহয়ে৷ ব্যক্ত প্রকরণ-নিষ্ঠিঃ সোহার গাড় গাড়া বাহার বিদ্ধান **হইংশে অন্ত প্ৰেক্তৰ** সিৱ হয় ত্ৰাৰ অভিন্ন কুৰি ভাত। ঐস্তাটির ভারের উদার যাবা বারো কর। হইয়াছে তাহা এই "বজ নর্থ সংগ্রা মত্যে 🛰 ন্ মনুষ-भारस, म दे धर्विमा स्मार्थिक मिकाछि, एर्ड्ड्यू, प्रमान हान्। শোহবিকরণসিকা**ডঃ**'', ইয়ার অর্থ এট, নে বিভয়ন্ত निष्क देहेरन अद्यांस विषय मिक २४, ७४: याल उहा रू রেকে **তাহারা দিছ** হব লা, মত তে ভাজারা অণ্ডান করিয়া **আছে, অথা**২ জয় করিয়া আছে, গুৱাই অহি-कर्तन-निकास ; Premise अवर ज्ञात अन्यत, अ भाषत नवार्थक व्यानकश्य नमान । वात व वात वा श्राह्मनार व অনেকে Chuchengon এই অর্থ বিলীয় বাচর জ্বার प्याद्यान कतिया परिकन,-देशोधन पूर्व नात्वा (विक লিখিত বচন-টি দেখিলে তাঁহালে দুৰ সন্দৰ্শন हेटन, वर्षा,-- राज भरा रीन भन्न हाराज्या নিদ্ধার্ক্তঃ অর্থাৎ, এ,তে ব্যাসনা নাহা লং ফ, ত হন ভাষাত্ সিভার্তি ইংগালিতে ইংগা mad Proposition and pay a college and the নিকাল নিক্ষ কলে অন্ত আন্ত আন্তঃতাসভাজ -Premise । (व भिज्ञाच अधियम द्वेतच्यानक व्यमान बाजा शावश्व हांसार्व देखाल नौत Thomp, त्य শিকাভ ঐনপ অমাণ ছারা সমীপোষিত ও ভাছার हेश्यांक नाम Hypothesis।

পরি লাগে করিয়াছেন। তিনি ত্রাক্রামাণ্ডের মধ্যে একজন বিচক্ষণ ও মার্নিক। শ্রীমথ প্রধান আলার্য্য মহাশয়ের মধ্যাবস্থায় যত-শুলি শিষ্য হয় তম্মধ্যে কেশনচন্দ্রের নার প্রভিত বিজ্ঞাক্তরেও প্রক্রমন গণনীয় এবং জান ও যোগ-মার্গে একজন আলার। স্ত্রাথ জানার কথা লইংগ আলোচনা লরা আমরা লোন আংশেই নির্প্ত বিশেষতা কলি না। ভাষার সাধারণ স্মান্তের নাগত সম্পূর্ত পরিতানের প্রবান কারণ দ্রাগ্রাহণ গাহত সম্পূর্ত পরিতানের প্রবান কারণ দ্রাগ্রাহণ কথানি পত্র যথাসানে ও লান কারণ দ্রাগ্রাহণ কথানি পত্র যথাসানে ও লান কারণ দ্রাহার বকথানি পত্র যথাসানে ও লান ক্রিলাম। একপে তাহার প্রদান করা আর্বারণ ক্রিলাম। একপে তাহার প্রায়ারণ করা আর্বারণ করা

त्रखंगाटन शृथियो **नानाऋल ज्लेशदर्श्य** দূষিত। বি হিন্দু তি মুসলমান কি, এ। প্রাধান मकल मबारकरे छेन्। र्णाद लाल्डाव। बीव-ছগতের নিয়ম এই যে,যাহ। যোগান্তর ভাছাই बीक्षि पारक, बात ममल विनुष् रहेश যায়। । ধর্মজগতেরও ঠিক ঐ নিয়ম। दीहोता देवनिक धट्यांत ईजिहाल शास्त्राहमा कतियारहर्न अहेंगे डॉहॉरनंत्र (दर्न द्वायगम क्हेरव . त्याम मृ**डे एश अ**क ब्लक रिविषक কবির হাদয় অল্পে অল্পে জড়ুর।শির আবরণ टिंग क्तिनात दहरे। **शाहेर** एट्स, प्रदेश पर्श অনস্তের দিকে উদ্যোষিত হইতেছে এবং প রিশেষে দছক শক্তিতে উহা খনস্তে পূর্ব বি-কাশ পাইয়াছে। এই টুকু দেখিলে বোধ হয় त्य, त्य त्याभाजत त्महे सीवज थारक कन्नत्ज क्लीन कार्रेनरे अरे निव्रयंत्र राजिहात नार्रे। এহনে त्य, याहात वन अधिक अधीर याहा সত্যু ছাই জীবিছ। অপরগুলি কবিতা-ারাশির স্বাধি-জুপে মত ও শায়ত থাকিয়া লোকের অতীতের উৎস্থক্য চরিতার করি-एटह । अभारत यज्ञण क्षानम् कतिनाम **ब्रहेज निर्माद्यत यहन्ते काक्रमटन्त्र छे**९পতি। ইহা অলে অলে দকীবানী উল্ব ধর্মের বন্ধ ভেদ করিয়া অনতের দিকে বিদ্ধ-নিত হইয়াছে। ইহাই এই ধর্মের স্বাভাবিক উল্লিখ্য রুদ্ধি। যে আলা সভ্যকাম স্বাধ্-ক্মের এই ইল্ডিয়ান আলোচনা করিলে ব্যান্তে পারিকেন কি উপালে ইহা রক্ষিত্র হইতে পারে। এম্বলে পার্ত কণায় করিং এক কথায় এই নাম বল ম'ল মে. ই শিশু একবার মার্গান্ত শুলিল ব হির হইয়াছে তথ্যদেশ প্রভাবেশ লোগান স্থানিনাশ। স্করা যাহালে আলালা প্রস্কার উপধর্মে প্রতি ইইয়া মহাবিনাশ প্রাক্ত না হর সে বিষয়ে সভাগ থাকা আজোর প্রথম কর্তবা।

ভাঙণাতীল ভাঁচার আরও ।বছু কর্মা আছে। তিনি যে মতাসি পাইবেন অধিকল ভাহাই প্রচার করিবেন। বিষ্ণুত আকারে প্রচার ফরা বিশেষ অনিইকর। এই এ**সংক** मश्रकटेश किছू वर्ग स्वातभाक इट्रेट**ारह।** ख्डान **७ छार** सहिष्ठ तक । महन दह, दिन स्म ধর্ম প্রদাব করিয়াছে দর্শন ভাষার জ্ঞান ছার পুৰাৰ ভাষাৰ ভাষ বাকবিতা। প্ৰচাৱের পক্ষে अर्द्धत्र अहे पृष्टे बङ्ग् विस्थय छेनरयात्री। বিষ্ণ এদেশে এই কনিতা কিছু অনবের মূল ইইয়াছে। আমরা ইতা অবশা দীকার করি ে বিভদ্ধ সভা প্রচার করা দর্শনের ন্যায় পুরাণেরও উদ্দেশ্য কিন্তু কবিকরনা পাজাত-সারে তাহার মূলে আঘাত করিয়াছে। ইহার क्षरान कांत्रव हमारवरण महा क्षणात । ब्रह्मरेन हत्रांत्वी मला। लाहीनलम त्रांके जाराज মূল প্ৰো**থিত আ**ছে। বিস্তু দৰ্শন বেদ হইতে যে অবিমিতা সভা এচার করিবার চেষ্টা পাই য়াতে পুলাণ ঠিক লোৱাপে কৃতকাষী ছুইতে পারে নাই। ইহা হয় তাঁহার ভান্ধি, নুয় ছন্মবেশে সতা প্রভার ওৎকালে একটা বেশের मर्पा की ज़िहेश हिला कि बामार क

त्नक खुट्न ट्वांभिष्टे वलन९ सहस इहा। प्रचान् ্ৰবা নিজে সংকেশে ভাঁচা নিৱত কৰিভেছি । ্রু বিশ্বেষ্ট্র কাল,ভারতের অতি শৈশব কাল। े किस लोदीनिक कालरक शोवन दा वार्क्तका व-লিয়া নির্দেশ করা যাইতে পারে। দেখ সেই সময়ে কি হইয়াছিল। আমরা জগৎকার্ফে বৈ সকল প্রাক্তিক দ্বির্মণ দেখিয়। থাকি বেদের ফাল নাহা কিছুই বুঝিও না। বায়ু বহিতেছে, नुमा खेरिटल्प्स, त्यांच शहरतता हिन्सारह, এই সকল শ্বাপার দেখিয়া আদি কবিবা ইছার কারণ অনুস্পান করিতেন এবং নিজের কঠছ-সাদুৰে প্ৰেভ্যেক ঘটনায় এক সচেভন ছবি लालांब कहाना कांबरजगा वह भव म एडेमाव মানে কতক্তুলি মঙ্গলার আপার ক্তর্ক্লি ্ষাহা **মঙ্গল**কর **উঠানের চক্তে** 지리를 가라면 ! एक्षाइ द्वारण चात याहा व्ययक्रमकत अशह অস্ত্র। মেল আভাকোর উপায় সূধ্য বা ইন্দ্রের আন্যেককে আবরণ করিত হতরাং তাহা অ- দলকর এজনা ভাষার নাম র্তাস্থির। এই সন্তুকু ধরিয়া লোলানিক ক**বিয়া দেবরাজ** ইত্রের সহিত রক্তাপ্তবের একটা থোরতর যুদ্ধ বৰ্ণনা ক'বলেন । বৰ্ণনাৰ ঘটায় বোধ্য হয় स्था । अन्ते विकास विमा। आत अवि ৰল দেখ। প্ৰভাতে মূগ্য উদিত,তাহার স্কুৰ্বৰ্ণ কিংপ প্রাভাতিক ধায়ুকেনে আন্দোলিত বৃক্ষ-পত্র সকল স্পর্শ করিতেছে। **धरे (मिश्रा** कवि द झनावदन किंद्रगटक कद शनीय किंद्रश স্বাকে হিরণাপাণি বলিয়া নির্দেশ করিলেন। কিন্তু ভবিষাতে এই সূর্যাই হিরণাপাণি অর্থাৎ বছ-স্বৰ্ণ-দ বলিয়া যভ্নান কর্তৃক ন্তত হয়। আরও একটা দেখাই। বেদে সূর্যা বিষ্ণু-নামে অভিহিত্ত ছইয়াছে 📖 🐠 বিষ্ণুর বিষুৱে কথিত আছে যে, তিনি পুৰিবী অস্ত-ত্ৰীক 🕏 আকাশ এই তিন কলে ভিন हुर्गम निरम्भ कडियां थारकनः। विष्टे मुखहेकू ... 🌤 रेन्र विकृतिहळ्या त्वथा निषद्य 🎉 ।

ধরিয়া পৌরাণিক ক্রিয়া বাদন অবতার সৃষ্টি ক্রিলেন । ঝাৰিরা ভাত্তিক সোন্ধরের মোহে মুদ্ধ হইয়া প্রথমানস্থার ক্রিভের আ कांद्र (या मकल जनल कण हो उस मान আঁত্রে কে ভাবিয়াছিল যে ভবিষাতে আছার এইরূপ পরিণাম হইবে। ফলত পৌরাণিক দেবতভের অধিকাংশেরই মূল এই ছালবেশা **अश्रत अरन**रक दिल्ला रेटिएय ত্ৰিবা প্ৰাক্তিক ঘটনা দুৱে প্ৰনিবাৰহাৱেৰ माप्रभा भाष्ट्रेश कन्नागा दश भवन भारत कथ ধলিয়া ছিলেন ভাষাতে পৌরার্শণক করিছিলেব বান্ডবিকই দেম কটগাঙিল। এই ভ্রম হটাডেই পুরাবে নানাক্রপ দেবভার সৃষ্টি হছ। ভালই, এক্লপ হলে তাহ ভাষ বলিতে চান বনুন কিন্তু আনল তাহা বলি না। অভি প্রাচীন কালে কুমারিল্ল ভট্টের স্থান্ডত বৌদ্ধবিগের বিভার যয়। বৌদোরা দেবছেয়ী। তাহার। কহিয়াছিল ধে ত্রন্ধা কন্যাগামী, ভাঁহার পূজা কিন্তপে করা যায়। প্রভাতরে কুমারিল ভট্ট কহিরাছিলেন ত্রকার পকে । অভিনা বাস্তব নয়। মূর্বের**ি অপর নাম** ত্রকা বা গুজাপতি। অক্লেরকালে ভাষার আগমনে উষার षण। এই জনাই উষা তাঁহার দুহিতা। উ-যার সহিত্রীহার তেজ সংযোগ হয় বলিয়া ঐ উভয়ে স্ত্রীপুরুষবৎ উপচরিত হইয়াছে।। ঘটনা বাশুব নয় ইহা করিকল্লনা মাত্র। এর্খন এই স্পান্ত কথাটা আলোচনা করিলে এবং পুরাধের দিখনভঙ্গী পরীফা করিলে বোধ হয় ছদাবেশে মতাপ্রচার তথনকার এক**টা বোগ ছিল 🚛 ইছা** রোগ বা ঘাই হউক কিন্তু আমর। বলি সত্যের অঙ্গে এই-রূপ অলম্ভার বড় বিপদাবছ। এইরূপ এজার

[†] প্রাঞ্জাবৎ প্রজাপালনাধিকাবাগানিত।
কাবোচাতে । স চাকুণোদ্ধরবেলায়াব্যস্থানাভভাতি লা
ভাগমনাদেৰোপজায়ত ইতি তদুংভ্রেন বাপাদিলাতে। ভদ্যাং অকণ বিরগাধ্য বীক্রিকেপাং ক্রীপুক্রব
ক্রৈগবহুপচার:।

সত্যে এক সমষ্ট্রে জনসমাজের বিশেষ অনিষ্ঠ হইয়া ছিল। পুরাণ পাঠে ইহারও যথেওঁ প্রমাণ পা ওয়া যায়। কোন ও সময় এর প শ্ৰম্মও উঠিয়াছিল যে অসংকাৰ্যো ত্ৰেজাদির ষদি কিছু,প্রত্যবায় না হয় তবে মনুষ্যের কেন হইবে। কিন্তু গ্রহকারেরা বড় চতুর। ভাঁহারা লোকস্থিতিভঙ্গ নিবারণের নিমিত্ত প্রত্যান্তরে কহিলাছিলেন তেক্সীয়ানদিগের ইহাতে কিছুনাত্র দোষ নাই। ইকাথাও বলি-রাছেন ত্রেক্ষানির এরূপ কার্য্য কেবল অস্থর-প্রলোভনের নিমিত্ত। অথাৎ তাঁহাদের দৃষ্টান্তে অমুরেরা এইরূপ পাপে লিপ্ত হইয়া ্ 🕏 চছমে ঘাইবে। কি চমংকার প্রাক্তর !

্**এখন বুঝা গেল সভোর ছলবেশ^{ক্}কত**দূর পূষণীয়। যদি বল বর্ত্তমান শতাক্ষীতে উচ্চ শিক্ষার প্রাচুর্ভাব। এখন ইওরোপ ও ভারত-বর্ষ জ্ঞানে এক হইয়াছে। স্নতরাং কোন রূপ ছুদুবেশ সভাকে লোকের চ্চেম্ম আগ্র প্রচন্তে রাখিতে পারে না। এ কুখাও ঠিক नरह। ভाরতবর্ষে কেবল এখনই যে উচ্চ-निक्त लाहुँ व देश क बनित । ध्रियान এমন একটা সনয় ছিল বে, পৃথিবীর আর कान प्रम अभिग्रंख । जानात्र मीलाक महिएक शास्त्र नाहे। यागता स्मरे नात्म उत्पाद করিয়া বলিডেছি যে তথ্নও এই শাস সভার অমুসঁজান অনেকেই পান নাই 🖟 উ ্ কোর সহিত তাহার সন্মুখে দাঁড়ায় তখন পরে যে বৈদ্ধিবিবাদের কথা তুলিয়াছি 📆 ছারা ভাছা কতক্টা প্রমাণ হয়। যথন আছ-বিশেষ জ্ঞানের প্রমাপক না হইয়া বৃদ্ধি প্র হৃদয় তাহার প্রয়াপক হয় সে সময়কে ব बार्ट छेल निकात कीन विनव। व्यक्तिशर्कात ইভিহানে ভাহার নিদর্শন আছে। তার মন্ত্র ধর্মাধর্ম-নির্বাদ্ধন পাঠ করিলেও জাহা **षाटनको वृत्तिहरू** शाहा यात्र । स्वि उतार म मयदान चयन अपनाकदर हुए मुख्यात धरे इन्नर्यम गडा शुरु नारे अवस्त्री यागक

मिटगंद बाता शूटकांक एकाटेन वा बाद रहेटल यथन आवश्यान काल लाखिनेहे. চলিয়া আদিয়াছে, তখন মৃক্তকঠে বলা যায় সত্যের অকে অলঙ্কার বড় দূষণীয় 🕴 🦂

এই मानकात मर्टिश्त खन्म आर्टिश्टक কি**ন্ত ই**হার: কর্মা ঘোর অন্ধকারে। নতোর कर्ल मूक्ष न। इतिन जाहारक माजाहरू **अत्रि** रह ना। এই भार्रत मूल वा-লোক। আবার, আমি খেমন মুগ্ধ হইলাম এইরপ অন্ন্যেও হউক এই জন্য ভাষার সাজ-ফলত সতোর এই বাহা সম্পদের যাহারা অপ্তা বাহা সম্পুদ তাহাদিগকে মুগ্র করিতে পারে নী কিন্তু মুগ্ধ করে পরবর্তী-দিগকে, তাহা**ওু আবা**র অ**ন্ধ**কারে। অধির কহিরাছেন কেবল সাধকদিগের হিতের নিমি खर् वाद्या भव्यात এहेज्ञाश कल्लाना कानिएका কিন্তু পরবর্তীরা অলকার্টের ঔ**ল্লানে কল্প** নার কথা বিশ্বীত হন এবং অসম্ভারকেই वक्षे वाख्य महा निशो थारकन। बहे ते আলকারিক গোহ এই টুকু অকবার স্থ हेर्रा कृ डि भाव ना। जरनेक मुगद्द औ स्मार्ट यातात अक्रकाटनत अक्री हरें। দীড়ায়ী৷ কারণ, ঝধীন বন্ধি তত্ত্বে অনু লারণ করে ইহাই তাহার ধর্মা, ব্রের উত্তল আবরণ যথন একটা আপ্র ব্য-ৰুদ্ধির আর সাধীনতা থাকে না। সে ওঁক তেই নির্বিচারে ন্যা হইয়া পড়ে। স্থেত্রাং এই আলম্বারিক মোহই অন্তর্ম তাইগ ভারতবর্ষে দেবভক্তে বিশাস এই মোহ-জ ভাবেই ঘটিয়াছিল।

এখন এক পাদ - পোকামী মহা<mark>প্র</mark> দেখুন তিনি আধান্তিক রূপক ধারা অর্থাৎ क्रम्राक नेवत ७ सामाहक मार्थक धक्री रे क्रिक्न वर्गा की जानक श्रीक क्षिक **क्षेत्र हरेग्रह** काराव

কত দুর অনিষ্টকারিতা। এই যে আধ্যা-ष्ट्रिक क्षेत्रक हेश किছू मूजन नटह। लाशिका স্কল দাধক ও ক্ষা ঈশার এই রূপকের **উটে**क छात्रवेट्डिंब टकॉन ट्वांन ट्रेन्स्वत টীকাকার করিয়া গিয়াছেন। আর যিনি প্রবরভেন্নে এক সময় সমত্ত ভারতবর্ষ শাতাইরা যান দেই ধর্মারীর হৈতনা সে 🔄 নন্দের নন্দন বিভূজ মুরলীবরকে আছত জ-শর জানিতেন তাহা নছে। তিনিও একটা আপ্রারিক অর্থ গ্রহণ করিয়াছি,লন্য কিন্তু रिष्ठभारी अधिन जात स्परी शुक्रेन अधिता स्प খালেশ্র এই সালকার মতা পাইয়াছেন অংশ্য উন্মানের কোন কাতি द्रश्मारे, के ८७७ भारत गा। केंद्रिक क्रम-নত্তী ভাষাবাধী গাড়তেছের এবং ভাষারাই গাড়িকেতিৰ ৷ পায় গ সাস্থা ভাগেচেৰ অনুৱে বিরাজমান, পুণবাং এই বালা ১,৯০০ ভাচা-বের গ**েক** সংবর্গনে অকি: মধ্যর। কিন্তু खिखामा कार अहे हे एक्टन्ड शबु क्याधन লোক রাধাক্তের এই আনাল্লিক অর্থ প্রত্র क्षित्राट्य ? १८६० १ छ। भेषः ततः दक्ताने मार्वि নাই, ভবে ফে নাম বেওয়া তারা **-কে্বল** ভাষার সাহার বাতীত ভার প্রকাশ হয় না **अहे** द्वार किन्न लाई क्लिश द्य नास्त्रके পাহত কতকও নি পাখিব বিনালের বা নীলাক ভাগ আছাত ভাষাত্র কোন আনাত্রিক অর্থ থাকিলেও হুমি ভাহা লইতে পার না। তুমি অবশ্য ক্রফকে ঈথজের ও রাধাকে 🙀 ভের এইটা ভাষুকা পরিতাহ করাইয়া উভ शतक नाशक नाशिका क्रांत्र दमशाहरम अवस् উট্টাদের বিরহ ও মিলনের স্থীতও তাল মানের সহিত গান ক্রিলে, কিন্তু ইচার ফল কি হই শেশ জনসমা জেৱ , তিন ভাগ অজ্ঞ ও এক ভাগু বিহত। যদিও বিভেয়ে। अखदान निया दृगः ७ तारा य ग्रीमयात কাছার ভূষিকী লইয়াছেন ইহা দেখিতে भान कि ई चाउलही जाहात विम् विमर्भ । भाष्य ना। जिन्ही काशिक्यानिनी, जिल्ल-ফের শিথিপুছেপটিত বনমালাভড়িত মস্তক केंद्रात प्रस्तिक नयद्वताता केंद्रिक रहेग জগতে দি ফুলোধাাত্মিক ভাৰ প্ৰচাৰ করি-তেছে में जीशत किहूरे दूर ना । करन न प्राष्ट्रेल महाकत्री के बद्द विचान और महीन

अभी नेपातक नाना कल गड़ी लोगांव विन খাস। ভাগবতের নাার ভাতদর্শন জগতে আর আছে কি না সন্দেহ। সেই ভাগ্রত-कांत्र अनामा देवस्य कविद्र नगर इटलक মার্ক্তা লীলা বর্ণনে লেখনীকে তাদুন ভাশুর দেন নাই। তথাচ তিনি ভক্ষবে সংশয় করিয়াছিলেন্থে তিনি, জগতকে শে কেয ও ভক্তি শিক্ষা দিতে চলিগা, দন মুক্ষের এই মর্ত্তা লালা ভাহার, বাবে চক হুটাবে কি না ৷ কলত বৈষ্ণব সম্প্রসামের ব্যবহার আলোচনা কবিলে ভাছার এই সংশ্য সঞ্ তেই বে!ৰ হয়। ইহাদেৰ অনেক প্ৰনি আৰক্ষ কুফুশলা ভাহাত ভূরি ভার প্রমান। ফলত এই ভারত্রুর্যে ভোন সম্প্রদায় ছাবা ধলি কোনও দুষিত কাৰ্য্য হুইয়া থাকে ভবে ভাছা এই বৈষ্ণৰ সম্প্ৰদায় ছাল হইয়াছে। ইহার কারণ নামক নামিকা ভাবে দুগল মুর্ভির क्वितन এই किन्छन म स्मान्न । न अहे इसरनेनी नडा चाता जात अक्ही भएको-দায়ের যে দোতের জনিষ্ঠ হইতেছে এছলে ভাহারও উল্লেখ করা আবশাক। ইহা এত-**ক্ষেত্রর প্রবল তান্ত্রিক সম্প্র**ান্ত**্র** मुद्दा एक जनगारे अवजी अवना कांछ। किन्न ইহার অধিকাংশ ছল উজ্জল সতে। পরিপূর্ণণ भक्क रमारक भावतन मुक्त कतिया डाहात छन्। **ेट्ड व केंद्रिएड शास्त्र ना** । এই कना लालिक-पिटाइ मोर्सा ममाशान गाष्ट्रिकांद छाः कि त्वावज्ञानान शब्ध भारेशम्ब । रेश श्री मकदलहै अवगठ चाहिन त्य अहे जत्हा छ मार्बमात (नाहारे निया जातिक किस्लादक भक्तामाल मानातल शहि व क्षि कतिय भारकन। अरे बनारे विनयादि नरकार यदन स्मिनकात्री अननमाटकात मक्तनाटनात म्ला ল্যেক্ত অভ্যান্ত প্রভাগ মুক্ত হয়, **ক্ষেতৃত্তির**ুকি যে সভা আছে তাহার, ভকু_{নী} সন্ধাৰে তাহীব। ভার অবসর পাই না!

আমরা প্রথণেই বলিয়াছি ব্রাক্ষণে দ-মন্ত উপধর্ণের হাদয় ভেদ করিয়া ভাষত হইয়াছে। ইহার বীজমন্ত নির্লন্ধাব প্রকরি। এই ভারে দাধনাই ব্রাজের দর্মন ভোভাবে কর্তুরার দিনি এতঘাতীত গোল্ খামী মহালায়ের ন্যায় জনা বীজের পক্ষ-পাতী জিলি নিশ্চয় উপধর্ণের স্বান্ত করিবেন।

53 **440 4 444**

এই উপদর্শের বলে ভারতের সভাধর্ম থে-चौछति जेर्राद नगरे केष्ट्रस इहेश चार । एक मित्र। क्याहिल एक ७ अक्टदार नाम भिर সমস্ত্র অলক্ষার চুর্ব করিয়া শাল্পের গ্রহত मठा है लाकरकी वुबाहेश (५७ ईहार्ड किन्तु बेट्नेयात दगोत्रव द्वास्त शाहरव। , ভূতি **আ**ইতির পৌচলিকতার ন্যায় এই হিন্দু-ধর্ম্মে 🗱 🕭 হৃতে পৌতালিকত। নাই, প্রত্যুত ইহার অস্থিতজ্ঞায় যে একেশ্বরীক্ষ ওত-প্রোত, শিক্ষাও অর্থের আবরণ ভেদ ক্রিয়া खाद्य दिन्य हिवाब (० है। कत, हेश बाब कि জ্ঞানোজ্ঞান কালে এই ধর্মাকে বিনাশ ক্ইতে রুম্মা করিতে পারিণে, কিন্তু বিনয়ের দৈহিত কহিতেছি সতোর অলম্ভার প্রঃপ্রচারের किছु छिहै। हिंदी शक्ति। कार्र अहे অলক্ষারের হল আলোকে কিন্তু ক্ষুত্তি অক্স কারে। স্বীণ উজ্জ্বল প্রভায় সুক্ষেত্র **আনন্দ** লোপ ৷ করিয়া ৷ ক্রমশ স্থানের আনন্দ্রানারন क्त्र हेरात शुण मिका। এर जनार हेरादक व्यक्तकादात काली विलया निर्देश कित्रशिक्ष অউত্রৰ সাবধানী ভারতের বক্ষে কেই অন্ধ-কার আর আদিও না। ইহাতে তোমার -व्यमिष्ठ व्यामात अभिनिष्ठे अवर गमछ म्हिनत अनिहे।

প্রেরিত পত্র।

खाका बक्षामा शत शांख किर्वेषम

वाहा कठा छाहाई अध्यक्त । आक्रम्ब नामाएणे विक स्ता हिनाए हर नाहे, व्यक्तांत नाहे। अहे जना जानि त्रवादन नठा भाई व्यक्त वाहा नटा हाई जना जानि त्रवादन नठा भाई व्यक्त वाहा नटा हाई जान क्रिक्ट हर क्रिक्ट हर क्रिक्ट वाहा वाहा क्रिक्ट हर क्रिक्ट हर क्रिक्ट नामां क्रिक्ट नामां क्रिक्ट ने क्रिक्ट नामां क्रिक्ट ने क्रिक्ट नामां क्रिक्ट ने क्रिक्ट नामां क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट नामां क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट नामां क्रिक्ट क्र क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट

প্রকাশ করিল/ন।

এই অনী/ন বিশ্বমানোর স্টেকেরা মুম্বের নতা
ক্রমণ ক্রান মুন্ত আমন বাকি মুক্ত

প্রক্রিপ, অক্সর পর্মর নিডা, এক মাত্র প্রতীয় প্রক্রিক প্রকর্প বিভা

তিনি নির্দ্ধির বর্ণাৎ ভাহার কোন প্রকার অভীর রূপ নাই। তিনি সকলের প্রষ্টা কোন প্রষ্ট বস্তুর মন্ত ভিনি নামেন, তিনি অভন্ত কাহারও সহিত উচ্চার স্থানা। হয় না।

তিনি এক মাত্ৰ অধিতীয়, জগতে চুইজন ক্ৰী নাই, তিন জনও নাই অধবা অনেক ঈশায় নাই কে

বে কোন মনুষা জগদীখন বলিয়া বে কোন" নার্মার তাঁহাকে ডাকে দেই অন্বিতীয় পরমেশ্বকেই ভাবেশাই আর দ্বিতীয় ব্যন নাই ঈশ্বর কোথা হইতে পঞ্চ কীশ্বই আনিবেন

পরমেখনের কোন নির্দিষ্ট নাম নাই। নানা দেশের লোকে আপন আপন ভাষায় তাঁথাকে এক এক্ট্র-নাম করিয়া ডাকিয়া থাকে।

স্টিকর্তাকে লক্ষ্য করিয়া তুমি এক্ষ বল, আলা বল, খোলা বল, হার বল, রাম বল, ক্ষ্ণ বল, কালী বল, হুর্গা বল, তাহাতে কিছু মাত্র ক্ষতি নাই। কেই কেই বলেন লোকের মনে লাডি জনাইতে পারে: একখাও ঠিক নহে। কারণ হার শক্ষে সিংহ, অব, বানম, এবং পাশহরণকর্তা পরম্বার এই সমন্ত গুলি বৃন্ধাইয়া থাকে। কৈই যদি ভগবানকৈ লক্ষ্য ক্ষিয়া হরি যলিক গদ গদ ভাবে ভাকিতে ভাকিতে ক্ষম্পাভ করে তথন এমন লোক কেই নাই বে বলিবে এ লোকটা নাক্ষা প্রভাব কি প্রভাব করে। বিশেবক্ষা মহযোর ভ্রম হইলেই বা ক্ষতি কি প্রভাব উন্ধার্থ করে। মহযোর ভ্রম হইলেই বা ক্ষতি কি প্রামার উন্ধার্থ করে। মহযা নহে। আমার দেবতা অন্তর্যামী ক্ষিমি ক্ষানিলেই হইবে। তুমি বে মামে ভগবানকে ক্ষাভ কর সেই নাম তোমার পক্ষে প্রেষ্ঠ। আনো বে ক্ষাভিত্ত কর সেই নাম তোমার পক্ষে প্রেষ্ঠ। আনো বে ক্ষাভিত্ত ভাইতে ভাইতে আপতি কেন প্

ক্রেই ইলিয়াছি যে, স্বরের অভীর রপ কাই ওপনা জাই। কিছ তাঁহার নিয়াকার সন্দিনানন্দ রপ আছে। বাহা জ্ঞানচন্দে দর্শন
কার সন্দিনানন্দ রপ আছে। বাহা জ্ঞানচন্দে দর্শন
কার সন্দিনানন্দ রপ আছে। বাহা জ্ঞানচন্দে দর্শন
কার সালিলা, জ্ঞান সসনা ইত্যাদি আছে। বাহাজে
কারণ, রাণ, আখাদন, জন্তব হর। জ্ঞানচন্দে ইহলোকে প্রকাণে বাহা ক্লিনচন্দ্ বিকলিভ হর। বাহার
কারীর ক্লীয়া নির্মাণ তাহার আখন। আপনি জ্ঞানচন্দ্ বিকলিভ হইতে পারে। অনেকেরই হয়। লালকার এক তাহার প্রদন্ত সানবীর বর্ষাও এক। বাহা
স্বাতা তাহাই ধ্রা। স্তা ধর্মে দ্লান্দ্রীর কাই হয়। পারমন্ত্রের ভ্রম প্রয়াদে দ্লান্দ্রীর কাই হয়। পারমন্ত্রের ল্লান্ট্রনার নাই।

্ স্বায়কে প্রীতিকরা এবং **ভাষার বিরক্তির নাধন** করা তাঁহার উপাদনা। <mark>উদ্ভোকে আত্তরিক ভাগ</mark> বাসিলে তবে ভাহার প্রিফ্লার্যা করা বার।

आणि वांत छेटाएक वाखावक काल वांति छाँको करेटा के तक आवादक छाता वांटान छोटा एको करेना करोड विभिन्न बामान श्रद्धांकोन स्थानन । बर्बना रक्षांकी कांत्र श्रद्धां व्यक्तांदिक ताहे ब्रांटिक श्रद्धा कर्तत्र कांत्र कांत्र कांत्र श्रीहरू উপত্তিত হইরা আপনাকে ধনকোনি করি। আদার প্রান্ত্রক পূঞ্জা পুরিভেছে, আমার প্রভাৱ নামকীর্তন কারতেছে, কুড**্রিলারন্দ,** আনন্দ ধরে না। এজনা সুক্রক শৈব বেঞ্চৰ পুরীন মুদলমান দক্ত পুরুত্তি প্রভাক মধ্যের্ক করি। কত বৃক্ষ হলে কন্ত্রপুর্বতে নদীগর্ভে দেবমন্দিরে মদ্ভিদ গিঞ্জার আদ্বান প্রভাব হট্যাছি।

আন্তির নেশে রাধাক্ত এইটা টণকত আঘ্যা-থিক কণকা উনাদনা ও খোলেই একা উচ্চভাব আর আচে বলিনা আমার বিখাদ ভূলিন রাল ভালা, ক্ষা ইলিপালা দেশক পরমেশ্বর। বৃদ্ধানি গুলি, মহন্মদ, চৈতনা, ভালা করার জাল, প্রেইল্লাই, নাবক, জনক, প্রভাৱ বলালালে কামানেক ভালিক পাল। উপা-স্মাজাকে কার্মির নালা ভালিকিকে দশন করা বারা।

ল তা দুয়া মুই না হ্বাল বাদ্ধৰ সান্ত্ৰ বাছির হয় না।
বাইনিয়াল প্ৰতিক্ৰ নৰনাবাৰ হাল্যে জান প্ৰেম
লাজ দুয়ে বেৰাণ ক্ৰিকোছন। জান্তাৰ সহিত প্ৰমাজান ভান জোল শা কৰ যোগ ক্ৰাকেই বোগলাবন
না ল এই বোগলাবন ক্ৰিলে সকলোৱা দিবা দুই
ভোক্তিন হয়। জন্তুন দিবা প্ৰলোক ক্লান্ত্ৰ হল ভানেত্ৰিন হয়। জন্তুন দিবা প্ৰলোক ক্লান্ত্ৰ হল ভানেত্ৰিন হয়। জন্তুন দিবা প্ৰলোক ক্লান্ত্ৰ জান্ত্ৰ লাজনা বালিবাছন। এ অব্লাহ্তিন সংশ্ব থাকে না।
ভাননা ক্ৰান্ত্ৰ বালগতেন,

ेक्ताः च अन्यक्षां भिन्ताः व मन्द्र मरमञ्जाः। " कात्रद्ध धामा कन्नानि काचान्युट्ट भन्नान्द्रतः॥"

্ব ক্লাকাত। মুখ্যরণ আখিসখালের প্রচাধ নিয়েশ স্থানিকার ত শে বৈশাস । ১৮০৮ শক্ত প্রেশ

्रजाशान-मक्षती

श्रीयः श्रद्धानः श्राह्मा महानास्त्रव वार्थान मूलक श्राह्मा ।

क्रेनविश्म बाासान ।

্রিগত মাঘ মানের প্রতিকার ২০ ক্রিছার পর।) জনমের পাতি নিনি জ্বর স্বর। তারে বৃত্তি পাত জাব। হাদর ভিতর।

ভবে কেন অন্য ভজান , জীহার প্রেমেতে মঞ্জ, প্রেম ভাক্তি ভরে তাঁরে, পুঞ্জ নিরস্তর ॥ ুষ্খীৰ কাৰয়া ভিনি সংগ্ৰন আখায়। করিবে তাহার পূজা আগ এ ইচ্ছা I I আপনারে ভেয়াগিনে, अंदर भगिनारन सिट्स, (श्रेक्ष-श्रद्ध माहि गदि मध्यात राक्षात n 🛫 न्यारी में अभिकाशादकत इतक 🦠 🕾 🕽 ष्यागारमञ्जूषाष्ट्रः रमधीर्माणनः पुत्रम । স্থাংশু ভগনু ভারা, अंशिय नदस्य आध्य ্ষ্টির ১৯মাজ ২গে কবিছে ৮৬৭ এ 👣 সাবে তাঁর বলে উদিছে সিবেছে। रमन्त्री कर्टिमान, शानन अधिद्र গিরি হতে প্রভাবণ্য च्याक स्था क्रायाचान्, बस्कार क्या भूल भागः १८४,वट६ ४ কিন্তু হয়ে **খা**নৱেল ভাল বলে নয় : তাঁর পর্ম সেতু ভালে কমিন্ত প্রশান। विद्वदक्षत शदम मिल াল্যান্ডর পরে চলি, আশ্বরতি গলিবতা কাইছে সঞ্চয় 🚛 স্বাধীনতা পেয়ে নর ছ'ল উচ্ছ, প্রলান श्वानका प्रदेश किया विश्वय । ल ! উপ্রাহ্তে ুরে রয়, বিধন তুর্গারি হয়, অমৃত ভ্রমেতে শান করে হলাহল। কেন কিছু করিলেন আমীন এ নরে ? তাইজ স্থাপন ইচ্ছা বিগাগে বিচয়ে। তাই ক্রোপ অভিযান, रिश्मा (इन (छम-छान, স্থানর ধরারে কিবা ছার খার করে। ্ৰে কে। দেন স্বাধীনতা মঙ্গল-নিকান 🤊 **স্থাধীনতা—চরিজের নি**ক্স পাযাণ। বেবা তাঁর ফল্ড হ'বে, া ভার পথ বাছি লাবে, সেই পথে কহিবেক, একান্তে প্রয়াপ । श्रीत का अक्षितिशाल कहिर्य (इनमा তাঁর এপ্রমে খ্রিজবেক,ভাহার জীবন। ৰত কিছু অভিলাষ, 🎺 অন্য প্ৰেম অন্য আৰু. সে প্রেম অধীন হরে করিবে ধারণ 🖠 न्याभी न ७। मिश्र जिमि विराष्ट्रम चर्रे न । ी दम विराह्म क्लिटेनेड इस व्यक्तिमान । দে বিচ্ছেদে-কত নর, পুড়ি খ্যু, জর জর, তাঁহার কাছেতে গিলা জুড়ার পবাদ দ न्त्राधीनका—व्याभारमञ् निक्रण्य जानात्री। मिक्रि निष्क असे निर्मा महाना । रह **नव जा**ंग्सात, ् देख वन **करि**कात, মারে ভাল বালি আমি গও ক্লি ভারণ

নে প্রেম জাতিলে এবে ভীষার রূপার 📳

क व ्य दिलामात है

্ তাহারে সকল মতে কিবা প্রাণ চায়।

करना क्षम खारन बना नाह गांस ।

্বলি তাঁৰে "দরামর !"

বৈদেশ অপন তুমি আমার জালেন।

এ কেন পানীতের তুমি উন্নার করিলে।

তুমি মোর ছালে কলি, তোমাতে করিতে ছাত্র,

তোমার করণ লাভে তুমিই বলিলে।।

ভব পারে চলে লালা ভারকা তপন।
আমি বেন চলি ভাহে ভালের মতন।

ওছে অনুবের সামী, স্বাধীন না র'ব কামি,

হুদর নুর্বার তুমি করছে গ্রেছণ।

আমানভা কেন কিবা উল্ল অনিকার।
বার মূলে কিই তারে বা আছে আমার।
তারার অনুবেশ ভালি পালি অনিবার।

ভারার অনুবেশ ভালি পালি অনিবার।

নিয়তি প্ৰধীন হয় জড় সমূদ্য। জড়ের নিয়মে বঁদ্ধ আত্ম কড়ু নয়। অংশন মহাৰ আৰু। কিবা চিমে শার। প্ৰিত্ৰ হুইডে তার ইচ্ছা আওশর ।। काशन मध्य दूरता केथदबर नरन । 🍨 জাঁহাতে সংযুক্ত হয় প্রেমের বন্ধনে 🕒 🍀 বে কৌৰ ভাবেতে আছা <u>তীর পথে চলে।</u> কাহার প্রভাবে আত্ম' তাঁর প্রেমে গালে ।। ঁসেই দেব-ভাৰ তার হয় নিজ ধন। বিদাশিতে তাহা মাহি পারে কোন জন। क्षेत्राउत गर्ड निक्कि कादह विश्वाम । ্ৰাৰ খ'তে আত্ম-শক্তি হয় বলীয়ান। ষৰে আত্মা নিজ বলে ধার তাঁৰ পাৰে। वाश विश्व नार्य जात कर्जु मोशि मेरानु ११ मह भव लालावत शास्त्र मानित िंदकार माञ्चात्र ताएए जात्र वेसाम এই ভার স্বাধীনতা -সমূর অবীন্ থাকিয়া জীবার কাষ করে অনুদিন।।

জড় জগতের যত্ত্বী হয়েন ঈশার।
তাহার নির্মে নহে বজ চরাচার।।
সব্যর আশ্রেম নেই পারম কারণ।
আশ্রের অবিক তিনি আনালের হ'ন।।
প্রির জিনি—পুরু মোরা সবে বই আই।
প্রেম করি করি তারে—তার করে বাই।।
আমরা সক্রেম করি নির্মের বাই।।
আমরা সক্রেম করি করে বামন করি
ভার প্রিরুট্টে তার করে বামন করি
আমরা করিছ করি তার কাছে গাঁব।
তার মঙ্গল করি চির্মান পার।
তাহার মঙ্গল করি চির্মান পার।

ट्यार्थना ।

दर बाल । जाबील, ्रेल कतित्व कांचाहर, 日海 500 阿爾利河 দেহ মনঃ শ্ৰেক ্র দীপর ভোষারে, ्रें आया अन्तर नहें ॥ **চাহি ভোষা হাড়ি**, খুদুরে পাউ্রা विषद्ध मधन रुद्ध । ष्युषा जारन, कात विमञ्जान, यन यान द्वा लद्या। क्तित्य स्थान-अटन अर हाई, महारम महारम हो थ । ভোমার শরণ, লহনাম হাদি, সভত বিকটে থকে।। ভূমি পিতা মাত্র, मश्र खंदगा, ওছে নাথ। রুপা করি। ভরক্ ভাষণ, অকুল পাগারে, (तर वादत भन उड़ी ॥ জোহার প্রশার প্রেশন আন্ন, (प्रथा अधिन करन । खन रहि गरा, **হৌক ইচ্ছ**, মহ, শ্যাল ভাষ্! প্রাণ পর্ণেটা ঁ অন্তর গালার, नारिकं सहस् প্রেম সুধা ওব দানে। विशास मन्भारस, . थादक राम हिंड, ্ৰিয়ত তোষার পানে।। हेकि छैनियान गायान गया ।

मर्वाम ।

কামরা লোককে চিতে প্রকাশ করিছে।

বিষ্ণাক ক্ষার দত্ত বছকার লোভেলের শর গভ
কর্মির প্রকল্পার দত্ত বছকার লোভেলের শর গভ
কর্মির প্রক্রির না তান এই তব
ক্রেমিরী প্রকলির সম্পাদক ছিলেন। তাহার দেব এই
ক্রেমেমির পরিচার্গায় এক প্রকার নই বন। ফল্র বিজ্ঞান আভতি উচ্চ অলের বিষয় সক্ষা এই পার্কেলার করিয়া বান। তাহার অনেক প্রভাৱ ব্যবেষ্ট উপ্রকার করিয়া বান। তাহার অনেক প্রভাৱ ক্ষাত্তির ক্ষাত্তি কর্মান করিয়া বান। তাহার অনেক প্রভাৱ ক্ষাত্তি ক্ষাত্তা ভারতবর্গায় উপ্রেক্ত সম্প্রকাশ করিয়া বিদ্যালয় ক্ষাত্তা ক্যাত্তা ক্ষাত্তা ক্ষাত্তা

আধানী ৯ই আবাড় ব্যক্তবাদ সন্ধা গা টার সমটে ভ্রানাপুর আজ্পনালের দাজিংশ বার্থিক উৎগ্রহ

শ্রীপ্রকাশ ভৌবুরা। সম্পাদক।



म्याया म्यासिटसय मासीमात्या । विश्वनामा सिद्द मध्य सस्त्रत्। वदन निर्त्या ज्ञानननला शिव स्वन्या स्वयं विश्वस्थ वा विश्वस्थ । वदन निर्द्या व्याप्त स्वयं स्वयं विश्वस्थ व्याप्त स्वयं स्वय

ভবানীপুর চতুদ্রিংশ সার**ংসরিক** ব্রামাসমাজ।

≈ लायात् सम्मन्तेतत् ১৮०৮ सक् । "लादेव कृतां ७६ द्वथः माल्य द्वथमण्डि"

বিনি মহান্ তিনি স্থ-দর্মণ অল্প কিছুতে ত্র্য নেটি। অন্তবং বিষয় সন্থের সঙ্গে আমানের কণিক সম্বন্ধ, জন্ত পরভ্রের সহিত **আ্যাদে**র চিরন্তন্ সন্তল ৷ আমা-দের জ্ঞানের দার উদ্বাটিত হইলেই আমরা धनल ज्या महान् शूक्यत्क श्रामाद्वत था-আন্তে দে**ৰিতে, পাই, তখন হাদ**য়ের অভ্যান छत इंहेटड '८প्रामन डिंदम खानन। इहेटडहे छैशातिक हरेबा छिट्टा क्या गहान प्रति সারাদের আত্মার একমাত্র শান্তি নিকেতন। र्ष करिष्ठ ना पामका ठांशांक क्रम्दर शाहे रम भगाउ बाबादमत बाक्नजा किছ्ट उरे नाहि गानिए नार्त्त ना । किन यहान्-रम्मानरगर विश्वि-कृतमा**न** कारमान मखतीत्कत स्वाहत, उदानि चार्माकत शांख कारात एकारम् वितास सारे। संस्मादवर सरम प्रवाहा रकत आजवा कारा केए विद्या विद्या क्षा काराव करना अक निरमदात कर्मा छ

অন্যানের নাম চাত্রেনা ১ স্থন মেতে 🖫 অৰুকারে আমানের গতিয়োৰ হট্টা স্থ তথন তাঁহারই দেই কুনে। ভানের আলে। विक्रिता आसामिशतक शर्भ अम्मान करत्। उस्वा तक्रमीत जनगारम यहन एके जाविल् ७ इहें। ংবেমন পৃথিৱীকে আখাদ-যুক্ত করে, ভাঁহার কিরুণা গেইরপ আগাদের স্মুপে আদিল। श्रामानिगदक षाज्य श्रामानं कदत्र। असम অবিচলিত প্রেম আমাদের সংস্কৃতি সঙ্গী— ইতার কণ্মাত্র জনমন্ত্র করিয়া আগরা কি स्वान-माणदा निमध रहेव ना १ अमन मर्स নভাপহারী তির্ভন প্রেম আর কোঞা चित्रहा एएयर कतिया भारत १ श्रीका हा चन्छ यहान्—ि छिनि भर्तको दर्छमान, छीभारम वर्डमान—क्रुविद्धः बर्डमान, ऋर्ण बर्डमान -भएका वर्षमान ;ेषाखेव विषय-द्राका इहेरिंड মন-চাঁহ **ফিরাইলেই আম**রা তাঁহার অভয় প্রেম্ম বৈশিতে পাইব—ভাষার অমৃত্যা गढ़। धरे शादनरे यामता कत्रश्रम कतिया भूनकिङ हरेका जाकामरिक बागता कैयात विन बनीय बहान् किन्तु मिहे जाकारमेत প্রত্যেत নিৰু শীছার অন্ত মহিৰায় পরিপূর্ণ তিনিই প্রস্কৃত বছান। দেশ কালে আ-

বদ্ধ আখাদের এই আত্মাকে আমর। বলি পা-ধান প্রাক্তি **দেই আত্মার যিনি অ**ভাগা**রা** ভিনিই সনাতন স্বাধীন পুরুষ; তাঁহার ে তন-खन: के **चामारमंत्र चा**ला महारूक इस्तार्छ, তাঃ ও প্রনিতা-প্রসাদেই আমাদের আত্ম স্থানীন হইংলছে: স্থানীন হইয়া ভাঁছার নহিত সহবাসের উপযুক্ত হইয়াছেল পর-মাগাৰ প্ৰতি আগাঃ যে ভাতি, ভাছা কলের ্বশীভূত নছে--ভাষা স্থানভারই উজ্লা। পরমাত্রা ায়াদের জানে চিত্র একশিমনি, ্তিনি আখাদের হৃদ্যে চির বিভাক্ষান,—-किन्छ এ वार्क्। हिं कामः मकन मन्द्रा दिवारक ্পারিন।; তখনই উচা আমরা ব্রিতে শারি—দখন আমাদের বুদ্ধি নির্দান ও প্রাণাস হর হদর কলুষ-গ্রান হইতে মুক্তি লাভ ক্রিয়া পবিত্র আনন্দের আবাস হয়—এক कगा वयन जाबारनद जाजा अकृष्टि है। মোহ মেঘ অপসারিত হইয়া গেলে আত্মাতে ক্ষর্মাঝাতে কিসেব আর ব্যবধানী পর্নাজ। অসীম জগতের বাবধান তেদ্ করিছা আমা-र्मत सम्दर्भ धिवकीन क्रिक्टिम् भागना ু কেবৰ নোছের গবেধান ভেট করিলেই উ হাকে পাইয়া ফুডার্থ হইতে পারি, ভবে কেন আৰুল ডাফাতে আলস্য করি ? সভাং জ্ঞান্যনন্তং একাকে আইস আমনা ছির िट्ट धान कति—धाटनह मध्कीर्य ननी दवन-ব**তী** হইয়া যখন আ**নন্দের অত**ল-স্পার্শ ममूद्धं विनीन रहेदन, उथन णात्र आमादनत cकान े अखात थाकि त ना। मनुषा श्रेशी णायता यान शत्रश्चातक नो कानिलाय अ ভাঁহার সহবাস-তেপে জ্ঞান্ময় ও প্রেম্ময় অন্তঃকরণ প্রাপ্ত ন। হইলাম, অভ্যায় হইগাই कीवन खिठाएन कदिलाय, छाहा हरेल সামাদের মৃত্যুদ্ধে প্রয়োজন কি ছিল? জ্ঞানের মুক্ত্য কি জড় অপেক্ষা অধিক নছে— প্রেষ্কে মূল্য কি মোহ অপেকা অধিক নছে?

জড়ের সেবাতেই নিয়ুক্ত করিয়া আমর৷ কি জ্ঞানকৈ জলে নিকেপ করিব ? মোহের সেষাতেই নিত্ত ক্রিয়া আমরা কি প্রেমকে জনে নিংক্ষপ করিব ? সগাঁর জ্ঞান্-প্রেম कि हेरावरे कना बढ़ि खनजार इस्वाहिल ষে, কেবল ঋড় ও মোচের দাসত্ত কবিয়াই জীবন অবস্থা হরিবে । কখনই না। স্থাঁর জ্ঞান কি পুণিধার এনকে ভিলক করিয়া ললাটে ধারণ ভ্রিবেণ পবিন প্রেম কি পঙ্গিল বাদনাকে খকের ভূষণ করিকে? ७.श यनि क**रह, जर्त त्न छानरक** विक्--গে তেখকে গিন্। জানের সেবার পাত্র-যদি কেহু থাকে ভবে তিনি সভাং জ্ঞানমনত্ত ত্রক্ষা, প্রেটেয়র সেধার পাত্র যদি কেহু থাকে ভবে তিনি "আনন্দরূপময়তং বছিতাতি!" অতএব আইস আনরা মোহময় সংসারের ম্ব্রীচিকা পশ্চাতে কেলিয়া জ্ঞান-শ্রেমের ভূমা অমৃত-দাগরে আত্মাকে নিমগ্র করিয়া कौरन मार्थक कति।

হে পরমাত্রন্। আমরা স্থবিমল শান্তির জনা তোমার হানে উপনীত হইয়াছি; আর रिय-मिरक चामहा पृष्टि कति, स्मरे निरक्टे ভূমুন ভরস কোলাহল মুখ ব্যাদান করিয়া উঠিতেছে, কোণায় ধাইব ভাছা ভাবিয়া পাই না ৷ আফাদের দেশ পরাধীনতা-শৃত্বলৈ জ্বাপাদ-মস্তক প্রপীড়িত, আমাদের অন্তঃকরণ কঠিনতর পরাধীনতাম ব্রিয়মাণ; কোথাও এখন স্থান নাই যেখানে স্বাধীনতার মুক্ত বাহুতে ক্ষণকালের জন্য নিশাস কেলিয়া भौত্তি-সুথ অনুভব করি। আমাদের আর সকল দিক্ রুদ্ধ ইইয়া গিয়াছে—ভোনার প্রেম-মুখ আমাদের ভৃষিত আত্মার সমকে जनात्रक कर-छारा स्ट्रेल जामारमंत्र नदन তুর্গতির অবসান হইবে। আমাদের এই হতভাগা **দেনের কত নবা সন্তান স্বাধীনতার** मूथ पर्गन कहिवाद खना दिण दिणाखद समन

করে; ছার: সাধীনতার নিঙ্গ নিকৈতন-মুক্তির অনিক্লম থাকাশ যে তুমি—ভোগা-কেই আমলা ভুলিয়া রহিয়াছি --আমানের আর কি হইবে ৷ আখাসের ভান-চক্ষ্ম অন্ধ হইয়া গিয়াছে—খাধীনতা আমানের নিকট-তম প্রদেশে শা সংগ্র রশ্বিতে দীপ্তি পাইলেও আগাদের কাঞ্ তাহা তামগী নিশার অন্ধকার। তোমার। প্রেমের বীজ আনারদের আক্সাতে অনুরিব হটলে তাহা হইতেই কেবল সাধীনতা ফলিতে পারে ইহা আমরা তে^{প্}ৰয়াও দেখি ন**া** তোনার ত্রেম যদি এই দত্তে আমাদের আত্মাতে বলের সঞ্চার ৭০০ তাপে এই দতেই আমরা স্বাধীন হই ৷ ভাহা হই লেগ খবী ওছা লে'কে দেখিয়া চমকিত হয়-বাত্ৰল ও মোহবল অপেক্ষা আজার বল কত প্রকাপশালী। কিন্তু এখন আমরা তোমা হইতে দুরে পড়িয়া যোহে আছুল হইলা দিনপাত ক্লিভেছি— ্রখন আমাদের কোনো বলই নাই; দীন হীন গতিহানের তুমি কল্পাময় এড়া এই কেবল আমাদের এক নাত্ভরহা, ভুনি আনাদের ভাডি ত্যেমার এক বিন্দু কুপা বিতরণ শর এই কেবল আসাদের ভার্থনা; ভোমার প্রদর্মভাই আমাদের তুর্বলি আন্নাতে वनाधान कतिर्द्ध भारत-३ मि व्याभारमञ প্রতি প্রসন্ন হও।

° **४ ७कत्म**काहरू

" দশন-সংহিতা।"

ক্ষুত্ৰ একটি খাপতি এবং ভাহার খওন।

্রই তন্ত্রটির রিক্লছে বৎসামান। এই একটি আপত্তি উত্থাপিত হইতে পারে যে, উদ্ধার ঐ প্রবল প্রমাণ-পছতিটি গণিত-

প্ত নানের পঝিভার ন্দন-সংহিতার উপক্রমণিকার একটি পরিজেব পুল-ক্রমে পরিতাক হইরাছে;

বিজ্ঞানের নিকট হইতে ধার করিয়া পার্ভয়া, —ভাং, ৬৬ ও নিজানকেই সাজে, তত্ত্ব-छ्वादनत शरक छ।श भरलग्रस्य ना। ইश्व উত্তর এই---সংক্র হ্র কি ন: ভাহ্ বেরল "क्टनम श्रीविठीशढ्ड" कल बादास निनेक হইতে গারে। পরাক্ষাতে গরি বংরপ্ শীর্ষে থে, এ এনের্ন প্রশার প্রমান বার্মার **ত্ত**জানের প্রেফ দিবঃ উপ্রোজ্য জবে বাহার উপর আব কথা নাই; সার, কল্-ক্ষায় যদি 📺 ে না টেকৈ, ভবে ভালার সপ্তে তক ক্ষ্যা-৬ ুম্মন নিজ্মল, গাহার বিশ্বকে বুক্তি ও শেষ্ট করা- : ানাম নিচ্ছা-য়ে জিন। বিষঃটি এগনি যে, ভাগার আপ-নার গোগাতা-সমর্থন গাপনাকেই করিচে হইবে,—ফালাভ তর্গবিত্তর্ক-দ্বাল নহে কিন্তু কার্যা-বারা। ওলে, লোকে এই মে একটা কথা রাষ্ট্র যে, জি প্রাবল আমাণ পদ্ধ-তিটি তত্তভানের নিজের নহে—উহ। গণি-তের নিকট হইতে ধার করিয়া লওয়া—এ क्षां कारणा का नाह ; छेली वतर अह

নেটি ''প্রতিপক্ষের স্থবিঘাত 'অবশ্যন্তাবী সত্যের নিদ-শন-চিন্ন'' এই শিরস্ক পরিচেছদের অব্যবহিত পরবর্তা; সেই পরি ভাক্ত পরিচেছদটি নিম্নে সন্নিবৌশত হইল।

স্দ্য-প্রতীতি অবশান্তাবী সতোর নিদ্পন-চিহ্ন নং ।

্রখানে আর-একটি বিষয় বলিবার আছে,—াব্যয়টি मश्किश्व दाते, किश्व खन्नाकन्न, दम वि अहे दम, मना-শ্রেন্তীতি অবশাস্থাবী নতোর নিদর্শন নাহ--বদিচ **चारमरक तरे रमस्त्राभ विचाम।** अरहत मूर्या जनगरव স্থাপত এবে প্রমাণ করা হইবে যে, আমাদের সমস্ত স্বাভাষিক চিন্তা ধারাবাহিক ভ্রম-সিদ্ধান্ত-পর্শতরায় পর্যাবসিত; সে সিদ্ধাস্ত-গুলির প্রত্যেকেই ববিষাত-গর্ভ, অথবা বাহা একই কথা-একটি-না-একটি অবশা-প্রাবী সত্যের বিরোধী। কিন্ত তা'বলিয়া এরূপ क्षाणां क्या वाहरू भारत ना त्य, त्य या अम-विकास উচ্চারিত হয় সাত্র অমনি তাহাদের প্রাহতি-দোর জাছল্য হইয়া উঠিকে, অথবা জ্ঞানের যে-সকল প্রায়ত ভত্ব তাহাদের স্থানে বদিবার উপযুক্ত দেওলৈ তদঙেই অবশ্যস্তাবী বলিয়া প্রতীয়মান হইবে। জ্ঞানের অভুক্তা প্রিতে-কাগত্তক সভা-সকলের যত না সময় ও সাধা-মাধনা আবশাক হয়—উক্ত অন্তের অবশান্তাবী সত্য-ভিলিয় তাহা অপেক্ষা অনেক বেশী সময় ও সাধ্য-শ্বাধনা অপেক্ষিত হয়।

বিশ্বনি হৈছিল ক্লিনাৰ প্ৰাজ্ঞতবিশ্বনি বেইছিল ক্লিনাৰ প্ৰাজ্ঞতবিশ্বনি বেইছিল ক্লিনাৰ প্ৰাজ্ঞতবিশ্বনি বেইছিল ক্লিনাৰ প্ৰাজ্ঞতবিশ্বনি বেইছিল ক্লিনাৰ প্ৰাজ্ঞতবিশ্বনি বিশ্বনি বিশ্বনি ক্লিনাৰ ক্লিনাৰ

এই ভ**েছের বৈত্**কিক্ত নেক্য্ণ ।

ু জিজাসু বাজি দেশিবেন (... বানে হৈ ভস্তটি ভাষার বিবেশন পে ান হত হই-তৈতে, ভাষা বৈজকিলভার পাল্লন্ত। তিনি নান ক্রিণে পাল্লন যে, গুল কেন্দ্র। তিনি নান ক্রিণে পাল্লন যে, গুল কেন্দ্র। ভাজ প্রাত প্রবং আপুনার প্রশানালিক নান, সভা প্রদর্শনের প্রতি গাঁহার একমান নামা, নাম কিছুবই জন্য যাহার নামা করা নাই, আম ক্রেল ক্ষতা হৈছেক ক্রেন্দ্র। ক্রেপ্লা নাম নান এ বিহল্টির মন্ত্র ভ্রেপ্লা নিজে,খুলিরা দেলন্য বিহল্টির মন্ত্র হেপ্লা নিজে,খুলিরা দেলন্য ভ্রেন্দ্র বিল্লা

ক্ষেত্ৰ ভাষ্যানকে কৈছে ক্ষেত্ৰক হলত হয়।

রুই তন্ত্রতি অতিশার বৈত্র কিন। কেন?
না বেহেতু লৌকিক চিন্তার দ্র-স শোধশের প্রকাই বিগাল জন্ম-পরিত্রিছে। এ জিয়
ইয়ার আরা ো ল প্রত নাই, আর কোন
উদ্দেশা নাই, আর কোন কর্ম নাই। এ
যান হয় বে, মর্মুয়া সভাবতই তত্ত্বিস্থালী
চিন্তা করে, তবে তাহাকে ত্রা-চিন্তা শিক্ষা
দেওয়াইবার কোন প্রয়োগন নাই। মুমুয়া
মদি বিশা প্রবরে প্রক্র হইতেই স্ক্রে

म्यन इन् अवारने। यनोबनाक ; जाहा हरेल তো ২তব্তলনের কর্ম গিয়াছে—ভাহার ফ**রি**শার-আর কিছুই নাই—ভাহার **পাক।** কেবল বিড়ালন। "এ জন্য তাত্বজন্ম মানিয়া ল্বা (ড ছাকে মানিয়া লইডেই হয়) যে, ' ও' তিঃ মনুষ্য তত্ত্বাপুষ্টো ভিন্তা করে না, এখনকৈ তাড়চিন্তা শিক্ষা দে<mark>ওয়াইতে হইতে ;</mark> সতা নাপন হটটে মন্ত্রার নিকটে আ**টিদ** নাং মডাকে মা দেবাপনা করিয়া আনিতে হ-া ৷ বাজ বত মন্দ্ৰা খদি তথ্যানুষাত্ৰী চিন্তা रा ०८० १८। । अयानुषाती हिन्स करते १ ल्ला रासरा योग भी (क्यम भी अहारी व কেশে হ-ু ধারিবার আভিসন্ধি একাশ পাঃ) নাংকা কেবল লাগ থে, স্বভাগতং মনুত অন্যাৰ্শভার মাহত চি**ন্তা কল**ে 🕫 আবা**র,** পলাবের গতিকে সাধ্যা**দ মনুষোর** লৈ-্র সম্পত্তি না ২য়, থেনে **আর আর অনে**র থান নধ্যাকে পারত্র করিতে হয়—স্-८८ व वना ७ थान समितिष **केरिए**७ इहा, তবে বি মনুমোৰ আভাবিক গেড়ক সংপ্ৰভি भिया। यर चार निष्ये गर्भ ७ क्या ७ व्यायहा, वाल का 👉 विलयं । ननश्रदाशीटक প্যাতে কেনা বাংচনের জড়িসার নহে তাহা যে, একেগারেই দিখা, এ কথা আগন: বান না, আমরা বলি—ভাহা আজে। তবেহ ধ্ইতেছে যে, শনবধানতা এবং স্যান্ত এই जुरें हिर अन-भाषात त्वत देव हुक भूग धन। এই দ্রানিয়া লওয়। মিদ্ধান্তটির উপরে ওত্ত্ব-জ্ঞানের বান্তিবার অধিকার এবং এয়োজনা-মৃত। সম্পূর্ণরূপে নির্ভন্ন করিতেছে।

্রেখিলাণের দক্ষি।

ষদি বিশুদ্ধ জ্ঞানের আলোচনায় পৌরু-নের বাক্ট্রের কোন প্রামাণিকতা স্বীকার ভারতে কা তবে তত্ত্বজানের একমাত্র প্রায়ত উদ্দেশ্য যাহ। আনরা এখানে আনিয়া খাড়া করিলাম, তাছার পোষকভার প্রচুর
শাস্ত্রীর প্রমাণ উদাহত হইতে পারে; তবে

কি না—দে প্রমাণ-গুলি পুর-যে বিশ্বদ ও
অপ্পলিত তাহা নহে (কেন না তত্ত্তান
এ-যাগৎকাল যে ভাবে চলিয়া আদিতেছে—
ভাহার কোন্ধানটাই বা বিশ্বদ কোন্ধানটাই বা অস্থালিত)। এ-সব প্রমাণ এখন
নহে;—যখন আমাদের কথার প্রতিবাদ করা
হইবে, যখন আমাদের কথার প্রতিবাদ করা
হইবে যে—মনুষ্যের সাভাবিক চিন্তা স্থানভ
অন্বর্ধনভার দিংশোধন ছাড়া আর-কোন
উদ্দেশ্য তত্ত্তানের কোন ছামে ছিল
বা থাকিতে পারে, তখন আমাদের প্রকর
মাক্ষাণণ্ড বিচার-ক্রেরে উপস্থিত করিবার
যথেপ্ত দম্যর হইবে।

তর্ক বিতর্ক অভিযোগকে ভারজানের উদ্দেশ্য সাধিত ইউচিত গারেল্যা ।

এই যে একটি র তান্ত যে, লোকিক চিন্তাশ্লভ অনবধানতার কংশোধনার্থেই তত্ত্বজ্ঞান
নৈর ফ্রা-এছন, এইটি উহালে উহার স্বেছান
ক্রান্ত । কিন্তা অগত্যান—নৈকতিক করিয়া
ুলিয়াছে। ছিদ্রাঘেষণ ব্যাপার এড়াইতে
পারলে সে পরম স্থী হইত, কিন্তু তাহা না
করিয়া মে আপনাকে কিছুতেই সামলাইতে
পারে না। তাহাকৈ বৈতর্কিক হইতে হইবে—এই অসাকার-সূত্রেই তাহার ক্রম্মপরিগ্রহ, ভাহার ক্রম্মের লার্থকা সম্পাদন
করিবার জনাও তাহাকে বৈতর্কিক হইতে

ইইয়াছে; কারণ,লোকিক টিন্ডার জনবধানতাদোষ সে যদি তর্ক ভারা খণ্ডন না করিবে,
তবে আর কি উপায়ে সে থাহার সংশোধন
করিবে প

भ्रवज्ञा-ताय हरेटक छवजानद्व प्रक्रि त्ववत्र। हरेटकट्ट।

তত্ত্তের বিরুদ্ধে পাছে এই এক অভি-যোগ উথাপিত হয় যে, তিনি মসুযোর সহ

বৃদ্ধির শিদ্ধান্ত দকলকে নিতান্তই হেয় অসন कदबन, के कना क्यांत्न रहा जाननाइ (ग, তত্ত্বজ্ঞ – পরের ছত নয় যত আপনার – স্থা-ভাবিক চিন্তার দোষ ধরেন। আকাৎ সম্বদ্ধে তিনি আপনাকে लहेशाह साभुछ। घूगा-রূপে, তিনি আপনারই চিরাভাক্ত অনবধান नजा-त्मास मश्द्रभादन कत्रिद्रष्ट्रह्म। त्वत्रव অনোৱাও তাঁহার নাায় অনবধানত: এক হইতে পারে--এই ভাবিয়া তিনি গেণি-লপে বনেবেও দেই দোষের সংশোধনে প্রবৃত্ত भन ; किंगु नाक्याः, मक्रदस त्य दिन । जिन ৰনা ব্যক্তিতে দেখিতেকেন না—আপনা জেই দেখিতেছেন, এখন্য: প্রধানতঃ জাহ; **डिनि** धालनाट्डे बाट्टांभ क्ट्रम। কথাটি এইবার এই যা বলা হইতেছে, দিতীয় वात देशत कात छटलय कहा इस्टिंग ना, অত্ৰৰ ইহার তাতি ভাল কংগো প্ৰণিধান कर्ता (श'क्। धनाना वाक्तित्र नाचि छक्। জ্ঞানীও লোকিক চিস্তা-স্থলত দৌর্বাল্যে জান : জান্ত। যে দোষ তিনি দেখাইভেছেন ও যাহার সংশোধনাথে তিনি চেঙা পাইতে-ছেন, সে লোখে তিনি যে ভাঁহাবপ্রভিবেশী-দিপের অংগ্রেফা কম দোধী—ভাহা নহে। ভাহার কলহ তাঁহার প্রতিবেশীদিশের সহিত নহে কিন্তু আপনার সহিত্য; পাত্রটি এখানে এরপ যে, ভাহাকে (হুখাৎ আপনাকে) সং-শোধন এবং শাদন করিতে মনুযোর কেবল যে অণিকার আছে তাহা নহে, কিন্তু মনুষ্য তাহা করিতেধর্মাতঃ বাধা।

धरे छक्षके मरनाविकारमञ्जि विद्यारी।

ভারে এই দেবিতে হইবে বে, বর্তুমান তন্ত্র শুদ্ধ যে কেবল লোকিক চিন্তার বিরোধা তাহা-নহে—তাহ। মনোবিজ্ঞানেরও অনে-কানেক মতের বিরোধী। ইহাও অনিবার্য। লোকিক চিন্তার ভাষ-সিদ্ধান্ত সকলের সং-শোধনার্যে চেন্তা দা করিয়া মনোবিজ্ঞান

উপ্সারো সেই জনগুলিকে দৃষ্ট করিবার कता निर्माहाकरण शिविषक्ष कतिवाद जना मागार्माद्रा देवहोत क्वित सदत ना । , अकना त्नो किक किछ। त छलत त्यत्रल प्रश्नेश्राम হইদে, ভাষার ভাগ পাইবার জন্য: ননো-বিজ্ঞা**ন্তে ট্র অগতা।** আদিতে ২**ইতেতে।** विधि देशन-क्रिट्स अङ्गिरेट भातित्वरी छान इरेज-किस अफ़्रियात (छ। नारे। । छछ-জ্ঞান, ইয় তাহার অভিত্তে ফলাঞ্চলি দিক, भग्न लादिक हिस्रोत स्थानगर्मावन स्वर মনোধিজ নের ২ত খণ্ডন এই তুই কামো প্রায়ত 🕫 'ক্. এ ভিন্ন গতান্তর নাই। ফলে, ভদ্ধ কেবল গ্ৰানা-জনে ভত্ত-জান মনো-विद्धारम्बं भजभण रहेश वीकृष्ट्रभद्ध। टिक इंदेवादिस दात्रन—भटनाति छात्र द्वात्रकः মতের উৎসাহ-দাতা এবং মহকারী বলিয়া। লৌকিক ভিত্তার বিপক্ষভাচনৰ বিদ্যিল-ত ত্ত্-कशदनत खदनाखाती दर्जा। (म श द्यांक, চিত্ত পুন্য ক্লোকের স্বানারিক সিনাত্ত-মক-লের অপেক্ষা মনোবিজ্ঞানের শান্ত্রীয় দি-ছাস্ত-সকলের খণ্ডন-ফার্ম্যে অধিব্ভির দৃড়ত একং নির্মতী সংকাশে প্রয়ত হথায়া তত্ত্ব-क्छाटनत कर्डनाः, कातन, पार्रसाम् काला নিদ্ধান্ত-তলি শুদ্ধ কেৰল উণ্ডেক্ষা এবং অন-दशानका-मूनक जालिमाज, किन्न भारताक শান্ত্রীয় দিদ্ধান্ত-গুলি দেই লাভির গারে সত্যাভাস পূর্ব ফুত্রিম বিজ্ঞানের পাক্ষর মু-ক্রিত করিয়। তাহাকে মুর্ল্ডিসভী মিধ্যা করিয়। পাকাইয়া তোলে। মনোবিজ্ঞান প্রায়শই লৌকিক চিন্তার 'পোন্ধকতা-কার্মো রঙ , কিন্তু ঘটনা-পতিকে খখন গৈ আবাৰ –লৌ-কিক চিন্তার ভ্রম-সংখ্যোধ্যে-কার্ম্যে হন্তকেপ करत, उथन (शरत दिशा संशिदन) दम जासारक কৃতকার্সা হওয়া দূর্যর থাকুক্—তথন সে আর এক কাও করিয়া বসে 🖟 স্বাভাবিক ভ্রম क्रकरण श्र्व हरेएडरे बाह्य एगराव गहिल

নে আবার ভাহার নিজের স্ট নুজন একটা । (কথনো বা অনেক-গুলি) খবিঘাত-গাই দি-দাঙ কড়াইটা বাগারটিকে আরো অপর্যুষ্ট করিয়া তোলে।

প্রতাবিত তক্স কেন্যে, নৈত্রিক, তাহার কারণ এদর্শনের পক্ষে উপরি উক্ত মন্তব্য-শুলিই যথেষ্ট। সেজ্ঞা-ক্রমে নহে—কিন্তু জগতনা—এই ক্রুটিকে প্রতিদ্ধিন্দ্রতায় লিপ্ত হইতে হইরাছে। যে দতে মন্তব্যরা তাহা-দের বা প্রস্কারী ক্রমে জনানা বিষয়-সম্বন্ধার বাহত তত্ত্ব-স্বর্গ সেইলা মাতৃপর্ক্ত হন্তিত ভাষত করিবে, সেই দতে তত্ত্বজ্বান পূলিবী হইতে অস্তব্য হাইবে কারণ, তবন আর ভাষাকে প্রয়োজন হইবে কারণ, তবন আর ভাষাকে প্রয়োজন হইবে কারণ, তবন আর ভাষাকে প্রয়োজন হইবে কারণ, তবন আর ভাষাকে প্রয়োজন

৬ : তেনর কংগ্র গরিস্কার গলে নিন্দির ২০তেছে।

মত এব তাম্নানের লক্ষ্য অববা অভিসন্ধি অধবা ধার্য সম্বাজ পাছে কেছ কোন
শ্রুক্তা বুক্তা থাকেন, তাহার প্রতিবিধানার্থে প্নর্কার স্পাই করিয়া ঘোষণা করা
যাইতেতে সে, লোকিক চিন্তার অনবধানতাদোল সংশোধন করাই তত্ত্তানের মুখ্য
উদ্দেশ্য; এবং সে অনবধানতা-দোব হৈছেত্
প্রায়শই মনোবিজ্ঞান কর্তৃক দূর্গাক্ত হইয়া
থাকে—কদাচ সংশোধিত হয় না, এবন্ধিবাস—
আগে যাহা কেবল বৃদ্ধির ভুল ইইয়াই কান্ত
ছিল—ক্রমে তাহা পাকিয়া উঠিয়া মুর্ভিমতীর
মিখ্যা ইইয়া দাঁড়ায়, এজনা মনোবিজ্ঞানের ক্রম্প তত্ত্তানের আর একটি কার্যা। এই
গুইটি কার্য্য তত্ত্তানকে সমাধা করিতে
হইবে।

ভত্তাদের **ভাগনারক কার্য।**

কিন্ত এ খা' বলা ছইল—এ যদিও তব্ধ জ্ঞানের কার্যোর একটি সারাংশ, তথালি এই অংশটি কেবল খণ্ডনাতাক; অর্থার, ইহাতে

(करन शत्र**र** ७३ २ ४७ न २४, अगर्जत मः-স্থাপন ইয় না। লৌকিক চিস্তার ভিতর যে-সকল অনুব্ৰানতা-মূলক ভ্ৰম প্ৰচ্ছন থাকে, ও মনোবিজ্ঞান সেই সব ভাষের ফেরপ পোষকতা করে, ভাহার প্রতিবিধারী করিছে ছইনে একদিকে যেম্ন ভ্রমগুলিকে উচ্ছেদ করা চাই, আর এক দিকে তেমনি ভাষ্টের পরিবাক্ত বসতি-স্থান একটা কিছু দিয়া প্র इन कहा हारे। बदना । खाड, लारे ल जबके কিছু ভাহ্—সঙ্গু সভা। অভএকেত্বজানের विधनसे तदात, काराई बदला, मध्यग्रहे बदली, আর একমাত্র উদ্দেশ্যই বলো ভালা সাকলো ব্লিং। বলিতে ২ইবে তঙ্জানের সাজা এইরপ দীভাষ : - কি প না লৌকিক চিন্তার অংকু-সুন্ত জনবধানতা এল মনোবিজননের প্রসত্ত পালিত ভাগ এ ত্তের স্থানে প্রকৃত ए छु-मकरलत (गणीद, स्थारमंत्र धारमंग्याची লতা সকলের) সংখ্যাপন-- ইছরেই নাম তত্ত্ত্ত ब्हान । व ८७, दनका सार्वेट७ छ निया देशांखा কথা: উপ্ও অনেকে বিদ্ৰুতা কৰাইয়াৰ-লিতে ছাড়েন না যে, ভড়জান যে কি তাহা বুৰিয়া ওঠা ভাষাৰের মাধ্যতেইত। ভত্তভান रा कि, छाञा के आगता यनिनाम। शुर्वी ুজামরা বলিয়াছি সে, যুক্তির পণ দিয়া ভ-त्जात छेल**न करें** दश्रान ; अथन धरे याश বলিশাম (কিনা ভ্রম খণ্ডন-পূর্বেক সত্যের সংখ্পন) ইয়া ঐ কথারই পুনরুজি— কেবল আর্-একটু বির্ভ করিয়া নির্বাচিত। এইটি এখানে ক্রম্ভব্য যে, তত্ত্ত্তান আপ-নার গন্তব্য-পথে মৃত অধিক অগ্রসর হয়, -ও তাহার পথ যত অধিক প**রিক্তত হ**য়, ততই তাহার সংজ্ঞা অধিকতর পরিস্ফুট-রূপে নিৰ্বাচন-সাধ্য হয়। তত্তৃজ্ঞানের অঙ্কু-রিতাবস্থা-স্থলত সংজ্ঞা কাজেই সর্বাপেকা অল্প-পরিস্ফুট; আর, এখন গে সংজ্ঞা-টি নির্বাচিত হইল তাহা যে, পরিক্টতার

চরম শীমায় উত্তীৰ, তাহাও নহৌ নকলে, সতা, সিদ্ধান্ত গুলিকে - অগাং জানের অব-শান্তবি তত্ত্ব-জলিকে—যে সংগ্ৰা প্ৰিক-**गठ क्षप्रगति कहा। इडेएफ्टर्ड, (१) शर्भ ए ६ ६-**क्कार्रनत मध्या मांगानएक किल (१८४८) छ द्वाधभभा ३१८७ भा बद्ध मा। 🚓 छङ् छितित श्रमम्ब छेन व मिनिक्ष कर्मा नहर छ। माक्यार मर्दारा । उद्देश मान । या दशक वहंगान भटका बाजा अने। स्रेट्ड शारत--উহা-१८हे, एड्डाएन्ड स्था मध्यज्ञ कि. ভাষত্ত্বক প্রধান্তাক কি. লোকে ভাষা কানিয়াল পারের পৌন লোকের মাণার ভিতর এই ৰে এক ভাওঁ-বৃদ্দি গ্ৰেৰেশ কৰিয়ালছ মে, তমুজ্ঞান ঘলিতে একএপে মনোবিজানই ল-নাত (মহোত্র উদেশা - কে কানে কি--মিছা কৈবল কতক-৬৭৷ মনেবাতি লটিয়া नाड़। हाड़ा चाद की तकरभत भर भव ६ है। ভन्न अक्षाता) अ पूर्वतृ चिकि मार्था इहेट्ड एल-নাত হইতে পাবে। কর্ম্মেম মাতুষ বেকার অবস্থার পড়িলে তাহাব গেমন হয়—কাজ খুঁজেতেছে বিজ পাইতেছে না—ত ভ্রান এ-যাবং কাল দেই ভাবে চলিয়। লাদি-তেছে; কিন্তু কি কাৰ্যা ঠিক তাহার উপ-বোগী তাছা ধখন দে জানিতে শারিল षाधन की विका-लाइडा उक्री किमाता क-রিকে পারিবে ও একটা স্থানদিপ্ত কাজ হাতে পাইবে, তথন ভাহার আধি বাথা নিৰ্ব্যথ श्हेरव ।

কেন ভবজান একার্য্যের ভার ক্ষতে ন্য।

উপরি-উক্ত সংজ্ঞাতে যে কার্যা নিদিপ্ত হইল, তত্ত্বজ্ঞান কেন তাহা হলে লয় তাহা বলিতেই হইবে—এইনিপ একটা কোটি ধরিবার কিংবা তাহার উত্তর প্রদান কবি-বার বিশেষ কোন প্রয়োজন নাই। মনুষ্টের মানস-ক্ষেত্রে ভ্রমের-স্থানে কেন সত্য প্রতি-ঠিত হইবে—ইহার কারণ দর্শানে। নিজ্ঞান য়োজন। তঁবে যদি ইংগার নাম কারণ-দর্শানো হয় যে, ভ্রমের স্থানে সভা প্রতিষ্ঠিত হইবে কেন—না যেহেডু যাহা খরে আদিতেছে তাহা সভা, আর যাহা বাহির হইয়া যাই-ভেছে তাহা ভ্রম,—সেই যা এক কণা।

তত্বভান কিরপে স্কার্যো প্রস্তুত হর।

তত্ত্ব-জ্ঞানের উদ্দেশ্য কি তাহা পূর্কো বলিয়াছি, এবং কেন তাহা সে উদ্দেশ্যের অনুগামী হয় জাগাও বলিলাম; এখন সে উদ্দেশ্যটি করায়ত্ত করিবাম মানুদে তত্ত্তান কিরণে কার্যো এরত হয়, ভাহাই কেবল বলিবার অবশিষ্ট। ওত্তমানের অনুষ্ঠান-বিধি যাহা ইভিপুৰ্বে নিদ্ধারিত হইগছে (किना किছुই श्रीकात कदिर ना - यपि-ना তাহা জ্ঞানের অবশ্যস্তাবী সত্য হয়) মেই অনুঠান-বিধির সমাক্ অনুবভী হুইলা তত্ত্ ভান সনুবেরে স্বাভাবিক-চিন্তা প্রসূত মত্ সকলকে ইবাহভি-দোৱে দোৱা নিস্পন্ন করে। ফলতঃ, লোকিক সিদ্ধান্ত সকল খদি ধবি-ৰোধী না হইত, ভবে ভাহাদের বিক্লম্বে ে সমর বাঁধিয়া দাঁভানো তত্বজ্ঞানের পকে নিত,ভই স্পদ্ধাসূচক হইত; কারণ, সে সিদ্ধান্ত গুলি ংখদি স্থবিরোধী না ২ইল – তবে সে-গুলি যে भठा भट्ट छारा (क वानन ? वतः (गए-গুলিরই সত্য হইবার বেশী সভাবনা—যে ু**হেকু দেগুলি জন-**সাধারণের মত। এর প হট্লে, তত্ত্বজান বেশী কি আর করিত্? इम এই कांत्रज—এक ভোনীর অনুমানকে সরাইরা তাহার খানে আর-এক শ্রেণীর অনু-মানকৈ আনিয়া পত্ন করিত। লোকিক মতের খব্যাহতি-দোষ শুধু যে কেবল আরোপ করিলেই ছুইল তাহা নহে, অবশ্যস্তাবী সত্যের কর্ত্বস্থানে দে কার্যাট করা চাই; নচেৎ ওত্তভালীখাদ স্লেচ্ছা-মুদারে বিচার-নিষ্পত্তি করে, তবে ভাষাতে তাহার নিতান্তই ঔদত্য এবং মুট্টাঞ্চিকাশ

পার। এ টি তবে স্থির যে, লেকিক চিন্তার প্রত্যেক ভ্রম[্]সিদ্ধা**ন্ত জ্ঞানের একটি-না-একটি**ি অবশান্তাবী । भट्यात्र विद्याशी। **সংহিতা**য় এ রভান্তটি দেখানো হইয়াছে – পেঁচাও তক্তিকু দারা নহে—কিন্তু একদিকে লৌ-কিক ভ্রম-সিদ্ধান্ত ওলি এবং আর একদিকে জ্ঞানের অবশাস্তাধী সত্তা-গুলি উভয়কে মুখা-মুখি দাঁড় করাইয়া। উপরি-উক্ত বিকেচনাটি নিশ্ব-ড়াত প্রবাসী বন্ধনের মূল। জ্ঞানের অবশ্যস্থানী সভ্যানকল ধারাবাহিক भिषास-भवन्भवा अस्य भूयक् भूथक् विमाख হট্য়াছে; আর, এতেক সিদাভের সঙ্গে একটি ক্রিয়া জ্যাত্রপক্ষ সিদ্ধা**ন্ত জুড়িয়া দে-** : ওল ইম্লাছে — সে প্রতিশক্ষ সিদ্ধান্ত লৌ-কিল-চন্ডা-হ্রড স্বিয়াজনার্ক্ত ভ্রান্তি বই षाव स्थित भरह, * हैक्स क्रिक्ट हुई পক্ষের মধ্যে সংগ্রাম লাগাইয়া पर्दे शादा; ऐशाल लाज अहै या, कि ানপারে আনরা ব্যাপুত হইতেছি—কিনেরই বা দ্বপক্ষে আর কিমেরই বা বিপক্ষে আমর। যুঝিতেছি, ভাষা আমাদের নিকট অপ্রকাশ থাকিনে পারিবে না। স্বব্রিই এইরূপ দৃ*ট্ট* इहेरद रव, रकान अकाँगे निभन्न-चर्णिक मरना-বিজ্ঞানের দিন্ধান্ত—দেই বিষয়-ঘটিত লো-কিক সিদ্ধান্তের সহিত—সর্ব্বাংশেই হউক্ আর কিয়দংশেই হউক্ (প্রায়শই সর্বাংশে) অভেদাস; এই অন্য প্রতিপক বিবার-क्लि-अर्क पिरक यरनाविस्तानित ज्याहरू छेशरम्भ এवः जात-এक फिर्टक जमनभावान-মূলগ লৌকিক সিদ্ধান্ত—উভয়কেই আৰু नाएक अक्षारत मृद्धिमान कतिरव। नहीं त्रित (त्रेमन वाग-पांकन व्यवसन-त्थानी, वर्त्तमार्मः সংহিত্তার ভেম্নি সপক-এতিপক সিদ্ধান্ত-শ্রেণী ।

• অবানে নাহাত্তে প্রতিপক্ষ দিয়াত বলা যাইতোহ. পুরাজন ক্ষিননারে স্থায়া পূর্ব-পক্ষ বলিয়া প্রদির্ভ



ভৰজানের কার্যা-পদ্ধতির আরো বিবরণ।

স্পক্ষ মিদ্ধান্ত ওলি এবং ভাষাদের এমাণ-প্রদর্শন প্রস্তাবিত গ্রন্থের মূলাংশ বা भूगाःम। ইहारे पर्यन-मःहिला। সিদ্ধান্তটি বিনা-প্রমাণে স্বতঃসিদ্ধ ব্রিয়া সংস্থাপিত হইয়াছে। প্রত্যেক সিভাত্ত कछक-छन्नि धातानाहिक मञ्जन ध्वः वाथमन দারা পরিপুত্ত। এই সকল মন্তব্য এবং वाशास्त्र উष्मना आद किছ नश-भूगः সিদ্ধান্তের মধ্যে যাহা কিছু অস্পাই এবং কঠিন বোধ হইলে (লা সে ভালেই হ'টক্ জার ২০নেই হউকা ভাষাকে স্পান্ত এবং স্থাম কার্যা লেভ্যা, আরু বৈত্রকিক এবং ক্রতিচালিক বিবরণ যেখানে মাহা আবশাক मत्न इहेदव छाहा लाशिहेश दमख्या। अहे ভাষা-গুলি সংহিতার ন্যায় অভটা কড়াৰড় ইইবে না। হয় তে। উহারা বতটা পূর্বাকু 🖹 ছইতে পারিত ভাহা হয় নাই; কিন্তু সা দ্বৰতঃ দেখিতে পাওয়া ঘাইবে যে, তভ জ্ঞানের মূল কাণ্ডেল যে যে এছি-স্থান ২ইতে ट्याटम ट्याटमे - कमोट इस वज् वज् - गजा-্মতের ফ্যাবড়া বাহির ইইয়াছে, ঐ ভাষা-তুলি দেই দেই এছি-তান ঠিক ঠাক্ দেখা-ইয়া দিবে। ন,না কারণ-বশতঃ প্রতিপক্ষ দিছান্ত-গুলিকে দপর্ফ দিছান্ত-গুলির টিক পরে পরে ব্যাদেশ সকল সময়ে (বলিতে কি প্রায়শই) ঘটিয়া ওঠে নাই। সেগুলি मस्ता अवः वाशितमेत्र मीमाजास्तत साम পাইয়াছে, এবং আবশ্যক মতে তাহাদের কৰ্ত্তক বিশদীকৃত হইয়াছে। প্ৰতিপক্ষ দি-দ্বান্ত-গুলি সকল-বিষয়েই সপক্ষ-সিদ্ধান্ত-গুলির প্রতিহন্ট; আর, শুদ্ধ বদি কেবল তা-হাদেরই প্রতি দৃষ্টি নিবন্ধ করা যায় ভবে **ध्रिया गरित (य, जाहाता मर्क्लक प्रिता** শত্যাভালের একটি স্থান্থদ্ধ বিপ্রাহ। দে বিগ্রহটির বিরুদ্ধে আপত্তি কেবল এই যে,

প্রতিপদেই তাহা একটি-না একটি নার্স্কভো-মিক সত্য বা জ্ঞানের নলতত্ত্ব উল্টাইয়া দেয়। কিন্তু কেহু যদি যে আপতি <u>অগ্রাহ্</u>য করেন, তবে তাঁহার মনের মত-শব্দাবিজ্ঞা-নের শাস্ত্রীয় মত এবং জনদাধারণের স্বাভা-विक भाज- के अद्यवसे क्की। भारितीक भावता-বিশিপ্ত সন্দর্ভ তিনি ভাঁহার হাজে: কাছে স্ত্রণজ্জিত পাইবেন। যদি অভিকৃতি হয়---স্বাচ্ছকে তিনি ভারাকে আলিম্বন করিতে পারেন ও বথার্গ তালুজানকে সমূলে প্রান্তান थरांग कतिएत भारतन । जिन एमध्यतन যে, সভা এবং ভ্রম—বিদার এবং অবিদ্যা— উভ্যতে জ্মাগত পার্ধাপার্থি সম-বাসহানে লইয়া চল। হইয়াছে; যাহাকে ভাহার পদ্দ হয় ৩।২। কই তিনি এইণ কবিতে পাংলে। बहें नथ खना भीत प्रमा

বুঝাই যাইতেছে—এইরাণ প্রণানীতে চলিলে জিজ্ঞায় বাজি নিম্ন-লিখিত-রূপ ফল-লাভ করিবেন। তিনি ভাঁহার 😂বা প্ৰবেধ প্ৰত্যেক বিরাম-ছানে — কোন সভটাই ৰা ঠিক্ আর কোন্ মভটাই বা ভুল—ভাহা দৈশিতে পাইবেন। তুয়ের তুলনা-গতিকে তিনি ঘুইকেই ভাল ফরিয়া বোপাংত করিতে পািবেন। য'হা ভাঁহাকে গ্রহণ করিতে বলা হইতেছে তাহা কেবল নয়, ভা ছাড়া যাহা তাঁহাকে পরিত্যাগ ক্রিতে বলা ২২-তেছে, তাহাও তিনি দৈখিতে পাইবেন। দার্শনিক মত এবং লৌকিক মত এ-দুংগ্র পরস্পর-বিরোধিতা তাঁহার চক্ষে স্পপ্ত ধর। পড়িবে। ইহাও দেখিতে পাওয়া ঘাইনে ए, लोकिक विस्ता (याहा कथरना कथरना সামান্য বৃদ্ধি বলিয়া সংজ্ঞিত হয়) এবং তত্ত্ব-জ্ঞান, এ দুয়ের বিবাদ-ভঞ্জন খুবই ভাল-कर्ल हरेट भारत-यिन मिरे मार्गाना वृक्ति অলজ্যনীয় তত্ত্বজানের বিচার-নিষ্পত্তি নির্বি-বানে ঘাড় পাতিয়া লয়।

সত্য এবং মিথা। উভয়ের তুলনা না করিবার দোষ।

কোন একটি তন্ত্র বোন একটি বিষয়ের সম্পন্ধে (বিশেষতঃ এখনকার মতা এইরূপ বিষয়ের সন্ধন্ধে) যদি কেবল নতঃ মতটি **লংস্থাপন ক**রিয়াই নিশ্চিত্র থাকে, ভবে छारा खकार्यात जिल्लांश्ल-संद मना । करत, জার তাহাও পরিপানী রূপে নতে; কালণ चाछ गरुषि श्रकार्ता जानी र अवः रशहेकरश **খণ্ডিত না হও**য়াতে তাহা ।জজাস্থ ব্যক্তির মন হইতে অপনীত হয় না. - ধৰং অদ্ধ-काबाञ्चस शीतक विलिधा आहर। धनतर कारी वक्रमुन इस्र। जाहा हरेतन, पृष्टे भएक व कुनना-বিরহে, কিলে-সে উভয়ের মধ্যে ভীনকা তাহা द्विष्ट भाग यात्र मा। ए। इतेल. गना **এবং ज्ञम पुरेषे गत्मा** मर्गर एक मर्गर वर्जिया থাকে, কিন্তু এরপ স্থাগত মুখ্যু-ভাবে दर्जिशा शांक (य, তাহা নাথাক। वर गांगिल। ভুল সিদ্ধান্তটি (স্পান্তরূপে নহে কিন্তু অনি-র্দেশ্য এবং খাণবিস্ফুট রূপে) প্রতিরুদ্ধ হও-য়াতে ভাষার পূর্বতন গ্রান্থটো অনেবটা ত্তেজ্বর্দ্ধর হইয়া পড়ে, আর সভা নিদ্ধাতনি ্ভুলের **গলিন সংসর্গে একে তো ক**হুষিভ ভাহাতে দে আবার ভিতরে ভিতরে আপ-নার পর্বতন আধিপত্য প্রাথমীবিত করি-বার চেপ্তার পরিক্লান্ত হওয়ালে, নে—ভাহার উদ্দাল-তম এবং অমোঘ-তম রশ্মি-গুলি হারা হইয়া ক্ষীণ-প্রভায় মিট মিট করিতে থাকে ৷ সতা মত এবং ভ্রাম্ভ মতের মধ্যে --দার্শনিক মত এবং লৌকিক মতের মধ্যে-এই যে এক অন্ধকারাচ্ছন অনির্দেশ্য বিবাদ, ইহাই সংশ্ব-বাদের এবং অব্যবস্থিত তত্ত্বচি-ম্ভার মূল-কার্ণ i

সভাসভোৰ ভূমনা-শৈথিলাই অবোধ্যভার মূলন

দৰ্শন-কারেরা সভা এবং মিথ্যার মধ্যগত বিরোধ স্পত্তীক্ষরে নির্দেশ করিতে ছাব-

दश्मा करार्टि भाषात्वन्छः कारवाका छ। दमारी कड़ाहेश পड़िशाहर ; जात এই ব্যাপারটি, দর্শন-ঘটিত যত কিছু গোল-याः।, नगर्छत्ररे मृल। प्रमन-भारत्रद शूदा-রুভের মহিত কিনিন্মাত্র পরিচয়-লাভ হই-लिहे हें हा-आंत्र कौहारता जितिहा थारक ना যে, প্রার্থনে দার্শনিকেরা শিক্ষিত্রা সভা जारः भतिष्ठकेना लग ज पुरात तिनक्षना म्याहे कतिया कृतिस्ति जूनिएक खबरक्**ना क**ता**र्ट्** সমস্ত দার্শনিক ব্যাপার অবেধনভার জাকর হটরা দাঁড়াইয়াছে। প্রাক্তিশের প্রাণান-তম ভত্তাবং শ্রেটোর "আদর্শ জগ্নং" সাবাং हनछः खरनास (कन १ छक दनका अह জন্য থে, সৌকিক মত-সকলের এন্তর্গত কোন্ মতটিকে খণ্ডন কবিবার অভিজ্ঞান্তে তিনি ঐ দার্শনিক চটির অবতারণা করিয়াছেন--তাহা তিনি স্পষ্ট করিয়া খলিয়া যলেন নাই। জন্মান-দেশীয় তত্ত্বিং স্পিনোজা'ৰ "অবার-বস্ত" এখনো পর্যান্ত অর্থ-হান রহি-হাছে কেন ү ঐ একই কারণ-বশতঃ। লোন্ গৌকিক ভাষের প্রতিদর্শী তাহা আ মরা অবগাত নহি। স্বিখ্যাত লাইব্নিট্**জের** "ভমাত্র," ভেষনি আবার ভাঁহার "পুর্ক-নিবদ্ধ কার্যা-কারণ-সূত্রে," এ সব রহস্যের এখনো পৰ্যান্ত চাবি মিল্লিচছে না কেন-অথবা চাৰি ষাহা মিলিতেছে তাহা তালায় লাগিতৈছে না কেন? শুদ্ধ কেবল এই জনা যে, সৌকিক চিন্তার কোন্ ভ্রমটির পরিবর্ত্তে তিনি তাঁহার কোন্ নৃত্টি স্থাপুন कांत्रट पहिलायी, जारा जिल्ल म्मेड करिया বন্ধেন নাই। জন্মাণ দেশীয়া ওছবিং ছে-গেল্কেন আগাগোড়া বন্দু-সংহত পৰ্ক-তের ন্যায় অভেদা 🖭 👣 🗷 জিলি--- জিলি হর তো প্রকাও একটা অভগরের নারে तोकिक अंको <u>सम्</u>यक्ति भहीरहा **कारण**ह বলে আনিয়া পিদিয়া ওঁড়া ওঁড়া ক্রি

তেছেন, কিন্তু সে কুমটি যে কি তাহা তিনি কোথা ও প্রকাশ করিয়া বলেন নাই। প্রবল পাক-চক্রের পেষ্ণে তিনি হয় তোঁ সে ভাষ-টির একখানি ও অন্থি অতুশিপ্ত রাখেন নাই 笋 কিন্তু আমরা তাহা জানি না। দিদ্ধান্ত-গুলি (অবশ্য তাহাদের আপনা-কুদর রীত।কুষায়া অস্পান্ত এবং জটিল রকমে) কোন না-কোন লোকিক মত খণ্ডন করিতে প্রাদ পাইয়াছে—ইছাতে তার ভুল নাই; কিন্তু সাক্ষাৎ কল্পে (এমন কি দূর কল্পেও) ব্যব্যাল সেন্দ্র প্রকৃতি কথাও উল্লেখ করেন নাই। ত বুজানের গতি-বোধক কাব-ণের কথা পূর্ন্দে যাহ। আমর। বলিয়াছি—ঐ গুলার অবহেলা বা ত্রেটি লাছারই পোষকতা করিলেছে; গতি রোধক কাবণ-দে এই ; -প্রবর্ত্তক মূলতত্ত্ব-গুলি—গোড়ার ক-খা--দুদ - মৃষ্টিতে আয়ত্ত না করা ও চক্ষ মেলিয়া ভাল कार्रश गा (मना ; कि कार्या कतिएक इन्हें र এবং ফি উদ্দেশ্য সাধন কনিতে হট্ৰে ভাছা 🖢 शतिकाव-क्राल ना काना। कावन, शिन 🤖 भव দর্শন-ব্যবসাধীরা ভাষ্টদের লাগা কি তাছা জানিতেন, তবে তাহা তাঁহারা বলিতেন, ভাহা ত্ত্ব নয়—ভাষা ভাষার। কবিভেন। কিন্তু সে-বিসয়ে হয় ভাঁছারা একেবারেই চুপ্, নয় এমনি ইতত্ত ত করিয়া কথা বলেন যে, তাহা **অপেকা** চুপ থাকাই ভাল ছিল। বিদিও তাঁকারা মহোচ্চ প্রতিভা সম্পান এবং "অবিনশর বস্তু সকলের গ্রশান্ত শুক্তী'' তথাপি অব্রোধ্যতা-দোবে তাহাদের পশ্চামাস্ত অন্তিম जारमहम्मा बरनकाःरन द्वाम श्राप्त शहराहः, তাঁহাদের প্রকৃত কার্ষ্যের অর্দ্ধেক-খানি কেবল তাঁহারা হত্তে লইয়াছিলেন বলিয়া এক্লপ খটি-য়াছে। যানিলায ভাঁহারা আমাদিগকে সভা প্রদান করিয়াছেন—নিঃসন্দেহ তাহা তাঁইারা ক্রিয়াছেন; কিন্তু বতক্ষণ সভাকে তা-হার প্রতিষ্ণী অনের সহিত তুলারত করা

না তেওঁ ততক্ষণ তাহা সংগ্ৰিংশে না হউক **অনেকাংশে** বৃদ্ধির অগম্য গাকে। উপরি-উক্ষে **पर्या-कारतता (मेरे** @ ७५न्द्री । खग-छनिएक **চক্ষের সম্মুখ হইতে সরাই**য়া রাখিতে তিনি गठ-शकारत श्राम श्रीशार्द्धन, हरे छना ্রী সকল এবং **আর** আরে অনেক দর্শনিকার-দিণের **সম্বন্ধে নাধারণতঃ ব**লা গাট্রে পারে যে, ভাঁহাদের শাস্ত্র কাহারে। বের্বসম্য হইবার নহে , শাস্ত্রকালের নিজের আ লোকে তো নংহই—তবে যদি শিল্ডাম্ ব্যক্তি আপনার প্রদীপ আগনি হাজিয় পাতিয়া বাহির করিয়। ভাগে অপুস্কান-ক্রেরে সঙ্গে করিয়। আনে, এবং আপনি তাহার উপকরণ সকল ওছাইয় ঠিব করে, ভাহা-হইলেই যা'। যে কোন সত, হউক্ না কেন তাহার তাতিখন্ব ভাষ্ট তাহার আলোক; এজন্য, সত্তেরে চিন্তার সময়ে এবং তাহার প্রদর্শনের সময়ে, তাত্ত্বিদ্গণের, এইটির প্রতি স্বিশেষ সাবধান হওয়া উচিত যে, তৎকালে ভাঁহারা যেন অভিমাত্র গৌর-বকে আশ্রয় করিয়া ভাষের জিন্তা এবং लानन इरेड महिशा ना माँजान ; स्निटी ম্পিনোলা লাইব্নিট্জ হেগেল্ এভৃতি মহাত্রারা নিশ্চয়ই ঐরপ করিতে গিয়া আ-প্ররাই আপ্রাদের গভীর জ্ঞান-চর্চা মাটি করিয়াছেন, এবং তজ্জনা - মনুযা-সাধারণকে বিস্তব ক্ষতি ভোগ করিতে হইতেছে; ভা शास्त्र अपर्यन-পद्मां शांत अनुः तथ हरे छ. তবে ভাঁহাদের স্থমহৎ জ্ঞান সাধারণের প্রভূত উপকারে আসিত, তাহাতে আর স-(पह नाहै।

এই তব্ৰ সভা মিথারি তুলনা সংখ্যাপক।

এই জন্য এই তন্ত্ৰ উহাঁদের ও-পথে না গিয়া অপেকাকৃত নিম্ন-বৰ্ত্তা অন্যবিধ পথ অৰলম্বন করিতে প্রয়াস পাইয়াছে। ইহার কেবল চেটা—সত্যকে বোধ-স্থলভ

করা; তাই, ভ্রমের সহিত প্রবল এবং স্পষ্ট ভাতিযোগিতার গুণে দতোর উপরে যেরূপ আলোক নিপতিত হয়, তাহাই ইহার প্রধান নের্ভর-স্থল। ইহা প্রতিদ্দৃশী মিগার মাহায়ের সতাকে পরিষ্ফুট করিতে তভিলাগী। সপক এবং প্রতিপক্ষ উভয়বি : দিড়াস্তের সন্ধিবেশ-পদ্ধতি কভন্ধ-ট। নৃত্র-ব্যাণের বটে, কিন্তু উপরিউক্ত বিবেচন।-টি ভাহার মূল-প্রবর্ত্তক। অবিমিশ্র দার্শনিক ব্যাপারে ব্যাপ্ত হইতে হইলে ঐ-টিই ভাহার এফমাত্র বিহিত প-দ্বতি; করিশ, সাধারণ বোধ মেচনের পক্ষে উহা সবিশেষ উপকারী, আর উহা দার্শনিক আলোচনা-সুনভ সংশয়াত্মকতা হৈব এবং জব্যবস্থিতি সমস্তেরই অপহত।। পদ্ধতি যাহার সংকল্প কেবল সত্যেরই প্রদ শ্ন-ভ্রমের প্রতি-প্রদর্শন নহে-ভাহাকে ঐ **সকল প্রয়োজনী**য় কাপারে ব^{্রি}ত হইতে হয়।

ষ্বৰ্গ ও নৱক।

ঐ যে অশীভিপর রদ্ধ দেখিতেছ, আহ। উহঁ র কি ছুন্দর মুখ-জী! বনন-মণ্ডলে বি পবিত্র ও মহৎ ভাব উপছিয়া পড়িতেছে। भूरबन्ध्र विमनान एमंद्र हिस्स एक्सन स्थिष्ट ুপ্রতিভাত। উহাতে বিষাধের চিহ্ন নাই. ্র তুল্চিন্তার কালিয়া নাই, নৈরাশ্যের অন্ধকার माहे। এই वृष्ट-वश्रामा हे हैं। ब भवीब कि তেখ্যপুঞ্জপূর্ণ! দেহের কি মনোহর কান্তি! ষেন পূর্ণ স্বান্ধ্যের প্রতিমূর্ত্তি। ইহাঁর যেরূপ ৰাহা মহত্ত্বাঞ্জক সৌন্দর্য্য, আন্তরিক সৌ-ন্দৰ্য্য ও মুহুত্ব তদপোকা অধিক। ইনি সমস্ত জীৱনে কখন জানিয়া শুনিয়া কোন পাপ-कार्यात्र, कानक्षेत्रभवर्यात्रे अञ्चर्शन करत् নাই। আৰীবন অভ্নাৰ ভাবে বৰ্ণোর দেবা করিয়া আলিয়াছেন । কখন কোন কর্ত্তব্য कार्यार्व कारहना करहेन नारे | सीम निक

ও দাধাানুদারে চিরকাল আত্মীর বন্ধনের স্বদেশের ও মানবক্ষাতির কল্যাণ সাধন করিয়া আদিয়াছেন। "রিপুগণ কথন ইহাঁকে বশীভূত করিতে পারে মাই, রিপুগণকে ইনি সক্ষা বশীভূত করিয়া রাথিয়াছেন। श्राता ज्या क्षत्र हारान नाहे, বিবেক-বলে ইনি শত শত প্রলোভনকে পরাজয় করিয়া অনির্কাচনীয় স্থাও আনন্দ লাভ কবিষাছেন। পৃথিবীতে এমন কেহ নাই যে বলিতে পারে যে ইনি ভাষার প্রতি ক্থন কোন অনায় ব্যবহার ক্রিয়াছেন কিন্তা ভালকে কোন প্রকারে মনঃক্ট দিয়া-ছেন। ইহার ইশ্বর-বিশাস অতি গভার, দুঢ় ও আবিচলিত। ইহার জীবনে কড ঘটনা ছইয়াছে যাহ। অধিবালীর চন্দে বড়ই ভয়া-নক, ও বিধাতা-পুরুষের ঘোরতর নির্দ্ধয়তার পরিচায়ক, কিন্তু ইধার এমনি বিশ্বাস বল যে ইনি দে দকল ঘটনায় ঈপরের নিয়মের নোলধা দেখিতে পাইয়াছেন। ভাঁহার দয়ার পরিচয় গাইয়া**রেন। অতীত জীবনের কার্য্যা**-বলী ভিতা করিয়া ইনি ভাহাদিপের মধ্যে এমন একটাও কার্য্য দেখিতে পান না যাহার জনা ইনি হুঃখিত বা অনুতপ্ত হইতে পারেন वर्द्धमान कीवरन देनि देगाँद अर्थावरल, विश्लाम-বলে, বিবেক-বলে ও পবিত্রতা-বলে পরম সুখী, আর ভবিষাত, জীবন সম্বন্ধে ইনি কিছুমাত্ৰ চিন্তিত বা সন্দিগ্ধ নহেন—ভাৰ-যাতের পারলোকিক আধ্যাত্মিক স্থাবৈশ্যা ইইার বিখাদ-চক্র সন্মুখে সর্বদা জনস্ত-क्रात्य क्षकानिछ। होन श्रीय कोवरनव श्रविक অতীউ,ভাবিয়া, পবিত্রতর বর্ত্ত্যান উপভোগ করিয়া এবং পবিত্রতম ভবিষাৎ দর্শন করিয়া পর্য স্থী। ইহাঁর আন্ধা সর্বদাই শ্রেমে উমন্ত, শান্তিতে অভিবিক্ত, আনন্দে টং-ফুল, আশাক উল্লিস্ত ও স্বৈত্তে অভিনিবিটা এই পৃথিবীতে ইনিই সর্গের প্রতিরূপ।

আর ঐ যৈ একটা রদ্ধ দেখিতেছ, উঃ উহার কি কুংনিত আকৃতি। উহার মুখের নিকে দৃষ্টিপাত কবিলে জনবে কেনন আপনা হইতে ভয় ও স্থার স্থার হয়। কি বিকট মুখ-শ্রী। এক প্রকার নীচ ও অপবিত্র ভাব হইতে পাবে গেন ভঙ্গমস্ত ইংার মুখ দিন। ফুটিরা বাহির হইতেছে। ইহার বনন্মওলে আনন্দের চিহ্ন যাত্র নাই, উহা বিহাদে বিচাত ও অবনত। বয়স অধিক হয় নাই, অংশচ এ ক্যক্তির দেহ সমনের মকল লক্ষণাভাতে। শু-রীর কি মলিন ও কাস্তিবিহীন। বেলয়ড়িজার্ন অস্ত্রা। ইহার বাধা আ-হানতা সংবিদ্ধ ইচার আন্তরিক শ্রী-চীনাতা স্থানেও জনিন। भाभावतान, अवस्थायुक्षान विश्व स्थानन অভিবাহিত ইইসাছে: কৰ্মন ক্ষেণ্টেন ষাকে বলে এ বাস্তে ছাহা বৰৰ বাবে নাই। ক্ষোর প্রতি কি কর্ত্তর গ্রহা কগন শ্বনিয়েত্র কিয়া ভদমুদারে করেঁ। করিতে এ শাক্তি कथन ८६८। करत नारे । अध्या मर्कमा ই্ছাকে পরিচালিত কাংলাডে। তিপুণালার । স্বাণ্ড হইয়া এ সাজি শত শত পাপ-কর্ম্ম করিয়াছে। কত লোকের প্রতি অন্যায়া-, চরণ করিয়াছে। কত লোকের খতি নৃশংন नानहात को अयोष्टि 2 उद्यो वला गाप्त ना। जेचार हेरात विधान नारे, भारताल हेरात আছা নাই। স্থ সূর্যাং পৃথিনীর নানা বি-পদগাতে ইছাকে অশেষ আন্তরিক যন্ত্রণা ভোগ করিতে **হেইরাছে।** বহুকলি পাপ ক্রিয়া করিয়া এখন ইহার পাপর্ত্তি সকল ক্রনে নিজেজ হইয়া আসিতেট্ছ, এখন অ-তাত জাবনের কার্য্যাবলী চিস্তা করিয়া ইহার कारा अपने क्रिकेट के विकास की बार न उ हेशक प्राचन कार नारे, द्वारण बन्ध-রিত, চিস্তায় ক্লিষ্ট, নানা ুসাংসারিক তুপ-ততে কভাবিকতি; আর এই অতীত ও গ্ৰহ্মানের বৰার বক্তবায় নির্ময় হইয়া অথন

দেব-পথা ; "

কাল কাল নেশ দেশ অভিক্রম কান, বে তানে কোথাও ভার আহে দিং না শেষ । লোথা হ'তে আমিতেহে কোন্ শ্রুনীয়েতে রাথিয়ীতে আপনার অভীত উদ্দেশ।

থরণ মরিং। আছে কেন্ গান্তে তাকু শব্দে অপর শিশ অনুভ জাবন। ডালগে আমলা আর এমৃতের গার শিশাস্থ পথিক তারে বহে অনুক্র।

আপন সক্ত-বিভা করিরা বিকাশ ত রহিরাছে চির দিন নীরব জ্বাগ্রত, লক্ষাহারা হ'য়ে ভাই বিশ্বরাচর মরণের অন্ধকারে হয় না নিহত।

বিমল জ্যোতির মানে ঠাই নাহি পে'রে আঁথার মুনিছে হেথা সংদার প্রাক্তন; সংসারের অনুবাদে এই দেব-পথি, ধর ভাষা যদি চাও বাঁচিতে জীবনে।

ব্রাহ্মনমাজ এবং ইহার অতীত ও রহমান।

রোক্ষাসমাজের প্রথম কলে তর্কের কলে। এতদেশীয় জনেবেই আগনে উপহত ছিল। , **অনেকে** প্রালিত গোরালক ধর্মে তুপ্ত না হইয়া খিষ্টার পোভালিত ও আত্মা কলিতে-হিল ৷ . সেই সময় সংঘদে তন সাল সকলকে প্রায়ত মর্মে স্থাপন করিবার উল্লেখ হিন্দু-স্থাতে ৩খন তৰ্ক উপস্থিত কৰেব। ভাষাঃ **উफ़िशा** द्वालि-निवास । विश्वती, विवेशस (भई आग तकसूत इकेशा दिल अतः अदे শাজেৰ প্ৰাকৃত বল্গালয় আৰু ত্ৰ ক্ৰীটা ষায়। কিন্তু রলেখেতেন শাল চিন্দ্নরে এর য়ে অবস্থায় উলিভ হন তথ্য স্থিত মুক প্রকাশ করা ভাঁহার পক্তে সহজ ছিল লা। দেশকাল উহোর সম্পূর্ণ এতিক ন। তিনি মনের সকল কথা প্রকালত স্থিত বনিতে পারিকেন না ' হিন্দুর নিগট উচিরে এবেশ-দার শাস্ত্র কারণ স্থানিন বন্ধি আপেকা তথ্য নাজেরই প্রামাণ্ড ছবিক চিল। স্থ-জনাং দিনি নেই শাক্ষণমানে গা কিছু বুঝা-ছিতে পারিকেন উহাই কাঙার প্রেক নথেপ্ত হটত। এইরংগ ভিনি শাস্ত্র ছারা একেখর-বাদ সিদ্ধ করিলেন বটে কিন্তু শান্তই আবার ভবিষাতে বিশেষ অনুথের মূল হইয়া উঠিল। রামযোহন রায়ের অবশয়ন এখানত বেদ ও বেদান্ত। নিজ্যতাই বেদের প্রামাণিকতা এই বিশাস তৎকালে লোকের অস্থিমজ্জায় প্রবিষ্ট ছिল। किन्नु तागरभाष्ट्रम बारप्रत कार्ता-थनानी भंगारभाष्ट्रना कतिरन किष्टूरल्हे বোধ হয় না যে ভিনি এই দাগারণ বিখা-সের অনুসরণ **ক্রিয়াছেন।** তথাচ তিনি ্যথন দেশকা**লপাত্তার অনু**রোধে এই বিশয়ে বোনাবলম্বন করিয়া যাল তখন লোকের মনে বেদের নিতাতার উপর বিশাস অটল ছিল।

তাঁচার লক্ষা যে কোনরূপে হউক দেশব্যা উপর্বা নির্মান করিতে হইবে। তিনি বুনিরাছিলেন ধর্ম উন্নত না হইলে নিজাব হিন্দ্র জে প্ররায় সভীকতা আদিবে না। লোকে বেদকে নিত্য বলিয়া আকার করুক আর নাই করক তাহাতে কিছু ছাইদে भार ना। (वन-ध्या**रिक यनि এकियतवान** डर्निड हा तर्दशास धरे हेक्टे भटन लाज। गुध्रत्य िनि श्रंटे जना (वरनत छेशत চেল্য ত্রাপ আগতে করিতে নিরস্ত ছিলের। কিন্তু এসিচে ভাষার মহমোগী স্থাভিত রাম্বন্দ বিদ্যাবাগাল তাঁহার মুক্তর পর अध्यमनाद्व हा मकत छेश्रामन एन छोटा পাই কবিলে দেখিতে পাওয়া যায় যে তিনি শন্তারের ন্যাস বেদ ও অনুভবকে ঐবরমিছির লামাণ বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন এবং তা-হার উপদেশের স্থানে স্থানে ম্পঞ্জীক্ষরে এই হুছাও ছাছে যে মুম্মা চরমে ঈশ্বরে লীন হাক। বিদ্যাবাগীশ প্রাচীন কল্পের বােন্দ্রণ প্রিড। যে শিক্ষা রাম্যোহন রায়কে স্থা-গীন বজি দিয়াছিল কিছু দিন প্রেমির ব্রাহ্মণ প্তিতের সেরূপ শিক্ষা ছিল না। ফলত ভিনি যে একজন বৈদাভিক ছিলেন দে বিষয়ে বিশেষ সন্দেহ হয় ন।। এই বেদান্ত-বিং পঞ্জিত যে উপদেশ ও আলাপে লো-বের মনে বেদের নিভাত। ও বৈদান্তিক ধর্ম্মের ভ্রোষ্ঠত৷ সূদ্রূপে মুক্তিত করিয়া যানু এই বিষয়ে তাঁহার শাস্ত্র-বাখাানই প্রমাণ। ষাহাই হউক বেদ নিতা এবং ত্রাক্ষসমাজের १र्पा रिकाश्चिक सम्बा खाकानगारको श्राथम ইভিহাদে যে এই কথা পাঠ করা যায়, সন্ত-বত এই টুকুই ভাছার মূল।

ইহার পর শ্রীমৎ প্রধান আচার্ধা মহা-শাবের কাল বা আক্রামনাকের সংস্কার ও

[🌞] विकासंबीत्यत्र अऽ• बायास क्षयः।

কার্যোর কাল। ইহা একটা প্রাদিদ্ধ কথা যে এক সমার কোনও আক্ষাক্র ঘটনায় हैहाँ बरन अक्छ। त्यांत छेपांगा भाहेटम। (महे छेनामा पूर्व कतिवात खना हेहीत ধর্ম-জিজ্ঞাসা উপস্থিত হয়। ডিনি বি-দেম ও পক্ষতাদি দোম শ্না হইরা সরল যনে বহুদিন শৈৱহানে ধর্মতত্ত্বে অনু সদান করেন। ইংগ্র ফল ভাহার আল জোন একদা এই মহামতি পিছিতায় জানের জামিত দেখের একতা উপলান্ধি ক্রিণ্ডিলেন এবং ইচার মঙ্গে , সঙ্গে हैर' १ वंगानन । अरे अष्ट हरीक २०स থাগচ এট অভের কটা সণ্টা সার একটা বিস্কুলোডে। সোহাই শ্বাহ্বা। এই আছে-खादन धरित अकाळान एंग्साच । अहा अ চেতন-ধর্ম আন্ধান ভারা স্বস্পার জীতি-পাদন প্রিল ৷ তিনি নিজ-সভূপে এক-রূপ নিংশ গর ছইলেন। পরে জীলব ধর্মানান্ত্র বেদ বেদান্তের আুলোচনায় প্রবৃত্তি হয়। তিনি এই সকল শ্লান্তে আলনাকই লদিছিত অক্সভানের বিকশি দেখিতে প্রাই-য়াছিলেন। প্ররাথ তদবধি ইহার উপ্র ভাহার প্রগাচ প্রকা অব্যো । পরে এই সমস্ত শাস্ত্রের ঐতিপাদা অদিতীয় ত্রংকার উপাদনা হয় বৈলিয়া ত্রাক্ষণমাজের গ্-हिं छाहात मध्यान घलिन। ত্রাক্ষদযাজের পক্ষে একটা বি-**শেষ সময়। রাম্যোহন রা**য়ের প্রাংব মস্তিকের উপর ত্রান্মসমা**জে**র উৎপত্তি কিন্তু প্রধান আচার্য্য মহাশয়ের স্থ্রশস্ত হাদ্যের উপর ইহার হিতি। রামমোহন রায় শাস্ত্র-দিকু মন্থন করিয়া বৃদ্ধিবলে এক প্রক্ষাকে উ-দার করেন কিন্তু ইনি প্রাণের পিপামা শীন্তি করিবার জনা প্রথর অনুসকানে অন্তরাস্থার পরমান্থার দর্শন পান। এক बन क्यान-क्षतान बाब वक बन जीव-क्ष-

ধান। পশাসগতে এই ১৮ উপাদানই खुशतिहार्या अवर कृताल्ए । वेन एनवे लोन রব একই রূপ। ফল্ড এই স্মূত স্টাত্ত ত্রা**ন্মান্তর^{্কী} মুগান্তর উপ্রেড** ১ইল্রাড়র*া* त्रागरमाञ्च बार्यत है त्या एकरत् विकास र्वत মাসার, স্করাং দিনি কেবল ক্রিণায় স্কুকে একেশ্বরবাদ প্রাণ্ড। কলি। যান। লিন্তু ডিনি ভর্মহো পাস্তে যা সমস ভার র্থনা ভাছে বেশকালের ভানবোরে ভাষ্য পরিষার করিছে পায়েনকাটী। তারান আস্থা মহাশ্য প্রথমত ভাষ্টেই সংস্থাৰ আন্ত করেন। ভালার স্থানত সাহাধর্ম ভাষের প্রতি পরে ও প্রতি ৮বে এই সংস্কৃত ছিন্দুৰ্শ্ব পাঠ কৰা যা: ৮ ভলত কেন্ ८८नाउँ धेर् धरण्य खान च प्रस्कित। बागरगाइन बारशव उन्द्रिय आहे इहेरड য়ে নমস্ত ভানবিরোধি ২৩ ও বিশ্বাস আসিয়াতিল এই গ্রহ ডাহার জীংন্ত প্রতি-বাদ। ইতিশার্কা উলিখিত হইয়াছে যে ভাষান আগেষ্ট নহাশায়ের ধ**র্মাশিক**ক ক্ষাং আগ্রা। তিনি পাঁচন্তায় ধর্মকে পান। বাহা ও আন্তর গুরুতি এই বিষরে ভাঁহার যথেপ্ত আত্মক্লা, করিয়।ছিল। ইহা ছারা তাঁহার দৃঢ় প্রতীতি হয় ধর্মের উৎস স্বয়[ে] আত্ম। তথন তিনি জলদগন্তীর স্বরে প্রচার করিলেন বেদ অনিতা। যে কোন দেশের যে কোন গ্রাহে সভ্য আছে , তাহাই জ্রীজোর শাস্ত্র। বেদের ন্যায় কোরাণ বাইবেল সকলই ত্রান্সের শাস্ত্র। রাক্ষ্যাজ এত কাল বেদ সম্বন্ধে যে ভ্রান্ত যত পোয়ৰ করিতেছিল এতদিন পরে তাহার মূল শিথিল হইয়া পড়িল 📭

এখন প্রশ্ন এই বে এ দেশে বেদ নিতা ঝা অপোক্ষরের বলিয়া বছকাল যাবৎ আদৃত কেন। আমাদের বোধ হয় ইহার একটু বি-শিষ্ট কারণ আছে। প্রাচীন শাল্পকারেয়ন

ধর্মানিব্যুস্থলে বলিয়াছেন, যিনি জ্ঞানী ও সাধ্, বাঁহার পক্সাত ও বিভেগ কিছু गाज नाहे, जिनिहे सन्दश धर्मात अधूमान করিতে পারেন। আমরাও বলি এই রূপ অধিকারির নিকট ধর্মানুমানে বেদের প্রামাণিকত। যৎসন্ত্র। কিন্তু এরূপ অধিকার मकलात পरक यूजल नम्र । এই জনা पुरप्तभी শাস্ত্রকারেরা যথেত পরিবর্ভের মুখ হইতে সংধ্যা ও সদাচারকে রক্ষা করিবার আশাবে বেদ নি ল বা অপোক্রমের বলিয়া একটা শা-সন রাখিয়া যান। কেবল এই দেশেই বা কেন অন্যান্য দেশেও লোকে সাম ধর্মা-শাস্ত অভ্রান্ত বান্যা খাকার করে। তবে বিভেদ এই ধখন কুৱাপি কোনও ধর্ম-শাস্ত হয় নাই তথন এই ভারতে বেনের এই মহিমা জাগ-রিত হইয়াছিল। কণ্ড এইলে প্রচার একটা শাদন নাত্র। ইহার পুড় উদ্দেশ্য धमिकातिनिया अना शर्मत अकरा वात्रा 'হাপন। নচেৎ ধর্মাও আচারে লোকের একতা না থাকিবারই সম্ভাবনা। পূর্বের বলিয়াছি প্রধান খাটাগ্য মহাশ্যের কোনও একটি আকম্মিক ঘটনায় ধর্মা-ক্ষিত্তাসা উপ-স্থিত 'হয় এবং তিনি নিষেষ ও পক্ষপাতাদি (माध शूना इहेशा मतल यतन वर्गाचुमकातन প্রবৃত্ত হন। ইহার ফল তাহার আত্মজ্ঞান। অধিকারিতার পক্ষে এই টুকুই যথেষ্ট প্র-মাণ। স্থৃতরাং ধর্মানুমানে ভা**হার হুং**-প্রত্যয় পর্যাপ্ত ছিল। কিন্তু এইরপ অধি-কার সকলের পক্ষে স্থলত নহে। ইহা মনুঘা-প্রকৃতির একটা অবস্থান্তর প্রাপ্তির श्रमिक द्राट्य। क्य कथा माधन-माटलक । এই জনা প্রধান আচাষ্ঠা মহাশয় বেদের নিতাতা অধীকার করিয়াও সহং অটল বহি-লেন কিন্তু বেদের সন্তুত্তে উহার উজ্জাপ रचायन। शृष् ऋरण खाकानवारक खक्छ। विश्वय-্ষত্র পরিবর্ত্তের বীজ রোপা কমিল। ব্ৰাহ্ম-

সমাজে যথন এই ঘটনা হয় তথন এদেশে क्जानकती विमा (कवन हेदताकी। अटकट्डा দেশীয় ধর্ম-শাস্ত্রের চর্চ্চা প্রায়ই ছিল না। তাহার উপর আবার ইংরাজী শিক্ষা এ দেশের ধর্ম্ম ও এ দেশের আচারের উপর त्नारकत गरन अकते। विरक्ष खन्नाहरण्डाः कुमध्याहत । निरन्तक अद्देतल या निका देशह সম্বাং ক্লাজান এবং ইহাই বার্মানুমানের সংগ্রেডক হইর। **উ**ঠিল। সভরাৎ ত**ংকালে** ্রেবল ইংরাজাশিকার বলে ভা**লাদিগের** -भरता जरमरा वाहितन 'छ शिहेरक शर्मा-सिक-কের পরিত্র হণিকার অর্পণ করিলেন। আমরা বলিয়াছি যে বেন বেদান্তে আপনার হৃদি-ভিত ধৰ্মা-ভাবের প্রতিবিধ আছে বলিয়া উলতে এধান আচার্য্য মহাশবের হানগ্রের অনুৱাগ। এতদাতীত বেদ বেদান্ত অবলঘনে ভাষার আরও কিছু গুড় **উদ্দেশ্য ছিল।** রামনোহন রায় হিন্দুধর্মের ও হিন্দুসমাজের সংস্কারক। তিনি উচ্চারই প্রদর্শিত পথ অনুসরণ করিতেত্ত্ব। স্বতরাং এই লোক-হিতৈষ্ণ। বৃত্তিতে অটল বলিয়া ইংরাজী শিক্ষা ভাঁচার উপর কোনও আধিপতা করিতে পারিল না। তিনি শদিও এক দিকে বেদের অনিত্যতা ঘোষণা করিলেন এবং স্কল দে-শের সক্ল শান্ত্র—যাহাতে ঈশরের সত্য আছে তাহাই তাঞ্জের শাস্ত্র বনিয়া স্বীকার করিলেন, কিন্তু সেই বেদই ভাঁহার জীবন **७ काटनांक रहेश। बहिन। छिनि अरम्टन**ः नगाक गृहील इहेनात जना वहे दिल्लाज বেল বেদাভের প্রসাদাৎ অধ্যান্ত্রিক ধর্ম वाकाधरणा हिन्दू शास्त्र मकात् कतिरनन । ফলত ইহাই প্রকৃত স্বলেশাবুরাগ। বিজ **जाहात्र भिमागर्गत गर्था खरनरकरे अहरे** টুকুর নর্দা ব্বিতে পারিলেন ন।। ভিনি त्य द्वरतन नाम द्वावन नार्यका क्रिका ধর্ম-এছকে—হাহাতে ইয়ানের করা ব

म्बर्धिक विकास के विकास के विकास के किया कि किया कतियादान है हावह या छ। हादम्ब श्राप्त ্ মার্জীয় প্রবৈশ করিল। ন্তরাং তদবধি ধর্মানিকার জন্য প্রধানত বাইবল অনেক बार्कात व्यवनमनीय हरेता छेठिन। किन्छ বাইবলের ধর্মাশিক। হিন্দুর নিকট কোনও ष्यः न कार्याकरी इव ना। विहेवन य किन হিদ্যর ধর্মাশিকার উপযোগী নয় তাহারও কার্য্য আছে। দেখ, প্রত্যেক লোকেরই সাধন ও সিদ্ধ এই ডুইনী অবস্থা আছে। সিদ্ধাবস্থায় फूनि वू जाहा वा गरु त्य नात्यरे जेवतत्क ভাক, যে কোন ভাষায় টাধার স্তৃতি বা বন্দনা কর তোমার প্রাণের ভৃঞ্জি হইবে। কারণ তথন ঈশ্বর তোমার করতলনাপ্ত আমলকের নায় হইয়া আছেন। নান বা ভাষা একটা ব্যবধান ঘটাইয়া তাহা হইতে আর তোমাকে मृत रामा भारत ना। किन्नु भारति व ষ্মবন্ধা ঠিক্ এরপে নয়। তুমি অবনী যে কোন নেশের যে কোন ধর্মাশাস্ত্র ছইতে সত্যটা পাইতে পার ফিন্তু ভাহা হইতে ভাবন পাইলে না ৷ আবার সভা যভক্ষ না জাবন আনিয়া স্কার তাবৎ তাহাতে কোন वित्मय छेनकात नार्हें चायता देगगदकाल হইতে 🛊 হস্তন-তুর্মের ন্যায় দেশীয় ভাষা ও দেশীয় ভাবে পুঁछे हहेगा पाकि। ভাব-সংশ্রবে পেলীয় ভাষা ও ভাব আমাদের েপ্রাণ র। শনে অবস্থান্তর উৎপাদন করিয়া থাকে। মনে কর শাভি শান্তিক্সলিলে আমরা मत्न दर्भम पृथ हरे किश्व ভাবে উहात्रहे প্রতিরপ কোন কথাছ বলি আমার মনে কর্মাজা উপৰিত হউক ইহাতে আমাদের मन कथन मिजाश कुछ रहेरत ना। बर्सन कन र्धवत्त मास्ति भक्ती वागाएक देशमस्वत खन-छक्ष । देश बाता जागात्मत शात्मत तम র্দ্ধি পায়। কিন্তু বিজাতীয় ভাববাঞ্জ কর্প-काला अवनि वासारमत देगनदवत्र दमाञ्च ।

হাতে অবশাই কিছু প্রাপ্তি লাচে কিন্তু তাহা আমাদের প্রাণের পৃষ্ঠি নগ্ন। এখন দেখ সভা কেবল শিক্ষার অন্য নগ্ন উহী। জীবনে ব্যবহার করিবার জন। প্রভিরাৎ দেশীয়ভাবও ভাষার গৃত শীক্তিই যখন প্রাণ্ড সকার করা তখন সাধনের অবস্থায় ইছাই যে বিশেষ উপস্থোক্ষী ভাষ্ণার আগ কোন ও সন্দেহ নাই। বলিতেই কিইছা বাতীত সান্ত ইতেই পাবে নাই

योक्, अरैकद्रश हैदबादबाशीय दार्रेक भारतायू भीनरेन ४४न जाकारै गांक कार्यत আনন্দ্রাভে বঞ্চিত হইলেন ভখন ডাহার গতি বা**হা কার্শে**রে দিলে ফিবিল। নাম সমাজ-সংস্কাব। এছলে আরও একটু ্ৰূথা বলিতে অবশিপ্ত আছে। পাশ্চাত্য জ্ঞান তো খনেকের অস্থিতভাগ প্রবেশ করিয়াছে এবং ধর্মাশক্ষক প্রধানত বাই লে বা প্রিটা खरे मनिकाकन-स्थारण रकवन मधांक नरह , আক্ষধর্মত ধানিকটা রূপান্তর ধারণ কবিল। ইহা কাহারই অবিদিত নাই যে 🤞 সময় হইতে আক্ষমণাজে খ্রিষ্ট-মহিমা প্রদীগু হইয়া উঠিল। জাবন-সমুদ্রে শিপ্তই প্রত্ব তারা। তাঁহার রক্তমাংস পর্কোপলক্ষে অনেক ত্রা-ক্ষের দঝোদরের ভৃত্তিসাধন করিতে লাগিল। জার্ডন নদী পবিত্র বলিয়া গৃহীত হইলেন। এবং খ্রিটের মৃহাদিনে উপবাস একটা वर्णकाया- व उठमावि बैटमा इरेवा छ।ठेल । ধর্মের অবে বেমন এই পরিস্তু ব্যবহারেও ষ্মাবার এই রূপ। বিধ্বাবিবাহ, বৈদ্ধাত। विवार, ममूबा-माष्ट्रिक विवार, ज्वी-श्वादी-नला, जो-পরিচছদ, खीवन-প্রণালী, এ সকলই ইয়োরোপের অমুকরণে অল্পে অল্লে আসিতে লাগিল। এইরূপে ধর্মে বার আনা এবং बावशाद्य स्थान चाना चिट्ठीन भाषिश खाका সনাজ বড় শোচনীয় - অবস্থায় উপস্থিত इट्टलन ।

তত্ত্বোধিনী পত্ৰিকা স্কারও এই বি**জাতীয়তার হস্ত এড়াইডে** পূর্বের বলিয়াছি কংগ্রভায় ধর্মামুখানে প্রশাণ। স্থতরাং ত্রাক্ষা বেদের নিত্যতা স্থী-কার করিয়া উহাকে তুগন পথের অভ্রান্ত নেতৃত্ব দিতে পারেন না। কিন্তু এই ভারত-বর্ষে আজই যে কেবল রোল্যমাজ বেদের এই অনিত্যতা খাকার করিভেচে তাহা নহে, ইতিহানে দৃষ্ট হয় অতিপূর্বের বান্ধেয়াও ঐ রূপ করিয়াভিশ। কিন্তু বৌদ্দেরা বেদের অনিভাতা স্বীকার করিলেও আমরা গৌদ-ধর্ম্মে হিন্দুধর্ম্মেরই প্রচুর উপাদান দেখিতে পাই। ইহার কারণ অনুনদান করিলে বোধ হয় যে বৌদ্ধের৷ এক সময়ে বেদোক্ত

वह जना खनान

ধ**র্দো** বিরক্ত হইয়া **উঠে এবং** যাগবচ্ছের

উচ্ছেদ্সাধন পূর্বক বৈদিক ধর্মের সংস্কারে

বদ্ধ-পরিক**র হয়। 🖰 একটা বস্তার দু**ষিত অংশ বাদ দিয়া তাহার সারাংশ গ্রহণকেই সং-

कांत्र दला गाया "रवीरम्बद्धा हिम्मूवर्च मचरक

ष्पाटक त्योक्तरका जात्र किछूहे नव छेश ७ छन

বেদান্ত ধর্মা। এখন ব্বিয়া দেখ রামমোহন রায় হিন্দুস্**যাকে** একটা স্ব**ন্ত**ন্ত্র ধর্ম প্রতিষ্ঠা

कांद्रण शान नाहै। हिन्नुशर्ण्यत मः कावहै

তাঁহার উদ্দেশ্য ছিল। কিন্তু প্রধান আচার্চা মহাশঃ ভাঁহার এই উদ্দেশ্য বুঝিয়াছিলেন ।

এই স্বনা তিনি **রেদ অনিতা** ইছা ঘোষণা

করিয়াও হিন্দুশান্ত ভাশ্রের করিয়া হিন্দু

ধুর্মাকেই সংস্কৃত আকারে ব্যাখ্যা করিছে

चापि खाक्रममाज अरक्षत्रवानी हिन्द्निरगंत्रहे

সমাজ হইয়া আহৈ। এখানকার ধর্মা সং-

স্কৃত হিন্দুধর্ম্ম এবং ব্যবহার সংস্কৃত হিন্দু

ব্যবহার। কিন্তু তাঁহার শিঘাদিগের মধ্যে

অনেকেই ভাহার এই গুড় ও গভীর উদেশ্য

ব্রিতে পারেন নাই। এই জন্য তাঁহা-

দিগের হস্তে পড়িয়া ত্রাক্সবর্কে নানা রূপ

বিজ্ঞাতীয় ভাব মিশিয়াছে এবং সমাজ-সং-

এই कावरन जमाविध अरे

ভাহাই করিয়াছিল।

লাগিলেন ।

পারে নাই। কিন্তু ঈশর অন্তের পথ-প্রদ-ৰ্ণক। তিনি গোপনে গোপনে যে কাৰ্যা করেন কেহই তাহার সন্ধান পায়ন। এই রূপে দেখিতে দেখিতে কিছুকাল পরে আবার বোক্ষদমাব্দের স্রোত ফিরিয়া আদিল। এখন দেখিতেছি তালদিগের মধ্যে অনেকের মনে ত্রাকাংর্শ্মের এই প্রিষ্টীয় ভাবে দিবেষ অন্মি-ग्राट्ट। ज्यानक्ट अवन भर्त्या हिम्नु अवः कीवत्न हिन् । हिन्दू छ्यान ७ हिन्दू शांश षात्न कहरे ধর্ম-পিপাস। শাষ্ট্র করিতেছে। ইহার পূর্ব বিকাশ-স্থল পণ্ডিত বিজয়কৃষ্ণ। আমনা পূর্বই-প্রস্থাবে আধ্যান্মিক রূপকের যে টুকু অনিষ্ট-কারিতা ভাহাই প্রদর্শন করিয়াছি কিন্তু বিভয়কুঞ্জের বিষয় বিশেষ কিছুই বলি নাই ম ইনি ভাষ্কের মধ্যে সরলতার একটা প্রতিমা। যথন যে টুকু মুক্তির পথ বলিয়া বুঝিবেন ইনি তথনই তাহা গ্ৰহণ করিয়া থাকেন। हेहाँदिक लहेशा खाकानभाष्य चार्क जाएंका-লন চলিতেছে। অ**নৈ**ক ক**থা রটিভৈছে। কিন্তু** আশা করি অনেক কথাই তাঁহার পকে অস-দ্যব। তাহার কোন কোন মত যে দেখিল । আমরা তাহা অদীকার করি না কিন্তু তই-সভেও আমরা দেখিতেছি তিনি প্রকৃত হিন্দু হৃদর পাইয়াছেন। যেখানে যে তাঁৰে ঈশ-রের পূজা ও ঈশবের কথা হয় সেইখানে তিনি আপনার প্রাণারাম ইবরকে: মেনেন এবং সেই খানেই ঈশ্বরকে প্রশাস করেন ইহাই প্রকৃত হিন্দু ক্রদয় এবং ইহাই হিন্দু প্রকৃত যোগ ও প্রকৃত ভক্তি ৷

এখনে প্রদেশত একটা ঘটনা মানু পড়িল। আমি একদা কোন প্রিটায় উপস্কৃতি नता निशाहिनाय। अञ्जितिक नमूहेर नही তথাকার আচার্যা। বিশ্বয়ের সহিত নেত্রী लाम 'अनेती जिन्देशारी हुक चारत नीका देश निविश्वे क्रिके क्रिकेट क्रिकेट

আদিবার সময় নিকটন্থ ইইয়া জিজাদিলাম আপনি বিধল্মীর ভজনালয়ে কেন ?
প্রভাতরে তিনি কহিলেন ঐ বিদেশী ভক্তিমান আঁচার্যা যে আমারই প্রভুর নাম করিতেছেন। আর উহাঁর হৃদয় হইতে যে
ভক্তির শ্রোত বাহির হইতেছে কায়মনে
প্রার্থনা করি যেন ঐরপ আমারও হয়। শুনিয়া শুভিত হইলাম। ব্রিকাম ইহাই
ভক্তিমান হিন্দুর উদার হৃদয়। বলিতে কি
আঁক আমরা বিজয়ক্ষে দেই হৃদয়ের পরিচয়ু পুটিলাম। প্রতিনি একজন ঘণার্থতই
সাক্ষিত ইশ্রভক্ত।

ग्रा।

(2)

তরে তরে জনিং গছি মানবের মাথে
ভানহের আলোটুকু নিবে গেছে বোলে।
কে কি বলৈ ভাই ভয়ে মরিতেছি লাজে';
কি বর কি বর ভেবে ভরে প্রাণ দোলে!
"আলো" "আলো" খুঁজে মরি পরের নরদে,
"আলো" "শলো" ভুঁজে খুঁজে কাঁদি পতেব পথে,
অর্কুরে হয়ে পড়ি দুলির শর্মে,
ভর্মী একবিদ, অগ্রাসর হ'তে।

বজের আলোক দিরে ভাস' অন্ধকার,
ভাদি বদি ভে্কে বার সেও ভরু ভাল,
বি মুহিই জানালা নাই সেও কারাগার
ভেকে কেল আলিবেক অরগের আলো!
হার হার কোবা সেই অধিলের জ্যোভি,
হলির সরল পথে অন্তিভ-গতি!

্বালারে আঁথাঃ শুন্যে কোটি রবি শাল ক্রিড়ায়ে রয়েছ একা অন্ধীম স্থলার ! ত্মাতীর শাস্ত্র নেত্র রয়েছে বিকশি
চিরস্থির শুক্র হাসি প্রসন্ধ অধর।
আমন্দে আধার মরে চরণ প্রশি,
লাজ ভয় লাজে ভয়ে মিলাইর। লায়।
আপন মহিমা হৈরি পুলকে হর্মি
চরাচর শিরু ভুলি ভোমা পানে চায়।

আমার হৃদর দীপ আঁধার হেধার
ধূলি হতে তুলে এরে দাও জালাইয়া,
ওই এনে ভারা তুমি রেখেছ যেখার,
দেই গগনের প্রান্তে রাথ কুলাইয়া।
চিরদিন জেনেরতে, নিবিবে না আর—
চিরদিন দেখাইবে আঁধারের পার!

প্রাপ্তি স্বীকার।

আমরা কৃতক্ষতার সহিত স্বীকার করিতেছি থে নির্মাণ্ডিত প্তক ও পত্রিকা ওলি আমরা উপহার প্রাপ্ত হইরাছি।

- রধবা বিবাহের শালীয়তা ও মৃতিবৃষ্ণতা।
 শ্রীদেবেলনাথ মুখোপাধ্যায় প্রাণীত।
 - २। नामत्वम मःहिजा द्की धूनी नाथा।

Journal of the Asiatic society of Bengal, Vol LV, Part 11. N 11-1886.

Bibliotheca Indica. Published by the Asiatic Society of Bengal.

N. & No 567. (Parasara smriti)

N. S. N. 568. (The Nirukta)

N. S. N. 569. (Mantakhab-at-Tawarikh)

N. S. 570. (Zafarnamah)

N. S. 571, 572 (Akbarnamah)

N. S. 573, (Tattva chinjamani)

KB. S. 574 (The Asvavaidyaka)

* Proceedings of the Asiatic Society of Bengal. Apl 1886.

Report of the Southern India Brahme Samaj fer 1885.

Theosophist—July 1886.
Fellow Worker Vol., I, No. 6.
The Hindu Reformer Vol 1. No. 12.
The Interpreter for April 1886.
ভারতী ও বালক । আবাঢ় ১৮০৮ শক।
বামাবোধনী পাঁককা। আবাঢ় ১৮০৮ শক।
নবাভারত। কোঠ ও আবাঢ় ১২৯৩।
বাদ্ধব। আবিন ১২৯২।
আসাম বন্ধ। মাথ কাৰ্কন ১৮০৭।
সজ্জন তোধিণা। বৈশাপ ও জোঠ।
তক্ত-মতাবী ১৯ ভাগ ১২ সংখ্যা ১২৯৩।

আয় ব্যয়।

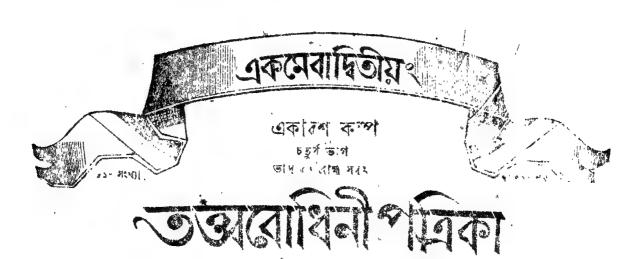
কান্তিক হইতে তৈত্ৰ পৰ্যান্ত আৰু কুৰং ৰঙ্

चापि खामनगर्भ।

00881/0

७ द	*# * !!	*34	***	44	
পূর্কাকার	হিত	• • •		2202	1/3
गम्षि	Deff	**************************************	in tele,	6599	VII O
ব্যয়	Ba e			२ ৯ ५ १ ६	V.
স্থিত	1. ***		14,4	9000	/3
		আর।	4 1	Art.	i
ভাকসমা	জ	***		2,00	10
শাশ্বং স্থিক	দান প্রাহ	1		1. • 4	
ত্ৰীমন্মহৰি	<i>(सटवास</i> नाथ	ঠাকুর	***	3004 "	1
elf T	ব্দানস্থাত বি	नेना भटवन	মাহা ব্য	304	*
শ্ৰীৰ্ভ তাঃ	বনাথ প্ত			30/	17
,, (%	গাভিরিজন	থি ঠাকুর	•••	5 mg 3.	•
শ্রিম তী জব	ময়া দেখী		***	285	
श्रीयुक्त हान	হন্দর রায়,	কেতুপাড়	া পাৰনা	384	"
,, সন্ত	প্রসাদ গণে	नामाभाग	**	. *	
শ্রীমতী নী	भमशी (नवी		4+3	31	٠.
প্ৰাযুক্ত কাবু	লালবিহারী	বড়াল	• • •	٤/	
7A 22	চন্দ্রশার দ	াস ৩ও	শা পূমা	en	
22 23	বেচারাম চ	ট্টোপাখ্যার		34	
)))	निवहक पा	4		e,	v.,
	ট্যার ধনির	A second	****	301	, ,
				4 7 0 7	

		S. C. C.
	. 1300 4811 1130	>864
श्रद्भक वांक	***	3/
बीयूक वांबू तिकनान बाब	় ভাগলপুর	3/
,, ,,, রামলাল বোদাৰ		13/
,, ,, त्रांशास्त्रास्य वस्र		5 \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \
,, 🚜 গোক্লক্ষ সিংহ		3
" "गीनमोध अरहाञ		31
,, ,, অধিকাচরণ নৈত		3)
প্রলোক গণ বাবু রামলাল		28
श्रियुक्त यानू महानम म्ह्याना		3/
, , আওতোধ রাধ	alder of Ma	, , ,
্ত্তকশ্বের দান।	••	, şo
तान नमंगीरभादन को द्त्री	anatota	38,
क्रीमुक भार अनिकलाल जान		•
जनादात अधिः	- + + / #25	36/o
	done reget on the bulletteredifferion o	₹€₩₽
ডত্তবোধনী পত্ৰিকা	•••	852/0
প্রকালয়	***	20010
যন্ত্ৰ		32.486/D
গতিহুত	**-	820170
ত্রাক্ষার্শ্ব গ্রন্থ প্রতাশের	্- মূল্ধন	>>>u•
ভাসনর্দ্ম প্রচার	***	3001
দাতবা	•	229
गवर्गस्य देश विश्य वासि		•
philippine marketures e-not marketificentaphone dos	t	management for a q
সমষ্টি :	15	9.881/0
বায়	15	
ব্ৰাহ্মস্থাৰ	***	GNSOG
তত্ত্বোধনা পত্তিকা	***	9 3 5 (2
পুশুকালয়	-	خالق
्रियखानव	17. ***	282·12*
শুহিছত		236/9
ত্রাক্ষণর গ্রন্থ প্রকাশের	মূলধন "	AB 19
ত্রাদাধর্মা প্রচার		384
माञ्जो 💝		
		23748
7718		ante Mar
		ताना एक ।



मळी साचि मन क्षिम् अन्योत्र त्य वे नित भ न प्रतात इत्रूत पूर्णेसप्रतिक क्षित् । एक्छ प्रमादा प्राप्तक

षाराजिक्षभारकच अन्यसासः। साध्यन् प्राचित्र ४ वेदकाय्ये नाचन इ तन रामन २०।

ত্যাদি আর্শম্ভ ।

প্রারেশ রবিকার স্থায় স্থাইকর

被信托 自转 ^特的表示解 (

शांतिन जयातिः राजवाऽहन বেরারথ সভামতি ল ভোরনারেলীগ্রন্ডী રાન**ઉં**ટ' ૧ <u>"હથાત્મ</u> હાલદા જાતના ક બાલદા सम मार्थक रक्षा ना कार्तित्व भारत्व महान् অন্থ উপতিত হয় 🖁 প্রমায়াকে না জানিলে অমেরা বিনাল গাই, আনিলে তা-यहा औरन अधि; अ अनी'त मर्ट बनाना षाना'त भाष दिल्ला हाएएप। উদাদীনেঁর নৃষয় জানা নকে, কিন্তু ভাবের বস্তুকে প্রাণের বস্তু করিয়া জানা। শার বিদ্যা সাংসারিক কার্যা নির্ব্বাহের জন্য, কিন্তু ত্রমানিদা আতার তৃঞ্জি-দাধনের জনা। "राभवा थाक्तरमाधक्तिमः भागत्रमाध थर्क-(तमः भिका करञ्जाव।।कत्रन्थः सिक्छिः स्टेन्।-ভোতিবনিতি অথ পরা যয় তদক্রমবি-গ্ৰাতে।" জ্যোতিষ প্ৰভৃতি যত প্ৰকার লোকিক এবং প্রাকৃতিক বিদ্যা আছে সমস্তই অপিরা বিদ্যা, যাহার ছারা অক্ষর্পুরুষকে काना यात्र जाहार भन्ना विकृता।

क्कारनह व्यम् ६ स्तार्थाम । जाह व्याट वि. १० व्यक्तितः भःभातः निकारम्त ५८०४ द्वरिधः कतिया पिट्ड लाहत, किछ औरताहनत लाहनत भाषाका बिहारीक भारत मा । व्यानिक निर्दाम व्यात्मतः । १३४ शमा व्यादमतः -यभाजीत रायारन व्यास्त्र विस्तामा, श्लाक्री क বিজ্ঞান নেখানে দথা্য-স্তি গালেশালার সমাচার আনিয়া দিয়ার নিবস্ত হয়। গ্রাকৃতিক বিজ্ঞানকে, আপনার প্রাণগত বিষয়ের খে-কোন সম্চার জিউল্সাকরে, প্রাকৃতিক বিজ্ঞান ভাষার একটি কথাবও উত্ত দিতে পারে না—অর্দ্ধিন্ত স্বরে উত্তর দিতে গিয়া কেবল আপনার অক্ষমনারই পারিচয় প্রাদান করে। বহিবিষয়ের সংসারেই প্রাকৃতিক বিজ্ঞানের মুখে ক্ষুতি হয়, জ্ঞানের भःभार्ण जाहात सूर्य कथा कूछि ना—डाहा শ্রতপ্রায় হইয়। ভাবস্থিতি করে। এ জন্য ষাহার। প্রাকৃতিক বিজ্ঞানের জ্ঞান্য প্রকৃ পাতी, बकाविला डीशटनंत हर्भन । त्या জ্ঞান অনীম ব্রক্ষাও ভেদ করিয়া প্রমাজার মহিমা অবলোকন করিতে চায়, প্রাকৃতিক विखान कान्तक रम् मिटेक ठाकाएँ ज नात्न कुरत ; किल छान ए रावन एएन ना। अह

জনাই জানে এবং বিজ্ঞানের মধেতেত বিব্রুল।
জ্ঞান চার জীবন এবং শ্রাতি, প্রাকৃতিক বিভানি ভাগিকো আনিয়া দেয় মৃত্য এবং বিষাদ;
কান ভাগা কেমন করিয়া প্রহণ করিবে ং
ইমর-প্রীতি দক দিকে দেখন অনন্ত জীবনের
ভিষ্ণ, আর এক দিকে দেখন অনন্ত জীবনের
আমৃত উপজিবিকা; জ্ঞান দি হেল্ট জালনের
ক্রিয়ে সে সেই অফ্র অমত জালন এবং ভাগার
করিবে, অনত খালাশের উপজা ভাতির।
মৃত্যিকাকেই সার্ক্বিরে: ইম্বা ভ্রুত্ব।
মৃত্যিকাকেই সার্ক্বিরে: ইম্বা ভ্রুত্ব।

अभारा विलाग भटता ५ उसम् गत हाई आहे, बारात स्टिंड किए। भाग विभात भारत चेशनीত হওণ হাইতে পারে। কিন্তু দিগ-√র(রুখ পণ্ডিরের। সে সকল দার অবলম .ধ্যরিয়া ফেলিতে গ্রাব-পদ চের। করিখা श्रीदकन। विकारनव विश्वताण स्त्रम, मङ्गन-ক্রবন, বিজ্ঞতার পানিচায়ক নিয়ম সকল ব্যাপার আরো পরবালার সক্রাপী এব विश्वागत कानमत गृहा जतः मिकत काल्याना-মান সাকা বলিয়া পরিগুলীত কটবে, ভাষা भट्ट, इन्द-नर्क्य जामगिक विशाम मिहे अभूकः, स सुधा कितत्व तथा व भाषांत আপনার তানা-গহরবে প্রবেশ পর্কক পান জুলাইয়া আক্ষালিন করিতে থাকে। ক্তএব কেবল হাত্র অপরা বিনাবে অপুশানন অন-(र्थंड भूत ; अशीत सन त्यतः मध्यादित कमा বেমন অপরা বিদ্যা এয়োজনীয়, আপ্লার জন্য সেইরূপ পর' বিদ্যা প্রয়েজনীয়।

সকল বিদাহি একদিকে বেষন তত্ত্বন্দী, আর এক দিকে তেমনি কার্যায়খী। জ্যো-ভিষ্ক বিদা। একদিকে আকাশব্যাপী প্রকাণ্ড ভত্ত্ব সকল মন্ধোমধ্যে আগাইরা ভোলে, আর একদিকে সামুদ্রিক নোকা চালনার নিছো-জিত হুইর বানিজ্যের সৌকর্যা লাগন করে। বিশ্বাসন বিশ্বা একদিকে যেমন জড়-জগতের ধাত্-প্রকৃতির নিগুত তক্ত সকল আবিক্ষারী করে, আর একদিকে তেমনি ঔষধ নিশ্মাণে নিগোজিত হইয়া চিকিৎদা কার্যোর সহায়তা করে। লোকে যেমন অনেক সাধা-সাধনা করা। উনাসানকে ববে ফিরাইয়া আনে, মনুষা দেইরপ জ্ঞানের তত্ত্ব-সকলকে বাহির হটকে ঘরে আনিয়া তাহাকে সংসার-কার্যো

ভাপর। বিদার ন্যাস পরা বিদ্যাও এক-দিতে ও ইন্ধী আর একদিকে কার্য্যমুখী। পরা বিদাৰ তত্ত্-গ্ৰাম অংশ আমাদের দেশে ল্রক্সান বাসয়া প্রায়দ্ধ এবং তাহার কার্য্য-এপান অংশ থাবালে যোগ বলিয়া ভাগিত। আমাদেশ ল'লালাভ, ইচ্ছামিচ্ছা, রাগ-ছেব্ ইন্যাদি মন্ত্রের প্রতি উদ্যান হইয়া জ্লা-নের আলেচনা কারলে—ভদ্ধ কেবল স-তেরে জন্য সভোর অনুশীনন ক্রিলে— মতের তাজ আমাদের প্র**ভারের দু**ল্লা ১৪। নির্পেক ব্যক্তির সাক্ষা যেমন সম-বিত প্রতায়-ভা**ত্তন, নিরপেক্ষ জ্ঞানের ক**থা দেইজপ সমাধক শ্রন্থের। কিন্তু জ্বানের। কথাতে খদি আমাদের কোন কার্যা না দর্শে, করে ভাগতে আহাদের প্রভার দূর **হইদেই** दा कि धात ना ११ तिरे वा कि। अरे बना, গ্রাভিকে গেমন ঘর হইতে ক্রমে ক্রমে বাহিরে বিস্থার করা আরশ্যক, জ্ঞানকে তেম্নি বাহির হুইতে জন্মে জনে পরে আনা জাবশাক। আমাদের পূর্বভিন ঋষিতা **দুর্বা** চক্র মেগ বিত্যাৎ অগ্নি বারু নদী সমুদ্র পর্বত অন্তর্নাক্ষ পৃথিবী হইতে পারত্রেগা-তত্ব বাছ-রণ করিয়া অবশেষে **আত্মার অন্তরতম[্]ঞান** 🧓 নিকেতন সেই প্রথ-তত্ত্বে অধিষ্ঠানের ছুন্ট উৎপর্গ করিয়া দিয়াছিলেন। সভ্যের শ্বতি शक्तारक पृष्ठ कतियात सना नितरणक कार् জ্ঞানীলোচনা করা যেমন আবশাক, তেঁশৰি मर्जाटक चटत भाहेगात कना का का

স্থাকে দিয়া সতাকে আত্মার অভান্তরে ধরিয়া ক্রিক আবশাক ি প্রকৃত পকে, পর্যাত্ম হেম্ম বাহিরে আছেন, তেমনি তিনি আমাদের আত্মার অভান্তরেও সর্ক্ষান আছেন; ক্লিন্ত গ্রীতির অধিদামানে খবেব লোকও বাহিরের হইয়া খায়, প্রীতির আক-र्यत्व वाश्टितंत्र त्लाकं अव्यातः श्रेशः के छ। अः প্রীতি অপ্রীতিই-, খন্তর-বাহিবের নির্ফাণ-করা ৷ প্রেলা যাহার যত জিয় ভাছার ্তত নিকটে গড়বান, সংহার সত অঞ্ছিম তাক্ হটতে ওত দরে বর্তুগান। জ্ঞান সাধ রণতঃ বার্নেরতে যে, প্রথায়া সকলেরই অন্তরতম আয়া, প্রোম বিশেষ করিয়া বলি-**তেছে** সে, ধাহার ভিনি প্রিয়ত্ম ভাঁহারই 🐋 ান বছুরতম। আত্তব ৫৫.মের পপই পরমাজত্ব অন্তরে আনিবার একনাত্র পথ। হারিচ নির্ভেক্ষ জ্ঞানের ক্রাহা বিশাস করিব। ইচা আমরা স্থির জানিতেভি যে, পর্মায়া অন্তর্ভের আত্মার অভ্যস্তরে পর্তথান আছেন, ভাষা हरेला ७ । এখন हरेल भारत है। তিনি আয়াদের নিচট হইতে দতে রছি-য়াছেন; 'শ্বত এব জ্ঞানের প্রবে সতোর প্রতি মনকে সেইরূপে নিবিষ্ট করা আবশাক— ঘাহাতে দেই সত্যের আকর্ষণ আত্মার অভ-বতম এদেশ পর্যান্ত পৌছিতে পাবে; যা-হাতে আমাদের স্থানমল' গ্রীতি প্রত্যথান করিয়া দেই জীবস্ত সভাকে আলিম্বন-পাশে বন্ধ করিতে পারে।

অক্টানের অনুশীলন পরমাতার ও তি মামাদের প্রতায়কে অচলের ন্যায় দৃচ করে, এই তাহার মহৎ ফুল; অধ্যাত্ম-যোগ আ-মাকে পরমাত্মার সহিত প্রেম বন্ধনে আবদ্ধ করিয়া অ।আর আনন্দের উৎস উৎসাহিত করিয়া দেয় ও অক্সার সমস্ত অভাব, মোচন করে, এই তাহার মসন্ময় ফল; একটিকে হাজিয়া আর একটি স্থচাক্-রপে সম্পান হ-

ইতে পার্বে না—উভায়ের সোগেই উনরে ।
সর্বাঙ্গ-স্থানর হয়। জোনের প্রতায় মূলধন হৈ
স্করপ, এবং প্রেমের গোলান-প্রানান আয়বায়ে স্করপ, উভায়ের ফোনাটিই উল্লেক্সীয়
নহে।

हिशादयमन खन मध्य (१, हास्तितः আলা অপূর্ণ, ইহাত তেমনি ধ্ব সভা যে, পর্যাসা পরিপূর্ব ; ভাহা সদি হইল দংক वामात्म्य मानगू-कर्षा (य कि छाष्टा छात कामारनत निक्छे करणाहत शाबिराह भारा না; মেই পরিপূর্ব সাচ্চদানক প্রমায়া मिनि वासारमय छारम अवसरण अविध्यान হইতেছেন ভাহার সহিত আমাদের আ রাব মধ্যম নিবদ্ধ করা, তাঁহার খনত ৫/সাদ-বিন্দু গারা আছার ইমস্ড শুলাব মেচেন कवा—इंशार्टे जागारमंत्र गायमा । जेयदाः রাধনা এই সাধনার নিচ্মিত প্রবাহ, কড্না অনুষ্ঠান এই দাগনাব বিষরণ-দেতু, এবং অংগান্ত যোগ এই-সাংনার গণাভূত প্রোভঃ-সঙ্গন। আমাদের ভাগো যদি কথন। এরপ শুভযোগ উপস্থিত হয় যে, জামানের প্রভাষ এবং জেস, মন ভবং প্রাণ সমস্তই অয়ত-সাগর গরমাত্রতে এনতানে সাম্মানত হইয়াছে—তাঁৰ সেই ও :-যোশই প্রস্কৃত অধ্যাত্ম গোন। অধ্যাত্ম-যোগের স্থনিস্তর শান্তি এবং স্তকোমল প্রেয়ে অংগাহন ৰুবিয়া সাধক যথন উপান করেন, তথন তিনি ঈশর-প্রমাদে পাপতাপ হটতে বিষ্কু হইয়া, মূতন চকু – নূতন আনন্দ্ৰুতন জীবন পাইয়া, আপাদ ম-क्षक मताशाष्ट्राख्य गूठन इष्टेश विधान क-রেন; তথন

"স মোদতে নোদনীয়ং হি বুকা। তরতি লোকং তরাত পাপ্যানং গুহা-এছিভোনিমকোহমূতে। তরতি গ তিনি আনন্দনীয় পরমান্ধাকে । ত করিয়া আনন্দিত হয়েন, তিনি শোকু হইতে উতীর্ণ হয়েন, তিনি পাণ ইইচে উর্ত্তার্গ হয়েন, এবং জনব-প্রন্থিল-সম্পায় হইচের বিমুক্ত হইয়া অমূর ব্যালন।"

হে পরমুজিন ! ভূমি আখানের মগলের अक्यां अम्मानात,— ्य कोन्हाः स्टा वर्ष्ट्रशान, मक्षरतात भएता वर्षभान, भए ५,८ मार्था नर्ज्यान-मकन महार मकन शहिरहरू गकन कार्याट ८०१४(४ ४, ०) द्रामध सम्भ মুর্ত্তি ভিতর ইইতে এলাশ পাইলা উঠি-द्करह, मभाकु क्षात्वत वास्तर्ग, काश्तर গোপন করিতে পরাভব যানিতেছে। ১৬% मात (मोलभा यादारक पानारका घालाक স্পর্গ করে, সেই স্থবিমল লোগে উৎস আ-भार्षित कारहा उध्युक्त करिता १९७: इसि আমাদের অন্তরে আনিত ত হুটরা আমাদের ুপুজা প্রহণ কর, আমন। এছামার চরতে বাদয় মন সমর্পণ করিয়া জন্ম প্রথক কবি ; ব্যি কুপা কলি। ভক্ত হনতের এই ২,৬'না পর্ন क्द्र।

ওঁ এক**মে**বাদিভীয়া।

দশ্ন-সংহিতা।

এল সংচিতার তেন্টি মুখ্য থাও।

দর্শন-সংহিতা তিন্টি মুখা খান্ত বিভক্তি!
এই যে ভাগ-বিনাগে ইতান ব্যান্তিমন্তা এবং
নাবহার-সোক্ষা কেবল নহে কিন্তু ইতার অবশান্তাবিতা এবং বিকল্ল-শূনাতা প্রদর্শনের
জনা কিঞ্চিৎ বাাখার প্রয়োজন। তভ্ত-জোনকোনে কিছুই কাহারে। স্বেচ্ছাধীন বিবেচনার
উপরে ছাড়িয়া দেওয়া হইতে পারে না ।
জিজ্ঞান্তর সমুদায় বিন্যান-ব্যবস্থা, এমন কি
প্রত্যেক পদক্ষেপ, অপগুনীয় নিয়মের বশাবন্ধী হওয়া চাই—কিছুই মৃদ্ছো-মূলক হইলে
চলিবে না । সে বিন্যাস-ব্যবস্থা লক্ষ্য-বন্ধর
নিক্ষ-কর্ত্ব নিয়নিত এবং প্রবর্তিত হেইনে,

লক্ষরিতার দৃষ্টি-পদ্ধতি তাহার ভূপর ছ-শুক্তে পারিবে না। এসুনা

 শেরপ তর নির্দ্ধ প্রণালী শক্ষা বস্তর উপরে নিজন করে, রেদার দশনে তাহা বস্তুতয় বলিয়। উক্ত হলয়াছে, দলা; —

নিভূবৰ এবং নৈৰমন্তি নাৰ্জীতি বা বিক্লাতে। বিফালনা ভূপ্ৰথ-বৃদ্ধাপেক্ষা, নাতু বন্ধ-মাণাক্ষা-জানং প্ৰথ-বৃদ্ধাপেক্ষা; কিং ভৰ্জি প্ৰভেশ্যমৰ ভ্ৰা লাগ জালো একাম্মন্ ছাণ্ডা প্ৰথমেকানা বেভি ভ্ৰা জাল নবভি। ভাল প্ৰথম বা ক্লোবেভি মিথ্যা জালা, কান বেৰেভি ১ জ্লোকা, বস্তাৰ্থ, হা লোড্ডা ব্ৰাৰ্থনা, ব্ৰাহাৰি, বস্তাৰ্থ, ইয়া মুখা; ---

বন্ধ-৩৭ অধার অসে দ্বের **াহা প্**রটোর रेव्हानीस मतः । एकारः । अर्थावत्यः (Ingersonal, i এ০ জান্তা এড়জান-শাসের **আ**ক্লড় মার্ম ক্রপে**ট** ८ ल ८ देव के कर देश देख छता (१४ वर्ष स्वांति । ভিত্তবিক্রমান এই চি এখানে বিকেন। উদ্ধান ব ালার বাংলা জালার ভারেলের যেম্ন বাউন্ খতর--শতের প্রতির ইডার্লির । খতের প্রাক্তি হোলাপ প্ৰকাশ । তথ্যবিষ্কাশ (বেলিয়া তাৰ্য দেকের আলেন্সিক র্জান ও গ্রাক্টেশের স্বিধ্যাক্ষণ ক্ষমতা ইত্যালে) বিঃ বি ভিক্সপ্ৰত পাত্ৰ ভাৰ নিৰুপ্ৰ। বালাপীয় টেমবাল্লিক ভাষার সাহত পরি**চিত অ**ং ক্ষেত্র, ভার্যাল কে এইমান বাপ্রেম্ম ভারারা ব্রিডে arracad to, 35 fa - are bureral proposition. কেনা সাক্ষরভামিক এক নিবিক্স সিদ্ধান্ত। তার্কে রহাতাদাং সাকাডৌনিক সভোরতা প্রাত্তপক্ষ স্বাক্তি মাত্রার: কিন্তু ইরোজাতে মাংক্রি বলে Paraccording proposition— মধ্যে প্রভাই বা মাংশিক एक वाक्षा (कान १८०४ को ४१८७ --.क'न १८०४ का थाटिंग না –তাহার প্রাতপক্ষ **স্বাব্যা** ৮% নহে। "কোন ्यान महका वृक्ष" **धरे क**या एउं "एकाम द्वाम । मध्या इक्ष नरह" এই कथा—ब ध्र कणा शतलात्त्र चित्रावी भट्ट, देसम ना श्रदेरे अक मटक मडा रहदाव 🖟 भाक्षा कार्य नाम नाइ। किन्नु "बाह्या कीव-निर्मय" धंद करा, धराः "मध्या कीवें नाहरि धंद करा, ध ष्ट्रं कथा शतम्बद्धत बिर्द्धाधी। ेश सना "मस्या सीत" रेश तमन मन्या विवयक अकृष्टि छन, "मर्या तुक" ইহা সেরপ নতে; ধেন না শেষেট্ডেম বিষয় সভাব---महरा प्रा बरेला वरेला बरेला के किएक केला जड़ লোকিক নাত্ৰ, অৰ্থাৎ লোকে জীহাৰিগাকে ভৰাৰলিয়া

এখানে যেরপ ভাগ-বিনাদের প্রন্থা হই-ভেছে তাছার ম্থা জনমনটির প্রতি দৃষ্টি করিলে শান্ত দেখিতে পাওয়া যাইবে যে, তাহা ভিছাগতন্তির নাই; তবে তাছার বি-শেষ-বিশেষ জন্দ-প্রতাল পারবর্তী তত্ত্ববিং-দিগের হত্তে রূপান্তঃ প্রাপ্ত হইলেও হইতে পারে—হর হউক্ তাছাতে কিছুই আইগো যার না। কিন্তু বন্ধান গ্রিছেদে টি বহুতর বাাখ্যা-সাপেক্ষ। নিশ্বের নম্নটি পরিছেদে ইছাই সবিশেষ বিবরণ আনুক্রপিক প্রকা-শিত হইল; তদ্টে এই প্রন্থেব সাধারণ খণ্ড বিভাগ এবং ভাছার ক্রম-প্রতি স্পার্থ-রূপে ব্রিতে পারা গাইবে।

অভিতৰ প্ৰান্তন, কিন্তু প্ৰক্ৰত পক্ষে তাহা ১৭ন-ক্ষা।

মূলতত্ত্ব-পুক্রো – চরমে লাবিক্কত ছওলা মন্দ্রে যাহা ইতিপুর্বে বলা ছইসাছে তা-

भागिता वात व्यष्टे भागान, -श्रेशान व्यक्ति हुन्हे। ख--জড়পিও মাত্রেরই ওলার আছে; পুলিনীর কেন্দ্র-জ্ঞানে কৌন বৃষ্টৱ জনত থাকিতে পাটে না (অহাই त्यु तुक्षव कीव-दक्त श्राधनीय ग्रायम कर्मभार ३२ हम-বঙ্কৰ ভক্তৰ আকৈতে পাৰে মা, ইহা চক্তালো ক্ৰ বিষয়ার। অতএব্ভাষন গতিত গোলে প্রভাগত-মাত্রেরই গুক্ত ফাটে" ইহা ভঙ্গলো বালে বংগ্র **पाइत नार्गा क्रोड्डिक्टर मगान** छी। एतच दूनवा वर्ग वरकन व्यक्ति करेटक नीदि का ने किए विकार अध्यक्त १ क শক্ষেত্র ৰাচ্য, কেনু না মুলাই ইয়াৰ বিকল দলবে না। ্য জ্ঞানের বিহুল্প স্কুতের আমাদের শাসাস্থাতে তাহ। তবজান-শঞ্জের বাচ্য নহে। অৱশাহারী স্-ত্যের জান ন্যাহার কোন ক্ষাগেই একটিও নত চড় হঠতে পারে না—ভাহাই তব ফান, অস্বাং ভাষ্ পুৰুষ-তন্ত্ৰ লতে (অক্ট্ৰুৎ প্ৰক্ষেৰ ইচ্ছাধান নতে) কিন্ত . **बह-७१। स्वानीम्** त्मनीय उदावर क्षान् वशेष विस्मय कतिया धामनन कतियाद्यन (य, छत्रखान वज्र-**छत्र, अथ**वा गांक। धंकर कथा — उद्यक्षान **अ**एशोक्टबन्न। कारे वरिष्टिं निर्मय क्तिया धारमन कतियास्त्र त्य. उक्कान मार्शकीयक वदः भवश्वानी। वर्तमान खाए वित्तर कविश्रा दनवादना श्हेश्राष्ट्र द्य, खन्नकादनव প্রতিপক স্ববিধাত গর্ত্ত। একই কথা। তম্বান-मरमन म्या वर्ष धवन म्महे न्वाट भाना सहित्। क्टरबंद (अर्थाए अवगासारी मान्या अतिहरू आमित्र विद এবং নিবিকর সভ্যের) জ্ঞানই তত্তভান (Reason); এবং এ প্রকার সভ্য বে শালে উপদিষ্ট হর ভারুই পৰ্শন শাস্ত্ৰ বা তক্ষান শাস্ত্ৰ (Metaphysics) ক

हाटक तुकाई यहिट हाई (स. च म॰ हिका असान **धकिए विकास-वाशि**त, सारा से । छेली-भिष्ठे मन्पूर्थ कतिया ज्यासार । वित्र हे छिल् विष्ठ इत। जीत महत्त किने र हैक-----কাও যন্ত্রটাকে এরপ্করিয়া হলচয়। মাত্র যাহাতে তাহার গোজা পিট আন্তেত স मुत्थ षांहेता। कि तम छन्छ। शिंहे - यान প্রথমেই, আমাদের সম্মুখে উপস্থিত 🔻 खवः भा**रतक छन्द्रोह**ता द्राया **जा**तनातः ? क्षान-बाकात्व क्षान्त इंडेन्स साहि छहे যে—এল কি ৮ সরপতঃ এটি চরম এবং, किस खागाएमत काइन जिंग उद्द-स्वादन প্রথম পার। ই প্রেম্মর অব্যবহৃত উত্তর যাহা প্রাশ্বরিক টোলিয়া ফেলিলা সমস্ত क (छ-छि छिन्छ होचा (नय, 'डोहा । धहे ;-- गोहा चारिक लाहारी महा। कि अहा मसार्व तरव আছে ডাংটে দতা। ইহাতে আর সংশ্য नाहें। ७३ छे छ त भना छात अकि धन होनिहा जात्म, तन-<mark>हि उंह,—</mark>किञ्च कि খাছে । এ এর আপাততঃ, স্থোক-বাক্য ভিং, প্রকৃত উ**ত্তর পাইতে** পারে না। এ में छत्तव धर्मा भाषा खादम मह। हेहादक অব্যা প্রাক্ষা করিতে হইবে। ভ্রোল-যানে পিশ্চাং-জঠনা প্র**দেশের** ন্যায় তাপা-ততঃ ইহাকে দক্ষুখ হইতে ঘুরাইয়া রাগ্তিস इंट्रेल, खपवा श्रम्हार भतिस्वय भातिक ,तत নাম আপাততঃ ইহাকে শুলিয়া রাখিতে

भ जाधी विश्व महाइ महाइत भित्तिष्ठका महाकि । महाकि । महाकि । मा विद्व कर्मान । महाकि । मा विद्व कर्मान । महा कि । मा विद्व कर्मान । महा कि । मा विद्व कर्मान । महा क्रमान । महा क्रमान । महा क्रमान करा । जाभार कर्मान करा । जाभार कर्मान करा । जाभार कर्मान कर्मान करा । करा करा । करा करा । करा करा । करा विद्व कर्मान करा । महा करा । करा विद्व कर्मान करा । करा विद्व कर्मान करा । करा विद्व कर्मान करा । करा विद्व करा । महा करा । करा विद्व करा ।

ফইবে। কিন্তু এই প্রশ্নের উথাপনা তত্ত্ব-জ্যানের একটি স্থাবিস্তীর্ণ থণ্ড জানিয়া দাঁড় করাইতেছে, দে খণ্ডটির উদ্দেশ্য হ'চে—বাস্তবিক সভা কি—ননী দ্বীন অন্তিছ কি—তাহার সিদ্ধান্ত-মীমাংসা। এ খণ্ডটি অস্তি-জত্ত্ব-বিষয়ক, অর্থাং প্রামত গক্ষে আহে কি

জ্ঞান-জন্ত স্বভাৰতঃ যদিও শংসা, কিন্ত ওছতঃ ভাহাই প্ৰথম; অব এৰ লাখাকে প্ৰথম ধ্ৰতিত সংস্থাৰ স্বাহীয়া আনিতি হইবে।

ত ব্ৰুৱানের গোড়ার কাম এই---গেগন ইতিপুরের বলা ইইয়াছে নহীমাংসা তরের সমস্ত দলবলকে এরপ করিয়া উন্টাইলা রাখা, যাহাতে প্রথমটি চর্মে পড়ে ও চর্মটি প্রথমে আইসে; এটি করিতে হইলে এগনি সব উত্তর পুঁজিয়াবাহির করা আবশাক, যাগ শ্রম্ম গুলির মামাংসার আপাত্তঃ হত্তকেপ না করিয়া ভাষাদিগকে দুরে ঠোলয়া রাখিতে পারে। ঘুর্ণন-গতিকে- ক্ষচারতঃ যাহ। চরমে পড়িয়া থাকে ভাগা বখন এখনে আনীত হ-हेर्त, जरुर श्रष्टात्रस्थ साधा अध्यास खारान स्थाप চর্মে নিক্তিপ্ত হউলে--তথনই ভাহাদেন মীমাংসার সময় উপস্থিত হইবে। কাবণ, বে-সকল ভাশ মতো বিচাম্য ভাষারা সভন্ত, ও হাহার সভাবতঃ অতো আদিরা উপস্থিত হয় ভাষারা সভলা ; মুন্নের মনে এইরপ মাধ্য যে, শেষোক্তের মাখাংগার সমুদায় মুদ উপাঢ়ান পুর্ণেরিক্তের মধ্যে অন্তর্ভূত विशाहकः, कारकहे, शूर्तवारकत विधात-कार्धा चित्र हु हा है शाना निशा स्मारा छ- ७ विद्रक क्षीत्य वामित्व (मध्यः हरेटव शास्त्र मा। জ্বাক উত্তর এরপ হওয়া চাই বৈ এক-कितक त्रमन जोहा भूका क्षत्रक क्षेत्रिक করিবে; আর-এক মিকে তোগালি বুরুষ একটি श्राप्ति मनात्थ अपनियन समित्। अपिष्ठ-करक्रीयारमा द्वीनता बाचित्रहरू

पृक्षेत्रु-चन, यथी; - e क्षेत्रि मध्यकरन करे त्य, কি আছে ? আরঁ, ভাছাকৈ ঠেলিয়া রাণিবার উত্তর এই-যাহা জ্ঞানে বিদানান তাহাই ছাছে। কিন্তু এ উত্তর একদিকে বেমন অস্তি-তত্ত্তি সন্মুথ হইতে সরাইয়া দেয়, অথনি আর এক দিকে নৃতন একটি প্রশ্ন (বা প্রাংশ) আমাদের সম্মুগে আনিয়া উপস্থিত ক'ব: দেটি এই, জ্ঞানে কি বিদামান আছে? জ্ঞান কি দুৰ্গ এইকপ গুজিষা ভত্তজানের আর একটি সম্প্র খণ্ড আনিয়া দাঁড় করায়; कटन, এইখানেই यूर्नेत्स्य পরিসমাপ্তি ; ज-গাতঃ, ছোয় একং জ্ঞান সম্বন্ধায় প্রথম প্রশ্ন কি ভাষা বাঁজয়া পাইলেই আমরা তত্ত-জ্ঞানের ভাত্রত আরম্ভ-সান - নিকটভান জি-का मा विषय - ३ एक शाह। अहे वर्कि स्वान-তেরের মূল নিগ্য-গুলির ত্**নুগরানে এবং** বাংগানে বাংপুদ। ভাহাতে একদিকে এইরূপ গুতিপয় ইইয়ালে যে, জ্লানের যে-গুলি অবশান্তাধী নিয়ম, সে গুলি সমস্ত **জ্ঞানেরই** নিয়ুখ, সমস্ত চিন্তারই নিয়ুখ; আর-এক দিকে এইরূপ প্রতিপন্ন হইয়াছে যে, জ্ঞানের ছে-হাল আগন্তুক নিয়ম, সে-গুলি শুক কেবল क्षानाटलहरू क्लाटनव निषय-वामाटलहरू हि-ভার নিয়ম। বিজ্ঞান-শাসের বর্ত্তমান বিভাগ হলন-তত্ত্ব বালয়া প্রায়েছ; অন্তিতত্ত্ব বেমন অস্তিত্বের সিদ্ধান্ত-নির্ণায়ক, জ্ঞান-**তত্ত্ব সেই-**রূপ জ্ঞানের সিদ্ধান্ত-নির্ণায়ক। এবং ভেত্তয় কি, এক কগংয় – ভৱান কি, এই শ্রের প্রত্যুত্তর প্রদান ইহার কার্যা।

^{*} সত্য চলম লকা; ভাষার অনুসন্ধানে আপাততঃ
কাত হতরা, সভাের ভাল বাছা স্থামানের অনুভব-গ্রা
কি না সভা —ভাহার প্রতি মন্যোনিবেশ করা কর্তরা,
আবার সভার অনুসন্ধানে আলিভিভঃ কাত হইয়া,
সভার সাকী বাহা আনাদের কানে অকাশ্যান—
কি না জান পরং—ভাহার প্রতি স্নানিবেশ করা
কর্তনা। সত্যব, সভা অপেকা সভা এবং স্কা
অপেকা কান আমাদের কানের নিক্রিভা স্করা
ক্রেবিবেচা।

খণ্ডটি যে-পর্যান্ত না সমাক্রপে বিচারিত হইতেছে, সে-পর্যান্ত অস্তি-তত্ত্বের নিকটে ঘাইতে—এমন কি তাহার দিক্ শানে তাকা-ইতে—নিষেধ।

ক্তান তত্ত্ব **এবং অভি-তত্ত** এই ছইটিই তত্তপ্ৰানের মুখ্য বস্ত ।

জ্ঞান তত্ত্ব এবং অস্তি-তত্ত্ব এই সুইটিই ভবে তত্ত্ব-জ্ঞানের প্রধান চুইটি শাখা। हैश स्पेडिर त्रिएक भारा गारेएकए एवं, कि আমরা জানি-এটি যতকাণ না আমবা সির कतिटा পाति । राष्ट्रि, अथवा मारा अकरे कथा -প্তক্ষণ না আমারা সমাক্তল-স্থের জ্ঞান-তত্ত্বে সমস্য বিবরণ নিঃশোষত ক্রারিতে পারিতেছি, ভতক্ষণ-কি আছে—ইহার যামহিদায় আফ'দের অধিকার জামতে পারে না, অথবা যালা একই কথা—ভতক্ষণ আমরা অস্তি-তত্ত্বে প্রবেশ পাইতে পারি ন:। তখনও অন্তি-তত্ত্বে প্রবেশ পাই কিনা-তাহাও সন্দেহ। ১ যাহাই হউক্ **না—জ্ঞান-তত্ত্ে**র শীশাংসার দার অভিবাহন না করিয়া আ-মরা সমীচীন অন্তি-ভত্তে পোঁছিতে পারি না। কারণ, কি খাছে তাহা অতাে আমরা জানিব—ভবে ভো ভাছা কথায় ব্যক্ত করিব, তাহা জানিতে অন্তঃ চেষ্টা করা চাই---নহিলে আমরা ভাষা বলিতে অধিকারী रहे ना ; आरात यलकन आगता— कि^{*}ना' কাহাকে বলে, জ্ঞান ক্লি, জ্ঞান-ত্রিয়া এবং · ভের-বিষয় কি, এই প্রাক্ পরীকা এবং মীমাংস। করিয়া উঠিতে না পারিতেছি, ততক্ব-কি আছে-তাহা আমরা জা-লৈকেও অধিকারী হই सा। এই সব প্রশ্নের বে প্ৰয়ন্ত না উত্তৰ খুঁজিয়া পাওয়া সাই-তেছে, দেপৰ্যাস্ত—একথা বলা কোন কাৰ্যো-बर्टे नटह रव, ब्हारन बाहा विल्लामान छाहाहे স্থাক্ অন্তির।

জ্ঞান তব্ব বৃদ্ধঃ অন্তি-তব্বের প্রবেশ-দার হইটে। পারে না কেন।

কিন্তু জ্ঞান-তত্ত্বের প্রশ্ন মাথায় ছইবার পরেও—জ্ঞানের সমস্ত নিয়ম আনবিক্ত এবং প্রদানিত হইবার পরেও—কি আছে এই প্রশ্ন হন্তে লইতে এবং তাহার মীমাংসা করিতে আমবা কি এব নিলও বেলী অবিকার প্রাপ্ত হই গ একটু বেলী অবিকার প্রাপ্ত হই গ একটু বেলী অবিকার প্রাপ্ত হই গ একটু বেলী অবিকার প্রাপ্ত হই বটে,—কিন্তু ভাহার লাম একটি কথা আছে, কথাটি দহন্ত নহে, তাহা ছাল্য কত্ত্বের প্রশা দূর্লপ্রা প্রাচীর দিয়া গেরিয়া রাগিয়াছে, সে-টি এই;—

ছইকে প্রব --বঙে। আমাদেব জানেব অংগাচর তাহাই সমাক্ আভিয়

এরপ হওয়া বিছুই বিচিত্ন নহে যে, शहा आमारनत क्लारनते करलाहर ए हार সমক্ ছব্তিয় । আমাদের অভ্যান তাতা-ক্তিক প্রাণাড়—আমাদের জ্ঞানু-অপেকা ভাহা বন্ত-পরিধারে বিস্তীর্ণ। ইহাতে আর কা-হারে। হিক্তি গ্ইতে পারে না । এতি-তত্ত বদি আমাদের জ্ঞানের দীখার অভ্য-ন্তবে থাকে, তবে আমর। জান তত্ত্তে হাতে পাইনেই অন্তি-ভব্বেও মেই সঙ্গে হাতে পাই, ভাগুটের অভান্তরে যদি রবু থাকে, তবে ভাণ্ডার আমাদের হস্তগত হইলেই রত্বও আমানের হস্তগত হয়; কিন্তু অন্তি-তত্ত্বদি আমীদের জ্ঞানের সীমার অভ্যন্তরে मृत्नरे ष्वविष्ठि न। कत्त, छ। इरेन জান-তত্ত্ব শুনা-ভাতার মাত্র – তাহা আমা-**राज इस्छान्ड इट्टेन्ट्र वा कि, जात, ना इट्टेन्ट्र** . বাকি। মনে কর, জ্ঞানের অর্থ, তাহার याश महित्न हुत, छाहात मीत्रा, खेटमना এবং ক্ষতা, সমস্তই আমরা হির-হার করিয়া नित्रा चाहि, छाहा हरेला अक्रेल हरेट उ পারে হইতে পারে কেন হওয়াই মন্তব त्य, मस्तक् अस्तिक आमारमञ्ज्ञादनव मीगा

অতিক্র করিয়া আর্বাদের ব্জানের প্রাচীনির কাড়ালে পলাইয়া কহিয়াছে। কি আছে এ সম্বন্ধে হয় ে। আয়য়া কিছুই জানি না প্রত্রাং বিভুই বলিতে পারি না। আয়াদের প্রত্যার হইবার পথে এটি একটি ঘোরতর প্রতিবন্ধক। ফাল এই তিই এয়াবংকাল মুম্বন্ধ ও ভূ-জিজায়েক ধরালামা করিয়া আসিতেছে; অস্তিকে আরা পর্যার করা দ্রাইয়াছে—উলাই তাহাকে তৎক্ষণাং ছটাইয়া দিলাছে। অত্রেণ এ মুদ্রে এয়ত হইবার প্রের ক্রিটা মন্ত্রণ-সভা আহ্বান করা পর্যার্থ-সিদ্ধা।

এই বিষ্ণোনা অজ্ঞান-তত্ত্ব নাম্ক তেও জন্ম । স্থার-একটি ৭৬ আনিধা দিতিকে।

আমাদের শ্বজ্ঞানের অভিত্র তাঞাল করিয়া অথবা ভাষার প্রতি চকু নিয়ানন করিয়া শহে, কিন্তু ভাষার সহিত নাকাতে চোখোচ্যোথ করিয়া, ঐ দুন্তর ভাতবদ্ধ ক জতিক্রম করিতে হইবে; আর চোপোটোরি কৰিবাৰ এক যা| উপায় তা এই,- ভাহাৰ প্রাঞ্চার অভান্তরে ष्युमकान ६,८३१म । অজ্ঞান কি –িক বিষয়ে আমাজে, জ্ঞান নাই रा खान धार्विए शास्त्र मान्द्रेश भतिका করিয়া দেখা এবং স্থিদ্ধরতে প্রেণ্ডেণ্ করা এইরপে, সংগুর্ন্তন একটা বিষয়ের অ্রুসন্ধান আমানের ইত্তে আসিয়। পড়িতেছে; ইহার নাম অজ্ঞান-তত্ত্ব এবং ইহাতেই এই গ্রন্থের মধাখও প্রাক্ষিত। अहे अनुगन्नारनत कन मर्श्कात विश्वाचीरम স্মিবেশিত হুইয়াছে।

এখন অফি-তবের প্রশ্ন বিবেচিত হইটে বারে।

এখন আমাদের গন্তব্য পথ আমাদের স্ব

শ্রুষে দিবা পরিফার এবং সোজা দেখা দিতেছে। জ্ঞানে কি জানা যাইতে পারে—জ্ঞানতত্ত্ব তাহা নির্ফারণ করিবে। জ্ঞানে কি জ্ঞাত

থাকিতে পার্গে—অঞ্জান-তত্ত্ব তাহা নির্দারণ ক্ষতিব। ^{*}স্পীচীন অন্তিত্ত – হয় আনাদের **ख्वाद्न** विकासान—नश खासाटकत छत्तीटन खः বিদামান, তুম্নের এক; স্থতরাং হয় তাহা জ্ঞান-তত্ত্বের চরণ নিদ্ধাত্তের মহিত—নয় পঞ্জান-ওত্ত্বের চরম দিলাজের স্থিত—স্ম-ভানে মি লিয়া আইবে (পরে **আমরা** প্রমাণ করিব যে: জান- ও এবং অজ্ঞান-তত্ত্ব এই চুই বিপ রীত প্রেম্ম এক <mark>তমের আপ্রয় ভিন্ন গতান্তর</mark> নাই)। । । র প্রতি জান-ভত্ন এবং অক্সান-ভত্ত উত্তেখনই চলম ভিদ্যান্ত একই হইয়া দঁভার (পাত তেখা ঘটতো যে এলে ভাছাই ন্থীলাছে ' তবে, স্থাচীন অভিত জালা**দের** জ্ঞানের োচরই হউক্ জার অন্সেচরই ১৮ ाशंदन सामादनने किछ्डे आगित धा-ইয়ানা। উভয় **পঞ্চেই** আগবা মধাতান আন্তরের পরিচয়-লক্ষণ স্বস্পান্ত প্রমাণ্ দার। অবলারণ করিয়া ভাষাকে আয়ভাভাভাতর আ-নিতে পারিব; ভাহরে গতের আমরা একটা বিশেষণ মুক্তিত করিয়া দিতে পারিব—তাহা इंदेरवह इंदेल। ७व-छ्वात्नत्र अक्षा हत्रम पान-पाश मिनान **खन्त ८म छन-मो**बाद**र**नत নিকটে প্রতিশ্রত-তংগ্রাঞ্জ বিশেষ**র্গ**নান। অস্তি-তত্ত্বে সমস্তই *শ*পষ্টরূপে 'প্রদক্ষিত **১ইবে--এখানে** ভাহার भौगारमा চরম পুৰ্বহাঞে বিশ্বত তাহার মহাকে করিয়া নপ্ত করিবার প্রয়োজন করে না। এইটুকু কেবল বলা যাইতে পারে খে, 📭 আছে এই প্রশের মীমাংসাতেই তত্ত-ভানের চর্ম প্রথ পরিকার-রূপে মীমাং-निष्ठ इरेश याय ; भारे हतम व्यक्ति—यादा **रम्या** मिट्छ जार्क छ। एक्स दिल्ला (महा 🛊 যাহার মূল উপাদান-দকল আমাদের হত পত না হওয়া পৰ্যন্ত ঘাহাকে তাহা এই.

थछ जायत श्रेमतावृद्धि।

ৰৰ্ত্তমান পরিচেছদৈ কেবল এইটি পুন-ক্তুক্তি করিবার অপেকা যে, তভ্জান তিন পতে বিভক্ত,—প্রথম, জ্ঞান তত্ত্ব; দিতীয়, অজ্ঞান-তত্ত্ ; তৃতীয়, অস্তি-তত্ত্ব এই যে ভাগ-বিন্যাদের ব্যবস্থা, ইছা नः জি-বিশে-যের রুচি অথবা মনোরথ অনুসারে প্রবর্ত্তিত হয় নাই; এরপে জাগ-বিন্যাস ব্যতিকে গতান্তর নাই বলিয়াই - আর-কোনরূপ ক্রম-পদ্ধতি তত্ত্ত্তানের প্রশ্ন সকলের সহিত নিল্লৈগ্ন হয় ন। বলিয়াই--তভ্জ্ঞানকে উহার षायुन्ती इंटा इंटिएए।

থ ওরবের পার্থকা-রক্ষা প্রয়েজনীয়।

উলিখিত-খুৱার চিন্ন অন্য গেকোন প্রকার খণ্ড-বিভাগ যুগুন্ই করিতে যাওয়া হয়, তথনই কিন্স সোনোযোগ উপস্থিত হয় তাহা আর বলা বাল না,—তখন মৃতক্ষ্ গতি-শুদ্র থাহা ঘটে তাহা হইতে উদ্ধার পাওগা ভার। এরপ বলিনে অনুর্যক্তি হয়না বেষ, ভান-উত্তের (অর্থাৎ জ্ঞান এবং ভাষার নিখ্যাবলী বিষ্ণক গুল সকলেও) গীমাংলা স্থ্যসম্পান ২ইতে না ২ইতেই অস্তি-তত্ত্বের প্রশ্ন-মামাংসা হতে লইবার এবং ভাতিজ বিষয়ে নতামত প্রকাশ কারবার যে, একটা অভ্যাদ, যাহাকে প্রায়শই প্রশায় দেওয়া হইয়া पारक-कथने हो। जियक प्रमा कहा इस ना, ভাহাই তত্ত্তান-সম্বনীয় সমস্ত গোলো-থোগের মূল। তত্তভানের গতিরোধক কার-ণের বিষয় যাহা পূর্বেবলা হইয়াছে—এ কেবল তাহাৰ্ই একটা অঙ্গ বা ফল; গড়ি-রোধক কারণ দে--আর কিছু নয়-মূল ডিঙাইয়া অত্তে উপনীত হইতে যাওয়া। বর্তমান এছের আলোচনা-প্রায় এইরূপ ব্রিপরীত পদ্ধতির বিষম্য ফলের ভূরি ভূরি দৃষ্টান্ত আমাদের চক্ষে পাড়বে। ক্ষুত্রএব अहि वि প্রতি সবিশেষ প্রাণিধান कर

শে, অন্তিত্ব-নিষয়ক স্বে-কোন্ড শ্বন্থ হাউক্— আর যে-বোন মত্ত ভাক্-সমগুই জ্ঞান-তত্ত্ব সীয় বিবেচন। ইনতে বল পূৰ্ব্বক বহি-**হৃত করি**য়া দিবে। জনা**ন**-তত্ত্ব দেবল জ্ঞান এবং জ্ঞেয় লইয়াই ব্যাপৃত থাকিলে

> **७३ जिन भट्छ श्रोडाविक अ**मन्यास्त्रा गः८भागम् ।

ত্রভানের কার্যা, প্রেক্ত কার্যা এবং প্রকরণ-পদ্ধতি, এ-ভিনটি বিষয়ের মন্বন্ধে ক্রমান্তরে (শ-সমস্ত মন্তব্য প্রকাশিত হুইল তদুপ**লকে** সামাবেণতং— এবং বর্তমান প্রাচের পরিতর-লক্ষণ ও স্বিশেষ বিশরণ গ্রদর্শিত চইল তদুপলকে বিশেষতঃ— এখনো এমন একটি কথা বলিবার আছে সাণ্ স্বতম একটি পরিক্ষেত্র অবিকার করিবার উ-পযুক্ত ; মেটি এই,—তন্ত্র ধ্যানর প্রতেকে খণ্ডের আদি হইতে ছাত্ত প্রদান্ত স্বাভাবিক চিন্তা-প্রসভ অনবধানতার সংশোধন কার্যা নিম্পানকরা হইয়ছে। জ্ঞান এবং জেয় স্বেলীয় আমানের বে-মকল আভাবিক অন্ত-ধানতা, জ্ঞান-তাভ তাহা কল্পে তুলিরা লইয়। িক কৰিয়া দেওমা হইয়াছে; অজ্ঞান-সংক জীয় **আমা**দের যে-সকল বাভানিক অনব-ধানতা, অভ্তান-তত্ত্বে তাহা হতে জুলিয়। লইয়া ঠিক্ করিয়া দেওয়া হুইয়াছে: আব, অতিত্ব-সম্বন্ধীয় আমাদের যে-সকল স্কালা-বিক অনবধানতা, অন্তি-তত্ত্বে তাহাটিংস্তে তুলিয়া শীইয়া ঠিক্ করিয়া দেওয়া হইয়াছে।

अरे उत्तर निषां इनकर नर्तना भरन विद्यासन থাকে না, এই আণ্ডি উপলক্ষে মন্তব্য।

আর একটি কথা আছে; কথা-টি নিভান্ত উপেকণীয় নছে। ক্লিডাম্ বাক্তি এই विनशं क्य-मंद्रनातथ इंहेटड शाद्रन (य, ७३ তত্ত্তের চরম সিদাস্ত গুলি এডই যদি সতা, **छट्य देग जिल्लास-स्टिल्ड** शटक दर-মন-টি হওয়া প্রার্থনীয় – তেমন প্রবল রিংগ

ध्वरः क्षेत्रिक-क्रत्भ गरनागत्मा नक्तकन विमा-यान थार के ना दकने कितन, त्नोकिक वाव-शत-स्तां कर्नात्र कि चारा थात्र मेरे मनूगा-को ततनत अक्षिक जश्रमत निरंतनक है जश्म অধিকার কর্ত্তে জ্বাহা যতক্ষণ-ধরিয়া চলিতে থাকে, তাতকা তে ও-সব সিদ্ধান্ত কাহারো यदन शांत शांत्र नापि देशाँव श्रांत रिकार अहे त्य, विशिष्टित मन्द्रेकन महमामध्या विमान गान माका आर्थनीय ७, नेट्र, श्रायाजनीय ७ ग्रही ् खे निकार्छ-शनि याँन छाशव गरना-बद्धा निरुख्त छ। गैर्कक थाटक, उत्त जाश-तमत छिल करन छ। हाई देशान-म्याटक छिछ्टना ভার হয়, জাহা হইলৈ তিনি অপেনার এবং आस्त्रात निकटणे विषय अक ज्ञान दरेशां मिष्ट्रीन । এक-पिट्ट (यथन, मार्याना काय-া কর্মা এবং আচার ব্যবহারে ব্যাপুত থাকিবার भगर जाभगत या ज्यागत हरकत मगरक दि ুক্তানের দিছাও লইয়া ক্রমাগত নাড়া চাড়া ক্রা অতাব মধাকৃত্ত ভোগার পাণ্ডিত্য-প্রেদ-শুনি; আর-এক দিকে তেমনি, বিজ্ঞানের ীদৈবার নিযুক্ত বাকিবার সময় লে∖কিক-্সিদ্ধান্ত হলত সভাগ্রাস-সকল— বৈটকখানা <u> अंदर शामे-वारमेत्र विधि-वादक्षा मकल — भिट्रा-</u> ধার্ণা করিয়া **র্চন**্ন অতীব অপকৃত্তী তে**প্র**ণীর বু নামতা-প্রদর্শন । শান্তীর সিদ্ধান্ত এবং त्नो^तकक भिकास कें उग्रदक श्रीरणदंतत मध-সগ খুইতে চির-বিষুক্ত করিয় বাথা আ-(बनाक) . किस्कास किला मध्येष वाशा वि-भारत हरेट छट है, खीशतक मछा बनिया क्लारन छन्निक क्षाहे अगत्न टाराने या कि श्रद्धावन क्राछीड जारा जहात यदन र्वतिम कि प्रतिम ना क क्या अधारन निवासके बलामिक । उत्तित खानके क्यार्स मार्थ छाडात सर्अट्टन याकार अपादन धर्डिकात मर्पार्शनेटर ; वान तमरे सम्बद्ध विकार ্রিদ প্রথানকার কোন স্থিতার বিশ্বনিতার ।

বিরুদ্ধে সাক্ষা প্রদান করিতে আটিকে ছুই ভাহাইকথায় কৰ্ণাভ না কৰাই বিশেষ मटलात चान्ध्या तर्मा **क्निमात्रा** मटन আমরা আমাদের মনোকৃতি-সক্রকে সর্বাদা সমুসত রাখিতে পারি না ব্রিরা, সেই অপ-রাধে আমরা **যদি স্তাকে ক্তি-গ্রস্ত হুইতে** দিই, তবে ভাহাতে সজোর মাহাজ্যের প্রতি আমাদের অতি অল্লই প্রদা প্রকাশ পার, আর, সত্ত্যের গতিও তেমনি হয়। সতাকে यनुरमात यथमायामा तान-रचमानत यूथि পেক্ষা করিয়া থাকিতে 'হইলে ভাহার আর তুর্গতির সীমা থাকে না। আমাদের মন নর্কনাই অথবা প্রায়শই সতেরে 'মহৎ পরা-गर्भत উচ্চ শিখনের' সমযোগা পদবীতে আরু থাকে না বলিয়া সতেরে প্রতি স**ন্দি**-হান ২ওয়া লোকের এক**রূপ অভাগে দাঁড়া**-ইয়া গিয়াছে; কিন্তু এটা দংশয়-বাদের কিছু অতিরিক্ত বাড়াবাড়ি। **মুসুম্যের মনো**-বৃত্তি সত্যের গভীরত**য রংসোর** ভিতর जनाहरत भारत ना—यनि भारत **उर**न रम কচিৎ কদাচিৎ যুগ-যুগান্তর-ব্যবধানে আৰ তি ভি অনেক সাধ্য-সাধনায়, এই কারণে অনেক ভদ্ধবিং, এবং তা' ছাড়া আহিবা অনি নেকে, সভাকে সভা-সভাই অসভা বলিয়া दिव किंद्रा विनिया बादकन । अनेताना वि-জ্ঞান-শার্রের বেলা আন্ধরা তো তাহাদের প্ৰমুণীকৃত সিদ্ধান্ত গুলি উদ্ধ কেবল জানি-ক্ষাই প্রবিত্ত হই, সেগুলিকৈ অনুক্ষণ হৃদয়ে জাইত বাধিবার তে কোন ৫ রোজনই क्षेत्रके क्षि ना ; नर्गन-नाटक्षत (वला खायता সৈরপ নী ভার কেন ? ওলা কেবল মর্থন-শক্ষের বেনা লোকে এই রশ্ননে করিতে युव छदमन दुर्ग, महाटक समरक मुर्किमास कतित्त महाद्व अस्तित्व भवा अविवादमन शत-कमात्र क्षातिक गरशा जानिए -का राजी विश्व क्षेत्र है की कात्र महान ला

ক্রিছুডেই রক্ষা পার লা: ভারাচের আগে-নালের অক্ষাভার অপরসের সাল্য যেন বড়াই अभवनी। किछ । लाइन्य लेक्स वक्सा है। दक्षी भागखंक देखा गान - ज्ञार धण्यान भारताही नदह । एको हा योन मदल करते दस, গভা ভাগাদের ৮ ১৩ মত-সকলের বিশ্ব ষ্টান্ত - মত্ত প্ৰচাণনৰ অমিপ্ৰত গণত বু-ক্ষিত্ৰ বুলে কিছেওল আল টুনল বিস্টিটেছ হস, কিলা এ সাৰি সাম বাবে ১ - ১০ চিচৰ দ্ৰণ আছে ১১ ऋष श्रीवर्ता वहा । कन्यां विकास स्टार्कान গ্রাহ্য প্রতিষ্ঠা বিক্রামান প্রতিষ্ঠা প্রতিষ্ঠা বিশ্ব न नहीं के १८० हिं कहते जिल्हा । अन्ये १०५७ सर्ग**्रं अवस्ति स**ाल्यको अस्य कर्ता कर्ता है। 群省 化邻异甲酚二甲二甲基甲酚二甲甲烷 আহা, ৰাচ্চ ব্রিটো সংগ্রহার হাতি **ভা**তিলেই কাত ভারত সন্মাত তালের। করা হয়।

हेशातः खरात्।

নিওলিপিড বিষয়টি এপনেত্র কৈন खेलामाना । जुलिस नग काशा १८६, शिह् আছে **भगक्षरे जातारम**द महा १६८३ । ५ कि-यांज क्षण्ड त्यस्य स्वमान स्ट्राटाह यता कारन चानि (४, काशरे हैं। कि সেটি আনর। হাদরখন কলিকে পারি মা; ০ল-১**খন** ব্রিবার লৈ লে জানতা ভাছোর বিপার্ত-টাই কদ্যুঞ্ম, করি। বিজ্ঞানের সহ**ত্র** কণা ঠেলিলা (মন্ততঃ আমাদের স্থান দীন অব্হয়ে) অংশরা মনে কবি যে, আংশরা অটল স্থির রহিয়াছি; এ বিশাস-প্রগঢ় চিন্তা শীল জ্যোতি-বেঁত্তা-- যিনি স্থস্পার্শ পর্যাছে নিষর—তাঁচারও ফেমন, আর, এক-জন মুর্থ ক্রয়ক যে খড়ের পাদায় হাত পা ছড়াইয়া পড়িয়া আছে—তাহারও তেমনি, छ अद्यवहे नगान। त्याजित्व मकन-मंग-য়েই কিছু-আর জ্যোত্তর্বেত। থাকেন না। যথন তিনি তাহার মান-মন্দির হইতে নাবিয়া আসেন, তখন তিনি ভাঁহার আঁক জোঁক.

भिकाक समिद्या, भगकुष्टे ५०। १७ 🖯 लिहा भेर्शा आहमन। उपन, दीशार । स्टन क्या रुत्या हुनियाद्यः जरूरि करमणात्वरखना । তথন তিনি, ভাবেন, ভোগনভাগ কলেন, কথা ক'ন, ঠিড ভার-ভার লোগেড মং ৮১ আকাৰ নৰং পৃথিবীকে, মান'না মতে বেচে: लाहर तमास विभिन्न हिक हमह ल १ ५० (थमा ७१म, ७१म है केंग्रिमा मा। १८५क, १५) কেন্তু(ছাইও এইরাপ গতি। ১৩মি সকল ১৯১৪ ওয়ুজা থাকিন মা। তিংলার সমনে স্থান कर्यात (वनात्र सन्ने वदना नाना, दरा वाहेराज পাৰে যে, তিনি ভাষা আৰুবাগানেবই मत्ति - प्रतिम्, सूथ र अ ८० ४ २ ८८ । ज्या त्रिक्षिक भाग भाषामा १४० १८ १८ १८ गाउँक व नामा विद्यालका एय-५८% एपटा । जिल्लाका াৰিপকে সেই চান্ধ দেখিতে ও পৰা ; ভাছা যতি না পারেন ভবে (একেই কো বোকে বৈশানবার্থে দেখে প্রিতে ভব্পর) ভাষ্ र रेटल 'काशत नाम 'छनिता शक काइतर मुक ৰিৱকাষ্ট্ৰে। তিনি যে এইটি ানিভেছেন তে িন্তা এবং সু**ত্যের** এনন নদ নি উদ্ধায়ক আহে বেখানে তিনিমনে কবিলেই সনিয়ে चारहास्त कति छ शास्त्रम, रेशरे ग्राथके তা ভিন্ন, ভাঁধাকে কিন্তা উহোৱা অনুযানী। मिशदक दमरे উচ্চ-প্রদেশে **क्रमाগ**তই যে अवसान क्रिटिं इहेर्द-- ध्रमने क्लान क्या-বার্ত্তা নাই। কনি কি অইপ্রচাই কবি । कथन्हे मा। कविष्टे जिमि इसम जात (क्या-তিৰ্বেত্তাই হউন—নীচে তাহাকে নাবিতেই इ**रेटर, जा**द, **उद्स्कानीटक ७**—(गर्टे देनशास्त्री উচ্ছিতি যাগা ভাঁহাদের নারের রাজ্য—দে-थान इंटेटल नीटल नावितः इंटेटर्, खात **म्हे तारकात्र वाहित्र डा**हारमञ कीवानत অধিকাংশ কাল অতিবাহন করিয়াই তাঁহা-দিগকে সম্ভুত্ত থাকিতে হইবে। "কিন্তু তত্ত-জানী ধধন তত্তভানী হ'ন; যথন তিনি

--

ार गेरिटज्ज शहेरल शहराम करटन : रुसम नाजितिक वायदनाक्रम-गोल्ट्य जातेषु होन, এবং কি দেখিকেন ভাগে জ্ঞান করিছে শারভ করেন ; ভগন ভাইাকে - রপ্র ব্যক্তি अमेर्का धात्रक करता विकित-सार ११ जन्म কি**ৰ্জে হয়, তথন** আৰু এন, দক্ষিক কলুনা ভাৰার মুখে শোভা পাইতে পারে না ৷ প্রাণাক তবে এইরাণ ব্রাময়াল আন্ত আবিত হয় বেশবল প্রহাদিনট ১ ক্রডে ল এপিনি এটে টেন্ড শামান কতিনি নিংক্ত সক্ষ্ৰী বিভিন্ন কু সমুধ্যের 🕩 হার বালে la— নাহা **এই**ন-টালর ব্যাপারি হইকে পতি গোমগতের **তাহ**িল্লা মায় না - ভাশার জিলার বিন্ধের (১৮) একত সভা এবং ফড়ব্ৰাস হারের বিভাগ নিয়নেত) বেক্ষ আধিপত্য নাই- তত ক ভাহাৰত্বী জোৱাৰ ঐ কিন্তুন চি চাটে ৰাখ हेर्ड कि-क्या।

এটা ওল্লাক প্ৰসাধান অভানান হয় হয় হয় ১৮৮৮ । ২০শাহন ১

্ৰেট প্ৰত্ন সেৱাপ সম্ভাগৰৰে। সংক্ৰিড ভায়ে দি স্বাচিত্র, হর্যাচেত্র ভারিবারে সংগ্র कर् वड़ रह भी जिल्ला के राजार, के ए न न्द्राच किष्ट्रायकुर्वे अव हि कान् नहाः व्यवसार। বেহু গাঁচেত পারেন, "ভেলোর আপনাং চিন্তা∳ বিষয়ে এবং ভোষার আপন্তা **জ্ঞানে**র বিষয়ে কথা কহাই তোমাকে সংক্রে, ভা নয় . জুমি সঞ্জ জ্ঞানের--সকল ি গার--নিখম निर्कातं किंदर वारेटल्स्, धेर एक कि ভোষার প্রক্রি প্রকাশ গাইতেছে নাং रेशाह क्षण्डा हा वाक्ना करे त्या त्य क्लानर इंडेंक्ट्रें का का एन हिन्द्राई इंडेंक ना (यम. दकान-अव हि वहागदक वा दकान-१० हि हिन्दु तक बहा भारत भारती । यह सिंध्य-मञ्दलक জনিবার হুই: চ বঞ্জ ভারিমা বেওয়া, উহা অংশেকা জন্ত হ'বক পান্ধার স্থানি মুক্তারণ, (य-गक्त न्टिश्यद क्या **अवार**न **উहाँ य** क्वा

২ইতেছে ভাহার। আবশাস্তানী সভা—ভাষ্ট্র-েব প্রতিপক্ষ স্ববিধাত গরে; এজনা, কেন্ট্র জ্ঞান সম্ভবতং নে-সকল নিয়মের জাওকার **হুইতে** শিলু স হুইতে পালে—এরাপ মনে প্ৰাই পাগ<mark>লামি ৷ আৰু ব্ৰুদ্ধি ল'ৰ হ</mark>ে মংশে পা**লে**শৰ লক্ষণ সে জোলনে ভারণ মনে তের পা**ে** । গৃহস্থ । স্কালের অবস্থানী চনুষ্কা চন্ত্ৰ কোন-জ্ঞান কোন বা কিচুতি हरित अर्थित इतिमान्त्र । १५३५ (कासन्द्र) ভাগে জ্জা<mark>ন,</mark> ভোন চিল্ল ট্ৰিচাল কোন-পত্ৰজি লা বিশ্ববিদ্যালয় তেনা কৰি এ প্ৰাণ্ট্ৰ জ নিয়া কেইবা, এইবা 💎 🧸 🛪 🗗 🦭 এ স্বাহ্যতে লাভ ১০০২ এছে। **অভ**রণ যে সকল राज्य १७०, ४६०मा ५.**म छाश्रीक** ले मकत ভূমতা তেওঁ হাইতে **রুক্তি** ভিশার পরেল প্রথম বের ১৮ নে মারের । স্থার ১৩র - ১৯ - জনসার বিভাগ ৮৮ - ৬.৫ ৬ সক্ষে প্রেটিন্ন - কেল - মন্থ্যা १८४ वाक्टि याकि-छाशासि विवास ১৮৫০-৪ নাম ব্**তরুক্ত** শোদ্ধা**জান্ত এক** · 作品的 24 可食之 *

Gianela !

ব্ৰাহ্মপ্ৰ নাতি।

ক্ষেত্ৰ ক্ষাৰ্থ কৰা

প্ৰথম ক্ৰেন্ত্ৰ বিষয়ে ক্ষাৰ্থ কৰা

স্বাহ্ম ক্ৰেন্ত্ৰ বিষয়ে ক

আমাদিগের গোট সাভাবিক আ**গ্রমহন্ত্র** জান আছে। আমিত্র ঈগরের **পুর্ত্ত, আমি**রী

আতা মতবোৰ এগত চিতাৰ মামণী; এ ক্ষম
বিন্দা ভাবিক লোক গৈছিব ভাষাম্য (Anthromotive
কিলা অধীয় উপালতে সন্ধাৰ্যৰ ভাৰ আবোৰ করা)
এই এক ভৃত্ব ভবে সৰ্বান অভিন্ন, তাৰারা ইবলৈতে
আছিব-ল্পন আলেপ কলিতে অধিকারী নর্বেন,
কেননা অভিন্ন গণ্ডাৰ চিন্তা-গ্যা প্রতরাং মান্তবিক।
ভাষা বালি এ ব্যাহিক, ভাষানার আকারার
আন্তর্জক কলা না বালিন, ভাষানের আ আনান লোকা
বিক্ বাধিতে লাক্ষ্য ভাবে নাভিক করার আ

জ্ঞান পর্মা ও পবিত্রতার অধিকারী, আমরা সাবান জীব এবং আমরা অমর, অতএব আ-মবা মহৎ এইরাল একটি ভান ঈশর আমা-- দিখের আত্মায় গুড়রূপে নিহিত করিয়া দিয়া-ছেন। এই আয়া মহত্ব-জ্ঞানের উদ্দেশ্য .এই যে বাছাতে আমাদের মনুষাল, বাছাতে অংখাদের প্রকৃত মহত্ব, ভাষা সেন অবিকৃত থাকে। তাহা যেন বিনষ্ট না হয়, তজ্জন। ব্যান । সর্বলা স্বতু থাকিব। বিজ্ঞানু দ ভাষাৰ এই আগ্ন-মহত্ত-জ্ঞান বিক্ল কৰিয়া ्बद्धा। अहे निक्रालित गाम भन्। अहे गर विश्व कर्त्वत भावभाविक स्टेटन जासाटन পাহাতে প্রায়ত মতত তাহা চাদ পামানের िल्लु गांव पार्ट लोही अंगेरन हाराव येगा আমান্তার মতে অধিব্যাত্র অহতার উপ-ফেত হয়, আৰু ে যাহাতে আমাৰেৰ মহন্ত মাই তাহা মধ্যমনে করিয়া তাহার জনা আমর। পৌরের বোধ করি। মূল চিন্তুর শ্বধীন ইইলে ভাষাদের প্রকৃত মহন্তের কারণ পরান, ধর্ম্ম, ও গালিকা মত্টুকু থানে ভঙ্ টুক্তর **জন্য** আহাদিতের মনে অহতার ভিন-^{ক্ষা} হয় এবং সেই সেইন্দার স্থাত হট্যা অংঘটা মনে কলে যে আমরা জ্ঞান ধক্ষ প্রিন জ্ঞান উগতির পরাকাষ্ঠা লাভ করিয়াছি। আবার যাহাতে আ**যালের মহত্নাই**, যালা অসায়ী ও অলাব, মুর্থাৎ ধন সম্পত্তি, স্মাতি এটিঙপতি সাৎসারিক স্থ্য সম্প্রাণ, বংশু-যর্বাদা ও পদগোরব, এই সকলকে প্রস্কৃত নহরের কারণ ভাণিয়া আনবা ঐ সকলের জনা গৌরব বোধ করিতে থাতি। আমা-দের আত্মায় ঈশ্বর-নিহিত আত্মাহত্ত্ব জ্ঞান বিকৃত হইলে এই দশা প্রাপ্ত হয়। আমাদের পৰিত্ৰ আত্মনহত্ত্ব জ্ঞান যাহাতে এরূপ বিক্চতি প্রাপ্ত না হয়, এবং এরপ বিকৃত হইলে যাহাতে আমরা তাহান দে বিকৃতি শীঘ্র দুর করিতে পারি তাহার জন্য আমাদিসের

সবিশেষ চেষ্টা ও মত্ন নিয়োগ করা ঈখর-নির্দ্দিন্ত কর্তব্য।

আমাদিগের भेषत-४०% पाश्चमश्र ख्डान आंगापि**रणत मञ्**रलतः उत्तर, किस উহার বিকৃত আকার যে 👀 রিপুতাই धार्यादमत (पांत ध्यन्दर्भत ८ ५५-१ । भः ६:-মহত্ত-জ্ঞান ধৰিকাও ও সামালিক শ্ৰেম্য क्षका कविद्रात भाविद्रमा किट्रमा कामाजिद्रका ওস্তুত মধ্য লক্ষ্য ভইবে, কেন্দ্র আন্তা জ্বান, ধৰ্মানৰ পৰিত্ৰতা নামকৈ আৰু দটোৱৰ প্রারিশ, কিন্তুস আনহা প্রবিক্ষণ ইক্ট এবা । भीतरा भारत्य सिट्ड भगवन, विद्या नागः। প্রিবাদ ধারাকার। সম্প্রা হাস্ত্রের জীবের भट्टन डिलमाउन कहेन, ति (त आभव, हेव कान, न १ कामा पाता चनक की पाउँ । तुम्मार भा इसर कातराज शासिस, रमशेनिटर है जामा নিপের জেন্তা ও গল্প নিদার হে প্রথাবিত হয়, स्टर अस्टिक टार्श ७ वक् याकित्म आध्या বন্ধ-পর্য থাকিয়া স্থুণ শ**ন্তি ও আন্**নেদর प्यतिकारी म्हेटल अक्षण **इहा। जात श**ि লামরা ভাষ্যাণগোর অক্সে-মধ্**ত্র-জ্ঞান** কিকৃতি করিলে উচ্চ মদ বিপুতে পরি**ণত ক**রি ভাষা হটালে খন্ত লান, জল দর্ম **ও অন্ত প**রিভত। নাত করিষ্যা আনতা মনে করি যে আমতঃ মহাজানী, মহা বার্মিক, ও মহাপ্রি ন্তালাপান এবং এইরূপ অমূলক সংস্কারের বশবর্তী হইয়া আমরা জনন ধর্মা ও পরি নতার উৎক্ষ সা**ধনে প**ার্যুখ **হুই।** ও বাৰ গালাতে মহন্ত নাই গোৱৰ নাই, গ্ৰহ तिथात व्यक्षीन इ**हेरल, आग**ता तमहे सकत পার্থিৰ অসাৰ ও অহাধী বছতে গোৱৰ ও **গহত্ত আছে ভাবিয়া তাহাবই ৬ কু**নএৰ কৰি। এইরাপে ধন, যশ, পদ গ্রাভৃতি পাথিব বঙ্গর গৌরব করিতে এবং ভাহাদিগরে মহৎ ভাবিতে শিখিয়া আমল। আমাদিসের চির-কালের অমলা ধন জ্ঞান ধর্ম পরিফলোর

মহত্তিপলন্ধি করিতে তাহাদিগের গোরব তামুত্ব করিতে তুলিয়া ধাই। এইরূপ হয়লৈ অজ্ঞান, অধর্ম ও অথবিত্রতাব নিকে প্রাথাদিগের সতি হয়—আনত জন্ম আধ্যা-জ্বিক অবনতি প্রাপ্ত ১ইছে পালি এবং পাপ-শ্রীথে পতিত ইইয়া মহা তুর্গতির ভাগী হইয়া হতিকার করিতে গাবি।

্র প্রকৃত আজু-মহত্রজান জ্বীপ্রের দিকে আমাদিনের আত্মার চণ্ট্ উন্মীনিত কাথে, यत. तिथे श्रामामिगरक केमनास्थ इहेरक বঞ্চিত করে । আত্মমহত্ত জ্ঞান আমাদিদের আশ্লার নিতা আধ্যাত্মিক মহত্তের গরিম। मर्द्यका जालक है तार्च, यह जिल्लू भार्चित नरहत जियाती जेनात ने इ-काती शतियात जागाणि আত্মাকে আবদ্ধ করিলা কেনে। আত্ম-মহত ভান আমাদিগতে সংগর দিকে আক্রেষ্ট করে, মদ বিপু আম।দিগকে পুলিবার দিকে টারিয়া রাখিতে চার। আখা মহত্র-कान चार्मीविशक चार्मानिका कीरान्त्र প্রাচ্চত মহান উদ্দেশ্য স্থ্রবিদা অরণ করাই।।। দেয়, নদ রিশ্ব আ্যাদিবের সে ন্মতি হরণ कट्व। **आञ्च-मङ्ख्-छ्वान** धार्मानिशदक स्थ শান্তির পথে রক্ষা কবে, মদ রিপু আনা-াদগকে ডুঃখ, সন্তাপ, ও অশান্তির পথে बहेबा याद्वा অত্তৰ আৰু নহৰ-জান বিদক্তিন নিয়া কখন ভাছার স্থান মদ বি-পুরেক অধিকার করিতে দিবেক না, পাত্র ব্রাহ্মধর্মের এই আদেশ, এই উপদেশ।

ত্রালা খিনি তিনি কখন মদ রিপুর অধীন হরেন না। আমি অনন্ত ত্রকাণ্ডের রাজা অনন্তদেব পরমেখনের পুত্র, আমি জ্ঞান ধর্ম ও পবিত্রতাম অনন্ত উল্লভির অধিকারী, আমি বারীন তার, পশুদিপের নাায় নিনিপ্ত পশু-সংস্থারের অধীন নহি, আমি অম্বর, ন্নন্তকাল সম্বাহর রাজ্যে থাকিয়া আমি অনন্ত উগতি লাভ করিতে থাকিব, তাল

ইহাই তাঁহার ওক্ত মহত্ত্বে কারপালীয়া শান্তভাবে কাড়ায় ভাষা পোষণ করিয়া, পেই মহত্ত মাহাতে লাভ কাবতে পারেন, मिट बहु वाहात वनक्रमा भए जिस्सू-माद्रक था। कछिए ह था। या । जिन कथन জ্ঞান ধর্মা ও পবিত্রত। ভাষ্ট করিয়া ভাষার জন্য অহম্বার করেন না ান না তিনি জা-নেন যে জ্ঞান পর্যাও লাগতভায় তিনি যত দুর উল্লিড লাভ করিয়া পাজুন না কেন, ভাহাদের গণে জারও ইছবি সম্ভব, একং পূৰ্ণ জ্ঞান পৰ্য্য ও প্ৰিয়াখাৰ নিকট ভাষা-ष्ट्रियामासा, जात छन्द्रात छ्वे ति**भाव** জন্মত উচ্চা অপেক্ষা উন্নেত্ৰ আনে ধর্মা ও প্রিল্ডা সম্প্র ভীব ন ল রহিবাছে। তিনি थरनत रकोत्र करतन ना, भरमात रभावय क-द्यम नी, शत-सर्वाषात (भारत क्राह्म मा, फिक्र करासन एशोदन करास ना। मकरलत (१ भारतका भारे, स्राप्ती त्कान মন্য নাই, প্ৰকৃত সোন মাত্ত্বনাই, ভাহা তিনি সমকে প্ৰেন। বিব্লধন-সম্পন হুইনে ৪. গ্ৰেণ মানী হুইলেও, কিন্তা পুথি-গার মর্কোট পরে অধিরত হইলেও ছিনি भितिद्रापत न्याय, धन्यशीदमत नताथ ও উচ্চ-পদ-नुगर वर्ष क्रिय नाम अस्य अस्तिनी करणाम । তিনি গ্রান, ধর্মা, ও পবিত্রতাতেই মানুষের মহত্তানিয়া তাহাই অর্ফন করিতে ছ-রিতে জীবন-পথে অগ্রসর হইতে থাকেন। তাক্ষরশ্ব এছণ করিয়া, যোল ব'লা। জগতের নিকট পরিচয় দিয়া যিনি ভালবর্ণোর উপ-দেশামুদারে মদ রিপুকে এইরূপে পরাভিত করিতে না পাটেন, তাঁহার আত্মার উপর মদ রিপুর প্রভাব এইরূপে বিনপ্ত করিতে না পারেন, তিনি আক্ষধন্মের ও জান্ধা নামের অবসাননা করেন। তিনি কখন প্রকৃত রূপে ব্রাক্ষ নামের উপযুক্ত হইতে পাবেন না

1

স্বাস্থ্য ও বৈবাহিক বয়স।

কি দে স্বাস্থ্য থাকে এ প্রশ্নের মীমাংশা বভ কঠিন। "অনেকেই গলেন মিভাছার খিতাতার ও ব্যায়ামাদি নিয়ত অভ্যান কর এবং আর আর ক্রিয়ম পালন করিছ। চল যাস্থা থাকিবে। किন্তু গদিকে আবার দেখা সায় সে মতুযোর পক্ষে সকল কাল ও সকল অস্থায় ইহাতেও*বিশেষ কাজ হয় না। **ाडे भक्त केंगारित इत (छ।** दश्य छाल था-কেন আবার কেই বা তাঁদুশ স্ফল গান না। किस विष्ठ शाहीन कारल एकरण कर স্মান এটা লাজ্যের প্রাথ্ন উঠিলাছিল এবং आधुदकं भरे रेगत भी माध्यः कतिया यान्। এই অংশুর্কেনের এক ঝুসি কছিয়াছেন, লাস্ত্র किंद्रभ शांदक हैश निर्वत्र करित्रल हरित्स, অতো স্বাস্থ্যের মূল দ্রাপুরুদের বৈবাহিক সমুস্ অব্যারণ আনশ্যক। কান্য স্থাধ্যবহ্যর হাড়শ আচার আহার ও চেরী ভালাদের পুষ্ত ভিদ্যুরপ ইইন। থাকে (১)। এই সুর্টক ৰবিদ্ৰ' **স্থাকে**ৰে প্ৰশ্ন ধীৰ্যাৎদা বাবিতে হইলে সকাতো বৈবাহিক বয়স নির্ণয় করা চাই। কারণ চেঙ্কার সহিত ওয়সেরই গুরুতর ও প্র**নষ্ঠ যোগ।** বিভ এই আয়ুর্কোদপ্রবেতা श्विषि এই दिनारिक नम्न निकान दन दननाई যে মনুদোৰ পালুখার প্রতি লক্ষা করিণাছেন তাছা নছে। তিনি ইহার সহিত জনসমাতের অবস্থ। অর্থাৎ দেশকাল গাত্র স্থায়থ ব্রাধার ােটা পাইয়াছেন। স্থতরাং আয়ুর্বেনের বাবস্থা অতি গভীর ও বাপেক। আমরা ইহা বিরত করিবার পূর্বের এখনকার সমাজদং-ক্ষবিকেরা বিবাহের এই বয়স সক্ষে যাহ। নিৰান্ত করিয়াছেন অত্যে তাহার আলোচনা कदित्।

. এथनकात कुछविनामिटगुत गट्छ शक्रमन

वर्ष खीत विवाहकान । १८४८ १८ छात्र मृष्टिएड ইল প্রতিকুল কাল ২০ 💛 😅 এক্টেন্রের শেরপ পাবিশারিক জ্ঞা গ্রাহ টে বৈবা-হিক বয়স ভাহাৰ পাৰিক : একিবন চইস। में। **जाया । व्यामाराहर । इस्तर क**्षात्राव षारह। देश (म भीड़ा जिला म १०१४ (म সন্তারনাও অলু। ইয়া অসমা সাম ক্রি **যে পাশ্চাতা মভাতা** ইতা মন পিনিল নরিতেছে কিন্তু বত্রান १.तिर्धे भन्न ष्ट्रात प्रतिभाष भी मा भा ·蒙古多 小化1 धप्रता पुन्न । चार्च भरिका स्टास्थ ছইলে ইওলেপের সহিজ অন্যানের পারি বানিক অবস্থাগত কত ত্রাম্দ ব্ৰিক্তে তথ,কার ্পার্কেটিক ভিত্তি भाविद्याः আর্থিক কিন্তু এখান্**কার** নৈছিল। সার্থ পিতাপুত্তের মধ্যেও বিভেদ আনি-য়াছে। কিন্তু এখানে নিংখান, ধর্ম বা কর্দব্যবোধ উভয়কে মিলিত করিয়া রাখি-য়াছে। স্তরাং এইরাপে ব্রিনে থা**নাদের** পারিবারিক ভিতিমূল **স্থাদ্** বোণ হয়। কিন্তু ইঘাও স্বীকার করি রাজনৈতিক শক্তি ইহার অমুকুল নয় ৷ সংক্তিইচ্ছা না থাকে তথাত আমাণের পঞ্চে ব<mark>র্ত্তমান</mark> পারিবারিক বন্ধন वाध। १४ है। ८०० पन कड़ा मन्छन। सत्भा, खाभाज দৃষ্টিতে ইহাই বোগ হ**ইতে পারে** কিন্তু তাহাও ঠিক্ ছইতেছে না। কারণ **অ**গতের নিয়ম এই যাহা সং বা নসল তাহা এককালে সায় ন। যদিও কোন বাহ্য কাঁরণে আপাতত যায় কিন্তু তাহার পুনরার্ত্তির থুব সন্তা-तना थारक। - दिष्ट भारति है श्रीतात करतम আমাদের বর্তমান পারিবারিক প্রথা যদিও কোন কোন অংশে দোষস্পৃত্ত কিন্তু ইহাতে গুনের ভাগ অধিক আছে। কিন্তু সে কথাও ছাড়িয়াকেও। হিন্দুর মর্মাণত বিশাস এই বে পোষাবৰ্গকৈ অন্ধ-বন্ধ-দান একটা নিঃস্বাৰ্থ শোনি অন পাইৰ আমান বুদ

⁽১) আচাৰাহাৰচেটাভি: যাদৃশাভি: * * *
গ্ৰীলঃবো স্থেনিটো ভৰো: প্ৰোহণি ভাদৃশঃ।

11 74 6 91

পিতাযাত৷ বা আক্ষ ভাতা অন পাইবে ना अपृता कि हिम्मूत आंटन महनीय হয় না) ফদি কেখল এইটুকু ধৰিয়া বিচার করি তাই। হইলে कि সালস করিয়া\ বলিতে পারি না বে, জ্বিষাতে এই ধর্মবিশ্ব-সের বলেই শত শত রাজনৈতিক বাধা অতিক্রম_তক্রা অক্সাদের পক্ষে সপ্তব ? 'এ বিষয়ে **আর**ও এক**টু** গুঢ় কথা **আছে।** ইওরোপের অন্নকট প্রতিযোগিতা নিব-স্কান । যাহার ক্ষমতা অগিক লক্ষমী ভাহারই। किस्र व्यादन देश किन् अक्रम नग्न। हेश व्यन **অসাধীন** । বিশেষত **শাসন ও বাণিজ্য একের** হত্তে। (দেশের অর্থ ও শস্য আর দেশে थाटक ना । कहे जनारे कंडे नर्सदााशी हरे-তেতে। ভাষা অক্ষ স্তরাং দে অন পায় **ক্ষাল্যাপক**্ষিত্তের সময় এ বিচার থাকে ना । । श्रापुष्ठ अहे अधीनकात हास्य ४०हे ক**ট বাড়িকে ততই স্বা**র্থপরত। প্রবল ন। হইয়া মনুষ্য-প্রকৃতির নিয়নে দয়াই বর্দ্ধিত হওয়া ভাতায় ভাতায় মিলিয়া দিনান্তে জঠরত্বালা নিবারণ করিব এই ভাব প্রবল হওয়াই ধ্ব সভব। ইহাধর্মপ্রাণ ভারতবর্গ স্থানরা, পাশ্চাত্য 'সভাতার বলে এ দেশের এই পারিবারিক বন্ধনের মূল যদিও কিছু শিথিল ইইতেছে কিন্তু কে সাহস করিয়া বলিতে পারেন যে ভবিষ্যতে ইহা এককালে নিৰ্দ্দাল হইবে ৷ '

এখন বক্তবা এই, যে, এই একারবিভিতা
ভূবিষাতে টে কুক বা নাই টে কুক সে বিষরের
সবিস্তর, যানাংসা করা এ প্রস্তাবের উদ্দেশা
নয় কিছা ইছা হৈক বে ইহা এখনও আছে,
এবং লীউই বে ঘাইবে তাহাই বা কে বলিক।
এখন আই কিছাছ বিষয়ের অনুসরণ করি।
ইতিপূর্বেই কলিয়াছি প্রকারবভিতার
সহিত প্রহার প্রতিকৃত্ত বিষয়ের অনুসরণ করি।
বিষয়েকাল হির করিলে এই প্রকারবভিতার
সহিত প্রহার প্রতিকৃত্ত বিষয়ের। কারণ

धरे विकास विकास मूल धर्म। धक्री अकामवर्जि, अविवाद्धाः, नाना @क्रुजितः (लाइ थाटक। किन्नु मन्त्री को कर्डवावृक्षि यनि छाहा-দিগকে নিয়ন্ত না করে তাহা হইলে পারি বারিক স্থিতিভঙ্গ অপরিষ্ঠ বা। এখন জীলো-কের পক্ষে এই পঞ্চন 🔞 বয়স্টী 🙀 শস্তু, তাহাঁও এক্ষার স্থির চিতে বুনিয়া দেখ। এই नगरत श्रक्ताजित निव्यस्य ज्ञीत श्रद्रा नकन यात शत नाहे जिलांग हहेशा छिटि। क्यानात অনৌকিক চক্ষে নয় যদি দারল ভাবে বুঝ, নি-য়ত যাহা ঘটিতেছে যদি তাই ধরিয়া বুঝ তাহা হইলে দেখিতে পাইবে ধর্ম ও সংসক্ষেত্র বৃংহ্মধো থাকিলেও শতের মধো অন্তত উন্-নকাইটাকে এফুতি এই বন্ধদে ভোগপ্রবৰ করিয়া কেলে। স্তরাং ইলা দ্বির কথা বে এই বয়দ স্ত্রী**লোকের ভো**গবৃদ্ধি বাড়াইয়। ভূলে। এই ভোগের সহিত স্থার্থের অবিচ্ছেদ্য সফর। এদিকে খামাদের সাধা<mark>রণত বের</mark>ূপ অবস্থা তাহাতে পাঁচ্টার মধ্যে এক স্কুনের সর্ক্রিপীণ ভোগ চরিতার্থ হওয়া সম্ভবই নয়। স্ত্রাং এই ভোগবৃদ্ধিই ক্রমণ এ স্ত্রীকে সার্থপ্ররণ করিয়া **ফেলে**। **পরেরি বার** সার্থ প্রবল হ**ইতে থাকে তথন ধর্মা বা** কর্ত্তব্যবোধ আর বড় একটা স্থান এখনও मायाना गृह्दस्त क्ट क्ट य पृथक जन रहेत्रा भए छ।हार्त মূল অনেক হলেই এই দ্রীলোকের ভোগ-श्चित्र 🐧 सार्थ। ् ऋठतारः वर्त्तमान अः-केंद्रदेवता शकनमवर्ष स्त्रीत्र विवाहकाल नि-दिनम क्रियो नगाजगर्या अहे महद माधी আর্থ ভাকিয়া আনিতেছেন। এই ভোগসুর ন্ত্ৰী আদিয়া কেবল আপনাৰ ভোগ ও ভর্জাকে বুঝিতে থাকিবে ৷ সার্থের উৎশীর্তনে ইহার নিকট অবশ্ব-প্রতিগাল্য পরিবার-প্রায় **छ्रलाक्**छ हरेरव अवश् **घरनक विक्रणा** त्माक यात शत नाहे **अनाजाट कटडे किन**-

পাত করিবে। স্থতরাং এখনও স্থান এদেশে একামবর্তি সংসাদ আছে এবং শীরেট যে ইং। ভিন্তিয়া যাইবে ভাইরিও স্থান , পিরারা নাও জগন স্থীলোকের এই দেশেপথবেশ পদ্দদ্ধ ব্যাকে বিশ্বাহকাল ছিব করা, মৃত্ত হয় স্থাই। কিন্তু আতি প্রাচীনকালে দেই ভারতে এক্টন লায়ুর্বেদ এবেশা শ্বাহির এই প্রক্রেন্ত ক্রিন্ত উদয় হই য়াছিল এবং বর্তমান সংখ্যা স্ক্রেন্ত আত্মান ক্রিন্ত বিশ্বাহ বর্তমান সংখ্যা স্ক্রেন্ত আত্মান ক্রিন্ত বিশ্বাহ বর্তমান সংখ্যা স্ক্রেন্ত আত্মান ক্রিন্ত বিশ্বাহ বর্তমান সংখ্যা স্ক্রিন্ত আত্মান ক্রিন্ত বিশ্বাহ বর্তমান সংখ্যা স্ক্রেন্ত আত্মান ক্রিন্ত বিশ্বাহ বর্তমান সংখ্যা স্কর্তমান ক্রিন্ত ব্যাহার স্কর্তমান ক্রিন্ত ক্রেন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্

网络沙兰 人名英国阿拉马姆 电影 电影 泰洲 च प्रकेषित १५५० चन मार्च न न**्या**टा 化二氯化物 海绵 人名克格 化二十二二甲烷 计编码管理 भारती भारतकार मान काल जिल्लाहरू निवास हत বং দা আৰবাৰাৰেৰ প্ৰায় গ্ৰাহাট্য ৷ প্ৰায় আনেলে ভাট বৈদিত সিভান্ত বাং বিহ-্ৰাক উপত্ত বিশিষ্ট সংগ্ৰহণ সংখ্যা क्षित्र भारत्व । बिन देवीनक काल उत् चेत याच बालग्रा विराध ্ৰনাটী ৷ ডিনি প্রায়ে **বলিভে**ল্লের ভাল প্রতির্ভারকরীয় পুর্য এই চন্দ্রাস্থার ১০শবর সাম্ভে কর সার্ভাষার করে ছার্লে হাজনে গাল্পে পরে -भने १७% भार योग्रह समान स्टाप् रुष्ट्र न जिल्लान एक भाग 一門出身 与唐代科 ক্রিয় অধাৎ হানবার্থ। হটখা আবিত গাবে। অতত্ত্ব হে'ড শবর্ষের সুমুন্যস্থাতে গাস্থানাম ষকওবা (২)। ু এখনে আমনা ভুইনী বিচিত্ৰ বিষয় **পাইতেছি।** প্ৰথম ছালৰে বিবাহ, দিডায় যোড়ৰো গাৰ্ট্টাধা**ন**। ও-স্থলেও তুমি বলিতে পার তবে যোড়শ-वर्ग विदाहकाल ना इब किन ।" किन शुक्तिरी

ष्ट्रेश हो अंदर्भ के लिख निकित्त । दा कार कर विविद्यान সংস্কৃতিকাদ্রমের মতে দুয়াল তিটা যোড়ণেও সেই দেখে। এটা জনাইত বাহ मारनी निर्देश स्त्रीत निर्दाशकाला (लारूमा आहर) ভাষার সহিত ধর্ম জব এ মত্রন হে,৫১৮ कानसीटमा । अथन छिहान अधनात मा शहर महर्द्धा दिवास्थामा ह हैदन । जासादान्त नहीं वार्तिक नवान भण्डार्ग रूप एउट ए छेन्। त প্রাভিন্তির। কিন্তু পার্বিত লোভনীর নামে अहे नव नाम १९ ६ १ । स्ट्रेमामा নে যেগৰ সাগ্ৰেমণ গ্ৰিয়া ও এতে আছি য়ালের ধনিতে লি, সংস্থা ভারতে তথ हेकार अहै। नी साइत गांक शामक 所接が、「ちょもかがり」、「密信がでる」、選挙権 ভালত হৈ উহাব । লে হটিয়া প্ৰেন্দ্ৰ । ে সেই ইফা বরে সাংগ্রে সহিত প্র ট্ট : বিন্ধ স্থালে : া গা**দশ**ৰন **যে, ৬শে**ছ म् । १८८७ अस्त २००० ४म रम्पे वस्ति। প্রত্যাহ । শাস্ত্র ১৮ জারের নিবটি সম্ভাজ AGE OF FRED PROTEST OF THE মানার সামের ভাগ জোলাও **অংলো** ছুহার েলিচন ১৪। তার্পি হেড়িল বর্গে **নিজে**র कुलई जानर मध्यभगान किए बाह्यन क का नाम इस मार्ग वह जना हिसालेंदन एक विभावना ५० ७ ५ वर्ष वशामने कन-এই হ'লামুলান্তৰ এবং পারিবাবেস লেয়কর গুটাই लाकः क्रियां च भारतः। । । । । वो ने नलः। लारवज ना वरेटन जाहाटक यरशब्द ल्लाबाहरत পারা বাহ কিন্তু পার্কিলে আর সংক্রে ভারা হয় **না। যাদ্ধাই** হউক এইরপে ভি*র্প*্ত ধর্মা অর্থ ও কাম শিক্ষার নিমিনে ভাদশ হ্রের **পঞ্চশ** পর্যা**ন্ত অভী**ত হইর। যায়। পরে তা হার সামিসন্দর্শন। এখনও যে এই বেলেক্ত **उभर**मग ६ न्तु भतिनाद यथाय**य** @ जिमालिए হইতেছে ভাবা নহে। কিন্তু ইহার অনুরূপ

ব) শত বিংশতিধর্ষায় ছার্শবর্ষাই প্রতীং ক্লাবছে। পেনা গ্র্মান কালা প্রতিধ। উন্ধোচশব্ধায়াই সংপ্রাপ্তঃ প্রাবিশ্বনিক। স্বাধারেও প্রান গড়া কৃষ্ণিত্তঃ শ বিপদাতে, ভাততা বা ন ছিবং জাবেৎ জীবেৎ বা ছবলৈছিয়ঃ তথ্যাই অত্যন্ত বালায়াই প্রতিধানৰ কালাছে।

षात्नको। श्वाब अत्हः अखि अवन শত শত পাৰ্শার অংশেষ চত অল ব্রাদে कन्मात विवादी निया छ छ हा राखदा और तन माक निश्य भीकने कतित्छ । अपनामित ज्ञाक क्ष्मीत विवादक भव आमि স্থাপন मा इहेगाई जिला यूका वर्गन ब्रिडीलर्स গুড়তি কতক্তলৈ নিয়ম পালন করিয়া शास्क । अने मम्ब निराम शालन कतिएड গিয়া কনার পুর্কাণের কান উপক্ষত इस्र। रोज प्लोहात किंगियसारम प्रतिश থাকে। এ দিনি আবার শারীরলভ্রিং বির ক্রিলানের বে হলি স্থিত পারিবারেক वाध्कनाति मन। मलिन ना कति छति छो। र পুনং গংক্ষারের কলি সভবাচর তাদি বা পন া কিন্তু সাম্বোর বৃষ্টিতে বৈশিক ঋষি একেও मुख्य से इहें। साडनरर्वक चारि स्थानक खार १ व र्गलिए निर्फाण १ एम। মতবাং স্থান এইনেশ একছিল হ'ব ল'ে च जिल्ल प्राप्त करि ख्यान व्यवस्थाति कः eটায়। এই রাদশাবধাই সভা হৈন প্রয়েলাকের ংবাহকার বিভিন্ন গানে। সংগ্রহণ ক

এখন গুলি এই নথা গুলিতে পাব থে এচাং করি মংসাধের উপ্রোগদি শিকার প্রিয় করি হাছা প্রিন্দে ডাঙা বি প্রাণো-কের পেড়ুলে হবীতে পারে লাগু ডক্তনা ভাষার হাছণে বিশাং দিবাং বিশেষ আবি-শাক্তা বি । প্রথম মাহলাও জীজার করে শিকার স্থল লগ করুব থলি পিড়গুছে লা ভাতি পারে এমন না। কিন্তু ইহার ভিতর একই মুক্তা কথা আছে। প্রতিচ্চ পরিবারে কতক্তলি সাধারণ ও ক্তক্তলি বিশেষ ভাব থাকে। তত্রাহ মেই বিশেষভূত্র শিক্ষা করা কি সেই বিশেষভূত্র জনা পারিবারিক মান্যাল্ল সমস্তই নির্মান করে। এই জনা পিড়াইকে শিকাকে সম্পূর্ণ শিক্ষা রলা আগ

मा। अपने এकी कथा खरे य स्थिक শি**ন্দি** অংশক। **কার্মত** শিক্ষারু ক্রিশের ্তিক্ত আছে। পিতৃগুঙে মাণা বলিলেন বভরতে ভাজ্ঞ করিও, দেববকে স্নেহ করিও, যাহার সহিত ষেত্রপ সংগ্র ভাষার সহিত ভদুজুরূপ ব্যবহার কলি । কিন্তু ভ**র্ত্**গুহে বিজ্ঞা কছিলেন সাও ঐ সে ার সভার, উল্লেখ্য ভাল আৰু করে, এই তেখার জে হের প্র_{ন্ত} দেবত, ইহাকে ভোষার **হলে**ও .मंदिया प्रकार भागन करा स्थितिक িন্ড, প্রেম্পে এই রূপ কর্মিত শিক্ষার বন ি পাৰিক নয় ৫ এই সমস্ত ভঞ্জি ও জেণের পার্ছিলের গাড় সংগ্রেব নিবন্ধন ভট্টি স্লেহ এভতি ম্**ন্দি** র**ভিওলি কি অ্**থেকা-আও গতেজ হয় মা। ক্লাত বালে। ভৰ্তু-গুলে কালাল এই সমস্য সংশ্লের নিবিছে चार्याक्त हों। प्रतिश रिविषके श्रीय स्रोत পানে, ছাদশ শতাংকাল স্থির করিষ্ণাছেন ! খার আভিতেশ ভোগলো**লুপ যোড়শে**+ ইঞা কুচ্ছ সংবৰ্ধ এই জনা সোড়শকে পরিহার व्हरिकाटक ।

বেশ তেমির এই এক মাপতি ইইকে
পারে গে দানশ বদ কমার বিবাহকাল কির
ইইলে গেই বালিক। স্ববং পার-নির্কাশন
কারতে পরিবে মান কলার দেশ পারনির্বাদন করা উচিত কি না সে বিচার
এ ফুল প্রস্তাবে ইইতে পারে । তবে
ভোষাদের নির্বাচনের অর্থ এই যে যার্থাক
দিশে চিরু দ্বীকর গাকিতে ইইবে ভারার
দেশে কোনও সভে মুখ্বে না। কিন্তু এইকে
ভাষারাও ভোষার একটা কথা জিভ্তাসা করি,
প্রক্রেশই কি ভাষা হয় না রূপ্ত মোহা
ভাষিত্র বিশ্যা দেশ এই দেশি ভার বিহার
প্রিক্তির বিশ্যা দেশ এই দেশি ভার বিহার
প্রিক্তির বিশ্যা দেশ এই দেশি ভার বিহার
প্রক্রিণ সভক্ষার। মার ভোষার ক্রান

এক আগত্তি এই বাদশে ন্ত্ৰীর ভূর্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ব্য আনিও বলিব দায়িত্ব লোবের মাতে ভক্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্বান পানর বংগত্ত্বেও হয় কি । স্ভাবাং তা বিঘটোর একটা সূল জ্ঞান ধানর ও বার উভয়ন্ত্রই সমান। এই জনা বলিভেছি ঘালুশ বর্ষ যখন এদেশের পারিনারিক একাছর উপফোলী তখন স্থার পারেনারিক একাছর উপফোলী তখন স্থার বিবাহকাল হওয়া উচিছ। তবে সংগানের জ্ঞাবে এই কন্যাকার উত্তর্গ স্ট্রান্থ ভাগতে জোমার দোস কি । এই বিঘতে প্রামন কোন ও সংগানিক বলিয়াকে সংগানের পারের জনাভে কন্যা। তির্কোমান্য ও স্থান্থ হটতে বারে না। ফলত হিন্দ্রে প্রে গ্রেছ ও

भाक देशनिक अशिकारभार दासर विकार हाउ त्रक्षा श्रीमा मा क्षिणदरन । किन्न जारतः দেখিতেছি এই ক্ষৰ খণতে এই নিকিট্ট বেৱাছ ব্যুম্জ সম্প্ৰ ব্যুক্তিৰ এক ক্ৰেণ্ট্ বৈজ্ঞানিক তৰ্কও উপত্তি হ ইইয়াছিল । তান কহিয়াছেন গার্ম্বর সভানের কেশ ন্ত্রা নগ লোম অস্থি ও সাদ প্রস্তুত কটিন কলার সকল পিতৃত্ব (৩)। ভারে মাংদ োয়ণত মেদ মজ্জ। ও হাৎ প্রাইচ হু এলামারী পাদার সকল মান্ড্র (৪)। তিনি বাসিয়াছেন সভাবেন অবরনগত এই পিতৃজ ও, মাতৃও জা শগুল गाउँ क्रिकाष ভारत दांछ इंहरेन उद्दर्भ खद रहीत । धरेकी दिखानिक भीमाध्या कि मा भि विश्वता मत्यार, किन्नु व्यागात्मत निकृष्टे ইহা ৰিজ্ঞান খণেকা দ্যধিক ক্ষাড়-বাঞ্জক বলিয়া বোৰ হয়। যাহাই হউক তিনি যে স্ত্ৰী পুরুষের বিবাহোপখোগী বয়োনির্দেশ করি-राष्ट्रिन छारो व मण्यून क्लानकास ७ शाज-

সঙ্গত ইহার"**কোন**ও সংগ্রু নাই। তুঃবের বিষয় স্কাত্র্যান সভ্তরত ত্রের মী-ষাংসায় ভাতা সম্পূর্ণ উলোগ ১ ১ই১,৫ছ। এডদভৌত ইহাতে অবিক ব 🖹 লৈব আছে ৷ ধর্ত্বান সংক্ষার্তের ৷ তেওের ব্যস া, ভাবেৰী কৰিতে পিছা নাম্ভিত বৰ্মনীতে অংশেক্ত আন্তঃ-বিজ্ঞানেত এত সংগুল এই ব্লিগ্ৰেন্ত্ৰা বিদ্ৰুসম্কের পাকে ধুলী कारिक खन्ती नित्यम সন্ধা কে বিশ্বস্থা আৰুত বাহত ভাগৰে শ্ৰ মান্ত কা কেয়া, অপাক্ষায়ত বা কা চেকাৰ 网络别的 植胶有野猪 医电子分别 经利 रामग्री अधिका आ करना याकेट विनदान त्रश्रामित्। अंदर्क विकास १ मार्ग । भागाना भारतः मित्रिमान (क्रांचा (आदारा १० ५) १० १० १० লাড়ে লম্ম্যাপতে ন্ত্ৰকাৰৰ ১০ 💛 বিশ্বাসন ्याति अक्टमा स्थान एका प्रकार र होता. पात्र कहा राजा । अहा १६५ राजा राजा । इसिन ना নিতা হটক আনে বামতিলা তে, পিক हैआ निव्यक्तिक निवास बना शहर वर्षेशास আলিতের সমাণ্ডের দেরপে অবস্থা ভাষাতে ভতিপ্রাণ স্থান্সভার সহিত এই বয়স্থা অমতার প্রিচয় মহীলো সেয়াম মন্টরের লিলক্ষ্ মুম্ভারনঃ খাতে এবং জ্যানক হ'লে প্রিয়ার স্তাহাণ পার্ট্যাল ক্ষেক্ত লাবেপ্র মানাপ্ৰায় দাঁডাইয়াছে এই থে, বন্দা দোৰ পরিছার করিতে এয়া জার এটা, ভরুতর দৌহের প্রশ্রের দান। <u> बहु जना र त भागाः</u> জিক শ্রেরে নীসাংলা করিকে কেল বিজ্ঞা-(मत श्रक्ति पृष्ठि ताथिरंग 'ठिकिटन मा। अर्थ-নীতি প্রকিত হইবে কিনা ভাচাও দেখা **डाहै। अनग्रांख** इरेंड प्रि क्यांनी ज़ि যার তবে ভাহার থাকে কি । কিন্তু হিন্দু ঋষির নীনাঞ্জীর ৭ দেখি গদিবার সম্ভাবনা रेटा निभ्धा कथा औरताट

পিত্ৰত আপেকা ভৰ্তব্যাহ বৈহাতিত শাচন

⁽০) গৰ্ভদা কেশ্ব জ গোনাছি নথ দত্ত শিরা সায় ব্যমনীয়েতঃ প্রভৃতীসৈ ছিলাণি পিতৃজানি।

⁽৪) মাংল শোণিত মেনো মজাধ্বনতি বৃত্তুৎ নী-ভাষকল প্ৰক্ৰামি মলনি নাক্ষানি



ंत्रकात चना अकी विद्रशय गटनाद्यांनी इता কারণ ভর্ত্তুক জিল্ল সাংসারিক জীবনের মুখ্য ক্ষেত্র। তথা। অয়লাভ করিতে পারিলে তাহার তিন কুলির মুখ উজ্জ্ব হুইবে - হিন্দুল্রীর ইছাই এর বিখাস। অতএব ভূমি যদি ঘাদৰে কনাৰি বিবাহ দিয়া তাহাৰ नमेल मरहित चनूनीलैन कतिवाद खसा ভর্ত্ত রাথ তাহা হইলে আতারকা তা-होत् भरक महक रहेरव। এখনও দেখ হিন্দুর ভিতর বিবাচে পর কন্যাকে ষে বিপত্পুত্র বড় থাকিতে দেয় ন। ইভার কারণই **बिरे। याहारे ह**छेक, वर्त्तगान अध्कातरकता विवादश्य, बद्यानिकांवर्ग यथन धर्मानीजितक উপেক্ষা করিয়াছেন তথন তাঁহাদের গিড়ান্ত বে কোনও জনসমাজের উপযোগী নয় ভাষা ক্লিশ্চিত। সুক্ষা বুঝিতে গোলে ইহা স্মাঞ্জ-न्गिठेटनव अनः। नत्र हैश मयाजन्दपत छना। ুবু নিয়ম যত শীল্ল এ দেশ হইতে তিয়ো-হিত হয় ততই আদেশের ইম্বল।

वागता अभिभः हाटत भःकातक पिशटक একটা কথা বলি 🕅 হিন্দু স্মাজের ভিত্তি रेनिकि। हेश कु उन्न म्माक। इरात ভিত্র কোন রূপ সংস্কার আর্থিনতে ইইলে 'দর্কাত্রে ধর্মের দিকে দৃষ্টি-রাণিতে হইবে। ইওরোপের সামাজিক / ভিন্তি আর্থিক। ছাহার দৃষ্ট্যন্তে কোনওরূপ পরিবর্জন আনিলে ইহার বংক তাহা কথম সহা হইবে ন।। কিয়া সমাজ এক স্থলে কোন কালেই দাঁড়িয়া থাকিবার নয়। তুমি ইচ্ছা না করিলেও ইহা আপনার শক্তিতে গণতে থাকে। কিন্তু তা विना नवाद्दनन नाम त्रमवर्की जातीतथीत ट्यांक्टक बना बिटक नहेंगा गेहें ना। रेश वालमात लेकिएक हम्क। बार्र तरक क्थन निष केनिट्र ता। अद्भ लागात केन्द्र . (करन छाहात क**र्केक (का**न कहा। क्षानिकान विश्वा जाहार क्या द्रापिटन और

ক্রিন্দু সমাজের বক্ষে নেই অক্টাতের গভারে প্রোথিত নৈতিক বীজ যাবং চক্রসূর্য্য ক্ষম কুক্স প্রসব করিকেনা।

প্রাপ্তি স্বাকার।

্তি আমের। কডজাতার স্থিত স্থীকাণ করিছেছি যে নিম্বিধিত প্তক ওপত্রিকাণ্ডলি উপহার আহাপ্ত হইন্ যাছি।

১। বাদ্ধবর্ষ বর্ষনীয় প্রভারের। প্রথমভাগ।

২। উদ্যাপা-- শ্রীপ্রমনাপ শাস্ত্রা প্রণীত।

্ও। প্রথমবিনা—প্র। জনতীশ**চক্র ঘোষাস** গ্রীত।

\s। মদ থাও নেশা চূটবে না। শ্রীপ্রেমনাথ চক্ত-বঙী প্রেমীত।

এই গ্রন্থ কেবক মহাকবি ছাকেজের আয়ার এক আকাকিক মদের আমণানি করিয়াছেন। ইহার গুলা এই যে জন্য মদের নায়ে ইহার নেশা ছুচিবে না। আমরা স্বাগকেই এই মদ পান করিছে অক্রোধ করি। e! Roused Prayer book. Compiled by the

Let Revised Prayer book. Compiled by the Let Charles Veysey, B.A.

. Voy 'ey's Sermons-1885.

9 : Thersic Church—The order of public worship &c--

Bibliotheen Indica, Published by the Asiatic Society of Bengal.

N S. N. 575, (Lulita-Vistara)

N. S. N. 576. (Zafarnamah)

N. S. N. 577. (Prithiraja Rasau)

N. S. N. 578. (Uvasagudasao), 4

N. S' N 579. (Chaturvarga chintamani)

N. S. N. 580. (Nimkta)

Proceedings of the Asiatic Society of Bengal May, June 1886.

Theosophist, August 1886.

Fellow Worker, July 1886.

ধর্মজাচার ৷ শাদাত ১১৯৩ ৷

वामादवर्षिमी পতिका। आवन ১২১०।

थाटमां हम।।

নরা ভারত।

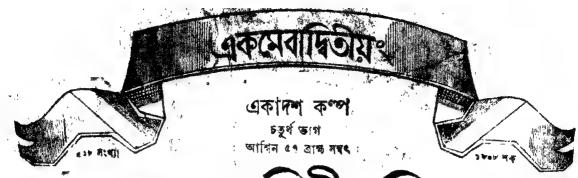
व्याठाव ।

বিজ্ঞাপন।

শাগানী ২৭ আবিন বছনবার শানী ধর্ম সমাজের" চতুর্থ সাম্বংসরিক উৎসব ক ইবে। ধর্মাকুরাগী সহোদয়গণ উপাদনার বোগদান করেন ইবা নিতান্ত প্রাথনীয়

रिशियान स्ट्यानामप्रम

MINOR THE



তভারোধিনী পানকা

त्रभ्रवाण्यक्तिद्यम् भाषोशान्यम् विभ्रवाशोभिदिदं स्वयं सस्वत् । तद्वेव वित्यं ज्ञानसनन्तं हित् स्वत्यदिरव्यवस्वयो सम्बद्धापि स्वयं निर्यन्त् सञ्जात्रथस्य विक्तासम्बद्धाः पूर्णसप्तिसैसिति । एकस्य सम्प्रेवाशसम्बद्धाः पार्यावकसोदिकात्र सभ्यवति । तद्विन प्रातिक य प्रियकार्यास्त्रभव सन्वासन्वकः

... ञानि बुभिनम्। अ

ণ ভাদ্র রবিধার ত্রাকা সম্বং ৫৭

আচার্ব্যের উপদেশ।

ত্তাক্ষধর্ম বলেন "আস্ক্রাশা অরে ত্রেষ্টব্যঃ. त्याक्रत्यामस्त्यानिः पराप्तिक्राः । अवेगा-ত্মাকে দর্শন শ্রবণ মনন ও নিদিব্যাসন ক-तित्व। 'खणरम भवभाञात्क पर्नन' केदित्व। জ্ঞানের বিষয় যখন জ্ঞান-সন্নিধানে উপ-শিক, তখন তাহার প্রতি চকু উদ্মীলন ক-बाँद मास नर्भन । भारताचा रथन जामादनद জ্ঞান-দরিখানে উপস্থিত, তপ্পন তাঁহার প্রতি আন-চত্ক উদ্দীলন করিলেই পরমাত্মাকে ক্লিন করা হর। পর্যাত্মা আক্লাদের আ-স্নাতে স্ক্রদাই উপুস্তিত; কিন্তু গোহ-অন্ত-कात्र याचिथारन जामित्रा वथन छ।हारक छा-ক্ষাল করিক কেনে ওখন পর্যাকী আমাদের নিকট উল্পাৰ্টত বাকিয়াও অনুস্থাৰিত; আ-वात रकत लेका छात्रि अक्षा केल के दिवस वारगार शिवा रगार अवस्था faul car was been at such

করিলেই আমর। তাঁহার দর্শন লাভ করিয়। কৃত কৃতার্থ হ**ই**়ু

আমাদের জ্ঞান নানা জাতীয়; সকল জাতীয় জ্ঞানকে আমরা দর্শন বলি না; যে छाटनत लका-विष्य श्वासारमद मित्रधाटन छ-পস্থিত, সেই জ্ঞানকেই আমরা দর্শন বলি। भारत-खां छोन पर्नन नटह ; कातन, ख-মুপস্তিত বিষয়েরই স্মরণ সম্ভবে। ভারন।-জাতীয় জ্ঞান দর্শন নহে; কারণ অনুপস্থিত বিষয়কে উপস্থিতের মত করিয়া মনোমধ্যে कब्रमा कबा'त नागरे जीवना; पृष्ठे विषय जातनात विषय नार, जन्हे विषये जातनात विषक्त । असूबान-बाजीय छान पर्गन नरह ; कातन कार्यान जारनातर पन पूक ; पृष्ठ विषयात मणकामृत्व चनृहे विषया छाउना, रयमम श्रम्ब नश्वन्त्र्व वश्वन छात्रना, हेरात्र वाग अनुमान । अनुमान कार्या-बिटनय छैठताः जाश मन्त्र नरहा

हर्गन एंटर कि । एटक्त पर्गन्तकर निक् बार्ड पाबता पर्गन गोनश विस्कृत कतिया पाति । किस एटक्त प्रथार कर्द्र (प्रथा, बाह्य नद्देश क्याफीक स्टब्स (प्रवा, चार्ट्स, भागक करमा चार्ट्स स्टब्स (प्रथा क्रिक् जाका दिल्या अस्तित मत्या वार्षक्र पार्छ के बद्भक्षा के अकात रख क्या, जारा जजराज्या अल्थ कला यारा देना शाहि ज्या छारी किथिए शाहे मा ; क्या আমার মনোন্ধ্য কত কি উদয়াত হইয়াক र्णाम जामा माम नाहे। मत्नत प्रक .অপেক্ষা চক্ষের দেখা স্থিরতর; কলা গৌ স্ব চিস্তা কেরপ[্] পূর্ব্বাপরক্রমে আমার गत्नागत्मा (नमा नियाद्य, जमा तमक्रल श्र्वी-পর-জ্বে সে-সর জিন্তার দেখা পাওয়া অস-छव ; किल मन वरमंद्र भूतर्य और मगाय-यमितत दश्यात (य क्षेत्रीत तिथियाति, वाकि किक् रमहेशात दम्हे शामि दमिय-তেছি; অত্রব চকের দেশ মরের দেখা অপেকা হিরতর। আন্তার দের। চকের নেশা অপেক্ষাও স্থিৱ**তর**ি **এয়ুর্ন** কত বিষয় আহ্বা চকে দেখিয়াছি—এখন বাহা কেবল ক্ষাক্তিক ই কথকিৎ দেখিতে পাই, এক স মরে বাহাকে আমর। ঐতিনিয়তই বরে दमिक्ती - अपन रह का गाजममून शादक ना त्वरण है। शत पूर्वन भा अश व्यम्खर । कि बाजार प्रियात जना किन रम्हे पूरव शारे एक रा ना। विश्वत-पर्गन वाबाटनव निद्वात वावजाधीन नटर, धरे জনাই তাহা ক্নিশ্চত গ আত্মান দৰ্শন मार्वाटनत निष्यत्र भारामधीन, वरे वनारे क्रिश व्हित्र । भा सारमक प्रकृत (गारमध क्षा जन्मन रहेता भारत जारतारम रकार के विषय जान सहरेग्ड भारत गालिया अपनि विकास निकारिक विक्रा अपनि क्रिक शादक मात्राक मन अवर्ग छन् ज छन ता मण्ड ताकाण हिराम के नियंत्र समर्थन सुर्वे अन सारन केनारणकरण, सीन अन क्ष कर्षा कम्मा वाकी ना वात वक बाहन कार में स्वाही में बेन के मार ख

ৰাৰার ভাৰেনাক, এবং আখার চকু সৰ-खहे अवाशादक वास्त्रान, क्षणना आफ-पर्नन जायास्त्र जाननाटण्यु क्रीसंश्चिमीन । चंड-व्यव बहुन स्पर्धा वहनका हरकड़ राम्या चित्र-তর, চকের ধেখা অপেকা ৰাত্মার দেখা कारता विश्व करा भटनके देनेथा करनेका. ত্তার প্রথার সহিত আত্ত্র-দর্শনের অনেকটা मार्ग जाट्ड। हटकड (नर्ग) সন্মুখ-স্থিত প্রাচীরকে আমরা প্র-তাঁক দেখিতেছি; আত্মার দেখা স্বতঃসিদ্ধ জ্ঞান,—আন্মাকে আমরা স্বতঃ উপলব্ধিঃ করিতেছি—আত্মারই দারা আত্মাকে উপ-লব্ধি করিতেছি। প্রতাক্ষ জ্ঞান এবং স্বতঃ দিশ্ব জ্ঞান এই তুই প্রকার জানের মণো সাদৃশ্য এই যে, উভয়ের কোনটিরই বিষয় অনুপস্থিত নহে, উভয়েরই বিষয় উভয়ের স্কিধানে উপস্থিত, দূই মন্ত চক্ত্র সলিবারেন উপস্থিত, আল্লা আলার সমিধানে উপ-স্থিত। প্রত্যক ভানের সহিত স্বত্র্যসদ ভয়ানের এইরূপ সাদৃশ্য আছে বলিয়া সতঃ-দিন্ত জান শাস্ত্ৰাদিতে অনেক ছলে প্ৰভাক ख्वांन वा मन्त्र शतिका निर्मिक रहेशादका কিন্তু প্ৰতাক জান এবং বজানিক জান উভয়ের मধ্যে বেধন সামূলী ক্ষায়ের, তেমনি श्रहें पर भारत । अन्यक स्वाद्भिक विषक সময়ে উপস্থিত হয় এবং সময়ে অনুপ্রিত हरू, **ार्ड** म्यास-यन्तितं **अर्थनं पात्रारम्** সমিধাৰে উপস্থিত কিন্তু কিয়ৎকাৰ পৰেই অনুপ্ৰিত হইবে, কিছু সতঃ দিছ জানেই विषय विवकासके आमादत मनिवादन जेन वित्र थान्दि। दायाने स्वादन महिष यक्तिक कात्मक करेत्रम द्वारा मार्कि केस्ट्रात ग्रह्मा बर्शकाकुर विविध সাদৃশা আছে ৰেলিয়া ক্তাৰিক আন चारमक साह्य मन्त्र मन्त्र

অভ এর পরশাস্ত্রীকে দর্শন করিবে ইহার পতঃসিদ জ্ঞানে আয়প্ত-কৰ্ম ক্ৰায়াৱ ভারেট দশ্ম করিবে ি মনকে নির্মাণ ক-রিকা শ্রদ্ধা ভক্তি এক প্রাতির সহিত পর-माञ्चारक पर्मन कतिएव। ४० प्रिष्ठ क्रांटन আমরা বেষণ আমাণের আঞ্জেক দোগ-তেছি —তেমনি আমাদের আজার অংশ্য প্রকার অভাবও দেখিতেছি; আন্তেদের মন কথনো বিষাদে আছেন, কথনো ভূকে নিজ-মান, কথনো আনিলে উৎফুড়; আনালের ·**আন্তা** কিবল স্থ-দুগ্ধ-গ্য় মানসাত্তক নিশ্ত বিভাপে হলী গ্ৰেছ ৷ প্ৰগ্ৰিন কালে আমার, আনাদের বাহার অনুর্বতা সাক্ষাৎ উপলব্ধি এ র এবং নেরী পাণ্ডিতার প্রণ-শ্বরূপে পরিপূর্ব মহান পর্বাস্থানে সাক্ষাৎ উপলব্ধি করি; এটারপে উল্লেক্ত ভাষরা প্রত্যক্ষ উপলার কুরিয়া ভাষাকে প্রয়া ভক্তি এবা প্রীতির সহিত প্রাণা করি—ভাগতে আলের ক্রম সমর্থন করি, ভাগার চল্লুর ক্ষাঞ্চের আমানের ক্ষান্তর ক্ষান্তর সন্ত অভাব-সমস্ত বেদন।-- ইথু ভ কলিয়া। দই। তথ্য তিনি প্রামানিগকে পাও ন। করেন-শান্তি-বারিতে তিনি আনার্টনর আল্লাচেক প্রিপ্লাভ করেন - অয়তেব ভিংম ভিংমারত করিয়া দেন। ত্রামাধর্ম ভাই বলিতেছেন

শির্মানে রকে প্রত্থানিস্থান্থনীশ্রা শোচাত মুক্ষান:। জুঠা বলা পশ্যতান্ত্রীশ্রমণ্য মহিসান্থিত বী্তশোকঃ।

"জীবাত্মা পরমাত্রার সহিত স্থান াজে নিমগ্র রহিয়া এবং দানভাবে মুহানান হইয়া দর্মনা শোক করিতে থাকে, কিন্তু যখন দর্মা দেবা ঈখরকে এবং তাঁহার মহিমাকে নে-খিতে পার, তথন তাহার আর লোক থাকে না ।" জীবাত্মা পরসাত্মার সহিত স্থান হকৈ অবস্থিতি করিতেছে ইয়ার আই কি প্ এক স্থান-বিত, তুই বস্তর এক্টিকে ভাড়িয়া বেমন, আর একটিকে প্রভাকে কর: সভুবে না, রক্ষকে ছাড়িয়া রক্ষ-নিঃহত আলা প্র-जिल्हा के के बार के किया के कि ছাড়িয়া জাবাস্থাকে এতাক হরা সভবে না তেন্**না জীবাস্থার** যাহা কিছু সম্দ্রটে প্রদ সংগ্রাকে এবং ভাঁষার প্রসাদকে জলেক। বরে। চিত্র**করের** চিত্র সোলবাঁ, কবিল ভ-दि छ।-सांभुषा, अवर भागगान भी छ-सभूमा (य-মন সভাবের সোলফোর অক্তালা জীবা-স্থার ভাষে-জেম মেইলপ প্রমার্কার জান-Cপ্রবেশ্র অভ্রাক । বা সভাবের মোন্দ্রাকে ছাতিয়া ধেষণ ড্রেকরের চিত্র-সেপ্র বিছুই নতে, দেইরূপ প্রযাভাতে ছাড়িয়া कोतातः । तक्षे नाम। सकादात त्रास्मरा খদি কোথাও না থাকে, ভবে চিত্রকরের চিত্র কভিত্ত কবিডা, এবং গায়কের গীত, সমস্তই বংশ হট্যা সায়: গার, স্বভাবের সৌন্দর্যের লাছত উচারা ধত গনিপ্ত-রূপে সংযুক্ত গরেক, সভাগ উহাল মন্ধ্যীৰত। গ্ৰাপ্ত হয় ; সেইদ্ৰপ পাষালের আত্মা পর**মাত্রার সহিত** যত প্র-গাড় রূপে সংশ্লেষ্ট থাকে, ভাষা ততই মজী-০৫। প্রাপ্ত হয়। আনাদের **উরার যে-অংশে** মজীৰ বৰান, আমা**দের প্রেম**্ ্য-তাং শে াদাৰ প্রেম, আমাদের আল্লা মে-**অংশে** ২০০০ অভ্যা, দেই অং**শে** তাহা প্রমান্তার অনুপ্রকাশ । এইরূপে জামরা পরনাজাকে জ্ঞানালোকের স্থ্য ক্রপে, জাত্মার জভাবের পতিমমাপ্তি ক্রপে, আলার প্রব এবং অপতি-বৰ্তনাং আশ্ৰয় রূপে, কতঃসিদ্ধ জ্ঞানে সাক্ষাৎ উপলার করে।

শদার বস্তু দেখিবা মারা আমবা যেমন তাহার, মোলারা মোহিত হট, পরনাজার দর্শন-সাত্তো আগবা, তাহার প্রতি দেই প্র আরু ই হট: তখন, আমাদের ক্রিন মন প্রেম্মেলিরা বোমল হইয়া যায়, তখন আ-মরা ভাহাকে আগ্রতে চিরকাল প্রেম-সন্ধন

55 THE # 188

বাঁদিরা রাখিতে ইভে: করি। কিন্তু পর-**যাত্মাকে** চির-আলিঙ্গন-পাশে বন্ধ করিয়া রাখিতে পারে--তেমন প্রেম কোথায় গু পর-মা**স্থা নি**ে েশন অসীম প্রেমের আকর **८७मन पाः द्क? डांशा**त ८५८ एत एकाछि অংশের .. ধেশ পাইলে আমরা দেবভাদি-भारत वर 👵 ९ ४ना हहेश घारे। शतभाषा যথন ভাছার অতুলন মহিমা এবং মধ্যয় সৌন্দর্যোর সহিত আমাদের আস্কাতে আবি-ভুতি হ'ন, তখন আমরা ভাষাকে ভাক্ত-ভরে প্রশান করি, তাঁছাতে ক্লয় সম্পণ ্কুরি, ভাঁহার অন্ত লাসাদ-বালিতে দেহ মন পবিব্যাকার, তখন ভারে আমাদের আনদের · সীমা **ধাকে না** : কিন্তু আমাদের স্বাস্থ্য আজা এক কালে কত আমন্দ ধারণ করিতে পারে ? উষার পবিত্র নিশাসে প্রাণিক্ পার্যক্রিয় **रहेश ७८५ व्यर**्मिह निश्वादमहें खेता जल-চিত হইয়া সায়। পান্যাল্লা আ্যাদিগকে দর্শন দিয়া আমাদের আত্মানে যত দ্র পূর্ণ করিবার হয় ভাছাকে পূর্ণ করেন, যে আত্মার যত দূর ধারণ-শক্তি তাহাকে তত দূর ফুতার্থ করেন, অবশেষে আমাদের দর্শন হইতে অ স্তব্দিত হ'ন ;—তথন আমরা কোণো ছিলান আঁর ,কাথায় আদিয়া পড়ি! দুর্ধার অন-র্শনে পুথিবীর যেরপে দশা হয়, পর্মাগ্রার অদর্শনে আত্মার গেইরূপ দল। হয়। गांभा यथन धन्नि हेन, जिथन, जाभारतत কি কর্তব্য 🖰 আমরা কি নিরাশ হইয়া পাড়িয়া थांकित १ भवायाधर्य बनिएउएइन 'পর্যা-ভাকে দৰ্শন কৰিৰে।" কিন্তু বখন_্ তিনি^{*} वामात्मत हक् रहेट्ड वर्षाहरू र'न, हुड्यन ष्याग्रजी कि कविष्ट 🕶 द्वाकाश्य वितर ७ देखन अवन अनः ममन किरिय । अन्त-बाहा-मृहे अख्य चयन द्वा वादार श्नमंत्री प्राप्त प्राप्त ক্লীপ্ত হয় 🖟 দশ্র-দান 🗫 রা পর্যাত্মার

না দেওয়া আন্টেদ্ধ কাৰ্যা; অগ্নি-উপাদ क्ता (यसन हेसने नरेटियान कविया मर्तिमाहे অগ্নিকে প্রজ্ঞানিত রাখে, সেইরূপ ঈশ্বরের গুণানুবাদ ভাবণ দ্বারা ঈশ্বর-ম্পৃহাকে সর্ববদা প্রদীপ্ত রাখ। কর্ত্তবা। তাহার পর শুক্ত বিষয়ের মনন করা কতুবা। অণুপ**হিত** বিষ-য়কে ভাবনারে উপস্থিত করিবার নাম মনন। পরমালা এখন আমাদের অন্তশ্চক্ষ হইতে গভার্মিত হইয়াছেন, ভগন ভালার कथा ल्यात्रा धार्यादवत स्वत्र विदास पर्यन-च्युष्ट तम कविहा हिटी. हरे छना उथन নির্ভন প্রদেশে গিয়া ঝামরা উতার মনন-কাৰ্য্যে প্ৰায়ত্ত হট: বাহাৰ দৰ্শন-বিরহে ভাঁহার চিন্তাই তাম'দের সভাগ্র হয়। আগ্রার উদ্দিশন इहेटली हिन्दा अस्याबन ३ए; এ: সেই চিয়ার প্রসাড়তা এবং একাপ্রতাই निष्धामन्। क्लाः। अत्रः एए३व व्यतिहेवर চিন্তা পুৰুন এন গ্ৰেকা সহকারে ঈশ্বরকে मरमागद्धा, वाध्वान'क्रत, क्रेश्व कथन, नाध-কেব আত্মতে পুনবা । আবিভূতি তুন। ত্যন ক্রচন্ড রোক্তের পর বার্তন সর্বার্ক্তিন শ্ব যেমন অভিকভ**র রমনীয়, প্রী**ম্মের **শ**ুরে দেবভার বর্ষণ থেমন অধিকতর রম্বীয়, বেই-রূপ পরশাস্থার সূত্রান তথন ভিত্তের হাঁপুরে ध्यालिका अधिक अने तेमनी ह इहें या उठिहा তথন ভক্তের কত্না আনন্দ; তিনি তথম धना धना इरेशा प्नकात्र नेपटात हदर्ग धन्छ 💓 ল, পুনর্বার তিনি ঈশরকে জনরে খরিয়া 🔞 क्षार्यन, श्नर्कात छोरात मूच छे ज्वन इम् कीशात मरनित्र कथ क्लाहे अक्न छ महाहित হইয়া সর্বত্তে মৃক্ত স্থীরণ যাতায়াত করিছে 🖮 थारक-छाहात नतीरत न्मृ छि हत्र, छाराब । জীবন জন্মের মৃত কৃতত্বতার্থ হয়।

হে পরমান্ত্রন্ধ। 'আবিরানীর্মানি' ভূবিত হাদয়ে আমানা ভোমানি ভালিভেছি ভূমি আমাদের নিকট আবিভু ত হও কিছা মার চরবে প্রনিপাত করিরা ত্মামরা জীবনকে
দার্থক করিব ত্মি আযাদের নিকট আবিভূত
হও। হে ভত্তের সর্বাধ ধন—ত্মি জামাদের নিকট প্রকাশিত হও। তোমার মধ্যে
আযাদের মধ্যে যেন মোহ-ব্যবধান না
থাকে; ভোমার দর্শন-লাভের জন্য আমরা
এখানে সমাগত হইয়াছি, তোমার চরবে
প্রাণিপাত করিতেহি, ভূমি ভোমার প্রাদব্রি বিতরণ করিয়া আমাদের সমস্ত কামনা

ওঁ একমেবাধিভায়ং।

मर्भन-गरहिछ।

বাংলা চোনার গ্রেকটা অবশ্যস্থাকী নির্মের স্থান অবিশাস্থ্য ।

নিস্থিলোস্ব্যাক্ত বলিতে প্রথম र्ष । ए जर्जन कावा- मिणत कमा-ष्टना-रावः भिन्म भक्तरक अक्षम श्रञ्ज वर्गाड-भाग काउस ने कि कड़ारम: कि अक हरे আৰশকে ৷ আৰু আন ভ্ৰানের সদলে কোন মতামত প্রকাশ দা করিছা প্রক্রিখনি रिवन मनुषा-ख्वारनव मुख्य के महत বিষ্কানের আধিপ্রভা সঞ্মাণ করা হায়, তবে ভাহাই ক এখানকার পকে খণেও न**्र १ ेजाङा यपि अत्य**क्षे रुश, उदद अद^{्र}-माधात्रगण्डः मकल ख्वारेनत ऋस्य ७-मकन নিয়ম চাপাইতে **না** যাওয়াই তো ভাল। ্কিছ, ভাতঃ, তাহা যথেপ্ত নহে। আমা-দের কার্টেগ্যাদ্ধারের জন্য এটি সংস্থাপন করা নিতান্ত-পক্ষেই ুত্মাবশ্যক (অতীৰ স্পান্তী-ক্ষরে এটি আমাদিগকে স্বীকার ক্রিতে হই-তেছে) নিতান্ত-পক্ষেই আবশ্যক যে, একা दिवन मन्तात छान नर किन्न नकन कानरे-कान यावरे ये नकन निष्ठात

বশতাপন। এ জন্য উপধে যে ইপ্লিড-টি প্रक्रिश्च रहेल (कि ना-एक क्रिन मसूया-জ্ঞানেবট স্কুখা কথা হউণ্) এ আন তা-शास्त्र मचा व व्हेट शादा ना । एत् व यान এথানকার এই পদ্ভিট বৈত্রচম্পন্তে **জিজ্ঞাস্ত্রাজ্ঞির মনের ভিত**াকেল একার বোঁকা থাকে, তবে আমরা ভাষাকে এই প্রামর্শ দিই ষে, প্রতিপক্ষ-বিদাতে চর লি,ল योश आगता हेिज्यूटर्स ८मथाहिशाहि- नाश **সকল-দ্রানের গকে**ই একন্তে অলুট্রাটা কি मा- এ विषक्ष डिग्न कार्णाम कि यहान लाहा आहवात स्थित-हिर्देख क्षेत्रियाच कालहा , (म्स्ता साम्यात्वी रूकित चात खबार्जात्वी क्षेत्-त्वान कामरे १४०२ १. शहराजा C जात किल्यद्व के अस्त वालक्ष **कर**्दन করিতে পারে গ ভিড়ি পাগনিই বনিভেছ-याथन्थे का । एउटवरी विशेष्टक एक. १५० ह প্রকারিশ্বরোধ্য কিয়ম মালন লেকের ক্রেক্স নিবিংগলে প্ৰস্থা। ফলাস্থান্ত্ৰত স্কল स्वारम्य मन्त्रक अञ्चल एक छटाछि-एकार्मा निधासा (तमने के निधम निज्ञ) नगर छ। म স্থাসন করিতে নিবি, ভাহা হইলেই তেন সমস্ত বিভাদ মিটিয়া গেল, ও মামানের প-कहें कित-उत दिशा अधारम तला जात শাক যে, আমাদের **এই ত্ত্ত** পূর্বাভেই कि किছू-चात गानिया लग्न मी (य. अकू).-জ্ঞান ছাড়া আর কোন একান জ্ঞান হাছে। এ তন্ত্রের কার্যারন্তের পক্ষে ওরপ মানিধা লওয়া আবশাকই হয় না—স্তরাং উহা অপ্রাদি**সিক। কিন্তু তা বলিয়া—া ভুক্ত** এ কথাটি বলিতে ছাড়ে না যে, খণ্ডা-জ্ঞান ব্যতাত যদি (বস্কত বা সম্ভবত) আনু-কোন প্রকার জ্ঞান পাকে, তবে তাহাু, ঐ-সকল নিচমের বশবর্তী ভিন্ন আর-কিছু ু হইতে পারে না; কারণ, ও-সকল নিয়ম क्कान-माद्वबहरै, এবং हिन्छा-माद्वबहरे, म्छावा-

ভার নিদান; উহাদিগকে ছাড়িয়া জ্ঞানও সম্ভব হয় না, চিস্তাও সম্ভব হয় না।

অসমতি-দোষের দায় অতিক্রমণ।

এই তন্ত্রের বিরুদ্ধে এই আর-একটি আপত্তি উপাপিত হইতে গাঙে খে, মনুষা-বৃদ্ধির অতীত শ্লিষ্যাকে মনুষা-বৃদ্ধির আয়-ত্তাধীন করিয়া প্রতিপন্ন করাতে—এ তন্ত্র-টি অসঞ্জ লেখে লিও হইয়াছে। এ ভন্ত ও-রূপ ক্রে দোমেই লিপ্ত নছে। এ ल्खु वंदन अहे (य, यनू (सात वृक्ति अणि तन ব্রিতে পারে যে, অনেক বিষয় বাহা ভাহার নিজের অগমা, তাহা আর-কোন উচ্চতর ব্দির গমা হইলেও ইইতে পারে; এজনা সে-সকল বিষয় বে, একান্তই বৃদ্ধির অগমা, সক্ষপতই বুদ্ধির অগম্য, তাহা নছে; তবে कि ना, अक्र फेक्क जब युक्ति - श्रांत शादक ; **শারণ, তাহা থে—আছেই আছে—**এরূপ সি-বাৰ আংগ ভাগে মানিয়া লওয়া এখানকার **অবিক্রিন্ত নহে। ৩-সকল** বিষয়, আমাদের নিজ'বৃদ্ধির, যদিও অগম্যা, তথাপি উছাবা ৰোধগৰোৱ কোটায় স্থান পাইবার উপযুক্ত। বায়ার্কের এই তন্তের মতে—বোধগমা-কোটার ভিতর তুইটি কুটুকি:—প্রথম, শ্লামাদের আপনাদের বুদ্ধির গন: ; দিতীয়, জাঁমাদের আপনাদের বুদ্ধির অগণা হইগাও (বস্তুতঃ বা সম্ভবতঃ) আৰু কোন-না কোন বৃদ্ধি গমা। এই দিজীয় কুটুরির সামগ্রী-গুলিকে আমরা সাক্ষাৎ সক্ষমে ঘূরিতে भाति ना वरहे, किन्छ এটा वृत्तिरू भाति दर, তাহারা বেষিগমা, কুমানাদের আপুন্টের युष्तित भगा ना इंडिक्-मधारमात्रा मुक्तित नगा । अहेकुन देनचा वाहेट उद्ध त्व, त्वाब-शमा काछात्र अंकास्टरत क्षेत्र यापक पूरेणि, किन (कांग्रेटिन अकि नाम काम काम काम दकारात क्षांज्यमा दक्षा मारा जा रहेटन अवस् तर्भ विदेशका, क्रांका एक इकरे जाया

নের আপনারের বেবাধাতীত চইকার কান্ত নার — তাহা একান্তই বোধাতীত—সরপতই বোধাতীত ; একান্ত বোধাতীতের আর-এক নাম স্ববিরোধী বা অনসত।

শসন্তি-দোষ আমাদের নহে কিন্ত আমাদের এতিপক-দিগের

💆 💆 সম্প্রতি দোষ গে. আমাদের নহে কিন্তু, আমাদের প্রতিপক্ষিত্রের, তাহার প্রমাণী এই যে, চিন্তনীয় এবং অচিন্তনীয় এ তুমের सत्या महत्राहत तमक्रभ नार्गनिक देव**लक्ष्या नि-**ৰ্দ্দিপ্ত হইয়া থাকে, তাহা এমনি **এক ইণ্টি-**ছাড়া ব্যাপার যে, ভাষা নৈয়ায়িক শ্রেণী-বিভাগের কোন নিয়মেরই প্রতি জক্ষেপ করে না, ও তাহার উৎপীড়ানে দর্শন-শাস্ত্র এ-যাবংকাল মরণাপন্ন **হইয়া ্রহিয়াছে** দার্শনিক পণ্ডিতেরা বস্তু-সকলকে (বস্তু-স্কু এখানে অতীৰ ব্যাপক অর্থে ব্যবহৃত – অর্থাৎ, জ্ঞানের বিষয়-মাত্রই এখানে বস্তা, দার্শনিক পণ্ডিতেরা বস্তু-সকলকে তুই শ্রেণীতে বি-ভাগ করিয়াছেন:; যে সকল বস্ত আমাদের আপনাদের চিন্তনীয় তাহারা একদিকৈ (এই সকল বস্তুকেই প্রকৃত রূপে চিস্তুনীয় গলিয়। ধরা হইয়াছে), আর, বে-সকল বন্ধ আমা-(मत जाभ**ना(**मत हिस्सीय ना **इ**हेगां जना কাহারো-না-কাহারো চিন্তনীয়-ইহারাএক-शिरक; **जाहांत्र गरं**श भारताल खांशीरक **ভাঁ**হারা একেবারেই অচিন্তনীয় বলিয়া্তির ্ৰুব্লিয়াছেন। ইহাতে ফল কি দাঁড়োই**তে**ছে ভাষী একবার দেখ; – যাহা শুদ্ধ কেবল আষাদের আপনাদের অচিন্তনীয় তাহা ঐকা- 🖔 স্থিক অচিন্তনাথের কোটায়-ত্র্পাৎ স্ববি-तारी अवः वर्ध-गृत्मात्र कोहारा—चारेक . পড়িয়া বাইতেছে। 'এটা নিঃসংশয় যে, षा्यादन ज्ञाननादनत चहिन्छनीत्र किन्छ पाँच কাহারো চিন্ধনীয় এরূপ তারের সঙ্গে আমীপ দের আপরাদের চিত্তনীয় উত্তের বরং কর

কটা সম্পর্ক আছে, কিন্তু তাহার সঙ্গে স্ববি-রোধী তত্ত্বের আদর্বেই কোন সম্পর্ক নাই; ইইলে হইবে কি—আমাদের তত্ত্ত ভাতারা সে দিকে আদর্বেই দৃক্পাত করেন না। তাহারা, চিন্তনীয় এবং স্বচিন্তনীয়, এ দুয়ের মধ্যে এমনি এক লক্ষণ জেদ আনিয়া দাঁড়ি করাইয়াছেন সে, তাহাকৈ লক্ষণ ভেদ না বলিসা লক্ষণ-সন্ধর বলিলেই ঠিক্ হয়; এই ভাম নিদ্ধান্ত-চি দর্শন-শাস্ত্রকে নিভান্তই বি-পদে ক্রেলিয়াছে, এমন কি কিয়ংকালের জন্য ভাহাকে সর্ব্বিদান্ত করিতেও ক্রাট করে নাই।

शक्तनरकरतम डेमार्चन।

মনে কর, কোন প্রকৃতিতত্ত্ব বিং—ভারা-श्रक अरह शाहरीम—बहे छुट्टे खकाद राज्य বৈৰেওনা কানে,ভারাত্মক বস্তু সকলকে নিশ্ন-নিখিত ছুই শ্রেণীতে বিভক্ত করিখেন ;— (১) ধানা খামাদের আপনাদের কর্ত্তক তেড় লনীয় (এই প্রকার বস্তকেই ভিনি এ, ৮০ লকে ভারাপ্রক ধলিয়। বার্সা করিলেন); (২) ধাহা ভোলনীয় বটে কিন্তু আমানের আ-প্রাদের কর্তৃক নছে: আরু মনে ভর ধ্রে, শেষোক্ত প্রকার বন্ধ সকলকে তিনি নিলি শেষে ভার-ধীন নামে সংগ্রন্ত করিলেন। ভাহা যদি হল, ভবে হিমানী ভার চীন, বে-হেতু তাহা আলাদের আপনাদের কর্ত্র अट्डाननोत्र अवरा - राहा अवरे त्या --हिमालत बॉमोर्ड बालमार्टनंत केईक भट्डा-লনীয় অভএর ভাহা হরপতঃ অভোলনীয়া জগতে, স্কুপতঃ অতেলনীয় কিছুই সে, नाहे, जाहा मुद्रन कविछ ना ;-- यिन छाहा প্রকৃতি-ভত্তবিং পতিতের বড় একটা- আহে আদেনা। সৌয মঙ্গল প্রভৃতি বার-সকল পর্মপতই অতোলনীয়। অতএব ফলে 🔻 👣 हैरिकट कर्ट - (व, के जकल अवस-ग्राश-দিগকে আম্রা সোম নকল বৃণ প্রস্তৃতি নাম দারা নিৰ্দেশ করিরী পাকি – হিমান্ত্র ভাহা-

দের অপেকা একটুও বেশী ভারাত্মক নহে।
চিন্তনীয় এবং অচিন্তনীয় এ-৮০০ব মধ্যে
দার্শনিক পণ্ডিতেরা যে-প্রকার প্রান্তের অবল ধারণ করিয়া পাকেন, ভালা হিলা ভারতে।
প্রকৃতি-বিজ্ঞান যদি এইপ্রকার অন্ত্রত করে।
বিভাগ কার্যো পাধারণতঃ রাভ ইইল, ভবে ভালা আল কোপাস থাকি লগা দেশন-শাল প্রথন সেখানে আছে — উলা সেইলান

কার সমস্ত তথা চন্দার নিয়ম সুমলনে বং ন এইড়েয়ি স্থিতি ক্ষতি গতে।

এই সৰ পেলেমাণের শতিকে, চিজার নিয়ম-সকল ভাতু পুলীলগণিগণাৰ নিকট এব लाकात तथा य यामली । व्हेशा क्रीप्राहेशायक । সাহা শুদ্ধ কেবল জাহাতের পাপনাতের অভিন্তনীয়, ভাহার সহিত্য এবাত্রক ভান-ত্র'র ব্যাপার-সকলকে একস্থে ভড়াইপা ভাঁছারা বলেন এই যে, এমন এনেক বিষয় আছে যাহারা এচান্ত-প্রকেট অভারনীয়ে. অগত এটি আমাদের না ভাবিলেই না যে. ভাহারা আছে; মুণাঁৎ কি না-এ সব ত ছ ভানী দিগের মতে – চিন্তার নিয়ম ছ-সাবে যে-বিষয়ের ভারনা হইতেই পারে না, ভাষার অভিডেই আমাদিগকে ভাবি-তেই হইবে। ভাঁচালা আমাদিগকে এমনি একটি বিষয় ভারিতে বলেন, যাহা ভাঁহারা পরক্ষণেই বলেন যে, তাঁচা ভাবনার অ-তীত। এক কথায়, যাহা "ভাবিতে পারা যায় না" বলেন, তাঁহাই ভাবিতে বলেন। ইহার অর্থ – তিন্তার নিয়ম-সকলকৈ লইয়া বালা-ক্রীভা-- সমস্ত শাস্ত্রটাকে লইয়া কৌ-হুক-পরিহাদ-- এ ভিন্ন আর কি হইতে পারে ? ইহার এক্টি দৃপ্তান্ত ;—এই একটি नित्रम निकांत्रिक इहेल (ध, आगता आगारपत ্রসাপ্নাদের সংস্ক-বহিভূতি কোন কিছুই ভাবিতে পারি না; কিন্তু এই কথাটর ধর্নি

बाबान इंट्रेंट्र ना इंट्रेंट्डे वामापिनटक तना इंडर्डिट (य. भागारमत जाननारमत मध्य विकृष तक बांगानिशतक जानित्जरे হইরে বাবং তাহা আমরা ভাবিয়া থাকি। ইহার বিতর অবশাই কিছু না-কিছু গম্দ আছে। देश वटला-निश्य याहा निकालिक हहेल ए का निश्च निरु नहा वरला यिन তাহা নিয়াই হুইল তবে তাহার বন্দন ছে-भन कतिहा भागता (कान किছू है जाविएक ममर्थ नहि। कि उद्यानीका यालनारणः क्षांत वलत्न भूका गक्ति-तर्भ ধরা-বাঁধা निह्न भातरभद्य वीक्ष्ठ र'न ना ; जामना-দের কথাকে ভাঁহারা জীপনারা বড়ই ভরা'ন; আপদাদের কথার সঙ্গে স্কাচুরি খেলিতেই তাঁহারা সবিশেষ তৎপর। 🔻

ভত্তানীদিগের অসহতি-দোব অপ্রতীকার্যা ৷ **८क्ट् इसर्डा घटन** कतिरक् शादेवन स्क् क्षे-त्य द्यानद्याल वा लक्क्न-मःकव योहाद क्था এক্তৰণ ধরিয়া বলা হইল, ভাছার ক্রতী-रुपद्भ भव बाट्ड। पेहान श्रेजीकादान পথ তিক্তিও নাই। তব্জানী বলিতে शास्त्रन त्य, "क्रेकालिक विकित्तीय" এই (४, केकि क्या, देशात जा एप (करन जामादनत অপিনাদের কর্তৃক অচিন্তনীয়, তাহার অধিক আর কিছুই নহে। "একান্তিত অচিন্তনীয়" শব্দের এ যা অর্থ করা 'ছইল—ইহাতে দাঁ-**ड़ाहेटउद्ध** (य, **डाह: "ঐकान्तिक चै**हिन्दनीय़" নয় – ভাহা শুধু কেবল আমাদের আপনা-त्मर चित्रकतीतः; **अज्ञल विष**रश्चत्र क्रिक অ্বরা ভারিতে না পারির কেন-সঞ্চলে चामता छार। जावित्छ नावि 🗡 योश मञ्जू দতাই/একাত্তিক অচিম্বনীয়, এক কথায়-যাহা প্ৰবিৰোধী, ভাষাৰই দ্বাতিও আৰম্ ভাবিতে পানি ৰা ; কিছু বাই প্ৰবিনোধী ৰতে ভাষাৰ অভিত সান্দা সকলে সকলে विश्री भागकात्मक कानस्याका गामरा

নামৰ খনি ভাৰিতে পাৰি, তব্ও তাহা সাম্র शतका मुचरक (बर्गाह करनात कान-त्र्याहत বলিয়া। অনামানে ভাবিতে পারি। কিন্ত একান্তিক অচিন্তনীয় এবং আমাদের আপ-नारनत-कर्क्क खिल्छनीय এ हुईि श्रुपक লক্ষণাক্রান্ত বিষয়কে এক করিয়া কেলা কি देख्य कार्ता १ फेंड दब्रद मत्या ग्लाहेरे यथन ক্লকণ-ভেদ রহিয়াছে, আর দে লক্ষণ-ভেদ स्थन अर्थ-पूर्व, जिथन तम वाय-ि काछिया কেলিয়া ভাষা এবং ভাষকে বিভান্ত করিয়া তুলিবার অর্থ কি দ সাম্ব্য আমাদের আপনা-দের অচিন্তনায় হইয়াও অনোর চিন্তনীয়, তাহা তো চিত্তনারের কোষ্টাতেই স্থান পাই-বার উপযুক্ত ; কারণ কোন-একটি বস্তু যদি কোন সুত্রে চিন্তনীয় হয় (তাহাকে আমরা অন্যের চিন্তুনীয় বলিয়া চিন্তা করিতে পারি---এ সূত্রেও যদি তাই। আমাদের চিন্তনীয় হয়) তবে সেই সূত্রে ভাহা চিন্তনীয়ের কোইয়ে জবশাই স্থান পাইতে পারে। অচিন্তনীয়ই প্রকৃতরূপে অচিন্তনীয় এবং পুর্বেই বালয়াছি—ভাষার আর এক নাম স্ববিরোধী।

ैिकांत निषय क्यानात नियदन शतिगढ ।

প্নশ্চ "যে বিষয়ের ভাবনা হইতেই
পারে না, ভাহা-ভাবিতেই হইবে" এ কথাচির অন্দতি-দোম যথন চক্ষে অসুলি দিয়া
দেখাইয়া দেওয়া হর, তথন তভ্জ্ঞানা বেরূপে স্থাক্ষ-সমর্থন করেন ভাষা এই;—
ভারতেক যথন থুব কসাক্ষা করেয়া ধরা যার,
তথন তিনি এই বলেন যে, 'যায়া ভাবনা করা
যার না' এই কৈ কথা বলা হইন, এইখানেই
ভাবনা-শব্দের বা প্রকৃতি লাকই ভাষা।
কিন্ত ভাষা পার এই কে কথাটি বলা হয়।
কিন্ত ভাষা পার এই কে কথাটি বলা হয়।
বিন্ত ভাষা পার এই কে কথাটি বলা হয়।
শব্দের অর্থ—কর্মনা, বিন্তন্ত্রের সম্প্রেক্তি থাড়া করা। ভাষা এই

वाकाणि काशात भरमात्र म् उन अवि खादतन धामादम्ब मृष्टि-दक्षा चानव्यन कविद्यु है ; পূর্বেক-আগরা মনে ক্রিয়াছিলাম যে, ভিডার निश्चन-मकटलंबे निश्चृष्ट यन्त्र विश्व केविही CF-খাইবার জনা তিনি আ্যানিগকে আহ্বান করিলাছেন, এখন দেখিতেছি—তাহা নংখ্ শুধু কেবল কল্পনার নিয়ম-গড়লের মর্ম্ম উদ্ধা ণ্ম করাই ভাঁছার উদ্দেশ। এটি भूकी द्विर वाशांपिन क्या हो । यन। हो ७, ভাগা হইলে কোন বাতাপুৰাদেৱই প্ৰয়োজন হইত না, ভাষা হই:ল এতিপ্ৰেক্র সকল कथि कानवा सार्वादम सिटबासीया को ।-ए कि। जिल्ल, मा जालाइ, इ. मा अटल, उपविद्व छोरा तुक्रारक्षा वेशा व्यन्तार्थ । प्रद्राविका वे আলা গোড়া বলিধা আধিতেছেন যে,তিনি -কল্পনার নতে কিন্তু সালিবাত্তর—মনোরখের শহে চিন্ত ।দক্ষর – (না.ম-লক্ষ বির্ভ[®]ক্ষি-তেত্তেন ; অভাগা, হয় ভারেরে মূচনা-পার সাণ্যোধা, লয় বেডাভি, লয় সাহা ভিান भागा। १४८क दमशास्टबन विश्वशास्त्रम, जास पार्थानियदक ना दन्याहेंग्रा, किक लाद धनांत रिष्ट्र-पाश वागता स्तीयटक छाट् सा--छारारे भागानिभटक स्थाई८७८६न । ऐश् আমানিগকে শিখাইবার কোনী ত্রয়োজন নাই বে, যাহা স্পানাদের কপ্পনার খতীত ভাহা আমানের চিন্তার গমা হইতেও পারে। वह मध्य भडालेक यामना प्रथलनीत-ताद् निकितादम निद्यासारी कतिदर्शस्य किन्छ रेही (नत मूर्थ यथन जागता छनि (य, याहा আমরা আদুবেই ভাবিতে পারি না—তাহা আছে ইহা আমরা ভাবিতে পালি; ইহা अनिवासाख आगारनद कान स्विचारक मध-महाक्छ रहेशा छत्। वित्मव কে ভে कान गटनाविखानीक लका कतिया अ नकल क्था वना हरेएउट ना; ध-मकन क्था तकन-गटनाविक्ञानीत मचदकर थाएँ ; भा-

মাদের কথার, লক্ষ্য সমস্ত ভারতার প্রতি যত—নিশেষ বিশেষ ভারতারনিগের ভারত ভাত নহে। তিন্তানার এবং আচ্চানীয় ব দুয়ের লক্ষণ-সংকর স্টাইবার অপরচার ক্

ें धाउड किसोत निवास-क्कंटल प्रमान का प्रताहत स्वाद सी।

্ত তম্ভ ডিম্ভাত নিয়ম সকলতে লগতে वाला आधः काम् मा। এएस मध्य मध्य मान भारत करा**रे** मूल बान, करर ग्रह, राज वाहार कहे रहे दिसा प्रायम । जो एक प्राप्त कारित भारते हैं। साथ देश कार्य एक शामा शार्षके का नाम । गामणका हो। रहात भएना विकास । स्थान २ उत्र १८८ ॥ ज 医中国 的最级是全部的建筑中的人。这种是一个 ভক্ষৰ কৰম ধাৰ্ম এ উন্তৰ্গ মিলনু-भक्तर्क काम क्रिया श्राप्तित हर कर्न कों छर के इसेवाज बनार, तान 'को साम, पाता, আহুতে এইজন কারণে ঐতিপ্র বার কে, माधाद त्रकृत प्रहेतात्र , कताहे जाशाहरू পলে। ইয়া এইএপ শিক্ষা কে সে ব্যৱর केल हार रहेगारे वर्षे बसूता क्रांतिक भारत, শলোবজানের মানি এ-এল চৰজা দেয় मा ८५, गुष्कत भूमण्डाका । शक्र १क्व भूपण धाराज भारत এवः छारव। क्षांच्छाहे बरे (य, यह। १५ अलिती छ।।-ভেই আৰম্প্রাকিরে।

भ ध्व वामाक्षेत्रामत लाङ्गत एक-मन्त्रणः क क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट

আর-আর তন্ত্র-সকল অনেক বিষ্ণেই
পরস্পর পরস্পরকে শ্রন্থন করেও আনা
দের এইটি ধারণা যে, বর্তুমান তন্ত্র সকলবিষয়েই অপগুনীয়। এ তন্ত্রের মনো এক ত্রি
পক্ষেই যদি খন্তন-যোগা কিছু থাকে, তবে
দেনটি এই তন্ত্রের মূল দিদ্ধান্ত। একটিমাত্র লক্ষ্য-হানের প্রতি সমস্ত প্রতিবাদের

শর-সন্ধান করিতে পারা তত্ততাকে কেন স্বিধার কথা নছে। এ তন্ত কানার আর আর সিদ্ধান্ত-গুলিকেও ষেন্ত্রনার কানার আর আর সিদ্ধান্ত-গুলিকেও ফোন—হুণ্ডনীয় কান্ত্রা জানে; কিন্তু ইহার প্রতি যদি-বা কাহারো কোন-প্রকার সন্দেহ কে, তথাপি এ বিহুয়ে আর কাহারো সন্দেহ থাকিতে পাবে না কে, কি মুল সিদ্ধান্তটিই এক যা কেবল বিবাদ্ধান্ত মূল-সূত্র সকলকে সংক্ষিপ্ত ক্রিয়াছে বলিয়া—তাহাদিগকে একেবারেই উন্মুলিত না করুক্ অতীব অল্পের মধ্যে সংকৃচিত করিয়াছে বলিয়া—বিনীত-ভাবে আপনাকে মান্ত্রিত মনে করে।

উপক্রমণিকার উপসংহার।

বৰ্ত্তমান তম্ৰ কেমন করিয়া মূলে (অর্থাৎ নিতান্ত পৌড়ার কথায়) পৌছিতে কৃতকার্য্য रहेशारक, अकात विवतन अमर्गन कतिया এই উপক্রমবিকা দাস করা যাইতেছে। কারণ, মূল কথাটিতে কেমন করিয়া পৌ-हारना इहेशारक अनि वृतिरं भातिरलह মূল-কথাটি ভাৰ করিয়া বুঝিতে পারা যা-ইৰে। কৰে, বিজ্ঞান্ত ব্যক্তি এটি মতক্ষণ না বুঝিতে পারিতেছেন, ততক্ষণ হয় তো মুল-কথাটি ভাঁহার নিকট যদৃত্তা-সভ্তুত ৰানিয়া প্ৰতিভাত হইবে, হয় তে৷ ভাহাৰ मत्न अर्देतल अंकहे। स्मान्य वाकिया याहित (व, ब्रून कथारि शरबाक् निव ना हरेश जना-বিৰ ছইলেও ছইতে পাৱিত। কিন্তু কেমৰ कित्रा के मून-कथा छिटक लिकारना रहे-হাছে, ইহা হখন জিনি শশুভিরণে দেশিতে পাইবেৰ, তখন ভাষার লমত সংশাই ৪৪-क्रमार जितारिक रहेशा वारेत : प्रथम किमि (शिवरत तर, क्याज़ात कथा **विकारिक** किहूरे रहेएक नारत ना ।

্ৰ-মূলে উত্তীৰ চইবার প্রস্তুতি।

शूटक (यसन वना इंडेशाइ-केन्डिवरे किलारी असे असम अके विवास अस्टिक् জহাকে জ্ঞানতত্ত্বে প্ৰবেশ পূৰ্বকৈ তাহার চন্ত্ৰয় শীমায় উত্তীৰ্ণ না হওয়া পৰ্যান্ত তা-হাতে লাগিয়া থাকিতে হইবে। এই খণ্ডের ষেটি আদান্ত ব্যাপী দৰ্মময় প্ৰশ্ন, দেটি এই বে, জ্ঞান কি প কিন্তু এ প্রশ্নটি, ইহার বর্ত্ত-মান আকারে, অভিশয় ভ্রান্তিজনক, তুরায়ত্ত, এবং তুর্বেরাধা। আসরা উহাকে ধরিতে ছুঁতে পাই না। কোখায় যে উহার মৃষ্টি-স্থান তাহার ঠিকানা পাই না। উহাতে ছোটো বা বড় কোন-প্রকার ব্যক্ত অব-য়ৰ নাই। এই সূতার পুঁটুলির আরম্ভ ভান কোথায়—'**খাই**' কোথায় ? কি সূতার পুঁটুলি, না পাথরের গোলা ? কারণ, যদি পাথ**লের পোলা হয়, তবে ই**ছার জটা ছাড়াই**তে বাওয়া পণ্ড**ম মাত্র। কামানের গোলার বার্চাড়ানো বসুযোর অনুনীর কর্ম নহে। তা ने हें। সূতার-ই भूँ हेनि ; তবে कि ना-हेशी याहे शूँ विशे . পাওয়া স্কঠিন; তাহা বে-**পর্যান্ত** না খুঁ-জিয়া পাওয়া যাইতেছে দে-পর্যাৰ্ পুঁটুলি-িরুজটা ছাড়ানে। অসাধ্য ব্যাপার। আর কিছু হউক্ স্নার লা হউক, এইটি বিলেষ করিয়া দেখা উচিত যে, ঐ পুঁটুলির উপার আর বেন পুঁটুলি অভানো না হয় 🗯 এ বিষয়টিতে লোকের মনোগোগ অতি इंहा बागता शूर्व्स धन शास है कि करि-शाहि। चनकात हाजिशा नाम क्यान क्यान যদিচ আমরা কেষিতে পাইমাছি ধ্য, স্মান কি ইয়াই কর্মজানের সোড়ার ক্রা, জর থালি, জ্ঞান ক্লিএই, অস্পাই, ক্যোল-মেলে, व्यव शालक शास्त्र क्रिया द्वापात क्रमा कि. हर्नेका शहरण अपना अवस्थ

করিয়া বিভাগ করা কঠিন নিহে পরস্ত সেই থগ্রংশ-গুলির মধ্যে কোন্টি প্রকৃত-প্রক মূলাংশ—অর্থাৎ গোড়ার কর্ণা—ভাহাই শুন্ কিয়া পাওয়া কঠিন।

প্রেটো গোড়ার কথা পৃথিয়া পান নাই। क्षित्वात मदक्विम् औ काहित्ना षावेक পডিয়া গিয়াছিলেন। উহার মধ্যে কোন্ খানটা যে বাঠিন, তাহা সজেটিস্ স্পার দে-থিতে পাইয়াছিলেন; কিন্তু তাহার মীমাংস। থে কিরপে হইতে পারে ভাহ। তিনি দে-পিতে পা'ন নাই, অন্ততঃ তাহা তিনি ্চামাও প্রকাশ করিয়া বলেন নাই। তিনি শুশ্ব করিলেন ''জ্ঞান' কি ?'' শিষা উত্তর করিলেন 'জানিতি এবং আর আর বিষয় যাহ৷ আমরা এতক্ষণ ধরিয়া বলা-কহা করি-তেছি, তাহাই জ্ঞান।" ইহার উত্তরে সক্রে-টিস্ যাহা বলিলেন তাহা দিব: লগ্ধ-সঙ্গত ও ঠিক্ সক্রেটি সেরই মতে।—বদিচ তাহা ফল-দায়ক নহে। সজেটিম্বলিলেন "খুব বদা-माणा-मरकारत, थूर मूख-शरस, वनिए कि – রাজ্-রাজ্জার মতে। তুনি উত্তর -প্রদান করিলে। শুদ্ধ কেবল একটি বস্তু আমি ভো-মার নিকট, যাজ্ঞা করিলাম—জুনি কৃত না বস্ত আমাকে প্রদান করিলে ৷ আর, আমার মতো একজন বুড়া মুর্থের প্রতি তোনার এই যে-• ক্লাডরণ, এ-কেই আমি বলি একত মহত্ব।" এই মিষ্ট তৃৎ সনার শিবা কিছু অ-প্রতিজ হইলেন; তখন সক্রেটিশ্ আপনার মর্ম কথাটি খুলিয়া বলিলেন। তিনি বলি-.লেন "বামার মন্মটি যে কি তাহা তুক্তি ধরিতে পার নাই; জ্ঞানের বিষয় क्रिक তাহা আমি তোমাকে কিজালা করি নাই, खान अग्र१ कि - देश रे क्वतन आहि col-गाटक विकास के विद्यादि ।'' और सार्थाति ৰদিও ঠিক্ লক্ষা-ছান্তির প্রতি **অনুসী** নি-द्रिन क्रिडिट्ड-क्रमानि हेराउ क्रिक

কোন কল দৰ্শিতেছে না; কারণ, এদিকে যখন — গুলপিয়া মিলিয়া কিছোলা প্রশানির ঘত কাছ ঘেঁদিয়া পারেন (শ্ব গে বেলী কাছ ঘেঁদিয়া তাহা নহে) তর্ক বিতক তালাই তে ছেন, ওদিকে তখন—প্রশ্নটি মানে হবতে অন্তঃসলিলা নদীর ন্যায় পুলিবী-গরের ভলাইয়া বিয়াছে; পুনর্বার যদিও তাহা সময়ে সময়ে প্রেটোর প্রাক্তন্ম কেলা দেশা দিতে উটিলাহে প্রেটোর প্রাক্তন্ম কালের জনা— মল্ল এনট্ ইদারায় দেখা দিয়া তৎক্ষণা অমনি পালানে পুনইটবেশ করিয়াতে। প্রেটো ভল্লভানের প্রেটা ভল্লভানের করে প্রিটা প্রিন নাই—শস্যাতর কোণ্ডার প্রত্নাশ নাই।

গোঢ়ার কগাব অওস্থান।

অভএব জান কি-এ প্রবের মীমাণ্যা আমাদের আপনাদের ছারা কি পর্যান্ত হই তে পারে তাহা একবার চেটা করিয়া ক্রেখা যা'ক্। পূৰ্বে যাহা বৰিয়াছি—ঐ গুৰ-টির্নই মীমাংসা এই সংহিতার প্রথম খণ্ডের মুখ্য কাষ্য। তবেঁ কেন উহাতে আ-মরা একেবারেই কোমর বাঁদিয়া প্ররক্ত না হই। জিজাম ব্যক্তি মনে করিতে পারেন যে, যদি উহা অপেকা সহজ প্রশ্ন খুঁজিয়া পাওয়া যায়, তবে তাহাকে দিয়াই অন্তের গোড়া পত্ন করা প্রেয়—ইহাতে আর ভুল নাই, কিন্তু যতক্ষণ পর্যন্ত তাহা খুঁলিরী পাওয়া না যাইতেছে, ততক্ষণ যাহা আমা-দের হস্তাভান্তরে আছে ভাহাকে দিয়াই আপাততঃ কাৰ্ষা চা**লাইলে ভাল** হঁয়। কিন্তু ভাহা যদি করা যায় তবে উত্ত-জ্ঞান একটি ৰদুন্ধা-মূলক কভি হইয়া উঠে; তাহা এমনি একটি জন্তা হইয়া উঠে যাহার মূল-পত্তন वर्ष्ट्रनोप्त नियर्थे वर्षा निरं नियर्थ তত্বালোচকের হবিধা এবং স্বেচ্ছার অনুবর্তী क्रिके घरेना उक्कारनत याथार्था এवः या-राष्ट्रात भीक निकास्ट रानिकनक । उरा

७ इ.खार्टना जिल्हान नकरनत विरम्ब इने हे कटत-- अहर्यक्क, म्यापा चलक्रत करत-ভাষাদের বাহা আইইব হইতে তাহাদের প্রা-পৰে বিষ্ঠা কৰে। অত্এব জ্ঞান কি - এ প্রাকে আপাততঃ ঠেলিয়া রাধিবার মুখ্য ক্লারণ ভাহার কটিলভা নতে, আর, নৃতন একটা প্রাথ আনিবার কনা আমরা বে বাবা হইতেছি, তাহার মুখ্য কারণ তা-होते. मह्ब-भवाका नटहा अवनी, शू-ৰ্ব্যেক্ত অপুকাহত জাটল, এবং শেৰোক্ত অপেক্ষত সংশ্ব হইবারই কথা। কিন্তু (म वित्वजना त्रींग क्यं ; स वित्वजनायं ক্ষ্মির। পূর্ব-প্রয়টিকে ঠিলিরা রাখিতে এক সুতন একটা প্রক্রের অবেষণে প্রবৃত ছাইছে অঞ্জুতা বাধ্য নহি। স্বেজহা এবং অবিশাহ পাঁডিকে নহে কিছু, অগত্যা, যদি না আমরা এরপ করিতে শাধ্য হই, তবে আমা-থের কার্যালপদাতি যদৃচ্ছা-মূলক হইবে। কিন্তু যদি শাৰাদের এই তত্তভালকে যথার্থ সত্য विनिहा क्षित्रामन खबर बाहन क्रिएक हर, তবে তাহাকে ধরুপ হইতে-দেওয়া হইতে পারে না ় তত্ত্বজ্ঞান-ক্ষেত্রে কোন ব্যক্তিই धमन (कान वल्लाक नजा विनाउ पश्कादी मृद्रह, याहारक मेठा विनिद्राईना-काविरल ७ मा-ছাৰা যাইকে পারে। তত্ত্তান-ক্ষেত্র কেইট্র এমন একটিও পদ্ধতি অবস্থন করিতে অধিকারী মহে—যাহার পরিবর্তে আর কোন প্রমাতি আবলম্বন করিলেও করা যাইতে ুণারে |

ভান কি এইটই খোড়ার প্রস্ন হাইডে নাগারে কেন ।
কেন তেই আন্তরা — জ্ঞান কি — এই প্রক প্রক্রারেই হাজে লাইড়া তাহার আলোচনায় প্রায়ত হাইডে পারিতেছি কা । এই তাহার বাবেই বাইন নে, প্রস্নাট বোহানা কাছে। ঐ প্রস্তি উপন কে আভারে ক ভারিষ্ক সাহত, ভারতে ভারতে অভার ক ভারতে ভারতে

(कार्य केवार अश्रीकारहता के पटक बाकर रहेटक साहब नान है किहा चार्य लक्ष्मा खाक खिराह वर्ष अकारिक । धरे कना छिरात वर्ष-बान जाकादत छैहा कालादत। त्वाध-भेना इहै-बात सरहा करवार खेश स्ट्रेस्ट बाबाबि-गरें जुनजा किविश मांड़ाहेट रहेट्डर ; কাৰণ, যাহা বুঝা যায় না—তাহা লইয়া কিছু-স্থার অন্তেশালন চলিতে পারে না। অভএব ঐ প্রশ্নটিকে আপাভতঃ পরিত্যাগ কর। আ-কাদের স্বেচ্ছার কার্য্য নহে – তাহা নিতান্তই অনিবার্ধা 👢 তেমনি আবার, ভাহার খলে নৃতন একটি প্রহের অবতারণা তথু-ষে-কেবল আমাদের স্থবিধার জন্য বরা—তাহা নহে; তাহা না করিলে নয় বলিয়াই তাহা করা। তাহা ভধু-্যে কেবন আমাদের প্রার্থনীয় তাহা নহে, তাহা একেবারেই অল্জ্বনার। पर्यन-माख्रक कंटन्रीभवाशी इहेट**ः हरेल** তাহার যেমনটি হওটা চাই, আমাদের আ-লোচনা-পদ্ধতি ঠিখু দেইরূপ; ভাছার " कान कारन त्यांचा-मूनक किंदूर नारे-छारा वारमाशास व्यवस्थात निवर्षत वर्गको।

এ প্রসের মধ্যে ছাইট্টু প্রায় প্রজ্ঞ রাইরাছে।

বোঁ প্রহা আমারা অব্যেহণ করিতে ছি ডাই।

—জ্ঞান কি—এই প্রমের সহিত অবশাই কোননা কোন সম্পর্ক-পূর্য়ে আবদ্ধা; কারণ, অম্পাইট হউক আর বাহাই হউক—জ্ঞান কি—
ইহাই আমানের প্রথম থণ্ডের মূল কার।
ন্তন প্রশ্নটি নৃতন কিছুই নহে, তাহা ঐ ইট্টু
প্রশানিকর উপযোগী সম্পার প্রব্দ রাধ-প্রমা মুর্ভান্তর। বির-চিত্তে নির্বেটনা
হরিয়া দেখিলে দেখিতে পাওয়া মাইরে ক্র
জানাহি—ইহার স্বর্ণ মুর্ভান্তর পার্থিক করিব প্রস্কর্ণ করিছে পারে
ক্রান্তর প্রস্কর্ণ করিছে পারে
ক্রান্তর প্রস্কর্ণ করিছে সাম্বর্ণ করিব প্রস্কর্ণ করিছে পারে
ক্রান্তর প্রস্কর্ণ করিছে সাম্বর্ণ স্বর্ণ মাইরে ক্রিটিকরারীয়া ক্রিটিকরার ক্রিটিকরারীয়া ক্রিট

ঐ হই প্রমের কোন্ট প্রাসঙ্গি। জ্ঞান কি—এই চুর্বেল্য প্রশৃটি নিম্ন-লিখিত ভূইটি সহন্ধ-বোধা প্রাণো বিভক্ত হটল; প্রথম, জ্ঞান কত প্রকার ? দিতীয়. শকল জাতীয়'**ড্লানের মধ্যে এক অ**ভিন্ন অব≠ য়া কি? এতো ছইল; এখন দেখিতে ফ্টবে— के प्रदेषि कारबाद गरता कान्षि वामारमञ् अथन्तात क्षेत्र—त्तान्ति छग्न-**उटस्**त निकंडे-ত্য প্রাশ্ন ? হর এ-টি — ন্য় ও টি — দুরের ভকটি-না একটি তাহাতে আর ভুলু নাই; বেননা छ ठीय कोन लास्यद मङ्गामन बाह्य । द्वान्ति তবে আমাদের এথানকার প্রকৃত প্রস্তা ? ইতিপুরের আমবা দেখিয়াছি যে, সরে**টি**শের भिया न्रम' विनया कित्यां दितन् (य, धय-गिष्टि । अहम अहम अहम । अहम जिल् অতিরে ভাষার শিষ্যের স্থুন ভাঙিয়া দিলেন; कातन, क बुड्डाटनव निकृते आगता किंकू-कांब ज छेलदादम् अर्थो नहित्य, छान-श्वविष्ठ ইতিহান বাকিবৰ প্রভৃতি নানা-শাখায় বি-ভক্ত। দিত্তীর প্রশ্নটিই তবে তত্তভানৈর প্র-कुठ शत्र -यमिष्ठ मृद्यक्षिम तम विषयात कान कां जान चाम्निकारक श्रामन करतन नाहै। धरे कि कि कारने मुन्तिन मा है होत रात न व विक्र नाहित अहै अदिन छक्त अवस्तित अक्साब ज्ञानसीत काल गा उपवास्तित अकडि केचान-वात मास्य स्वाम व्यतान धरे त, जारा भू जिला राजन समित रेशात शुर्ल जात अकृति का

क्ट्रेंट्ड शामि जिल्ला के जार है । जार है । জ্ঞানের একমাত্র অদিতীয় বঁকণ সাধারণ मना-कृष्य अहेतु गः थह-सान वास्त्र किहू আছে কি? আমাদের অনুসন্ধানের ফল কা র্যাতঃ কিরূপ দাঁড়ায়,তাহারই উপর এপ্রশ্নের মীমাংসা নির্ভৱ করিতেছে। যদি ওরূপ <u>কোন সাধারণ মধ্য-ভূমি না থাকে,</u> কিন্তা যদি কোথাও তাহা খুঁজিয়া পাওয়ালা যায়, তবে তত্তভানের অভিত্বই অসত্তব ; কিন্তু যদি ঐরপ একটি কেন্দ্র বা দাধারণ লক্ষণ খুঁজয়াপাওয়া অসভব না হল এবং লেহা খুঁজিয়া পাওয়া যায়,তবে তত্ত**্তান নিৰ্কিছে** বর্তিরা থাকিতে পারে, এবং তাহার মূল প্রশ্নের উত্তব হইতে যত্তিছু ফল পোহন করিবার আছে তাহা দোহন করিয়। আপনার ভাঞার যথেজা পূলণ করিতে পারে। ভানের এরপ একটি কেন্দ্রখন আছে ইহার প্রমাণ এই যে, এরপ একটি কেব্রস্থান খুঁজিয়। পাওয়া গিয়াছে।

জানেব অবশাস্থাবী গদ্ধ ভত্তভানের উত্থান ছার।

আনাদের সকল জ্ঞানেরই অন্তা-হিত गांधातन (कल्फ, नांधांत्रन लक्कन, मा नांधातन অবয়ৰ অবশ্যু এইরূপ একটি মুখ্য উপাদান— यादा ब्लान-गार्डावर शक्क वर्गाष्ट्रांनी। ज्यवा याश अकरें कथा—जुहा अहेकम अकति मुथा छिलानान (य, (य-र्कान ख्लानहे रुखेक ना दकन—तम छ्हान इहेट एम छनामानि অপষ্ঠ হইলেই সে জ্ঞানের নির্দান-প্রাপ্তি व्यन्ध्यनीय, এवः एवं भराख ना रमहे वर्णकान উপাদানটি তাতাকে ফিরাইয়া দেওয়া হয়, দে পরাস্ত তাহার পুনকদীপন একান্তই অন্ত ছব। তত্ত্তানের মূল প্রশোর উত্তর-সরূপ औरत प्रम-केल्लिन-यास वागामिशतक পুঁজিয়া থাহির করিতে ছইবে, তাহাতে बैकर् नकर्गाकास (वर्णाद अकार सदमाने खारी) रहेट उटे रहेर्र, रकनना स्मक्तभ ना

ইয়াৰ তাল গ্ৰহণান সভীতাৰ নায় আৰুণ একটি কঠেটে ফুলিযুক্ত উত্তের কোন কালেই আসিবে না সেরপ নাত্ইলে তালা সক্ল ভোনের একনার অধিতীয় ক্লে-বান দাড়া-ইবে না। পরীকা আমাজে মূল সিদ্ধা-কির যাথাব্যের পোষকত। ক্রিডে পাবে, কিয় অল্লান্ডাবী জানিই তালার যাথাথা সংবাপন করিতে পাবে।

ক্ল প্রায়ের প্রায়ের।

তবি প্রত্তানের মল প্রায়, নিকটতন প্রায়,
তবে এই ক্লেন্ড্র বিভিন্ন জাতীয় জ্ঞানেব

ক্ষো এমন ক্রুটি অবয়ন কি, যাহা একমাত্র

ক্ষানিতীয়, অপলিবর্তনীয়, এবং বাহাকে চাড়িয়া

ক্ষানিতীয় ক্লেন্ড্রনীয়ে না। এমন-একটি

ক্ষানিত প্রান্তন কলে
প্রিক্তিনের মধ্যে ক্লিনিবর্তিত থাকে; সকল
জ্ঞানের ক্রেনিহিত একমাত্র অপরিবর্তনীয়
ভক্ত কি?

এই প্রলের উদ্ভর তবজানের একমাত্র উতান দার এবং ভাহা কইয়াই এই সংহিতাব প্রথম দিয়াত্ত।

উপরে বাহা বলা হইল তাহাই তত্ত্ব-জ্ঞানের প্রথম প্রথম; এবং প্রথম প্রের তা ভিন্ন আর কিছুই ইইতে পারে না; আর, এই প্রথমের উত্তর তত্ত্ত্জানের একমার উপান-ভার। প্রথম সিদ্ধান্তে সেই উত্তর্গি প্রদত্ত হইরাছে, এবং তাহাত্তেই প্রথম সিদ্ধান্তের উৎপত্তি এবং পর্যবস্থা।

खेलक्यिका मगास।

ক্রেম**শং**।

সম্ভ সংকার।

বিশ্বত কৰিছি স্থাব্যে প্ৰাণ । সংগ্ৰামেৰ বিশ্বত আহিছ বুলি নাই আহি বেচনাই নাই আহছ বিশ্বত নাই ভাষা কৰাৰ সংগ্ৰাম কৰাৰ কি নাম উলি

के को स्थान के स्था के स्थान क শিকিনীল স্তরাং ইবা মৃত। वाल विक रिष्युगमारणा भटकं और दर्गाव नि-ভালে অমুসক নছে া বছদিন হইতে দেখা খাঁর হৈ এই স্যাক স্ময়োচিত পরিবর্তনের पढ़ें किरमारी। यकि भात सिंह निन्धार ভাৰে চলে ভবে ভবিষাতে हेशात चीत्र' ति(भेष वर्गाना थाकिरवःना। কারণ সমাজ মধ্যে মৃতন নৃতন অভাবের সৃষ্টি হয়। किन्छ মান্ধাতার সময়ে যে নিয়ম প্রাক্ত হইরা। আছে তাহা ৰারা এই সমস্ত নৃত্য মৃত্র আইভাব দূর কর। সহজ হয় না। স্লাতরাং তাহার সময়োচিত পরিবর্ত্তন আবশাক। তাহা না হইলে সমাল টেকৈ मा। এই পরিবর্ত্তনও আবার দেশকাল পাতামু-সাবে দির ও ধীর ভাবে হওয়া চাই। তদ্বাবা সাধার**ণের স্বিধা কি অস্বিধা কাঁড়াঁক** তাহার আলোচনা করা ঢাই। নচেৎ ভদারপ भ्यात्कात कान विदर्भय कल रहाना। कलाउ স্বাজ্ত**ত্ব বুৰিষা ওঠা সহক ব্যাপার দর** 4

এখন হিশুলাভির ভিতর পুত্র কলার নিবাহ একটা বিষম বিজ্ঞানী করণ এক এক হাছে। ইয়ার প্রমান করণ এক এক হারে মধ্যে আটার বিভাগ। আকরের মধ্যে রাটার বাজেল প্রাকৃতি কএকটা জেণা। কাল্য ও জুলানা কর্মেও আবার এই-রূপ জেণা। এই জেণা-বিভাগ খাকাজে পুত্র ক্যারি হ্বাহে বিশেষ অস্ত্রিধা দাঁড়া-ইয়ারেও জালা এখন কার্যাকের প্রশন্ত না ক্রিন্ত করে লা। কিন্তু জানার ক্রিন্ত ক্রান্ত এইরপ অবাস্তর শ্রেকার কর্ম ক্রান্ত এক বিজ্ঞান ক্রেকার ক্রেকার এক, ক্রান্ত বিভাগ হৈ ব্যাক্তির ক্রেকার ক্রেকার কর্ম ক্রান্ত বিভাগ হৈ ব্যাকির ক্রেকার ক্রেকার কর্ম ক্রেকার বিভাগ হৈ ব্যাকির ক্রেকার ক্রেকার ক্রেকার কর্ম ক্রেকার বিভাগ হৈ ব্যাকির ক্রেকার ক্রিকার ক্রেকার William Street

कुछ ११८७ नीवजन जाकगरक जानंत्रन क-রেন। এই দমস্ত ত্রাহ্মণ অযাজ্য-যাজন-দে।কে পৈতৃক ভূমিতে আর বদবাস্করিতে পারেন नाहै। (महे मूटक डांशापत्र लोएए नाम। কালক্র:ম ইহাঁনের বিস্তর সন্তান সভতি হইয়া উঠে। এই আদিপুরের সম্ভবত ৩০০ শত বংদর পরে মহারাজ বল্লাল সেন ১০১৯ मकारक रणीरजुब भिश्षांगरन व्यविदाश्य করেন। তিনি কানাকুক্রাগত ঐ পঞ ভাকাণের সন্তান সন্ততিদিগকে রাড়ীয় ও বারেন্দ্র এই তুই শ্রেণীকে বিভক্ত করিয়া উচালের বুলপরম্পরাগত বিদ্যা লিন্যাদি मल्हान अभूभारत एकोनीनगानित वात्रह। क-রিয়া দেন। শ্রেণীবিভাগের মূল দেশভেদে বসবাস। অথাৎ গাঁহাবা বঢ়ে দেৰে বাস কবিয়া ভিনেম ভাগারা বাটায় এবং বাঁহারা বাবেন্দ্ভ্যিতে লগে করিয়াছিলেন ভাহারা পারেন্দ্র ইটানে। ুক্লত রান্ট্রণ ও বারেন্দ্র এক পিডারেই পুত্র। এই শ্রেণীবিভাগ সহয়ে একটু মতভেদও আছে। অনেকে শলেন ঐ পঞ্চ আক্ষাৰ অংগজ্ঞ-যাজ্ঞ-দোহয় পৈতৃক ভূমিতে বসবাস করিজেশা পারিয়া গোড়ে অবস্থিতি ও এই স্থানেই বিখাণাদি করেন। **সেই সমস্ত** বিবা**হিত** দ্বীর গর্ভ-জাত সন্তানেরা রাচ্**দেশে বাস** নিবন্ধন রাটায় হন। আর ঐ পুরু ত্রাক্ষণের পৈতৃক ভূষি কানাকুল্ডে যে সমস্ত সন্তান সন্ততি ছিল कांनक्त्य वरतन्त्र कृषिर् बानिया वान করায় ভাঁহারাই বারেন্দ্র হন। যাহাই হউক এই বিষয়ে মতভেদ থাকিলেও উহাঁৱা গে এক**ই পিতা**র **সন্তান** তদিব**য়ে কোন**ও मत्मर नारे। अरे पूरे त्यनीत जाकन ন্তীত আরও তুই শ্রেণী ত্রাহ্মণ আছেন। ইহাঁরা বৈদিক ও সম্ভশতী। বৈদিক ত্রাহ্মণ निद्भात्र नम्बद्ध श्राम এই य रथन माकिगा-তোর চোল বংশীয় কোন রাজা গৌড়দেশ

জর করিয়া রাজ্য প্রতিষ্ঠা করেন ভাঁহার সহিত কতকগুলি বৈদিক লাক্ষণ এদেশে আদিয়া ছিলেন। আর কতকগুলি পশ্চিম দেশ হইতে আইদেন। এই জনা ইছাদের মধ্যে দাক্ষিণাত্য ও পাশ্চাতা এই দুই বিভাগ।

উপরে যাহ। ধনিলাম ছালতে ইচাই প্রদর্শির হইল যে শান্তে ক্রেণাবিভাগের কোন বাবস্থা নাই। ইয়া মহাবাজ বতাল সেনের ব্যবস্থাপিত। শাস্ত্রে ২খন কে:া-বিভাগের কথা নাই তথন প্রস্পারের মুগে আদান প্রদান কোনও মতে দোয়াবহ হটকে পারে মা। কালণ সংহিতাই ছিল্মমাজ শাসন করিয়া আমিতেছে। সেই সংখ্তাত আদান প্রদান হলে ভোনীগত ছবাছর বিভা-গের কোন কং। বলে না। এখন বক্তব্য এই হিন্দুসমাজের শান্ত্রমর্গদো একা করা উচিত না হল্লালের মধ্যাদা রক্ষা করা উভিভ[ু] শাস্ত্র-মর্ঘদে। রক্ষায় একটা বিশেষ স্থাবধা আছে। শাস্ত্রানুসারে কেবল কম্পেনের নয় ভারত-বর্ষের যেখানে যত ত্রাহ্মণ খাছে সকলেরই সহিত একটা সময় বন্ধন ছইতে পারে। কিন্তু বলালের স্থান অতি সন্ধার্ন। কেবল বঙ্গদেশ। তথ্যবোপ্ত থাবার সকল প্রাহ্মণ সক-লের পক্ষে নহেন। এইরেপে ক্ষেত্র প্রথাত কর। বাতীত ইহা দারা আরও একটু উপকার হয়। হিন্দ্ৰসমুজ বহুকাল ধবিষা অতি সন্ধীৰ্ ক্ষেত্রে মধ্যে আদান প্রদান করিয়া আদি-তেছেন। বৈজ্ঞানিকের সিদ্ধাস্ত এই যে বছকাল ধরিয়া একই দেশের তকই বংশের **त्रक्ट-भः खारव** रःभ क्रमभः श्रीमवीर्गा इहिरा পড়ে। এজনা বিভিন্ন দেশে এবং বিভিন্ন বংশে আদান প্রদান আবশকে। কিন্তু যদি ব্ৰাহ্মণাদির অৰান্তর শ্রেণীবিভাগ ভাসিংগ मकल (नर्भंत मकल खाक्तगानित गर्भा शेह-স্পার আদান প্রদান চলে তাহা হইলে এই

बन्दरम्गी बिना व वश्य जारात रा बहिल्छ ইইয়া পৃষ্টির বীর জাতির মহিত সমক্ষতা क ब्रिट्ड ने बिद्द (म वियद् दर्गान मान्नर নাই। এপ্র শিকিতদিগের মধ্যে অনেকে-রই রলবীয়া 🛊 স্বাম্থ্যের দিকে দৃষ্টি পড়ি-मार्ट्स । किस के दिन ना बलानकुछ मकीर्व ন্দেরে বদ বৈবাছিক দোষটুকু উন্মূলিত হুইতৈছে তাবং উছোৱা বলবায় লাভের নিমিত যা কিছু কঞ্চন কোনও মতে ফুক্ত-কাৰ্য্য হাইতে পারিবেন নাম

এ বিষয়ে আরও একটু বক্তব্য আছে। প্রকৃত হিল্বর্ণোর মর্ণ্মে মর্ণো সর্বতা সামের ক্ষা পাওয়া যায়। এক সময় সম্ভব্ৰন ভীলামাজিক উন্নতি সাধনের নিমিত্ত বর্ণ-সিত্রালের বিশেষ আবশ্যকতা হইয়াছিল। লবং ইহার দারা**ই স**মা**জের অশে**ষ কলাণি সাধিতা হয়। কিঞ্জ এই বর্ণবিভাগ থাকিলেও विदाद कि देवान वाशिक हिन ना दवः ५५ হিবন্ধনত বৰ্ণচুই হের মারে একটা সাম। এ अकिन इरेज। कालगहकादा अरे विवाह রহিত টুইয়া **যা**য়। এখন হিদ্দেশভেগ মেরপ ভারগতি তদ্তে ইহা মুক্তকণে বলা যায় শে প্রিভুট্টয়ের মধ্যে বিবাহের পুনঃ--প্রবর্ত্তনার এখনও সময় আইনে নাই, কিন্তু হর্ণাকভাগের মধ্যে এই অবান্তর ভোগাবিভাগ का भवात किंक् भागन इंदेशायल । व्ययनायकी त्रविशाहित हैहाएहै श्रोहा भभाष्यव जनक অনিপ্ত সংবিত হ**ই তে**ছে। অতএব বীহাতে বর্ণের 🚎 বা এই, অবান্তর বিভাগ নত্ত হয়ু छाइबद्ध भाषामध नेपादबबरे अकट्टे एक्टोबान "হও**য়া আবশাক**া \এ**ই** অবান্তর বিভাবের कना वर्ट्ड बहुरा अक्टी देवहरीक वहकान इहेट श्रु हरेता मानिएएक। देश बाता-(कर्तन रा नमारका यानिहे पणि**रक**रक जासे नार किस दिम्मुप्ति अकात लाटक विदेशम अध्यक्त आकारकाम किस्तीत विवाह स्टेमिक वावित्य व्हेटलाह । क्रिक्न अहे बर्ट्याद मूल हिन वास्त्रक दूधनी क्राम्यन। किह दिन व्हेन

गक मर्बाव गाया । अवस्त मध्यां के स्वास **এ**क्छे। क्या व अश्रामिक स्टेरर ना । সমাজসংস্থার একটা সতন্ত্র কার্যা নয় ব ইহার জন্য আড়মর ও উপদেব করিয়া বেড়া-ইলে কখনও সমাজের কোনও উপকার অত্রে ধর্মারকার হত্ত কর। र्रेट्र न।। সমাজ-সংস্কার ইহারই । আমুদক্ষিক ফল। তঘাতীত ইয়াঃ সভস্ত অভিত্ব নাই। কিন্তু वर्ङ्गारम मगाज-गरकारक गरिय असन मकन কার্যা অভুন্তি চত্ত তেতে খাহার সহিত্ত ধর্ম্বের কোন কালে গোন গণত নাই। <mark>্যয়াজে</mark>র বন্দে একটা উপাদৰ আনয়ন বাতীভাতাছার : ফল আর নিমুই নাহ। ফলত ভবিষাতে যদি (१६) नति श्रास्त । स्था বিভীগিকা ভাষার ঘোর **প্রতি**বদ্ধ**ক ইইবে।** অত্যৰ ভিনিয়ে মা**ৰধান হও**য়া বুলিমান सारप्ति है साल्या ।

একনে আমৰা আহলাবের সহিত একাশ তারিকোছ হি<u>ন্দু</u>স্থাজের - স্থিতিশীলও।-সেব णाननी ए इत्राह्म छेन एम इरेगाइ । हासीस জেনী, সম্ভূলীদিগের সহিত সিশিতে আরত্ত করিয়াছেন। প্রকাঞ্জের কোন কোন সম্রাত্ত লোক কৌনীনোর উচ্ছেদ বাবনে যত্ন করিতেছেন। এতদাভাত সম্প্রতি আরও একটা শুভাবর বাাপার ঘটিয়াছে। ইল শ্রেণাভস। ইয়ার গণ-প্রদর্শক জীনন-হর্ষি দেবে জনাথ চাক্র। কানাকু**জা চুইতে** ধৈ পঞ্চ ব্রাহ্মণ রাজা আদিশুরের যজ্ঞসা**ধরার্থ** ८गोफ्रम्ट्यू खाँग्रेटमन क्यार्या द्रधानिक क्रि **छिनात्राग्र**ी मार्शना वर्तनत होदर्छक। **खोमद** দেবেজনাথ ঠাকুর ও ভট্টনীক্ষরণের অধস্তন ষট্তিং । পুরুষ। ইনি রাটায় এ বি ৩০ প্রাবণে ইহার পৌরী প্রামতী ক্রেডিডা त्मवीत्र महिन् कृरुनगद्यत अक्षान क्रिमात्र ,

हिन कि स्व विश्वविद्यानिक इटेट अभ, ७, क्रमीय मान कविद्या ज्यानतम् वातिहास्त्रन् । পাট্ট সুৰিক্ষিতা পাত্ৰ উচ্চ-শিকা প্ৰাপ্ত। এই মিলন যে বছকল বেশকর হইবে সে বিবরে गत्मर नारे। सर्वि (पटनक्षनाथ ठाकूव निक्वत विष्ता वृक्ति अर्थ ७ कीवन पिता ब দেশের স্নাতন ধৰ্মী রক্ষা করিয়া আসিতে-ছেন। ইনি সমাজতত্ত্ত বিচক্ষণ ও দেশকাল-क्रमी। मगाकमःद्वात देशात वर्णातकात्ह আসুরঙ্গিক ফল। ধর্মরকা করিতে গিয়া **্যতটুকু সংস্কার আ**বিশ্যক তদিষয়ে ইহাঁর_ু বিশেষ দৃষ্টি আছে। ইনিই মহারাজ বলালের 🏰 🥍 শত বৎসর পরে. এই শ্রেণীবিভাগ ভাঙ্গিবার সূত্রপাত করিলেন। এখন বঙ্গদেশে ষাস্তবিক ষাহা অভাব এই নহান্ধ। লদুয়ের মর্শ্যে মর্শ্যে তাহা অফুভব করিয়াছেন এবং निष्करे ७९मः कारतत् १४-अपर्यन कतितन् । রাচ ও বরেন্দ্র ভূমির ভাতারা সমস্ত ব্যবধান দুর করিয়া এত দিনের পর একহৃদয় একপ্রাণ হুইল, এবং বন্ধ দিনের পর কবি ভট্টনারায়ণের এক বংশধর হইতে এই বিবাদ সম্পূর্ণ ভাগিয়া গেল।

गाथान-मञ्जूती।

 যুক্ত প্রধান আচার্যের-ব্যাখ্যাকুমূলক পদা।
 বিংশ ব্যাখ্যান।

ক্ষার বহান, অবের নিলান, ভিনি বিনা যত আব।
বিশ্ব তবন, বশোমান ধন, বহে নহে তথ সার ।
বাবে যদি জীব। অমুক্রের বাম।
সংসার ভারতে বহি তব কাম।
ভারার চরণ লও হে পারণ।
ভারার চরণ লও হে পারণ।

উজ্জ্বল করিয়া জ্ঞাননর নর্ম ভাষাত্তে জ্ঞান্তে করম দলনি।

CRA त् प्रचाटचा (अट्डो टोरंशन। বিভরিছে,কঃ খুবাংগু, তথান ॥ নদ নদী দব হয় প্রকাহিত। বরবার বারি করে নানা হিও। बञ्चन्नता कल कुरल स्ट्राइन। তীহার জগৎ স্থার কেন্দ। জগতে বাঁহার মহিমা প্রচার। জীবে বাঁর ইয়া কৰণ। অপার। ভিনিই ভোমার হানরের ধন। ভাঁর কাছে থেতে বলেন বচন।। তি নিই ঈশ্বর, তিনিই মহানু। মুক্তিশ্বাতা তিনি হুখের নিদান।। তাঁহারে জানিতে, তাঁহারে সাবিতে, তার হুণা নাম প্রচার করিতে, 🕶 নাই তব জনম এ ভবে 🤊 **তাঁ**র **প্রতি তু**নি উদাসীন রবে ? া বে কিছু ভোমার-- সব যাঁর দান, তাঁহারে করিবে ভূমি প্রত্যাখ্যান ? जिनि यारीनल फिलन (ज्ञारत । **ভাপন ইচ্ছায়** ভজিবে তাঁছারে॥ সেই তাঁর ইচ্ছা করহ পালন। **প্রেমে** তাঁর পরে কররে গমন॥ প্রেমে ভাঁর গলি কর কাষ তার। এই ছব কাষ-নাহি অন্য আর ।। কেন ক্ষুদ্রে ভাবে হইয়া মগ্ন, দিবানিশি অঞ্চ করিছ বর্ষণ 🤊 ভবের ভাণ্ডারে ছেন জব্য নাই। আত্মার পিপাদা যাতে মিটে ভাই 🏨 🎮 কিঞ্চিৎকর ক্ষুদ্রে এ সংসার। নিতে পারে স্থ গভার অধার 🤋 ज्याजार हिए प्रथ अध्य जीत होता। যশোষান বল্প তৃতি নাহি পায়॥ শ্রী হিকা সম হৈখের হলনে, 🦤 क्म बीं जर्द विश्व शिष्ट्र ? थक विन्द्र जन **जोटर** ना मिनिएत । बाजात निर्माण गाउँ विशासिय।।

নিবর সম্পর্কি, আথার ক্রুরের নারি দের হব একানিক ক্রুরে।
ক্ষালার নিরালা আনার্ক ক্রিপাসা
ক্ষালার নিরালা আনার্ক ক্রিপাসা
ক্রের প্রক্রিন অন্ধকান মর।।
এইত গতিক সংসারের হর।
লান্তির নিবাস কতু ইহা ময়।।

মুল্ল মোরা তাঁর শংখে নাছি যাই। প্রবৃত্তির পর্যে আগে মোরা বাই।। क्यारमं मध्यारमम भाष श्रीविधा। गहन माथारत शब काताहता।। কণ্টক ফুটিয়া হয়ে জ্বালাতন। ভবে ফিরে থেভে করি আকিঞ্ন।। পথ নাহি পাই, দেখি ভারিবাব। ভিনিই ক গ্ৰায়ী, নাছি কেছ আৰু॥ সোভাগ্য ভাষার, এ হেন সময়ে। ভাইক মহামহে কাতৰ হৃদ্যে।। बार्क काथा नाथ ! जनाथ भारत ! শ্বস্তির পতি, পতিত প্রাংন। বিপশ্ব পাড়ছি কর হে উদ্ধার। লয়ে যাও এবে মুপারে ভোমার॥ আরু হ'ল ক্ষাত্ত সংসারের যার। **ভা**ডাও লাইরা চরণ-ছারায ॥ আমিয়াছিলাই ড়কা নিবারিতে। ना क्यांनिया खरम (मान्निम-वात्रिट्ड ।। ক্ষাম-কণ্ঠ এবে কান্তর প্রাণ। অমৃতের বিন্দু ভূমি কর দান।।" বে কাডরে তাঁরে ডাকে এক চিতে 🕈 महमान मार्गात छारात छातिए।। #শা-ৰঙ মিয়া ভাবে তুলি ল'ন ! 'কাটি দেন' তাৰকায়ায় বন্ধন ।। 1、面临上山南南部,北西市10 岩

भिक्रमा काका सुद्ध मात्र । प (देवा Cनाक कर्म कर के का ना । का कड जाजा होता क्षेत्र महिला ह बक्क विम बादत बूंदक मिने हैं। है। কভু ভাব কাছে শেলাখাত পাই 🕸 সংসার নহে ও প্রথের আলর। **ए**न क्रिलिम- विमि स्त्रांच्या ॥ व्यक्तिक सूच भारेल (स्थाप्र। পাছে জাব আর তাঁরে নাহি চার ম করেন থুবেতে কণ্টক গোঞ্চন। হুঃখ কশালাতে আত্মার শোষন।। বিষয় আশার না হয়ে **স্থলা**র। জানিবে সংসার নাহি হয় সাব II সংসার পরীকা শিক্ষিবার স্থান। ইথে থাকি জীব লডিবেক জান।। हु रथर इ शृष्टिया महाभिका छ। जिले । তাৰ পাৰে চাহি এটন থাকিবে॥

द्रेयरहत रेष्ट्रा मध्यारह श्रीकिया। প্রেবির সহ সংগ্রাম করিয়া।। তাঁর দিকে ক্রমে হ'ব আগ্রধান। তাঁর বলে ক্রেমে হ'ব বলীয়ান।। ज्ञात यात्राप्त कांग्रे मा यक्तिय । স্থান প্রামী তাঁহারে করিব।। কিন্তু রিপুশহ সংখ্যাদ করিতে। ছু:খ প্রলোক্তন লডেক সহিতে।। ইান-বল মোরা কেমনে পারিব 🏲 দুর্মলের বল তাঁহারে ডাকিব। রে আত্মশু। তাঁরে করঙ নির্ভর। তিনি বল দেন বলেব আকর।। লম্পাদ মদায় কথন বহিতে। #७७ **क्वटम** के हादन **पातिहेन्** ॥ বহিলে বিশ্বর অটিক। ভীরণ। ভালাকাতে শিয়া লইবে

বিনাৰ কাজাৰ নিজে তোবারে।
বিনাৰ কাজাৰ কৰা দিতে পাৰে।
বিনাৰ কাল কৰা দিতে পাৰে।
কৰিয়া উঠিছে আকাল জীৰ ॥
নুক সুংখ উটেড কৰিয়া আশ্ৰয়।
উনি দিকে বেডে কাজা নিক্তা ॥
সম্পদ্, সোভাগ্য, সুংখ, অঞ্জ-জল।
সাবে বেনা হয় আখ্যার মকল।

364491

সমালোচনা।

বিদ্যাবতী আবিয়ার ও তাঁহার উপদেশ। জীয়ত বাব নক্ডচন্দ্র বিখাদ প্রণীত। মূল্য /০ আনা। चावित्रात्र नगरम त्य अकस्तन विषयी ही हित्नन, जारा (वांश इत जात्मरक खात्मन ना। हेशेत ममल कीवन-বুভার পাঁওয়া ধার নাই, ধাইবারও কোন উপার নাই। লেখক বহু করে বাহা কিছু সংগ্রহ করিয়াছেন ভাহার অনেক ভুল উপন্যাসসংশ্লিষ্ট। ইহা সতেও छिनि जागामिरभन्न धनानामार्थ। এতৎপাঠে जानि-বাবের সময়ে ভারতবর্ষে জী-শিক্ষার কতদুর উন্নতি ইইবাছিল, ভাষার বিদক্ষণ পরিচর প্রাপ্ত হওয়া ৰায়। ইনি থণার সন-সাম্যিক ছিলেন। আমাদিগের रमरम 'यमानि भूटकी भीवनी रमधात खाशा शाकिल. তালা হইলে আগরা আৰু এই রমনীকুলভিলকের আদেয়াপাত্ত জীবনবুড়ান্ত পাঠ করিয়া অধিকতর स्थी व्हेजाय। हानत्काव स्नाटकत या व्हांत हेना हिन्दान গুলি সারগর্ভ। জ্ঞামরা শ্রাশা করি এদেশের বালক दानिकांशन अ ममछ छेनाम त्यन यरप्रत नहिंछ नार्क করেন। এরপ প্রক্রিক। যত প্রকাশিত হয়, তত্ত ভীল।

প্রাপ্তি স্বীকার।

শাৰণা কতক্ষতাৰ নাহত শীৰণৰ করিছেছি যে নিয়লিখিত পুতৰ ও পৰিকাঙলি উপহাৰ প্ৰাপ্ত হই-নাছি।

)। श्रीयन नशाम । श्रीक्रमातश्रम अह कर्त्रक निवित्त ।
२। भागीत भीवत्त अग्रवात्मत्र निवित्तः वित्तीत्रं
नास्त्रत्य । भूक्ष्यंत्र सर्वाद्यांन नशाम हरेटल आकामित ।
१०। श्रीक कृतिका। श्रीकृतानीहरू ह्यांत्र श्रीकृतः

6। স্থি-স্থিতি শ্ৰীগড়ক মুখোপাধ্যাম কর্তক প্রকাশিত।

- 4 r Hindu Religion by Deens Nath Ganguly
- क र भगारित मरिका आसीर महित । विदेशकार एक मिर्ट के इस सम्मारिक।
- १। जीताङ्गवक वर्षाः अधाराय (परवत्र विवयन) जीरेकनामध्य मिरर कर्नुक खनीछ।
- . ৮ । भामन-ज्यान । दीवियनाथ ठक रडी वाता . अरीड ।

Proceedings of the Asiatic Society of Bengel July, 1886.

ভারতী ও বালক। প্রাবণ ১২৯০। প্রচার।

সক্ষনতোবিণী। 🖟 🗓

্মব্যভারত। ভাল ১২৯৩। আলোচনা। ঐ

সূৰ্ব-বিদ্যাবিদ্যাক্ত বা ওঁজ-শাল্ড। বৈজ্ঞানিক পত্ৰ। ১ম সংখ্যা।

Hindu Reformer, August 1886. Fellow Worker, August 1886 Theosophist, Sept. 1886.

मर्वाम ।

আমরা অতান্ত হঃথের সহিত প্রকাশ করিতেভি **८व जामात्मत्र वक् अकाम्लाम बिल्क एनडानाम इस्टीला** ধাায় অকাণে ইছলোক পরিত্যাগ করিয়াছেন। বহু দিন হইতে ^{*}ইহার আদি ব্রা**ন্ত্র**সমাঞ্জের সাইত সংযোগ। ইনি এখানকার এক জন আচার্য্য এবং প্রচারক ছिलो। जीवन पृष्ठेतन देशीत मुद्धात कातन। व्यास व्याध जिन मात्र इंडलें जिनि धरे द्वार्ग यात्र भत नारे কই পাইভেছিলেন। কিন্তু গত ১৮ ছাঞ্জেরাট্রি ৯ টার সময় সর্পদত্তাপহা**রক জীপার ইহাঁকে আপ্রনার** জোড়ে লইয়া সমস্ত আলা যত্ত্ৰণা হইতে মুক্ত করিয়াছেন। আমর্ কারমনে তাঁহার প্রবোক্গত আত্মার ৩৬ কামনা করি। তিনি এতাবংকাল আমাদিগের মধ্যে থাকিয়া ব্রাহ্মধর্ম প্রচারে সহায়তা করিয়াছেন। এই তত্তবোধনীতে তাহার অনেক উপদেশ ও অনেক প্রবন্ধ প্রকাশিক আছে। অতঃপর সেই গুলি হৈংখের गरिक कॅबिएक अप्रथ कतारेश मिट्य। क्रिक रिवलकन ন্তুত প্র বলবান ছিলেন। আবহুমান কাল মথ্যা মাংস ম্পূর্ণ করেন নাই। এরপ লোকের অকাল মৃত্যুতে कामता वाकविकरे नाथित रहेलाम। हैनि उरमारी ७ পরিশ্রমী ছিলেন । জীবনের প্রার্মের্মাংশ ধর্মভারে वाय कविशास्त्र । देशांत अवादान (बहाना । देनि उथाय বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠা ঔষধালয় স্থাপন প্রভৃতি প্রভ্যেক স্থকার্কো যোগদান করিয়াছিলেন। ত্রাজীত বেহালা ব্ৰাশ্বস্থাত ইহারই ড্ডাব্লানে ছিল 🖟 তিনি এপন यथायह श्राकृत जियत डाहात नहात रुप्रेन । जामस्तुक শুই শেষ্ট্ৰ জ্ঞাৰ্থনা ৰ

" ·						
ু আয় বায়।						
বৈশাৰ হুইতি আয়াচ পত্নীত ত্ৰাজ বৃহত্ব হণ।						
্থাদি ভ্রাক্ষনম।জ।						
आर	928# 2¢					
श्रुक्तकांत्र 🍂 🤨	90011/6					
ममष्ठि 🖊	0,320 %0					
ব্যয় 🗸	2921/20					
বিত্ত	21000450					
	< 100 . N. 2					
কার।	000/2					
ব্ৰহ্মশ্ৰম্ম	984 C (
নানিক । নান । উন্যক্ত বাবু বেংকজনাও ঠাকুর						
्रा इंटर् वा (शा इंट् वा)	1) 51-					
সামৎস বিকল্প ন।	,					
উন্থক লাব্বননালী চস্ত্ৰ	>					
" महीमनावः शस्त्रीभीशास्त्र	1 2 ₁					
" শশীক্ত কুৰণ চট্টোপ্ৰায় শ শক্ষাত কৰিক	a , *					
attained attained	81					
ি " " বাদকণাল পাইন " " বাজক্ষ আন্তঃ	\$.					
" ্" প্যারিমোহন রায়						
। " मिन्छल नमी	a,					
" फ्लीज्यन प्रमानाशाय	34					
गुलकरणाव गान						
भियुक गोर् गडीबिय पान	4					
" जिल्लात मान खर व्यक्तिक मान।	9					
कार्यक्षानय गान । केंद्रिक संजु क श्रेक्टनार शेकुव	٤					
े " ल्टानगर शक्त	ų;					
🤔 🤲 ধৰঃপ্ৰধাৰ মুগোপ্ৰয়ায়	. فه					
्रिक " काटनलक्ट भूरवांशाधाप्र	8.					
ী, " " সংলাজ্যক্ত মুখোপাধ্যায়	8					
" " कार्यान् उक्ष पुर्वाशीयावि	8%					
नानांशांदत आंख	thela					
1	48de					
তছ্বোগিনী পৃত্তিকা	550No					
প্তকালয়	32/10/0					
यक्षान्य	८०मार्ग्य					
গছিত্ত	asuelso					
ত্রাহার্যমা গ্রন্থ প্রকাশের মূলবন	240					
ভ্রাহ্মাবশী প্রচার	4 4 4 5 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1					
1						
मांडवा						
गर्वातने रम्विः न वाक						
ब्रागोहर्ग 🏸 📜	34					
ু সমষ্টি ু	3381 3¢					
€.	or in a 2 a 22 days of the con-					

	4. No. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10	4) 4	.1		
	<u>ভার্ম্যমাঞ্চ</u>		***	8000	\$Œ
	তৰ্বেখিনী প্ৰি	টকা		sone	
	পুস্তকালয়	***,	4.		K.C.
4	যন্ত্রালয় ু	***	44.0	" William	
,	গচিত্ত	***	***	, 95 a	9
	ব্ৰাহ্মধৰ্শ্য প্ৰস্থ প্ৰ		मूल्यन ः	- EH	Œ
	ত্রাক্ষাশর্ম প্রচার	•		(Co	ť
	मोल्या	•		* 34	,
	वामाल		•	1	20
	सम्बंधि	9 4 3	gs to file	৯৪২।৴	20
	,		ী র	नी कुनाथ है	कृष्
				भागत्।स्य	ì

বিজ্ঞাপন।

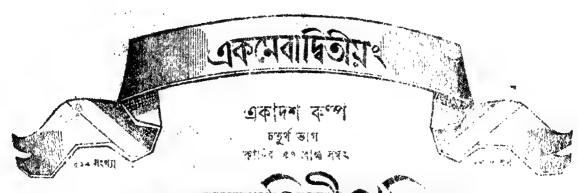
জালাল ২৭ জাখিন মন্তবার "বালী পর্ম নমাজের" চরুর্থ নাজংস্তিক উৎসব হ: ইবে। পুরুষ্পুরুষ্ণী মহোদগুলা উপাননায় যোগনান করেন ইছা নিটান্ত প্রার্থনীয়। ভিত্তীরালাল মুখোগুলায়ন। সম্পর্টনক।

তাগানী ২৮ এ জাখিন ব্রবার কলিন:
ভাষ্ট্রাম্যনাজের উনবিংশ সাহংসারিক মহোধগর উপাদে প্রতে ৭। ঘটিকা ও সারংকালে
৭ ঘটিকার পর উপাদনাদি কার্যা আরম্ভ
ইইবে.

विदादीलाल व**त्म्हाश**वास नन्नामक ।

আগামী ৩০ কাতিক সোমবার বেহাল। ব ভাক্ষসমাজের তারস্তিংশ সাম্বংসরিক উৎসবে অপরাত্র তিন ঘটার পর ভ্রান্মধর্মের পারীয়ণ হইবে এবং সন্ধা সাত ঘটার সমুদ্ধে ভ্রেকা-পাসনা হইবে।

> প্রিপ্রাম চট্টোপারার সম্পাদক।



ज्ञादाशिनी श्विता

भद्रकाणकाश्चरम्बा**ष्ट्रांस्थान्य कि** १६१६/भाष्ट्रां स्थान्य भाष्ट्रीसस्मान् । तत्र भिष्य १ स्थान्य श्रित्व १ तर्य १००० १००० १००० । उन्नेयाच सत्र नित्रकः भवाष्ट्रपत्र विस्त चत्र रहितार्यक पूर्णमधीननीस्तः । १ सत्य । उ. त्राच्य ।

धर्मिकार्रोगल के रनमवाल है। समिर अभिरत्याचे के रण के सम्याद से सार्व

जाति आधारामोज।

8 प्रतिश्रम स्थितिहार ५ का प्रशास स्था । सम्बन्धाः प्रशास

माना मन्द्रकारात सन्दर्भ त्या र हो। ক্ষালনে দে<mark>খিতে প</mark>ণ কালে যে এবং বাগ ব कलाद्वर ५ मध्य-अधि, व दो, प्रका आनी 我看一起说 机铁铁铁 对一个 有人发展的 न्या मुख्या स्थान भागा भागा विश्वमा একটেশিয় আইবিশ প্ৰথানৰ কৰে বাম रकरे १८०१मा ध्यात्वेच्याः ठळारे छार्। चला असः काश्चिमा द्वाराष्ट्रका कितानी परेन मी प्रशा मा एक भेका भिक्त भन्मी सन जान-জ্ঞানে কৰ্ম এবং ভত্তিল বিশ্বাহী হইয়। দাঁডাগ্র: ছানের ঐক্যানক প্রভূপানন কাল-এনে শক্তি এবং ভাক্তির বিরোগী হুইয়া নিশ্যি ; ভক্তির ঐকাণনিক অনুশাল**ন কা**ল ক্রমে জ্ঞান এবং শক্তিব বিরোধী হইয়া দাঁজায় ৷ আমাদের দেশের শাক্ত সম্প্রদায় कारी मर्टानाय बनः एक नर्टानाय हैशव দৃষ্টান্ত-হন। কিন্তু আত্ম ধর্ম্মের উচ্চ আদর্শ खेळ श्रकांत्र कांन **जानद**र्भत्रहे

্ষিতার প্রদান্ত্রণ প্রায় প্রাণিতাত সুশাল্য প্রায়দিতাত্

মতা হইতে বিচ্যুত হাবৈ না, দৰ্ম হ- স্থ বৈতে বিচ্যুত হইবে না, ৮৬ কৰ্ম হইতে বিচ্যুত হইবে না; -ইহা কত না ৰাজ্যকে অপেক্ষা করে। আর্ম্মাবর্মের উপদেশ এই যে, যে ভিক্তি কর্তবা অনুষ্ঠানের বিল্লোট্র সে ছক্তি ভক্তিই নচে--্যে জ্ঞান ভক্তির বি-রোধী সে জ্ঞান জ্ঞানই নহে।

ঈশ্বর-জানের প্রধান ল্**কণ**— শ্রদ্ধ, । প্রথম আছেন— হলতে গলের ঐকান্ধিক স্থ ছাতি প্রবাস—ইচাই সালা। এ বি-খানের ভিতর ঐক্তি ১০ ১০ ১৮ লক্ষে বিদ্যাবেণ্ন প্রকার ছিব জ পান পাইতে शहर भगु-- भा" क कथा। क विशासित कि-গামার হান পাইতে পারে ।। আঞ্চল ভাই বলেন 'অন্তর্গতি ব্রুক্তেখ্যান কথ্য তমুপসভাতে" যে বাজি বলেন ্য, তিনি আছেন, ভাৰেয় খনা ব্যক্তি ঘলে কি ১.-कार्त्व खेलाक रहें (वन । अहे क्रभ के काश्विक সন্ম --পর্ব্র বিশ্বাস্থ ঈশকের সমস্ত লাতি অন্নাচেদর জ্ঞান-নেচ্ছত সমক্ষে উক্টিভ कविया त्मन्न । "ना" (यशादन नाहें, "नाहें" নেখানে থাকিতে পারে না.-- এতাকে, কান প্রেম শক্তি ইত্যদি যত প্রাচৰ সদাত্র লক্ষ্য – সমস্ত ই ইবরেতে প্রমান্তার চিল মান বহিগানে, ভাষ্ট্র, জভাত), প্রশাঞ্জি, প্রা-**एडि श**र्फात मुषक क्यांन जिल्ला में भट्टरफ विद्धिक भारते मा। अरेक्सभ, देशहबत चान ह এবং সাহাত্মের প্রতি প্রাহিত বিধানের भागरे शका।

নিগরের প্রতি প্রভা জান্তলে, উটের হা চি হ জানাদের কি তাল মাধ্যা ভাই। আনা-দের ক্ষান্তর্মা শা , তখন জানতা দেখিতে পাই শে, ডিল মহান প্রভু, জনা টাইার একান্ত আদিচের আহ্রার অভিপ্রের পথে চলাই আনাদের শাক্ষ সর্বভোহারে প্রেরণ ভাদাবান বালি ইগরের অভিপ্রেত গথ হলেন করেন কা দেই পথে চলিতে অভ্যান ক্রেন ভাতার পর্যাব্রিই ইনার পণ-প্রেরণি ভাবা হির করিয়া তদনুমারে চলিব – এই কাশ ক্রিই ক্রেব্রিন। প্রত্যান্তরে সহায় করিয়া ঈশরের অভিপ্রেত পথে প্রাণপবে লাগিয়া থাড়ার নাম-- নির্মাণ প্রজানজ্ঞান-সর্ত্ত্র, নিষ্ঠা শক্তিপের্ত্ত্রণ আমাদের
আজাতে যে এক স্বরুপদন্ধ জ্ঞান-জেনাজি
আছে, লাগাই শক্তার অবল্যন্দর, করে আন্
মাণের জাতারে যে এক নিয়াহিকা শক্তি
আছে বিয়া প্রিলাগেদর মন আনাদের আপনা র বিলা প্রভাগেদর মন আবং নির্দার
জিরাহি লাগেদর প্রভাগেদর জিলা এবং নির্দার ভাগেদ

क्षांत्र है। १२८ व (५८६) । व्याना भे तन 电影学系设备 美国 电电子的 人名斯 卷接,有 with the energy will be the থা চা ধৰা জন্ম জিনি লগতে প্ৰায় ১৮৯ कर्तावस कार्य स्थापमा, शिम राज्यसि १९११ : १८४-क!१८८५ अपूर्णाम करदराय-केंग-त्राप ७ वर्ग स**भ**्यत को जार लिया। अभ**गभग** ১৫৫০ : প্রিবার্ড কর্মেপার সভার সংভাগ নাই-জীব ং লে রণ ১/৬ মানেন, তেনি আ-भारतन शतमारिके नहीं माननाम छन्।-- श्रा-সংশ্বর ফানে এইটি শ্বন্ধ সাধি ও ভবনট . अमराधः २४. १७४५ **अ**चरततः १५१७ छ। धायतिक अकुताम कट्या । त्रुत्यं दिश्य वन ইবলেরোবে গে লাপ প্রক্ষন স বিষ্টি লোন, এপন বিনি ভান্ত বৈক অন্ত ্ৰ সাধান সেই পথ অবস্থান ১৫বন ৷ মোন ব্যব্ধে অপ-স্বারেশে স্বাধ্য স্থান ঈশ্বারের শ্রাস্থ্য স্থান অংশ-লোকন কৰেন, ভগনই ডিল ব্লিডে পা-বেন গে, ইনিট আমার ৫৯মান ভজনীয়া: ज्यमहे जाँगत मत्मायका प्रेचतासुतान छ-मील घरेता छैटि : देशांदे नाम एकि।

সাগকের আন্তরিক ভক্তি ঈশবের করুণা।
আকর্ষণ করে। ঈশবের করুণায়ত সর্ক্রিই
উন্মৃক্ত রহিয়াছে; গাঁহার যে পরিমাণে পিশাঁষা, তিনি সেই পরিমাণে তাহা পান ক-

किस रम भगेला मान्येनरत्त्र श्रीक कंक्षण-नोकाई निमय हरेगा बाहे (ज नवस्य जित्ते केवरायक्ष्मिया काव १५ में। भाषाकृत **एकि कार्य** राउर उटकर माच করিতে বাকে-- ইবরের প্রতি আতার আ-कर्ता वजहें ना के स्ट्रेटिंज बादक—उज्हें किमि भेगबरक निकटि शा'म, ७ उरे छिनि 📲 বকে আপনার বলিয়া— ছাত্মার আত্মা विनिष् ।— कारवन्य करतनः । धरेक्रार्थः छ। हात ভক্তি ক্রমে ক্রমে প্রীতিরূপে পরিণত ছ-ইতে ৰাকৈ। শ্ৰদা নিষ্ঠা এবং ভক্তি তিনই প্রীতির অন্তর্ভ ত—গ্রীক্ত তিনের একটিকেও क्षािक्ट शास्त्र मार्च वयमहे मार्क क्षेत्रहरू শব্দেরতম প্রিমতম স্বল্লং বলিয়া ভীতি ক-রেনঃ তখনই তিনি তাঁহাকে পরাংপর পর-**মান্ত্রা বলিয়া ভক্তি করেন,** এবং ভাঁহার অনুগত দেবক হটয়া কর্ত্তব্য সাধনে তৎপর হ'ন। প্রতি কোন ভাল সাম্প্রীই নষ্ট করে না—সকলকেই যত্ত্ব পূর্বক রক্ষা করে; শ্রীতি ভক্তির আর কিছুই অপহরণ করে না—কৈবল ভয় অপহরণ করে, প্রীতি ক-র্ত্তব্য-সাধনের আর কিছুই অপহরণ করে ना-क्यमें कर्फात्रण जनस्त्रन करत । द्रेयत-গ্রীতিহত মুমুবোর আশ্বার যেমন উৎকর্ষ मास्कि रहा, श्रमम चात्र किहूट हे नहर । विवादन अधि श्रामाण मशूरपात कार्यात छे९-কৰ্মানিভ হয়, ঈশৱের পথে চলাছে মতুযোর भाजात सर्वत गाविक हतः जेनक शीलाख नमा वाषात उरकेर मानिक रहा जासक रथन STATE OF THE STATE ভাষণিক পরাজন আছা হইতে নিযু ত করিয়া CORD, WAR SHE WILLIAM STREET MACIN COLUMN TO A SAN THE WAY Marie Williams September 1985 ect and the organization and the

ट्डाटनन । जेनत यशः बाहात हकूत हकू প্রাবের প্রাণ এবং আত্মার আত্মা হইরা স मा चलाव स्थापन करतन, छाहात किर्नद অভাব ? ঈশরকে যিনি হৃদয়ের সহিত প্রীতি করেন—উাহার কিদেব অভাব ? আ-স্থার উৎকর্ষ ঈশ্বর-প্রীতির অবশান্তারী ফল। কিন্তু সাধক যতই কেন উৎকর্য লাভ না স্বর তাহা অপেক্ষা পরাংপর পর্ম উৎকৃষ্ট ; এজনা আপনার আত্মার উৎকর্ষ সাধকের লক্ষ্যে উপযুক্ত নহে; ঈশ্রই নাধকের লক্ষা, আত্মার উৎকর্ম উপলক্ষ यातः। আञात छे एक ध-माध्यतः जना जेनेत-প্রী 👣 নজে কিন্তু ঈশর-প্রীতির উপযুক্ত আধার হইবার জনাই আত্মার উৎকর্ম সা-वन ; এইরূপ হইলেই সাধক ঠিকু পথে দণ্ডা-শ্নান হ'ন। যে প্রীতির উদ্দেশ্য আপ্-नात छदकर्य रम श्रीज श्रीकिही नरह, প্রিয় ব্যক্তিই বে শ্রীতির সর্বাস্থ সেই নিফান প্রীতিই প্রকৃত প্রীতি। স্পাত্মার উৎকর্ষ नेयत-श्रीणित वर्तगाञ्चारी कन, अर्थः दृषत-প্রতির উপযুক্ত আধার—ইহা সভা; কিন্তু चानारमत चाजात छेरकईर यमि चामारमत मुश लका हर, जाहा हहेत अमित्रा ७ कुन ଓ कुल कू कून शताह, जाहा हैहें हम जीमता णाश्रात अरकटर्म विकार हरे, अवः विचारतत गरवादम्ख विकास देश **धी** जिसे बसूरवात गर्कारके बावजा

হৈ প্রকাশন। তোলার প্রেন্থ বিচাল কর্ম জনতা এখানে স্থানত হইকাল চালার প্রেনায়তই প্রান্তের আ
কার জীবনা পাশজারে কর্মানিত হই লাজ
কামরা তোনার বাবে জননীর হই লাজ
ভান প্রাথনের প্রতি কর্মণায়ার বর্ষণ কর্মান ভান প্রাথনের প্রতি কর্মণায়ার বর্ষণ কর্মান ভানিতে ক্রান্ত তোনার এক বিন্দু ক্র্মনা-বারি
ভানিতেত হবলে আস্থানের নামর উবলিয়া
ভিত্তি বান্ত মুখ্য শাক ক্রেন্ড লিয়া বার শ মোহ মলিনতা অপসারিত্র করিয়া — নিজীব হৃদয়ের জাবন সক্ষপ হইয়া — শুনি আমাদের আত্মাতে আবিভূতি হও, তাহা হইলেই — শামরা চিক্ল জীবনের মত কৃতার্থ হইব।

ওঁ একমেবাদ্বিতীয়**ে।**

দর্শন-নংহিত।।

षानुवानत्वः मखवा ।

শান্তর দর্শনের অবৈত-বাদ এবং বর্তমান দর্শনের দৈত-বাদ, এ চুয়ের মধ্যে কিরূপ ঐক্যানৈক্য ভাছা পূর্ব্বাহ্নে জানিয়া রাথা ভাল তি আশ্চর এই বে, শান্তর দর্শনের সহিত বর্তমান দর্শনের যেখানে ঐক্য সে-খানে পুরই প্রকা, তেমনি আবার, যেখানে অনৈক্য নেখানে পুরই অনৈক্য!

ै(a) **উভ**रत्रत्र धेका।

তেমনি নিমান বর্তি থান দর্শনেও তেমনি নিমান বর্তি অতীন বাপিক অর্থে ব্যবহৃত ইইয়াছে। জড় বস্তুই যে কেবল বিষয়-শব্দের বাচা, তাহা নছে; স্বপ্লের বস্তু সকলও বিষয়-শ্রেণী-ভুক্ত। এমন কি—। বর্ত্তমান খণ্ডের চতুর্গ সিদ্ধান্তে আছে

"All blanks, all nonentities, require to be supplemented by a "me" before they can be cogitable, just as much as all things require the supplemented.

ইছার অর্থ এই যে, জ্ঞানে প্রকাশ লানি ইটের ছইনে—বস্তু-সকলও যেমন—শুভারলক্ষণ ও তেমনি—একটি না একটি "আমি"র
আলেরাবীর না হইনেই নয়। ইহাতে ইন্
জিলার রুইভেড়ে হন, অভার-সকলও (ক্মেন
আলোকের বাঁভার অস্কুকার, প্রকাশ অভাব
নিতর্কটা, প্রকাশ অভাব
ক্রিয়ার অভাব
ক্রিয়ার
ক্রিয়ার
ব্যান
গ্রান
ব্যান

অন্ধনারকেও বিষয়ন তিশাতে নিম্নেশ্র করে য়াছেন, যথা,

"হংগ্ৰোখিতদা দৌৰ্থ ভয়ো-বোৰো কৰে প্ৰিঃ। সা চাৰবৃদ্ধ বিষয়া হৰবৃদ্ধ ভয়া ভয়া

সংগ্রি কানের অবকার-বেকি সংগ্রেখিত জাতিব হতি-পথে উপনীত হয়; প্রক্রাত বিন্তুসকলেরই হতি সন্তবে; অভএব, স্বৃধি-কানের অধানার ইবৃধি-কানে ক্রান্ড চিন।

এইরপ, উতয় দর্শনের মতেই দাড়াই-তেছে যে, জড়-বন্ত, ফণ্মের বিশ্ব, ভাবনার বস্তু, আকাশ, কাল, ইত্যাদি যত প্রকার অনাত্ম-বিষয় আছে তা'দে বস্তুই হউক্ আর অবস্তুই হউক্ সমস্তই বিষয়-শ্রেণী-ভুক্ত। কিন্তু অনাত্ম বিষয় সকলই কি কে-বল বিষয়, আত্মা কি বিষয় নহে প বর্ত্তমান গ্রহের জ্যান-তত্ত্বের প্রথম সিদ্ধান্তে দেখিতে পাওয়া যাইবে বে, সার্থীয় ভেতর বিষয়ের মধ্যে আত্মাই কেবল একমাত্র নির্ভ্রম ক্রেন্তির বার্থার্থ স্থাপুর প্রতীর্থান হইবে স্বাধার্থ স্থাপুর প্রতীর্থান হইবে স্ব

জনাত্ম-বাদী। আমি উপন্যাস-পারে এমনি নিগগ্ন ছিলাম বে আমি বে পারি করিতেছি—সে বোধ তথন আমার ছিল না।

আত্মবাদী এ এখন শ্বেশা তৌমার শ্বরণ হইতেছে যে, তুমিই পাঠ করিতে-ছিলে?

অনায়-জানী সে কি কথা,—এখন বাদ ভাহা আনাৰ অৱশ^তনা হইবে, তবে কিরপে আমি ভোমার নিকটে ভাহা জ্ঞাপন ক্রিভে পারিব ং

জাত্ম-বাদী । ভূকে বহুরই রৌন্ছন

ইয়, জ্ঞাত বহুরই ত্মরণ হয়,—এই তো

জানি। তুরি বলিতেছ বে, লাট-কালে তৌ

মার এ জ্ঞান ছিল না হে, হুমি লাই কালি

তেছ, অথচ এখন জোবাই নাম্য ইনির বৈ, তুমিই পাঠ কালিকেলি

হিল না, অকলাং এখন ভাষা ভোমার স্মরণে উৰোধিত হইয়া উঠিক। যে শক্তির সহিত Colais काम-कारम्ह नाकादकात नाहे, দে ব্যক্তিকেও তুমি তবে স্থানণ করিতে পার। এ-টি তোমার কাছে আমি আজ নূতন শুনিতেছি। এ যদি বলিতে যে, উপ-নাবের প্রতি তোমার পোনেরো জানা মনোবোগ ছিল এবং তুতামার আপনার প্রতি ্ৰুত্ব কেবল্-এক আনা মাত্ৰ মনোযোগ ছিল, र्छाहा इरेटन कान शिन हिन ना; किस ज्ञि विनटिक एर, शाठे काल जुनि मूलिए দ্ধান না যে, তুমি পাঠ করিতেছ, আর, দেই না-জানা বিষয়টি এখন তোমার স্মরণে আ-বিভুত হইতেছে! অগ্রে দাক্ষাং জ্ঞান পরে স্থান – এই তো জানি সম্ভবে : কিন্তু নাকাৎ फहारनंद नाम-गंका । नाष्ट्रे — व्यथे प्राप्तर्ग ! এটা তো কিছুতেই আমার কুদ্র বুদ্ধির গলা-पःकत्र^भ इहेटल्ट्स् ने।।

অনাত্মবাদী॥ বলিয়াছ ঠিক্। উপ-নাাস্ব-পাঠের সময় নিশ্চয়ই আাম জানিতেছি বৈ, আমিই পাঠ করিতেছি; কারণ, অপ্রে খদি তাহা স্থামি সাক্ষাৎ সম্বন্ধে না জানিক, তবে পরে ভাহা কিরুপে আমার স্মরণে উপ-श्वि रहेरत? भाठ-कार्ल, छेलनारमत श्रिक व्यागांव रवक्रभ त्यारनद्वाः व्याना गरनाहवात्र ছিল, তারার তুলনায় আমার আপনার প্রতি चडीर धरगामाना मदनाटवान हिल - ७३-माज, जार्भनात क्षेत्रि ग्रतहे दव जामात नत्नातात्र हिन ना - देश द्वान काटकत क्या नरहा अयन वृत्तिमात्र देश, आक्रमान एक एक एक वा भाषादमक वातरावारे महत्व, क्षेत्र अस् अस् कावाच कार्यकर नाक्र ननी : च्याः टालाकेकान समय महस्त हात्र, माश्रकान स त्रहेक्न सामास्कात है CERT THE THE CALLEY A STATE OF THE PARTY OF

হারই সঙ্গে জানি যে, আমিই জানিতেছি।
তেরা বিষয় অনেক আছে;—ঘটি একটি
তেরা বিষয়,বাটি একটি তেরা বিষয়, ইত্যাদি;
কিন্তু তাহাদের কেংই নিরস্তর তেরা নহে—
ভলন-মাত্রেরই অবিভেলা এছচর নহে;
যাবতীয় জেয় বিষয়ের মধ্যে আয়াই কৈবল একমান্ত নিরন্তর-ভেলা। পাকসশাব প্রার্থকার তাঁহার গ্রন্থের একস্থানে বলিয়াছেন।
"স্বিদিয়া সমান্তানং বাহাণ বেল নতু কচিহ"

सामनादक ना जानिया दक्ष्ट बना दकान दिश्यदक सानित्क भारत ना।

তবেই হইল সে, জ্ঞাতা যাহা কিছু
জানে তাহারই সঙ্গে জানে যে, "আনিহ
জানিতেছি;" জাত্মা, জ্ঞান-মাত্রেরই, নিবভরভেয়। এইটিই অনিকল বর্তমান এছের
প্রথম ধণ্ডের প্রথম নিজান্ত। নিল্প-লিখিত
কতিপয় পংক্তি বেনাস্ত ম্পনের মূল গ্রন্থের
শাস্কর ভাষা হইতে উদ্ধৃত;—

"দুখংগ্রারাপেজ্সা চ প্রারালা বিষয়হং এবীষি হ''

"ন তাবদয়ং একাত্তেনা হবিষয়ঃ। স্বাস্থ প্রত্যন্ত্র বিষয়ত্বাং।"

জাৰ্থ ।

প্রশ্ন । যাহা "আমি" ভিন্ন আর কোন কিছু ব-লিয়া নিদিষ্ট হইতে পারে না, সেই নিকট্টম আত্মাকে ভাম বিষয় বলিতেছ ?

উত্তর। আরা যে, একাস্তই বিষয় নহে, তাহা নহে; যেতেতু আস্থা অস্থৎপ্রত্যাসের বিষয়। অস্থ-প্রত্যায়ের অর্থাৎ সাম্মন্তানের।

এইরপ দেখা যাইতেছে যে, বর্তুমান দর্শন এবংশ শান্তর দর্শন উভয়েরই মতে আন্তর্মা ভোষ বিষয়। এখন জ্ঞানের নবিষয় কত প্রকার ভাষা দেখা বা'ক।

কত প্রকার তাইন দেখা বা'ক।

আনের বিষয় তুই ভাগে বিভক্ত,—

আহা এবং অনাছা। অনাজ-বিষয় তুই
ভাবে বিভক্ত,—বাভবিক (যেমন দৃশা স্পূশ্য
ইড়াদি) এবং অবাভবিক (যেমন কাল,

বিষয় অবকার ইড়াদি)। কাভবিক বিষয়

তুই ভাগে বিশ্বন প্রত্যক্ষ (যেমন উপস্থিত দৃশ্য-স্পূন্য বিষয়) এবং পরোক্ষ (যেমন অমু-পস্থিত স্মৃত বিষয়)। অবাস্তবিক বিষয় তুই শ্রেনীতে বিভক্ত, মানোময় (যেমন সংগ্রের বন্ত) এবং অভাব রূপী (যেমন শূন্য কাল, অন্ধকার, নিস্তব্যক্ত, ইত্যাদি)। এই শ্রেনী-বিভাগটি নিম্নে লভাবন্ধ করিয়া প্রাদাশিক ক্রিয়া;—

विषय (व्यक्षः (विषयः (व्यक्षः (व्यकः (व्यक्षः (व्यकः (

্ এই গেল জ্ঞানের বিষয়। এখন জি-ख्यामा এই या, नारनाक्छ ख्वारनं विषय-चक्रकाद्व छात्नव दिवस, छछ-वस्त्र छा-নৈর বিষয়-শ্না আকাশও জ্ঞানের বিষয়-अ योप इरेल. - ब्लाटनत व्यविष्य 'ठाव कि ? বর্ত্তমান দর্শনের মতে হাহা স্ববিরোধী ভাহাই ভানের অবিষয়; এক-পৃষ্ঠক পদ্র অর্থাৎ যে পদ্ৰের কেবল একটি মাত্র পৃষ্ঠা– তদ্বাতীত দিতীয় পৃষ্ঠা নাই-ইহা জ্ঞানের অবিষয়; নিও ৰ বল্ত, অৰ্থাৎ যাহার অস্তিভ আছে কিন্ত না তাহার আপনার জ্ঞানে—না অনা কা-হারো জানে কোন জানেই সে অভিছের खिशन कि **, मारे - देश , ज्ञारनत** प्रविश्व ; চিন্তাতাত বিষয়ের চিন্তা জ্ঞানের অবিষয়, ইত্যাদি । এই স্ববিরোগ্নী স্ববিষয় যে কিরূপ জাহা প্রথম খতের চতুর্থ-সিদ্ধান্তের শেষ ভাবে স্ভাইরণে নির্মাচিত হইয়াছে,

"Dose this contradictory nondescript exist?

This system is as far as any system can be from maintaining that matter per se is a mementity—a thank. All blanks, all nonentimes, require to be supplemented by a fine" before they can be socitable, just as much as all things or entities require to be thus supplemented. But matter for se is by its very terms, that which is sheeppearented by

any "me;" therefore it, certainly, is not to be conceived as a nonentity. If idealism be a system which holds that matter per so is nothing, we forswear and denounce identisms True idealism, however, nover maintained any such absurd thesis. But does not true idealism reduce every thing in the universe to a mere phenomenous of consciousnessy suppose it does, -does it not also reduce every nothing in the universe to a mere phenomenon of consciousness? The materialist copposes that, according to "idealism, which a loaf of bread ceases to be a phenomenon of consciousness and is locked away in a dark closet, it must turn into nothing. He might as well fancy that, according to idealism, it must turn into choese. Idealism does not hold that when a thing ceases altogether to be a phenomenon of consciousness, it becomes another phenomenon of consciousness, as this supposition would imply. No-in the absenre et all consciousness, the loaf, or whatever it may be, lapses, not into nothing, but into the contradictory. It becomes the absolutely incogitable -u surd-from which condition is can be redocined only when some consciousness of it is either known or conceived." 34

ইচার সংক্রিপ্ত মর্ম্ম এই সে, অভিনয় रि भगत कान स्वात्में श्रीकान शहर करे ना म गुमर्म छोड़। किक्रण १ छाने बहिं छ ছাড় বস্তু স্বতঃ কিরূপ । হয়—তাহা "কিছু." অধাৎ ভার-পদার্থ ; নয়—তাহা "কিছু না অर्था९ असकातामित नाश ं अछार-भमार्थः নয় ভাষ্ট্য "কিছু অণচ কিছু না", অর্থাৎ বৰ্ত্তমান মুহুৰ্ত বেমন যখনই আছে তথ-नहें नारे- बार्ट ज्या नारे- खेश रि मनि अकता ,विद्राय-भगर्थ ;--क्कान-दिव्हु छ জড়বন্তু, সভঃ, এই তিন শ্রেণীর কোন্ শ্রে-ীয়া অন্তৰ্গত ? ভাহা "কিছু"র দল-ভূজা ना "दिष्ट्-ना"त मग-पूछा, ना "किष्ट् व्यवद किट्ना"त पनपूर्क र अपि का व्या "কিছু," তবে দাঁড়ায় এই বে, ভাষা মট্যানা नित्र नाहा छान-रशास्त्र अवस्। विकास जारा एहेरन जोड़ जार व्यक्तिशास्त्र करेरन

না; বদিবল বে, তাহা "কিছু না," ত্বে দাঁড়ার এই যে শুনা আকাশ—শুনা কাল—
অন্ধকার—এই সকল অবস্তর ন্যার, ভাষা আন-পোচর অভাব পদার্থ; কিন্তু জ্ঞান-বিভূত অভ্যৱন স্বরূপ-লক্ষ্মই এখানে জি-জ্ঞাসা নহে; তবেই দাঁড়াইতেছে যে, "কিছু অথচ কিছু না" ইংাই জ্ঞান-বহিভূত অভ্যক্তর স্বরূপ। জ্ঞান-বহিভূত অভ্যক্তর স্বরূপ। জ্ঞান-বহিভূত অভ্যক্তর দার পদার্থও নর, অভাব-পদার্থও নর,—তাহা বিরোধ-পদার্থ। বেদান্তমারে অবিদ্যার মেরূপ লক্ষণ নির্দিপ্ত ইইয়াছে, তাহা অবিকল এরূপ, হণা;—

'সাদসভ্জ্যামনির্নাচনীয়ং ত্রি গুণায়কং জ্ঞান বিরোধি ভাব-রূপং বৎক্ষিথ । "

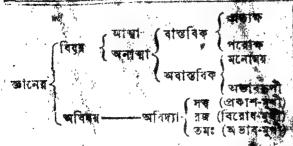
অর্থ।

তাহা আছে কি কাই তাহা বলৈতে পানা যান মা
অধাং কিছু নগচ-কিছুনা এইরপ বিভাগেল্পদার্থ;
তি ওণান্তক অধ্যং অকোশ অপ্রকাশ এবং অভিনত।
এই জিলাবিরোধী লক্ষাক্রান্ত; জ্ঞান-বিরোধী ভাবক্রী একটা কিছু।

অবিদাকে ব্রিপ্তপাত্মক বলিবার, তাৎপর্য।
কি দেখা বা'ক। জ্ঞান-বহিত্ ত জড়বস্তা গে
দ্রুংশে জ্ঞানের নিকট হইতে লুকাইয়া থাকে
গৈ অংশে ভাহা জানাগুণ;—"কিছু অগচ
কিছু না" এই বে, অবিদ্যা, ইহার কিছু-নাঅংশটি তবোভনু; স্পর্বিত্তা যে অংশে
জ্ঞানের নিকট জ্ঞানা-যোগ্য, দে অংশে
ভাহা সম্ভন্ত কেন্দ্রা, আন্তন্ত নিকটে
লাক্ষ্যিক ক্রিক্তা স্থানিক ক্রিক্তা
ক্রিক্তা বিশ্ব ক্রিক্তা
ক্রিক্তা
ক্রিক্তা বিশ্ব ক্রিক্তা
ক্রেক্তা
ক্রিক্তা
ক্রেক্তা
ক্রিক্তা
ক্রিক্তা
ক্রেক্তা
ক্রেক্তা
ক্রিক্তা

ण्डि ब्राह्माका। कज़रस्त, यक्र शतः **्य जर्दम**् **छोरा छात्मत्र ज**्याहत, त्यर **षर्म, षविना।-भटि**कत वाहाः (ग- बर्ट्स ভাষা জ্ঞানের গোটর সে জাশো তাহা অ-* विमा नटश कान व्यर्भ-मान्डमा ; व्हा-নের বংস্পর্শ মাত্রে অবিদ্যা বিদ্যাস পরিণত হয়—স্ববিরোধী অবিরোধীতে পরিশত হয় – षनिर्वहनीय सनिर्वहनीय পরিণত হ্য। জ্ঞানে প্রকাশ পাওয়াই অবিদ্যার মূর্যু, এবং व्यविनात युर्हे तिनाद जगा। গর্বেই অবিদ্যার মৃত্যু প্রক্তর রহিয়াছে বি-न्तात वीख क्षेत्रज्ञ वश्यादल – मङ्ख्य टाळ्क সত্ত্ব-গুণের প্রাত্ত্রার (জংগং ভানে প্রকাশ পাওয়া) যদিচ অবিদারে মুচ্য-স্বরূপ, কিন্তু দেই মৃত্যুই অবিদার জীবনের একমাত্র উদ্দেশ্য। সভ্তৃণ-প্রধান অবিদ্যা সতীর সহিত উপমেয়; রজোগুণ দক্ষের মহিত উপমেয়; জ্ঞান শঙ্করের মহিত উপ-मक्य रययन मक्दतत विद्वाधी, तद्या-গুণ সেইরূপ জ্ঞানের বিরোধী; সভী যেমন পতি-প্রাণা, সত্ত্ব-প্রধান অবিদ্যা সেইরূপ জ্ঞান-প্রাণা; সতী যেমন প্রাণ-ত্যাগ করিরা উমা হইয়া জন্তাহণ কৰিয়াছিলেন, সত্ত ভণের প্রাতৃষ্ঠাবে অবিদার্য সেইরপ প্রাণ-ত্যাগ করিয়া বিদা। ছইয়া জন্ম-গ্রহণ করে। णविमा (क्**रन, कीय मिशाटन हे खिन**ा, जेसत-সন্নিণানে তাহা বিশুদ্ধ সত্ত্ব-শ্ৰৰ-মাত্ৰে পৰ্য্য-ৰসিত; কেন না পূৰ্ণ জ্ঞানে সমস্তই প্ৰকাশ-শান কিছুই অপ্রকাশ থাকিতে N 1

থাইরপ দেখা যাইতেছে যে, জ্ঞানের— বিষয় নামকেও ষেমন—অবিষয় সম্বক্ষেও ক্ষোনি উভয় স্প্রেরই মতের ঐক্য বিষয়েক নিমে জ্ঞানের বিষয় এবং ক্ষানের সমস্তই লভাবদ্ধ ক্ষিয়া প্রদর্শিত



এই তো গেল জ্ঞানের বিষয় এবং অবি-বর। এখন আত্মা এবং অনাত্মার পর-স্পারের সম্বন্ধ বিষয়ে তুই দর্শনের কিরূপ ঐক্য তাহা দেখা যা'ক।

নিম-লিখিত তুইটি শ্লোক পঞ্চদণী হইতে উদ্ভঃ

" "অহমৃতি বিদষ্ তিরিতাস্তঃকরণং দিধা।
বিজ্ঞানং স্যাদম্য তি রিদংবৃতি শানো ভবেৎ।
অহস্তান্তর বীজ্য মিদশ্ তেরতি ক্টং।
অবিদিয়া স্থান্ত্রানং বাহারেদ নতু কচিৎ॥"
অর্থ।

অন্ত:করণের বৃতি ছই প্রকার, — প্রহংবৃত্তি (পর্থাৎ আছাবিষদক বৃত্তি) এবং ইন্দৃত্তি (পর্থাৎ অনাক্ষ বিষ্
ক্রিক ক্রি)। অহম্বতিই বিজ্ঞান এবং ইন্দৃত্তিই নন ইহা প্রতীয় পাই বে, অহম্প্রতার (আল্বান্তান) ইন্দৃত্তির (আলাক্ষবিষদ জ্ঞানের) নীক্ষ স্বস্থা। ক্রিন্, আণ্লাক্ষে না জানিয়া কেরই স্বা কোন বিষয়কে জানিতে

প্রদেশীর এই করেকটি কথা বর্তুমান
প্রছের বর্ত্তমান থাবের আপাদ মস্তক অধিকার
করিয়া রহিরাছে; অত্রব উহার অর্থের
প্রক্তিমান্তির প্রতিধান করা কর্ত্বন। জ্যানকারেকট চুইটি রুজি; তাহার মধ্যে একটি
আন্দর্লাকে লইয়া ব্লাপত হয়—এইটি অহকরি জার-একটি অনাজ-রিমায় লইয়া ব্যাপ্ত
ক্রা-এইটি ইন্স তি। কি অভিপ্রামে অন্
করা করিছের করি ইন্স করেন বর্ত্তমান করা করিছের করি ইন্স করি আন্দর্শন করা করিছের
করা করিছের করি ইন্স করি করিছের করি করিছের
প্রক্তিমান্তির বিশ্বেষ করিছের স্থানিক করিছের
প্রকৃতি বিশেষ রিম্নের স্থানিক ভারতির করিছের প্রকৃত্তমান

কাৰ্যা। বৈ কোৰ নিজাৰ (বেনন কোতিৰ বিজ্ঞান) ভাৰাৰ নাধাৰ **उड्डांन इंडिश रक्लिल, बिर्मेंय विरम्य** বিষয়ৰ যায়ৰ অবশিপ্ত থাকে, ভাৰা বিজ্ঞান नाटमब कट्याना । व्यञ्जद,काटनब रि व्यस्न সাধারণ তত্ত্ব-গর্ত তাহাই বিজ্ঞান-শব্দের 🖔 वाछा ; जात, त्य ज्ञान वित्नव वित्नव विका-गर्ड जाहारे मनःभटमत्र वाहा । परमृद्धि ষদি সাধারণ-তত্ত্বর্ত্ত হয়, তবেই ভাছ। বি-कान भटकत रोहा, नरहर नान कारे, शिन ইউরোপের একজন প্রধান ভবা কর্মবর্ ভাহার মতে অহম তি ("The I Think " অৰ্ আমি চিন্তা করিতেছি বা আমি স্বানিতেছি,— এই ব্যাপারটি) এমনি একটি ব্যাপকতম সাধা-রণ তত্ত্ব যে, তাহা বিজ্ঞানের সমস্ত মূলতত্ত্বে-রই ভিত্তি-মূল। অতএব পঞ্চদশীর এই যে এकि कथा (म, षश्यु खिरे निष्ठान, हेशांक ''দেকেলে' বলিয়া উড়াইয়। না দিয়া ইহার তাৎপর্য্যের প্রতি যতুপূর্মক প্রীশান করা কৰ্ত্বা। একটা কোৰ অনীয়-বিষয় ধর--थागाम्ब कामाण्यस्य नि (श्यम घष्टे; थाकित्म । थाकिए भारत । थाकित्म । ना-वाकिए शास-पर्वेद निर्देशक शह থাকিতে পারে পটের পরিবর্তে আর একটা किছू शक्दि शाद्य अञ्चन घरे-भरामि विद्या-मुक्त कादन किटल्स विद्वार सम्दर्भ विट्निय विट्निय विषय - नहर्त सुनदार जाया किन्न वर्षे**लको व**तारे समिन त्र कत नदर। তেছি ক্ষমনও আমি আমিটেটি হে আমিই वानिक्षांह,--रहत पानि के वातिकि पर्वे जानिक निर्णिक तर् POR : FORKLAND WINDS ("The I think's JE or were mirelated कारन रिकेट नेरान्य अस्तिह विदास १ राष्ट्र श्रीष-रेपः स्थानक अव CHARGE VIEW CHARLES

भरम् कि माधाइन उद्वनका शुर्का विन्हारि (এवः विकान-नाज माजहै याभारमद अ क्याद यापाला ब्रक्षमान क्रिटक्टक) (य, क्यादन्त (य णध्न नाशातन **७ इ**-गर्ड छाहाह विस्तान-निक्त वाठा ; , अञ्चल शकनभीत व कथाति षकारे (य, बह्क् जि विख्यान। जश्यृतिहे एक मूल विद्धान, किशा वर्डमान अक्टूब थापम খণ্ডের অন্তম বিদ্যান্তে দ্রীতিমত প্রমাণ করা হইয়াছে । পঞ্চশী ভাহার পরে বলিভেছেন रा, "बर्ष्य गांग-वीजव सिन्ध हर्छ त्रिक्तु हेर" ইহার অর্থ এই যে,আক্মজ্ঞানই অনাক্মজ্ঞানের বীজ কি না ভিত্তি-মূল ; এই .বচনটির সপক্ষে বর্ত্ত্বান গ্রন্থের প্রথম বিদ্ধান্তের গোড়াতেই আছে যে,জ্ঞাতা যাহা কিছু জানে, তাহার দেই জ্ঞানের ভিত্তিমূল স্বরূপে আপ-নাকে কিছু-না-কিছু জানা তাহার নিতান্ত অবিশ্যক; সংক্ষেপ্তে, অনাত্ম-জ্ঞান মাত্রই **আত্ম** জ্ঞানের অভিয়-দাপেক্ষ।ু এই**রূপ** ে দেখা যাইতেছে যে, আত্মা এবং অনাত্মার পরস্পর সম্বন্ধ বিষয়েও তুই দর্শনের কোন यज- एक नाहे। जबादन दम मचक्रि छात्र-একটু স্পান্ত ক্রিয়া খুলিয়া দেওয়া আব-শ্যক। সাধার্ণ-তত্ত্ব (যেমন "যে জড়-পিতের পনত এবং বিকৃতি যত অধিক তাহার আ-कर्वन-मंकि जुडे श्वतन" क्रूहे अक्षि माधावन তত্ত্ব) নিমন বাজ্ঞ করে, এবং তাহার অন্তর্গত बिरन्द विरमय दिवतन (रथमून अहानित अिविधि) तिह निषय मानिया हत्न ; नाधा-त्रन छ दू निशासक, এवर छाहात स्थीनस विद्रमेष विद्रमय विवत्रन निष्ठमा - जूदब्र गर्था श्रद्धिक निवस्या-निवायक मुक्क । माथा-में जब गर्ड परेष्ठ कि रा मन विकान वरः क्रिय रिएक विस्तानाई केल्या है से एक 4 STATE TOTAL PROPERTY PROPERTY PROPERTY. fedine reas , spile and beet fo (PITTE AL FRENCH) FARTHER MEN

(मदनाइंडि वा इन्तिय ग्रंडि) निक्रमा। भवास पूरे मर्गद्वत मत्या दक्तल क्षेकारे छेन-लिक कता शल- व्यत्नित्कात विम्मृतिमनी पृष्ठि- (गाठत इहेन ना। अथन क्या अहे (य, यानिनाय-प्रस्ति देपपृत्ति निशासकं ত্বত ক্লং পূৰ্বেলিজ বৃত্তি শেষোক্ত বৃত্তি অ-পেক্ষা উচ্চ প্ৰবীষ; কিন্তু তাহা কলিয়া কখনো কি এরূপ হইতে পারে যে, অহম্ছতি আপনার সেই উচ্চ পদর্বাতে ঐকান্তিক ভর করিয়া দাঁড়াইয়া ইদফ্তির সহিত একেবারেই সম্পর্ক পরিত্যাগ পূর্বক একাকী অবস্থিতি করিতেছে? গদি বল যে, হাঁ----তাহা হইতে পারে, তবে তুমি অচৈত-वानी ; यिन वन (यः, न।—ভाहा हहेटल भारव न।, जरत जूमि दिवजानी। এই यে এक हाँ न।, এই সুক্ষা সূত্রটিতে জুই দশনের সমত মত-ভেদ লম্বনান রহিয়াছে।

(२) डें इंद्रबंद बंदेन 🗀

এখন আমর। বিশ্ব এক সংকট স্থানে
উপস্থিত হইয়াছি। এই স্থানটি স্ব-বিরোধে
পরিপূর্ণ। পঞ্চদশীর গ্রন্থকার এইমান্ত কলিলেন 'অবিদিয়া স্থাজানং বাহাং বেদ নতু
কচিৎ " আপনাকে না জানিয়া কেহই
অন্য কোন বিষয়কে জানিতে পারে না; "
ইংাতে প্রতিপন্ন হইতেছে যে, আত্মা আপনাকে জানে—আত্মা আপনিই আপনার জ্রেয়
বিষয়। স্তরাং আত্মা জ্রেয়-বিষয়ের শ্রেমীভূজা। আর, ইতিপূর্বে আমরা দেখিয়াছি
যে, শঙ্করাচায়া সয়ং আত্মাকে জ্রেয় বিয়য়ের
দল-ভূক্ত করিয়াছেন—"অ্মাৎ প্রতায় বিয়য়ত্মাণে বে হেছু আত্মা আপনি আপনার
ভানের বিয়য়; কিন্তু অন্তিপ্রেই পঞ্চদশী
বলিতেছেন।

"সম্ম্বাহত্তিভাৎ বিগতে নাহতাব্যতা।

ত্তিত্ব বিশ্বতি নাহত বিশ্বতি নাহত বিশ্বতি ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্

एक्स के बार का का का का का के बार बार का कि त रका इस्त-कारार भारत नार्के होता नरह।

चनार, जनाच-विश्व-तिकत इटेरिल जिल (वेश खोन, हाहार चनाक नियंश-भकनरक बारन ; किंब अवान-रहेर्ड जिन्न धनन कि-वस्त बादक बाबा कान्दक बानित्व ? प्लादनद प्रना देशन काला नारे विलग्नारे ज्ञान भटक कारना अस्तिक नार बिना नटर। देशाएक काँज़ाहराजद्व थारे त्य, ख्वात्नत्र ৰতিৰ আহে অৰচ সে অন্তিৰ কাহারো भावकि श्रमा नट्ट, त्राट्टक छान ज्ञा क्षाक्ष स्थाकिए जाना कर्क বিষয়াৎ সনাসা কর্তৃক) জেই না হওয়া অপ-রাধে একে বেই অফেরের অন্বক্পে বল-পূर्कक निकिक्ष **रहेन। देहरुवां**नी ख यांना-तिर्विवादम् बाहेट पिट पाद ना-छ।है सिन्न-निष्कि वामानूवाम ;-

दिख्वामी 🌓 याहा कना कर्ट्क छात्र নহে কিন্তু আপনা কর্তৃক জেয়, তাহাকে কি टक्ट्य विनिष्ठ भारत वाम ना ?

े प्रदेव ज्वामी ॥ दतम शांता माहेरव ना ? আপনা-কর্তৃক্ট হউক, আর, অনা-কত্কই रुकेक, स्क्रब्र (व+रम स्क्रव्य । ७ क्वा अ**व्य** महक क्या माहि गाड़ियाँ चाटि ।

ছৈতবাদী ॥ খুদ্ধি বলিতেছ—যাহা আ-भना बाईत एका प्रोहाउ एका, गरा जना-कहन त्या डाहा । स्थात, चारकात, छारा,

14 6 बहिब्छराष्ट्री । बाश बालना-कर्ट्क्छ त्या निष्क, बना कर्षके एखर नत्र, जाराहे

बट्डिंग,। उड़त कि शाका मानाना १६० व यना वर्ष काराहत नेक क्या महार में कार्य करेश और

स्रोतक्रानी । वशेष ग्रामक्रीक अवस्त्र रहेत्र त पानमा वर्ष-

কওু ক্রেয় नट्र ।

देवज्यामी। किस प्रि वार्शनह राम-য়াছ "অবিদিয়া স্ব্যান্তানং বাহাংবেদ নত্ नष्ट्र किए" जानाक ना वानिश किएर অন্য কোন বিষয়কে স্থানিতে পারে ন।। তোমার আপনার কথা অনুসারেই দীড়াই-তেছে যে, আত্মা যেমন খনানা বিষ্ণাকৈ জানে,তেমনি তাহায় দকে দকে আপুনাকেও জানে: তবেই হইল যে, আত্মা সাপনা-কর্ত্তুক ভেচয়। আর, এইমাত্র তুমি বলিলে, কাঁহা আপনা-কর্ত্ক জের তাহাও জের; পত্রব তোমারই কথার দাঁড়াইতেছে যে, আঁপা জ্বো। এখন তুমি তাহার উল্টা বলিতেছ--এখন বলিতেছ আসা অভ্যেয়! ইহার কোন্টা ঠিক্ গ

चरिष्ठ-वानी ॥ ७ पूरे कथात्र गर्धा-বিরোধ তো আমি কিছুই দেখিতেছি না। আমি কি বলিয়াছি ৷ আমি কেবল বলি-রাছি যে, আত্মা যথন যে-কোন অনাত্ম-বিষয়কৈ জানে, তথন, তাহারই সলে গে আশনাকে ছানে। কিন্তু যখন লে কোন जमाज विवहत्वरें ना आहन, छपन कि एत ? তখনও কি সে আপনাকে আনে ! নিক্ল-भाधिक फ्लारनद फेन्ट्सब नदन मत्न स्व हेन स् किंद অন্তগমন জনিবাৰী, এবং ইদস্ভিয় অন্তঃ গমনের সঙ্গে সংস্থা অহস্তির অক্সমন -অনিবাধ্য। সমাধি-কালে ইদস্ভির উট্ছে-(मह महत्र महत्त्व विक् विक क्षेत्र मिल इहे. ज्यम त्रवस् अव विक्रभाषिक स्वान क्रान्त्र वाद्वा छात्मा बाउव मूर्विक ক্ৰেন্ত তুমি বলিভেদ্ সাখা কৰে কেই, তৰ্ণত তেম্ন সাকে—ৰ্যা the are one towns and

শৃতিও উন্নিত হইয়া যায়, এ কথা আমি

স্কান্তঃকরণের সহিত শিরোধার্যা করিছেছি;

কিন্তু ত্মি বে বলিতেছ বে, অহন্দৃতি অন্তহিত হইলেও জ্ঞানের অন্তিম্ব থাকিতে
পারে—এ কথার আমি কোন ক্রমেই সায়

দিতে পারি না; তাহা শুরু নয়, যে-কারণে
আমি তোমার পুর্কোক্ত কথা শিরোধার্যা
করিতে বাধ্য হইতেছি, সেই একই কারণে
আমি তোমার শেনোক্ত কথা শিরোধার্যা
করিতে অসমর্থ হইতেছি।

অহৈতকাদী। দে কারণ-টা কি ভাহা বাক্ত করিয়া বলিলে ভাল হয়।

ছৈতবাদী। বাক্ত করিয়া বলিতে আমি বে, কুপিত, তাহা মনে করিও না; তবে কি না—গুহাইয়া বলিতে একটু সময় লাগিবে, ভাহাতে যদি তোমার আপতি না থাকে, ভাবে সংকোচের অনা কোন কারণ নাই— সমস্তই বাক্ত করিয়া বলিতেছি;—

কোন একটি বস্তাধর—ধেমন রক্ষ; রক্ষ মাত্রেরই এরপ কতক-গুলি লক্ষণ থাক। চাই, যাহা শাল তাল তমাল প্রভৃতি সকল রক্ষে-ब्रहे माधावन लक्ष्यु ; ७वः महे माधावन ल-का छिनद मस्टिंदिक आयदा मः एकरश द्रकृष বলিয়া নির্দেশ করিয়া থাকি। কিন্তু এরপ একটা রক্ষ আম্বাকে দেখাও দেখি বাহার एक (कर्म के माधातन नक्ना हि (तुक्छ न-क्-१-विरे) बार्ट, उडिज्ञ निर्मन नक्न এ-কটিও নাই ? কথনই ভাষা পারিবে না। বদি বট রক্ষ দেখাও, স্কবে, তাহার যেমন रुक्त बारक राज्यान छाहात मरत छाहात 'रिएक मार्टक अनि दम्बनाक दम्बाक, जटद, ভাহার বেমন ব্ৰহম আছে, তেমনি ভাইার HET THE CHAPTER STATE I .. MICH अकि छि इक छूप यागारक त्रभावक ना विदेव ना, बाहाब अपूर एक्पक क्रम बादक

এ বেমন দেখা-গেল—জ্ঞানেরও অবিকল শকল রক্ষের সঙ্গেই যেমন রক্ষ এইরূপ। **লকণটি ক্রমাগতই লাগিয়া আ**ত্তে, সেই-সঙ্গেই সকল GOIC-III জানিতেছি" এই জ্ঞান টি নিরন্তর লাগিয়া আছে; আত্ম-জ্ঞান সকল জ্ঞানেরই সা-ধারণ ধর্ম। কোন একট যেমন ভদ্ধ কেবল তাহার সাধারণ ধর্মাটির (রুক্ষত্বের) উপর করিয়া ভা**হার বিশে**য লক্ষণতির সহিত (যেমন শালত্বের বা তালড়ের বা আর-কোন-কিছুত্বের সহিত্ত) একেবারেই সম্পর্ক পরিত্যাগ করিতে পারে না, সেইরাপ কোন জ্ঞানই শুদ্ধ কেবল তাহার সাধারণ ধর্মাটির (অহন্দ ভিটিন) উপর ভর ধরিয়া ভাহার বিশেষ লক্ষণটির সহিত (গট-জ্ঞান, গাকাশ-अक्रकोत-छान, मत्ना-द्राष्ट्रा-छान, এই প্রকার কোন-না কোন জ্ঞানের সহিত, এক কথায়—ইদম্ভির সহিত) একেবারেই সম্পর্ক পরিতনাগ করিতে গ্রারে না। বৃক্ষন্ত ভিম যাহার আর কোন কিছুত্বই নাই—এরূপ রুক্ষের অস্তিত্ব যেমন অসম্ভব, তেমনি অহ-পৃত্তি ভিন্ন যাহার আর কোন রতিই নাই এরূপ জ্ঞানের অন্তিঃ অসম্ভব। কোন পত্রই ধেমন এরূপ হইতে পারে না যে, ত্তম কৈবল তাহাব একটি-সাত্র পৃষ্ঠা---তা'ছাড়া দিতীয় পৃষ্ঠা নাই, সেইরূপ কোন কৃষ্ণ এরপ হইতে পারে না বে, তাহার কেবল বৃক্ষত্বই আছে—আর-কোন কিছুত্বই নাই, কান জ্ঞানই এরূপ হইতে পারে না যে, শুদ্ধ কেবল তাহার অহন্ত তিই আছে— ইদস্তি মুলেই নাই। এ বিষয়ে তো-बाब श्राबाद यहा गङ एडम नाष्ट्र। छट्ट ভূমি কেমন করিয়া এমন একটি প্রের অ-শ্তিক স্বীকার করিতে ছ যাহার তুই পৃঠার दिनान शृष्टीर नारे - ध्यम এकि बुद्दकत ज-ক্ষমীকার করিতেছ বাহার রক্ষত্বপর্যান্ত

न है - अमन्यकार्वे कार्यात्मत्र वास्त्रक श्रीकाव াবতেছ গাহার পাইছ তি পদান্ত নাই। তোৰার #০ একণ সিদ্ধান্তের আমি কোন वर्ष है शिक्या शाहरति न। ८१-कान বিহেছি বাগুনাকে জানে না স্তরাৎ জাপ-नाद अख्य छेलान करत ना-त्म कारनत প্ৰিক্তিপাৰ ব্যক্তি কিব্ৰূপে উপলব্ধি ক-ক্রিকেই যে জ্ঞানের অন্তিত্ত উপ-ৰাঁ, সে জ্ঞান আছে ইহা কে বিক্রিক ভানই জ্ঞানের থাকিবার স্থান। भाषनात छ्डाटन दिनागान ना **শ্রেক্ট তবে** আর কোপায় থাকিবে ? क्षाम् भागनात क्लाटन नाहे - एव् एकवन তো মুখের কথাতেই আছে এএল थाति है वा कि, बाब, ना थाकितन है वा কি কান নিজে আপনার অভিত্য উপ-লুকি কনিফুছে না, যাহাঃ অভিত্য—সে **ুব্য উপ্লব্ধি করিতেছে না,** অথচ তুমি শ্বিতেই বৈ তাহার অন্তিত্ত আছে যেন দ্বি তৃমি তাঁহা উপলব্ধি করিতেই! দেখি-**⊀ড্ছ অন্ধকা**র—ব**লিতে**ছ আলোক! "অন্ধ-कृषिरे व्यात्नांक" এ कथा जूगिरे तत्ना, जा-बिर्मात, पात अक्षन अनामाना महाश्क-विर्देशन, अक्रकांत्र (य-ा अक्रकांतरे।

আছৈতবাদী। ত্মি কি, তবে কলিতে চাও বে, ইদস্তি-পূন্য নিরুপাধিক জ্ঞানের ক্তিয়ে মুলেই সম্ভবে না ? বেদে কি আছেছ

्रहें का वाटक टेनव कि किनागी श्राप्त त्योदनी-प्रमुख नागी एक्ट्रम्ता कि छी अश्र ग्राप्त अव क्रशन्य वाका थे

আই জাবং পূৰ্বে কিছুই ছিল না। এই জাবং উং-প্ৰিক্তপূৰ্বে, হৈ প্ৰিন্ন শিষা। কেবল একই জাবিতীয় দংখন্তৰ ছিবেন। তিনি জন্মবিহীন মহান আৰু।

বৰ্ণ ইদং বলিয়া, কিছুই, ছিল না, তৰ্ম অকুলা ইদ্যুতি ও ছিল না, পত্নি আপুনিই, বলিয়াছ নে, ইদ্যুতির - অভিনেতিন অই- ষ্তিও থাকিকে লামে না; ক্রেরাং আৰু
ষ্তিও ছিল না । কিন্তু আহল তির অবিদামানেও এক মাত্র অবিতীয় জ্ঞা-বিহীন
মহান্ আ্য়া ছিলেন। প্রথমে, তোমাকে
আমি জিজাসা করি ধে, পরমায়া জ্ঞানস্কুল এবং সৃষ্টির প্রের্ড তিনি বর্তমার
ছিলেন, এ কথা তুমি মানো কি নাং

देश्कवानी ॥ - क्रियत कान-चत्रम धर्वः তিনি নিতা বর্ত্তমান এ কথা আমি একেবা-বেই অকাট্য বলিয়া মানি। ''ক্থ্যস্তঃ সং জাগ্রেত^ত অসৎ হইতে কিরূপে সং উৎ-भन हरेरव—এरहि**रे जामात अथम अन्तार।** উৎপন্ন যাহ, কিছু তাহা অবশ্যই কোন না কোন সদস্তর শাক্ত হই তেহ উৎপন্ন হই-য়াছে—শূন্য ২ইতৈ অকস্মাৎ উৎপদ্ম হয় উৎপন্ধাব যত আছে তাহানের উংপতির পূর্কের যথন কোন **জাবই ছিল না**. তখনও আকাশ ছিল-কাল ছিল-এবং অক্লিপ ও কাল কোন না-কোন সতা এবং পরিপূর্ব ছিল। এইটিই প্রথম শ্ভিতে ্রান্তার। দিতায় প্রস্তাব এই যে, সতা জ্ঞা--নকে ছাড়িয়া একাকী থাকিতে পারে না। তোমার আমার যদি জ্ঞান না থাকে তবে তোমার আমার সমকে যেমন কোন অন্তি-ভূই থাকিতে পারে না; সেইরূপ মুলেই যদি জ্ঞান ন। পাকে, তবে মুলেই কোন ্ ক্তিত্ব থাকিতে পারে না। বাহা क्रिक्ट किन-कारन जारन गारे, जारन ना, जीनदा ना, ভাছার অন্তিত্ব কেবল মুখের একটা 🔭 <u>মাত্র—তদ্ভিন আর কিছুই নহে ৷ কৌমী</u> जीतह यंथन उद्शम हा नाहे, उथन पूर्व ्रवृत्रे में का कार्य कारन विमायान किसे ? (न नजा कार्रोद्धा खाटन विश्वान हिन ना वका । यात, काश द्वापाक विमामान विक्रिया दला छ। अवस्य विवास विकास च-

মানতা—জ্বানে প্রকাশসানতা; বিদ্যান্
ক্রে জ্বা বাতু দুরের একই অথ। অত্পর
উৎপত্তির পূর্বের নিত্য দলা বিদ্যমান ছিল,
ইহার অর্থই এই মে, তাহ। নিত্য জ্বানে
বিদ্যমান ছিল। যিনি অসাম আকাশ
বালি সভার সাক্ষ্য ভিনি সহান্ আলা,
এবং যিনি সেই সভার নিতা নিয়ান্য তিনি
জ্বা-বিহীল আলা, ইহাতে আর সংশ্য নি হ

चरिष्णवाक्षा॥ हिरा छटन दृश्य गारमा रेथ, वरे छन्नः छेश्लि छह १०८८ अक जाय-छोग्न जग-विशेष स्थान् जान्ना दिल्म; छटवरे ८०: ५२म त्य, १७१मरे , १४म अन् १५१ हिर्मिन, छछिन जान १५१ किम बा- १५१ हिस्स गा- हेन्स् छि ७ किम सार अन्त १४ हाथ कि हिस्स प्रकार

र हीमहार्थ के सामक स्थाप के कर दिनाहर क भाग भागवीम कर्न (.) यान क्लाम लेकाव বল, ভবে ভাগার গরে অহনুতি এবং ইদ व्यक्ति पुरुष्टे श्रीकात कहा. (२) चीम क्लामा चन শীকার কর, ৩৫৫ তাহার সাঙ্গ ৬২৬ ডি এলং ইলরেত্তি দুইই অফীকার কণ ; (৩) কিজ यक्ति ब्लाम कीनात कर बण्ड अस्तृत छ। इंक्रम् कि अधानांत क्य--एमिलन (त. वेज আছে কিন্তু ভাইাৰ পুঠা নাই—তবে আমি কেবল এইমাত্র বলিং ই মৌন অবাস্থন ক-विष (ष, भ कार कार्य कार्य नाय-दम भज পত्रदे नदर । अहे छन । भूत्त किहुहे हिन ना हेश श्रामि भागि, किछ क्रेस्टिक ख्वात्नक हैनचे हि हिन ना हैश जागि शानि ना ! भिन रल दर, बीत-स्काटमरे अञ्चल्छ । এবং ইৰদ্ভি আছে, কিন্তু এশরিক জ্ঞানে উত্ত-द्यार क्लानिष्ट नारे, उत्त किन वस ना ता চন্দ্ৰালোকই কেবল আপনাকে এবং পৃথি-रीटक প্রকাশ করে, भूगालाक जानगटकछ श्रकान करत न - श्रविति तक श्रकान करत ना ठिख देश जार्यनाटक श्रकांग करते श्रवर

পৃথিবীকে অফাশ পরে, ভাছা মে সুনোর নিকট হুইডেই লিজ এলসংহ; জাবের জ্ঞান যে, আপনাকে এ , অন্যত ভাষাৰ করে, তাহা ঐশচিক জননেবট অনুক্রতিঃ ঐপরিত ভা**নেক হহল্**লি বর্ম ইন্ধ্রিট গণ-রডি, জীলের <mark>অহস্</mark>তি এবং ইতম্ভ ভাগারণ ব্যুক্তি, সুমোর ভাগান এবং ভারকতা মূল-একলে, স্পেল্ডিড 🔹 এবং জাসক ল ভাষ্তিই অসুধক'ৰ। মাৰ্গিন আ COTTT TO 网络种红色 的图 医图形内部: लियांकिक क्लान हिंद कारणन त्याम अहि सन्।। हिंदा कहिता है जिल्ला कर कर नहीं जा कि दूस Mar () grand was to form of the grant was to 祝食 有有的 经外海 经人工 医二氏管 化二烷 भदिसासह के ले दें हैं। इस दें के दें कि है कि विकास 植物制度 那时间,一切一个是一个相关的人物 প্রা ব্যাণিত হয় সংগ্রাণ কর্মেন্দ্র নায় दम पुना कि । हार एक १ एक १ एक आहे. भवनार । स्था स्थाति । तथा । भेर एक इंडिक विन्दी आरंपर शता मा । दिनि दन নের মে-বুচনটে উদ্ভাকারনে ভাইপে अवाबोधक शहरहे था। ह

हिंदूम् कर अवशास । १ व्यक्ष्य मेन्द्र म्हण्यण काल समित विकास

ি তিটি বিশ্ব কৰ্মনেটা আছিল চুলা ক্ষরিনেল, তিন্দী, আট্যানো ক্ষরিও এটা ব্যুদ্ধি আহুটা কিছু ক্ষ্যি ক্ষিত্ৰনা

ইয়াতে এতিপন হ ইনেছে লে এই আগং
তিংপদ্ধ হইবার গুলেনও তাহা ঈশবের তালো
চনায় বিদ্যোন ছিল ৮ বেদে যাহ। ইদং প্রনিয়।
নিদিপ্ত হইয়াছে, তাহা আস্পানে এখনকার
এই ইদং—এই স্তপ্ত অগং ; কিন্তু এটি ভূলিলে চলিবে না যে, এই স্তপ্ত অগতেন মূলে
ঈশবের আলোচনা মানে বর্তমান ছিল—
য়াছে;—স্তির পুর্নোও তাহা বর্তমান ছিল—
এখনো তাহা বর্তমান আছে—এবং চির-

कान्हें जाहा वर्डमान शाकित्व। स्वान-क्रियोद তুইরপ পদ্ধতি; বিশ্বাস প্রতি এই যে, पद्ध श्रेष्ठाक-इक्टि निहिन्द्र १८० गरनी-इहि श्रीतुष्ण् हे इसे श्रीत बीवार श्रीव प्रति হয়; ইহাকাৰিক ক্ৰম-প্ৰতি। আৰু ক্ৰমণ পদ্ধতি केहें हो, প্রভাক-রুক্তি মনেটেরি प्याच्या **गारभक्, यहनाइंडि भी**इंडिड काशत সনপৈক,—ইহা ভাত্তিক পছতি। বাহান বিচারে অত্যে প্রভাক এবং কহিজাও, গরে यन ज्यार व्यक्तिकार, भारत भीविक जनः আক্সা: ভাত্তিক/ বিচাৰ্টে—বভো আলত গতের আঞ্জিত্—পতের আত্মা এবং ধারতি, পরে মন এব: चंद्रजीव, পরে প্রাচাক্ষ এবং বহির্মাণ । ইপর কালের পরপার-স্থিত, ল জনঃ কালিক বিচার ভাছার সহিত সং-লগ্ন হয় না . প্ৰধের স্থিষ্টি-ক্রিসার সম্প্রে অত্যে অন্তর্জন পবে বহির্জনৎ, এই ভাত্তিক भक्ति**र मदित्मस मदलग्र रहा। स्म**रतन षाहनाहना-ख्नर छोहात वी-मंख्नित कन. ett 'अहे टिहर्लगर' **डाहा**त्र उरणापिका শক্তির ফল; উভয়ং বৃদং শক্তের বার্চা। শান্তাদির অনেক স্থলে (এরপুর পাওম যাস বে, এ জগৎ ত্রিওগাহাক কিন্তু ইবরের আ - লোচনা-জগৎ শুদ্ধ কেবল সত্ত্ৰ-গুণাত্মক --किन्ना (त्र अवटङ मुक्लरें स्थकान-किंदूरे অপ্রকাশ নাই। শান্তামুদারে, আয়াদের অন্তৰ্জৎ মলিন-সত্ত্ব, অর্থাৎ অঞ্জাল এবং ঢাকলা দারা কলুষিত অবিশুদ্ধ প্রকাশ, এক কথায়—মন ; ঈশবের অন্তর্জাৎ শুদ্ধ সভ অর্থাৎ সর্ব্ব-বিষয়ক, পূর্ব প্রবাশ ৷ সেই ভন্ত गत्वर जेव्दतन हेन्द्राख्य आमिम विध्या। षा पिस विषयं ना ने लिया स्ल उर तिषय विमटन जादा ठिक् रह-दक्तना जामाद्रमत अधान-कात कालिक विकास केपटबर्ग महास रुष्टि बार्गादाव महिं मः नहीं रह मही। अन्य मह — ইখরের ইদ্যু ভরেই বিষয় প্রভাগ তাহ।

ৰিবৰ একং প্রযাজা তাহার নিয়ামক : মালিন সত্ত্ব (অর্থাৎ আমাদের মন) দেই শুক্ষ স**ত্তে**রী প্রতিকৃ**তি, এবং জীবালা পরমা**-গ্লাই ভাতকতি; স্তরাং যলিন গল নিশ্যা এবং জীবাজা ভাহার নিয়ামক। ইবলের নিয়**না ইদংর্তিকে এবং ভাহার সক্ষে** ভিপ্ত বিধানিকা শ**ভিকে ঈশ্বর ২ইতে পূথ্**ক ক : এন কেবল হাছাব অহন জন তাতি গুরি দিবন তিনে যাহা পাওয়া বার্ জীয়ের প্রিয়ম ইন্স্কুড়িকে এক ভাষার সংশ্ৰেভাগাৰ শিহামিকা শাভাবে ভা**ব ছইতে** পুথন, কাল্য, স্কল্প কোলা ভাষা প্ৰহন্তি 🗸 ল্যাত দৃষ্টি শিক্ষা অভিনে, জাননা ভাচাই পাঞ্জি, যাণ ; ি ও সে খাছা গাওলা শ্য— ভাষা এনান নলাল পত্র যাহার চাবল একটি নাম প্রা- কর্মাং হাছ। আকাশ কুসুম অংশক্ষাও অসমত বুলপার স্থাবরের সহিত জালের ফিরুপ নগস তাহা পরি-काइ नाभ विषय हरेल क्षेत्रक लेगी শান্ত এব জীবের ২১১ শক্তির মধ্যে— প্রবারের পারগুর্ব আ**ন্দ্রময় তেওু সাত্ত এবং** জাবের স্তব্দ ৪০খ-নেহিজিণ**ত মনের মধ্যে —** কিন্দ্ৰৰ আকাৰ-পাতাৰ এ**ডেদ ভাষ্ট ক্ৰয়-**প্র করা আবশ্যক । স্বলবের ইদফুতি মূল বাদশ, আমাদের ইদংগ্রি তাহার অসু-লিপুি মাত্র। ঈশর সংসারের **পরপারে**। থাকিয়া যেরপ লেখা লিখিতেছেন, আমরা সংসারের এ পারে খাকিয়া ভাহারই স্বাগা বুলাইতেছি। বিজ্ঞান-বিৎ পণ্ডিতেরা ঈখ-রের চিন্তা ইটতেই চিন্তা শিক্ষা করেন, ক-বিরা ঈশবের রচনা হইতেই রচনা শিক্ষা क्दत्रम, स्मीधी यहां श्राता के बदत्र के की नांख्य হইতেই ঈশ্রিতা এবং বশিতা শিক্ষা করেন ।-नेपद्रत अभीनकिहे भूग, म्लि, कारोत हे नग् किहे भूत है अनुद्धि, - छारा द सता वे पत चना कृषिद्धा मिक्छे अने नटबन कारा

সর্বাংশে তাঁহার আপনার, এছন। তাঁহা স-ম্পূর্ণ ক্রপে ভাঁছার কর্ত্ত্ত্বাধীন। আম।-प्तत हेमचृ कि नगक्**तर** णाभारम्ब प्रधीन না ছওয়াতে আমরা, কথনে। বা তুঃখে, ক-খনওবা মোহে, আক্রান্ত হই; এবং আমাদেব নক্তির অপু-তিবশশুভ – তাহা অভিন্য করিতে ক্রমত্র পারি, ক্রমেন বা সাবি পরমালার ইবজ্ডি ভার্য সম্পূর্ণ কর্ত্তবাধীন স্থলবাং তিনি পারপূর্ণ বালন্দ-মধ। যে ব্যক্তি যত ভাষার প্রাধীন ইন-ন্মারকে (বর্ণাৎ মধনার ভিন্ত) সংগত কবিল ुचेनर, १३ ७।१, १९ छ।त्क १४३, १म र(। कृत छ। . ত্মানের ভারত কর্মা প্রতি সঞ্চারিত হইয়া তাহাৰ পত্ৰ-শতিবৰ দ্বিগুৰিত ক্ষান্ত তোলে ৷ খণুষ্য যতই ঈশৱের প্রতি শুদ্ধা-পান্ এবং ভক্তিমান্ ধ্রুরা কমিননো-বারে ह ভাষার অনুগত হয়, ভড়েই ভাষাৰ নিয়া-লৈগে শক্তি প্ৰাৰ্থিত হয় : তেওছ () ভাঙ্ায় ইসপুত্র উপর কড়েয় লভে ২বে , ৬৩ই **६म ५**९६ वर दशाएक विकास हरिएक मा छन লাভ করিয়া জানুদায়ত জিপতেটো কৰে। ণিপ্ত সনুষা ধকত উৎকৰ্ম বাভ কক্ষা ১ চন, স্বীশর ভাছা অপেক্ষান্ত প্রশার্পর প্রস छैदहर्छ ; এ अनु। मन्दर्भात निद्यान छः (য়।९क६ मगुरनाद्र*চदम ल(भात उपयुक्त न द्र, अक क्याग्र-इत्रम आहर्ग नहरू। छेथ-ন্দের অতি আদা উল্লি এবং এটিটেই माध्यकत पूर्वा मक्ता, जाहात जाननात छेट-কৰ্ম তাহার আমুয়ন্ত্রিক উপলক। গেই मूर्या नार्यका मार्थके हैं भन्दमान मर्द्वाफ कार्या : यनूरकंत बाञ्चात छेटकर्च याहा टमहे नका-माधानत अवनाकारी कल, छाहा अटमह नटकात्रहे छेळ छत्र माथ्यनत्र भशाप्त विनया मगुषिक लार्थनीय । क्रेचंड चाबाटम्ब क्रां भाव छेश्करर्धत खना नटहन, किस केपरवन গ্রতি অনুরাগ বর্জনের জনাই আত্মার উৎ-

কর্ষ নাধন, এইরপে হরানেই নাধক চিক্ পথে দাঁড়ায়। নিজান ইখন প্রীতিই নন্দা জীব-নের সর্বোচ্চ আদর্শ।

अभिनम्बाज । जनसम्बात कत्।

আমরা দংশ্রতি মৃত প্রেক্ট ব দার্ভের ভ্ৰ**ঞ্চানি জ্বেন্ডব্ৰিড (**দ্বিধিন মূচ্চ छ। हात्र क्षीतकेनारा व्यक्तिल खन्द वर १ भट्टात অপকরণ উচ্চার্থ গ্রেপড়ার ১২ জন বর্ণে উং**স্তরের** সহিত ভাষা সাঠি বারলের किन्ह्र राज्यमानः अतिकाधारमः ४८० राज्यात सम्बद्धाः इत अक्षेत्र निर्माण এমবে ভিন্নসভা কর্মা বাং নীয়েও আন্ত শকেষ্টন সোৱত প্রাক্তি এন প্রশেক্তি ভিপহার সক্ষণ তেওখানা আল্ডিপ্রেচ রেন নাট ৷ প্ৰদ্বতো ৰম্প্তিৰ স্থিত স্থন্ অশ্ব পূলৰ প্ৰিট খোগ ছিল, ভগন খ্ৰীহার **জী**ইন্ট অনিবা গাইবার সম্পূর্ণ **একটা** ভাশা রাশি । ना जिलात शुरुकाञ्चन माहाहे श्रष्टन किन्तु परिना ক্রন বাধরা ভারার জীবনচারত দেখিলাম। গাঠ করিয়া এই জন্য বিশিক্ত ইইলাম যে ব্ধন অক্ষ্যবাৰ্ নিজে জ্বাসনীৰ উপক্রণ দিয়াছেন, তখন এরাপ ভ্রম প্রমাদ ইহার ভিতর কি রূপে ছান পাইল চ্ছনত ইহাতে অক্ষয় বাব্র সম্পূর্ণ সাধাখা আছে বাসুয়া এই গ্রন্থণাটে **স্থানাদের** গ্রন্থাস এবং ইছ।র वाक्ति श्रमगीन कामारमद अधे श्रष्टारवा । অবতারণা ৮ কিন্তু এই প্রছে ভ্রমের সংখ্যা অল্ল নর। সকল ভ্রম দেখাইতে আমাদের নময় নাই, আবশাকও নাই। মহাস্থার স্কীবন চরিতের সহিত আক্ষসমান্তের ইতিরুত্তের বিশেষ সংযোগ আছে। যথন ভাষা প্রকাশ হইবে, ভাষা দারা আলোচা অত্যের নোষণ্ডলি লোকে স্পাষ্ট বুঝিতে পারি-বেন। আমরা আপাতত কএকটা স্থুল স্ব , बियदेशव जान्छ ८५ था है या नाम्य ६ है र ।

37 TR. 5 WH

ত্র করা ইবে। এই মনে করিয়া অক্ষা বার্
কৈরু করা বিষয়ে প্রতিত করিয়া অক্ষা বার্
কর্ম করা বার
কর্ম করা
কর্ম করেম বার
কর্ম করেম বার
ক

চরিতাব্যায় । এই কথা লইয়া একর बार्व शूर दर्शोद्धव इषित (७८) शारीकारण কিন্তু ইংবি/ভিতর সভা কি তাহার কোন बान्या करतन नारे। अन्तरन क यहा छ।। दे বলিতেছি ওকুন। কোনও একটা 'শক্তে-আিক ঘটনায় মহযি দেৱেক্রনাথ সংক্রর মান এক দময় ভোর একটা উদাস্যের ভার উপা্ছিত হয়। ভাগিবন্ধন তিনি পাথিব স্থে অতৃপ্ত হইয়া কিছুকাল নিজনৈ গণা-বুদনান করেন এবং অচেপ্রায় আত্মায় মধ্যে তাহার অনন্ত উৎস দেখিতে পান। তথনও ত্রাহ্মসমাজের সহিত ভাঁহার সং-বোপ ঘটে নাই এবং তথাকার ধর্মাই বা कि डाहात्र किছू जात्नन गा। তিনি বাড়ির মধ্যে বসিয়া আহছন এমন সময় একটা পুথির পাতা বায়ুবেটো ওলট পালট খাইয়া তাহার সন্মুখ দিয়া হার। ঐংস্কা বশত তিনি ভংক্রাৎ তাঁহা তুলিয়া ্দইলেন। কিন্তু তথৰও উইয়ের সংস্কৃত ভাষায় বিশেষ কোন অধিকার জন্ম अहे। স্তুত্তরাং এ পত্তে কি কোশা আছে, ভাহা ব্যিকার জনা স্থাতিত রামনক বিদ্যাবাগীশকে ভা-क्न এवः विमायात्रीम वाविसा छाहा गाँथा।

करत्रन । जी भेज निर्दार्भिनियरमत्र शात्रस्र। जीग ८ परविक्रनाथ ठाक्त्र आहात जुहे अवि মলের ব্যাখ্যা শুনিবামাত্র এই জন্য বিস্মিত হইলেন যে তিনি ইচেত্তীয় বৈরূপ ঈশরের সরপ অবধারণ করিয়াছেন, এট গ্রন্থে স্থস্পাঞ্জ তাহাই আছে। তখন রত্ব অনুসন্ধিংইর. রড়ের খণি-লাভের আনন্দ উপস্থিত ইইল। তিনি ভাবিলেন, বেদের অস্তভাগে যখন এই, ना जानि मगुष्ठ त्वरम कि भेमूना शमार्थ আছে। এইরপ অনুরাগ ও দাবিহে সমস্ত বেদ জানিতে ভাষা ইচ্ছা প্ৰদীপ্ত হইয়া উঠিল। তিনি বাড়েভার সীকার করিয়া कड़की (ल' , ह मसंध तन পिष्वीत खना साबीनवार ७ पाठ। हेर्ना कि**रमन अबर** ७४९ छ শিক্ষার মহালে এ সমস্ত ধর্মাতান্ত বিষয়র लाहे। अंद्रिएड अर्थल्यामा उद्देशराय किंद्र কাল অভিনামিত উইলা যায় এক: এ নম-্যর মধ্যে ব্রাহাস্থাক ও অক্য়কুখার দত্তের স্থিত উল্লেখ্যোগ হয়। তথ্য সমাজ মধ্যে নেঃকের বেদের নিভ্যতায় নিখাস ও বৈলাক ব ধরা অবলম্বনীয় ছিল। এই বিশাস ও 🕫 ধর্মা তার্মনের মূল রামচক্র বিদ্যান বাগাশ। আমরা পূর্বে পূর্বে গুস্তা ভাষা। রট বাকে: এই বিষয় সপ্রমাণ করি-য়াছি। অতঃপর এই বেদ : শশন্ত লইয়া জীমং নেবেন্দ্রনাথ <u>ঠাকু</u>রের সহিত জক্ষ-কুমার দত্তের তুমুল তক উপস্থিত হয়। দেবেক্রনাথ ঠাবুর ঐফোপনিষদে আপনার সহজ বিশাসের প্রতিজ্ঞায়া পাইয়া বেদ ও বেদান্তে একটা অটন শ্রদ্ধা ছাপন করেন। সন্তা বেদে যে কত অমৃত আছে, ভার করিবার জন্য ঐ ধর্ম-পিপান্থর একটা আঁথের পিপাদা হয়। এতৰাতীত ভাঁহার বেদের উপর প্রগাঢ় শ্রদ্ধার আরও তুইটা কারণ ছিল। द्यापन, करमना स्थान । त्यम अरमटनत नर्क

श्वा ७ अस्टाकीन शवित्र सर्वनाजा अक्षाजी कान स्ट्रेट दगांगि दगांगि दगांक খাহার নামে মতক ক্ষেত্ত করে, দিবদের लातक जनगृहुद्ध मग्रा ना इकेन पाउउ 🚜 ঘাচার কএকটা সম্ভ্র ভক্তির সহিত উচ্চারণ मा कतिता अहे विभाग तारकात काणि काणि লোক আজিও জীবন-ব্যবহারে প্রবৃত্ত হয় না. ভারতের ধর্মা-সংস্থাপক ও ধর্মা-রক্ষক खाकारनत वःरच कचिता बीगः एमरतकनाथ ঠাকুরের সভাৰতই দৈই বেদ রক্ষার্থ একটা অস্তরের যত্ন দাঁড়াইরা ছিল। দিতীয়ত তিনি মনে করিয়াছিলেন, রাগ দেয় শূন্য সহজ্জানে বে বর্ণোর অনুমিতি হয়, বদি হার্মতা বেদে ভাহাই পাই.তবে তো এদেশে ব্রাক্ষধর্ম গ্র-চাবের আর কোনও অন্তরায়**ক্টপস্থিত হইতে** भारत्र ना । कांत्र (वम् मक्टनहरे श्वा ७ শিরোধার্য। একজন ধর্মপ্রাণ ও বিচক্ষণ লোকের ধর্মদংস্কার ও ধর্মপ্রচারে যেজপ প্রণালী আশ্রয় করা উচিত, প্রীমং দেবেন্দ্র-নাথ ঠাকুর ভাহাই করিয়াছিলেন। কিন্তু অক্ষর বাব্র প্রকৃতি স্বতন্ত্র। তিনি পাশ্চাত্য বিদায়ে শিক্ষিত। এখনকার অনেক পাশ্চাতা জানাভিথানীর নাায় উহোরও না জানিয়া ও না পড়িয়া বেদে একটা বোর বিদেব ছিল। তাহার পাপুগত ইছো ধে তিনি আক্ষদমা-জকে পাশ্চাতা বৃদ্ধির পূর্ণ বিকাশের ক্ষেত্র করিরা তুলেন। किंख বেদ তাঁহার অভীপ্ত দিদ্ধির বাহাতক। এই বেদকে বহিষ্ণত कतिनात जना विषद (मदवसनाथ ठाकूदतत সহিত তাঁহার বাশিক কাল তর্ক হয়। জন খনী খনন করিকে গিয়া তথধাগত রত্ন-প্রভার শৈহিত ও রত্নোদারে কৃতপ্রবন্ধ, এবং আর একজন উঅধ্যে রত্ন দেখিলেন না, তৎ্যভাষ্ট বিশ্বাস করিলেন না, ডিনি Cकरल पूर्व शांकिश खाहारक पनि ख-त्तरम निरम् कतिएएएम । धरे कूम्ल

জুর্কের এই টুকুই রহ্মা। কলত এই তর্ক নারা
নয় কিন্তু নিজের আলোচনায় এবং বারাপদী
হইতে প্রত্যাপত বেদজনিপের রেদ বাশ্যায়
শ্রীমং দেবৈক্রনাথ ঠাকুর বৃথিলেন, কর্ম ও
জ্ঞান এই উত্তর কাওায়ক বেদের সমগ্র নয়
কেবল সতা জ্ঞানই লোকের মৃতির জনা
প্রচার করা আবশাক। তথন বহু দিনের
নির্জন চিস্তায় সহজ জ্ঞানে তাঁহার যে ধর্মের
অনুমতি হইয়াছিল, তিনি উপান্যদ হইতে
তাহারই অনুকুল মন্ত্র সকল অগ্রিময় ভাষায়
বাথাা করিতে লাগিলেন। সেই সমস্ত
সক্ষলিত মন্ত্রই বর্ত্থান ত্রাহ্মধর্ম গ্রন্থের জ্ঞান

এইরপে মহর্ষি দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর কে-वल यरमभायुतांग ७ किन धर्म-वृक्ति-आर्गा-দিত হইয়া ত্রাহ্মসমাজ সধ্যে বেদ বেদা-ভের মর্যাদা রক্ষা করেন এবং রামচন্ত্র বিদ্যাবাগীশ হইচে এতং সংক্রান্ত যে সমস্ত ভ্রান্ত সংক্ষার বন্ধমূল হইয়াছিল, আত্মতত্ত্ব বিলা নামক পুত্তক ও প্রবন্ধ রচনা ছারা তাহা অল্লে অলে দূর করিয়া দেন। পা-শ্চান্তা-জ্ঞান-দৃপ্ত অক্ষয়কুমার এইরূপে যদিও ভগ্ন-মনোরণ হইলেন কিন্তু এখনও তিনি নিরস্ত হন নাই। তিনি উপযুক্ত অন্ত শস্ত্র मरेगा जामामगारक श्रविष्ठि বেদেভে যদে ত্রক্ষোপাদনার উপর আক্রমণ করি-লেন। **কি** ভয়ানক - আহুরিক বেদ-বিদেষ ! কিন্তু বে বেদোক্ত স্তুতি ও গায়গ্রী মন্ত্র দার। যুগ যুগান্তের 'ঋষিপণ ত্রক্ষণান ও ত্রক্ষণাভ করিয়াছেন, এই ভারতের হক্তে প্রতিপালিত इहेश कानि ना देकान् धर्मकाम अन्यवान् বাজির ভাহার প্রতি বিঘেষ-বৃদ্ধি অন্মিতে পারে। স্থামরা পূর্বজন ঋষিদিগের জুলনায় লাধন-বিহীন ফুলাৎ ফুলতর। আমরা সেই আচিষ্কারপে ত্রন্ধকে মৃতন কি আর ধলিব, কি छ्य क्तिन, उटन यनि अविनिद्धात रमहे भविज

উজ্ঞানে আপনার করে কথকিং নিশার हेटल भारत, अहे कि भाषाभिरशत भरक লাঙ। আমরা ব্রহাত ও ব্রহাপ্তার াহয়ে · এই মাত্রই বুবি। 🌡 किन्छ जन्मरकृषांद्रत । जानां महिष्ठ ना। जिल्हासम्बद्धाः ভ্ৰাক্ষ্যাত্তে কেওঁ গ্ৰিপালা,ভালায় নিৰ্দীৰ উপাসনা প্রবর্তিউ করিনার চেরা পাইয়া (ধলন কিন্তু তাহাতে বহু জোয়ালেও কুডকার্যা হন নাই 🖈 আশ্চর্যা চুকে সমস্ত ব্যেমক্রে গ্রা-দীন নিরাকাজ্য ও নিঃসঙ্গ লোকাদগের ধর্মাল ভাৰ জলৎ ও জীবন্ত অন্ধৃত্তী প্ৰাস্থৃতিত, যে নমস্ত মন্ত্ৰ কোটি কোটি সাধককে পৃথিবীৰ পাল তাপ ছালা হস্তথা হইতে মুক্তির পাথে लहेंद्वा निश्राष्ट्र, रव अमल अल यूभयुनारकत **ভাব-সং**ভাবে **वै**वि-श्रुप्तरहो একটা ম্পৃহনীয়/পদাৰ্থ হইয়। আছে: জানি লা মাহার। ক্ষারভার বলে প্রুমার্নালে অঞ্জী তাঁহারা আজ কি জনা সেই সমস্ত বেদ-নদ্র **প্রাথ**দি বোধ-স্থলত ক্রিতেও কাতর। কলভ**্ৰই বিষয় য**া চিন্তা করি, ততই ইহা षात्रा विश्विक रन्।रक्त स्टन्मान्ताश ७ প্রভা**তি-ক্ষেত্র এক্টিড** প্রভাবেরই পরিচয় भारे ।

বিশার খাহা প্রদর্শন করিলান চরিতাবার প্রিবেন, ইহাতে অক্ষর্ননারের কিচ্
নার বিশার প্রের নাই। ফলত প্রনং
লেবেক্রনাথ সাক্রই রাক্ষননাক্ষকে এই সনত নরা বিপদ হইতে রক্ষা করিহাছেন।
এই সূর ধরিরা ক্ষর কাল অনেক প্রাল প্রিবেশ ঘোষণা ক্রেন যে দেক্রেনাথ সাক্রই রাক্ষ ধর্মে হিন্দু সন্ত্রিতা মানিয়ান ভেন। হিন্দু সন্ত্রীপতি নামে এই বে একটা ইফ্রেন্টার কথা ইহার নে প্রন্ত আ কি, কি
উদ্দেশে রে ইন্ন প্রযুক্ত, আমরা হিক ভাহা
ব্রিতে পারি না। এক্র হইতে পারে,
রুপন যেরপ কোরাণ কাইবেক এভতির

সত্য লইয়া আফানর্শের একটা যার্প-কতা প্রদর্শিত হুইয়া থাকে, জীগৎ দেবে-ব্যানাথ ঠাকুর ভাষা দেখান না। বৌধ হয় এই অভিপ্রায়ে বলা ইইয়াছেয়ে তিনি ভাকা-় ধর্ম্যে হিন্দুসঙ্কীর্ণত। আদিয়াছেন। কিন্তু আন ্মরা এ কথারও অথ ববি না। কারণ একুত হিন্দুধর্ম বর্তুমান এচলিত প্রকটি ধর্ম অ-পেক্ষা অসংখ্য গুলে উনার। ইহা কোন मुर्चादकहें (वय १५८४ मा । अंदर जूबि रुलिएन भार, हेश शृंश्यामा धार्म्यत तिरस्यी सह, उरव धना धर्मात भक्त हिन्तत निवेष्ठ खानदर्गीय হলু **নাই কেন**। এইটা ভোষার **থুব বৃথি**-ताह जून। जना गटमंत्र गडा हिन्तुवर्ण्य यटबहे পরিমারে আছে। हो एव कि कल्लु (तक-८७मी शर्चा । विक्र यथन (विकास) (वीता) हिम्सू দার্ধানকদিগের নিক্ট পরাস্ত **হ**ণ্ড, **যখন এ** দেশে ঐ ধর্মের উচ্ছেদ-দৃশ্য উপস্থিত, সেই সময় লেজবর্ণের সভ্য প্রচুর পরিয়াণে हिन्दुक्षा ८८तम कतिशास्त्र। হিন্দুধ**েমিব** দার অতি উদার। তবে ত্রি বলিতে পার, ভিন্ন দেশীয় বর্ণের্য সভ্য-ই-হাতে নাই কেন। ত বিষ**য়ে**ও আমার উচ্**ন** वार्ट्या यथन हिम्मुधर्मात बच्चामत्र-कान, ভখন পুথিনীতে কোন ধর্মোই সৃষ্টি হয় নাই। যদি তথ্য **সা**ৱ কোন উৎকৃত্ত ধৰ্ম থাকিত এবং ভাহার সভা যদি গ্রহণ-যোগা হইড, তাহা হইনে এই ধর্ম 🦈 তাহা "লইড ना, रेहा जिमादक (क विनमा) जामि अ কথা প্রমাণ নিরপেক্ষ হইয়া বলিতেছি না प्तथ, वृङ्क (वटनंत क्यां जिय् **अक्यों** क्षेत्र । ছিলুরা এই অন্ন পৃষ্টির নিমিত কোন রোয়-কাচাঠ্যের নিকট অনেক জ্যোভিষিক কৈত্য धार्व कृतिहाटकन । देश बाताहे वार इत যদি তৎকালে আর কোন ধর্ম থাকিও ভাহার मेरा बहन स्मा हिम्दर्गात शतक वंगलक जागता एक तथात क्षान कविन

टिक्, देश बरेनिकशियक करिक्क कैया। तम्ब तम्ब हिन्द्रात्वात कि इहेक्क हिना ध्रेशाहिन, मङ्ग्**री जानितात एका** नारि । ভবে এই পর্যান্ত ব্যোগ হয়, যে জাভি বহি-র্বাপারে এক রূপ বিমুখ হইয়া কেবল আত্মো-নভিকেই জীবনের সার জ্ঞান করিয়াছিল, ८महे बांकि व दक्तन दारनहे मछ। शक् ना তাহার যে অসমাদর করিবে, ইহা কিছুতেই সম্ভব যনে হয় না। ফলত এ বিষয়ে হিন্দু ঘর্শের হার খুব উত্মক্ত ছিল। উহা এই রূপ উদার বলিয়াই গীতাশ্রুতির অন্য এবং ভাহাতে স্পট্টাক্ষরে বলিতেছে, যে যেরূপে ঈশব্বে ভজনা করে, ঈশর দেইরূপেই তা-ছাকে অনুগ্রহ করিবেন; কারণ কেছই উাহার পথ ব্যতীত অন্য দিকে যায় না। এইটুকু হিন্দুরর্মের দর্বভোমুগী উদারতার ভাব। কিন্তু প্রচলিত অন্যান্য শর্দা প্রাণান্তেও এরণ वित्रः, शास्त्रः, मा। दन हे मभन्छ भट्यात सन्ध क्षा এই, पूज श्रामात जालात जाहिन, उत्तरे তোৰীয় মুক্তি কিন্দা গীত এই হিন্দু নৰ্কেই বীজনতা সর্বতি দানা। এখন তুমি বলিতে श्रृंबि उंटर हिन्दूत शर्मा এ**उ का**लि निरम्य কেন। আমি বলিব এইটা তেম্মার ব্রিগার जून। हिन्द्**या न**कन गर्या ज़ंदनको नर्काःरन कितात किन्न देवे में या किन्नू निर्त्तीत्यत वालात, **ाहा बोटाइत । किस्**ता श्रमीमेश्टनत खना অভিস্কৃত্যর সহিত আচারকৈ রক। করিয়া শাৰে প্ৰতিশিংস প্ৰভৃতি দ্ৰব্য শারী-১ तिक अधित कात्रन । हेश बाता जाना-मर-ब्राय बामार घटि। बेरे बना रिन्त्र गासाक **े प्रकल निरंदर मानिया छल। कारणाक। (स्** पाणिए कर नगल करतात शासमा, देशाना े जाशास्त्र (सक्त वा खडे विनिष्ठ) सिर्द्ध करत are affin ofth coin- ware birites गरिक जिल्ला साथ अवस्थित अवस्थित विरवरतत ভাগ উঠা ভাতিগত নত জাতির খাচারগত।

'তোমরা হিন্দুর্বের এই অংশকে সঙ্কীর্ণতা বলিতে চাও বল কিন্তু আমরা তাহা বলি ना । पुर्हा दमरगद्र छन नातुत जिन्हारज्य । ধর্মারাধনের জন্য একান্ত ওপরিচার্যা আমরা তাহাকে সন্ধীৰ্ণতা বলিতে পাৱি না। र्केकु, हिम्मूदा यह श्र्रीवर्ष मकल जानि হইতে যে একটা স্বাত্যা অবলনন কার্যা আছে, এই আচারই তাহার মুখা কারণ। किन्छ रव नमी विनाम चरक उद्य काम स्टेटन সমুদ্রের অভিমুপে চলিয়াছে, সংস্থার না থাকিলে কালজ্যে ভাষারও কোন জেন हान महीर्व इहेश भएए। भाषता अहे हिन्सु আঢার সরদ্ধে সাহা বলিলাম, তাহা অতী-তের। কিন্তু হিন্দুর হতে ধখন রাজ নিয়ম नाष्ट्रे, देशांतित गर्धा गर्थन मध्कृतिक नाष्ट्रे, ভগন বৰ্ত্তমানে এই আচাতে যে অপেকারত अश्लीर्वा में जिस्स देश विकास नरह । विजय ইছার মূল নিয়ম নির্দেষি। স্বদেশামুবাণী সজাতি-বংসল মহর্ষি দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর এই প্রকৃত হিন্দু ধর্মকে সর্বাংশে সকল ধর্ম অপেকা এইরপ উলার দেখিয়া একমাত্র তাছারই मতে বিশ্বজনীন ত্রাক্ষধর্মতে পুষ্ট ক্রিয়াছেন। এই সূত্রটুকু ধরিয়া যে তো-মরা বল তিনি ত্রাক্ষধর্মে হিন্দু সঙ্কীর্ণতা আনিয়াছেন ইহা তোমাদিগের হিন্দু-ধর্মোর প্রকৃতি না জানার পরিচয়। একনে আরও একটু কথা আছে 📅 পূর্বেক অনৈ-তিহাসিক কালের উল্লেখ করিয়া বলিয়াছি ষে যথন হিন্দুধর্শের অভাদয়, সে স্থয় যদি কোনও উৎকৃষ্ট ধর্মা থাকিত এক ভাহার मजा यनि अर्ग-(यागा स्टैज, जाहा स्टेल मिटे माछ। हिन्दरास्त्र अन्नश्रहे हे अर्थी अमः স্তব ছিল না। এইটুকু হিন্দুধর্শোর উদার প্রকৃতির পরিচয়। কিন্তু কল কথা, হিন্দুর আবৈত্যান্নতির জন্য সতা এহবের জাবশ্যকতা कि मां এवर अथन ७ नारे। करिन श्रापता

ক্রেপ সাধনার সভা লাভ করিয়াছিলেন পৃথিবীর অনা কোন ছাতি কি সেরপু সাধ-নাজকথন সজ্জের পারাধনা করিয়াছিল ? এতদেশের সেই বিশেষ অবস্থায় যে সমস্ত উজ্জান সভা আবিষ্কৃত ছইরাছে,তাহার তুল-নার সক্ষা দেশের সিকল ধর্মানাজ্যের সভা ুকি নিভাক নিজ্পুভ নয় ? উপনিষদের ্**ত্রিলা ব্রেকার স্বরূপ**–এতিপাদক গ্রন্থ কি **আর ্র্যাছে ?** তবে বাহিবে হস্ত প্রসারণের আ-ৰূপকতা কি দু গুহে মৃত্তিমতী অলপূৰ্বা किञ्च कठेतजाला निवादत्वत्र जना जतात দার্কে ভিকা, ইহা কিরূপ উদারতা। ত্রীমৎ াবেন্দ্রৰাথ টাকুর এই ব্ঝিয়াই ভিন্ন জাতীয় পর্বা**্রহের সতের** একটা **আ**কজিকা রাথেন নাই। তাবে তোমরা বলিতে পার ত্রাহ্মধর্ম यथम मार्च्यापायिक नयः, हेहा विश्वजनीन धर्मः, তথন সকল ছাতির সকল ধর্মাশান্ত্রের সতা **ইহাতে সংগৃহীত হও**য়া ভাবন্যক। কিন্তু ্**এবিষয়েও আমাদের ব**ক্তবা আছে। মুক্তির निमिन कान 😻 एकि पूरेरे गरे। खात्नत ু**উন্দল ও অক্ষ**র ভাগুরে বেদ বেদান্ত। 'শার **ভক্তি আমার পুরুষ**ার-সাধ্য। আমার চেট্টা খাকিলেই তাহা হংতে পারে। ব্দবস্থায় পঞ্জাদ্য সংগ্রহ কর। ধর্মের একটা ব্যুক্সাদারি, ভিন্ন আর কিছুই নয়। তবে তোমরা বলিতে পার, পৃথিবীর সকল জা-্তিকে অক্তিৰ আক্তিৰ করা আমাদের नेका। 🖟 धरे बना गकन बाजिब मकन শ্বে এত্রের সভা সংগ্রহ ব্রাক্ষধর্মে বিশেষ है रहा कन । श्रञ्जाद्धात जागि सूनिव, जावात विक् ता रिज्यत्वाचे ना। य अकखन एति-व्यवात दिन्ताक बेटबाब, छूटेच डाहान मूटब गर्का चार्ष्टिक अना चार्तात खरे अवणे न्दर्भ क्या त्नाची साह, विकेश के दिलाका भगार बेजिक कोशा है। ना, एउन्स्टिश स्ट्र एक्स स्टब्स स्था आह

শোতা পায় না এখন সদেশের অসংখা লোক প্রকৃতি বর্ণের অতাবে হাহাকার করি-তেছে। আগে তাহাদিগকে শান্ত কর, পরে বিদেশ। কিন্তু বলিতে কি, তেত্তি নরা নানা উল্করণে ধর্মের বে এক অন্তুত খিচুড়ি পাকাইয়াছ, তাহার নামে সদেশের লোক তাহার ত্রিদীমায় আসিতে চায় না। হায় এই কি তোমাদের সদেশা-

যাক্, এখন প্রকৃত বিষয়ের অ্কুসরণ আবশকে। চরিতাখ্যায়ক বলিয়াছেন ; এক-বার, জগদন্ধু পত্রিকায় বেদ অভ্রান্ত ধর্ম্মশাস্থ নয়, এই কথা লেখা হইয়াছিল। বাবু ভাহার প্রতিবাদে অস্বীকার করাতে দেবেজনাথ ঠাকুর তত্ত্ববোধিনা পত্তিকায় গেই মত খণ্ডন করেন। জগদকু পত্রি-কায় যে কি লেখা হইয়াছিল, এখন ভাষা कानियात - अञ्चायना नाहै। কিন্তু আ-মরা চরিতাখ্যায়কের নির্দেশ ক্রমে ভূত্ব-বোধিনীর প্রান্তর পাঠ করিয়া দেখি-লাম ৷ এ বিষয়ে যাহা বক্তবা, ভাহা পরে বলিতেছি; কিন্তু অগ্রে কিন্তাদ্য, জগদন্ধু পত্রিকার প্রতিবাদ যে দেবেক্রনাথ ঠাকুর করিয়াছিলেন, এ কথার মূল কি ? চরিতা-খণায়ক, বলিবৈন, ইহা অক্ষর বাবুর মুখের কথা। কিন্তু চরিতাখ্যায়ক সানিবেন, মুখের কথা মুখা তথা খাটে না। প্রামাণিক কাল, প্রমাণ অপেক্ষা করে। স্মামরা প্রথমেই বলিয়াছি, রামচক্র বিদ্যাবাগীশ লোকের মনে বেদান্ত ও বেদসংক্রান্ত একটা জীক্ত সংই স্থার বদ্ধমূল করিয়া ধান। শ্রীমং **রেবেজ**নার্থ ঠাকুর সমাজে যোগ দিয়া ক্রমণ দেই সংস্কার দুর করিয়াছিলেন। বিশ্ব চরিতাশায়কৈর वाका-क्षेत्राद्व अश्रह्म शक्किक कर्णिहर विकारमञ्जूषाकाकातीय स्वकृत्वदन ७ व-বোপনীতে কাৰ্যালয় হইনীছেল: মদ তাহ

W 4.0

श्रीहर (नरवक्तनाथ केंक्ट्रबंद बहना वर्जाया - স্বীকার করা যায়, ভবে আহাতেও বিশেষ লোয় দেখিছেছিছা। ফলত অগহন্ধ পত্ৰি-কার লিখিত আইশের প্রতিবাদ করিয়াছিলেন বলিয়া, চরিতাপায়ক দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুরকৈ ভান্ত বলিবার- বিশেষ গ্রমাণ পাইয়া-ছেন ! কিন্তু- "চরিতাখ্যায়ক দেখুন, জগ-ষক্রপান্তিকার প্রত্যাত্তরে কি বদা হইয়াছে। ইহাতে বাহা বলা হইয়াছে তালার মার **७१-- পর্মেশর মনুষ। মাত্রে**রই মনে সামা-নত ধৰ্মজ্যানের সামর্থ প্রদান করিয়াছেন কিন্তু মোহ বা ভান্তিগণতঃ তাহা কলাপি আছেন হয়; সকল সময়ে জ্ঞানের প্রকৃত শা জি হয় না। এই সমগ্র মহাজনের কাক্য বিশেষ ফলোপধায়ক হইয়া থাকে। মহাজনকৈ তপস্বী ঋষিই বল বা বেদান্তের জ্ঞাই বল, তাঁহার কথিত বাক্য বা বেদ দাঁপ-কং মোহান্দকার দুর করিয়া দেয়। এই প্রতি-বাদের উপনংহারে এট এনটা কথাও আছে---**भक्तभाउ ७ (सहिन्स हिंहा) (त**क्न्छ। नत्क আলোচনা করিলে তথাগে যুক্তি-সাধ্য সমু-দায় বিষয় আমাদিণের বুদ্ধিনস্পান দিকা-**रख्न महिक मण्युर्ग के हा इश्व**। खरे श्रकात প্রায়ুত্তরে যে কি দোষ, আমরা তাংগ বুলিতে পারিলাম না। ইহা অতি স্পাট কণাণে নকলেরই হৃদয়ে ধর্মা বৃষ্ণিবার শক্তি আছে, কিন্তু অবহা ও শিক্ষার এদাবে সকলের এই শক্তির প্রকৃত বদুর্ভি হয় ন।। बना , श्वितिका स्विकाया। किन्नु আমাদের বুদ্ধিনিক্পর সিদ্ধান্তের সহিত ঐকা করিয়া লওয়া জাবশাক। চরিক্লাখ্যায়ক দেখি-রেন, ইহাতে বেদের দাসত করিবার কোন क्या बना इस माहै। धर्म मंसूया-वृष्टिकरे मन প্ৰাধীনতা ও অধিকার দেওয়া হইয়াছে। আর ঐ প্রভাতরে বে প্রক্রা শব্দ আছে তাহার টিপুণুরীতে জক্ষ। শব্দে সর্বাচর

চুরিতাখায়ক ফলাল দেকেনা । ঠাইল রকে সামারণের নিজ গলেল ল এতিপার করিল বা । চিন্তা পাইলালিলেল, তাল, যে নিজান্ত অমূলক: এই স্থলে তালার একটা মজাব প্রমাণ দেই । এবল ইলা লাল ইফাল সপ্রমাণ ইইনে বে অক্ষর বাবু স্বারা ললাক কৌলে বেদ-দংল লাভ লাভ সংস্থার সপ্লাল হয় নাই। সঞ্জীব প্রমাণ ভাক্তিল জন র্দ্ধা রাজনারায়ণ বাবু । তিলে এক সময় প্রই বিসয়ে গাহা লেপিয়াছিলেল, নিম্নে তাম্বা উদ্ধৃত করিলান ।

Put we cannot approve of the length to which the thick and than panegyrists of Aksbeya Babu are going in their praise of those services. They say that he was the sole cause of the abandonae at by the Somaj of the entenneous doctrine of the infallibility of the Vedas. New the old Brahmos had not beto the revelation of the Vedas as they represent them to have done. We quote in support of our assertion the following passages from the Vedantic Doctrines Vindicated:

when Indian literature and, in head, all literatures were only (as it were) in a state of germination, it is impossible to prove the divine origin of these sacred works by any historical testimonies, the value of which was not understood all the time, or indeed, by any other evidence than what they themselves afford



by the drift and tendency, the reasonableness

"The only ground of which the truth of any system of belief and be maintained is that founded on the pature of the doctrines inculcated by it.

If the dectrines of theology and the principles of morality taught in the social volumes referred to appear to be consonant to the dictates of sound region and wisdom, if these tenets and precepts carry the unite achieve character of truth in them the man the has received them; and continues to place his trust in them, will have no reason to fear the vituperative surmises of imposliness in respect to his religion.

"The knowledge derived from the sources of impiration deals with everal truths, which require no other proof than what the whole erection and the mind of man unpersated by following reasonings afterd in abunda see."

The above passages are quoted from the very paraphlet, in whice the revolution of the Vedas is principally maintained. We quote another passage from a work published by a Christian Missionary no testimony can be more strong than this one afforded by the missionary of another religion

Though the Brahmos claim the Vedus as a revelation of divine truth, they look primarily upon the works of nature as their religious teacher. From nature they learned first and because the Vedus, as they assert agreed with nature, therefore they regard them as inspired. Rev. Mullen's Essay on Vedantism Brahmoism, and Christianity.

Now it was certainly not a heroic feat on the part of Akshay Baha to induce people above opinious were so lax with respect to the initiarity of the Vedas as a revolution to reject the doctrine of their infallibility,

চরিতাখায়েক আর এক স্থলে বলিয়াছেন শীমং দেবে ক্রনাথ চাকুর এক সময় সৌলো-কলিগের পক্ষে পূস্প চন্দনাদি দ্বাবা ইংরা-রাগনার বিধি দেন এবং শ্রীপর ন্যায়রত্ব দ্বারা কাঁচড়ারাড়ার কোন এক বৈদা পরিদ্ বারে তন্ত্রেক ভ্রমন্ত্র অহণ কলান। গুরুত কথা এই। একনা শ্রীধর নাায়রত্ব ভারিয়া ভারাকে ক্রেন্স

कान देवना शहिवादंवत कान की स्वीद्याक वाकावर्गात अगानी-जन्म ने यदतन आनावनी डाहा पिशतक यात्रि गहा-করিতে অনমর্থ। নির্ব্বাণ তন্ত্রোক্ত পুষ্প ঢলনাদি দারা ত্রাক্ষার উপাসনা করিতে বিধি দিয়াছি। ইহা 💝 নিয়া তিনি বলিলেন যে অশিক্ষিত জীদিত গের পক্ষে নিরীখর ও উপাসন-শুনা হইয়া থাকা অপেকা সংযোগ ভক্তি ভরে প্রস্থা-চন্দ্ৰাদি দ্বারা ত্রেরে প্রথা করাও বরং ভাল। প্রকৃত কথা এই ম'ব। চরি**তাখায়েক** বৰিবেন ইহাতে বোজাননাজে কুল চলৰ ও নৈবেদ্যের ছড়াছড়ি বরার কোনত প্রসঙ্গ অক্ষুবাৰ ইয়ার যে কি নি-হয় নাই। বারণ করিয়াছিলেন, জামরা তাহা ব্যিতে भारिलाभ गा।

চরিতাখানক ছাব এক ছাল এই ভাবের একটা বালয়াছেন, ব্যেমান্যাজের যা কিছু আধ্বালির মাকার সমস্তই কেব**ল অক্**য বাবর বিদ্যা ও বৃদ্ধিবলৈ সাধিত হয় এ প্রত্যু-জ্বে ইছা না থাকিলেও কর্ত্তব্যের অমু-রোধে আমরা একটা কটোর কথা বলিতে বাধা হইতেছি। অক্ষধ বাবুর ম্থন ত্রাক্র-সমাজের স্ভিত সংযোগ, তবন হইতেই কাঁহার ভাবে ও কার্যো তিনি ইংরাজীতে शाहाटक बटल मध्यारवानी छोहाह हिटलन। পুরাতন ভেত্রবোধিনার প্রতি পূর্চা খুলিয়া দেশ, মুভগুলি ভাষার রচিত ত্রুমান্তেতি আছে ভাষ্টতে কেবল[ু] নবকিগল**য়োগেলিভ'** প্রভৃতি লবিত পদ্বিন্যাণের ঘটা পরিবৈ কিন্তু কুত্রাপি গালীর ছাদং ে সৌ**ন্দর্যা ও** সৌরভ নাই। তিনি কখন ঈপরের, মঙ্গল अक्रार्थ विश्वाम करत्रन, कथन नाउ करत्रन। कथन शार्यमात चारमाक्छ। श्रीकात कहतन, कथन ना ७ कार्यन । अहे जा पा छ ু আনু এই সুৰুদ্ধে প্ৰতক্ষর জীবন চায়ত ক্ষাতে

जन्म तहरा के बार कारणाम । जारा जरू-जन्म जन्म तार देवान कान कान्य स्टेसी आर्थनाम के কাৰ্য্যান থান টোহার কেতা জখন
টোহার ঘারা এটাক্ষান্যাকের আ্বাটাক্সিক
নাক্ষান্ত থাকার করা বা ননে করা আমরা
নহাপ্তার বিবেদনা করি। তিনি কে তার
নাইনা-আ্লান্যানে প্রবেশ করিয়াছিলেন,
করা এইনার হোর প্রতিপন্থী ও জারা
কর্মান্ত করিই হইতে পারে না।
ভালার বিবাদ সাম্বেক্ক রাজনারায়ণ বার্
ক্ষান্তিনে বাহা লিখিয়াছেন, নিজে তাহা
ক্ষান্ত করিবান।

The Babu long ago abjured his belief in Brahmoisin and turned an agnostic. This change in his opinion could be proved by passages in his work on Hindu sects—

He abjured Brahmoism long ago, but he was tenaciously fond of appropriating to himself the sole glory of having introduced pertain reforms in the Somaj, the doctrines of which he latterly hated. This was rather inconsistent in that eminent man, the glory of our country.

ख्नमः शास এकती कथा वलि । खक्क म्कूमात े प्रकृ धक कन विदान विष्कर्ण ७ स्ट्रांचक িছিলেন ৷ **উটাছার** গ্রন্থাবলী দারা বঙ্গদেশের त्य श्राप्त केलेकात हरेशारक, देश क ना श्वीकात कतिद्व ? जिनि द्य वक्षणायां नम-विक श्रेड्डि गावन कतिया यान, देशा जनजार्भ করিবার নয়। ফলত তিনি আবাদেরই অক্ষয় বাৰ এবং এই আদি ব্রাহ্মসমাজের সহিত मार्योत्र रक्षारक कारोत खारी जनाउन रीख मिकिन हम, और मेमल कथा पातन कड़िल कामामिटनहरे के कोच हरेगा करते। किन्न फ़िरान प्रतामा क्रममह फिरमकानी व रहे जि भादत ता विति विकासदार पार्रसक्त कार्य Alfan, digen pitrit gerententen. AND THE PROPERTY CONTRACTOR OF THE SECOND PROPERTY AND ADDRESS OF THE PARTY AND ADDRESS OF THE P This officers was trucked

প্রকাশন করিলায়। একাশে অনুধানার চরিছা-গায়ক থেন প্তকের ছিতীয় সংস্করণ সং-লোকিক আকারে প্র করেন। ইয়াতে বর্ত্তার মধ্যাদা ও সতেরেই মধ্যাদা রক্ষিত করেব।

বালকের প্রার্থনা

দয়াময়! আমাদের এত কুত্রত্বেও তুমি অমাদিগকে পরিত্যাগ কর না। আমরা প্রতি মুহু র তোমার আদেশ লভান করি তথাপি তাম আমাদিগকে তোমার ক্লেইনয় অমৃত্যার ক্রোড়ে স্থান দান কর—তোমার পবিত্র সিংহাসনের নিকটে পাতকীকে দাড়া रेट नाउ। जागारमत लड्डा नारे-यर्ध नारे- मनुवाद नारे, छारे वामता ज्यनछ কুদ্রক্পরিত্যাশ করিতে পারি না—স্লার্থে জলাঞ্জনি দিয়া সভাকে প্রাণের সক্ষেত্র লিজন করিতে পারি নার নীচতা কুদ্রা-শয়তা তখনও আমাদের হাড়ে হাড়ে মিলিয়া থাকে। ভোনার রূপা ভিন্ন আমাদের ভার গতি নাই – আমাদের ক্দরের ক্তেতা স্থাৰ পরতা বিনাশ করিয়া তোমার সম্বাদ্ধ উপযুক্ত কর।

বিজ্ঞাপন।

আগামী এগকোর্ত্তিক সোমবার বেহালা কালাসমান্তের এয়ন্তিংশ সাম্বংসরিক উৎসবে আশবাছ তিন বন্ধার পর আলগর্ন্থের পারায়ণ হইবে এবং স্কা। সাত ঘটার সময়ে ব্যক্তি শাসনা হইবে ৯

Adaly prosent

2116

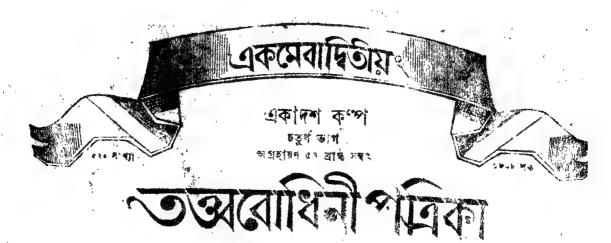
ভাষাৰ গাঁডা (নব প্ৰকাশিত)

(ভাল বাঁধা)

व्यक्ति मध्याप

অক্সমী ১ ৪-পূৰ্ব ভাল ৰ'বা (৬ই ভাগ পৰ্যান্ত)

ব্ৰহ্মকলৈত চতুৰ্থ ভাগ আদি ত্রান্সসমাজের বিক্রেয় ব্রহ্ম-সঙ্গাত শঞ্জম ভাগ প্রধবিংশতি বৎসবের প্রাক্ষিত সুনাপ্ত बाबर-१६न ब्रोब ব্ৰান্ধ্যম প্ৰথম ও মিন্টাৰ খণ্ড ভাৎপৰ্যা সহিত Rs As. P. (भूल 🔞 निका (जयनीश्रक भक्रात ७०६) ६ नश 213 A Discourse against Heromoking माञ्चाणा यक्ता) হাজধ্য প্ৰথম ও ছিডীয়াঁ খণ্ড ভাৎপৰ্য্য in religiou ম্ভিড (ই ভাল বাঁধা) Hindon Thershi নাক্ষধন্ম প্রাথম ও দ্বিগীর প্রত ভাশেশ্য Thouses De nor Book 'স্তিত (লাল কাম অক্রে) Storge of the Prince ব্ৰামাণৰ গ্ৰুপুৰ (ছেলত মূৰ) নব প্ৰকাশিত) Doctrines of Christian (₹,41) Hearing thou সংস্কৃত বাজধর্ম (দেংনাগর অক্ষরে) Physiology of Liebarcy দংশ্ভ ভাষণৰ (টীকা দহিত) Tulucted Massinardin बाकाना तःकारण व्यवस्य ए दिश्रीय १ छ 10/2 搬走就的鞋 化克通电影 化流管有效管 वांत्राणा आक्षाच्या जारबन्धा महिट म ५८५१मा "(करन पानम्ब" ० सञ्चमक्रास्त्रमण द्वाच्चरार्भाव मा अ अ विनेशम **अ**क्षा-विकासिक भागानी के के लिया दें आव्यस्थितः साध्यान-व्यवस्य अक्सर्य विभागार्थित वाशाम-पिकेस अस्तर भाविक उक्तिमार्टा उपारम्म मरुक क्रिया भागाम^भ লাল্বধরের বাখিনি নুস্পুর্ব (ভাল কাগ্রহ ও (एक विन्धू शामितिन राज्यातिक हे गाँवसर" ভাল বাঁধা) णका का विश्व के लिया चेत्रक्रिकर" h. a संबद्धित साथाम मन्त्र्य (हुल > मध्यत्र) (4)81) "इरुका निक्ष" 300 (फाल दें। या) त्या करायामक विकास अध्याम निकड 140 **編の新聞を表す**に कथक्त विशेष भारत क्षार्थ निषद ... 10 भागू हान-**१%** ड 312 いず有料 मार्थारम् क्र । हमस्यागु-नाहण भा अर्थन, " क्षिकाचा बाक्षणभारत्व र स्तृता गा असन भनेन जीपूक मरश्मध्य भाग वर्षक व्याजिदिक अस्त्राभागना 100 **সম্বানিত** 10 ভেগ্ৰেশ্বী ভাষংগ্ৰহ 310/0 1.10 1 अस्तामाग 西南河南北海道 すび で "শাভিষা-সূত্র" (৬ জিনামা: শার্মার রাশ্রমায়ণ বহুর বজু তা ১ম ভাগ रदशास रङ्गावनी अस कहा "मिश्वास्त्रिस्मात्र," ভবানীপুর সামুৎসরিক ব্যান্তের বড়াভা 10 শাদ্বাচাগ্যের 'নিরঞ্লায়িক' ভাষা সহিত 1. दरकाणामना 'हलायलके' इंट्यासिनी च विषयानावक्किनी 40 धर्मिका 31110 前期 的行物 (有时智科) हा अविक कर्त्वा भनिष्द CAP 180 - 314m1 24 THE 40 ্ধবনাথৰ অক্ষেত্ৰ र्।• 13.



व्यक्षवादकसिद्धमप्रकामिका वस् विश्वनाचीकाति भव्यक्षकात् । सदेव विश्विधानस्थल विश्व स्वतन्त स्वन्तः स्वते । स्व चर्वाद्यादि व्यक्षित्व व्यक्षित्वस्य वित् वर्षे वित्तात्वकृत पूर्वस्थाति । प्रतिस्य सम्पेतिकार्थः । प्रतिस्य सम्पेतिकार्यः व्यक्तिकार्यः व्यक्तिकार्यः । स्वति । स्वति वर्षः प्रति । स्वति । स

শ্রীরামপুর ব্রাক্ষমাজের সায়ং-সরিক উৎসব।

অ**দ্যকার উ**ৎসৰ আমাদের অন্তঃকরণে এই সভা**টি মু**ক্তিত করিয়া দিতেতে যে, ঈশ্ব-त्वाशामनार मनूमा जीवत्वव मात छ त्मवा। কিন্তু যে-কোন উদ্দেশ্য হউক না কেন ভাষা সাধন করিক্তে গৈলেই কতক্তাল আগ্যাক্ত নের প্রাক্তন হয়। নাংলারিক সূপ তত্ত্ব-নাতা **উপভো**গ করিতে হ**ইলে** গৃহ এবং আর আর উপকরণের আয়োজন আবশক। केर्यदेशभागन। নির্ক্তিরে সাধন করিতে হইলে, আসুসঙ্গিক নাুনাবিধ আঘোজনের প্রয়োজন হয়; ধর্মা অর্থ এবং কাম তিনেরই প্রয়োজন হয়, কিন্তু অৰ্থ এবং কৃমি ধর্মের অনুগত হওয়া নিতান্তই আবশ্যক। ख्य-कडे मान বদি আমাদের বৃদ্ধি বিভাত থাকে, কুণাতৃফ। ৰার। যদি **স্থানাদের নন** অভিন্ন থাকে, ভবে जार। नेयदमानामनाम नार्क ৰনক; কিন্তু অনুস্মিতারা বৃদি লাজা কলুষিত बोटक छटव छाहा । बादब क्रमनक ; बाबब विशास अफ़िल, जेयदवर साहास आर्थना ক্রিতে পারি, কিছা পাপাচরণ ক্রিল

सारिएक एवं भण व रक्ष ब्ह्या मांस्र । गिप जटनात छाछि निर्मात नावकात नात, 🚉 ফোন লভ্যায় আসরা ঈশ্বরের করণার প্রাণা श्हेत, जा सत पनि जानतिया निष्ठा निष्ठा থাকি ভূগে কিজপে কাম্বর প্রমান্তার প্রম পৰিষ প্ৰেম-দৃষ্টির অনুপ্ৰম জোটি गहा कतित १ व्यञ्चत नैयद्वाभागना निर्मित्य সাধন কারতে হইলে ধর্মের আয়োজন সা-ক্ষাৎ সন্ধন্ধে প্রয়োজনীয় ; দ্বিজ ব্যক্তি অর্থ কৰে বিভাগ হইয়াও ইশক্তক জানিতে পানে, তৃষাৰ্ক পণিক মক্ৰভূদিন মৰো পড়িয়াও नेरहरक जांकान भारतः, किस भागी वाजि श्रेषददत (श्रम मूथ "मर्म् छतः बङ्ग-মুদাতং" উদাত বজের নাম নহা ভয়ানক **८मटन** : भाभी वाकि विकास स्थारमत पिटक তাকাইতে পারে না। অভত্রব ঈবরেপা-मनात अधिकादी हरेए श्रेटेल अयुक्छ চিত্তে পাণ হুইতে নিয়ন্ত হ ওয়া এবং আগ্রহ **সহকারে ধর্ম্মের** আয়োগ্রন কর। নিভাস্ত পক্তেই আৰশ্যক। নিতান্ত বিষয়ী লোকের। একদিকে ভোগেছা চরিভার্থ করিবার জন্য वर्ष छेशास्त्र कटतन, मा দিকে জাথে-भार्क देनेत ग्रीमपी-लाज कतिवात क्रमा अल्लान

পযুক্ত ভোগ-ছারা শরীরের স্থান্থা রক্ষা করেন; এই প্রকারে ভাগারা কামোজেশী অর্থ এবং অর্থোদেশী কাম এইরূপ এক ঘূর্ণাচক্রে নিয়ন্ত্রিভ হইয়া অন্ত প্রহর ঘূরিতে পাকেন। আবার, অনেক ধনগত্ত বর্গল ভোগেছার চরিভার্থভাকে, জীবনের লাম্পান্ত ধন এইর্ল ভোলে করে অনির্বাপ্ত জিটানলে ভাগান্ত ও কেবল বিশেষ দিকেন; ইলাদিগের প্রানি আস্থান্ত্রির উপ্তেশে এই সে,

িন আঁজু কামঃ কাম্যান্তিপ্ত লাগেন সংঘটত র হবিবা ক্লেপ্ডেবি ভূয় এবাভিব্দিতে :

কাম্য বস্তুর উপভেগে দ্রা কামন্ত্র কখন নিয়তি হয় না, প্রভাত ছাত-প্রাপ্ত पश्चित्रं नाश बादत। वृद्धि हिहेट बादक।" **স্তৃত্যুর ভো**গের সা**গরে** ধথন অংশ ব ভেডে অধাৈগতি প্ৰাপ্ত হইতে থাকে, ভগা ভাষ্ অতি ভয়ানক অধোগতি। অর্থ ২ইতে কামে এবং কাম হটতে অর্থে স্থবিয়া বেড়ানো অবো-গতিওনহে, উর্গতিওনহে, তাহা ঘ্রাগা 🚌 কিন্তু কামের দিকে অর্থের একলান, ভোড প্রকৃত পক্ষেই অধোগতি। দুৰ্বা-গতিব অর্থের দিক্ অপেকা ভোগের দিক্ সমধিক প্রবল ইইলেই তাহা অধ্যেগতিতে পরিশত ছেয়; আর, ভাষ। ধর্মের প্রসায়ী হট্লেট্ উদ্পতিতে পরিণত হয়। ধর্ণাই কেবল व्यर्ग अवर कार्म छ छ एवड है अवि छैदा निक--चे बरत व बिरक- कि बाहे व (नग्न। ञ्रेशतः প্রীতিই ধার্ম্মিক ব্যক্তির মূখ্য উচ্চেশা এবং তাঁহার ধর্ম অর্থ এবং বাম তিনই মেই উদ্দেশ্য সাধনের উপায়। ঈশরোপাদনাই ধার্ম্মিক ব্যক্তির জীবন; ঈশব-গ্রাতি সে कीतानत ज्ञास्त्रक अवद नेपातत शिवकार्वा गाधन एम खीबरसङ्ख विश्वम । আশ্র, ধর্মাই সেই প্রিয়কার্যা সাধনের অন্ত-রক; অর্থ এবং কাম ভাছার বহিরক। ধার্মিক বাজি নায় পূর্বক অথ উপার্জ্যন করেন,
অন্যায় কার্যো লিপ্ত হ'ন না; বৈধরণে
লোগেজা চরিতার্থকরেন, অপবিত্র কার্যো
লিপ্ত হ'ন না; সাধ্যাকুসারে লোকের হিতসাধন করেন, কাহারো প্রতি অহিতাচরক
ফরেন না; এইরূপ উপায় অবলন্ধন করিলা
তিনি আপনার আয়াতে ঈখরের প্রেম্ম্থচহিবি লিন দিন স্পাই হইতে স্পাইতর-রূপে
দেখিতে পান; তাহার অকুরাগ দিন দিন
উচ্ছল হইতে উজ্লেত্ররপে ঈশরের প্রতি
বাবিত দয়; কমে তিনি হাসন্ত পাপতাপ
হইতে মুক্ত হইয়, ঈশরেন সহিত কামনার
সম্দায় ফল উপভোগ করেন।

পর্বা যে, অর্থ এবং জামের একেবারেই विदर्भ । 'छोडो नाइ । अंतर गंभागवारे पार्श्व महम लक्ष्य : व्यामा या**रा ने**याराभामात ামে বাল-জনক, ও। : কথনই বন্মের উপ-(पर्म इरेट्ड भारत ना। धर्म कथनहे जनन ক্ষা সলে না গে, অর্থোপান্তনে মন্ত্র করিও না; কেন্দ্র দারিছের অশাভিতে মনুযোর यन के बटवाणामुनात अनुभरमाधी व्हेशा भर्छ। ধর্মা ভাষ্মত কথা বলে না লে ফালু আর ভোজন কৰিও না; কেননা অর্লাচ প্রস্তিক বিষ্ণাতু পাচ ভোজন করি**লে শরীর নন হস্ত** পালে না, ইহাতেও ঈশবোপাদনার ব্যাঘাত जरम् । दर्भ (क्त्रम धरे रतन 🖰, धनाम পূর্মকে পর্য উপার্জন করিও না; অস্বাস্থা কর জন্য ভোজন করিও না; কেন্না তাহা इटेटल बटना-पर्यं बालिटनात्र मक्षांत इटेटत, ও আস্লাতে ঈশবের আনিষ্ঠার ঢাকা পড়িয়া যাইবে। ত্রাক্ষরশ্ব এমনও কথা বলেন যে "আমৃত্যোঃশ্রিচমরিছেং নৈনাং ম**ন্যেত হর্ল**ভাং।"

"আমরণ ধন-সম্পত্তির চেষ্টা করিবেক, তাহা সূলভি মনে করিবেক না।" কিন্ধ এই যে, আমরণ ধনসম্পত্তির চেষ্টা, ইহা কিলের অন্য শুলা কি কেবল ভোগেছা চরিভাগ

করিবার জন্য ? না: ঈর্পরোপাসনরে বল্ল অপহরণ এবং সাহায়ে সাধ্যমত জন্য ৷ তে সমা**জে সৃত্ধতিপন্ন** সাধ্যক্তন, ঠুও প্রস্থানী ব **প্রাসম্মতিক্ত নরনারীর** সংখ্যা যত ক্ষিত গ্রেট **স্থাক ঈর্থরোপাসন।র ও**াত ইণিয়েক্ত কে হয়। (श मंगोरजत अर्थ अन्दर काक रार्वन कानुसन ভাছাবই নাম আধ্যম্ভত লেল ব্লাটে : ঈশ্বরোপাসনার উপদ্বস্তা কেম্বর আকু স नमारक वर्ष छट. काम महन्दर हिल्हिस তাছারই নাম জন্মে জন্ম লাল্লাল **मगाज ; जेश्र**दाश्चरमा ५८८ ५ ७ ८८५ ५० চক্রের বিষ। আর্থীলৈ ১৯৫৮ । ১৮৮খ স্নাজের সহিত্র অবলানের স্থা ভেল সর্জা কৰিয়া দৈশিতে লাভ গ্ৰেট ক্ৰিয়া আৰুছে । ना क्रिया शांवितक शांत मा (य. क्यानवात সমাজ বার্যা সমাজে, এখনকার সমাভি ১০১ হিক স্থাছ। মানাল্য গৈলে ুক্তিন कारन भकरावे जानन जानन नर्ग्य जानिस् व्यर्थ छेना र्क्तन कविक , १९ विके रूपन की तरना मूर्ण विधि हिल : जात एवं अवलील करम ংশের কনুগামা, হইত : 'জার্ব' 'অথ'' कतिया त्लाकिनियोच दर्यात्त छ छ्टेट्छ स्ट्रेड ুরা। এক্সেধেরা হা অল ,যা অফ করিয়া কি**র্মের ধন্দায় যু**রিয়া বেড ইিরেচন না, ভারায়া **ष्यगारन्, ष्यगार्थन कार्या नियुक्त याकि**श **यशर्षः भोनैबन्काइट**ङन, खाष्टारखरे शक्र**र**न्न তাঁহাদের জীবিকা নির্মাই হইত। ফাত্রিযের। রাজ্যের শাসন ও পালত কার্জ্যে নিযুর্জী পাক্ষা কৰ্ম পালন আবংতন, তাহাতেই তাঁহার। অন্ধ্রেদে সংগার নির্দাহ করিতেন। বৈশ্যের স্কুষি নাপ্তিকা নিযুক্ত থাকিয়া সধর্ম भानन क्षिट्डन, डाहाटड उँ:हाटन यरथहे অর্থ উপার্জন হইত; এবং তাঁহাদের অর্থের কিয়দংশ ত্রাহ্মণ-সদনে, কিয়দংশ রাজ-সদনে গমন করিয়া, সরস্ভী এবং লক্ষা উভয়েরই टर्मियात्र निङ्कुक इहेछ। भूक, श्रञ्जूत बांखुरः

रुपर्या भारत कविशा, निराधित कोतनकोत নিৰ্বাহে লাগেক। জনগোলাল লাগেল আকাৰ विकासित ५५% एम. कर्मी (जन्म 🕠 ए.) आहेर जान्ही र्राक्षणात्रः भी किला । १००० । संस्थानन । জিনিকা কল লবি**জা টু**লেল ল**ড়াস**ক भारत वर्ष रिज्ञ । तथन मुख्ये हाम भारती ्रान्याम् एकत् । स्रोत्याच्या । उत्तर्भः । उत्तर्भः ্ৰিয়া, কই প্ৰেৰ ভালাৰ বাজিকাজ ेग्राक्टिक मा अस्तिति । ए व्यापातान अनुष्य किन् १८८ अन्तर । अन्य अस्तर् করিকের জাত কর্নিপার্ভার স্থাতি विकास स्थारण है। अन्य विकास छैसी 化环烷化 有效的 网络大利斯 人名英格奇人 电传 信用 小門子 经物品 舞歌者的 中心 বিক্তি চলিত। এখন বেং সম্প্রত ধে र्माङ लक्ष्मारा वा क्षान, करार । हारायात न्दर प्रमाणकालेल ५ (१९) १५ । १९ অথেপিতিইন না কলিকে৷ সাচনা ত্ৰান क्रिया दम नामेल्ड स्ट्रिंग नाम मानदर यह निद्यान कतिए : प्राप्ति । प्राप्ति भट्ट में निदर प 型詞(日本

লান্দ্রকার দেল পদি বলপূর্বক বিশ্বকলা
তাল লাল করানো বাষ্ণ, তরে কি ভালা হইতে
ভাল করানো বাষ্ণ, তরে কি ভালা হইতে
ভাল করের প্রভানা করা ষাইতে পারে প্
কিন্তু লাখা চলিনা লারাছে তাহার জনা
শোচনা হরা রপা। উপান ছবতে পতন
বাসা লানন হইতে উপান জগতে চিরকলিই
চলিয়া আসিলেছে। বহিনান পান যে
ভালা উপানের সোপান নহে, ইয়া কেইই
বিবার অলিকারী করে। আমরা অথন
নিজিত গালি, স্বর্ধির তথ্ন নিজিত গাকেন
না—আই, ত্রোধ্বকন্থিত বিশাল সক্রভ্রির
মধ্যে প্রাথমিকন্থিত বিশাল সক্রভ্রির
মধ্যে প্রাথমিকন্থিত বিশাল সক্রভ্রির
মধ্যে প্রাথমিকন্থিত বিশাল সক্রভ্রির
মধ্যে প্রাথমিকার স্বর্ধ উপানে গারা উল্লো
লন করিয়াছে। ইপার স্থানিকাকে প্রিরাণ
না করি, ভালা হইলেই জামানের মঙ্গল

ইইবে; তহি। ইইলেই তিনি আমাদের কাওারী হুইরা আমানিগকে তুংখ শোকের পারপারে সইয়া যাইবেন; তথন ব্রাহার্ডর্ম ভারত সিংহার্গনে পুন্ন প্রতিষ্ঠিত ইইলে-তথন সমস্ত ভারত সমাজ একাছা কাণ্য কথবের অয় ব্রাহ্মণা করিয়া দেশের সমস্ত দিখিদিক্ কলাই পরিপ্লাবিত কালেন। দ্বির করন সেই ছে দিনের সূক্ষণালা প্রতির বাসের শিনিং বিশুর নায়ে জ্যা দের নারনের ভ্রেন্ত শি অচিরে অপহরণ কর্মণ

ওঁ এক্মেবান্ধিত যোগ

দর্শন-সংহিতা—জ্ঞানতত্।

कारनब म्ल नियम

যে কে জি জাতা যাহা-বিছু কানে, ভাহারই সঙ্গে ভাহার মেই জ্ঞানের ভিতি-মূল-সরূপে খার্শনাকৈ কিছু-মা-কিছু জানা ভাহার নিভান্ত খার্শ্যক।

मखना এवः नाथान।

অধিন অথবা আমি—এই িং সেই
নাবারণ মধ্য-ভূমি, সেই নিরজনে রিজনত
সামারণ মধ্য-ভূমি, সেই নিরজনে রিজনত
কান মিলিয়া মিলিয়া এক হইসা অবস্থিত
রে। যাবতীয় জেন্ম বিষয়ের মধ্যে মার্যাই
কেবল একমাজ নিরস্তর-জেন্
র । আপনাকে
ভানা বাতিরেকৈ তোসারই হউ — আয়াই
হউক—আর যাহারই হউক—কাহারো জ্যানের অভিতর সম্ভবে না। উপ্রজনিবায়
ভিত্তজানের মূল প্রশ্ন যাহা নির্দারিত হইয়াতি—এই প্রথম সিনান্তটি তাহার স্থপের
প্রস্তারর , তামন একটি অন্বিতীয় অব্যব
কি প্রত্যাহা আমানের সকল জ্যানেই

বিদ্যালান, তুল্লমন একটি সাধারণ সন্ধিত্বল কি, কোনে আমাদের সমস্ত জ্ঞান ঘনীভূত এবং একভিত হইয়া অবস্থিতি করে,—এমন একটি মূল হু কি, যাহা সকল জ্ঞানের প্রক্রি মূল হু কি, যাহা সকল জ্ঞানের প্রক্রেই সমান আবশকে, ভাগাৎ যাহাতে জ্ঞানের জ্ঞানত হয় পু আত্মাই সেই অভিতায় অবহাব, সেই সাধারণ সন্ধিত্বন, সেই মূল আহু, তাল্লা এমনি ভালাই সাধারণ মহাত্মল গ্রে বাল একটি সাধারণ মহাত্মল গ্রে বাল একটি সাধারণ মহাত্মল হো বাল একটি কিন্তু প্রন্থানে কিন্তু প্রন্থানে জ্ঞানের মহাত্মল কেনা ভালাই কিন্তু প্রান্থানের জ্ঞানের মহাত্মল কেনা ভালাই কিন্তু প্রান্থানের জ্ঞানের মহাত্মল কেনা ভালাই প্রান্থানের জ্ঞানের মহাত্মল কেনা ভালাই প্রান্থানের জ্ঞানের মহাত্মল কেনা ভালাই প্রান্থানের জ্ঞানের মহাত্মল কিন্তু প্রান্থানের জ্ঞানের মহাত্মল কিন্তু প্রান্থানের জ্ঞানের মহাত্মল কেনা ভালাই প্রান্থানের স্থানির বিদ্যালিক ক্রান্থানের স্থানির প্রান্থানের স্থানির প্রান্থানের স্থানির প্রান্থানের স্থানির প্রান্থানের স্থানির প্রান্থানির স্থানির প্রান্থানির স্থানির প্রান্থানির স্থানির প্রান্থানির স্থানির প্রান্থানির স্থানির স্থানির প্রান্থানির স্থানির ক্রান্থানির স্থানির স্থা

with a few me of the control of the statement অংশে এন আল গোলাএন জন্ম १ । इ. ११ (१) वर्गाः भे । ५०१० । १११ छ्वान इष्ट्रेट्ड । ५३), ওক্তার বিভাগ করে জানি জানি করে সাম্প্রাক্ত Contain - में के अंगिष्ट कि कि से से से कि का का कि कि বিশ্বীৰ প্ৰায় সংগ্ৰাপ স্থান সংগ্ৰাম লগ নহ এন **《精**》 "相对人员,知识,知识的人也是一人的证明。" প্রতিবিয়ক বল জ্ঞান সংকর্তিট ক সভেত্ত কলে**ন্ত** अस्ति अस्ति । जारका जारका जारकार । १४४८ **म**े १९५४ हो । ्रास्य एक गाइन व्यवस्थात्र भारती रामान व्यक्ति गाइनीत মাহিনী, প্রত্যাধ প্রিমাস সংক্ষা ওচন এবং বিশেষ अधिने छाज्ञें नम्म कर्रे का उसने जा को हमा गाउँ । 💯 ব্যার্ আইক পা, আলোম জ্যান ব্যাচন মার্টি, মুই সান্ত্ জন্ম সামা **শ্ৰেব ব**্ৰাঃ বৃহি তাম **আ**য়া শ্ৰেব बाहा सदर, भाकी कांगल भाषा भागत बाह्य। अह-অপ্রতীয় জেল্বিং ধ্যমণ্টে**ল স্প্রই, ধ্রিয়াছেল ুত্তে** ন Conscious हो इ. १८५१ । शहरी सामहे, जाना। शक्तमं १९८१ । अञ्चल लाहे। यह **यशिशाद्य यशिशाद्य ८३,** স্থিত্য ভালে, স্থা বিশা Conglinusuess সাজী জ্ঞান স্থান

শক্ষ ক্ষণাদ্দে। বেদ্যা বৈচিত্ৰ্যাজ্জাগন্তে পৃথক্।
তত্ত্যে দিছলে। ধংশখিং এক সংগ্ৰাম ভিনাতে।
তথ্যে অন্তেই বেদ্যান্ত ন স্থিৱং আগন্তে ক্ষিত্ৰং।
তত্ত্বে দাছতক্ষণা সন্ধিদ এক ক্ষণা ন ভিনাতে।
অংশাধি হসং নাম প্ৰভাগনিবাধা ভবেং শ্বিন্থা
না চালবুদ নিম্পান ক্ষণা ন বেদ্যাং অন্তৰ্মান ক্ষাত্ৰে।
স লোগে নিম্পান ক্ষান্তি ক্ষাত্ৰি অন্ত্ৰিনাত্ৰে।
অবং আন হয়ে ক্ষেত্ৰা নহিং ভদ্দিনাত্ৰে।
মাসক্ষিত্ৰ ক্ষাত্ৰা স্থিক ভদ্দিনাত্ৰে।
মাসক্ষিত্ৰ ক্ষাত্ৰা স্থিক বিশ্বাধা ব্যাধান ক্ষাত্ৰা।
ইয়া আন্ত্ৰা

রক্ষিয়ের, তিনিই বিষিতে পারিবেন বৈ, ১৯৫৩টন বেলন-নত্তান-প্রভার জ্ঞান চ আহার নাট্য দিতীয় এমন-অ্ত-একটি জবি- ি গাঁও প্রা প্রকাশ গ্রুপ । ১৯ জ ৬ ১৯১১ িচলিত লক্ষেত্ৰাৰ আই। তিনি দেখিবেল চিত জিলুকাটি ছাড্চ--- এ ও ব্ৰুচ্চ প্ৰি ্য আগৰ, লগা আৰু বাংগলো চাতি প্ৰতি ৷ তেওঁ চিত্ৰ আলৈ সভানত লাভ বত্ত কুন্দেশ নাক্ষা জিলি ভালৰ কৰে এতাৰ হৈ হাইটাল হা**তক একটি**লত ভাল প্ৰশ্ন পানবন মাংশে, "আমি বাহাই কেন ছানিত্র আবী ভাত্র প্রভালক। 🗥 🕒 ন স্ব ना-एक्सिक् मान-व बद्धानेत्र माना का विश्वकारका । विश्वकारका कि জ্ঞানানাই নায় ।"

ক্রানের এলগতে তেওঁ (১৮ ব পার্য তেনি ১ বিংগ বিং ্ তিবীর পার্য প্রাথার 💽 艾德 解的 网络斯马纳 网络阿尔特 স্কুরিপ্রায় 🕟 🗀 তেশা আচন্দ্র : ১৯৯১ ুলা পাহাত্র ধন হাত্র লাক্টের कर्र दश अवर्ति निर्मेश कराइक मा जो का ए কোন স্মান-কিলাই বাব প্ৰধাৰ নাল কাৰ্য নাম্বানাক কেন্ত্ৰাৰ হ'ব বাব বিভাগ

据,但是事務所 實力可以付出 (对下的功能)。 · 如 () · () क्षांत्र पुण्डनार कल्याता चन्ने पुण्डनीहरू हैक्सू रहन हो। मार्क विकास (स्टाबर ८३ मन् । स्वर्षी) । । । । के भिन्न व्यक्ति व्यक्ति सकता का उत्तर है। अन्य व অংশেরের এইলেবুল বা কি বা কেবল লে ক্রান্ **网络我们相关中国教育的**,但是一个一个大大的人。 阿明 16 的第一个新疆中村的大小人工中心的人的 मामा, देवरे ब्लामरे मा ५५ १७५४ मध्ये . ५ ० म. ঘুই বিভিন্ন কাৰেণ প্ৰশান গে, জান, জান চ १९८६ — राष्ट्रा **५ वर्ष** अधिकार स्ट्रांक वर्णनाव १०३ वरम्<mark>त्रि-कारणप्र अ</mark>धिकार दुवस् एकरोज्यहार हस्तित িংতি-পথে উপনাচ হয়, ব্ৰুডি নাতা পুন্ধনাত াকি : জ্বলে অধ্যেত্র করে খন ত প্রবিদ **भारका**र ्**र**िक्**रांश** भाकार ध्याल विश्वमान था है। कार्र किन्धु निर्माष्ट्रिको नेभन्न अत्रात् आदिक न क त्य स्थान को तर्कारण किमायर, रमरे कामने अर्थन्यार । त मोक्ता, त्यके अनिर्दे व्यक्तिसमारमञ्जूनाक्ता । असर्वत्र Charte etter, Granca micite etter, face e भाग नर्गी - कारनहर्ण **कोरमस्य लाए**क मार्के । धेर ेषाना व्यवस्थातिन्द्र**स्टल त्यमन माध्यीत्वादन** िहार रें ना निर्मा १ वर्ग ६ वर्ग इ. - दमस्याभा । ज्याम अल्या मुन्त । यह বছৰা ব্ৰয়োভ কৰি চেন্—স্বয়ক্ষ্কাৰ্শ সাৰ্কাজানই পরি বা পে বে উদয়ও হয় লাং — অভিভি হয় লাং गांको कानरे बाजा।

一個個標準 自然的 网络阿拉拉斯 医多数子 জ্ঞানে স্থানি টেটা স্কার্থিত। ইবাং ৮ জেলে । এবং ৮ জেলি আইটে জন্মকার এটা বিভাগ । কল্পত া নীয় আহিছি এই এখন নিষ্কালক 'লোভ হ্যনানানা ক্ৰিছিল হয়। না আহি বাং সাম আহ

> CONTRACT CASE OF A STATE AS ्रात करियो। अस्त्र १८५

三國國際 一百 医陈耳二醇 经营业 医下闭法 网络亚 三角 1分钟 智力性 斯尼斯 化二十二二二二二二十二八八八八 र वर विश्वतर इस् १ कि १ । ५४४ । उन श्री हो — साहा छ। जारह । । १००० वर्ग वर्ग र , एवं अवस्थ **कार**न है । १९९८ हैं १ रहें बाई প্রতিদ, এই মুহুত্ত ক্রান্ত তাঙ্গ বিরুদ্ধ महिं। अधार असर्दर्द ५० । व 🐎 পর্ব হটা চেট্রের মন্ত্রি वा श्रेकारभाग में भारे -बालगा देते हैं। REPORT TO

परमा १०० मा इस्कोल इक्काल करान १५६० १५६० ,तकार चार्ल । या मरन ११ वशा

এখানে তীৰক আপতি উপাপিত : ইতে পারেরতে ধ্রণ আমনা কাজ লকে বিরেড থাকি, অথবং বিষয়-চিন্তায় নন্দ याकि, खयन बदनक मगा अपन यदछे दय, . है।-८२. एके। -- तमन कि भिन-एक- मिन-भार रहेता अदिशास, व्याप विभिन्न ध्यान व्यवकान करेट्डिट मान्य, अक सुङ्क्ति। व



সার্থনার প্রতি ননো-নিবেশ করি। এ জ্ব-পত্তি দী প্রথম সিদ্ধানের প্রাণে সাহাত কবিতে উদাত,—ইহার পরিহারের উপায়

আংতির পরিচা লেটা

শ্রেথম সিদ্ধান্ত যদি এরপে বলিত যে, षाशास्त्र वाशनात णाशनात श्रीत एका-एक यन मर्क्षकाष्ट्री स्टब्ल के कारण अवर नज्ञ-বৎস্তাৰে নিলিষ্ট থাকে, অধবা; আংলা আপ-गाया मा वाही जामान्यत मुंबा नेकानिया मा বিষয়, ওবে ঐ জাপ ্ টি প্রথম দিয়ায়ের পক্ষে নিভাত্তই যারাত্মক হইত। ভাষা **रहेटन शरीकाटक मार्को माना** कृतिस्तिहे, 1थम मिकाछ-ि अक्मादि श्रेमान-विक्रफ বলিয়া প্রকশ্ব পাইত; কারণ, প্রায়শই এইরপ ঘটে যে, অপেনাদিগকে আমরা ছতি জ্ব ্রাহ্যকরি। িন্দু অলু গ্রাহ্য কথ পতন্ত্র, আর, **একেবারে**ই প্রায়ে কল। ৯-তন্ত্র বর্তমান সিদ্ধান্ত কেবল এই ২ ব বলে খে, হে কোন জ্ঞাতা চন্টক্ নঃ নংকান ভাতাই কেশ্যাত্রও নিতান্ত আছে জান ব-ক্ষিত-নিতান্ত আৰু বিশ্বত-ফুট্টত পালে না; বৰ্দ্ম ভাছার মন বাহ্য বিষয়ে আল্লান স্তিক নিশ্র- তথনও নহে। আলুনিভাতিব ্ৰাজা ষত উত্তেই চড়ালো ১উত্ৰা – তাঃ। আংশিক এবং কৃত্রিম বট আর টচ্ছুই হ-১ 🖟 **ইতে** গা**রে না, ভাছা এল ভিক ছইতে** পারে क्का-न। ভবিক হইতে পারে হ।। খাহার থে এতাক্ষ জিল্লা, সাহাব সে ভারনা, তাহা তাহার আপনারই প্রতাক ক্রিয়া—আপ্র-নারই ভাবন।; স্মতবাং প্রত্যক্ষ মাত্রেতেই--ভাবনা-গাত্রেতেই—আজাণেকা নিপুচ-রূপে প্রছন্ন রহিয়াছে। ইহাতে প্রমাণ হইতেছে যে, যপন ভাষরা বাহ্য বিষ্ট্রেডে প্রাপাত রূপে নিমগ্র খাকি তথ্যত আমতা াত্র-कान इट्रेंट अंदिवादार विनाकृष्ठ रहे ना।

वर्डमान निकाक और क्षेत्रांस विनया है निकल এবং ইহার জনা সম্বাদ করিতে প্রস্তুত। আমাদের জাগ্রৎকালের প্রত্যেক মহুর্ত্তে-আ্মাদের সমস্ত ভ্রামের শক্তে সঙ্গে — खाञ्चकारनत अवि अभाष-गारी निर्विवामी আেত বহিয়া চলিতেছে, এবং সেই আছা-জ্ঞানই আমাদের আর আর সমস্থ জ্ঞানের ভিত্তি-ভূমি ৷ * আমাদের হস্ত-স্থিত কোন বস্তুর ব' হার্শোর প্রতি আয়াদের মনের পোনেরো আনা উনিশ গণ্ডা চিন কড়া অংশ নিবিও থাকে থাকুক্—আন'লেন মনের लक कड़। दा पारत पद्धारन ट्या परिवास আপ্ৰাণেৰ ভৰ্তি নিবিষ্ট থাকেও হ্ট্রেট জালাল আমারণর প্রকলম্মথনের कानः के निर्दे माणले-कात किहूरे जानना ए सि मा

ল'নত সুহৰ্বায় ব্যৱস্থা**পেকার ক**ৰেণ দল

বিহু তে মান্ত দেশিলান যে, আনিদের বিনান তান তান আনাদের আপন তে কান মুইতে স্বিয়া পড়িনা; তবে কেন আনাদের বঙ্গা মনে হা যে, আনবা প্রায়ণই জাজনবিশ্বত গালানাকে যে, আনবা প্রায়ণই জাজনবিশ্বত গালানাকে যে, আনবা দেখিয়াও দেখি না, তাঁহার কারণ আর কিছু না—মন্ত্রা-প্রকৃতির নিসেই এই সে, গালার কহন বাস অবহেলার প্রসূতি। যাহা আনবা স্কৃত্রা দেখি তান আনাদের গণনার মধ্যে আসে না; আন যাহা কিছু প্রামাদের বিশ্বত হয়, তাহার নৃতনদের তার-

ইংশ্ব অৰ্থ

বাহা বিষ্ণ বন্ধীয়, হও কিছু জ্ঞান—সমন্ত্ৰী আত্ম-জ্ঞান-সাপেজ ে আপনাতে না জানিয়া কেইট্ বাহন বিষয়কে জানিতে পায়ে ছা।

পঞ্চপ্রাণ নিয় লিখিত বচন-টি এই কথারই

শ্ৰহংপ্ৰভাগ ্জাহমিদ্ধু হ**ন্তহ্নতি ক্টুং। অবিধিদ্ধ।** স্থমান্ত্ৰান্ত বাহ্যপ্ৰেশ সূত্ৰ ক'ছে ১০০

जगा जन्माहर्के खोरात श्राफ बामाहरूत मदनीव्याद्यात जीकात्रमा इस कि विश्वाद प्रमुख দলত, তাহাতেই আমাদের বন্ধ আইও হয়; जात, यादा जाइता जहे शहतके मिणिएडिंह, তাহার প্রতি আমা**দের তাঁছিলা ক্রে**। ঘাই শৃতন তাহাঁই আমাদের চকুকে চমকিত করে; যাঁছা আমাদের চিন-পারিচিত তাহা আমাদের চকে লাগে না। আইপ্রহরিক াব্যবলাবের ন্যায় –মুন-চক্ষু ছোল্লাইয়। দিতে ভ कोल्ह्टलं बार्लंड् यनगरिया फिट्ड - ध्यान , আর কুত্ই নাই। ইয়াৰ উদাহরণ থেখানে মেখানে পড়িয়া আছে। এখানে বেবল **এই মা**ত্র বলা **আবশ্যক** যে, বাঁচ বাই সন্মূচৰ ষাহাই কেল উপস্থিত হউক্লা--ভাগারই অপেক্ষা তিমি আপনার সহিত্য অধিক পরি-চিত, তাই ভাষারই অন্যেকা তিনি আপনাব প্রতি অল্প ফলোযোগী। আনরা ভাতি-জনেই অপেনার নিশ্র নিরত: উপস্তি-ভাই আপনাকে দেখিয়াও দেখি না া আ-মাদের ক্ষানের মূল নিয়মকে আম । একণ অবিক্রেদে মানিগা বলি যে, আসরা ভাষাকে मकारे कति ना । काशादम्य गटनंत्र दण्यात গ্রচলিত ভাব গতি, ভাছাতে আমবা আপ্রান্ত্রী **द्यम** श्रामातन्त्र प्रशासना जिल्ले (कर्मे) नहि । এটি, আপনার সহিত্র আপনার গলাগলি

বেশক দৰ্শনে 'দেশম প্রেয়-লায়' নামত গোলবিশ্বতির একটি ক্রীইরণ প্রেমিদ্ধ আছে, গোট হাঁ ;—
দশজন ব্যক্তি এর সজে নৌকালে হণ প্রিল নদী
পার-ছইরা সাপ্লাদের সংখ্যা নির্ণয় প্রতে লাগলেন;
কিছ কি আতিবা নিনিই গুণনা করেন তিনিই আপ্নাক্রিদ্ধি গোল প্রিত্যাগ পূর্মক ইতর নম জুনুহত প্রনাক্রিদ্ধি গোল হ'ন, ও 'আর এক জন কোপায়' বাব্যা নিরান্ত হ'ন; এটি কাল্যোরা মনে হইডেটেইনা বে তিনি আপ্নিই দশম ব্যক্তিন ক্রিদ্ধিত স্থাহে—

্ৰিনৰ সংখ্যা ছতজ্ঞানো দশনো বিভ্ৰমান্তল।
ন বৈভি দশমোহৰীতি বীক্ষামানোহপি ভালব ॥
দশম বাজিং ক্ষাপনি ছাড়া নয় জনকে দেখিয়াও নয় সংখ্যায় এলপ বিভাত হইছেনে বে, ইহা
ভিনি দেখিতেছেন না যে, ভিনি নিষ্কেই ইশম।

খনিষ্ঠ তার—নিরব্দিয় নহবাদের—চির পরি চলের—গুনিবার্সা ফল। 'যে সুরে মনুষা আপুনার জ্ঞানে আপনি বাধা, ভাহা যতই কেন সুখ্য হউক্ নাঃ কোন কালেই তাহা ছির হইতে পাবে না।

व्याचावरहर्गात विजीय कायर हे जित्यत महामाना । १॥ এখানে আৰ একটি বিষয় বিবেদ্য; পে-টি এই যে খামানের জ্ঞানের অভ্যন্তবে তুইটি প্রবেশ দেশি তে পাওয়া নায়: একটি প্রদেশ উপস্থিত উপস্থিত रेल्या-गम् ir - ৷ মন্ত্রেটেই ওক্ষয়ীত্ত, এতরং কংগ্ ই ৮ শেষা ,* সাব ৫ গটি জাসেশ চুচত্য র্ণভাই পদা -ইজিবেশ জগদা ্বৰ কর্মন পটি বিভিন্নির ও'হ। অব্যক্ষা হাজ্যাবা श्राप्तमात्री क्रमाधिक द्या-भगकात्वा एएएए० र মৰ আকৰ্মৰ ব্যৱত মনুবৰ অপানীৰ ৰাজ-রকে দৰ্শন ক্ষিত্ৰ পাতে, স্পর্ক ক্ষিত্র পালে; কিন্তু ল'গনা,ত দর্শন করিতেও পারে না, প্রার্থ করিতেও পারে না नेतीहरू गाता प्राप्त इंडिन्स-अथा न्या আন্ত্রিক নাম সভাবতই ইন্তিয়ের বিষয়-मध्दर वननदक्षाल वीका भिष्या योहाः अक्रमा धा**भारतत माध्मा**तिक कर्ण कार्योद শ্নণ-ন্দেশ অভ প্রহ্ব-ম্লভ প্রাপ্ত অব ছায়--আন্তঃ আপনার প্রতি শতিংগল্পই মনোনিবেশ ক্রিত অবসর পাই। এইরূপ নেখা যাইতেশছনে, তুই করেশে আমরা ভ্রাপ-নার প্রতি এত শল্প মনে প্রেগী;—এক কারণ এই ক্ৰে, খনিষ্টভা অবছেক্ত ক্ৰেণ্ডিঃ অ'ডু এক কারণ এই যে, লাজ্য ইন্সিরের অগংগত व्यथम पुष्कार जर दिस्साक्षी अति विषय ५० वर्षम १ हूँ र

কৈনে কোন দশনকাব কৈ নথানকাব এ সিদ্ধান্তের বিরোধী মত ক্রন্তন করিছে দেখা খায়। ইস্কান বালেন এই যে, প্রথমে খামরা কেবল ইন্দ্রিয়-সংক্রান্ত উপরক্তিন গুলিই (অর্থাৎ বছিনিয়ম্মর ছাপগুলিই)

জ্ঞানে উপলব্ধি করি; তাহার পর, যত-ক্ষা না পুনর্বার সৈই উপরক্তি-গুলিকে চি ক্রে আন্যন করি, তভক্ষণ আহল তাল্লাকে তাহা**দের** ফাতা **ইলি**য়া উপল্কি বার না। ইইারা আমাদিগকে এক একার चमाना मादन कतिएउ वंदलन ; ए नकल উপরভিত উপন্থিতি-কালে আমর। এবন निस्तक लाश**नात विनाम, छिन**ाति वर्ण नारी, সেই : কল উপরাক্তর , অনুপাশতি চ'লে ভাষাতি এব আপনার বলিয়া স্মরণ করিতে বলেন ৷ পার্লে যাহা সাক্ষাৎ-জ্ঞানে উপস্থিত ২খ **নাই**, পশ্চাতে ভাষা কেইই খুৱৰ করিছে পাবে না ৷ সাথ যোগু উপারক্তি-গুলির উপা স্থিতি-কালে ঃাং দিগকে আমরা আগনার বলিয়া লা জানিনাম তবে পরে তাটাদিগকে কেমন করিয়া আপনার বলিয়া স্মরণ করিব ? স্মার্রণ বলিতে **এঁথানে** ভার তে। কিছুই নর--্<mark>দই উণ্রভিত্তলির সহিত জামাদের</mark> দথৰ নাহা জানবা গ কেই উপলক্ষি কৰিয়াছৈ ভাছা রই বলণ, কিন্তু আপনাকৈ উপনেতি না কৰিল অপেনার সহিত অব্যা কেনিবিকছুৰ সভজ ; উপলব্ধি করা অসম্ভব; অভএব যদি পরে ভাবিয়া দেখিলে এইরূপ ভালিপ্র ২৮ সে, ঔ উপবক্তি-গুলি আ<mark>নাদের</mark> ছালনাল আপ্র-নার সম্বন্ধেই গটিয়াছিল, তবে ভারাদের প্রথম উপস্থিতি-কালে প্রশা তাহাদিগকে (कामत) आलनात जालनार विलगाई उललिका কেরিয়াছিলাম। সাজ্য হে ও পুরের যাত্র, বলিয়াছে, স্মরণ তালাই পানমার্রান্ত কলিতে পারে; অরণঅভ্যাত-গ্রাণ্ডন কোন এখাই **থলিকে পারে ন।। অ**রভার একটি কথাও दहरा केए नटह, जाहार यकन कर है (नवा (या । 📆 📆 श्रुर्रवर्डी माकार स्वानरे पात-্ৰাব একমাত্ৰ শিক্ষা শুরু। কথিত উপরক্তি-তালির প্রথম উপাইতির সময় আমহা নাকি भागाटनत जालन जालेशादक दमरे उनताल

ভালির গৃহীতা ধলিয়া উপলাক্ষিক্র, তাই
তাহাদের প্রবংশক সময় আমরা আপনাআপনাকে তাহাদের গৃহীতা বলিয়া স্বরণ
করি। তবেই হইতেছে যে, তাহাদের
প্রথম উপস্থিতি-কালেও-তাহাদিগকে স্থামর।
আপনার মলিয়া উপলালি করিয়াছিলার
স্থানার করিয়া আনিতেছে।

াঁগিয় ভস্তাইৰ ভিত্তি নূল বাঁগিয়াই প্ৰথম সিন্ধাত্তের কল বিলেপকত্ত ॥ ইয়

লেগ্য । সদ্ধান্ততিকে প্র-পরবর্তী আর কাল লিকান্ত ২০০০ বিষুক্ত ক্লবিয়া ওদ্ধ যুদি Car (State to IACT) 7 Care लका मिवल कही হার, তার ভাষে। জড়ার অকিঞ্চিত্রর ইইয়া हाड़ों । १८७, खान नगड़ असीत द गर ভিত্তিভূমি — এবং পর পরবন্ধী সংগ্রামণ কেন্দ্র শুলির পোলা এবসাহন-এই ভাবে যাদ ভাহার লাল দৃষ্টিপাত করা যায়, তবে ভাহার মালে এল জীওন তলত ভাংগ্যের ব্যাথায় रास्त्रिय गरिएक कार्य गरि सार सहि। उहें मिन আন্তর্গ ক্রন্তর মুচত এবং **সর্ক্রাদী সন্মত**— ইয়ালো ভিদ্যা নালানে সংহিতার স্কলই निच्य कोन्टर्वाह । वेद्यात देखा**र गगछ** ভক্রটির হৈছবিচা**ই**হার পাতর্থটা সমাস্ত ভ**রাটির** পতন ৷ এ সিদাস্থালয় নিজের নিশেষ তেমন-বেলান আর্থ-পোটার নায় বেদাব্যাল, জি ভারে সাজি ध्य ८६ महन् क जिल्लाम ८५, "ब्रष्टे वर मान्त छ**र्ज**क्ष মিছে কেন খাব পাওখান—এক **আঁচিডেই** ব-মিতে পাটন পিটনতঃ 🖰 তিনি **হয় তে৷ সনে** কচিবেন যে, 'আগৱে সমস্ত জ্বা**ন এবং সমস্ত** প্রাক্তন্ত্র প্রাধার কিন্তের" এ**ই তেঃ এক**-রত্তি কথা, কিন্তু ১হাব পটা ও পাড়িম্বর **রে**ল পিলে মনে বয় যে, কি মা জানি ব্যাপার।* জিলাস বাজিকে **দান্ত্রা** এই বলি কে, ভিল এগো'ন, পরে পরে কি আনিতেত্ত ভাষা দেশন, ভাষাৰ প্র মাহা বলিবার হয়--

বলিবেন। বৈত্তমান দিনান্তটিকে কত মে

ক্রেন্ডার বহন করিতে হইবে—তিনি তাহা

দেখিতেছেন না আমরা আহা দেখিতেছি,

এজনা, ইহার পত্তন-ভূমি দৃত করিবার জনা
আরো গুটি দুই কথা আমাদিগকৈ বালতে
ইইতেছে –ইহাতে কেহু আমাদের অপবাধ
ভাহন কৰিবেন না।

্ত, সিদ্ধাপ্তি প্রীক্ষাপারা আওওঁ ছইতে পারে না, প্রীক্ষাদারা বাং সংখ্যে দুঢ়াক্ট হয় ॥১০॥

সর্বান বিদ্যান্ত নি নিক্ রাণ সম্পর্ক নিবা স্থানিত হটি। বা না হটিন নি ।

কৈ কিব কেন্ত্রী পরিক্ষ পরে। কেন্দ্রী বিশ্ব স্থানির কেন্দ্রীর কলা করে।

কিব করে কালিতে কিবলে লা। কেন্দ্রীর স্থানির কলা করে।

করে কালিতে কিবলে লা। কেন্দ্রীর স্থানির কলা বিশ্ব কলা করে।

করে মজ্জান-ভাবে আপনাকে এক গ্রেই স্থানির বিশ্ব কলা করে।

ক্রিয়ার বিশ্ব কলিতে ইইতে পালেন না।

ক্রিয়ার বিশ্ব কলা কলা ক্রিবেন লোক

 मुख्य िक्का (चार्यके लाविक क्षत्र । विश्वास कः ব্ৰাষ্ট্ৰাক্ত অপ্ৰাথিতিৰ স্থান্ত লৈ আহি ্রার্থা ভালালর গুই এটো ধর বারে বারা বারা ১৮০ চন ভাহাই সরগ রেখা ৮ গতি বিজ্ঞানে ১ ৮৫৮ 🕫 🕏 যে, চলমান গ্ৰু কোন কিছু কড় গ্ৰাল-ত इकेटल, शका, समान काल्यहरूछ एकर्गन एक्टर । किरत । जमाम्रव निमात अरकि ना । उ छंट् ८ । छः ন্তাৰৈ **ভৌগঁ ক**ঙিলে ভাংজেৰ মেটি শুকৰ বেশ্বপ <u> সাঁগুয়ে, ভাহাদের দংযোগকান্ড বলৰ কৰে ভাহার</u> न्मिद्धेशिकुं इंडेटले शास्त्र ना। विकारनत १०४ तथ व ११व এই দকল দাখান্য সত্য দেখিলা বিভানেশ প্রতিন্ বাঁহার অভতি জনো তিনি বিভানের নিতাত্তই অন্ধিকারী। বিনি কোন সভাকেই 🖫কিংগেলের মনে করিন না, তিনিই বিজ্ঞানের প্রার্থত অধিকানী। **रक**ननां कि सुन् हिंहू कर भकत गडाहे अक्छि। (राज-**হতে এছিত** বিষ্টোট্। স্থু সত্যের ক্ষ**ন** হা**রে** ন**ত্তক অ**বনত না করিয়া, শুরু সভ্যের বিশাল ম**ন্দিরে** আৰেশ করিতে পারা গায় না। গোমুখী আদেশের গলা গৰীই নহে, ভাহা একটি ক্ছ নালা মাত্ৰ; কিছ তাহা বুলিরা ইহা অস্বীকার করিতে পারা বায় না বে, णशहे गेनोत भूग व्यवस्त । के

তিনি যে-কোন দৃশ্যাবলীর ম্পাদিয়াই পদনিক্ষেপ কর্মন, শান, যে-কোন কর্মন
কার্মেই বল্পত প্রন্ন, ভাহারই সঙ্গে মঙ্গে,
তিনি আল্লিডে লাগ্যনার জ্ঞানারীত কবিলা
কাইয়া চলিত্তে প্রন্ন - তিনি ইজ্ঞা করিলেও
তাহান জন্মন বলেও পারেন নাল ভিনি
দেশি,বন ত ইলার প্রন্ন লাগ্যনি তাহা
ভাবন শিল্পার বলেও পারেন নাল ভিনি
ভোগা হাইক্রা তেনা প্রন্ত লাগ্রন ভাহা
ভাবন শিল্পার বলেও লাগ্রন লাগ্যনি তাহা
ভাবন শিল্পার বলেও নাল্যনি তাহা
বল্পান বলা বলা বলা করিলাকে লাগ্যনা স্বা
লাগ্যনার বলা বলা বলা করিলাকে লাগ্যনা স্ব
লাগ্যনার বলা বলা বলা বলাকে লাগ্যনা স্ব
লাগ্যনার বলা বলা বলা বলাকে লাগ্যনার বলা বলা
লাগ্যনার বলা বলা বলা বলাকে লাগ্যনার বলা
লাগ্যনার বলা বলা বলা বলাকা
লাগ্যনার বলাকা
লাগ্য

প্রজা । **স্বতঃসিদ্ধ জ**ন্মই প্রন্ম (৪) - ত মুখ্য প্রথান্দ্র (১)

কিন্তু গ্রন্থীয়াৰ বিভাগতি প্রভাগের ই মলাদ্র যে রাক্ত-গুলির ভিন্তমান , দেন উল্বয়ন্ত্র হুটালে ষ্ট্রেন, ভাছার বেরপে অপানস্থাস িল গ্ৰহা কাপকতা আৰশ্যক, ১৬৮ भका र व्यंता ७ व्यंत्रे कावादक मिटल । १८४-१ र का ज़िला पर अन्यान है। त**्रहित** है। প্রকলি । এক ক্তিং সিচে স্বাধ্যাত গ্রাধার পৰ শভী বিষয়ে ই মকতে বি কেন্দ্ৰ ভিন্ত কৰে আাগতে পারে লা। ওছো সংগ্রেপটা मिनायनित लाल्ड १५ है । १४ साम् । मका करिया माछ करा गा. छ। हो--- कल छ। **्मत** छेशत है खबाद समान जाति छ। १ ছাপ্ৰ কুলু চাই ভাউখুৱে এলপু ক'ল প্রতিপ্রম কর হাই যে, ভিলা বিগরের পক **्रक्तिवादबरे परिद्रा**षी जनः करण्यक । । हान কথা এই যে, বভ্নান সিদ্ধান্ত-টি এমারেণ্ড কোন অপেকা বাবে না, উহা নিছেই সর্বপ্রথন প্রমাণ-দার, এজন্য আর কৌন

হার দিয়া উহাতে উপনীত হওয়া যায় না। उत्न ने अक्रम श्रिक्श डिशा छ। दाना করা শাইতে পিরে যে, ভল্টে উহার' गंदर्शिक्ता-प्रिक्राय लिए। गान जिल: राखा जारमश्रीमित्र भार गा। जारि जित्र मृत्रकि श्रीनकोला दाक्षण शामाविक्छा-खेबात व व्यक्तिक दमारे तथा। विश्व ति विकास কাহাতে। কোন কেখা জনিত আলে ।।।। হদি কোন ভাশাল এক এনেয় এবাপ কোন धकरि छान उधार्धन करिएक ा ता. प्रहादक लिलि छ। इस नाहर के द क्रीनिमें जीक्षर नदश्म, एट्टर अस्त अस्ति । **िक्रिकेश** करिएड शहरक वर्ष हरे हो। ্ৰম্ম ও জ্ঞাত থাকিবার 一、八年 開議 (3) ৰ বি **ক্ষা ক্ষান্ত পুৰহি আ**ছে, ২০০১ উচ্চাই , সমাজ জীব**নের মধো** একবারও জেলী উচ্চার খবরে ৬ নেতে ছিলন যে, ১৪ জন ১ ব নিক্ষের ভাল লাল কোন কল্পনা কি এলি ল महार १ कि हो। इसि इस उद्देश राज उत्तर १ 三 水 电扫描 体网 经营证证 经营 (एक) <u>किंब्रू</u>न **किंक्**। नामक किंक्न स লিয় জানিতে ছন না' প্ৰান্তি ক্ষরিব্রিটার **অগুমো**র হালে । ১৯ ১ ৩ ১ श्रुमा जन्म श्रालमा करता राज्य गरेन-भक्ति कोत, प्रथम मृत्र छोष्ट्र (हर भाग माँ) हो उद्या জিপ্লাৰ চেরে। গৈ যাধ ভাগত অংগলার रिक्षिण चिनलिक्क भे। टिहेर, १८४ (म. याप्तर्य) जागादकं जिनलाका कृषिद्रां भारत राम "जामि क निर्ण हैं । ने का निर्ण शासि शिहरे ক্ষানিতে পারি না। ক্রেষা যাইচিক্তি ঞানে,

তাহারই নঙ্গে, ইছা ভাষাকে অগ্রজা আনি নিচে হয় গে, সে আপনিই আনিতিছে। নকল জানের সঙ্গেই আজজান অবশান্তাবী। প্রথম নিজান্তটি যে, এইরূপ অবশান্তাবী প্রশ্ ভীয়মীন ইইতেছে,—এয়ান অবশান্তাবী যে, ভাষার বিপরিত পক্ষ থবিবেলী, অর্থাৎ ভিত্তি কি শুনা ভলাপোজি, এ যে হই-ভাছে কিবল গ্রেলারী প্রসাদাৎ।

তাকে পতিপ্রার্থার **।** মহা

ান কে দার্গানক সালত বিষয়ে কৌনিচ ত্রান একটি ভাম দণ্ডায়নান
লাহলারে তাত ব্রকটি ভাম দণ্ডায়নান
লাহলারে তাত ব্রকটি ভাম দণ্ডায়নান
লাহলারে তাত ব্রকটি ভাম দণ্ডায়নান
লাহলার ভাজি
লাহল প্রতি ক্রামানি সান লাহলির সন্মাশে
লাহল প্রতি দার্ঘার কি নি লাহলি যায়,
ভাবে প্রতি দেই দর্শার সিক্রান্তের মন্ম অত্যিক
লিখন ব্রহান ভাজিলার সিক্রান্তের মন্ম অত্যিক
লিখন ব্রহান ভাজিলার সিক্রান্তের মন্ম অত্যিক
লিখন ব্রহান ভাজিলার স্ক্রিছয়া

প্ৰভিথক বিশ্বাপ ঞ

ত্রনে-নিদ্ধির জন। এক ২.৫ আবাণক নকাত হৈছে একটি জ্ঞাতবা বিনি এবং তেওঁল জাতা উত্তে প্রস্পার স্থিতনে নিজে পাকিবে, কিন্তু ক্লাতো কি, মাননাকে আপনি জ্ঞানিত্রে ইয়ার বি-শেষ কিন বাগা-বাগবালনাই।

এই প্রিক্রি সিলাস্কৃতি । কিক চিতা এবং সভাবিভাবের মুখ্য এক্রিক্র

গোকিক তিন্তার মানান্দারে, শুধু তা
ন)— এচলিত মনোবিজ্ঞানের ও মতামুদারে,
জান মিদ্দির পক্ষে ঘাঁহা নিতাতই নহিছে,
নয়, তাহাই এই প্রতিপক্ষ দিলাতে গুজ
করিপা বলা হইল। জ্ঞানের একটি আন্য

ক্ষাশ্য শকের মধ্ অভিবাদে এইরাল পাওয়া। বাগ,—আধার, মন, বাসনা। জলাশর (জলেই আশ্লা) বাগতে মেনন জলমর জলের ভাষার বুঝান, জানের আশান বিগঙ্গে সেইরুগ জান্ময় জানের আধার বুঝার।

(ংখন তুমি, আমি বা আর খে কোন রাজি) ७ छा: तुत कार्कि विषय (त्यमन् घडे, भडे वा আর যাহা কিছু), এই তুইটি পরস্পারের সন্ধি-कृष्टे इंटेट्स्ट्रे डाहात कम माँड ! टेटर- कान। माधात्रेने लाकिपिएनद जन् गरनातिष्ठानी-ু দিলোর মতে - জ্বানোঙ্গতির মূল এরাঁস্ত ইহার অধিক আর কিছুই একো। **এই বলি ८६ँ, विषयक (वहें शिलाक्टक)** . जा শ্লী**নতে হটলে—আশ**রতক (জলেনালে) তাত হার সঙ্গে জানা চাই-ই চাই। প্রনিশক निकास है जागात्य व कथात किता के म्मार्थ किन्नूहे रतन ना। इस उलक गिक स्विष्टि गिष्टि क्यां के अर्था का भारत के था कि की কার করে, ভাগা হইলে বুলিতে পাব। সায়, किन्नु जाश (म क्टर मा ; जटव ज्यांग (मंत्र ক্বা স্টুর করিয়া থাকার কর্ত্ত্—ভাচাও ক্ষে ২; : কেবল গোজা মিলন দিতে চেই। করে; এই এনা ভাহার মহিত পারিলা । ৩টা ভারণ কিন্তু ভাবে বুঝা গাইতেছে গে, গা-মান্তের কথা অধীকাৰ কৰিবার দিকেই আভ **शक शिकार**स्टन (तभी दर्के है। श्रष्टातिक शर्दन -विख्वादनव मलानुभारत अहेदान कालिनच करा (म, प्राच्या (Subject) वनश्विमध (thise) छ-**७८४ श**ब्दश्रीद महिनाटन छेला इंड इहेरका. कथाना वा जामश विधरत यान दिश ला-भगारक जानिया बारक; कथरना वा काश-ब्र्नाटक दोन **निशा विषयटक खे**ं कड़े। शाटक ; কি**খনো বা আপ্লনাকে এবুং** বিষয়কে যুগপুত - **অর্থাকে কিল্ল মনোবিজ্ঞানের প্রাকৃতি** কথা এই বৈ, আশা (অণাৎ জ্ঞানা) বিষয়-শুস্বিধানে উপস্থিত থাকিলেই জ্ঞান সিদ্ধা रहेटें भारत-जा'रम जाजकान महत्त्वहरहे উপস্থিত শাকুক, আর, আত্মজান-ব্যতিরে-

फिछात रायात्म काम मिनीम थारक छाइडि कारनत जानत (Subject), वाहिरत स्ववादन काम विशोन देश छाहाडे कारमत विश्व (Object)। কেই উপন্থিত থাকুন—ভাষাতে বিছুই
আইন্দে যায় না। মনোবিজ্ঞানের অতি,
বিধয়ের সরিধানে আন্দরের উপাইতি যেনন
জ্ঞান-সিনির পক্ষে নিজান্ত? এয়োজনীয়—
আন্দরে জার-জ্ঞান সের্ডা প্রয়োজনীয় ন
ক্যান্ত কার অন্যান্ত কার ভারনবাজিবেক্তি অন্যান্ত কার নিজার ক্যান্ত কারে এইকিই মানা বিজ্ঞান বিজ্ঞান ক্ষান্ত কারে এইকিই মানা বিজ্ঞান বিজ্ঞান ক্ষান্ত কারে কার্ডারিকিক নিজান্ত নাই কলা্ট স্পেইনক্ষান্ত বাজ্ঞানিকিক নিজান্ত নাই কলা্ট স্পেইন-

পাখিম দিৰ্শক নাগৰ ভৰ্জনে - আপুনৰ ন - বজন আলাজনি কুলিকালৈ নিক্ৰা গুলাবিজ্ঞান ১৭২৮ ল 📆 ১৪৮

श्रामण भारती तक है। अहेन दार्गेश धार्षिभक किए। अधिक १५३ १० व छिह्नप নাই, বিশ্ব ভাইচ জান দি-দাত কেবা ভাহালৈ ইয়া স্থানি প্রত্ত भारा यात ए और काश्रंत ए एस क्या । কেন্না এবং প্রতিপ্র ফিড়ার দ্ইতে যাতা-রন্ধ কাব্যা বীতিমাত স্তিত-মান 🕒 নুস্বৰ ক্লিটোট ম্বেটি ছানের চল্ল দ্রিটেপ্ত বগভা, ব্যাল্যা পড়িকে হব; বেন্তু জন্মা-নের প্রথম বিদ্যান্ত হইতে যাত্রোর্থ করিলে বদি নিতাও আস্তিল প্**থ অবল্**ষন কল গায় তবেই বালনচেৎ কোন পথ দিয়াই মনোবিজ্ঞানের **চরীম সিদ**াজে रिशनीछ २७४। वार्ट्स्यू भारत ना । यांन विन ता, आमिरिट्ड ध्यम निकालिके गरनाविकारुनव किन्छ मुल, उद्द श्रकावाद्यत বলা হয় যে, মনোবি জ্বানু ১০১ জিক্তের এক শৈষ; এরপ কটুন্তি গুরোগ না করিয়া এই कथा तनारि नाहि भभक त्य, जागादनत क्षथम প্রতিপক্ষি দিকাস্কটিই মনোবিজ্ঞানের ভিত্তি-म्ल ; यनि, द्रि मिकान्ड এकि स्विचान-शर्नु মৃত্তিমতী ক্মনবধানতা ভিন্ন জার কিছুই নচে. रैनारमः मदनाविक्छादनत

দিকান্তই সদতো জড়িত হইয়া পড়িয়াছে।
এননিকে প্রচলিত মনোবিজ্ঞান, আই এক
দিকে যথার্থ চিত্ত-জ্ঞান; মনোবিজ্ঞান
নোকিক-চিন্তা স্থানত ভ্রম-সিদ্ধান্তের পক্ষ অবলগন করে, তত্ত্বান বিশুক্ষ জ্ঞানের প্রকৃত্ত
তত্ত্ব সকলের পরিচয় প্রচান করে; প্রথম
প্রতিপক্ষ সিদ্ধান্তি বিদ্ধানিয়াবিজ্ঞানের ভিত্ত-ভূমি:
ত্রের মধ্যে যে, কিন্তাপ মর্যান্তিক বিরোধ,
তাহা দিতীয় দিল্লান্তে স্টিয়া বাহির হহবে।

দপক্ষ এবং প্রচিদক্ষ টুইন্সপ (বনাজের প্রভিন্ন চিক্ল মৌসর ॥

সপক্ষ এবং প্রতিপক্ষা ছাইরূপ চিক্রাটেছর रिक्तिक क्लाइस्टिश निर्देश करिएक रहेरन এইরপে বলা গাইতে পারে হৈ, যাক আমক मना भवाह जाति—मशक भिकास एए।ह আমাদিপতে বলে; আর, বাহা স্থানরা ভাবি 😁 ভাবি, कि सु राज्य निक आंग ना, जाशोगे अजिलक निष्कां खामानिशतक मंडी बिना हिश्न करिएड হলে; অৰ্থাৎ স্থাক নিকান্ত বালানিক চিড্যা পরিচাচক, পতিপক্ষ নিছাত্ত কাল্পনিক চিত্তার পরিচাহক। আহার সাক্ষী;— প্রথম েতিপক किसाछ विकासित्ह तम, जागता जामनाद्य । जानिहा अनीमा दह जानिहा थर्म : मध्या अहेलाल को बारहरू भटन हर वरते, दिस বাস্ত্রবিদ ভালা একটি অসম্ভব ব্যাপায়। সহসা আমরা ভাবি যে আমনা আপনাকে না धनानो रहः कानिए। पाकि অথবা ৮ - একই ক্লা—আমনা একটি স্থবি-রোধা ব্যাপার ভাবি, 🕂 হাক্তবিক দে, ভাবি, ভাষা নহে কেননা যা। প্রবিশোধী ভাষার खावनो एटरिक्ट, शारत न्गी – (शन कातिरिक्टि वहें कर। वकते। जान कहिं। गुनार वार्याध फिए भाव। किस मलक भिकाल गाँक वार् তাহ আগনা সভ্য-সতাই প্রারি—সত্যী সতাই জানি।

পিথাগোরীয় সাংখ্য নিশান্তের সহিত প্রথম সিদাভের স্তিশা । ১৬॥

অভেন্ন কি-প্রকারে জেন্ন-রূপে পরিণত হয়—তাহারই নিয়ম ভীথম গিদ্ধান্তে ব্যক্ত হইল। আপনাকে উপলব্ধি করা হউক— ভাষা হইলেই সমস্ত বিষয় (সম্ভবতঃ) উপ-लाक-माना इन्ट्र -छान-माधा इट्टान ; जात আননাকে অনুপ্রবিধ করা হউক্—ভাষা एहेंद्रा १०१व विषय् छ वलकि माना इहेंद्र भा - स्वाप भाषा दशेरव ना । शिथारगात-(एर अहे एर, १६६ भिष्क, छ ११, में गाहि ংলে ছেব ভিতি হ'ম, ইবং বভ্যান সৈত্ৰাপ্তের सारमाने क भारत भाषा । शक्ती प्रकारित भीन क्षारिक्त १,४९ राज्योरी हो । कविया जाता शतः ७ सध्ति ना अक्तरे शादर-ना অংবত বই পালে , তাজা হইলে কোন বিজু া ২ এক পাবতে পাব খাল বা কোন কিছি-त्त है । इसर वाचरक श्रीक शत भार कार, कालन, क्रिका र एकिन सं प्रास्कृतक, या क्रिका प्राप्त কল্ভ, এক সূত্ৰে প্ৰা, কে বাবে, ভতক্ৰ কোনা -বল্লী এক বলিখা ভ্ৰমত ইনটে গালে নাও একছ এখন প্রান্ত্রতা তব্দ প্রেক্টিও वाहक कराजरी व्याच-मनकः दन्न ना, घ**रन**े কড় এবংবেই প্রবাহ -- ছানেকের প্রত্যে-০০০ ০০ হওয়া চাই, নতুবা **ভাহা**রা 'খ**নেফ** হইতে পালে না: এইক্লপ. দেখা যাইজেছে েৰ, জ্ঞানতে স্বাই**লে—ভ**া**নের**্যাগ-সূত্র প্রভাষরণ করিলে—প্রকৃতিতে ঐকান্তিক আ ভনীয়তা নিল্ল আন কিছুই পাকৈ না-একর ও পাকে ना— **অনেকছও থাকে** না। . একতি যদিবা আমাদিগকৈ বস্তু আনিয়া रमय—তथानि"এक"वल श्रानिया मिरक शास ना । लिशात्त्रादम এই कुथा बलन । देहाँद মতে জাতাই কেন্দ্ৰ কেন্দ্ৰত একত্ব আহোপ क्रिट्छ शाद्ध ; अमेरिक (य, क्रांड) चरनकर्ड धकरेंचर पारताश करते (किनन प्रांटनकरचत्र

শোদ্ধাতেই একড বহিয়াছে—একড় ভিন অনেকড় কৈতেই পারে না); তবে কি ? না যাহা, একও নতে কিনকও নতে, এইরূপ ভান-বিরুদ্ধ ব্যাপার, ভাহাতেই ভ্যাতা একড় আরোপ করে; আর, পেইরূপ করিয়াই অক্তেয়কে ভেরুর করিয়া ভোলে, অর্থ-শূনা শোমাদ রাজ্যকে ভ্যান-রাজ্য করিয়া ভোলে। পিথোগোরীয় মতের বিপরীত অর্থ-বোধ । ১২॥

পিণাগোরসের এই মতটির অনেকে আশ্রেরপ উপ্ট। অর্থ সুবিয়া থাকেন। এই .মুট্রের ব্যাখ্যা-কর্তারা সচরাচর **এই**রূপ ব্রিয়া খাদিতেছেন খে, প্রকৃতি পূর্বাক্টেই কন্ত্র-সকলের সংখ্যা গন্ধ। করিয়া ঠিক্টাক্ করিয়া রাখিয়াছে; সেই সকল বস্ত্রণ আমাদের সম্বে উপহিত হয়, তথন আমরা তাহা-ু দিখাকে পুন-গ্রনা করি মাত্র; এরূপ একটা 'অকিঞ্ছিয়ন কথা একজন জিন্ত-শ্রেণীর ্ত**ত্তভের মুখ হইতে বাহি**র হওয়া যেন সত্য **নতঃই ্যুগু**ৰে ! কেমক করিয়া বল্ধ-সকন '**অভ্যেত। ২ইতে** ফেল্ম**ড়ে উপনী**ত খ্যা--এইটিই এখানকার ৩ :; ইছার কি এই উত্তর যে, ভেয়তে উপনীত হইবার প্র ै হইতেই ভাহার। জেম হইয়া বদিয়া জাছে 💆 **ত**द्दि, क्षेत्र कित्रदूभ बैत्रक हम् ने हें है। द्वाहियात শময় ব্যাশ্রী-কর্ত্তা এই বলিয়াই নি-চন্ত থাকুন্ ু**লা কেন যে, জল পূর্ব্য হইতেই** ব্রফ হইয়া क्षाद्ध। जाहा त्जा बात इहर अशास না কলের পূর্বতন তরল অবস্থা হইতেই ভারতে তাহার ব্যাখ্যার সোড়া গভন ক-্রিতে ইইবে ৷ এরূণ সত্ত্বেও, পিথাগোরসের बे देव प्रकृषि निकास (य, (स्वराष्ट्र भर्था) जिल्ली, खेरात चार्थ खेल्लाहेशा जिल्ली खेराटक शामधान्त्रान कतिहा नाष्ट्रकाटना दहेबाटह। শংখ্যা (অর্থাৎ একত্ব বা অনেকত্ব) বস্ত সক-ৰেছ জ্ঞান-বহিত্ত অবস্থাতেও বস্ত-দক-লের সাত্রে ছাইত থাকে এ কথা পিথালোর-

দের কথা নহে। তাহা যদি হইত, তবে বস্ত নৃত্ত্ত আড়াত্তিই জ্বের হইত; তাহা হইলে "মজের কি প্রকারে জ্বের-রাণে পরিণত হয়" এরপু একটা একটা উহিত্তে পারিত না। পিথাগোরদের সাংখ্য সিদ্ধান্ত অসম্পূর্ণ হইতে পারে, কিন্তু উহা প্রাচীন-কালের একটি প্রকাত চিন্তার কল তাহাতে আর সন্দেহ নাই। পিথাগোরদের সিদ্ধা-জ্বে দীর মার্থ যে টি, সেইটিই কিড়াইয়া দিরা আগ্রিক পভিত্তের। উহাকে নিতান্তই এপ শুনা ক্রিয়া ছাভ্রিছেন।

> পিথাপোরীয় নির্মের নগং ও ১র শুভিনাস্চ ম

এই এপন দিকান্তে যে নিয়মটা বিনাহত হটল, ভালা পিথাপোরীয় সাংখ্য নিয়মের উচ্চতির বাহিন, এবং স্পাই তর বিদ্যালা। কোন পাছকে বালারো নিকট জ্যান হইতে হইবেটি মোনলাকে, হয় ।ক, নিয় এনেক, নায় অনেধার নারি, বলিয়া জ্যাত লগতে হইবে, বিশ্ব এক-আগ্রার সহিতে সম্পান স্তেই জ্যাতার বিশ্ব ন্ম্তির বিলয়া অবধারিক হইতে পারে; আরে, জ্যাতারা বিশ্ব ন্ম্তির প্রান্থ অবধারিত হইলো, তথাই তাহার। সালকো অবধারিত হইলো, তথাই তাহার। সালকো অবদার কি বিশ্ব নাইত পারে। প্রশান আনক বলিয়া অবধারিত হবতে পারে। প্রশান আক এক বলিয়া অবধারিত হবতে পারে।

ৰ্বান দেশীয় ভাগজনিগের গছে বর্ষমান দেশী দিছাজের পুরুষভাগন ১৯॥

মাবাধানকার অন্যান্য সদৃশত যে সিদ্ধান্ত সকল উল্ভেখন করেয়া আগ্রা জ্পান দেশীর্থ তত্ত্বজ্ঞদিপের প্রভাগ দেখিতে পাই। রভমান সিদ্ধান্তের পূর্বভাগ দেখিতে পাই। রভমান সংহিতা এই প্রথম সিদ্ধান্তিদিক ফুল্ট বেন নৃতন বিষয়ে নৃতন্তিলে প্রযোগ করক না, কিন্তু তাহা বলিয়া জাহা যে, স্কাংশেই ্ৰিন্তন, তাহা নহে। কান্ট বিশ্বমান সিদ্ধা-তের কতক কতক আভাস পাইয়াছিলেন, কিন্তু জ্ঞানের—যৌগিক এবং ক্ষড়িক— এই দূই প্ৰকাৰ একত্বেৰ প্ৰভেদ দেখাইতে গিয়া তিনি বড়ই গোলে পাড়িয়াছেন। ১

ু কাণ্টের মতে জ্ঞানের একর গুইরূপ; বাঞ্ विषय गुःकाल ज्ञात्नत अक्ष-- अर्थार जारमत विकित বিষয়ের প্রত্যেকেই এক – এবং এক এক ব িয়া ভাষারা प्यानक—' अविशेषा निकाल विकास के का का अविशेष -- এইক্লপ যে বাহ্য-বিষয়-ঘটিত একত্ব -ইলাই কাট্টের মতে থৌগিক একছ: বিভ্ৰন্তার নিকের নে, এছও, **ভারা কাণ্টের মন্তে রা**দ্ধি এ ৮৮। একটা চাভারে আমরা এক বলিয়া গ্রহণ কৰি; ভিত আগণা বাল মনে ভাষার নামধানে একটি বেখা কাউলা ভাইতক লাভ **খুইটি/অন্**ঠান্তে **বিভাক করি, ও**াপ্রতোক সাধ্যন্ত্রকে বিভা অর্ক বুলা বালিধা নির্দেশ করি, তথে ভাষা এক বিভাগ পরিবটে ছই আন নতা হইয়া পাড়াইবে। এল টাক'। ধ**লিতেও বায়**বাই ভাষা বলি ৮ ছই অক্সায়: বালচেত व्योधशाहे बाहा विश्- होका नित्य अकल नः ছাহও **নহে; আমি**বা যদি ভাহার **চুই** অভ্যঞ্বে প্তয় ফাবর। না দেখি তবেই তাহা এক,-- মান্ত ভাগ ছুই। অভন্র **ট্রেল্ডার বে**, একম, ভাগে টাকার মিছের একছ নতে কিন্তু, আমালের আলোপ কথা এক: : এইরূপ ভান-কর্মুক বে-একত বাহবিধনেতে জুণ্ডিয়া দেওয়া ৰয়, ভাহাই ধৌলিক একড়; কিন্ত আগান নিজের একত্ব দেরণা খহিব হইকে জুড়িল দেওল: এক ৷ নতে-আরোগিত একছ নতে,-আয়ার এন ১ स्योशिक नाह-जाहा क्रान्त। ाक्ष कारकेत अह কণাৰ ভিতৰ একটি গোলোঘোগ মাতে। বহিলিয়েগুৰ C. এक्फ, प्रांका क्षामतके अक्फा-कांश काम कर्त বাং বিষয়ের ১ সামে প্রত হয় মাত্র; ইহা সভা; এখন किकामा धारे (ये, योश्तेश्वन मिहे (ये, धार्यः हे, छाङ। कि সাটির ২ইতে হাড়িয়া দেওয়া—না তাই। বাংগান্তর अस्त्र है । काले बरमन खोदा वादिन श्रेट मिला रमध्या खंबवार टाठा स्थेतिक। विच वर्तमान खंखां কারের প্রতে, বহিকার বলিয়া নাডাই জানের অন্তভ্যাল বহিৰ্কাৰ্য ব্ৰায়; এখানকার মাত জন-বাং চুত, বহি क्षेत्रकारमञ्ज विषयह नहर-छारा यांतरवाधी ध्ववः व्यक्तिकितीय व्यविना। (भरे व्यन्दितायी अदः व्यक्तिके bनीत अविमा - याद्यारक व्यापन क्यांग लोहरू छ **श**हि-ৰ্মন্ত ব্যাদ-ভংগা একেবারেই জ্ঞানের অবিষয় : ভাষা यनि खारनत विषय हरेल, ७८१२ वना यारेट शाबिक যে, তাখাতে, ৰাহির হইতে একত্ব মৃড়িয়া দেওয়া ইনু ८७(ছ; ।कड वाखविक ८३ (श, छ।न-नश्क्र७ ।वसब्रें বিষয়-এক মু সহকুত বিষয়ই বিষয়, স্নতরা এক মু বিষয়ের অন্তভুতি; এই হিষাবে তাহা কঢ়িক। এখানে ्यद्रीष्ठि (मर्ग) चावनाकां (स्, कारनंत्र व्यक्तितः (स, क्यिना, একর প্রাচার অন্তর্ভু ত নতে; প্রভারাং তাহাতে— দেই अधनम् अविषय् अविनाटि - शक्ष वाहित हहेट

कार केत अश्व-बद्धाः (त-क्रांचकि षर्थ थूँ जिया नाउता प्रमाधा गानाइ এই স্থানটি তাহাদেরই সল-ভুক্ত। হত্তে এখানকার প্রদর্শিত জ্ঞানের মূল নিয়-: থটি কোন কার্যোরই হয় নাই। দর্শন শাস্ত্রে উহা ভূমিপ্ত হইতে-না-হইতেই গুরা প্রারো প্রতিত হইয়াছিল,—উহার নি-্ম-নিন্দ আগজু হইতে-না-হইতেই উ**হা** আশ্লাশের কতন ভালা আল্লাঞ্জ বিবে-চনার মানি-চাপা গভিয়া নদেশ হরীয়া পিয়া চিল। কিবড়ে (কাট্টের চ্ছেনীস পরবর্ত্তী ভত্তিং) উচাকে মুঠাৰ মধ্যে পাইয়াছেলেন, কিন্তু হার।ইয়া ্কলিলেন: আবার পাই-লেন-আৰা খালাই ছোল এইলপ করিয়া ক্রেমান্ত্রে ভারত। আট-দশগান। গ্রন্থ পার মর্গরা গেল : ডাইরে পর যেই ডিনি উহাকে কাতে নাগানিবার জনা প্রাক্তর ছইয়াছেন... জনান উলা উটার হও হইয়া থাসিয়া প্রতি-

क्षिण (तथा दश्-देश शुन्दे मना: किंद्र का के स्व আং ক্রীগিক এবং ক্রিক শব্দ প্রত্যেগ ক্রিয়াছেন 🗕 ভাষা ভিটি জানের লিম্ব উপলক্ষেই প্রয়োগ কবি-गार्फ्न-अंतिम जिल्लाक नरहः इट्डि अञ्चात (Coment) -- एं छात्रहे कार्याच विश्व -- धवर विश्व প্রস্পারের স্থিত যোগ্যুক---এই উপলক্ষেই তিনি হৈবীলিক শক্ষা প্রেরোগ কাব্যালেন। "অড-পিও মার্ট্রে-त्र अक्षत्र भाष्ट्" धर्मात्म कर्णाणा आधानतं विश्व अवर क्षत्रकार कारनात विषय — बारे कुछै , विषयात । गांगा (टेनबाबिक जाराय-"मामानाविकतः।") निक्षिण ६३-टिइंट्ड किंद्रिक्त कारनत "निषठ" जिन्नटकह कान्हे হলেম নেই গুৰুত্বের ভাষ জড় পিডের উপর খাহির হটতে চাপাইরা দেওনা—তাই ভাহা গৌলিক শলেম বাচা। কিন্তু, জ্ঞানের "নিবয়েব" উপরে তে। একত্ব বাহির ছইতে চাপাইয়া দেওয়া হয় না-জানের অবিধ-বের উপরেই একম চাণাইয়া ভাষাকে বিষয় করিয়া 🕸 তোলা হয়; এ জন্য জানের কোন "নিষয়" উপলক্ষে कंक्या तला मञ्जल गरह रा, 'खाशत ध्वका कृष्टि गरह किंद्ध त्योगिक। कांत्रित यह किंदू त्यानमान-नमर्देक्द স্তাপাত এইখান্টিতে। **কাণ্টের দলে বর্দ্ধনাল এছ**্ কারের কোখার কোখার বিরোধ আহা প্রিক্তিকরিয়া चुनिया विभएत ब्रह्मा व्यानक कथा अभिनेत स्वानी क्य किश्रनी छाशंत शान नत्यः अर्थात्न के किस्त नत अकट्ट आहित गरि। त्राख्या हरेन छाडीर वर्षक A STATE OF THE STA

য়াছেন মেলিড ভারার বৌবনের প্রথম উদানের সময় আমাদের এই দিদ্ধান্তের অসু-রূপ একটি সিদ্ধান্তে ভর করিয়া অনেক ভাবি মহলাপারের পূর্বাভাস উক্তারণ করিয়া-ছিলেন। কিন্তু আৰু পঞ্চাল বৎসর ধরিয়া জনৎ তাঁহার গ**র্জনের অনুর**প বর্ণণ প্রতিকা **ঈখর করুন্** জগতের যে করিতেছে। আশা একদিশ ফলৰতী হয়। দৰ্শন-শাস্থ ভূপুৰে কেবল একটা বিশাল মক ভূমি নহে, ভোহ। দলমাৰ কলিতে এই অনীতি বৰ্গীয় . শ্বংষি গেম্ব স্থানিক, এম্ম ভার কেইট্ भट्ट, -- अकरू-शनि-दक्तरण आग श्रीकात कः tan । दशरणनः - किन्नु (४८% दल्ल विषद्ध — বুঝিতে-শ্বমিতে প্রিতিটো এফন একটা ক্রথা আজ পর্যান্ত কে উচ্চারণ করিয়াতে ? তাঁছার श्वरमनीय काम वा क मार--विस्माय कोम হাক্তি নহৈ--তিনি নিজে ভাষা করিলাছেন কিনা সন্দেহ। ভাঁহার এডের এখানে ও খানে সেখানে এক-একটা নিখর মুট্ট অগে-का ७ ममूञ्चल - कि स भागारनव ममल वाव-ধান এমনি অন্ধকার দাগরে নিন্থ এব, কোন फिक्-फर्मनी नामाकाइट् रमशारन वाक्याद्वीक । य না; আর,দেখানকার বায়ু এমনি গে ভাহাকে শ্ন্য বৈলিলেই হয়—তাহাতে, মনুষা-ব্দির नियान-किया हैलिए शास्त मा। इंटर्गटनत **বিষয়ে এখানে কোন** কথার উল্লেখ না কণ্ডিয়। চুপ থাকাই ভাল। তেথেলের মতের সহিত বর্ত্তমান সিদ্ধান্তের কত দূর ঐকা বা অনৈকা তাহা ঠিকু করিয়া ওঠা অসাধ্য ব্যাপার। কার্ক্র হেগেলের ক্লিডর যত ই কেন সত্য থাকুক্ না, যেমন চুগ্ধ জাল দিয়া তাহা হইতে যুক্ত, নিঃসারণ করা যায় না, দেইরূপ ংহেগেলৈ**য়** প্রস্থারন-মাত্রকরিয়া তাহা रुद्देर वर्ष विहित कर्ता यात्र ना। रर्टागरनद গ্ৰন্থ মন্ত্ৰ কৰা আৰুণাক; তত্ত্বিংগণের वाह गावह गर्नार्नको - किस ट्रान्त

প্রস্থ বিপর্যায় 'দাভিনিক্ত মাজ্রায়। হেগেনান বাংগান্ত্যারে সভা ব্লাভে যা ৪রা
আপেক্ষা—আপুনার বৃদ্ধি-বাং করিয়। সভা
জ্যা কবিলে সভা ভানেক প্রনভ মলাে
পাওরা যাইতে,পারে। হেগেল অবং জাঁ
ছার প্রবিদ্যা কালেন্র উত্তরালিকার লিখেন
যান কিছুও 'দা - ম্যালই — ক্যালেকার লামাা
মান্ত্রীয়ে বিধয়-সন্দ্রীয়ে নাঙে। লিভ্রেন
লাল জ্যা বিধয়-সন্দ্রীয়ে নাঙে। লিভ্রেন
ভাল জ্যা বিধয়-সন্দ্রীয়ে নাঙে। লিভ্রেন
ভাল জ্যা বিধয়-সন্দ্রীয়ে নাঙে। লিভ্রেন
ভালে জ্যা বিদ্যাল লাভ্রেন
ভালে জ্যা বিদ্যাল লাভ্রেন
লাহার ভিত্র ভালাবে, প্রাল জ্যালি,ভ ইইলে
লোগকের গে সে গুল জ্যালনাক, সে রাম্য
উল্লোব্য একেবারেই কলি তা

এখন সিন্ধান্ত সমাপ্ত :

¥ .

गर्हो का। *

15

প্রত্যেক মানতের মঞ্জরই অর্গ নিরাল ক্রিনিতেছে।
লাত্যেক মংথ কালাই লগা। কথাত্র প্রিকালক জনী —
প্রান্তিক মংথ কালাই লগা। কথাত্র প্রিকালক জনী —
প্রান্তিক মংথ কালাই লগা। কথাত্র প্রিকালক প্রাত্ত ইনি শিশুকের সঞ্জা দুর কালি ১ এর করি; অপ্রাত্ত ওক্ত ক্ষাত্রের সঞ্চালিক ক্রিনিত ক্রেণি টেন্ড কেওঁ মন্তবের স্বর্গ স্থালিক ক্রেণে পৌতাইন কেওঁ মন্তবের স্বর্গ স্থালিক ন্তানিক ক্রেণ লো চন্দ করে; অম্বরে বর্গ স্থাপ গাহবে। ক্ষ্যিন মানবিকা র্যান্তবিধ্যান্তিক স্থাপ পাহবে। ক্ষ্যিন মানবিকা রান্ত্রিক আন্তর্গ করে; অলাকে ক্রিপ পাহিবে।

আৰু বিদৰ্জনই জীবনেৰ প্ৰায়ত মহল।

প্ৰিত্ত ক মহৎ- কাৰ্যোৱ প্ৰস্নাঞ্জ বাহিংব নংং, **সত্তরে।**

- ু নির্বৃত্তরী অ্যক্তের সহিত ও অব্ত্যের সহিত সংগ্রান ক্রা, ত্যাগ স্বীকার ক্রা, ত্র্বন্দে বল, অর্কে ৮টি,

* বিবিধ্ ধৰ্মগ্ৰন্থ হইকো শৃক্ষণিত ও অনুবারিক।

আশ্রিনিকে আশা প্রদান করা, অজ্ঞানামকার পুর कविद्या कामारलाक विष्ठात क्या -- निः लाविष्ठात भीर नक्न क्तिता नक्षे थाकार सामास्त्र की गरनड काता।

्रविदश्य कार पूर्य कत्रिया दश्च नदस्य व्यानिकार कर्त्र । दक्तन। जैसंदेशक द्वारका विदिध क्वांनानकात्र मह ८० ।

कामश्या देनार कत जिलत । अपूर विखान कता भर ह नरह ; अमृत्था त्नां क्य त्राम क्यां मध्य ।

ধনী কে । তিনিই ধনী বাঁচার ঈগর প্রাভি সকল क्याकी, जुक्त दुंखि श्रीत मर्जना भवित ७ एम धवनास अवस्ति कारण निवक ।

অতি সামনিত বিশ্বাভ ন্যানেল কালেলাইদানে कार्या कत, जाहा इंहरनी धाराम विमाद मार्द्यत थन প্ৰিত্যাণ করিয়া কার্যা কাষ্য অসম্ভব ২ইবে।

अन्य स्ट्रिक अन्ता क मिन्निक मध्यार एवं कराहि ্রতিভাষিত ব্যক্তি**র কার্**টি।

প্ৰদি ংক্তানিজ্ঞীয়ৰ আহিষ্যক্ষে ছণ্ড কৰে। স্বাস্থ্য বংশ । ১৮,০৬০ চনক্ষ্য হৃষ্যতে সভ্য এছণ কৰেন। । ্বে সে ইবরের প্রেমিক, ভার্ছা ইইলে সে নিশ্চটই भिथाविषः।

সমূধে যে কাৰ্য্য পিহিৰে ভাষাই কলিবে, ১৫৫ इहेरन ख्यानरव कि कितिया इहेरके असि अधिक পাইবে!

भक्रदात जिद्रभटनां मन्त्रा मन्त्रीएम कविरत, आश् इंडरल भक्रम ट्यामात मरलामी इंडरम ।

वि ७ दोना जल्लको केल भूगावाग नेतार्थ कर পুৰিবাতে রহিয়াছে, কিন্তু মান্ত্য কি A্থ ! সে প্রস্তুত क्षितावान अभाव चाहबटन के एक हव ना/।

त्व के श्रेट्स विश्वाम् स्टब्स दर्ग कथम विश्वीम द्रित्र मा।

मकुन मास्टे पूर्व परि केवरबात डेनन पूर्व विकीत था-किंद्र काका को भी श्राविद्याल त्मारहे काथ त्मारक क्यो-पुत्र स्टेड नाज

कतिएक मा, जनने कृति जिन्दत्व निक्ष की वीन कति ख्या (व १८१ चित्रत सामव साठित छः व देशांठन करे," दक्त मा पूरि के व्यक्ति कहिनाक अधिकाती नह। (59)

এখানে তুমি ঈশরের আঞ্রিত, পরকালেও তাঁহারী দিকটতর আশ্রয়ে তুমি বাস করিবে, ভবে হে দানব, **ৰেন ভীত** হইতেহ ?

(50)

যাহাব ধতটুকু ঈশ্রবতা, তাহার তত্টুকু দৌদ ।। (22)

भिक्ति व्यविक्रम श्रमक्षेत्र अटलेशकम केनाए हैं। ; **क्रे**वन्दे ারেলা এম ব্যুত্ত সন্ধর্ স্কেলিয়ন শিক্তার ভাত এপতই সালে টেম্ গাস্টা

रिन्माल (मोरिक्पी६८०० जिन्दाच **अगस्यक्त প**र्वित 6a পের, তেম্বি এব পুরেরণা এক **কু**র বালুক্সার ত(হ'': পণ্ডা প্রকাশ করে:

েপ্রমূর দ্বাল বস্তুর আর্থি ও অভা

লে আন্তাহত্তে পালে ৷ বিলি**সকল ব্যাও স্কল**

((40)

সংগ্র হৈতি প্রেম গতই দৃঢ় ছইটের, ডাটই ভুমি भ्रिष्य तथ निक्छिद औ दश्रद्ध ।

(-8)

नक्षालका वसूत किए ८थम। गर्का**लका के**क्या**लेक**ा कि १ म्या कीवन । भर्दारशका मधार कि १ हे भन्ने मल्लालका ऋगमामक किए भेषत खुका 6881, भरत्रोभकात् ।

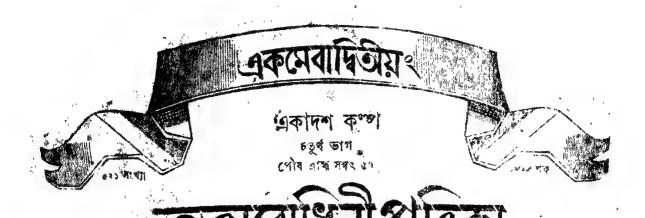
(3,6)

খন্যকে কটা দেওয়া খাপেন কটা ভোগ क्या छ ल, भारूव और पुरसंगा।

বিজ্ঞাপদা ৰ

আগামী ৫ পৌষ ছবিবার সন্মা १ ঘটকার পর वन्त्रणि वाक्रमशाब्द छन्जिः न नीत्रकृतिक वाक्रमभाव ष्ट्रव 💝 🚶

वन्राधि वीकान्याव (जीवार्ड्ज नाथ कर्माश्राधीय সরস্কৃত্তিক ১৮৮



अञ्चानागकित्वस्मग्रचाचीक्रात्यम् विचनार्थाचिद्दं सर्वसम्जन्। नद्व नित्यं धानमग्ननः ।भवं सातकवित्ततः केवस्वा उतायम् कृष्टिः सन्त्रीयापि सम्बंशियनम् अत्योत्रयसम्बंशित् कर्वाशाह्मसद्भूतं पूर्णेगप्रतिमस्ति । एतस्य सर्योदापासनयाः पाद्भिकसंदिक्षत्र धनम्बति । तथानः प्रतिक्षत्र प्रियतास्य माधनत्र सद्यामगस्य ।

তাদি ব্ৰাহ্মদমাজ।

'৬ অপ্রবারণ রবিবার লোক্স **দৈছ**ে ৫৭ :

, आंतर्गात डेल्सनी

আমা: মদি আমাদের সমস্ত অবস্থা भशादनाइना कतिया (मिथि) छ। इधेदन cमंथिट भाष्टे रैंग, जामता वैश्टितन मस्य 🖛গতেরই অধীন। সুধানতালের কোপায় কি সাম্যের রাতিক্রম হয় —পূথিবীতে আমর। ভাহার ফল ভোগ করি: কোন্ দেশেব কোথায় কি বিপ্লব উপস্থিত হয়, ভাষার - তর্মশাসিদ্ধা খামাদের কুক্ত কুসীরের ডিভি-স্থ-সোভাগেরও मूल काँभादेश (प्रा। ভাষৰ ক্ৰতের এক প্রান্তে উপিত হইলে, ক্ষাৰ ৰাৰ-এৰ প্ৰাস্ত তাহা জানিতে পাৰে। ক্রি আল্ডর্যা এই বে, এইরপ অপরিহাগ্য विनेनजो-मुश्चरन् बाशांने वेसुक बड़िज हरे-त्रा व मेर्या भागि भटक आभनात भुताधीनका বীকার করিছে চাছে না। সনুধী আপ্রনার পরাধীনতার আরক চিত্র জীক্ষরের প্রতি ঘট-नार्डिं महिल प्रिएएक अवः मृत्मू ह ভাহার কল ভোগ করিতেছে—অথচ আপ-নার পরাধীনতা স্বীকার করিতে তাহার প্রাপ

বিয়োগ হয়। এরপ হয় কেন্দ ইহার অবশা কোন নিস্ত কাগে পাছিবে। তার্কিক দে কারণ-টিতে কম স্কার বলিয়া এক কথায় ুষ্টভৃষিয়া দেন; তিনি বলেন যে, সাধীনতা-স্পৃহা মনুদ্ধার একটা ত্রাকাজা মাক্ত্য-প্রাণে কথিত জগতে যে জ্তীব পুরাকালে পর্বতেরা , পক্ষ-বিচানত ছিল, 🛨 পরে ইন্ডের নিকিন্তানজে ভাছাদের পক্ষ াণিক্ত হ্যা গেল; জানীনতা স্পৃথা মনু-মোর অন ৭5 মনোরতির পক্ষ-মরপ,-বিজ্ঞানেৰ বজে তাহা ছিল-মূল হইয়া বলা-শাগ্রী হয়। বিজ্ঞান প্রবাজকেরে বলিতেছে (य, भग्नाम जनद कट्ठात कामा-कावन-मुख-লায় ওত-খেনি, – মনুষ্য জগংছাড়া লাগে, मकन वस्तु (यमन शहाधीन-मनुषा । महेन्न श शहाधीन । বিজ্ঞান যে, অজ্ঞানের দলে মিশিয়া উচ্চঃশরে পরাধীনতার জয়-কীর্তুন कतिरत- हेहा किছूहे आंक्ष्ठवा नरह, - दक्तना অজ্ঞানের দল-গোল চিরকালই প্রাসিদ; আশ্ভিয়া যাহা-তাহা আল-এক বিষয় ; ঢারি-**फिरकत भेताधीन जातः यक्षा ६६८० जाधीनकात्र** ভির করিয়া বিজ্ঞান কিন্ধণে অনুনিত এবং विकि इहेट शाहिल-हेहाहै आफरा।

. . .

বিজ্ঞান মতুষোর স্বাধীনতার বিপক্ষে মুখে যাহাই বলুক না কেন, কিন্তু কার্য্যতঃ তাহার সপক্ষেই সাক্ষ্য প্রাদান ক্রিতেছে। স্বাধীন চিন্তাই বিজ্ঞানের প্রাণঃ বিজ্ঞান যদি ছা-ধীনতার বিরুদ্ধে কোন ক্রা বলে, তবে সে তাহার আপনার প্রাণে শার্শনি আঘাত করে; বাস্তবিক বিজ্ঞান তাছা বলে ন।। বিজ্ঞানের ভিতরকার কথা এই যে, কোন বন্ধুই এমন নছে যে, তাহা একেবারেই পরা-ধীন কিন্ধা একোরেই স্বাধীন,—জগতের সকল বন্দুই পরস্পরাধীন। খালারা বিজ্ঞা-বৈর ভিতরকার কথা জানেন না, ভাঁহারা र्शां मत्न कतिए भारतन (म, श्रायतीह मूर्रीत वशीन - मूर्या शृषितीत वशीन नरह। किन्छ निष्ठान भार- এक कथा नला। विक्रान ৰ্দৈ এই থে সূৰ্যেরে জনতিদূরে সমস্ত সৌব অগতের ভার কেন্দ্র অবস্থিতি করে; দেই ভার-কেন্দ্রের চতুর্দ্দিকে সুর্গের মহৎ অক্-र्शन राधन शृथिती प्तिराउदछ—भृथिसीय ক্দ আকর্ষণেও দেইরূপ সুধা যুরিতেছে। ম্নুষ্যের গাহঁছা এবং দাদাজিক বাগোরে এই পরস্পারাণীনতা আরো জাজ্লতের-রূপে এক দিকে শিশু (प्रिथिटकः शांकता यात्र। ষ্থেন নাতার অধীন—আর এক দিকে মাতা তেগনি শিশুর অধীন; শিশুর এগটু किছू इहेटल**हे मांजात**ं लाग नाहित हहेगा খার। এক দিকে প্রজা যেমন রাজার ছানীন, আর-এক দিকে রাজ। ভেষনি প্রার অধীন; প্রজার তুর্ভিকে রাজার बाक्य पुरिका यात्र। मकल वस्त शहरणाता-मीन अब कथात वर्ष है जह ता, टालाक वल क्रिक-सर्म जासीन - जात अक बर्टन भना-बीमा ताका गर्याः स्थापन परीन नरह-व्यापा मन्द्राभाग ताचात व्यान नरहा (व भारत श्रामान चरीन - रन भारत बाबा शबार क्षेत्रन नरह-- एउदाः म पार्ष

রাজা সাধীন ; তেমনি আবার, যে কংকৌ রাজা প্রজার অধীন--সে অংশে প্রজা রাজার অধীন নহে – স্তরাং জে অংশে প্রজা স্থা-धीन। शृथिती स्व **षर्म जात-म**म्छ त्रोत জগতের অধীন, সেই অংশেই পৃথিবী পরা-দীন; কিন্তু যে অংশে **আর সমস্ত** দৌর का९ পृथिवीत ज्ञधीन स ज्रशास शृथिवीत ভাল মন্দের উপর সমস্ত সৌর জগতের ভাল মন্দ নির্ভর করে—সে অংশে পৃথিবী स्वित्। भक्त रखहे এकांश्रम स्नाधीन, আর এক অংশে পরাধীন। স্বাধীনতা সকল বন্ধরই অন্তরঙ্গ, প্রাধীনতা সকল ব**ন্ধরই** কিন্তু আর আর বস্তুর সহিত মনুদার প্রভেদ এই যে, ম**নু**দাের **আত্মাতে** দেই সাধীন অন্তরম্ব প্র**দেশটি জ্ঞানোজ্জ্ব** পরিক্ট ভাব ধারণ করিয়াছে। **মনু**ষ্য **আপ-**নার কারীনভার মর্গ্মরেদ আপানি আভাদন করিয়া অখনত হইয়াছে—প্রাণ গেলেও আর দে ভাছাকে ছাড়িতে পারে না; **সমু**ষা আপনার সাধীনতাকে জ্ঞানের মৃষ্টি-মধ্যে পাইয়াছে—সর্বসংহারী মৃত্যুও সে মৃ**ত্তি হইতে** रम षम्ला तन्ति क **कां एक। लहेर जार** না। সনুষা শত সহঁআ শৃত্যলায় **আপাদ**্ মস্তক **জ**ড়িত হইয়াও আপনার পরাধীনতা স্বীকা**র করিতে কেন-যে এত পরাভূপ, ভাছা** এখন স্পা**ন্ত বৃদ্ধিতে পারা সাইতেছে। মন্ত্রা** আপনার অভ্যন্তরে এযনি একটি অপূর্বকিক্সু দেখিতে পায় যে, ভাহার প্রতি দৃষ্টি কমিছা: প্রাণাজ্যেক্সমূহেরর মুখ হইতে এ কথা বাহির হটতে পারে না যে, "আমি পরাণীন।" ক্লেই চক্তি বনুবের অন্তরাজা। মনুযোর চী দিকে পরাণীনতার ঝঞ্চাবাত তুম্ল কোলা रत विद्या गारे जिल्लाक के हा व শান্তি নিকেতনে সাধীনতা ক্রিক্সর কর্মান **उद्य**ित स्थि किष्टु मिति। १६वाम 那家更 大学

जगरजं প্राणाक रखहे अकारान साधीन আর এক অংশে পরাধীন ; মনুযাও সেইরূপ একাংশে স্বাধীন –আর এক অংশে প্রাধীন; কিন্তু মনুষোর স্বাধীনতা জ্ঞান-জ্যোতিতে প্রদীপ্ত, আর আর-বস্তুর সাধীনতা অজ্ঞান-अफकारत প্रकृत। कानगन् मभूषा १४१ অজ্ঞানাত্রের শাহা একতি উভয়ে পরস্থান भीन; मनूमा **এको एम शक्र छित्र अ**भीन, আর এক অংশে প্রকৃতিকে আপনার জ্বীনে চালনা করিতৈছে, স্ইন্থাই উভয়ের গরস্পান্তা-ধীনতা। এই প্রস্পান্ধীনতার মূল জন্মে য়ণ করিলে দেখিতে পাওয়া যাইবে যে, গুদ বুদ্ধ মুক্ত সরূপ পর্যাগাই সর্বতোভাবে স্বাধীন পুরুষ—মনুষ্য যে সংশে ভাহার সহিত বোগযুক্ত সেই অংশে সাবীন, এবং ষে অংশে তাঁহা ছইতে বিজিয়ে সেই অংশে পরাধীন। জগতের সুসস্ত স্থীনতা ওদ বৃদ্ধ মুক্ত ভূমা মহান্ প্রুষের মঙ্গল-জ্যোতির উচ্ছ্যোস ; এবং সমস্ত পরাধীনতা দেই মঙ্গল জোতির ছায়। কর্মচারী ধেমন কর্ম-क्ष्मरख পরাবীন এবং বাটিচে আসিয়া স্থীন, गतुषा (महेक्रभ निश्मात-त्करण भगविन-**ঈখরের পত্মত নিকেতনে স্বা**ৰীন। ব্ৰহ্ম-নিষ্ঠ, জাল্ফ স্থনীই জগৎকে, পরের, রাজ্য মুনে করেন না—ভাই আপনীকে পরাধীন খনে করেন না। অক্ষাৎ, তাঁহার পিতার রাজ্য বজুর রাজ্য—তাই ভাঁহার আপনার, রাজ্য; তিনি কগছে স্বাধীন ভূমে বিচরণ করেন-স্বাধীনভাবে সকল বন্ধীয় মিগুলু তত্ত্ব অনুষ্ণে করেন—পাপের আরুর্ত্ত ডির আর কোথাও ভাঁছার বাইশ নাই; বালক মেমন পিতাকে সাধীনু-ভাবে দকল বন্তরই তত্ত্ব ক্লিজ্ঞানা করে, মনুষ্য দেইরূপ করিয়া ঈশ-বের নিকট হইতে প্রকৃতির সৃষ্ট্র ডম্ব একে একে অবগত হয়। স্থারের জ্ঞান সম্ভানের निक्षे नकल क्रमें हैं जाननात्र। 👦 क 👫

জ্ঞান বালতে পাবে শে, মূগ্য তে। ভোমা-**হইতে লক্ষ** খেজিন দূরে অব্সিতি করি-তেছে, দে আবার ভোষার পাপনার হইল किक्रार्भ १ ७% (क्वल घरेन) कर्म देन গতিকে দে তোষার চকুর উপকারে আ-দি**তেতে** –এ ভিহ আর কিছুট ্রচে ৷ ইচার প্রভুত্তেরে আমনা বলি মে, আ চালেব লাপে ক্ষিক ব্যবধানকে, বিহনেন, তুমি পাদ সভা मङ्ख्ये खल्डानीश करेगान घटन कर, ७८४ ভূমি এখনও প্রকৃত বিজ্ঞানের ভাষেত পশ্চাতে পড়িয়া আছে: ভোমার স্থন চল ফুটিবে ভগন স্পাধ দেখিতে গাইবে খে, সমস্ত ব্যাজের কেছ কাছারে। নর নয়ে। শুক্ষবিজ্ঞান যন্ত্ৰ-ভিন্ন আৰ কিছুই গেখিতে জানে না—তাই সে ফল ১৯ করিয়াই অন্বির; ভাষারঞ্জীভূত চন্দেল্টান্র মধুর জ্যোৎক্ষা পদার্থ-বিশেষের কম্পন বই আন কিছুই নতে; মনুসোর প্রাণের কণা কর্জনলী-यदब्रद रेष्ट्रांभ तरे जाव किह्रे नदश कि छ বাঁগুদের চক্ষু আছে তাঁহায়৷ দেখিতে পা'ন যে, সূর্ণা চক্র তারকা ওয়াব বনস্পতি দকলে মিলিয়া এক অনুপম শোভা উল্গীরণ করি-তেছে; যাঁহাদের কর্ণ আছে ভাঁহারা,গুনিতে পান যে, সূর্যা নবানুরাগে উদিত হইয়া উছে।-দিগকে বলিভেছে"আনন্দিত হও:"চক্ৰ মধুময় 🧸 জ্যোৎস্নায় ভাঁহাদিগকে বলিভেছে আনন্দিত ছুও:' মুক্ত দমীরণ মৃত্য-ছিলোলে তাঁহাদিগকে বলিতেতে "আনন্দিত হও"; এবং ওষধি বনস্পতি গ্রীবা নত করিয়। মর্ন্দর ধ্বনিতে সেই কথারই প্নঃ প্নঃ অসুযোদন করি-তেছে। এ্য সেত্রিধরণ এবাং লোকানাং অ্যুম্ভেদায়—লোক ভঙ্গ নিবারণাথে পরমাত্মা रमङ्-अक्तभ इंदेश। भगएत धावन कविर्द्धान, **जारे मकरनरे मकरनत मकन-ध्रमिर**ङ ग्रय-স্বরে কণ্ঠ মিলাইয়া ঘোগ দিতেছেঃ। সমস্ত अञ्चल भगातात भग्नम भिजाबर (क्यातना । किन्नु

যে ভাগানান বাক্তি সাক্ষাৎ সেই প্রাণদাভার ষয়ত্তাৰ। দ-বাণী প্রাণের অভার্তরে শুনিতে পা'ন, তিনি সংসার-সমুদ্র নির্মেত তরিয়। रा'न। जिनि गर्जात्नाटक शांकिश्रीहे लक्ष-লোকে বাস করেন। তিনি বলেম "এগ खनात्नाकः" धरे बनात्नाकः, "उन्हार है। १७०६ দেতুং তীত্ব " সংগারের সেতু **উ**তীর্ **रुरेशा "शकः मन् अनटका** छवछि । अ**क रा** সে অনক হয় "বিদ্ধা সন্ অবিদ্যো লক্তি" বিদ্ধ যে—বৈশ্ব অবিদ্ধা হয়, "উপতাৰ্গা সন - **অমুপতাপী ভ্**ৰতি'' **উ**পতাপী মে—সে অনু-পাতাপী হয়; ৈতিয়াৎ বা এতং সেতু, তী-ত্বাহিপি নক্তং হাছবেং।ভিনিপ্সদ্যতে" এই **्त**क् छेडोर्न **रहेश** ब्रामि निवा रहेशा छेटो. প্ৰিকৃৎ বিভাতো<mark>হোষ ত্ৰমা</mark>োকঃ" এই ত্ৰস-শৌক একবার এক-থে জ্যোতিতে উদ্ধানিত— **চিয়কা**লুই সেই জ্যোতিতে জ্যোতিয়ান্ i বেমনোক পরীযাত্মার জোতিশার বাজা; তাহাই মহুষোর স্থানীনতার মূল আবাদ হান। সুরী ধেগ্ন তাছার কিরণ সকলের निश्वशकान; জন্মলোক মেইন্দ্রপ সমস্ত জগতের সমস্ত \ স্বাধীনতার নিলঃভান--मुक्तित्र निष्कं निष्कं निष्

হে পরমাত্মন। ত্মি আমাদের পিলে।,
ত্মি আমাদের বন্ধা, তাই তোমার নিকার
আমারা প্রার্থনা করিবেছি তুমি আমাদির করে।
পাপ তাপ হইতে মুক্ত করে, ও তোমার প্রস্কা
মুবছরি আমাদের আত্মাতে প্রকাশিত কর।
স্থে তুংধে সকল সময়েই তুমি আমাদের
পিতা, সকল সময়েই তুমি আমাদের
ক্রি আমাদের নিকটে আকিয়া আমাদের
মুম্পু আত্মাতে প্রাণদান কর ; তোমাকে নি
দেবিলে আমরা বিষয়েশ অরকারে নিমায়
হইয়ামোহ-শহাার ববসম হর্মা পতি তুমি
দর্শন দান করিয়া আমাদিশকে প্রিমার করে।
ও এক্ষেবা্থিতীয়

জ্ঞানের বিষয়।

আমরা সচ্রাচর যাহাকে বলি—জ্ঞানের বিষয়, জ্ঞানের বিষয় তাহা ছাড়া আরে কিছু অধিক। আশয়-সহকৃত বিষয়ই বিষয়। প্রভাকের কিন্তা ভাবনার বিষয় একদিকে— এবং জ্ঞাতা আপানি একদিকে—এই সুয়ের স্মান্তিন বিষয়; ইহার কমে বিষয় হইতে পারেনা।

टायान ।

फ्रांसित मन निवस थ थ। शुक्त गिकांटि গটল-রাগে দংখাশিত হইয়াছে, তাহা এই যে, চে-কোন বস্ত হউক্না কেন ভাহাকে আনিত্র হইলে তাহার নতে আপনাকে ना कानित्वहै नय। दे<mark>हा गथन स्थित (४, गस्</mark>यू-খস্তি বিষয়কে এবং আপনাকে এক-সম্বে নং জানিলে সমুগন্ধিত বিষয়কে জানা হইতে পারে না—তখন ভাছাতেই প্রতিপন্ন হইতেছে ষে:প্রতাক্ষের কিন্দা চিম্বার বিষয় একদিকে— এবং ভাতা আপনি একদিকে; এই দুয়ের नगष्टिने कारनत गरका दिस्थ-कारनत ध-কৃত বিষয়; অথবা, আমহা খাহা কিছু আনি তাহাই আশয়-সহকৃত বিষয়; তাহাই প্রতাং কৈর কিন্তা ভাষনার বিষয় এবং তাহার সুকৌ আর্থ্য একটি বস্তল গেটি জ্ঞান্ত। আপনি। অত এব জ্ঞাতা আপনি বিষয় মাত্রেরই 🐠 🗗 সমগ্র এবং সার-ভূত অংশ।

অপিচ; মনে কর যেন—একটি প্রত্য-ক্ষের কিবা ভাবনার বিষয় উপলব্ধি, করী হইতেছে, কিন্তু ভাহার সঙ্গে আপুনাকে উপলব্ধি করা হৈতেছে না। এর এটনা প্রেক্ত বিদ্যান্তের বিহোরী; কেন্না প্রেক

TRACTIC CARD MODERATE & STRUCTURE STATE

দিলান্ত বলে এই বে, আরা জ্ঞান সকল জ্ঞানেরই সঙ্গের সঙ্গী, ও ভাহাকে ছাড়িয়া কোন জ্ঞানই সিদ্ধ হইতে পারে না। কিন্তু প্রথম শিদ্ধান্ত অটল-রূপে সংস্থাপিত হই ছাছি—কুত্রাপি ভাহার অন্যথা হইতে পারে না; অত এব আনাদের জ্ঞান-সংঘিধনে যাহা যপন উপস্থিত হয়—ক্ষমরা আপনারাও ভাহার অন্তর্ভুত; আর, জ্ঞান-মারাও ভাহার অন্তর্ভুত; আর, জ্ঞানানারাও ভাহার অন্তর্ভুত; আর, জ্ঞানানারাও ভাহার অন্তর্ভুত; আর, জ্ঞানানারাও ভাহার বিষয়—ভিনি শাহানজ্জু-জানিভেন্তেন-ভাহার-সংস্কে ভিনি আপনি—
এ-ভিন্ন আব কিছুই ইইতে পারে না।

शख्या अवः नत्थान ।

প্রিলি গাং। কিছু চালি চাছেন-গ্রাহার সক্ষেতিনি-জাগোলা এই সাত্তি শপ্তক সমাস্বদ্ধ করা হুইল কেন্দ্র ৮১৮

সর্কা সাধারণতঃ জ্ঞান-মালেকই বিষণ বি,
তাহা প্রপত্ত করিয়। নির্দেশ করিবার জন্য
ক্রী সাতিট শক্ষকৈ সমাস দূরে গাঁ।পিয়া এক
করিয়া দেওয়া হইল। উহারা যুদি পুথক্
পুথক্ বিনাস্ত হইত, তবে, মর্মা-গুল্ধ প্রিয়া
উহারা মে, একটি-মাত্র জ্ঞানের বিষয় প্রতিপাদল করিতেছে, তাহা পাঠকের তেলন
বোধ-স্থলভ হইজ না। আমাদের কথা
কাহারো মন্যুনীত হউক্ বা না হউক্ কিন্তু
কৈহ যে, তাহার অর্থ এক ব্রিতে আর ব্রথবেন—সে পথ আম্বা রাখি নাই।

विषयं विगए छात्नत ममध विषयं वृक्षित् १६८० १६८० ॥ २ १

বিষয় বলিতে এখানে জ্ঞানের এককালীন সমগ্র বিষয় বৃথিতে হইবে; যেকোন মুহুর্তে ঘাহাকিছু আমাদের জ্ঞান-সন্মিধানে উপন্থিত হয়, তাহার আপাদ মন্তক
সমস্তটাই বিষয়-শব্দের বাচ্য। আমরা,
উপন্থিত বিষয়ের বিশেষ কোন-একটি অংশের প্রতি, অপেকাক্ষত অধিক মাত্রা মনঃ
সমপ্র ইরিতে না পারি এমন নহে। জ্ঞান

অংশটিতে আম্দা বেনী মাত্রা মনঃসমপ্র কিন্তু বলিয়া সেই করিও বটে। তাহা অংশটিই গে সমতা বিষয়; ভাচা নহে : ভাগাকে বিষয় না বলিয়া বিষয়াংশ বলাই विभासत स्व जन्मिल राज्य नहा, দার্শনিক ভাষায় তাহা পরাক্ Objective আংশ, বা পরাচ্য অংশ, বলিয়া খানাহাত হইতে পানে; তদিগ তাহার আন কর্ট অংশ-শাহার ভাতি সদ্যানর জাগরা মতি অক্সই সন্মোনিবেশ কবি কিন্তু গাহাকে ছাড়িবা त्यांग खान्ये भित्र हम मा- भागनिक छात्रा ভাগা প্ৰভূপ নিৰ্দাণিত কল্প বা এতীত অংশ সমিয়া ব্যিত্ত হৈছে পাতে; প্রভাক অংশ এবং পরাধ্ গংশ, অংগ যাতা এবই वर्था—हालोहर व्याल त्यार भवारा व्याल এই চুয়ের মুনষ্টিই সম্জ বিশ্য। ১ কথা।

 প্রেক অথাৎ ইংবাজীতে মহাকে বলে সাটেprotivo--প্রক্ Objection)

"লে প্রাঞ্চলিনো বালা প্রতাগ্রোধ বিবজিলাঃ। কুনতে ক্ষা তেপায় কর্ম কর্ত্তি ১ গতে ।"

अध्यानी ।

প্রাক্ননী ক্ষেত্র কাহ্যন্দী) প্রত্যক্রোর শুন্য (অগ্নার অন্তর্নীষ্ট শুন্য) বালকেরা ভোগের-জনাই কন্ম করে এবং কংখন জন্যই ,গ্রাগ করে।

প্রাক্শক হলতে যেন্ন প্রাচী শক্ষ উৎপর ইইয়াছে।
প্রভাক্ শব্দ হইডে সেইরপ প্রভিটি শেল উৎপর
ইইয়াছে। প্রভাচী শক্ষের ছালত অর্থ পশ্চিম দিল্।
উদীরমান হুণাকে সমূব করিয়া দাঁড়াইলে পশ্চাং দিক্
কো পশ্চিম দিক্ একই ইইয়া দাঁড়ায়: পশ্চাং শব্দ
কোং পশ্চিম শব্দ উভয়ের মূল-ধাতু একই। প্রভীতা
শব্দের শোড়ার অর্থ—প্রতিকৃলবত্তী; পশ্চিম চিক
প্রাদিকের প্রভিক্লবত্তী ভাই প্রভাগ প্রভাগ
শব্দের মৌলক অর্থ এই:- প্রভাক্। প্রথম প্রভাগ
ভাকতি (গ্রমম করে) ইনি প্রভাক্। প্রথম প্রভাক্
শব্দের দার্শনিক অর্থ কি—ভাহা শান্তই বুরিতে পানা
হাইতেছে;—উপনিষ্যে আছে—

ন, "পরাঞ্ছি থানি বাতৃণ্থ সমস্ত্রমাথ পরিছি, পশাতি নাম্তরাবান্। কণ্ডিং ধীরঃ প্রত্যাগাস্থানমৈক্ষণ আর্জ চক্রমৃত্য মিছন্॥" ইইার কর্মা

ষাহা একই কথা সচরাচর যাহাকে আমর। বিষয় বলি তাহা বিষয়ের একাংশ-ভিম আছ किंदूरै नटर, यिन मिरे जर्भित श्रि **আশ্রা বেশী মাত্রা মনঃ সমর্পন** করি। জা-শন্ধ-সহকৃত বিষয়ই প্রকৃত পক্ষে বিষয়, কেন না তাহাই সর্বাঞ্চীন বিষয়। সচরা-চর খাহাকে আমরা বিষয় বলি, ভাহাকে বিষয় ্না বিলয়া বিষয়ের পরাচ্য অংশ বলিতেই ঠিকু হয়, আর, সচরাচর যাহাকে আমরা আশায়-মাত্র— মর্থাৎ শুদ্ধ কেবল জ্যানের **আধার-মাত্র—ব**লি, **তাহাকে বিষয়ে**র শুভীচ্য **অংশ বলিলেই ঠিক্ হয়।** কিন্তু সচরাচর আশিয় এবং বিষয়ের মধ্যে যেরূপ জ্ঞাতৃ-জেয়ের ঐকাজিক প্রতিদ্ধান্ত ঘটানো हहेशा भारक, जाहारज, विकास समा हिंदेरज আশন্ন একেবারেই বাদ পড়িয়া যাঃ: মুচরাং ওরূপ ঐকান্তিক প্রতিঘদ্তিতা ভ্রমা-

স্থান্থ পর্মাঝা লাভ্য ইক্রিল-স্বত্নকে ক্রিলা দিরাছেন, ভাই কাহাল প্রাল্ (thycourre world) দশ্ন করে। কোন কোন গাঁব অণ্ড্র ইচ্ছা করিয়া মাহির হইতে চকু ফিরাইরা প্রত্যক্ষায়োকে দেবিলা-ছেন।

বালা বিশ্ব হুইছে মনশ্চণ ফিরাইছা আলুকে দেলিতে হয়, এজন্য দিপমাচ্চলে সংগ্ৰাইতে প্ৰি ্দ্ৰ কতিবিশয় সভ্যবাড়ী, আত্মা ভাষার জ্ঞাতকুল্বাড়ী --তাই প্রতাক। প্রতাক আত্মা-কিনা জানেব পুঠা-শায়-স্বরূপ (back-ground) আহা ; Sabject কিন্দ জ্ঞানের ভিত্তিমূল স্বরণ আছে।; বভরের সন্মাথ একই। পরাক শক প্রতাক শদের পরিরজী শদ, कारकरे छारात रेखाओं अन्तिनक, Objective, का इस আর কিছুই হইতে পারে না। প্রভাক শলের আর একরণ অর্থ করা যাইতে পারে, -প্রতিবেশী বলিতে निक्छेजम अधिवानी वृकायः अञाक् विनदेश आदित निक्रेड विषय वृद्धित अधारात उपति-उक्त मचार्थन : কোন ব্যতার হয় না । এই কারণে Subjective part हेहात अपूर्वात-लाउन अरम अर्थन अर्थन अर्थन জাশ, Objective part ইহার অক্সাদ পরাক কংশ व्यथवा नवाडा व्यथ्म, अरेकन हरेलारे कित् इम।

আক এবং স্ববিরোধী, **আর, তাহা তত্ত্বজার-**প্রথন বিষম একটি বিস্থা

জানের ভিত্তিমূ**লের প্রতি প্রণিধান-সংক্রে জ্ঞানের** বিষয় কিরপ **নৃতন আকার ধারণ করে**॥৩॥

জ্ঞানের তিত্তিমুলের অবধারণ যাহা প্রথম
সিদ্ধান্তে হইবা চুকিয়াছে তাহাতে করিরা
বিষয়ের অর্থ জনেকটা পরিবর্ত্তিত হইবারই
কথা। দিতীয় সিদ্ধান্তে সেই পরিবর্ত্তনটি
স্প্রীক্ষরে প্রকটিত স্ইয়াছে। সচরাচর,
বিশ্ব বলিতে আমন। বিষয়ের একাংশ
মাত্র বৃকিলই জান্ত থাকি। শুদ্ধ কেবল
বাহা জানাদের সন্মুখে উপস্থিত হয়, তাহাতেই আমরা বিশ্ব বলিত ছাহা সংস্থা
কান্ত আমরা বিশ্ব বলিত ছাহি তাহা
কান্তা দেখি না। এন্যবিংকাল বিষয়
ব্লিষা আম্বান আ্লুন্থতিহিন্তা বিষয়
ব্লিষা আম্বান আ্লুন্থতিহিন্তা বিষয়
ব্লিষা আম্বান আ্লুন্ড্রির বিষয়
বলিতে আম্বান আ্লুন্ড্রির বিষয়
বলিতে আম্বান আ্লুন্ড্রির বিষয়
বলিতে আম্বান আ্লুন্ড্রের বিষয় ব্রিষয়

প্রচটিত প্রা এক দার্শনিক গ্রনা॥৪॥

জ্ঞানের ভিত্তিমূলের বিবেদনা গতিকে বিযারের কিরাপ কর্থ-পরিবর্তন ঘটে, ভাহা স্পান্ত
রূপে ব্যাতে হলৈ, বিষয় এবং আশারের
প্রচলিত গণনা-পদ্ধতি আর, তাহাদের
দার্থানক গণনা-পদ্ধতি, দুয়ের মধ্যে প্রভেক্ত
ক্রিপ ভাহা দেখা আবশাক। রুভান্তিটি
এই যে, আমরা আপনাকে আনিভেছি
প্রচলিত গণনা-শ্বনতি এই যে, যে-প্রশান
লাতে আমরা এক বস্তকে আর আর বস্ত
হইতে ভিন্ন ব্লিয়া গণনা করি, গেই প্রান্ন
লাতে আমরা আপনা-আপনাকে আর-আর
বস্ত হইতে ভিন্ন বলিয়া গণনাক্রি। দার্থনি

শাসরাচার্য্য ভারার দেশাক ভারের উপক্রমণি
কার পাইই বলিরাছেল বে, "নু ভারদের একাজের।
বিষয়ং" বিষয়ী একাজের বের বিষয় নতে, ভারা নতে;
"অস্বৎপ্রত্যর বিষয়কার বৈরিক বিষয়ী ক্লার্থ-প্রত্যা
রেয়র বিষয়।

নিক গণন।-পূদ্ধতি কিন্তু - আর-এক রূপ। मत्त कंत्र जिनिंग विद्यंख, म्, ९, त, এই তিনটি হসন্ত অক্ষর দারা সংভিত্ত হইল, এবং জ্ঞাত। আপনি "অ" এই অক্ষর দ্বে। সংজ্ঞিত হুইল। প্রচলিত পদ্ধতি অনুসারে গণন। कतिएड म्मेल, ने जिन्ही विश्वस्थित धरक একে গণনা করিয়া তাহার পর আপনাকে ুগৰনা করিলেই চলিতে পাতে; ভাষা মইলে এইরণ দাঁড়ায় যে, প্রথম, স ; ছিলাঁ 🔍 ২ ; তভীঃ, तः; চত্র্য. আ। কিন্তু দার্শনিক গণনা-নম্মতি আরু এক প্রকার—৩:ছা এই :— ভাগম, মৃ+ অ'; ডিডীয়া, ৫+ অ ; চুডীয়া, র + অ: সংক্ষেপে:—গ্রেথম, ম; দ্বিতীয়া ক ভূজীয়, র ; অর্থাৎ (১) অকার-সহকৃত (কিনা আত্ম-নহক্কভা স. (২) অকার-সহক্রভ ং. (৩) ্ষক্র-সহক্র ব। গণনা-কালে বে মহুরেই আমতা "স্" এই বন্ধটির প্রতি অঙ্গলি নি দেশ কবি সেই নহুতেই তাহা 'স' হইয়া দাড়ায়—অর্থাৎ অকার সহক্রত (কি না আল-স্হকৃত্ৰ হুট্যা লাড়ায়; ভাহার পর যখন সে বস্তুটিকে ছিড্য়া "ৎ" এই বস্তুটির প্রতি অঙ্গুলিনীনদেশি করি তথম ভালা "ত" গইয়াল দাঁড়ায়; এইব্লুপ, যে-কোন মহুডের যে-কোন আৰু ছুউকু না কেন-আত্ম-সহক্ত গাহা-হউক্ এক্টা-কিছু সেই জ্ঞানের সেই মুনুর্ত্ত मम व विषय । यि, म्, ९, त्र, এই ভিনটি বস্তুকে খামরা একই মুহুতে যুগৰং গ্রহণ করি, ভাছা হইলে দার্শনিক গণনায় - সু- ৎ +त्+व, এक कथायु—ज, এইक्री मीड़ा-हेंदर। आगि-वाहक के रग्न अ, छेश मकल अननात्रहें नीक बाजा, उहा विषय-मारजत्रहें ুজাংশ, এবং জ্ঞান-মাত্রেরই ভিন্তি-মূল 🛊

- মিটাৰ প্ৰতিশক দিৰাত licil

ৰিতীয় প্ৰতিপক্ষ নিদান্ত লৌকিক চি-ভাৰ-খনবালী হইতে প্ৰসূতি, এবং তাহার প্রতিঘাদ গার--দিতার সিদ্ধান্তের যাথার্থ জাজ্জন্য-রূপে পরিকাট ২ইয়া উঠে; ভাষা এই ্র--

প্ৰেভিপুক্ষ সিদ্ধান্ত গলে

সচরাচর সাহা বিষয় বলিয়া কিবধানিত হইয়া থাকে তাহাই সমজা বিষয়, বিধনের বিষয়ত শুদ্ধ কেবল উহাতেই প্রনিপু। প্রভাকের বা চিন্তার বিষয়ত ভাতত হই তে বিচুতে হইলেও, ভাহার বিষয়তে কোল নোম প্রেড না। আশ্যান্ডুতে বেষয়ত বিবয়া

বিষয়ের এনটি ফ্রন্সের প্রতি চ রু মুদিয়া তাহার থাব-একটি জ্বন্ধ হোর দর্বশিশা মনে করা, লৌকিক চিন্তাহ হ্নরধানতা দিয় আর কিছুই নহে; দিলায় দিলাতে এই লৌকিক জ্বনির সংশোধন করা হইল; প্রথম প্রতিপক্ষ দিলাতের জ্বনবানতা—জ্বানের ভিত্তি-মূলের প্রতি; দিলায়ের জ্বনবানতা—জ্বানের ভিত্তি-মূলের প্রতি; দিলায়ের জ্বনবানতা—জ্বানের ভিত্তি-মূলের প্রতি; দিলায়ের জ্বনবানতা—বিষ্ণার জ্বনবানতা জ্বনবানতা প্রতি হা, জ্বান বালানা লিভি মলের জ্বালায় ব্যতিরেকেও—জাজাজ্বান বালানাকেও—সিদ্ধার ভিত্তি পারে।
বিষয়ের প্রতিচা জ্বয়বটির জ্বিদ্যানেও তাহার বিষয়ত্ব সিদ্ধ হইতে পারে।
বিষয়ের প্রতিচা জ্বয়বটির জ্বিদ্যানেও তাহার বিষয়ত্ব সিদ্ধ হইতে পারে।

প্ৰথম প্ৰতিপক্ষ নিদ্ধান্ত অসতা, তাই, বিতীয ুপ্ৰতিপক্ষ নিদ্ধান্ত অসতা নথা

ধনি প্রথম প্রতিপক্ষ দিয়ান্ত দ্বার হং,
তবে দিতীয় প্রতিপক্ষ দিদ্ধান্তর চিতি
মূল পর্বতের ন্যায় অটল। কিন্তু প্রথম
প্রতিপক্ষ দিদ্ধান্তের বৈনিপাতে দিতীয়
প্রতিপক্ষ দিদ্ধান্তের কোথাও আর দাঁড়াইবার স্থান নাই। জ্ঞানের ভিদ্ধি-মূলের
আশ্রম-মাতিরেকেও—আন্র-জ্ঞান ব্যতিরেক্রেও নাদি কোন বিষয়কে জানা কোন
জ্ঞাতার প্রকে সভ্যব-সাধ্য হইত, তাহা হ-

ইলে, বিষয়ের প্রতীচ্য অংশ বাদ দিয়া তা-হার পরাচ্য অংশ-টুকু স্বতন্ত্র উপলিক্ষি করাও উহির সাধা-মূলত হুইউ। কিন্তু প্রথম িভাতিপক্ষ দিদ্ধান্ত প্ৰথম সিদ্ধান্তের বিবোধী —ফানের একটি স্বতঃসিদ্ধ এবং অবশাভাবী मट्डाइ विद्राधी—এ कना डाहा मडा हरेड পারে না; আর, ছিতীয় প্রতিপক্ষ সিদ্ধান্ত প্রথম প্রতিপক্ষ সিকান্তের উপরেই প্রতি ষ্ঠিত, এজনা তাহাও অসতা এবং স্বিরোধী বলিয়া তিরস্কার্যা ই হা স্পৃত্তিই দেখা হা-ইতেছে যে, জ্যাদের প্রণম নিদ্ধান্তের যাপার্থা থাকার করিতে হট্লে, দিতীয় প্রতি-পিক নি**দ্বান্তটিকে** কোন মতেই রক্ষা ক-দ্বিতে পার। যায় না। বাঁহার। অংশাদের সেড়ার কথাটিতে জীবা অবনত করিয়াকেন, —खारनत विधार-शीभाषमात विभाग छ। श्रीत যে, লোকিক চিন্তার পক্ষ অবলম্বন করিবেন, সে পথ একেবালেই অবরুদ্ধ; অগত্যা তাহা-দিগকে হিতায় সিদ্ধান্তের পক্ষ আশুয় করি-তেই হইবে ৷

> ঐ প্রতিপক বিভাস্থ মনে(বিজ্ঞানের ও স্ত ব্যক্ত কাপ্রচাড্ ॥॥

তানের বিষয়-সক্ষে, দিওীয় প্রতিপক্ষ দিছান্ত, মনুষ্যের একটি প্রাকৃতি-প্রলভ জম ব্যক্ত করিয়েই কান্ত নছে—উহা মনো-বিজ্ঞানেরও মত ব্যক্ত করিতেছে। মনো-বিজ্ঞান আশা এবং বিষয়ের মধ্যে কেবল এইরপ একটি প্রতিদ্বিতা সংস্থাপন করি রাই কান্ত হয় যে, একটি আনিতেছে—আর একটিক জানা হইতেছে,—প্রথমটি আশায়—বিতীয়টি বিশায়; এ-ভিন্ন, কোখাও প্রেক্তরূপ কথা বলে লা বে, যখন বিষয়কে আনা চাই,—কোখাও এরপ কথা বলে না যে, জাতার সলাগ্রম-বাভিরেকে বিষয়ের বিষয়ে

(पण निवादक (च, श्रष्टीनिक मदनाविकान टेलोकिक हिन्दाबं म्टल बिनिया काटनब ভিত্তিমূল দেশিয়াও দেখে না – এইটি মনো-বিজ্ঞানের প্রথম সোপান-পর্যক্তি ; দিতীয় ্রতিপক সিভাত্তে দেখা গেল যে মনে।-বিজ্ঞান লৌকিক চিন্তার সম্পূর্ণ অসুবর্তী চ্ইরা ভেরে বিষয়ের প্রধান একটি অংশ দেখিয়াও দেখে না এবং তাহার আর-একটি অংশকে তাহার সক্রাংশ বলিয়া অবধারণ করে ইংটি মনোবিজ্ঞানের ছিতীয় সো গান-পংক্রি। এখানেও মনোবিজ্ঞানের क्या- अला भावास्याल । मरना विख्यान न्याहे ্ৰ কং ৷ সংস্থা বৃ. ১২, তা শ্ৰয়কে **না জানিয়াও** িলয়কে জানা চাইতে পাৰে টুড়বে কি 🖲 मा-"(य जारन भारे, जानम अवर मार्शक জোনা হয় জালাই বিষয়" এই ক্যাটির উপর মনোবিজ্ঞান আপনার মতের সমস্ত ভর সংস্থাপন করাতে—প্রকারান্তরে দাঁড়াইতেহে যে, যে জানে ভাষাকে—অথাৎ জ্ঞাতাকে—না আনিলেও বিষয়-জ্ঞান নিবিদ্ধে চলিতে পারে । যাহাই ইউক্লপ্রে भरत क्रममरे श्रकाल भारे दि (य, अवनकात গুচলিত মনোবিজ্ঞান কার্যাতঃ দিতীয় প্রতিপক্ষ সিদ্ধান্তেরই মতাবদ্ধী, আন দাক্ষাৎ দখনে না হউক্-প্রকারভারে-गटनानिकान विजीय मिकारल यापाणी अ-স্বাকার 🖟 করে। দিতীয় সিদ্ধান্তের অভাব হুম্পুর ; ভাহা এই বে, আশ্র-সহ-কৃত বিষয় ভিন্ন জ্ঞানের বিষয় হইতেই পারে नाः अप्रै किश्य अवधे। क्यांत क्या नत्र কিন্তু দিতাব্বই সরশান্তানী—কোন, খানেই हेशत अनीया महात ना : बार हैशा রিপরীত শক্ত নিতান্তই স্বার্থিকী এই वर्ष-भूना।

পত্ৰ।

মেও্ঘর ২০ কার্ভিক, ব্রা, স্ট্রের । এ নবেশর, ১৮৮৬ শাল।

মান্তেষ্ঠ শ্রীযুক্ত বাবু তুক্ড়ি গোষ সাধারণ ভাষাসমাজের সম্পাদক মহাশয় সমীপেয়।

निविनय निविनम,

ঁ আপনার ২২ অক্টোবরের মুদ্রিত পর প্রাপ্ত হইর'ছি। এখানে আমি ছাড়। ডুইটা মার জালা ও ডুইটা ত্রাক্ষধর্মানুবাগী ব্যক্তি আছেন। ভাহার। আপনার পর সম্বন্ধে কোন মত্ত্রকাশ করিতে অভিলাগী নহেন।

ভাগবিংগ্রেমধ্যে প্রত্যৈক ব্যক্তির নিজ নিজ শিক্ষা, খলা ও কচি অনুসারে এক ্রকটা ভার্টোর এর্ডোর তাজি হোলয়া পড়া বিভিন্ন নহে। কেহু বাক্ষ থানিয়া বৈদা-ন্তিক বর্ণের এতি হোলয়া পড়েল, কেছ বৈষ্ণৰ ধৰ্মায় প্ৰতি, কেছ খ্ৰীষ্টীয় ধৰ্মোয় প্রতি। জিয়া কলাপেও প্ররপ। কেছ মণপ্রিপে নৃত্র পদ্ধতি অনুসারে গাহছা किया मन्यापन करवन, त्वर ये श्वाउन পদ্ধতি ছল্লাংশ পরিবর্ত্তন করিয়া তাহা অনু-স্ত্রণ করিতে ধর্মের হানি বেধি করেন শ।। ব্ৰাক্ষদিপের মধ্যে এই প্রকার সকল ক্লেকই আছেন। এই প্রকার সকল লোকই একণে সাধারণ জালাসমাজে আশ্রেয় প্রাপ্ত **হ**ইয়া সাধারণ ত্রাক্ষমাক্ষ এই সংক্রার সার্থকতা मण्णापन कतिरहरूचन, किन्न याभनाता যে ত্রাক্ষধর্শের মৃতসার ও প্রচারকের কর্তব্য প্রস্তাব করিরাছেন ভাহাতে আশিলা ছই-ब्डट्ड माधार्य खाण्डमात्यम औ विश्वनीन প্রকৃতি ব্যাহত হইবে।

্ আপরার প্রেরিড পত্রী পাঠ করিছ। বুৰিয়া উঠিকে পারিসার্মনা যে আপনারী ভারু কার্যুকে বলেন। নাগুনার। এাক্ষ ধর্মের মতুয়ারে বিধি দিয়াছেন "ধর্ম ও

জাতি নির্নিশেষে সকল শাস্ত্র ও বাজির
উপদেশ হইতে সাদরে সত্য গ্রহণ করিবে।"

আমি জিজ্ঞাসা করি যদি কোন ব্যক্তি
আধাালিক ধনের জন্য অন্য কোন জাতির
নিকট ঘাইবার আবশ্যক নাই মনে করিয়া,
আমাদিপের ভজিভাজন প্রধান আচ ব্য

শহাশিয়ের ন্যায় কেবল ভিন্দুশারে ছইতে সভা

শারা আফা বলিয়া গণ্য করিবেন কি না।
বোধ হয় করিবেন, কিল্প বোল্সবর্দের মত্যারে
আপনারা বিধি দিতেজেন "বর্ণ্য ও জাতি
নির্দিশেযে সকল শার্ম ও ব্যক্তির উপদেশ

হইতে সাদ্যো নতা প্রহণ করিবেন।"

আপনানা আকাংশিব মণ নারে লিখিয়াছেন "দিশবের সাহত জান প্রেম ও ইচ্ছাতে
সন্মিলিত হওণাই মুক্তি।" বোন বাক্ষ যদি
বলেন যে পাণ হাপ ও সংসারিক ছুল্ম ক্লেশ ইইছে নিজ্ঞতি প্রাপ্তি পূর্দ্ধিক চিরকাল জ্লান্দিন উপভোগই যথার্থ মুক্তি (জীবস্থুক্তি এই নিজ্ঞতি জ্ঞান্ধ বলিয়া গণ্য করিবেন, কিনা দ বোন হয় করিবেন, কিন্তু জ্ঞান্ধপের মতসাবে আনানা লিখিলাপেন "ইম্বরেল গহিত জ্ঞান প্রেম ও ইচ্ছাতে সন্মিলিত হওয়াই ম্থার্থ মুক্তি।"

মাগনার রামধর্ণের মত্যারে লিখি রাছেন "বিধেক বানী ঈশরের ইচ্ছা।" উহাতে ঈশর মুগ্রাণনের কথা লোন স্থানে উরোধ হরেন নাই। যে বিষয়ে বিছু থাকা করের, মেহেতু তাহা ত্রামাণর্মের একটা প্রধান মত। কেবল ঈশরের ইচ্ছা পলিলে উপরামু-প্রাণন ব্যায়, না। যদি কোন প্রায় ঈশর আ্যাদিগকে জ্ঞানালোক ও ধর্মবল প্রেরণ করেন এবং আ্যাদিগকে শুভ বৃদ্ধিতে নিযুক্ত করেন এবং আ্যাদিগকে শুভ বৃদ্ধিতে নিযুক্ত ভাঁথকৈ আপনার। আক্সাবলীয়া গণ করি-বেন কি না।

আপনার। প্রচারকদিপের কর্তুরো লিখিয়াছেন "ঈথরের প্রাপ্য সন্মান ধর্ম্ম-প্রচারকের। গ্রহণ করিবেন না।" ঈখর-প্রাপ্য
সন্মান কাছাকে বলেন ? আমাদিগের দেপ্রীয় প্রথামুসারে যদি কোন জাক্ম পর্ফ্রপ্রচারককে প্রাণিপাত করেন তাহা ঈথরপ্রাপ্য সম্মান মনে করেন কি না ? াদি
কেহ প্ররপ প্রাণিপাত করেন তাহা ইলৈ
ছে বাজ্মবর্মার্ম্মানিত কাম্ম বলিখা গণ্য
করিবন কি না ? এই বিষয়ে খার একট্ল
স্পান্ত করিয়া বলিলে ভাল হয়।

আপনার। বিভাগাত্তন যে প্রালাধর্ম প্রচারক "অনুষ্ঠানে জাতিলেদ প্রশ্না দিবেন না।" যদি আগাদিগের ভক্তিভাজন প্রধান আঁচ। ইয়া মহাশধ্যের না।য় কোন প্রকান্ত জন্ম-পরায়ন ধার্ম্মিক ব্যক্তি অনুষ্ঠানে জাতিভেদ-পালন করেন তাহা হইলে নাহ প্রায়েশ্মান সুমোদিত কার্য্য বলিহা গণ্য করিবেন কিনা হ বােধ হয় করিবেন না। কিন্তু অনেক প্রান্ত প্রান্ত বাহারা বিশাস করেন যে সালাফিচ্ বিষয়ে যাহার যেমন নিবেচনা ও করি সেইনপ কার্য্য করিশে প্রান্তার কউবেনর ক্রিনে হয় না।

আপনার। লিখিয়াছেন দে 'ত্রাক্সার্শ্নপ্রচারক যে সকল সামাজিক অনুষ্ঠানে বিবেক
বা নাতির অবমাননাকর। হয় তাহাতে যোগ
লিবেন না"। এতলে কিছামা এই যে বদি
কোন ত্রাকা কালার কনালে চনিত্র পরিত্র য়াধিবার জন্য নিজের বিবেক অসুসারে ত্রয়োন স্থাবিশ্বর তাহার বিবাহ দেন ছাহা হইলে
আনুনালিকের দৃষ্টিতে তিনি বিবেক ও নাতির গ্রমানন। করেন কি গ্রহণ আপনারা বলেন যে অধিক বয়্দে বিবাহ দেওয়া ত্রান চরিত্রের বিশুদ্ধতা রক্ষার কৌন হানি হয়
না লাহা ইইলে বক্তবা এই যে অনেক ব্রাহ্ম
এখন আছেন যাহারা বলেন অধিক ব্রুদে
বিবাহ দিলে চরিত্রের বিশুদ্ধতা রক্ষা করা
কঠিন হয়, অভএব রজোদর্শন ইইলেই বিবাহ
দেওলা কর্ত্রিয়া। আপনারা ভালাদিশের
বিবেকর প্রতি সন্মান প্রদর্শন করিবেন
বি না ?

যদিকোন ত্রালা স্ত্রীলোকদিসের চরিত্র
প্রির রাথিবার জন্য নিজের বিবেকামুসারে
গমনাগনন বিধয়ে তাঁহাদিগকে স্বাধীনতা
দিতে অনিচ্ছুক হয়েন ভাষা হইলে সে অনিজ্যা জাপানার। বোলাগর্মের বিরুদ্ধ জ্ঞান
করেন কি প্রেয়ে হ্য করেন কিন্তু জনেক
ভ্রালা এমন আছেন বাঁহাদিশের বিবেক বলে
যে নারী চরিত্রের প্রিক্রতা রক্ষা জন্য এরপ
স্বাধীনতা প্রদান অবিধ্য়ে। ভাহাদিশের
বিবেক প্রতি আপনার। সন্থান করিবেন কি

যদি আমাদিণের প্রধান আলার্য মহাশাসের ন্যায় কেন্ন একান্ড জ্রলাপরায়ন পার্শ্বিক
লোজনবংশীয় জালা কেবল কোলিক রীতির
অন্থানেরে পোর্জালকভার সহিত কোন সংশ্রের না রাখির। আপনার পুরের উপবীত
দেন ভাষা ইইলে ভাষাকে জাক্স বিদরা
স্থীকার করিবেন কি না ?

এইরূপ অপিনাদিগের প্রেরিত তাক্ষধর্মের মতসার ও প্রচারকদিগের কর্ত্তর্যা
ধরিয়া শত শত প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করা ঘাইছে
পারে যে এইরূপ কোন তালের মত হইলে
তাছাকে তাক্ষা বলা যায় কি না, এবং এরূপ
কার্যা করিলে তাক্ষাপ্র্যান্ত্রাদিত কার্যা
বলা যায় কি না ? ঘদি কোন বিশেষ
স্নাজের কার্যানির্বাহক সভা ছারা নির্দিষ্ট
মত অথবা কার্যপ্রশালী অনুসর্গ না ক্রিলে কোন ব্যক্তিগ্রাক্ষান্ত্রেদ ক্ষান্ত্রাক্ষান্ত্র

धर्माजूरमानिक कार्या ना कटतेन वला यात " তাহা হইলে সাম্প্রদায়িকতার একশেষ হয়। তইরূপ সাম্প্রদায়িকতা অন্য ধর্মে পোযায়, ত্রাক্ষাধর্কো পোষার না। রামন্যেহন রায় আগা শক্ষের সৃষ্টিকর্ত্তা। তিনি ঐ শক্ষের ''ত্র:ক্ষর উপাদক'' এই অর্থ করিতেন। সা মাজিক বিষয়ে কোন ব্যক্তির যে নত ১ উক না কেন, কোন এচলিত ধর্ম্মের এতি জোন বাজির পক্ষপাত থাকুক না কেন, নির্বের धान्छ मेचात्र छेभामक व्हेर्नाहे किनि १-हारक खाना नीलएउन । आभाग यपि जीज শবেদ আর কিছু বুরি ভাষা ধইলে ঐ শনেদর ত্রেখার আখানিখের পরিতর্গ করা কর্তবনে নি শক্ষেদ কৃষ্টিকতা। যে অথে উহ। বাব ছার কবিতেন আগবা **মেই অ**র্থ জালার**ণ ক** রিতে পারি, মাধ্যাত করিবার কোন অধিকার नाइ। ज्यानि लाक्षणमध्य गुजनुत भारतन खाकारका वनास्त्रभावका रका का एर ছেন। জাতি, সম্প্রদায়, মত নিজিনোসে ত কেছ নিল্কার জনস্ত উপরের উপাদন। ক-বিজে অংশল্যা । ১ন আদি ভ্রাক্ষন্য'লে স্থাসিতা উলাসনা করিতে পারেন। জ্ঞানি ত্তাক্ষনমাজের বিশেষ প্রবৃষ্ঠানপদতি প্রেছ বটে কিন্তু যে ভা**ছেগা**রা ভাল্য নমুলরণ না করেন, নিজের বিবেকালুসালে প্রাচান প-দ্ধতি কেবল আচার মাত্র জ্ঞান করিয়া ওদত্ব-भारत शार्ष्य जिल्हा भण्यापन करवन छ। राता खाका नरहन जगद आयता दलि ना। আদি বাকানমাজের ত্রাকাংশ বীজ আছে, কিন্তু তাহা বীজ মাত্র। প্রত্যেক ব্রাহ্ম আ-পনার জ্ঞান বৃদ্ধি অনুসারে তাহা বিকশিও করিয়া লইতে গারেন, ত্রাক্ষধর্শ্যের ভাবের मदम् यिन थाकित्महे इहेन। উদারতা বি-যয়ে সাধারণ আক্ষান্যাজের বর্ত্ত্যান প্রকৃতি र्णात्नको। यापि लाजनगारभृत नगारा। या षाशनाता जाजनर्णात समान्यमात्रिक्छ। तस्म

করিতে ডাহেন ভাষা হটলে সাধারণ মমাজের বর্তমান প্রাকৃতি অবলহত রাখুনা যদি কোন বিশেষ মত শ্রেণিনারা এটার জন রিতে চাদ্রে আপ্রাদিনের মধ্যে মাহারা সেই বিশেষ মাত্রবালুয়া (কোন বিশেষ মতের অনুসভী লোক ত্রাক্ষদিগের মধ্যে অল্লই পাইবেন নারণ আমি দেখিতেছি এক একটা ভ্রাফ এক একটা সম্প্রদায়) ভারার। সাবারণ _{ক্র} ব্যোগাদনাক অব্যাহত বাধিয়া একটী প্রভার সভা সংখালন করিয়া ভাহাকে 'প্রানাই-মভা' এই মাত্র নাম হিলা সেই বিশেষ মত প্রচার করিতে পারেন ভাহাতে কোনু,ক্ষতি চইবে ন।। তাপনার। ভারালার্থি মাস मात ७ धार्वादाक्त कर्नुता भंदा । वर्षादिव ক্রিবেন তাহ। থাক্বে না। থালেখে षाभगविद्यार महात हार्ड की दक एवं है किला लाइ। लिहिवर्डन इल्ट्रिस अरेक्स পরিবান্তনের পর পরিবর্তন চাণ্ডে। ক্রিটি ম্বক্লিটির অব্ধি থাছিলে না। প্রেএব विभाग किएक सहरक (Prodition by क तिहार दण्हें। कदा दृशा, दिएमए एक का न्याहा भाषात्रं एक्समग्रित्र ख्रामा। माश्रतः ए म-নহাজকে এদৰ শ্বান-বন্ধ করা উচিত হয় নাতাছাতে সদল লিকারত্তা**মের স্থান পাও**য়া কর্মন, বাদল বিশ্বে মিল থাকিতেই হইল। নিবেদক

জী রাজনারায়ণ বন্ধ।

পৃথ উপলে যে, সকল আগাণিক অথবা সায়াজিক কথা উথাপিত হবল সেই সকল বিহারে আমার নির্জের মত কিছু প্রকাশ করি-লাম না, যালা বলিলাম তাহা সাধারণতঃ সমস্ত ভাজান্যাজের প্রতি লক্ষা করিব: বলিলাম।

এই পারের প্রাপ্তি সংবাদ দিলে এবং তাহা স্থাপনাদিশের ২০ নবেশ্বরের সভার পাঠ করিলে পরম বাধিত হইব।

বিবিধ।

মাসরা গত ভাক্ত মাদের উত্তর্গুবিনীতে সালক্ষার সভ্যের অপকারিতা টি**শাই**বার নিমিত্ত একটা প্রবন্ধ লিখিয়াছিলাম 🔃 পুনা श्रवामी बीयुक्त वाच भीननाथ भएकाशायाय গত আদিন মাদের ধর্মপ্রচারকে তাহার প্রতিবাদ করিয়াছেন। তিনি বলেন পৌরা-ু নিকের। রূপকচ্ছলে গে সমস্ত নীতি নিকা দিয়াছেন ভদারা লোকের যথেও উপকার হয ইজাদি। দীননাথ বাবু আমানের ভাবদ্ধবোর र्श्वांक्षांकिन्दिय मृष्टिक दनद्यम माहै। काला इ**ट्ट्रें छोहात नाम दिहम्मन ट्याटकत** कराह क्षेत्रभ उम्र रहेण गा। श्वार्भ अन्य प्रमान काट्या खट्य भाषत्वाभित नाश जभरकड আশ্রম নইমা অনেক উচ্চ নাতিব উপদেশ বারা যে জগতের উপবার হইয়াছে আমন; তাহা অধীকার করি না। রান্টার্ণ মহা-ভারতীদি এম্ব পাটে বুঝা যায় সেনীর্বিজ शहरत गर्धा थाकिएन (नारकह क्षायाना হয় কিন্তু আন্তিপর বক্তবা পেনা প্রকার। আমরা কহিয়া ছিলাম উপনিয়দ যেরূপ সংগ্ ভার ও ভাষায় ঈশরের স্বরূপ নিরূপণ বার-্রিটছন পুরাণ দেরপ পারেন নাই। িনিন রূপক বা অলকারের আশ্রম লইনা এই হই-্যাছে যে লোকে অত্যে সেই অলম্বানের আভূমি মোহিত হ্রীয়া যায়। তাহার অভ্য-ন্তবে কি যে সূত্য আছে তাহার অনুসন্ধার্নে थाव - তाहात अवमत इस ना। আমরা এই কথার উলেও করিয়া রাধা ক্রত্তের মূর্তিকে श्रमानकरम जानिसाहिलाम अवः अरे श्रष्टम भएए। भारकत एवं कछमूत्र यनिश्व रहेशास्त्र णहां अपनिष्याहि। यागमा अवस्त मीननीय বাবুৰ ভাতীতির নিমিত প্রাচীন প্রস্থ হইতে এইরাপ সারও একটা প্রচল্ল সত্যের নিদর্শন भ नगाष्ट्रराज्य वाराज्य हेरा बाबा द्रमादक्र द

নোহ জ্মিবার সন্তাবনা আছে কি না ডিলেশ আপনিই ব্ৰিয়া দেখুম। বিষ্ণুস্তিতে এক-क्टन बकाधान अज्ञान कविनात जनएन আছে। গ্রহকার প্রথমে স্পষ্ট কথায় বলি-লেন আত্মতে ঈবরকে না দেখিলে মুক্তি किञ्ज अरे जन्नशान महल नहा। এই ব্ৰিয়া তিনি প্ৰথমে কহিলেন স্থল পু-থিনী ইইতে আরম্ভ করিয়া সুক্ষা আকাদে नग वि जल्लान कर जाश हरेता खनावादन मिन्न १ हेरत । जणीत छिनि भेरन कतिहा ছিলেন সূত্ৰ পুথিবী হইতে আরম্ভ কারমা গণেকাঞ্জ সাথক ভুকে সমাধি মভাগ मध्य भूगेरत। कातर भूषियो जरभका केन ধ্যাপক, ধান অংশ, কা ভেশ কাপক, ভেক ন্যেক্ষা হার সাপক, বাবু মুপেক্ষা আকাৰ বা'পক। এই সাপের হাকাশকে সে চিত্তে ধারণ করিতে পর্বাবে দে এই পঞ্চতের অতীত প্রত ইংরে অন্তর্ক্তা অন্তর্ণী ব্যাপক -ত্তক্ষকে ধ্যান হারতে গারি**নে। এথমে** এই-तान डिप्टलन पिश তিনি ধানিসৌকর্ব্যের নিমিত আলার কহিলেন খদি ইহাতেও সমাধি অভাগে না হয় তাহা হইলে শভাচক্র গদ। পদাগারী চতুন্তু জ বিষ্ণুম্ভিকে ব্যান 🗫 রিবে। তাহার উদ্দেশ্য এই যে শস্ত চক্রাদি 🖫 আকাশাদি ভূতের আবেকচিহ্ন। যিনি এই **'চতুভূজি বিষ্ণুট্**ডি অবলপনে ধাান**্তভাাস** করিবেন ভিনি যথাবং মুর্ভিমাত্রকে ধ্যান করিলে চলিবে ন। কিন্তু যে ত্রন্ধা এই আকা-শাদি ভূতের অতীত অথচ ইহাতে ব্যাপ্ত এই विक्रुपूर्वि जवनवार राष्ट्रे थानक जनारकर ধ্যান কািতে অভ্যাস করিবে। এনর দীন-নাথ বাব বুঝিয়া দেখুন এই অলক্ষারে প্রছেম সভা দার। জগতের জনিও আছে কি हो। গ্রন্থকার উদ্দেশ্য নিরাকার দত্যস্ক্রশ खटकात धाना छिनि थायरम न्लाहेरे रानितन আপ্রার আপ্রার আত্মাতে এই তক্ষদর্শন

न। इंडेटन पूँकि नारे। किन्न जिनि नर्त्तनाथात्रदश्च এই धान द्वश्य इरेनाव निधित बाक्न बहेश छैठितन। ্যাহাতে জ্মশ ইহা লোকের অভন্তে হয় ্সাধ্যাসুসারে ভাহার উপদেশ দিতেও ক্রটি করিলেন না। কিন্তু ফল দাড়াইল কি ? ভবিষ্যাতে লোকের। ভাঁহার ছভিডায় ব্রিল না। ভিনিপে অভিপ্রাফে শহাক্ গদা-शाती विशुम्प्रकिंदक वर्गाम कतिए विशिधाः ছেন যে দিলে সাতে পন্ত ভানা লোক প্রিটে প্রেক না। ভাগ্রার মেই সুল মুন্দিতে বাম ছইটা বচিত্ৰ প্ৰথ গায়ে গ্ৰে द्यारी इस भावति से स्थार भा रहेत्र प्राधिस । বই চনা অবচাছিক লগক নাম্য ভতাত সলিত। ভিনেত থেলি সক্তেবে বিনাহ এই ২০০ লাত দেন গলা স্বালা ভালায় হোলে তানত লা मा च्या ८ तम अवस्तु (वाकिम्ट्रिया **३**८।हा এই সময়েরের প্রাণার সত্রে ম্যাস্থীর নাছে 当提供 国际图1首后 (4 方面 例)(股下)上海 অনুসন্ধানে থার ভাষ্টেদর অবনর থাকে मा। अरेपुक्षे हैशत अभिवेशांतिक १००।गरा এই সম্পর্কে অংশগ্রিয় কণকে অনেক বগ্র বলিয়ছি। ভাছার প্নাণ্ট্র নিস্পারেও लगा किन्नु भीगमाथ नान्दक तकने कला বিলিগা বক্তবং শেষ করিতে চাই। , ইন্দ্ জাতি তেরপে গর্মাও ঈধরকে ব্রিয়াছল জগতে অন্যাপি ভার কোন আতি দেরপ দুঝিতে পারে নাই। তবে যে ধর্মক্ষেত্র ভারতগরে মূর্ভিপ্তজা প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে এবং মৃত্তিই যুক্তিদাত। বলিয়া যে লোকের যনে বিশাস বন্ধমূল হইয়। গিয়াছে তাহাতে প্রাচীন ঋষিদিগের দোষ নাই; দোষ পরবর্তী লোকদিগের। **তাঁহার।** চক্ষে অঙ্গুলি দিয়া ধর্মী ও ঈশর সম্বন্ধে যাহা বৃষ্টিয়াছেন আমরা অজ্ঞান ও কুসংস্কারে উপহত; সহজে তাহা व्चिवात रहें। शहिना धवर रवसल मानरन

লক্ষানান্ডের উপদেশ বিধাছেন প্রাণের আশুকৃতির অনুবেনে তাহার দিকে ঘেঁদিনা, এই জনা কুল উপাদানা এলেশে সাম্পাদ লাভ করিবাছে। কিন্তু এলেশে বিপ্রের উপর স্থিনের স্থান প্রাণারিক জীবনে জ্ঞানের বিধানের উপর স্থানি দরল মনে উল্লেখ্য বাদানা এবন ও স্থানি দরল মনে উল্লেখ্য বাদানা করেন করি ভাগে স্থানি এনে করে বাদানার বাদানার বাদানার করেন করে আহান কৃদ্ধনা, আর পাকে না এন কর হার বাদানা করেন করে আহান ক্রিকেনা বাদানা প্রাণার বাদানা করেন করে আহান করিবাল বাদানা বাদানা প্রাণার বাদানার বাদানার বাদানার বিব্যাক্ষা বাদানার প্রাণার বাদানার বাদানার বাদানার বিব্যাক্ষা বাদানার প্রাণার বাদানার ব

कि जिल्लाकर प्रकार प्राचन है। प्रमाण प्राचन है। का मधा रिक् भार नारम इह हिक्सन्धानन शहा क्षा क्षित हो। यह व खेलाना जात श्रद्ध । (तर्ने स्वाह श्रद्धाः **५ भिन**्द्राह লিত্র ভালার দিনভাল এই দ্যান্তিত্র भिक्ति १३५० भारत्य । अधि अध्यान सङ् ए किन पात सम्बु । स्ट्रा चे स्वीपद्धाः । **ड**्योश्च जार पेक्सेन्स कता अस्य गास्त्रसंड अग्रीत মৰ নীতি শাক্ষাতে কুমি ও শিলেৰ উন্নতি মানে কৰা এই সভাৱে প্ৰধান নক্ষা এইবো I र ज्ञा ते । यन द्रा कन्यादक विक्रवाहित এইরপ সলাসান উৎ ১র মধ্যাত্মের তালা ক্ৰিণাডেন ভাষ। খন্ন কল্পত ছইবে হা-বৰ্ণ ভাষা একটা দৈন্তান বিষয় বিশ্ব জা মরা ভাষ্টে এই উচ্চ আশানের স্পান্তঃ-कन्द्रम धार्मा करित । अयम कार्काला घरत ভার বলে আমাদের অনেক উৎকর্ম ক্রাংগা মুখ অবসায় দ্ভিছিলতে, এখন সন্দেশ্যু दानी हिन्नांनील टाव्हिमार निष्टे काहाह का বিষয়ে প্রাণপর যত্ত্ব ও চেত্রী আবদাক। আদি ত্রাহ্মসমাল জন্মানধি এই মহৎ উদ্দেশ্য माधरन दक्तशतिकत इरेशः चार्छन। হিন্দু রাজনারায়ন্ন বাবুর এই শাশ। যদি কল-বং হয় তাহা হুইলে এই আদি ব্ৰাক্ষসমা-क्टित्र **अत्नुकाने, उ**प्तमा भाषिक इस्टित ।

ু হৈ ছোৱ বিল্লবের সুময় সভা স্মিতি বা বে কোন উপায়ে হউক গিনি এই হিন্দুজাতির বিনাশোখুক ধর্ম্বাতি নীতি রক্ষার সূচনা कदित्वन जिनि वास्त्रविक এ দেশের একজন পর্ম বন্ধা অনেকের সংস্কার ইংরাকী শিক্ষা দেশের উপকার ও অপকার তুই করি-তেছে। আমরাও তাহা অসীকার করি না। किन्छ এই इम हिन्दूत नामि विनि हेरदाकी ভাষায় উচ্চ শিক্ষা পাইয়া সদেশাসুরাগের এইরপ উচ্চ আশা হৃদত্বে বারণ করেন আ-यहा छां हाटक इट इंड नगर भारत वस्त করিতে প্রস্তুত আছি। যগা হিন্দু সাম্ভিত্ত 'হিন্দু সাধারণের হৃদয়ে কিরূপ ভার ম্ট্রিত করিয়া দেওয়া হইবে রাজনারায়ণ বাব্ তাহার একটু নিদর্শন দিয়াতেন। আমগ্র আ**র্তাহের সহিত নিজে তাহ। হইটে** কিঞিব উদ্ভ করিয়া দিলাম।

"হিন্দু নাম আমরা কথনই পরিত্যাপ করিতে পারি না। হিন্দু নামের সঙ্গে কত হাদরগ্রাহী ও মনোহর ভাব অভিড রহিয়াছে। হিন্দু নাম উচ্চারিত হুইলে আমানের মন-শচক্ষু সম্মুখে সেই সরস্থতী-নত্নী দৌর-বাদী আদিম শার্হানিগের বরণীয় মুক্তি আবিভৃতি হয়, বাহারা ঈশ্বরের সহিত মনুযোর নিকট শথর অনুত্র করিয়া ধলিয়া পিয়াছেন— ্শহং হি নো পিতা বলো হং হি নো মাতা," "ম্বা শিকা পিত্তমঃ পিতৃণাম্ "আম স্থাং সাহা প্রনাতিশ "হং ক্লাহং ত্রান্ধি।"

"তুমি আমাদিণের পিতা, ত্থি আমাদিনের মাতা," তুমি স্থা, পিতা, পিতৃগণের মধা পর্য পিতা," "তোমার বস্তুতা অতি স্থাতু,""তুমি আমাদিনের আম্রা তোমার।" কিলুনাম উন্তারিত হইলে আমাদিনের মন্দ্রক্ষাত্ত স্থাতে ক্রিয়া ক্রিয়া মুর্ভি আমিয়া উপস্থিত হয়, যিনি বলিয়া দিয়াহেনি, শিক্ত ভানমনত ব্যাবেশ নিহিত ভারমা

পরমে ব্যোমন্ লোহর তে স্কান্ কামান্সহ ক্রমের বিগশিত তা।"

যি ন সত্যশ্বরপ, জ্ঞানন্বরূপ, আনন্তর্রুপ: পর্ম ভ্রন্সকে আপনার হৃদয়াকাণে স্থিত বলিয়া যানেন, ভিনি সেই জ্ঞানস্বর্গা ঈশ-রের সহিত সকল কামনা উপভোগ করেন।" হিন্দু নাম উচ্চারিত হইলে আমাদিগের মনচকু সন্মুখে সেই বরণীয় আধ্যমূর্ত্তি মা-ভুক্য আদিয়া উপস্থিত হরেন, যিনি বলিয়া-ছেন, "লামং শিবমধৈতং" তিনি শাস্তদরূপ মস্নস্ত্রণ এবং ভাইছত হর্নপ।" স্থন আমরা এই হিন্দু নাম উচ্চারণ করি, তথন আমাদিলের ঝুলিকেনে ব্যাপ্তস্থান্দরজ্ঞান কলাপৰালা বাহেমর বরণীয় মূর্ত্তি আমিয়া আবিজ্ডি হয়, খিন বলিছাছেন, "আক্সনঃ ভাতিত্রানি গবেষাং ন স্মাচ্যেরং।" "**আ**ু প্রমার মঙ্গনের হাহা এ,তিকুল, পরের এছাতি ভাল क'तरव ना ।" यथन व्यागता अ**रे हिन्** নাম উচ্চারণ ধরি, তগন আমাদিগের মন-শ্চকু ন্মানে মধুরস্ভাব **অথচ সাধীনান্তা** বাশিষ্ঠের বরণীয় মুদ্ভি অ'শিয়া **উপস্থিত হয়**; ঘিনি বলিয়াছেন,

'বৃষ্ঠিবৃক্ত' উপাদেশং বচনং বালকাদপি আনাৎ ইণ্নিৰ ভালামপ্ৰাক্তং প্ৰথমনা তে

"বালক যদি যুক্তিগুক্ত বাকা বলে, তাহা উপাদেয়; আর সয় ব্রহ্মা যদি হুর্ক্তিযুক্ত বাকা বলেন, তাহাও তুপের ন্যায় পরিতাপে করিবে।" হিন্দুনাম উচ্চারিত হইলে, আগাদের মনশ্চক্ সম্মুখে সেই নবীন পুর্বাদ্ দলশাম ধীর প্রশান্ত-মুক্তি আবির্ভি, হুরেন, বিনি পিতৃসতাপালন নিমিত চুর্কেশ বহুসর কাল অরণো অশেষ ক্লেশ সহা করিয়াছিলেন ও সংঘত মনের এবং পরস্পার বিপরীত ভূপের সামঞ্জন্যের সর্বোত্রান্ত্রীক্তি প্রদর্শন করিয়াছিলেন। হিন্দু নাম উল্লেখিক ইব্লে, আমাদের মানসক্ষেত্র সেই নন্দের ব্লিক

জিক্ষা উপিছিত হয়েন, বিনি खानीत जित्तामनि दश्मिदकत निद्यामनि, ষিনি ধর্মাবক্তার প্রধান, বাঁহার কথিত খ্রীম-हगवन्ति । व्रक्त कात्नद्र मक्न म्लानारश्व হিন্দুক্তিক স্ববিপ্রধান ধর্মগ্রন্থ বলিয়া মান্য হুইয়া আদিতেছে এবং বর্ত্তমান পাশ্চাতা সভারার কালেও ভারতবর্ষে ও যুরোপণওে উভয়রই খীয় প্রাধানা রক্ষা করিয়াছে; যিনি ভক্তি ও প্রেমার্শের সংস্থাপক অথচ রাজনীতিজ্ঞ ও কৌশলীদিণের চুড়ামণ্, যাঁহার বিচিত্র মহিম। কবীক্র সকল সীয় তীয় হচিত প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড এতে যথোপযুক্ত রাপে বর্ণন ক্ষরিতে পরাস্ত হইয়াছেন, যাহার পরমান্ত করিত্র মহামকোগানাম পঞ্চিতগর मुकाक्षरभ रातरण्डन कतिए वित्रकान है शति মানিয়াতেন ও মানিতেতেন। উজারিত ছইলে, আমাদিগের মনশ্যক্র সম্মুথে নুধির্টির আদিয়। আবিভূতি হয়েন, বাঁহার নাম ভারতবর্ষে ধর্ম শক্তের ভাতিবাকাদরপ ष्ट्रिया में जिल्ला हेशारिक । शिक्ताय के लिलिक हरेल, तिहे अत्नाक-भागानः शुरुष आया-্**দিগের মনশ্চকু সন্মুখে** উপাশ্তর হয়েন, যিনি মুবিষ্টিরকে আপনার মৃত্যালনের উপায় तिया पिया व्यमाधावन सम्द श्राम कतिया-**हिल्ला अ**न्धे भारत्यात करहार यखनात सना হইতে পাওবদিগকে অশেষ অমূল্য ধর্ম্মোপ-দেশ প্রদান করিয়াছিলেন। ঐ নাম উচ্চা-রিত হইলে, দেই মহামন। রাজ্যি জনক আফাদিগের স্থৃতিক্লেত্রে উপবিতে হয়েন, যিনি প্রানুপ্রারপে বিষয়ের প্রতি মনো-যোগী থাকিয়াও, এক মৃত্র্ভ অধ্যাত্ম যোগ ছইতে বলিত হইতেন না। এই নাম উচ্চা-त्रण कतित्म, महाज्ञा श्वत्रवादक चात्रण हत्र, বিনি এলেক্জাভারের নিকট শৃত্যুলবন্ধ হইয়া वसी जारव नीज इहरत व्यवस्थात क्या जात "তোমার প্রতি কিন্তুপ ব্রেক্সর করিব" এই

কথা জিল্ডাদ। করিলে, "এক রাজা অন্য রাজার প্রতি যেরাপ ব্যবহার করে, দেইরাপ করিবেন" এই উত্তর দিয়াছিলেন। হিন্দু নাম কি মনোছর। ঐ নাম কি আমরা কথন পরিত্যাগ করিতে পারি ৪ এই নাম ঐন্ত্রাল জাসিক প্রভাব ধারণ করে; এই নাম দারা বাঙ্গালি, হিন্দুখানী, পঞ্জাবী, রক্তর্থ মাহান রাট্টা, মাদ্রাজী— সম্ভ হিন্দুগণ একজন্ম হইবে; তাহাদিগের সকলের এক প্রকার উন্নত কামনা হইবে; সকল প্রকার জাবীন নতালাভ জনাতাহাদের সমবেত চেবা হইবে। অভত্রব পে পর্যন্ত আর্থনে,শাবিতের শেষ বিন্দু আ্যাদিগের শিরায় প্রবাহিত হইরে, গ্রাম

মহদাকা।

(25)

মসল গাধনই ধংশর প্রাণ।

(29)

উন্নতির পথে অগ্রমর ইইবার কনা প্রেরান স্থায কি / সভাচেদ্যিকংগা।

(26)

যে ভয়ের বলীছত দে যোগ হাংখের ভাগী। ঈশ-মেল বাজ্যে ভয় কমিবার কিছুই-নাই।

(30)

ধীয়িক ব্যক্তিকে স্থান্ন হাইতে হয় না, বর্গ ভাঁহার হৃদরে জাপনা হইতেই জবতানি হয়।

· (O.)

পার্মিক ব্যক্তি স্বীপন্তের প্রসাধের ক্ষরিকারী হামন এবং তাঁহা করেক প্রিচালিত হয়েন।

(0)

े शिवन वार्की निकार बना धरनाशास्त्रन, धरनाशाः कारनेत्र बना बीवन नरह। अहे मश्क मजाने कर स्माक छुनिया-सहिधार्छ। (92)

আমি প্রায় কথন তুংথে পড়িয়া অসজোব প্রকাশ কবি নাই। একবার দারিক্তা জন্য পাত্রকা আহরণ করিতে পারি নাই ভজন্য অনার্ভ পরে বহু পথ ভ্রমণ করিতে হইমাছিল বলিয়া বৃড় কঠ ইইনাছিল। যথন এই কঠে বড়ই অবদর হঠিয়াছিলান, তখন একটা ধর্মালয়ে প্রবেশ করিয়া বিপদহীন একটা বাজিকে দেখিতে পাই। ভাহার দশা দেখিয়া আমি পার্কায় জভাব ড়লিলাম এবং ঐ ব্যক্তির সহিত ড্রান্রে আহার ভ্রমণ একটা করিয়াছেন দাং। অন্য প্রতি কর্মন বাদ দিশাম।

(30)

ঈশ্বৰ পাণীর একমাত্র ভারত বন্ধু ।

(08)

জনতের উচ্চতাও প্রদানত। তোলানর মধ্যে বিলয় । পাইনাছে, হে ঈশ্বর, জামি আনি ন। নি কি ৪ মান।

(00)

হৈৰ জীপনাকে অন্তৰ্থী মনে কৰে, সেই সংগ্ৰেছ অন্তৰ্থী চুৰ্বি

60

সেই বাজিক কিলাপ্ৰ, চ্যু স্বল ও লোকত স্কায়

1-11

আন্তঃ অন্তিঃ চিব পাৰিকাৰী, ইহাই ঈশ্বরের স্ক্রেন নিজম ৷

106.

্ৰ মাজ্যেৰ পা**থি**∳ প্ৰয়ত উচ্চ ত'াৰ বিশিষ্টা [†] তেওঁ কম্ঃ

1 360

তে শীষ বিচৰক শক্তি চারার, সে স্থল্ট হার্যে।

হন্দ্র কার্য্য প্রথনতঃ বছাই কেটিন ধারা বলিং। বেল তর, কিছে ক্ষাবের এমনা কর্মান্ত লিংল, কেবে ব্যক্তি বন্ধপরিকর হইনা শার সাধ্যে প্রেছ পর এছা লগ্ন কার্য্য সাধন করিছে পাতে, ভাষার প্রকে ধর্মান্ত লাধন কিছুকলে পরেই সহন্দ্রাধ্য হয় এবং আর্ভ কিছুকলে পরে মুক্তর ও আনন্তর হইমান্টিটো

তুনি মূহ কাৰ্য্য সম্পান কৰিছে প্ৰতিষ্ঠেই মা বালয়। বিষধ হইও না। উপান স্কলকে স্নাৰ ক্ৰিয়া প্রস্তুত করেন নাই। তোমার বেরপ্র ক্ষরতা, থেরপ্র স্থানিধা তাহারই উপায়ক বাগহার করিতে করিতে আগসর হইতে থাক — ইবর ভোমাতে পরিভারিকীর-নোনা।

(8>)

প্রকৃত ও ছায়ী উন্নতি **অনেক বিন্তম্**ও **অনেক** কর্ত্ত প্রাপ হওয় যায়।

আনাদিনের চরিত্র আমা**দিগের চিন্তা, বাকাও** ধানেত্র স্থানির ফল। **অতএব এই তিনটিকেই নিয়-**মেন্ত ও ফ্রারিকালিত করিবে।

কেন্দ্ৰ সামায়ক ও কণ্ডায়ী ভাবোজগুনে চরিজ গঠিত হয় না। ইঞান বল চাই, সায়েতগণের ক্ষমতা চাই, ৬ অধান আনব্দায়ে চাই। তহাতীত চবিত্র উল্লেখ্যানার না।

ন্দ্ৰ মাধ্য সমূৰ গুণ, বিশ্ব আৰু ক্ৰমণ জনন কাৰ। চাল সমা বিমান্দ নাই মা তালা জনি বা তথা আছনী কেন্দ্ৰবিদ্য হয়।

জেণতি।

াক্ষিরে ভাগেত প্রাণ বেলিছার প্রান্ত হ্মিত কুল্ম ল গিয়াছে মরিয়া। 🗻 ললিভ সংশ্ৰী আৰু থাকে না কো কোণা বিরহ-বিশাদে মব পিয়াছে ভরিয়া। শামল প্রান্তর নাই, মরুময় **ছান** চারিগারে আল—আন নাতি গার কেই: অঁথেরি গহররে শুধু পিশাতের দল कविदल निक्ते नृष्टा-हेट्डे त्थ्रम स्मन् । (थरक (थरक जीगहर काशा हेर इसहा ছড়াইছে চারিদিকে গরলের রাশ; অমৃত লুকামে আঁছে গরলের ভয়ে অমূত বিহীন হ'মে হলম হতান। ' কোপায় জোড়িরমর—অনস্ত মহান আইস—চাহিয়া দেখ ফাদয়ের পান: তোমার জ্যোতির ক্থাক্তর এরে দান प्रेन्टिंग चत्रने द्वारिंग निमि धनमान।

रार्थान-मञ्जरी ।

্রীসুক্ত প্রধান আচার্য্যের ব্যাখ্যান-মূলক পাল।

विश्वा गाणान ।

বর্গ জ্যাধিন মাসের পার্যাব ১২০ প্রের প্র

পুর পার সংগ্রেষ্টে চর হৈছে তেওামার।

ক লো পার জাগুর : তুলি না তার গে সারে।
ক্রেয়া বের বাহা সারি, তালাপান সাধানত করি,
পানিবে মৃত্যুব হথা ভাষের তেওঁ চিক

() 表現から、中で異常し、またなら、場合のはます。
 () 表現から、中で異常し、またなら、内には、日本のは、またない。
 () またないないのである。 一門、これのはは、またない。
 () またないないのである。 一門、これのはは、またない。
 () またない、これが、これが、これが、これが、日本のは、またない。
 () またない、これが、これが、これが、一般はありずるのは、または、これが、日本のである。

্থ্যারক ব্যাগনি ব্যাধ বা গ্রেম্ব ব্যাগনে জ্ য়া পান নৰেতে লায়, আহামুন চালিড চ र्च जनांत्र मान करतः। जार । ने० व्हाद नार्यः, रष कम भाक्षणक खार क्षेत्रित कृष्टित । ি, ছায় । যদি ভোলা ছেল কেটাৰ ছলকো। मालक कर्द्र मिम भेषत विश्वम । कांत्र मग्ना बाहि जात, क्षेत्र मार्थ गाहि रहत প্রেম ছক্তি নামি পাও ভাষার চনলে ।। ভবে সাধীনভা পেয়ে কি হলে। ভেড়ার। ুস্থানিতা অধিকার হইল কি ছার 🖰 শ্বদি পাপ পরিবর্তি, ভজ দ্যামর স্থৃতি ুঁঙবেইও স্থানীনতা করিবে হে সার।। হি।ধীন হইয়া এবে আগন ইন্দ্ৰায়। উর্বত্তে করন্থ দান আতা সমুদার। काशन खोवन इन, কর তাঁরে নিগোজন **ब्रह्म दिल्ला कर्न कर्म पिन रव मु**हार ॥ का निर्म समिता कर तम्य (न नमत्र।

कार्का अहेटर गरा किंद्र महत्त्र ।

প্রাথিকী আলিকে ভবন । তথা কি মান্তভ কৰে
প্রথম সম্পুলিও, বিলাপ না সহাও
ক্রে দিনে এ বিলাপ বিলাপ না সহাও
ক্রেদিনে এ বিলাপ বিলাপ না সহাও
ক্রেদিনে এ বিলাপ বিলাপ না সহাও
ক্রেদিনে এ বিলাপ বিলাপ বিলাপ না ক্রিদ্রা
ক্রেদিনে ক্রেদিন ক্রেদিনে বিলাপ বি

禁犯 西珠大大,门大声称"作作人大"。

ভূৰি হৈছে যে কোনে, ইবি এদ যে সন্দৰ জ্যুৱে জীপান্ধ দী, ভিয়ে ১৮৮ সিও জেনাই स्वाप्तर सूचे अव । र्मात्राहर का वह ছাল্ডের মের হলবেন পুরি <u>টিরের জুলের ক</u> कात Cela आसामन, १०२० तथा विकास পিটুৱেল্য ভাষতে কয়েই ভাইতে সামা সঞ্জান । াজান ৷ ব্যাপুজু হোবা ভাগে কাজে নগ্ৰহ যাই । काल जिल्हा व भारत किरोकिन कर्न शहर ॥ বিষয়ের ঋতু এপ কেলন আছিছেছে গনে। 🦭 रेकिन कराना भागा भागे हिन्दे नामभाभावन त নিচ্ছু যদি তিবে চপ্ৰাম আসার ৮ জনে ভার ১ के १७७ छो। ह्र स्वतन्त्रिन हस्य , गाय । অপেনারে নিত্যানি ভাবি তবে। শিশবে। ভাঁতে ছেড়ে ভিন্নু কেন কিবা ছার বস্ত **ল**য়ে ।। সরবস্থ কি জামার ভার প্রোমন্ত্র্য কাছে ৮ তাঁৰ প্রেম-মুখ ভরে, বুদৰ মোর যায়। আরে ॥

> আমাদের দেব-ভাৰ নিজ্তের প্রার্থ ন বাতেকে উন্মীল জুহা নিংগালিয়া ব মুন্ন এই দোমা প্রাণ দিই দিখারের জনে। মোহেতে মগন হই ক্যকাল গুরো। স্থানী গ্রান্ত বিশ্বাহাহিতে গিয়া। আপনার পুনাঃ পুনাঃ পুনাঃ গাজন দেখিয়া।

ছুর্বল আপনা জানি কর হাহাকার। কিন্তু জেন দরাময় সহায় ভোমার ৪ ध्यकारक कत्रह हेन्छ। त्या उ धर्मा-यम । সে ইচ্ছ। ভোমার হবে অবশ্য সফল ॥ তার ইচ্ছা এই—তার প্রত্যেক সন্তান। তাঁর প**থে—ধর্ম**-পথে **হ**বে আগুয়ান।। তিনি প্রিয় পুত্র কন্যা স্বার অন্তরে। দেন শুভ **বোগ ম**ভি ভরিবার ভ**রে**॥ হ্বদয় খুলিয়া কর তাঁরে আবাহন। लीट्डत कवां किम ना कर देवकेन।। আসিবেন হাদি তব জানিহ নিশ্চয়। ভাকিলে বে দেখা দেন—সেই দরাগয়। শুদর ভাষারে ভুমি করছ অপুন। ক্রিবেন ভাহা ভিনি অবশ্য এচণ ৷৷ কুপুত্র যদ্যপি চার পিভার শরণ। "অপরাধ কম—দাও ছিরেন"।। বিহুখ ভাষারে পিড। কড় নাহি হ'ন। করে**ন ভাগারে ল**গে ক্রোড়ে আলিস্বর্ধা পরম শিকার হয় সেরুপ ব্যস্তার। পাপী ভাপী েই চায় ক্ষমা পায় জাঁর।। প্রেম অগ্নি যিনি দেখি ভকভের চিতে। চাহেন দে অনলেরে ক্রমিক বার্দ্ধতে।। ভব অনুনাগে তিনি করি বারি দান। ্ কথিবন একেবারে ভা**হারে নির্বং**ণ 👂 ৰদি ঢাপ তাঁৰ ধৰ্ম কৰিতে বজায়। বিলে না দিবেন ভিনি ভাষার উপায় 🛚 পাণ হ'তে উদ্ধারিতে যদি ডাক তাঁরে। গ্**ছাত ধরি তুলি নাহি ল'বেন** ভোষারে ধ ্ষ্টীর কাছে গিয়া ভূমি করিলে ক্রন্দন। ি নাহি করিবেন ভব জঞ্জ বিমোচন 🤋 **१थ-हाता हर**स यक्ति की यथ शहरन । কাতর প্রাণে তাঁরে ডাক এক মনে॥ শুনিবেদ নাহি তিনি—ভোষার বচন। কাৰে আলি না দিবেন আত্তম আৰু প্ৰ জিনি যে কৰুণানয় কাভর-জারণ। শগতির গতি তিনি প্রক্রিশাবন দ ঁ ভার দিকে এক শাদ মদাশি আড়াঞ "পিডা লও কোলে" বলি জাঁৱ পানে চাৰ

দেখিবে সহজ্ঞ শাস ছয়ে অপ্রাস্থ্য ভাষারে সহরে কালে আলিয়া সন্থয় ।
আমান্তের কণা মাত্র প্রীতি যদি পার ।
শেই প্রীতি করিয়ারে আরো বর্ত্তমান ॥
শক্ত খার প্রীতি-ক্ষমা করেন বর্ষণ ।
অন্তরে বাহিরে সদা দিরা দরশন ॥
এস সবে মলিনতা করি বিস্তর্জন ।
সরল ক্ষদেরে বাই উছির সদন ॥

প্রার্থনা।

দ্যা করি কর লাগ। জীবন জীবন !
ভোমারে জীবন ধেন করি সমপুন ॥
ভূমি কে জ্যোভির জ্যোভি! কালোকে ভোমার।
বিনাশ বিনাশ মম ছানয় আঁবার ॥
ভোমা পানে জামি বেন লাছি নিরন্তর।
পেকোনা খেকোনা নাথ। নামন অন্তর ॥
দান ছান মাপনতা করি শরিছার।
একান্ত দিনি এবে ছছনু ভোমার॥
বিসমের মারা-জালে আর না ছাড়িব।
এ জাবন ভোমাতেই সনাধ করিব।
নব নব ভক্তি ছারে ভোমারে পুজিব॥
আমার সর্বস্থ নাথ। করছে এইব।

মান্যবর জীযুক্ত আদি ব্রাক্ষনমাঙ্গের অধ্যক্ষ . মহাশরের্থ

मानत निद्यम्म।

আদি প্রাক্ষমনাজ গৃহ এত জীর্ণ হইয়াছে
যে ১১ মাধের মহোৎসবে যে প্রকার বছ
লোকের সমারোহ হয় তাগতে সাংঘাতিক
বিপদের সম্ভাবনা। অতএব সাবধান হইবার জন্য আপনারদিগকে অসুরোধ করিন
তেছি বে, আগানী ১১ মাধের প্রাতঃকালের
উৎসব সমাধা করিবার জন্য অনা কোন স্থান
নির্দারিত করিতে উদ্যোগী হইবেন। ইতি
২৩ অগ্রহারণ ৫৭ ব্রাক্ষ সমাধ্য

প্রিলেক্ট্রেলার সাক্র। জীবিকেক্ট্রেলার সাক্র। জ্ঞানবীনাসক্রেলাল পূজাপাদ শ্রীমন্মহর্ষি দেবেক্ররাথ চাকুর প্রধান আচার্য্য মহোদর শ্রীচরবেসু।

আদি ত্রাক্ষণমাজের সাক্ষণেরিক উৎসবের দিন নিকটক্ত হইরাছে — এ উপলক্ষে
সমাজ বাদীর তৃতল গৃহে বহু লোকের সমাগম হইরা থাকে। কিন্তু গৃহটি জীর্ণ ইইরাছে
দেখিয়া সমাজের অধ্যক্ষ ট্রিই মহাশারেরা
ইহাতে বিপানের আশক্ষা করিয়া আমাদিগকে সাবধান ইইবার জন এক পান লিখিয়াছেন এবং আগামী ১৯ই মালের প্রাভঃকালের উৎসব কার্যা জন্য কোন স্থান
নির্দ্ধারিত করিয়া ভাগাম সমাধা করিছে
বলিয়াছেন। এত এব এক্ষণে আপানকার নিবট
আমারদের এই প্রার্থনা ,য আপান অন্তাহ
করিয়া জামানিগের উপ্রাক্ষণ কার্যা সমাধা করিবার ক্রা একটা স্থান নির্দ্ধারণ কার্যা কিন্তু

আদি রাক্ষাসমাজ কার্য্যালয় সেবক ২৫ অগ্রহায়ণ প্রীরবীক্রনাথ ঠাকুর বোক্ষাসম্বহ ৫৭ কলিকাতা। সম্পাদক।

> স্থোম্পদ শ্রীযুক্ত বাবু রবীক্রনাথ চাত্র আদি ত্রাক্য-সমাজের সম্পাদক সমাপের।

তোমার ২৫ অগ্রহায়েণের পত্র আমি
প্রাপ্ত হইলাম। আগামী ১১ মাদের প্রাত্তকালের ত্রক্ষোপাসনা কার্য্য সমাধা করিব।র
জনা একটি স্থান নির্বন্ধ করিয়াছ। অতএব আমার
বাটার বহিঃপ্রান্ধণে ততুপযোগী স্থান নির্দ্ধান
রব্ধ করিয়া দিলাম। সেই স্থানে পবিত্র
ত্রক্ষোপাসনা স্থান্পন হইয়া গেলে আমি
আহলাদিত হইব। ইতি ২৬ অগ্রহায়ণ
৫৭ ব্রাক্ষা সমাধ।

প্রিদেবেক্সনাথ ঠাকুর।

বিজ্ঞাপন।

বহকুল হইল আদি ব্ৰাশ্ব-স্মাজের গৃহ নির্মিত হইরাছে। এখন ইহা নিতান্ত জার্ণ। ১১ মান থের উৎসব উপলক্ষে বহু লো-কের সমাগম হর। ইহাতে বিল-भन्। अभिद्रमेत जानका छ। इह। এ জন্য টুটারা এস্থানে ঐ উৎসক্ত োর অনুঠান করিতে নিষেধ ক রিরাছে।। পরে আদি ব্রাদ্য সমাজের অধাকেরা শ্রীমৎ প্রধান আঢার্য্য মহাশুরের নিকট প্রাথনী করাতে তিনি আপনার বাটার বহিঃপ্রাঙ্গণে মাঘোৎসবের স্থান স্থির করিয়া দিয়াছেন। অভএব আগাদী ১১ মাঘ রবিবার প্রাতঃ-কালের ত্রক্ষোপাননা আদি ত্রাক্ষ-मभारकत एउन गृहर मा इहेश ত্রীনং প্রধান আচার্য্য মহাশরের বাটার বহিঃপ্রাঙ্গণে হইবে। এ দিন সৰ্বদাধারণে প্রাতঃকাল ৮ ঘটিকার সময় ঐ স্থানে উপস্থিত হইয়া ব্রন্ধোপাসনা ক্রিবেন।

> প্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর। সম্পাদক।

外面 |

ণারম পূজনীয় শ্রীমশ্মই হি লেবেজনাথ ঠাকুর, মহাশর শ্রীচরণৈয়।

श्वभे शृबनी (इयु-

जामध्या ध्वाम श्रक्तां सित्यका विकट-ঈশ্বরপ্রসারে ও আপনার ওভাদেরীশালালে (वहाला ट्राकानगाटकत छिदमव धर्यानिहरम स्रंग्रुक्तः हहेगः (शन। स्रोप्य स्थादक छ।-विन, शिक्क रभ विदरात अमेगरे माशाका रा শৌক ভাণের লেশ মাত্র হাস্থ্যক স্পান ক ्तिट इं थारत माहे। एकरने हे उनक 😇 ⊱ मारह दूउँको हान। तना २ है। इते उ उपा-মক ও দৰ্শক্দিলের সমাগ্রাম্ট্রে আরন্ত হইল। এবং দেখিতে দেখিছে আমন্ত্রের বার্টার প্রাঞ্জ বুর্গ হইয়া পোল 🚶 াজাপাল <u> জিরাম বাবু মহাশল স্কলকে যাল। নিংমে</u> অভর্পেনা করিতে লাগিন্দ্রন। তিন্ত্র-বা-জিবার অবাবহিত পর্নে সম্বান ভ্রাহ্মসমাজে ्राथा नदा ५ जातल । देवेल । ত বংশর শ্রীভীগত্তর রায় পানের ছার তাহণ ক্ষরিগ্রহিন বেহালা ও ভট্টিকট্ম প্র-बीर धना २० जन वर्गक खायाराष्ट्रात क्यांक পাঠে যোগদান ক্রিয়াছিলেন এই डीश्रामिश्राद । अक्साम श्रृष्ट इहेर्ड করিয়া অইতে ইইয়াছিল। প্রিত্ন পারায়ণ শ্রেবীশে সকলেই বিৰোধ ভূপ্তি লাভ ক্রিয়ান ছিলৈন। বাঙ্গলা অর্থ ও তাংপগ্র পাঠের ভার আমার উপর ছিল ৷ বিদেশ इहेर ब এতিনাথ বন্দোপাব্যায়, এপ্রমন্**ত্রার বি**ন ধাস, ভীশভূনাধ গড়গড়ি, জীলালবিছারী বড়াল, জ্রীবেণীনাধ্ব পাল, রসা দিড়িও महिल्ब दक्तिमगाद्वतं कराक्षी खळ् ७ छा-মের কয়েকজন সভাত প্রাচীন লোক উপ-चित्र हिट्नन । भार गिटनम सन्तर जिमास अ मनक गर्या श्री के बन क

পাব্যুদের মুক্তিও কাক্ষ বিশ্বণ আপনার পা ,,বিক ক্ষিণানে প্রেমিড হইন দে

ताजिकाल मगाजन्य मीशमानाम जा-त्नाकिए इस्न । " उत्राप्तक । प्रभाकमध्यात ৪০০ শতের অধিক ইইবে । প্রেছাস্পাদ গড়-গড়ি মহাশ্য ও বনুহাটী ত্রাক্ষদমাজের শৌন **जार्या अभूमाद्यान पूर्वाशामास स्थानते (व-**मोत्र याग्य खहर किंद्रलम्। छेभागमात ভার মুর্বলাবুর উপত এবং বক্তৃতা ও উল্লেখ ধনের ভার ১৬গাড় মহাশহের উপর থাকে। शक्ति भाग नर्देश रहत । शा मन दलसे यात-প্ৰামাই সন্থাই হইলাভিবানে । সৈকল বিখ-মোন আলোলন এপী প্রীয়ে বংসদের মত र र , हिन, दर्भान कियरान्ते । उन्हें दश गोरे । ল,জনগাজ উলানকে প্রায় ১৯৫ জন ব্যক্তি আন্ত্রেকের প্রতিত আহারারাদি **করেন। কিন্তু** हेर्या के निया के स्वादक से स्वाप्त लिएटा देवत ज्ञानित क्यु स्त १ विट्र इहेशिव्स । निहेंगी জাপেলের কোলবালে নিবেদম ক্রিলাম।

লেহা (রাজ - মাজ : তেখাকা**্নেবক** ।) । ১৮৮৮ শুকা ১ হাংগোধ : উ**্তিজা্মণি চটোপাঞ্চিম**

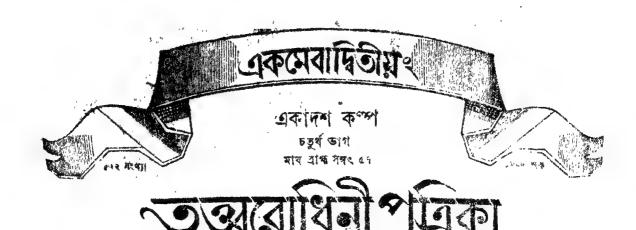
বেহাল। এই ত্রিংশ সাদ্ধংলরিক প্রাক্ষমান্ত্র।

धर्र कार्तिक मामनात अनेतास क्

अतिहात।

- ১। এক্সকীত।
- २। व्यक्ति। (सराज मध्यमान १६४।)
- ত। প্রাক্ষধন্তের দিতীয় অধ্যার হইছে **অষ্টম পাণ্ডাই** প্রস্তুত্ব সম্প্রায়ে সংস্কৃত লোক পাঠ।
- 8) প্রতি অধ্যান্ত্র সংগত হোক পাঠাতে আলার। অর্থ এবং ভারতিবিশেষে তাৎকরা গাঠ।
- शकरण मुखायमान हृहेन्ना देखांच लाहे ।
- । श्रेगायः।
- भी दे**वा** मुक्ते छ।

ৰ একাছবাহতীয়**ে**



प्रश्लाग्याम्बर्गम् । स्थान्य स्थान्

আদি ত্ৰান্মনমাজ।

৫ পৌষ ত্রবিবার প্রা**ন্ধা সম্বহ** ৫০ । স্থানার্যোর উপদেশ।

যিনি আমানের আন্থার অন্ত-কালের উপজীবিকা, যিনি দ্রিটের গন, কুগাতুরের অগ্নত ভূষিতের পানীয় বাঁহাকে পাইলে কাহারো কোন অভাব থাকে না, আজার **ুর্গট** পরমধনের উদ্দেশে আমরা এই উ-প্লাননা-মন্দিরে নমাগত হইয়াছি। বৈ সং"— ভিনি রস-স্বরূপ ভৃপ্তি-হেডু; প্রতিকালের ন্বারণ প্রভাবেঁখন চক্রি-ক্লিয়ের ছঞ্জি-ছেডু, নবোৰোধিত বিহন্ন-কো-लाहन देशमन धावदनस्मिदतत्र जुड्डि-८इजू, स्विक क्षांज्यमभीतम त्यमन म्लक्षी ज्यात पृष्टि एर्ज्, उन-प्क-प्क-यक्तभ भूग। शत-মান্ত্রা হৈরপ আন্ধার তৃপ্তি-হৈতু। তিনি भड़ार खानमन्छ खन्न छ। हात्र जात्नादक িপান্ধার, জ্ঞান-পিপাদা পান্তি-রাভ করে, তিনি আনন্দরপ্রমৃতং ব্যক্তি—ভাহার প্ৰত ৰলে আছাৰ প্ৰোৰ-পিলাদা চ্বিতাৰ্থ रम, जिति भाषाः भिषयदेगकः केराम गान-शाम्दन मामाउ गमछ भागजम ७

জকলাণ দুৱীভূত হইয়া ধান। **অভ.এৰ** আইিস ভাষর: ভাছাকে মর্বাঞ্জরণের গ-হিত হৃদ্যে অভ্রিন করি। খবন পামাদের পরীরের কোন একটি অঞ্চ আমিত ইয়া, তখন मक्त अपरे छोराइ वाय। निवाहर्वत खना সচেষ্ট হয়; যখন মধুমক্ষিকার মধুদক্র অপ-হাত হয়, তখন সমন্ত মধুমক্ষিকা একতা হইয়া প্রাণ-পণ যত্ত্বে চক্র নির্ম্মাণে প্রয়ন্ত रहा: मिर्देद्ध जाजात गुण निवाद्यंत জন্য—ভগ্ন হাদ্যকে পুনরুত্থাপিত করিবার জনা—यनि ज्ञायादनत नयस् একযোগে মিলিডে হইয়া পরম প্রেমাস্পদ भारमाञ्चाटक व्यास्त्रीने कटत्र, उटन व्यनभारे ভক্তবংসল পর্মারা আত্মাতে আনিভূতি **হ'ন ; তথ্ন আজো** আশ্চৰ্য্যে স্তব্ধ-প্ৰাক্ত **হইয়া দেখিতে পা**য়—ুভাহার পরম গ্রন্থ এবং পরম স্থাই তাহার জ্ঞানের জন্য সতা আনিয়াছেন—হাদয়ের জনা শ্রেম আ নিয়াছেন-জীবনের, জনা মঙ্গল আনিয়া-ছেন-এবং তাহার নিজের জনা তিনি সয়ং **আসিয়া উপস্থিত হটুয়াছেন।**, তথন প্র-শাঝাকে পাইয়া আত্রা পরম ধন প্রাপ্ত হয়---ও তাহার সকল অভাবেরই শরিসমাপ্তি হয়।

আ্যাদের সংসারিক নান। অভাবের নানাদিকে লক্ষ্য; এক অভাব সম্চিত পুরৰ করিতে গেলে, আর ্কুআর অভাবের প্রতি षर इ रहेशा मां ज़ांब ेिरा वाकि वार्थव অভাব পূরণ করিবার অন্য প্রাণ্পণ যতু করে সে বাজির হয় তো জ্ঞান প্রেমের অ-ভাব প্রশ করিবার অবস্বি স্থাকে নাঃ যে वाकि छात्नव बजाव श्रीवरनंत्र बना निवा-व्यक्ति करिशत विख्लारमत चारलाहमाम् मन्द्रक ণিল্রান্ড করে; সে ব্যক্তির \ফাদয় হয় তৈ। অতৃপ্তি এবং অশান্তির আৰায় হইয়। উঠে; ইহার বিপরীত এই দেখিছে পাওয়া যায় যে, এক কেবল আত্মার অভীব পূরণেই আ-মাদের সমস্ত জভাবেরই-পূরণ হয়। সংং-मांत्रिक मथल अजावह नहिम्बी ; वहिम्बी অভাব-সকলের প্রকৃতিই এই যে, একটির श्वरं पंधिक मोडा यद स्मिपिठ हरेतन অন্যগুলি নিতান্তই উপেকিত হয়। षामता गनि । षामारमत नमल षा षा । मून वारित रहेट अखटबंब फिटक बिलाहेला দিই, তাহা হইলে সমস্ত অভাব আছাতে সমাহিত হইয়া একটি-মাত্র অভাবে এঠা-বসিত হয় ;---সে অভাব কি ৪ না প্রযায়ার জন্য অজ্ঞান পিগুলে।। এই একটি অভাস व्याबादमञ्ज समस्य विकाद-समीत साधाद-सम्भनः এ অভাব-টি চরিতার্থ হটনে আমাদের সমস্ত অভাবই চরিত। প্রয়। বে ভগ্রস্তক বাক্তির এই গুণান ঋভাব-টি পর্মাজার অপর্যাপ্ত প্রেমভাতার ছারা নিরস্তর আগ্র-र्याम-छाहात भ्रात्म इंशतद्गील विम-য়াছেন

শ্বাপুণ্যনানমচল প্রতিষ্ঠং স্থানমাণঃ প্রাইপত্তি যহং। তবং কামা যং প্রাহণতি করে স প্রাক্তিমা প্রোতি ন কামকানী।

বিদ্ধ-প্রতিষ্ঠিত আপুর্যানার সমূজে বেশ্ব ভাবেরই বুল অকাব— জনরালি এনেশ করে, তেয়লি কামা বিশ্ব বিদ্যালয়া প্রাক্তর

जिन वैद्वारक आविन करत छिनिष्टे भासि ল্ভ করেন, জিনি কাম্য বিষয়ের পশ্চাৎ প্রাশ্চাৎ ধাবমান হ'ন-তিনি নহেন।" ইহার वर्ष এই यः, পরমান্ধার জনা আছার যে, কামনা, তাহা সমস্ত কামনার সাগর-সঙ্গম-স্কুপ। 'মাত্মা যেমন সমস্ত ইন্তিয়ের— সমস্ত মনোরভির-সাগর-সন্ম; আতার পরমার্থ কামনাও দেইরূপ আমাদের সমস্ত কামনারই সাগর-সঙ্গম। যে ভাগাবান বা-ভিনর সেই প্রয়ার্থ কামনাটি – অর্থাৎ ঈশার-স্চা -- স্থার-রূপে চরিতার্থ খ্ট্রাছে, তাঁ-হাকে ভার কোন কামনার জনা ভাবিতে हा ना ; किन ना मध्छ निषेत **कल श्यमन** সাগর সম্বাহ্ন অন্তভূতি, সেই**রূপ আমাদের** ম্ম ও কামন। মেই এক মহ**্-কামনার অস্ত-**ভূতি; এই জন্য আখাদের **ঈখর-স্পৃহা চরি-** ১ তাৰ্থ হইলে সকল কামনাই আপনা আপনি ^{বি} প্রশান্তি লাভ করে। কিন্তু **বাঁহা**রা **ঈশরকে** ছাড়িয়া কান্য বন্দ্রর পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধাবিত হ'ন, তাঁহাদের কামনা কোন-ক্রমেই লাভি-লাভ করিতে পারে না; তাঁচাদের বিক্রিপ্তা মন এক কামনা হইতে অনা কামনায়, খনা কামনা চইতে অনাভর কামনায়, আশার ঘুরিয়া ফিরিয়া সেই প্রথম কামনায় ক্রমা-গৃত চক্ৰিত হইতে থাকে,—কোন কামনাই প্রক্লত শান্তি-লাভে কৃতকার্যা হয় না; ভাই ্ৰাক্ষধৰ্ম বুলেন

"ন জাতু বাষঃ কামানাং উপভোগেন পায়। জি: । ছবিৰা ক্ষৰত্বেৰি ভূব এলাভিবৰ্ততে।"

নাৰা বস্ত সকলের উপভোগ বান্ধা করে।
নার করনো নিযুতি হয় না— শুড়াত বুজপ্রাপ্ত বহিন ন্যায় খারো রুখি পাইজে
বাকে। বিভ পথ্যাজার জন্য আছার বে,
পোলাস, এ অভাব টি আমারেশ্য সঞ্জার জ্বা
ভাবেরই বল অভাব—এজনা ও বালাবিট্যা
ব্যান্ধায়র কর্মান্ধারণক প্রান্ধি

ক্তিকে চরিতা**র্থ** করিতে পারি এমন আর কোন অভাবকৈই নছে; আর. এ অভাবটির য়তই পূর্ব হয় ততই আর আব অভাবের বৈধ চরিতার্থতার পথ সহজে উন্মুক্ত হইয়া খায়। কোন বিদেশীয় ভগবদ্যক্ত মহাত্মা বলিয়াছেন যে ্সর্কাত্রে ঈশবের অমৃত নি-কেতন অন্বেষণ কর--আর যাং। কিছু তো-মার আবশ্যক সমস্তই যথাকালে জোমাতে আসিয়া বর্তিবে। ইছার অর্থ এ নয় যে, কলকোর জন্য অদ্য আমাদিগকে ভাবিতে হইবে না—এ নছে খে, আমর৷ হস্তপদ ওটা-हैशा विभिन्न थाकिएन भागारमन मथल क-র্কুল্য কাষ্য আগনা-আপনি মুনিস্পন্ন হট্যা माहेर्त-अभार १४, मध्यात छ। जिल्ला जरन বিয়। ঈশবাদেষণ গরিতে হইবে। আমরা मथन मरभात-यञ्जनोग्न অश्वित इहे. उर्धन भटन হয় বটে যে, অরশ্যের নিড়ত প্রদেশে আ-মরা শাস্তি পাইতে পানি ; কিন্ধ আনংদের নংসার-যক্ত্রণার মূল কি-তাহা খদি আহর। একবার ভাবিয়া দেখি, তবে দেখিতে পাই (य, श्वामना भेचत हहेराठ 'यात्रला हहेना गध-मात-कार्ट्स 🗠 इंड 🏻 इंडे विलश, जामार्फत সহজ কার্যাও কঠিন হইয়া উঠে, ভাল বস্তুও বিষাক্ত হইয়া উঠে, জীবন যন্ত্ৰণময় হুইয়া ঈঠে। যেখানে কোন যন্ত্রণারই সভাবনা **ছिल ना—** विष्यु की का भारत । হইতেও বস্ত্রণা টানিয়া আনিয়া ছদয়াভা-खदा स्नाश्त्वतं जालात भून कतिएक थारक। ध व्यवस्थात्र वागता तत्नहे गहि, व्यात, शृटहरे পাকি,—কোথাও আমাদের শান্তি নাই। कि बाट्य यनि व्यामन जैनन्नटक क्रिन्ट्र व्या-स्तान कति, छाहा हरेतन खाँशांत বারিতে আনাদের মন এরলৈ শুশান্ত উদ্ধল প্র অলিখ হয় যে, সংগার-যন্ত্রণার তথ্ন আর विय शांदक ना ः जनक कामादमन मद्भन काम कितिया यात : कर्करवाक लग बाह्य श्रद्ध

আমাদের নিকট অন্ধকারাজ্য় ও জটিন ব-লিখা প্রতীয়মান হইতেছিল—তখন তাহা তিমির-মুক্ত, সরল এবং পরিকার দেখিতে পাওয়া যায়; ভখন সে পথে চলা যন্ত্ৰদ দায়ক হওয়া দূরে থাকুক্—ভাহা ভৃত্তিং আকর্হইয়া উঠে। পূর্বের বেরপ মনের ভাব ছিল তাহা শান্তির মধ্য হইতেও গলেগ: আকর্ষণ করিয়া আনিত, এখন গেরপে মনের ভাব—তাহা যন্ত্ৰণাৰ মধ্য হইতেও শান্ত আকর্ষণ করিয়া আনিয়া স্কান্যে অনতেও ভাণার প্র করিতে থাকে। আমাদের কান্তাতে খদি প্রাণ-সরুপ পর্যাস্থার বিন্দ্-মান অমৃত্রদ নিপতিত হয়, তবে আমাদেব স্পর্বেন্দিয় হটকে তাহার প্রভাগ বিনিগত **হর্ধ্যা বানুর দোয় নষ্ট করে—**সম্ভারি**ন্তি**র হইতে তাহার এভা বিনিগত হইচা আ লোকের দোষ নত্তী করে, আমাদের চাতুলিকে পুণোর জ্বোতি উদাসিত হয়। সমস্ত প্রকৃতির **দার মন্থন** করিয়া যে অমৃত পাওয়া যায়—পৃথিবী ইইতে দৌরভায়ত, নার হইতে যসামূত, অগ্নি হইতে তেজেহিয়ুস, বায়ু হইতে স্পাৰ্শায়ত, আকাশ হইতে শকা- . মৃত, এইরপে যেখান হইতে যত বিছু জ-মৃত মন্থন করিয়া পাওয়া যায়, সমস্ত ২মৃত যদি একপাত্রে জড়ো করা যায়, ভবে ভাষা ঈশরের প্রৈমায়তের কণা মাত্র বলিয়াও গণ্য হয় না; অতএব বাঁহার আত্র। ঈশবের প্রেমায়তে পরিপূর্ব হয়, তিনি যে প্রকৃতিতে **নৃতন** প্রকৃতি বিতরণ করি**র**নে—ইহাতে আৰু আশ্চৰ্যা কি ? ইতিহাসে দেখিতে পাওয়া যায় যে, ঈশ্বরের তেনোক্ষত্ত একা এক ব্যক্তি কোথায় কোন্ এক কোৰ্বে আ-বিস্তৃতি হ'ন – আর, কতিপয় শতাদীর মধ্যে नम् পृथिवीत 🗐 कितिया राय। "रभरे (स्व-च्युक्तीय अस्ठ-तरमक खना अयुद् আননা স্বান্ধবৈ স্নাগত ইইয়াছি—তাহার

যৎকিঞ্চিং উপার্জন না করিয়া আমরা বেন
এখান হইতে না উঠি। তিনি আমাদের
আত্মার অভ্যন্তরেই বর্তমান আছেন—আমাদিগকে দূরে ঘাইতে হইবে না। প্রাণ
আমাদের কত না যত্ত্বের সামজী—তবে,
যিনি সাক্ষাৎ প্রাণ-স্বরূপ, তাহাকে কেনই
বা যত্ত্বপূর্বক হুদ্যাভ্যন্তরে সঞ্চিত না করিবাং তাহাকে আমরা আত্মার সভান্তরে
উপার্জন করিতে পারিলে, বর্তমান মুহুর্ভেই
অনন্ত জীবন উপার্জন করি—তিনিই অয়ত
জীবনের একমাত্র উৎস। অত্রব ভাঁহাকে
আইস আমরা হৃদ্যের সহিত আ্যার অন্তরতম নিক্তেনে আহ্বান করি।

হে পরিষাত্মন্—আনানের ত্যিত আত্মার জীবন বারি। তুমি আনাদের সমস্ত
হলর পূর্ব করিয়া আনাদের আত্মাতে আসীন হও। আনাদের হলরের অন্তরতম
কামনা তোমারই পদ-তলে বিলীন হইতেতে, তোমার অন্তর বারির জন্য আনাদের
প্রাণ হ, হা করিয়া জন্দন করিতেছে;—
নাতা যেমন শিশুকে অন পান দিয়া শীত্রক
করে, বিদ্ধু যেমন বন্ধুকে মনুর সান্ত্রনা বাক্রে
শীতল করে—সেইরপ তুমি তোনার অন্তর
প্রেমবারি বর্ষণ করিয়া আমাদের তথ্য হলযাকে শীতল কর—তাহা হইলেই আমর।
ইহ-কাল পরকাল—অন্ত জীবনির মত কৃতকৃত্যেও হট।

উ একমেবাদিতীয়ং।

শ্রেষ্টর নিয়ম।

নানা নেশের নানা প্রকার আচার-বাব-বিষ পর্যালোচনা করিয়া দেখিলে কহসা আন হইতে পারে কে, বর্ম-নিয়নের কিছুই হিরতা নাই---শ্ম কেবল একটা কথান কথা। কিছু সেই-সক্ষ বিভিন্ন আচার-বাবহারের ब्रार्थ। ब्रिब-विटल छन। देशी देन बिटन छ। हात অবিকল বিপরীত দেখিতে পাওয়া, যাইবে ; দেখিতে পাওয়া বাইবে যে, সর্বত্রই মযু-रिशात कान्यः कत्रदर्भ भटन्यत निसम नानाधिक भार রিনাণে কার্যা করিয়া আলিতেছে। আর্দ্রিকা-দেশের অজুলিয়ারা (বিশ্বন্ত) ব্যাধ-রতি ভিন আর কিছুই জানে না; বাহা উপস্থিত পায় তাহাই ভক্ষণ করে; কলা কি থাইবে অদ্য তাহা ভাবে না; খাদা সন্মুখে পাইলে খামিতে জানে না ; উপবাস করিতেছে জো. উপবাসই করিতেছে,—কিন্তু দৈৰ-যোগে যদি একটা বড়-রকমের শিকার সংগ্রহ 🚁 : রিতে পারিল, তবে তাহার সমস্তটা যতক্ষণ नः छिम्दल करत, उठका छ। हारक हार् না: অদ্যকার পুঁজি অদ্যই পার করিয়া त्मक्ष, दलाकात खना कि**हूई अविनिर्ध नाहथ** ना । देवादम्ब भट्या यपि क्लान अभावादम् ব্যক্তি একটা শা-মোরোগের বারেট**্রিমা** অংশ ধ্বংশ করিয়া চারি আনা **অংশ ক্রিয়**ে কার জন্য সঞ্চিত করিয়া রাখে, ভবে দে তাহার অনামান্য কার্য্য কত-না বৈহা সাহি ফ্তা ও মনঃসংমধ্যে পরিচয় প্রদান করে। এইরূপ কার্যাই এখানকার এক মাত্রা कार्या। "এ धर्मा कार्या-मात किहूर ना কল্যকার প্রতি লক্ষ্য করিয়া অদাকার লোক के इंडिटक नगन कहा; अक्रम कार्राक्र मणा चार्थत अभिक थात किहूरे नटर । यार्थभिक এখানে নিভাৰত চলিত অৰ্থে ব্যৱস্থাত হৈছ टिक्ट - अपि दर्गन मर्काण गटन थारक । शनि कान था'व-जन शत'व, रेशारे याहात कीरतन अक्याज जिल्ला जानादन लादन शार्थनतं वद्भ भाव (क्वन कानवाद के विक কুনলই প্রান্ত্য বাবিশক্ষের বালা। বেঁশ gite with Boile givens fails? नोष्ठ, त्त्रश्चाटम भाष्ट्रीतम कुलन अवद् नाम

প্রভেদ। কেই-প্রেমাদি স্থতির চরিতার্থতার উপরেই সান্সিক কুশন নির্ভয় করে; কিন্তু স্লেহ-প্রেমাদির লক্ষ্যের ভিতর শুধু কেবল আপনার হিত নহৈ—অনোরও হিত-অন্ত-ভূত রহিয়াছে,—স্বতরাং এ-সকল হতির পরিচালন। সার্ধকে ছাড়াইয়া উঠে; প্রত্যুত, (एथारन एक रकतन वाशनात भातीतिक সুখ-সচ্ছন্দতা মমুখেরে একমাত্র কাম্য বস্তু, সৈখানে অনোর হিতের প্রতি লখা সনা-ধানের পথ এখনো উন্মুক্ত হয় নাই; স্কৃত-तः (महेशात्महे हार्र्यत - याउँ **शा**र्यत— निक मृद्धि पर्नक-मिश्राटन (प्रशा (प्रशा এই সংগোদিই কায়িক কুশল-টি নির্বিছে दक्षः कतिएक इंडेरल लाखापि श्रवि-नक-লকে কিয়ৎ গরিষাণে দমন করা আবশাক,--ইহারই নান সার্থ ধারা প্রস্তৃতিকে নিয়মিত করা; বিষয় তো এই—কিন্তু ইহাই এখান-কার পক্ষে এমনি কঠিন কার্যা গে, অতি অল্প লোকেই ভাহ। পারে;—তে বাজি দুই निरमत थामा मसूर्य शहिरम अक निरमहें ভাহা উদরস্থ না করে, সে বাজি তথা নকরে **অ**সাধারণ ব্যক্তি।

এই সকল জঙ্গুলিয়াদিগের অনতিদুরে
গুল্ম কান্ট্রীদের বসতি-খান। গুল্ম কান্ট্রীদের বসতি-খান। গুল্ম কান্ট্রীত
হওয়াতে ইহার। সার্থের আত্মান বিশেষরূপে অবগত হইয়াছে। মুগ্রয়া-লর পশুর
মাংস তো আছেই—তভিন্ন সো-তৃত্ম ও
ভূটা ইহাদের প্রধান উপ্রভাবিকা। হতীর
যাংস — বিশেষতঃ হতীর পদ-পল্লব—ইহাদের নিকট সর্বাপেক্ষা উপাদের আদ্য সামন্ত্রা। ইহাদের এক এক প্রত্তের অনেকগুলি রাই। আর, গুহুপ্তির নিজের একটি
মুক্তর কুটার তো আছেই, তভিন্ন, য়াহার
যতঞ্জি রাী—তাহার আল্য তেওজি কুটার
বিশ্ব বন্ধী। আর, এক-একটি কুটার এক-

এফট স্ত্রীর বাদস্থান। দেই কুটার গুলি চক্রা-कारतक्षमिदर्ग उ रहेशा यात्रथानकात छेठा-নৈর চারি দিক্বেপ্টন করিয়া ভাবস্থিতি করে, ও সেই উঠানে গৃহের গরুরা মুক্ত ভাবে বিচরণ করে। এক কথায় বলিতে হইলে-এক একটি আলয় এই একটি অলায়ত গোলাল ঘর, ও তাহার চারি দিনের কুটার-মণ্ডলী সেই গোয়াল ঘরের দেউন-পরি। ইহাদের কৃষি-কার্য্য এরপ অপকৃষ্ট সে. ইহারা হল-ক্ষণ জ লে না। ইহাদেন ঠারা ভদ্ম কেবল সদশাদি করিয়াই পান পাস না; ক্ষেত্তের কার্য্য, কৃটার-নির্ম্মাণ, মোট বহা, প্রভৃতি যত কিছু কটকর ব্যাপার— সমস্তই স্ত্রার ক্ষপে চাণ্ট্যা, তামী, বাহিবে পশু-হতা: ও গুহে স্ত্রী-হত্যার কাছাকাছি, এই তুয়ের মধ্যে এ-পাশ ও প্লাশ করিয়া দিনপাত করে। প্রাকে দিয়া মুট্র-মজুরের কার্য্য করাইয়া লইগার জনাই সাণী ভাছাকে ঘরে রাখে ও প্রতিপালন করে—নহিলে ভাষাকে ঘর হইতে বাহির করিং। দিবার নোৰ আগত ছিল না। সামী আপনার ষার্থের উদ্দেশে—গত অল্প সারে পারে— स्रोति श्राप्त नाहारेया दाशिए एहि। करके; ও স্বাদীর উচ্চিপ্ত।বলেষ যৎ-কল্প অধ্যের এক-गाज ७तमाप्र, खी. श्रीतम अवर प्रकृत निक-স্বলেকার-ক্লেশ বর্তিয়া থাকে। এক ভো আন-পেটা অন, ভাছার উপর, কঠোর পার-শ্রম, তাহার উপর সন্তান এতিপালন, তাহার উপর দপত্রী-কলহ, তাহাব বিগব স্বামীর উৎপীতৃন,—ক্ষীরা যে নধ্য-গোৰন হইতে-না-হইতেই বাৰ্দ্ধকে প্ৰাৰ্ণৰ করিয়া गानव-सीना मध्दर्ग करते – हेहारल ভाहारम्ब কোন অপরাধ নাই; আর, বিবেচনা করিয়া দৈখিলে—ভাছাই ভাছাদের পরম সৌভাগা। এই নকল গৃহস্থ কাকীরা অসুলিয়াদিগের অপেকা অনেক পরিমাবে সভা। পূর্ব কবিত

জঙ্লিয়াদের ধর্ম-নিয়ম বছা জোর এই পর্যান্ত লপ্তবে যে, প্রবৃত্তি-বিশেষতে স্বার্থ দারা নিয়-মিত করিতে হইবে। গৃহস্থ কান্দ্রীরা অপে-ক্ষাকৃত অধিক প্রবিদাশে স্থার্থের নিয়ন্টি যানিয়া চলে; তাষ্ট্রতীত, অখানকার নৃতন আর-একটি ধর্ম-নিরম এই ইওয়া উচিত যে, সার্থকে গাহন্ধারা ন্রামত করিতে **रहे**त्त,—छेहिं करन नग्न −हेहें टिंड-कांत्रिंड कारन जाहा है हहेश माजाब । किस गाई-স্থোর এখানে নিতামুই হীনাবসা; - কন্যা-विक्रयरे वृथानकात्र कना भूभागान ; श्री এখানে সামীর সহধর্মিণী হ#য়া দূরে থাকুক্ — मानो जारलका अवग। 'পুত तड़ हहेरल পাছে সে মাতাকে ঘরের দাদী অপেকা অধিক কিছু মনে করে, এজনা এখানকার শাস্ত্র এই যে, বয়ঃপ্রাপ্ত প্রের পক্ষে মাভার বাধা হওয়া কা-পুরুষের লকণ ; কিছা পুরের গোঁপ দাড়ি উঠিতে না উঠিতেই সে যদি **মাতাৰ্কে** প্ৰহাৰ কৰিতে **্শেখে, ভবে** কানে ति स्व अक्कन वीद-श्रूक्स इट्टेंद्र-- अ दिवस्य আর কাহারো অণু-মাত্র সংশয় গাকে না। दक्षान न विन्या अक्टो एंग, नामकी, खराइ যাহাকে আর্মরা সংকুলেডিত ভক্তবেষ্টার বলি, ভাহা এখানকার জিণীমান স্থান পায়েতে भारत ना । शेशादनत भरशा दक्ष यान : सेद्धि এবং ক্লেহ-নমভার বশবভা ইইয়া গাইবিছার निध्य किश्रद প्रतिगाद गानिधा हत्त, आईदक कियर-अविभारं शाह्या-बावा निम्बि वेद्र —স্ত্রাকে মর্মান্তিক প্রহার না করে ও নি**দান্ত** পর্দতের মত ন। খাটায়, তবে তাহাই আই।য় পর্কে যথেই ধর্ম-কার্য্য।

অতপরঃ আরব নেশের মরভূমির মধে।

একবার দৃষ্টি নিক্ষেপ করা বা'ক। চারি

কিকে বিশাল মরভূমি দুধু করিতেছে—
ভাহার মধ্যে এখানে ভিন চারি ঘর মূহম্

(গুরুহ ঠিক নগ্নতাবুহ) ও ভাহার মধ্

দূরে এরাণ আর কভক-গুলি ঘরু, বাস করি তেছে। धर्क दात कल, कृरभत बले, छ हि त पूक्ष, त्यत गाध्म, क्लाहिर क्थाना वा **छित्हे** व गाःग ইहारनत जीवरनत अक्यां मधन । কা**র্জে**ই, লোকাচার ব**লিয়া একটা বে, সামগ্রী,** ভ্যাৎ সমা**জের নানা অঙ্গ-প্রভার্কের সংঘর্ষে** যেরূপ আভার ব্যবহার প্রসূত হয়—সেরূপ কোন-কিছু, এখানে স্থান পাইতে পারে নাঃ তথাপি কুল-পরম্পার-জনে যেরপ আচার-ব্যবহার চলিয়া আসিতেছে, তাহা এ**খানে দ**-करलतरे मछक्रनीयः; क्लाहातरे अभारन मर्क-প্রধান নিয়ামত। কৌলীনোর মর্য্যাদা ইছারা কিয়ৎপরিমাণে অবগত আছে; ইছার সামানা একটি উলাহরণ এই যে, ইহাদের অনেকের নামের দঙ্গে "অম্বার্কী দন্তান" এই ভাবের একটি উপাধি **গ্রাথ**ত খাকে, - মেমন বেন্-জামিন অর্থাৎ জামিন বংশের সন্তান। এই সকল অসভা আরবেরা ধনিচ দুস্থার্ভি ভিন্ন আর কিছুই জানে না, তথাপি, ওদ্ধ কেবল কুলাগ**রের নশব**ভাঁ হইয়া অক্যাগ**ড অভিথির** स्त्रामि **इत्रां क**ेल थारक;— इंटाई **हे**हारम्ब श**्क रायके** धर्मा-कार्य। এরূপ বাসভা লোকেরা যদি কুলাচারকেই সর্কোচ্চ ধর্মা-নিয়**ন মনে** করে – ভবে ভাহাদের সে কথা নিতাপ্ত অবজ্ঞার সামগ্রী নহে; এখানকার পকে তাহা বাস্তবিকই সর্বোচ্চধর্ম-নিয়ম-ভাষা ৰাজ্ডবিকই ঈগুরের আদেশ; কারণ, এখানে তাহা অপেকা উচ্চ আদিৰ্গ আর किछू हे **रहेए** शादत ना। देशारनत श्री-পুত্রেরা ক্ষেত্ব এবং যত্ত্বের সামগ্রী – গৃহপঞ্জিরা ভক্তির পার । স্থার্থ, এখানে, পার্হছের भवीन, नारीविक वार मान्निक टाइनेड व्यति ; यानिक धार्यक्षार (केर वसका) World Moles Allens Hebit H कतिरत-७५ दक्तक प्राचनाक नक्त-किक मश्र श्रद्ध स्मरमाति वरेट

ইহারা সাধা-মতে অতিথি-দেবার ক্রটি করে ना। कर्द्धार्थनियतम् बार्ड् "दिशानद्रः श्रवि-শত্যতিথিত্র ক্মিণো গুহান্" অগ্নির ন্যায় অতিথি গৃহে প্রবেশ করেন, অর্থাৎ উাঁহাকে হদি না শান্ত করা যাস তবে ভাঁহার নিশাসে शृह प्रश्न हरेता याहेता। इहेरल इस कि,-আরব দেশীয় অসভাদিগের আতিণা কিছু অদুত প্ৰকাৰ;—অতিথি যতক্ষণ গৃহে গাকে, ততক্ষণ দে মস্তকের মণি; কিন্তু দেই অতিথি যথন গৃহাভিমুপে আদিতেছে—গৃহে প্রামেশ করিতে কেবল বালি—তখন ঐ আবৰ তন্ধ-বেরা ভাহার সর্বাধ অগহরণ করিতে কিছু মাত্র লজ্জিত বা ক্ঠিত হয় না; তবে, অভি-থির ভাষ-লাব্ব কার্যা স্থচারুরাপে সম্পন্ন করিয়া -ভাহার পর-ভাহাকে গৃহে আনিয়া ভাষার সংখাতিত সংকার করেও ভাষাকে গন্তব্য পথে নিবাপদে অগ্রানর করিয়া দেয় ; এই যে করে—ইহাই এখানকাব পক্ষে খথেপ্ত ধর্ম রাষা। পরের যে তুইটি নিয়মের কণা বলা হইয়াছে, কি না – প্রস্তিকে স্থাণ দারা ও স্বাৰ্থকে গাৰ্হস্কা দ্বারা নিয়মিত করিতে হইবে, এ দুইটি নিয়ম এখানে অপেকা কৃত অধিক পরিমাণে প্রচলিত; তদ্যভীত, এথানে नरवारक्षिष्ठ जात-अंकिंग धर्मा-नियम अहे दय. কোলীনা ৰাবা (অগাং কুলোচিত ভদতা-षात्रा) शार्श्वारक निग्नमिछ कतिए इहेरत। গাৰ্ছা হইতে কৌলীনা, অথবা যাহা একই কণা—ভক্তা, কিরুণে অল্লে অল্লে উমেবিত হয়, এই স্থানে ভাহার ভাতি একবার দৃষ্টি নিকেপ করা আবশাক।

গৃহপতির বর্থন সন্তান দন্ততি বিশুভ হট্মা এক গৃহহর অবিবাসীর। নানা গৃহহ ছট্কিয়া পড়ে, তথন গৃহপতি সেই সকল গৃহহর মধাছলে বাস করিয়া কুলপতি হট্মা দাঁড়া'ন। তিনি সকলকেই আপনার সন্তান-সন্ততি জানিয়া সকলেরই সকল কামনা করেন; কাজেই সকলে তাঁহাকে ভক্তি-শ্রদ্ধা করে ও ভাঁহার আদেশ পালন করে। তিনি যদি অবিবেচনা-পূৰ্বকৈ যাহাকে তা-হাকে যাহা তাহা আদেশ কৰেন ভবে উন্-হার শাসন অচিত্রে উজ্জ্ঞল হইয়া বার; তাহা ন। করিয়া, যে-সকল মঞ্জ-নিভ্রম পুরু-যাবুক্তমে চলিয়া আদিতেছে, ভাহাই তিনি षापर्य-अपवीरा मां क्वांटरा ध्याम शांच। তिনि छेপদেশ धनः मुठीख द्वानः এই অভি-প্রায়-টি বাক্ত কারেন গে, "আমিই এখানে সর্ক্রে সর্কা---আমার উপরে আর বেছই নাই—মামি শহা ইছে৷ করি তাহাই করিতে পারি, তবুও দেখ---পূর্ব-পুরুস্দিতের মঙ্গল নিগ্ৰের অধানে মণ্ডক অবনত করিয়া আমি আপনাকে কতার্থ মনে করিতেছি; অভ এব নেরাপ বর। ভোমাদের আবে। কত ন। ক-র্ভবা।" **কুলে**র বোন অবারা সন্তান হদি কোন-প্রকার কুত্তর্ব উপাপন করে, তবে কুলপতি পূর্ব্বপ্রয়দিলের নজির দেখাইয়া ভাষার মুখ বন্ধ করিবার চেট্ট। করেন:-তিনি হয় তো বলেন "পূর্স্বপুরুষেরা অমুক অমুক নিয়মে চলিতেম বলিয়া তাঁহাবা তিন শত বৎসর জীবিত থাকিতেন; তাঁহাদের বাহুংল এরপ ছিল যে, সমগ্রা একটা তাল-शोच छोशाडा चरनीलाकरम छेर शावेन कतिया ফেলিতেন; তোষরাও সেইরূপ নিয়মে চ-লিলে ভোমরাও ভাহাদের মত আয়ুস্মান্ वनवान् ७ वीर्वावान् श्रहेता।" अक्रश वनवर এবং অকাট্য প্রয়াণের উপর কাহারো ভার কোন কথা চলিতে পারে না। এই স্থান-**हिट्टे हैं डिहाम-প्রाণाদির** नीक-वश्रास्त প্রথম **সূত্রপাত হয়। এইর**প করিয়া ক্রমে ययन त्रमाण्ड बाणंद-वावशंद हो जि-नी जि कूनत्करक वस्र्न हश्च, उथन ममछ शुरहत गार्ट्या (मर्टे मकन तीष्ठि नीष्ठि बाता निय-নিত হয় ৷ প্রসঙ্গাধীন, এই একটি কথার

উল্লেখি এখানে আবশ্যক মনে হইতেছে

যে, ষঠ কিছু বলা হইল সমস্তই— যুদ্ধ বিএহাদি নাটা খোঁচা বাদ দিয়া যত সংক্ষেপে
পারা যায়—বলা হইল। সমস্ত বিবরণ যদি
আদ্যোপাত খুলিয়া বলিতে হয়,তবে ভাহার
এ স্থানও নহে—এ সময়ও নহে; ভাহা
করিতে গোলে এক-ভো লুখি বাড়িয়া যায়,
ভাগতে আবার,ভাহার লালা দিকে নানা
ছিল্ল পাইয়া বল্লভার অপ্রামঙ্গিক কথার বন্যা
আমিয়া, প্রকৃত প্রভাবতিকে স্থাত হাত
জলের নীচে নিক্ষেপ করিয়া দেয়। এখানকার বীজ মন্ত এই যে, 'যৎস্কাং ভলিতং"
যাহা অল্ল ভাহাই মিই।

এক গৃহ হইতে যেমন নানা\গৃহ এসুত हरेश मकरन अक्टे कूल-मूख वाषण हा, সেইরূপ এক কুল হইতে নানা চুল প্রসূত इरेश मकरल এकर मयाय भूद्य वाष्ट्र रहा। এই সময়ে কুলগতিঃ সিংহাদনে লোকপতি আবিভূতি হ'ন; কুলপতিদিগের মধ্যে যিনি সর্বাপেকা ওজ্বী, তিনি দেশের রাজা হ-ইয় দাঁড়া'ন। এখন রাজ্সভাই দেশের মথিত সারাংশ এবং অনুকর্ণীয় আ मर्ग। द्रा धाम हाक्यांनीत यछ निसंहरछी, সে প্রাম সভাতা-সোপানে তত অপ্রবন্তী। ক্রমে রাজ-গভার সভ্যতা সমস্ত দৌশন্য় ন্যুনাধিক পরিব্যাপ্ত হইয়া—তাগ্রাই দেবিশার সভাত। হইয়া দাঁড়ায়। কিন্তু দূর দূর-শ্বিত পল্লীপ্রামের প্রফারা সে মভাতার বড এবটা ধার ধারে না; তাহারা পূর্বের্ন যেমন স্বাস্থ কুলপতির অধীনেু/অবস্থিতি করিত, এখনো व्यत्नकरें। दम्हें कार्दाहें ब्युविश्विक करता । या প্রদেশ রাজ্মনীর যত নিকটবর্ত্তী, দেই লা দেশের কুর্লাচার ওতিই ক্লোকার্জার ছারা নিয়-बिन्न इंग्री शूर्ट्य रंग जिन्हीं धर्म निशासित क्षा तना है आहर, कि ना शहितिक वार्ष बाता, यार्थक नार्रश बाता, गार्रशादक की-

লীনা ছারা, নিয়মত করিতে হইরে, জু বিনটি নিয়ম তো আছেই—তহাতীত— এখানে নবোমেছিত আর-একটি ধর্মা নিয়ম এই যে, কোলীনতক সভাতা-ছারা নিয়মিত করিতে হইবে।

শ্বভাতার নৃতন উজেকের সময়, রাজ-ধানীর নিকটবর্তী ক্রপতিদিপের প্রাধানা রাজারী দোর্দ্ধগুড়াপের অভ্যন্তরে কৰ-লিত হটিয়া যায়; 'কল্প দূরবভী কুলগতি-দিগের ভিত্তাপ মুনোনিক পরিমাণে অব্যা-হত থাকে। এই-সকল অপেকায়ত স্থানীন লুনপতির। দলক্ষ হইয়া গোকপতির প্র-ভাগ প্রভিরোধ করিবার চেম্বা করে। এরপ অবস্থায় † একদিনো লোকপতি, **রাজ**া এবং चार-अरु भित्र क्षिणि-तृष्ट छेट्टाई छन-সাধারণকে আগনার আপনার দলে টানিতে মাবশেষ ভাষাস পানি; স্কুতরাং লোকরঞ্জন पूरे मटलबरे ७.धान**७ग** कार्या **रहेश माजाय ।** हेगात कन अहे ६३ (य, **बन-मा**धानतन्त **छेनत** াজা এবং কুলপতি-ব্যুহ উভয়েরই অভ্যা-তালের পর্য ক্রমশই সংকীর্ণ হইর। আসিতে থাকে; অবশেষে সে পথ এরপ অবক্ল रहेका यात्र (य, ताका धर्मात अनुदर्शी रहेता রাজ্য শাসন না করিলে তাহার রাজত্ব কিছু-তেই রক্ষা পাইতে পারে না। কালে আমাদের দেশের ক্ষতিয়-প্রভাপ ্রা ক্ষণের ব্রহাতেজ ঘারা সময়ে সময়ে পরি ধ্ব্যাপত হ**ই**ত; এজন্য এরপ **অনু**যান নি-্র ক্রিছে অসমত নহে যে, অতীব পূর্ব্বকালে লোকগতির দল জবে জবে ক্ষজিয় জাতিতে ७ क्लेगांज्य पन करम करम खामन चा-তিতে পরিণত হইয়াছিল। ু কুলপতিরা হৈ, লোকপতির বাছত বাছবলে আটিয়া উ-िटि शाबिद्वन काश्वात पाउ वहारे म-ভাবনা; কাজেই, গড়ান্তর-বিহীন কুলপুত্র তিবা বোক্রঞ্জন কার্যো সম্প্রক স্থান্তার

ছিইলেন ও প্রতাপোমত রাজা গে দিকে ् छ जी बदनादगांशी रहेत्वन ना । छाटमांशा িট্টপনিষ্টে আছে যে, বাকাই বশিষ্ঠ (অর্থাৎ ্লাক্কে বশ করিতে পারে—তাই বশিষ্ঠ); ্রকাকে খিনি বশিষ্ঠ জানেন ভিনি জ্ঞাতি-বর্গের মধ্যে বশিষ্ঠ হ'ন (মর্গাৎ ভাঁচাদিগকে বশ করেন)। ইহাতে সহজেই প্রতীয়মান হইতে পারে যে, পুরাকালে বশিষ্ঠ নামক বিশেষ একজন মহর্ষি থাক্ন বা না থাকুন--কিন্তু এটা ছিব যে, ঐ নামটি প্রধান প্রধান कुनश्जिम्लाद छिलाति जिल। अहे भगत्य, রাজা বাহুবল ছারা লোকের বল-বীর্যা বশ ফরিলেন, কুলপতিরা সদাব খালা লোকেব कप्रायम करिटाम। छन्-ग्र'दावरवट सप्त्र रिष्टू कम नामशी नरक,- अंशात वटन द्वी হইয়া কুলপতির শাণাক লে মনলে সমতে 'লোকপতির শ্রাবের উপরে জ্ঞানাভ করিনে ইচা কিছুই আশ্চান নহে ৷ গুলপতি-লানতেব সহিত লোকপতি-বিখামত্ত্রের সংগ্রামের অ-ভান্তরে কত-বে ঐতিহানিক রহ নাটি-তাপা রহিয়াছে, তাহা কে বলিতে পারে? বিধাদিত্র नामिष्टे हेन्द्रिकाल वाक कित्रकाह (य, বিশাসিত কুলপতিদিগের ন্যায় বৈলী-ছারা বিশের লোককে অর্থাই জিন্দানারণকে বশ করিতে সচেও হইয়াভিলেন-কুলপতি দিগের বিষেয় অজে কুলপতিদিলের সহিত সং-আমে এরত ইইয়াছিলেন। এতিহানিক গ্রহা-পাহররে আর অধিক 🖈 বেশ ন। করিয়। এখানে আনার ঘাছা প্রাকৃত বক্তবা ভাহাই বিক্, তাহা এই যে, একদিকে লোকণতির मन, व्यक्तिक कूनगठित मन, এই पूरे मरलब वर्षाचर्षि इहेंद्र विश्वक वर्ष अका-मयात्व अमूछ रहेश मेख क्लामत्मत नाथ সুর্ব্বোপন্নি মন্তক উত্তৈলিন করিয়া উঠে। এই শুভ শুটনাটি যথন উপস্থিত হয়, তখন ৰিপ্তৰ পৰ্য রাজারও রাজা হুইয়া লাভায়।

পূর্কো রাজ-সভা-হইতে সভাত। উৎদাবিত হট্যা দেশ-ময় পরিব্যাপ্ত হট্যাচিল, এখন রাজা-প্রজার মধা হইতে বিশুদ্ধ বর্ণা উত্তা-দিত হইয়া সভাত'কে নিয়মিত ভবিতে এখন ধর্মাই প্রকৃত পক্ষে রাজা : রাজা ধর্ম্পের সর্ব্ধপ্রধান কর্মচারী - এই সারঃ এখনকার এই ধর্মারাজো রাজা খখন শিংহা-भाग छेलाविहे धेन, छथन धर्म छ। हात्र अभग्न-भिक्ताभरम छिव्यदिक्षे इस । शहर्य देखा লোকপতি হই : নোকাটার ও সভাতা দেশ-মগ্র বি টার্ব ক'রগ্নচিলেন-এখন তিনি কর্মা-বভার হুইয়া ধর্মোন্ত আমেশ এটার করিছে আরম্ভ করিলেন। নন্ত্রাজা এইরূপ একএন রাজ। ছিলেন ও মানব-পর্মাণান্ত মানব-সমা-(खत अविषे अधिजीत १४९ अदिनशत ने। बिं-স্তন্ত । তিনি কুলপতিদিগের অনিকান স্পত্তী-या। निक्नं कतिश। नित्नन, त्नाकशिव्यक्ष খাৰতার নিদেশ ক্রিয়া দিলেন: ভূসপতি-দিখের আর যোটবন্ধ হইবার হারশাকত। तर्धिन ना, खुळता? हे।इ'दनत दणाडे छ।।धुशा গেল; সকল শেণীর নোকেরই সঞ্জিধি-কার স্থানির্দিট দইন ; শান্তি-সুগ্র অভু,দিত **इ**हेन, ७ ४५५-ताका क्ष्रांकिष्ठिल ५३ल•।

নতকা পরিয়া আমরা কি ফল লাভ করিলাম তাহা একবার গাবনা করিয়া দেখা
যা ক্ ধর্ম-সোপানের প্রথম প্রক্তিতে
আমরা দেখিয়াছি যে, লাবনিকে আর্থনারা
নিয়মিত করিতে হইকে, ইহাই সেখানকার
একমাত্র ধর্ম-নিয়ম। এক প্রকার ক্রম কীটাণু আছে যাহার মম্স্ত শুরীরটাই উদর;—
একপ জীবের উদরকে তাহার শ্বারের
অঙ্গ বলিতে পারা যায় না - যেহেত্ তাহার
উদরই তাহার শ্রীর, ও তাহার শ্বারই
তাহার জার; এখানে সেইরপ স্থাপ্তি বর্মার্থ অঞ্চ বলিতে পারা যায় না, যেহেত্
ভার্থই এখানকার একমাত্র ধর্ম। দিন্তায়

পংক্তিতে ও-নিময়টি তে৷ আছেই (কিনা স্বার্থ দ্বারা প্রবৃত্তিকে নিয়মিত কারতে ইইবে, এই निरमित्र), उदां किं — এथान जात এकि ধর্মা-নিয়ম ্এই ছো, গার্হস্থ্য দারা স্বার্থকে নিয়মিত করিতে হইবে। পূর্ন পংক্তিতে ধর্ম কার্থ-পালে জড়িত হইয়াছিল; এখানে **নেই স্বতম পাশ হইতে** প্রত্যাহত হইয়া, ধর্মা, অপেকান্তত দূক্ষা-পাশে—গার্হা-পাৰে – আটক পড়িয়া বহিল। গাহস্থাই এখানে সাক্ষাৎ ধর্ম—স্বার্থ দর্মের অঙ্গ মাত্র। তৃতীয় পংক্তিতে ও-চুইটি ধর্ণ্যের নিয়ন তে৷ আছেই – কিনা প্রয়ভিকে থার্থ দার। ও স্বার্থকে গার্ছে। ছারা নিয়মিত ক-🏪 রিতে হইৰে; ভদাতীত, এখানে আর একটি ধর্ম-নিয়ম এই খে, কোলীন্য দারা—অংশং কুলোচিত ভটতো দারা—গার্হস্থাকে জিল मिक क्तिटल इट्टिंग अथाटन शार्क छा-लान হিটতে প্রত্যাক্ত হইয়া, ধর্ম্ম, ভদপেকা দুন্দতর পাৰে—কোলান্য-পার্শ—আটক পিড়িয়া রিছিল; এখানে কৌলীনা সাক্ষাৎ ধর্ম-ছালীয়, ও গাইস্থা এবং স্বার্থ দর্মের অঙ্গ-স্থানায়। চতুর্থ পংক্তিতে ও-তিনটি वर्षात निश्म का चार्छरे । क ना श्रहां हरक शार्थ-बाहा, आर्थटक भाइंडा बाहा, बाई बाहक কোদীন্য-দায়া নিয়ামত ক্রিতে ভদাতীত, এখানে আর-একটি ধর্মা-নিয়ম এই যে, কৌনীনকে সভ্যতাদারা, অর্থাৎ লোকারাধ্য আচার-বাবহার ছার। - এক কথায় লৌকিকতা/ছারা—নির্মিত করিতে হইবে। े अथारम , देकोनीना-भाग रहें एउ अल्डाइल হইয়া প্রস্তদ্পেক। আরো সুক্ষতর পালে— সভাষ্ঠা-পাশে—আটক পড়িয়া রহিল। এ-থানে সভ্যতাই সাক্ষাৎ ধর্ম-ছানীয়, ও কৌ-ब्रीना गार्टश्वा अर्थ आर्थ धरणार सम्बन्धानीय। ্বেখানে সভ্যতনি, উপরে—বা লোকাচারের উপরে—পার কোন নিরামক নাই, সেখানে

লোকাচার য়ে, সর্বাংশে নির্দেষি হইতে তাহা হইতেই পারে না ; এরূপ নির্পান্তঞ্জ লোকাচারের সভা রীতি নীতির সংস্থানেক-এমন কুরাতি জড়িত থাকে,যাহা বিশুদ্ধ ধর্মের বশবর্তী হইয়া ক্রমে ক্রমে পরিবভিত হইয়া যাওয়া প্রাথনীয়। এ পর্যন্ত যে-সকল ধর্মা নিয়মের কথা বলা হইল, ভাহাদের কাহারে এত দূর চকু ফুটে নাই যে, ভাল বস্তুকে মন্দ বস্তু হটতে বাছিয়া লইতে পারে; কিন্তু ধর্ম যগন সভাতা-ছইতেও উপরে উঠিয়া নিজেব বিশুদ্ধ স্ক্রপে দণ্ডায়মান হয়— আজু-বিষ্মৃত অফলত বাদের বেশ ভূগা পরিভবাগ করিয়া বখন সৈ নিজ মৃত্তি ধারণ কবে, তথন কি ভাগ ও কি মন্দ ভাহা দে স্পঞ্জীকরে লেখিতে পায়। প্রথম পংক্রির **স্থাথ-**ধর্ম্ব আপনার শারীত্রিক কুশলকে (সং**জ্বেশ শরী-**বকে) অবলম্বন করিয়া করিয়া থাকে ছিছিতীয় পংক্তির গাইন্তা ধর্মা স্ত্রী-পুরাণিকে এবং প্রধানতঃ গৃহপতিকে; তুতীয় পং**তির কৌ** দীনা-ধর্ম জ্ঞাতি বন্ধুকে এবং প্রধানকর্মী ্রুলপতিকে; চত্ও পথক্তির লোকিক ধ**র্মা** দেশকে এবং প্রধানতঃ দেশের অবলম্বন করিয়া বর্তিয়া থাকে ; কি**ন্ত পাঞ্চ**ম পংক্তির বিশুদ্ধ ধর্মা দেশেরও উপবে**র বন্ত**— ভাহার অকলম্বন কে? ধ্যন সমস্ত ক্রেশ এক্তিকে ও গালিলিও এক্চিকে - শালি লিওর **সেই** অবস্থাটি এক বা**র মনে ভারি**য়া (मथ ! टम व्यवसाय कय-वन दलाटकन क्राक-ক্লিত আড়প্ত কণ্ঠ নলী হইতে সভ্য ৰাজক উত্তোলন করিয়। বাহির হইতে পারে। गानिनि अपन बीत भ्रष्टीत घटक विल्हिन ति, "नूर्या किक त्रहिकाटेड- शृथियो **आहा**क प्रक्रिक प्रिट**ण्डल क्ष्म केंग्र**ाज अपनास्त्र काट्ठत देवरहे महरू केवन चुखराज्य वि एक नजार के हो है असमाब सम्माधन । **अहे** त न क्रान देशन बिहार नामा निकास रेटाईस आह



দেশুনিব প্রমার্থ। বিশুদ্ধ ধর্মের নিয়ম দেশুনিবৈশ্যে বা কাল-বিশেষে বা জাতি-বিশেষে বন্ধ থাকিবার নতে। এইরূপ বি-শুদ্ধ ধর্মা-নিয়ম যোগ-শান্তে "দার্কভৌম মহাব্রত" বলিয়া উক্ত হইয়াছে; ঘথা,

্ৰিত তু স্থাতি-দেশ-কাল-সময়ানবজিলাঃ গাৰ্ক-ভৌমা মহাত্ৰতং?।

💉 .পঞ্ম পংক্তিতে পূর্বেক্টার চারিটি নিয়ম তো আছেই - কি ন। প্রেরভিকে স্বার্থ বারা, श्रार्थिक शाह्या बादा, शाह्यारक रकालीना षात्रा, कोलीनारक मज्ञाजा बाता, निर्धागक কবিতে হইবে; তথাতাত এখানকার আর একটি ধর্মা নিয়ম এই যে, সভতেতে প্রমার্থ দাবা নিয়মিত করিতে হইবে ; শুখবা যাহ। এक है कथा - लाका जातरक मार्स्तर ने भिक्त वि-শুদ্ধ ধর্মা দাবা নিয়মিত করিকে স্টবে। भक्रम भरक्तिएक भत्रमार्थहे धर्मा-सामीग्र, छ সভ্যতা কোলীনা গাহঁতা এবং স্বাথ এ সম-ख**हे** भट्यांत अञ्चन्यानीय । भत्रमार्थ जाति-**कृ** ७ वरेटन निम्न निम्न ममन्छ भरक्तित्रहें 🗐 ফিরিয়া হায়; তাহার নির্নিমেয় চক্ষেপ-ভিয়া, সভাতা হইতে কুরীতির সমস্ত দল-বল ঘর-ঘার উঠাইয়া লইয়া একে একে প্রস্থান করিতে থাকে; এখন সভাতা শুর্ম टक्का महाछ।-भारतहे काछ शारक ना, म-**्रंश**्वा थ्रथन समजा**जा र**हेश माँजाय ; স্থান্তাতার প্রভাবে কৌলীনা স্থগোভন ড-ক্ষা হইয়া দাঁড়ায় ও হুশোভন ভত্রতার এ-अर्द क्रार्ट्या अर्थ जार्थ जेजरारे नव-जन क्यान जब मूर्जि शावन करता

করাই পরাকার্চা শব্ম, তবে আর ধর্ম্মের ষ্কিত্ব কোথায় ? স্থিবত্ব যে, কোণায়, তাহা উপরি-উক্ত ধর্ম- দোপানের প্রতি একটু প্রণিধান করিলেই দেদীপামান হইয়া উ-धर्म त्माशाद्मत शां हि शः छन् পাঁচটি ধর্ম্ম-নিয়ন পাঁচ প্রকার নহে কিন্তু একই প্রকার। মূল নিয়ম একটি মার; গেটি এই যে, অন্তঃকরণের বিশেষ রুদ্ধিকে সাধারণ বৃত্তি দার। নিয়মিত করিতে ছইবে। ইহা অপেক্ষা স্কুস্পাই আৰু কি হুইতে পাৱে দে,লোভাদি প্রবৃত্তি অপেক্ষা আপনার শারী-রিক মঙ্গল-ইচ্ছ। সাধারণ প্রতি: জাপনার শারীবিক মঙ্গল-ইচ্ছা ত্রপেকা গুরুহর মঞ্জ ইতহা মাধাৰণ রুদ্রি; গুড়ের মঙ্কল ই।ত। (शका क्राव सम्मन-हैण्डा माग्रावर र কুলের মন্থল-ইচ্ছা অন্তেশকা দেশের: ইছো সানারণ রতি; দেশের মঙ্গা অপেক। মার্নডৌমিক বিশ্বদ্ধ মঙ্গল হয়। সাধারণ রুট্ডি; স্তরাং ন্**কল** পংড়িরই ধর্ম নির্মা এই দে, বিশেষ রক্তিকে সাধা ণ-রতি ছাব। নিয়গিত করিতে হইবে। স্ত্রোক্ত অন্তঃনরণের রুত্তি বিভাগের সৃহিত এথানকার এই বর্দ্ম-দোপানের পংক্তি বিভা-গের চমৎকার নিল রহিয়াছে। আমাদের দেশের প্রচলিত শাস্ত্রাতুসারে,-গ্রথমে প্রাণ, তাহার পর মার, ভাহার পর অহস্কার, তাহার পার বৃদ্ধি, তাহার পার আলা, উত্তরোত্তর क्षमान-भागवीरक जोक्रए। প্राथम, প্রाप;-শরীর রক্ষাই প্রাণের ধর্মা; সার্থের পংক্তিতে আমহা দেখিয়াছি যে, পশুবং জঙ্গুলিয়া-<u> जिटा वाहिया काका है की गतन अधान-</u> তम् सर्वा । विजीय, मन ;—शादन वैर्वाहिया षाक। त्यारहरे—ठारात छनत जी न्रावत पूर्ण पर्यन केविया सनारक ऋरच ताथी गाई हात पृक्षीत्र अध्कात े वाहित्तत বিষয় মারা উপরক্ষিত হওয়া খ্রীপুত্তের মুখ-

দর্শনে স্থলী হওয়া) য়েমন মনের ধর্মা, তেমনি নী আপনার পেঞ্স-কার্য্যে আপনাকে প্রতি-বিষিত দেখা অহস্তাবের ধর্মা। गतनत पृष्टि শশুথ পানে-সন্থছিল বিষয়-সমূহে; অহস্কারের দৃষ্টি পশ্চাহণানে,—গোরুষ কার্য্য করিয়া অর্ণাৎ কর্তৃত্ব করিয়া—"**আমি এই** কাগ্য করিলান" এই ধলিয়া আপনার প্রতি ফিরিয়া, দেখা, অহস্কারের লক্ষণ। পুরুষদিগের কীর্নির প্রতি ফিরিয়া দেখাও অপেনার পৌরুষ দারা সেই কীভিতে নতন জীবন সঞ্চার করা, আর, পুত্র-পৌত্রাদিকে ভাষার উপযুক্ত করিয়া পড়িয়া তোলা, কো-नीरमात क्षतान छिप्पमा । कोनीना अहेक्स शहसात-ध्रधान। अधारन ८३ हि (नशा कर्रेश হে. **ষেথানে পারমা**র্থিক ধর্ম পরিস্ফুট হয় नारे, रमथारन कम्टित न आयूम्यो नाकिक ধর্মই সর্কোচ্চ ধর্ম ও মেখনেকার প্রক ভাৰা ভাল বই নন্দ নহে; তেমনি আশাৰ: যেথানে লে)কিক ধর্ম গরিক্ষ্ট হয় নাই, দেখানে ইউরোপের মধান্দীয় অহস্কার-श्रधान एकोशिक धर्म, योहा ^{Chicolity} नारम প্রালিদ্ধ, ভাহাই সর্কোচ্চ ধর্ম ; স্করাং দে: খানে তাগাই শ্রেষকা। দেশকাল-পাত্রো চিত শোভন অহস্কার মনের উপর কর্ত্তত্ব করিয়া মাঁচ প্রক্রন্তির পথ-রোধ করে—সূতরাং তাহা ভাল কই মন্দ নছে; কিন্তু যদি অহ-কার মাত্রা ছাড়াইয়া উঠিয়া অধ্যোগ্য ভীত ভাৰ ধারণ করে, তাঁহা হইলে তাহা অবসাই নিশ্দনীয়। এমন কি, অহস্তারে অতি মাত্র क्वीं इंट्रॉन, मनुवा खेगान इंट्रेग छेठिए भारत; Don Quixot-अत छिणनाम देशत একটি পরিপার্টী উদাহরণ। षश्कादित উত্তেজনায় মনুষেরে স্পর্ফা কখনো কখনো আকাৰ ছাড়াইয়া উঠে,—ক্ষুদ্ৰমনুষ্য পরাধ-পর পর্মেগরের ছলাভিযিক্ত হইতে সঞ্জিত হয় না —েডক ফুলিয়া হতী হওয়া ইহায়

কাছে কোথার লাগে। কিন্তু "আমি ভক্ত সন্তান" বলিয়া মনুসেরে খে-একটা দেশ কাস পাত্রোচিত কৌলীনা অহংকার, তাহা নিন্দ-নীয় হওয়া দলে খাকুক, তাহাই ধর্ম-সোপা-নের মধ্যম পার্যক্তি। চতুর্থ, বুদ্ধি;—কৌশল षात्रा कार्मा मगाधा कतारे तुष्कित्र धर्मा ; वृष्कित প্রধান লক্ষ্য আগনার পৌরুষের প্রতি নতে, কিন্তু কার্সোদ্ধারের প্রতি। একাকী সকস-কার্ষ্যে কর্তুত্ব করিলে আপনার পৌলয়েরই পরিচয় দেওয়া হয়—বিল্প তাহাতে কার্যা ভাল ধরানা: সকলে মিলিয়া সকলেব জন্য কাগ্য করিলে আপনার আপনার পৌরয অনেকটা চাপা পড়িলা যায় বটে কিন্তু তা-হাতে কার্যা গেমন ভাল হয়-তেমন আর কিছতেই নছে: এইরপ স্বোশ্লে কার্যা খ্নির্বাহ কর। মভাভার একটি প্রধান লক্ষণ। কোননা যেখন অহস্বার-এগান, সভাতা (गरेक्ष वृक्ति-श्राम। भक्षम, बाबा;-মাক্তভৌষক মধন, বিশুদ্ধ মন্তন, পরিপূর্ণ মঙ্গল, এক কথায় পরমার্থ, বহিভাগতের কু-ত্রাপি দৃষ্ট হইতে পারে না—আ্যাই ভাহার এক্ষাত্র ব্যতিস্থান । স্বার্থ খেমন পরীরের भक्रत. शास्त्र (यमन मर्मन भक्षत, रकालीना যেমন অহস্বারের মঙ্গল, সভাতা যেমন বু-দ্ধির মঙ্গল, পর্ম র্থ সেইরাপ কান্তার মঙ্গল। মনুষা-জাতির আত্মার মঙ্গল সাধিত হইলে-মনুষা-জাতির জাঞা দার্স্ত-লেগিক বিভন্ধ মঙ্গ-ইজায় পরিপূর্ব হইলে-দেশের-কুলের गुर्ह्य-भंदीरवद-मगरछवरे गन्न सह-अक भश-मद्भात अपूर्वामी स्वा। आंत्र এकि কথা এথানে বক্তবা এই হে, অহংকার যেমন মনের উপর কর্তৃত্ব করে—আ্লা (স্বতঃসিদ্ধ ভাবের আকর আত্ম) সেইরূপ বৃদ্ধির উপর কর্ত্ত করে; বুদ্ধি বেমুদ উচ্চতর মন-আত্মা टमरेजन प्रकार वर्ष । अक्सान गरमन Cकम शास्त्र स्थापा पुष्का क्यारा-

এইज्रम रम्या याहेटलट्स (म, শাস্ত্রোক্ত অন্তঃকরণের বৃত্তিবিভাগের সাহিত ধর্ম-সোপানের পংক্তি-বিভাগের পোড। পমল রহিয়াছে। এখন বক্তবা এই ৰে, বিশেষ ব্ৰতিকে সাধারণ বৃত্তি দারা [‡]নয়÷ निए कतिटा **इटेटर- अ निश्चा**ष्टि अमारि । द्वित (य, इकाषा ७ हेशं विम् विन दर्गत । भगाणा इष्टें भारत ना ; इहारक धर्म-(गांभारनत যে পংক্তিতে খাটাও, সেই গংক্তিতে খা-টিবে। জেটেত্যের একটি মূল নিয়ম এই (स. अक्षिक्टलंब उक्किटक लघु मक्ष्म चूडिटन; **ब्रोट निश्रमंदिक यथन मुर्या-मञ्जल প্রয়োগ** করি, তথন পাই যে, সূর্যা রহন্তর আর-একটা মুর্গ্যের চতুঁ। দিকে ঘ্রিভেছে; উহাকে খখন ভূমওলে প্রবৈগি করি তখন পাই যে,, মুর্যা অপেক্ষকৃত \স্থির ও পৃথিবী তাহাব চতু-দিকে ঘুরিতেছে; উহাকে খখন চক্র-मछान हात्रांग कति, उथन शाहे एवं, श्रीवि অপেক্ষাকৃত স্থির ও চন্দ্র তাহার চতুর্দিকে খুরিতেছে; কিন্তু তাহা বলিয়া উপরি-উক্ত ভারাকর্যনের নিয়ম তিন নিয়ম নহে—উহা এकरे निश्च । देशहरे मात्रा, এ निश्चमार्वे একই দিয়ৰ নে অন্তঃক্রণের বিশেষ রতিতে সাধারণ হৃতি দারা সির্মানত করিতে হইবে;— ্ৰ নিয়ন্টিকে প্ৰাথম পণ্ডিততে এয়োগ করিয়া পাইতেছি বে, প্রস্তুতিকে আপনার পানী নিক মঞ্চল-ইচ্ছা দার। নিয়মিত করিতে চইবে; বিতীয় পংক্তিতে এরোগ করিয়া भारे एक दिन, शुरुत बक्न-रेखा पाता जाश-নার স্বাৰ্থকে নিয়মিত করিতে হইবে; ভূড়ীয় भरक्रिएं श्रामा कतिया भारेट्डिया (व. क्ट्मब गवन-रेका बाता हिट्टत महन-रेकाटक. निश्चित्र कतिएक स्ट्रेन ; हरू स्थानिएक श्रामा कविता भार्टिकि द्व, क्षार का ना trains butter that the

পংক্তিতে প্রোগ করিয়া পাইতেতি বৈ, সমন্ত মঙ্গল-ইজাকে নিরপেক্ষ দার্ক্সভেমিক মঙ্গল ইচ্ছা ছাৱা নিয়মিত কবিতে হইবে, हेहारे भातमार्थिक धर्या-निरम। নির্মটি (অর্থাৎ দাধারণ বৃত্তি ছারা বিশেষ রত্তিকে নির্মিত করিতে হুইপে, এই নির্মটি) यनि औ भीष भरकित अविषे किन श्रास्त ना খাটিত, তবেই বলিতে পারিভান যে, ধর্ম-नियरगढ़ कान श्रिव नाहै: किन्न गणन एपि তেছি যে, ও নিগ্ৰ-টি এমনি ছটল ও ছাপ-রিবর্ত্তনীয় যে, কোণাও উহার বিন্দু-বিসংগরিও অন্যথা হইতে পারে না তখন বোন লজ্জায় धक्तर्थ कथा मूट्य जानिय (स. वच्च निशासक কিছুই স্থিরতা নাই। কেই বলিতে পারেন ষে, গার্হস্কাও তো এক প্রকার স্বার্থ : স্ত্রী-পুত্র ত। जामावं**रे** श्रीशूब ; श्रीशूखत मक्त (छ। আমার আপনারই মলন ; ইহার উত্তর এই যে তোমার নিজের সার্থ (অর্ণাং আগনি খাত্য়া আপনি পৰা) স্থী-পুত্রের মঞ্চল-ইজ্ঞা দারা এরুণ ওতপ্রোত হইয়া রহিয়াছে বে, এখন ভাহাকে চেনা ভার; ভোমার স্বার্থ গুছের মদলের মধ্যে এরূপ কবলিত হইয়া রহিয়াছে যে, সার্থ বলিবামাত্রই গু**হের মঙ্গল** তোমার মনোমধো উদিত হয়: ইহাজে কেবল ইংগই প্রমাণ হইতেছে যে, তোনার স্বার্থ অনেক কাল-যাবং গার্হস্থা দার। নিয়-মিত হইয়। চুকিয়াছে; স্বতরাং তোফাকে এরণ উপদেশ দেওয়া বাহুলা যে, সার্থকে গার্হক মারা নিয়মিত করিতে হইবে; কিন্তু একজন জন্মলিয়া—যে প্রথম পংক্তির উ**র্চে** উঠে নাই-তাহার शास्त्र के निष्यिष्टि **সর্ব্যোচ**্ধর্ম-বিয়ম। কোন পংক্তির[®]নিয়ম কাহাছো পকে দহৰ,কাহারে৷ পকে কঠিন--किन्न छोहा विभिन्न छे होत निश्चम एवत এक-চলও বাহিক্ত ইতি পারে না। सिश्राटमत्र विशेष नः वामित वहन, अपन, जात-

একটি বিষয়ের নীমাংদা কেবল অবশিষ্ট — নেইটি ছইয়া গেলেই আজিকের মত আমার বক্তব্যের পরিসমাপ্তি হয়।

স্বার্থ ধর্মা-সোণানের সর্কাপেকা নিম্ন भरकि, उत्रः भत्रमार्थ मर्का**रभका** সার্থ সহজ্ঞার আদর্শ এবং পর-ભરાં છે ! यांग छेश्करहेत थान्य । नाईश यथन मा-(प्रविन्ताय महक इटेश माँखांब, उथन जाहारे भाई (यात मिकानषा ; कोलीना अवर म-छाठा अथन यारथत नगात महत्र हहेशा मी-ভাষ, তখন ভাষাই কৌলীনা ও সভাতার निकातका ; अत्रमार्थ यथन कार्यत नगांश महज रहेशा माँजाश, उथन छाहारे मधु-নিদ্ধাবস্থা ও পর্ম পুরু-**চরম** যোর ষার্থ ; আর, তাহার সাধন সমূহের জনস্ত ক(লের উপজীবিব।। ফাগ্র যে কি -তাহা কাহাকেও বুঝাইবার প্রয়োজন হয় না ; কিন্ত পরমার্থ যে কি, তাহা িশেষরপে বুলাইয়া गा वनित्न-गमा लाज **छोष्ट्रांत** नोना প্রকার বিপর্যাত অর্থ বুনিতে পারেন। পর-মার্থ কি—ইহা ভাল করিয়া বৃশিতে হুইলে; প্রাংগে পর্যার্গের দিক্ নিরূপণ কর: আব-শাক। প্রস্ক-কথিত প'ত্তি-গুলির (यश्रीत भारमार्थ शकाला जात्व नाई, स-্থানেওঁ পরমার্থের দিব্ আছে: অর্থাৎ তে-পানে পরমার্থের ভাব পরিস্ফুট হয় নাই, কৈখানেও প্রমাথের দিকে পতি চলিতেছে। ্তমার্থ মদিচ পরমার্থ নহে, কিন্তু এর্ডি ইইতে স্বার্থের দিক্ পর্যার্থের দিক্; সার্থ ইইডে गार्ट्स्याव मिक् भवगार्थव किक्; गार्ट्स इहेट को नी दनात फिक् भत्मार्थित फिक्; কোলীনাি হইতে সভাতার দিক্ পর্যার্থের দিক্ কভাতা হইতে সাক্ষভৌমিক মকদের मिक् शत्रवादर्शत पित्। कनशाबाद्रदात एथ् নয়—কিন্তু প্ৰতি অনেবই—লৈশৰ কাল ছইতে পর্যারের দিবে গতি চলিতে থাকে।

নিতান্ত শিশুর, প্রথমে, কেবল স্তন পানের িকেই কোঁক। তাহার পর সে মাতাকে ভাল বাদিতে আরম্ভ করে; মাতাকে লইয়াই শিশুর গার্ছফা – কেননা শিশুর মাতাই পুছের দর্মণ: ধন। তাহার পর শিশু পিভাকে ভাল বাণিতে আরম্ভ করে। শিশুর নিকটে শিতা অপেকা ক্ষমতাশীল ব্যক্তি জগতে আন কেহই নাই; কাজেই "দেই আছতীয় ক্ষতাশীল বাক্তি আমাত সেহের বশা এই বলিয়া ভাহার মনোমধ্যে অংকা-বের মতো একটা মামগ্রী দেখা দেও; এ অহমার নিভান্ত শিশু-অহন্ধার, ইচার এগনো বিদ দাঁত বাহির হয় নাই-এটি দেন মনে भारतादन वारेशाहे त्यस्य পাল পা, নেইরণ দোলাকে লইমাই শিশুর কেলাকা। দাছিক কুনীৰ শেষক সমাজকে জ্যানাইনে তোৰে, আড়ুতে ছেলে মেইরপ বাভি মাধাণ কৰিয়া, ভোলে; প্ৰভেদ কেবল এই যে, শিশুর অহমার নির্বিষ, স্থতরাৎ একটুতে শান্ত হয়,—দান্তিক কুদীদের অহ-দাৰ বিয়াক্ত স্নতরাং ফিছুতেই শা**ন্তি য়ানে** ন। আমরা দেখাইলাম যে, নিতান্ত শিশুর क्षित्र खेन शास्त्र फिरक्ट अक्शाख (साँक, -ইহাই শিশু স্বার্থ ; ভাষার পর সে মভাকে ভালবাদিত্রে আরম্ভ করে,—ইহাই শিশু গাহস্তা; তাহার পর পিতাকে ভালবাসিতে শেষে, ও ''পিতা, যাঁহা অপেকা উচ্চ আৰু -কেহই নাই, তাঁহার অান স্লেছের পা**র**ে • **এই विनिद्या पश्कृ**ण एवं, देशारे निष्य 📳 -দীন্য ;—গুহের বালকেরা এ**খানে কুল**, 🐯 পিতা এখানে কুলপতি। অতঃপর বক্তব্য **अहै त्य, मिलबे किक्टि बराबिक हरेटन देन** वयन পর-গৃত্ব नर्यवज्ञकिप्रकात महिक की ज़ा ক্ষাছ ও পাঠাভাবে ৰড হয়, তখন অনে-(कत एकता हेर्बा देखा जारात जरहारत के लेल म हरेगा युष्टित छैटलक रहा, शुस्रवासनिया स

হিত সভাবে মিলিত/হওয়াই শিশু সভাতা বা শিশু লোকিকতা। বাছার পর এইরূপ দেখিতে পা এয়া যায় যে, থিখা। কহিতে কোন কোন बालरकन्न तमनाग्न शिर्धः , क्लान कान वानक অন্যান কিছে, এইরূপ বালকগণের মধ্যেও পার্যাঞ্জি ধর্মা-ভাবের তারত্যা द्रिश्टिक शिश्रां यात्रा । द्रिय तालक विशाः কক্ষেনা - পিতৃমাতার বাধ্য-চুর্বলভর বালকের সহায়, ভাহার মনোমধ্যে পর্যার্থের ভাব নবোধেম্যিতি ইইয়াছে—এরপ বানলে षर्। জ হয় ন।। এই তো গেন বানকের,— **এখন** স্বার্ বিভাগ ধর্মা সোণান -- দেখা যা'ক। শিশুল বেমন তেনপান- শ্বাব। रन्देक्ष जर्माभा क्रम—डें इस्र जावन वातन ণের জন্য , এটিটি সার্থের পর্যক্তি। এ প্রেক कूनत्म द्राविदांत कना त्यमन चार भारतिन, তেমনি ননকে জাল ধাখিবার আন্দ্র বিবাহ ; निखत दयमन मा/छ।--ध्यात दमहेत्रभ क्री---मन्तर भूना यछ-किছू समक्षे शूर्व करत ;---এইটি গার্থেরে প্রিক। ভাষার পর রুদ্ধ পিভাষতার দেবা, বিদিনার প্রভুত্ব এবথ कर्ष्ट्रः मगर्थन, ७ वृह्ये ख्रावर छेपरनम-हार्ता পুত্র ক্নাগণতে কুলোচিত স্নীতি নীতি ও বিদা শিকা দেওয়াই আতি বন্ধুকে সন্তাৰ-षात्र। वनी पूछ कता, हेशरे कीनी नित्त পংক্তি; তাহার পার দেশহিতেয়ী নিক্ত-মণ্ড-লার গাহিত যিলিঝা-মিগ্রিয়া দেশের হিতা-মুষ্ঠানে লিপ্ত ইপায়া, এইটি সভাতার পথকি; ভাহার পর, অভার নিগৃ আ काक्ष्या सिंहेरियात चना भेत्रमाञ्चात महिङ रयात्रयुक्त इंश्वा, धहेकि अवस्थार्यंत अर्कि। अथारन अहि एक्या जावनाक त्य, त्य त्य ভার বে বে পংক্তির অধিকার্ছত—নেই दुन्हें बाव (ब, रनहें तमहें भर्गकरू जरमा मानिया मानिक ७ हर, कारा गरेर ; छार र्शित्र विकार बार नकाव विकार

ভাবে বিদামান থাকে—স্বপং জিতে আ-সিয়া পরিকটুট ভাব ধারণ করে, এই মাত। चात अकृषि कथा असार्न विस्वतः; स्म हि এই रम, रम भा कृत (य-वि---(म भः क्तित সে-টি নহিলে আর কিছুতেই আশ সিটিতে পারে না। সাধ্ধা-ভিগ্ন আর বিছুভেই – गरनत - मार्ग निष्टित थारा ना ; किन्नु म-সংকাষের আন মিটাইকে হইলে গুরু ভাষাব ष्टान भट्ट,—जील्राचन छेलन कर्क्क करिया অব্রারের পেট ভবিতে পাবে না-ভ্রাতি বদ্ধকে সন্তর্গ-পাশে বদ্ধ করিতে। পারিলেই অহরার রাচিষত পরিতৃপ্ত হল: তেমনি াহাবোর, প্রাতাম স্বাদ দলগোল-বাপারে ভীক্ষ বৃদ্ধির সমস্ত ব্যোক সমগ্রি কা লে, বৃদ্ধির নিতান্ত অপনায় কিনা হয়,—অনহ তা-হাতে বুদ্ধির পেইভবেনা; সেশের হিত-मातन कार्या वृष्टित त्यमन हिनत-शास्त्र हत्र, वासन यात किहूर वर्षे नरह। अथारन जातल-একটি কথা বিষেত্য; সেটি এই যে, উচ্চ পর্যক্তির পারিকার নিম্ন পার্কিরাকও বলগৎ;— লোকার্থ (অর্থাই দেশের মৃক্ষল) বুদ্ধির স্থ-পংক্তি-স্থলত লফা, কিন্তু বুদ্ধির অধিকার খেড কেবল তাহার স্বধংক্তিতে বদ্ধ নহৈ— र्षक नीना खन्द गा**ईका परांक ए**क केतिया ত श भार्थ-পर्गान्त धामातिन । 'हेहात हिक् বিশ্রীত এই দেখা যায় যে, উচ্চ পংক্তিতে নিক্ম\পৃংজ্যির জোর থাটে না; বুদ্ধির পং-জি**বে অহ**ক্ষাকের তেজ নরম পড়িয়া যায়; অইক্ষাই্র পংক্তিতে সেং-মমতার কোমল কলিকা মুসজিয়া যায়; গার্ম্মা-পংক্তিতে चादर्भ आफ्ना हाला अज़िशा यात्र। এथारन, भीत अकृषि जेड्ड्रेश अरे त्य, भोषात्म हाज-बाता বিশেষ ইন্মির বিয়মিত হওয়া উচিত, এ ক-थाह अर्थ (क्ट रयम अक्रांश न। द्यारकन त्य, विद्याप अधिक एक प्रकार कविशा माधावन বৃতিকে ছাহার ক্লাভিয়িত করা উচিত;--

এমন অনেক ব্যক্তি আছেন— যাঁচারা আ-পান না খাইয়া না পরিয়া—শরীরের স্বাস্থ্য নপ্ত করিয়া —পুত্র পোজাদির জন্য ক্রমাগতই অর্থ সঞ্চয় করিতে পাকেন,—এরপ ব্যক্তি গার্চস্থার অনুমোধে খার্পে একেবারেই জলা-গ্রনি দে'ন,—ইহা কর্ত্তবা নহে; তাই শাস্ত্রে আছে

"প্রাণ্য চাপ্তিমং জন্ম লক্ষ্য চোক্রমনোট্রবং।
ন বেত্তাবিহিতং যক্ত স্করেল ছেলাককঃ॥'
বিনি উত্তন সহাত্য জন্ম এবং ইক্রিয়-সোট্র লাভ করিয়া আপনার হিত জানেন না ভিনি আছে-যাতী।

আবার, এমন অনেক ব্যক্তি আছেন বাহাদের স্ত্রীপুত্র পরিবার কঠে দিনপাত করিতেছে—তাহা ভাহারা দেখিয়াও দেখেন
না—অথচ কৌলীন্য-অহন্থারের বশবর্তী হটয়া
প্রভূত দান কাগো রত;— এরপ কৌলীন্য
গাহ স্থেরে শোণিত শোষণ করে, তাই শালে
আছে—

শিক্তং প্রজ্ঞান দাতা স্বজনে ছাংগাঁট্রিন।

মধ্যপাতো বিষাস্থানং সংস্থা-প্রতিম্পান্ত।

বে ব্যক্তি ক্ষমতা সত্তেও ছাংগজীবী স্বস্থানৰ প্রতি
উপেক্ষা কার্মা পাজনে দাতৃত্ব করেন, ভাষার সে

মাহ্য আপাততঃ মধুকিত পরিনামে বিস্তৃত্ব ধ্য

এই রূপ স্পান্তই দেখা যাইডেছে যে
য়ার্থকে উচ্ছেদ করিয়া গাহ ছাকে ডাহার
ফলাভিষিক্ত করা অথবা গাহ ছাকে উদ্দেদ
করিয়া কোলীনাকে তাহার ফলাভিষিক্ত
করা, নাধারণতঃ—বিশোধ রভিকে উচ্ছেদ
করা, ধর্ম নহে—ধর্মের ভান-মার্থা; বিশেষ
বৃতিকে উচ্ছেদ করা নহে—কিন্তা তাহাকে
সাধারণ রুদ্ধি দারা নিয়মিত করাই প্রকৃত
ধর্ম কার্যা। পঞ্চম পথজির আদ্ধা মর্কান
প্রেমা উচ্চ; পরমাত্রা ভিন্ন আর কোন
কিছুতেই আত্রার আশ মিনিতে পারে
না; এটি কেবল এখানে উল্লেখ মার

করিলাম, পরিশেষে ইছার এমুাণ প্রদ্ र्मन कतित । कतामीम् (म्भीय कैम्हे-द्वी. কন্যা ও মাতা হারা আছার আশ মিটাইতে র্থা জায়াস পাইয়াছেন। গার্হকের দৌত मन शर्मान ;- लाजात गांगत-अनुहा निर्भाष कता (ग-এक-८कारे) निनिट्यत्र कर्मा नटह ! ষীলোক গ্রহ প্রাক্ত লোকদিলের আত্মার कृष्टिर खना, कम्हे, शाद शादक जानमंत्राभ ব্রব করিয়াছেন,--কিন্তু পণ্ডিত লোকেরা তাহাতে ভুলিবার পাত্র ন'ন, – ইহাঁদের আন্তার ভৃপ্তির জনা তিনি 'মমুস-ত্ব' বলিয়া **একটি দেব-মুর্জি সাজাইলা জুলিয়াছেন** ; আর, সভাতার মুল-প্রবক্তন পিতৃপুরুষ্টিগকে कर्छ। कतिश अंशादित नारमय मस्त-तत्न भिष्टे भृष्टिवित खान-शांष्ठिशे स्विशास्त्र । ज চেস্টাও এথা চেষ্টা: কেননা সভ্যতার **দেছি** বৃদ্ধি প্রত্তে—তাহার উপরে নছে: সভ্যতা বিছু জার পরমার্থ নছে—যে, জালার পি-পাদা শান্তি করিকোঁ৷ লোকে বথায় বলে "পুৰের সাধ ঘোলে মেটে না"——এ কথাটি দিব্য এখানে ফলিয়াছে; যে পংক্তির যে টি নহিলে নয়—কে পংক্তিতে তাহার বদকে षात- अको। किছू धानिहा माँ कतात्ना नि-তান্তই বাল্য-ক্রীড়া। আমরা ওরূপ 'গায়ের **জো**র' প্রকটনে কান্ত হইয়া--মভাবতঃ থে পংক্তির পর থে পংক্তি আইমে, ও সত্য-সত্যই যাহাতে যে-পংক্তির অভাব-পুর্ণ इश्, जाहाहै यथा-उत्थ क्षणमान कहिलाम। এইরূপ, কি পৃথিবীর নানা দেশ-বিদেশ, কি वाक्ति-वित्मारयस कीवन, स्थारनष्ट कामका पृष्टिभाज क्रिना क्न- मिर्शनि एन-খিতে পাই যে, স্বার্থ হইতে পরমার্থের দিকে गंडिरे-रेपांहक सत्रन स्टेटल आशाणिक মুক্তার দিকে গতিই—অভত্ব হইতে মুস্বা-ত্বের দিকে পতিই—এক্তির অভরতম উ-ক্লো; আর, একুডিকে বৃদ্ধি অন্ধভাবে না

দেখিয়া চক্ষুদ্মান্ ভাবে দেখা যায়, তবে দে-থিতে পাওয়া যায় যে, তাহাই ঈশবের অ-ভিত্তেত; আবার, আত্মাতে যদি পরমাস্মার প্রভাব সদয়সম করা যায়, তবে ব্যিতে পারা যায় যে, তাহাই ঈশবের আদেশ।

পরমা**র্থের** দিক্ নিরূপিত হইল; এখন জিস্তাস এই যে, পরমার্থ বস্তুটা কি ?

জগতে যদিও নানা প্রকার অয়প্রল র-হিয়াছে, কিন্তু সকলেরই গতি যে, মঙ্গলের িকে, ইহা সহজ বুজিতে মকলেরই পারণা इत : जिन्ह है हाइ डिश्त उर्क हाल हिएन বিনিমত প্রমাণ প্রয়োগ ভিন তাহার নী-মাংসা হইতে পারেনা; কিন্তু সে-সকল श्रभाव (कवा देवरा ध्रमिशा अयुगक्षान करत, त्कव। देवया धनिया चाटमाथान्छ করে, কেবা হৈছা ধরিয়া ভারণ বা অধায়ন करतः महन-वृद्धितः सङ्ज-वृद्धि विना প্রমানেই শ্রেয়ঃ জনমুদ্দ করে; কুর্ণিল-বুদ্দি বা বিকৃত বুদ্দি নিনা-প্রমাণেই ভাষা অগ্রাহ্য করে; প্রমাণ গিনি-তিনি সপক্ষ এবং বিপক্ষ তুই পক্ষেরই নিবট তাড়া খাইয়া নতশিরে সগৃহে প্রত্যাবর্ত্তন করেন ও চারিদিকের্, জান্লা কপাট বন্ধ করিয়া দে'ন। মনে কর অপরাত্বের কোন একটি নির্দিষ্ট মুহুর্ত্তে ছুইটা ভালগাছের ডুইটা ভূতল-শারী ছায়ার দৈখা মালিয়া এইরূপ ८मशा त्मल का देशा-बरम् देशा व्यक्ति ম্মান ; বিনিই ঐক্তেপ ঐতুটা ছায়া মাপিয়া ्रिनिथरवर्न **जिनिहे विलियन**े ख, ७-जूहे इत्कर वात्रजन विकल गर्मान-त्कर्रे তাহার প্রাথ চাহিবেন না; কিন্তু যদি কেহ তাহান প্রমাণ চাহেন, তবে তাঁহাকে তাহার প্রমাণ প্রদর্শন করা কি ভয়ানক কর-কর ব্যাপার ৷ তিনি হয় তে৷ জ্যামিতির माग अपन माहे, अथह छोहात मिक्छे। আন্যোপান্ত জ্যামিতির সমস্ত সিদ্ধান্ত-গুলির

মর্মা ব্যাণাা করিতে হইবে; ভাহার তুই পংক্তি শুনিয়াই তিনি হয় তো মর্মে कृलिया विलादन "था'क्-यदशहे इरेगारक-আমি এখন বিদায় হই!" সহজ বিষয়ের প্রমাণ এইরাপ ভয়ানক ক্টিন ব্যাপার। যাখা প্রমাণ করা কঠিন, তাহাই যে অগ্রা-याना—এ कथाद कान प्रयं नाहै। बन्द नाना धकात धगकल बहियाटছ-धरेनिब প্রতি অসুলি নির্দেশ করিয়াই ভার্কিকের। गत्न कारतम (म. केंगेन वि-- समन स्तर নদেন - জাতার যথেওঁ তামাণ দেখানো হ-ইল: কিন্ধু জগতে খনি সহত্র অন্দল থাকে, ভাচা হ্টলেও এটি অপ্রমাণ হয় না ্য নক্ষ অমন্ধলেরই গতি মন্ধলের দিকে !. সকল অমপ্লেরই পতি মপ্লের পিকে-ইহাই ঈশ্বের জগাম শাক্ত এবং মঙ্গন-ভাবের পরিচয় দিতেছে। জগৎ কিছু-আর ূৰ্ণ সঙ্গল নহে--স্তঃৎ ঈশ্বল নহে-স্কল্লাৎ জগতে মুনাধিক পরিমাণে অযঙ্গল থাকি-বারই কথা; কি**ন্ত জগতে**র মূ**লে ঈখরের** অণরিসাম শক্তি এবং মন্দল ইচ্ছা বর্ত্তমান আহে বলিয়াই, যাবতীয় অমঙ্গল উত্তরো-ত্ত্র-ক্রমে মধল হইতে মঙ্গলে পরিবত হই-তেছে। নিরীখর মচলে এই কথাটি অ-কাটা প্রামাণ বলিয়া গৃহীত হয় যে, ঈ-শং যাদ সর্বানজিমান্— তবে কেন তিনি জগৎকে পূর্ণ মন্ধল করিরা সৃষ্টি না করি-্লেন ? ইহার উত্তর এই যে, এরূপ কতক-গুলি কাৰ্যা আছে যাহা পাগলে পত্ৰে कतिए शास्त्र, दिख्युत्नाक कान मएउरे করিতে পারে না ;—কিন্তু বিজ্ঞ-লোক পা-গলের কার্যা করিতে পারে না বলিয়া— শামরা কি ভাঁহাকে ক্ষমতাহীন বনিব ? গোল-চতুজোণ-তুই পূর্ণ মঞ্ল-তুই মহা-कांग-नगरहे जैनादमत कहाना ; চতু द्वान বলিবা মাত্রই অ গোল চতুজোগ বুকায়—

कगः विलियामामेरे जिल्ला जगद तुसाहा ;-ঈশরের আনির্ভাব অল্লে অল্লে জগতে পরি-ক্ষুট হইতেছে, কিন্তু ঈশবের সর্বাঙ্গীন ভাব অগতে থাকিতে পারে না, তাই জগৎ অপূর্ণ। গোল-চতুকোণ দেমন অসমত— তুই মহাকাশ যেমন অসকত তুই ঈবর रियम लमञ्ज कू पूर्व गर्भन महिन्न অসঙ্গত।. দুই ঈশ্র যেমন অসঙ্গত—দুই পূর্ব-নঙ্গল সেইরূপ অসঙ্গত। গোল-চতু-**(कांग इंटेंट्ड शार्य-- क्राय मरन क्राय्टे** উন্মাদের দক্ষণ,—জাহাতে বৃদ্ধির শক্তি-**ঘীনতাই প্রকাশ পায়**—ক্ষমতার পরিবর্টে অক্ষতাই প্রকাশ শার। গোল-চত্জোণ স্ষ্টি করা তো অনেক দূরের কণা--গোল-চতুজাণের সম্ভাব্যখা বিশাস করা পর্যান্ত অশক্তির লক্ষণ নিবুদ্ধিতার লক্ষণ। গোল **Бट्रकान**—पूरे পूर्वभिन्न-भाग्यतन स्छा-तिहे छान शहिए शादत, भेषदतत्र द्रगस्द জ্ঞানে তাহা কিরূপে স্থান পাইবে ? স্বীৰ-রের জ্ঞানে, যাহা, স্থান পাইবার অযোগ্য -তাহার স্থাতিতে ভাহা কিরপে স্থান পা-বাহিরে যেমন তুই মহাকাশ অগ-ম্ভব, অন্তরে ধেমনা তুই ক্রীবাত্রা অসম্ভব, ৰগতে দেইরপ ছুই পামাক্সা অসম্ভব; भाइमानाः अग्रव्हे भून मकल, बिजीय श्र्न बैक्न क नस्त । त्रान-छ्ट्रांग बाने। युक्ति-বিপ্রায়েরই লক্ষণ, বাহা বাস্তবিক সত্য ভাহা জানা (যেমন স্ব্যোতিষ জানা)—ইহাই ब्रीटनत लेक्पनी टमहैक्राभ, योश छ्यान-म-স্ত নহে—জাহা করিতে না পার। অশাক্তির লক্ষণ নছে , উপ্ট। অংরো, তারা করিতে भारा यात्र - এक्रम श्रांटन कराष्ट्रि खणाक्टित न-क्ता क्रिक्त मस्त्रीठ हरेश ममछरे बानि-एउट्टन ; किन्न त्राल-एट्ट्रकान-इरे सूर् नक्त-अभाषा वनीक केणा, मादा वामा-ट्या कारने अत्याता, काका काका काका का हात करके धूनि निरम्भ कतियात है।

রিভদ্ধ জ্ঞানে স্থান পাইতে পারে ক যাহা তাঁহার জ্ঞানে স্থান পাইবার অযোগ তাহা তাঁহার সৃষ্টিতে কিন্তপে আগিবেঁঃ অগতে যখন পূর্ণ মঙ্গল নাই—ভখন জগতে অমঙ্গল অবশাই আছে; কিন্তু ঈশুরেণ অপরিদীম শক্তির প্রভাবে জগৎ মঙ্গনে দিকে আফুষ্ট রহিয়াছে—জগৎ নম্মলের 🗱 নানা-বিধ বেদনা অনুভগ করিভেছে— নাম বিধ শক্তি প্রকটন করিতেছে;—স্ক শক্তিল মূলে ঈশবের মহতী শক্তি বিদ ग।न-्धरे एएथं जेवन मर्खनिकियान् ; ঈশবের মহতী শক্তি ভূত ভবিষাং বর্ত্তম কোন ঘটনাতেই প্ৰ্যাপ্ত হইতে পালে ন এই অর্থে ঈশরের শক্তি অসীস শান্ত অ <u>চএব, ' ঈ গর গোল-চহু**জোণ** স্</u>পৃষ্টি করি: পারেন ন।" বলিলে নহে—বিস্তু "পারে; বলিলেই তাঁহার জ্ঞা**ন এবং শক্তিতে ক**েং আরোপ করা হয়। প্রমার্থ কি—ই যিনি সভ্যসভাই প্রমাণ-দারা **অবগত হই**ে ইচ্ছা করেন, তাঁহার প্রথম কর্ত্তব্য এই 🤄 ভিনি শেষ-পর্যান্ত বৈর্যা ধরিয়া ধত্র-পূক তাহার অনুসন্ধান করেন—একটুতেই ধৈয়ানা হ'ন। **আপনি** অনুসন্ধান ব সতন্ত্র, আর, তর্ক ছারা অন্যের মত খড়াই করা স্বতন্ত্র; তর্কের ভিতর নানা প্রা কুতর্ক এবৈশ করিতে পারে, কিন্তু কু৯% অনুসন্ধানের মধ্যে কৃতর্ক প্রবেশ ক্রিঞ্ প্র পায় না। অনুসন্ধান নিকল হই পারে,—তাহা হইলে সত্য জানা 🙀 না—এই পৰাস্ত; কিন্তু কুতৰ্ক কোন मुट्छात श्रीत्रदर्ख गिथा। माँ कत्राश-महान रम भारत निश्च हम ना। देव একী ৰাভিপ্ৰেত বিষয়—বাহা আমরা वृत्रि मेर्, छोर। यथन आमहा सनाटक ने हैट शहे, जनन जानमा कूजन बादा

করি: কিন্তু আমরা বখন প্রাশ্পণ বত্রে কোন-একটা বিসয়ের প্রকৃত তক্ত্ব অবগত হইতে 'যাই, তখন আমুৱা পানিংপক্ষে আ-भनात हत्यः दगज्ञभ धुलि निर्देश करिना। পরস্তু শেখানে মতা অনুস্কান নহে-কে-বল জয়-প্র'জগই আমাদের একমারে উ-দেশা, মেখানে আমরা আপনার চক্ষে ধুলি নিকেপ করিন—ভাষ্ঠত স্বীকার, জ-থানি—কোট নজার মানিতেই হইনে— তালা আণতেও সাড়া গছনে না—এইটি আমার ব মংগল্প। তত্রব পরবার্থ कि --हेश गांश्वा मनाम और जारन लाइख হাত্য করেনা নাহারা যক্ত করিতে পূর্ব তামের তর্গেষ্ট্র পরের ইউন্; खना काशति व माधात खाराष्ट्र वा मास्टित বুঝাইটেড ১ লেলাল প্রেমান্ত্র প্রক্রিক আপনি खारा वीमा ५ ८ े एक्ट । भवागण सम्बद्ध 南村 经公司 外接合作用 医阴茎后线 इस्या पाटक- भकार्य काटान खान, भन मार्थ नाहें। अग्रेशन वर्ष एकान अब के किए ছইয়া খাকে, ওবে ভিনি খাচানি দেই একেব ভিতৰ ওলাইয়া দেখুৰা,—ভাষাৰ সত্ৰ বিভাস্ত নিজ - ২ইবে না। ভাঁহার প্রশ্নের গভীর অভ্যন্ত কিন্তু এক মূহুৰ্ত্তেই তলাইতে পারিবেন-- এরপ গ্রীন্ত্যাশা করাই অন্যায়; বৈধ্যা নাবলা উহোতে অৱ অৱ অৱিয়া তলা-हैटड इंग्रेटन,-जदम गंडांन दम्बदन्न त्म. নেঃ প্রশ্নের গভীর অন্তন্তলে ভাহার উত্তর ঋক্য়ক্ করিতেছে; লেখিবেন যে, সে উভয় गरूपा-छ्वादनद निष्ठां खन्नमा नट्ट। अथन, পরমার্থ কি. এই প্রশ্নটির ভিতর কি কোতি শ্য রত্ন এচ্ছন রহিয়াছে, তাহার অনুদ্রাণে এরত হওয়া বা'ক্।

পরমার্থ কি ? অর্থাৎ মনুষা-জীবনের পরমার্থ কি ? এ প্রায়ের ভিতর আর একটি প্রসালাক্ষ্য রহিয়াছে; গে-টি এই যে, মনু জীবনের পরম অভাব কি ? কুবার্রাপী অভাব যদি আমাদের না গাকিত, তবে ধানা আমা-দের অর্থের মধ্যে পরিগণিত হইত ন। গুণা আহে বলিলাই ধানেত অন্তেহণ; পরম জ-ভীৰ আছে ধলিয়াই প্ৰা, আৰ্গের আ্যেধ্য । का भारत्व विद्नम् उक्तका की ক্ৰা-ক্ৰ অপার : ফিন্তু তাই৷ ছাড়ে৷ আরো স্মংখ্য জাতীয় গভার আমাদের আছে: লগানার-**স্থিত** লাজিল ক্ষুৰা ভুকার জন্য কোন ভাবনা নাই, কিন্তু ভাহার সমস্ত মস্পত জানতে প্ৰতিপূৰ্ব : জন্মানের বিশেষ বিশেষ বালা क्षां हार्य व नार्य व नार्य अस्ति अस्ति লৈ পু পর্য বেশ্যে ডি ৯ গ্রামান পরি**মিত** --তথ্যীয় আমানের পর্যন ব্র**চার। বিশে**র Tree gage ্ ে বিশ্ব আংগাই ভারত হব বিলে স্বল্ডায় রাজ, ঘ**লার বিষয়** वा ६१ - त्रामक प्रता विकासन গ্ৰহিছিল। এই জাঁত্ৰেয় ব্যক্ষী সক্ষয়িভিন্ন ম(ই, ১০ জাব আলেপের অভাব (ফি.स) ष्यमारार्ग देशकांन करत सम् जन्नजाह-क्रेशी অপ্রেম্ম সমার সক্ষারিভিয়, এবং ভাষার লাকাড্ৰাট বিগত-আলোক । **নিস্তব**্ৰা-য়াটো ভালাটের আধিলে প্রব**েলিয়** ভাহার আকাজগর বিষ্ণ-পদ। এখানে দেখিতে গৃষ্টাৰে যে, তক্ষু কেনল অন্ধকার-রূপী अक्टिमान भारतिय धातातः कर्न तर्नम নিত্তরতা রূপ্য একটি মাত্র হাভাতের আধার; উভয়ের কেহই সাধারণতঃ দকল আত্রবের আধার নহে: কিন্তু " এরা পরিমিত" ইহা আলাদের দকল অভাবের ্লাস্থিত माधातम - न्त- धरे गांधातन অভাব-টির আগার কে ? অংগাই, চঞ্,কর্ণ গ্রন্থ তি সমস্ত ইঞ্রিয়ের সাধাল মধ্যস্ত্র; পতেই প্রতি-পন্ন হইতেছে গে, আলাই ঐ নাধানৰ অ-ভারটির আধার; আত্মাই অপূর্ণতা-রূপী অভাবের আধার। আ**ত্মার** এই যে, পরম

অভাব, ইহার এর্থ (কি না আকাঞ্চার বিষয়) কাত্রেই পর্ম অর্থ-এক কথার -প্রমার্থ। সে পরমার্থ কি ? চাকুষ অভাব যে, অনকার, ভাহার আকাজ্জাব বিষয় অন্ধকারের আব-কল বিপর্য়ত ; কি ? না আলোক ; তেমনি আত্মার অভাব যে, অপূর্ণতা, তাহার আক।-জ্ফার বিষয় অপূর্ণতার অধিকল বিপরীত— कि १ - ना पूर्व गन्ना। ७७ ६न, जूर्व मननह আপার পরম অর্থ—এক কণায় —পরমার্থ। এখন চকু অন্ধকার-রূপী ভাভাগ্রর আধার, আলা অপূর্বা-রূপী অভাবের আগাব, এ মেন হইল; কিন্তু আনোকের আবার কেণ্ পূর্ব মদুলের আধার **(**香 ? 'बारजारकत ष्यात-- धृशः ; इन्ह নঙ্গলের জাধার---পর্মারা।

পর**মার্থে**র দিক্ থৈ কি, ভালা ভাষৰ। ইতিপূর্নের দেখিয়াছি: এরতি ইয়ে র / এবং णिक् शत्रभादर्थेत किक्, सार्थ क्टेटन । जादगटर्थेत **मिक् अंत्रमार्थित** मिक्, त्लाकार्थ क्ट्रेटल भिन्न-পেক মস্তান দিক প্রমাথের বিদ্যাল পাইতেছি যে, গুৰ্মিল্লী পর্মাণ এবং তাছবি আধার- পর্যাজা। প্রাকৃতির অভ্য-खरत (राषां मामा । शत्मार्थ मारी - शूर्व मञ्जल गरि; किन्नु श्राप्तित मनी शास्त्र পরমার্থের বিকে—গুর্গ নঙ্গলের দিকে—গ্রাভ নিরস্তর চলিডেছে; ভাই, অসভা লাব মধ্য হইতে সভাতা, অগর্মের নধা হইতে গ্রু ष्यकारनः अधा ४३८७ खान, जरम करम অভিবাক্ত হইতেছে। কোণায় কোন্ এক অলক্ষিত ভাঙার বহিয়াছে (আছে এই প্রানেই--আমরা মনে করিতেভি কতই না আনি দুরে) দেই পরমাশ্চর্যা অলোকিক ভা-গুর হইতে মসুরৌর আজার অভাব-নিতা নিতা পরিপুরিত হইয়া আসিতেছে; সে ভাঙার পূর্ব ভাঙার—সে ভাঙার অক্য ভা ভার; তাহার নাম পূর্ব মঙ্গল এবং ভালার

অধ্যক্ষ এক অবিতীয় প্রমান্তা। প্রমান্তার এই পূর্ব মঙ্গল—যাহা সমস্ত প্রকৃতির মূলে কার্য্য করিণ। দকলকেই নিম্ন পংট্রু ইইতে ক্রেন্স করেণ ইচ্চ প্রক্রিতে উঠাইয়া দি-তেছে—এই পূর্ব মঙ্গলের সহিত আমরা যদি আমাদের ইচ্ছাকে একতানে মিলিত করি, তাহা ইইনে—শিদ সমস্ত এগতের উদ্দেশ্য বাল হা ডবেল স্বাল্যের ইড়া বার্থ হইবে, বিজ্ঞ বরং সূর্য্য পাশ্যমে উদিত ইইন্তে পারে, নিখিল আবাল বদা হলে নিমল হইতে পারে, তথাপি পূর্ব মন্তলের একটি বেণ্ কলাও বিচ-লিত হইতে পারে না, ধ্রাণ ধর্ম প্রান্থ ব্যক্তিক আন্যান্তিক শত্যমানের দুব্তম লা-ভাবতে বার্থ হইটেড পারে না।

সৰকেই পৰিতে আনিতেছেন যে, এ भगतः एक कि दूरना इहेन, मगस्य विशि र्थात, राज निया नना **१६न**ा कि छ छित्रमः-ছার্ত্বে বাদা বোদা সম্বন্ধে সূই একটি क्यो वहाः भावनाकः। অনেক কাল প্রস্ব বেদনা ভোগ কার্যা, সার্থ—গর্ফের প্রান্ত করে, গার্চস্থা কোলীন্য এসৰ করে কোলীন্য *– গভাতা প্রদার করে, সভাতা–গরমার্থ প্রদান করে। এই সব প্রদাব বেদনা বিপ্লব নামে প্রাদিদ্ধ। ধর্ম্ম-দোপানের এতােক পংক্তিতে হাঁ এবং নাএই ত্ইটি দিক্ আছে; ' ভাহার মধ্যে না'ধের দিকে লোকের বেশী কোঁক পড়িলেই লোক-সমাজে বিধাৰ ওমাতা-মাতি উপস্থিত হয়। এত শতাব্দীর করাশিন্ ताबा-विक्षव देशव अकि जाञ्चल गान ध्यान। গত শতাকাতে, ইউনোপে, সভ্যতা-পংক্তি হইতে প্রমার্থ-গংক্তিতে উথান করিবার একটা অবাবস্থিত উনাম--আঁকুবাঁকু--চারি-দিকে মন্তক উত্তোলন করিয়া উঠিয়াছিল। 🍅 অবস্থায়, সভ্যতা-পংক্তি ছাড়িয়া 🖙 ওয়া बौदात फिक् (अनिक कतामीन वादकात রোলে। ইহার পথ এ দর্শক), ও পরমার্থ পংক্তি

অবলম্বন করা ই'ায়ের দিক। খাঁহাদের মনো यटका है। देशत पिक् चामुर्ग शमतीरक छेशान করিয়াছিল, সে-সকল জানী লোকের সংখ্যা অতীব অল্ল হইবারই কথা। জ্ঞানী লোক-**দিগের ভান।**বিঠিত আদশ সাধা ব লোকেরা g কেমন করিয়াই বা বুলিতে পারিলে—কাজেই माधातन लाटकत भटन वर्ष छत्र प्रिक्त पिक्छे। हे तिश्र-রীত প্রবল হট্যা উঠিল। সভ্যতা ভাডিয়া **एक निएउ**्**रहेर्य-** १३ छिटे प्राम्तात्कर जन মাত্রত হইয়া উপিল্ড ও লাম্ভলত ভিতে আংরেছের কালতে হলে । পভারটি সাত হাও কলেব ঐলে গ্ৰন্থ প্ৰচিপ্ৰ গ্ৰেল। देश्व क्य कि इंग्रेस । धन-मार ८३०० छ পরেরে সভাত তেতি ও এখার হয়খা ভোগালন । এখন উপায় কি 🕶 পদশাৰ্থের আবসন 🔑 থানো এত এবেদা হয় নাই খে, ওাছ, জন্দ দাধারণকে উপলে চানিয়া ভূনিকে, জ देवरी साद 'त बाकर्तन विकासिक मिला नाहिका कुन-मर्गाष्ट्रक मेरिक हेर्रामस्त विश्वपन १८०३ । **अहिन।** "अ'रोनका शक्का वाङ्कान ५०० গৰগুলি গুনিতে পেছন সমধুর, স্যালাহ পরমার্থ। বিজ্ঞ ফরাসন্বিধ্বের অভিবান খুদিশা দেখ দেখিবে -- কি ভয়ানক। জানিন ভার আর্থ স্থেছোষ্টার স্মাতার অথ নামতার ভাতৃভাবের অর্থ ভাতৃবব ৷ বর্তুমান কলাফী সভাতা পংক্তি হইতে প্রমার্থ পংক্তিত উথান করিবার জন্য এক্সন্ত ২ইতেছে: किसा भारिएव जिकाक - श्रांशाविनी भार्यह षिक् के—मार्वेशान । आगतः महाका लोकि-কতা এবং সামাজিকত। পরিত্যাগ কবিতে खेनाछ ;-- **बार्निक्टे** बामना मान मान के ह-রাইরাছি বে, আমরা পারমার্থিক লোক---লোকিকতা আসামাজিকতা আমানের জন্য শ্নহে; লোডকৈ (অর্থাৎ অক্ষম লোককে---ক্ষতাশীল লোকের কথা সভক্র!) আমরা फतार ना,-ताक त्वन ७५ (करन छतारे-

প্রি**ই সাম্**ঞী --ভাল বাসিবার মাল্ডা নঙে। भटन कर देवन आभर। आगातित । ना ताना যতকিছু আচার বাসখাস পাতি-নালি সভাতা সমস্ত ই ছারখার কলিয়া ফেলিলাম - ভাছার श्री जामास्ति प्रमा कि इतेर । तद्यान कादम भवगादर्श भाकर्ग कि १५७१ अन्न কৈইয়াছে যে, ভাছা আন চিলাত সংচ্ছা- পংক্তি হইটেত প্রসাপ-প্রভিত্ত এক ক্রেম্ मिनिया गीयर्व १ क्यमण मा-- ४६८० छ। छ। ভাছা প্রেই দেখা সাইদেরে, অ্লাডের মুগ্রুগান্তবের সঞ্জিত সভাতে ৮৮, জনে ত্রু भार्चाटफ श्रुनिमाद कविष्ट । व्यक्ति दुर--- वर्ष श्राहर । भू विद्यार्थः । अथन । ११ ५०० १ । च - वाकरणः Deline (more afficient, from fire असार । १६ १६ कि संस्था वस्त । साम्रा এখন ভবিষ্ণ-গট্রেটি এই চল্ট টেল্টির্যা ভান্যা আমানের ই ১৬ গে, আম্মা কেন্দ্র गान भारतानि । भागाविकसा न्योतिकसः নেবং সভাত, গ্রন্থ পার তবাহিত রাখিয়া অংশে আরে প্রম্পের নির্কে শ্রেম্পের ভার ;—পর্বতন মতা বাতি-নাতি সমস্ত ই ানিজাপ না কাজা—শুস কেবল ভাছাৰ জ্যার খংশ-ভূলিই ৭ রভাগ কবি ও ভাঃ ব সমস্ত সালা শানিকৰ্যণ বলিয়া ভাগের উপ-(तरे लागात्वत ६० लडन जात्र कार्-ভাষা হটলেই আমাদের ইতিহাস প্ৰায়ত্ত ছটবে, ও আসাদের অভীপ্ত কার্য্য বাচ্চ্যত অএশন হ**ইবে। হ**ার-একটি ব ্রাই (য, কৌলীনোৰ কাল জান সিংস্ছ, এখনকাৰ কাল সভাতার কাল। গ্রাক্ত গ্রের শেষন এট এক জন অসাধারণ ন্যাক্ত উপিত ২ইয়া আব আর বাক্তিকে ও এক দুর পশ্চাতে ফেলিয়া বিতেন, এখনবার কালে সেরপ প্রাধান। লাভ করা সহজ ব্যাপার নহে। এখনকার কাল গৌরুষ-প্রকাশের কাল নহে, কিন্তু কার্ষোদ্ধারের কাল; যাহাতে বিশিষ্ট-

المستحد سيت الجا র: প কার্য্যাদ্ধার হয় -- তাহার প্রতি দৃষ্টি हाथिश विकत्म भैराद्वा इटेश कार्य करारि खरं•का कोटन भाषा भाषा। কিন্তু আনু यारिक एएटम अथरना कोलीरनात्र अर्थान शाहरीय के मचाठात अमिन शैनावया त्य, ্রকান একটি ক্রিফ্রিনাগ্রনের অভিপ্রাণে দশ-कन अवज ऐटेटमेरे कार्र्याणाटहरा पिटक . কাহারো ল্কা টাকে না—অপনার আপনার श्रीपादनात श्रिटक मकरलत्र हे लका मिनिहे ই উ/রাগীয় কার্যা কেত্রে, কার্যোদ্ধার – ভাছার পরে আর ঘাহা কিছু,. এই-মে-এফটি ভাব দেখিতে গাওয়া যায়, ইহাই সত্যতার সর্ব্যেধান পরিচায়ক। ইউ-রোপীয়'দগের নিকট হইতে আমরা জার-किছू शिष वा ना निचि- এই পরস্পরাধীন ভার ভারটি শিকা করা আমানের প্রক भिर्माष्ट्रे जानमांक इहेग्राट्ट। जानात जाल-মাৰ দারাই বা কি কাঠা ও ক : গা কাঠা **ইতে** পারে, এইটি নিরপেক্ষ ভাবে পর্যন্ লোচনা করিয়া দেখিয়া আপনি আপনার উপযুক্ত কাৰ্য্যে প্ৰায়ন্ত ছওয়া এবং অন্যক্তে তাহার আপনার উপযুক্ত কালে প্রবৃত্ত হইতে পেওয়া—ভাহার সে কার্গো কোন ্রপ্রকার বাধা নিক্ষেপ না করা, এইটি হইলেই সকলে সমবেত হইয়া কার্য্য করিবার পথ---এক কথার সভাতার সোপান—আমাদের ্রেশে ভিত্মক্ত হইয়া যায়। এরপ হইনে, সভাতা-পংক্তি হইতে পরমার্থ পংক্তিতে উত্থান করিবার পথ এখনকার অপেক্ষা অ-নেক পরিমাণে নিঘণ্টক হইয়া যায়।

প্রাপ্তি স্বীকার।

শাৰীরা রুতজ্ঞার সহিত্ত প্রীকার করিছেছি যে নিয় লিখিছ ও প্রক প্রিকাণ্ডলি উবহার প্রাথ হইনামি

- ১। ঈশর ভোত্ত ও প্রার্থনা। বাকুড়া ব্রাহ্ম-স্মান হইতে দিতীয়বার মৃত্তিত হইয়া প্রকা-
- ২। নবগীত মন্তবি, প্রথম **খঙা।** জী নবীনচক্র দাস প্রবীত।
- গাঙ্খা-সূত্র। কপিশ মহর্ষিক্ত। অনিক্রম্ব
 ভট্ঠত কৃত্তি ও বজাল্বাদ সহিত শ্রী কালীবর বেদান্ত ানশ কর্ত্ব সংশোধিত ও প্রকাশিক্ত।
- হ। জীবন প্রীকা বা ভীষণ শ্বঃ চতুইয়।
 প্রিয়নাপ চক্রবর্তী ধারা বিরচিত।
 - ৫। শত্রল। এ হিতেজনাথ ঠাকুর অণীত।
- ে। ভক্তি ওভাক। গ্ৰীপী ক্ষ**াস**ন কৰ্ক ব্যাধানিক।
- া। নীতি পূল ওনটালপ্ৰা জী ইংশা**লচনা** বি**রু** পিলেডিডি।
- ৮। মণ বালেল। স্লিলনীব চতুর সাংবংশরিক কার্বি বিল্লেল। অধাক ১২৯২-৯৩।
- চ। ভোনিও পানাথক চিলিৎসা সার। জী গ্রন্থ ক্লিক নাম ছ কর্ত্তক সম্বলিত।
- 5.1 Phronological videtion of the brain in its montal functions by Nursing chandra Haldar.

Jurnal of the Asiatic Society of Bengal Vol LV, Part 1. No. 111, 1886.

Proceedings of the Asiatic Society of Bongal November 1886.

Theorophist—December 1886.
Hindu Reformer, December 1889.
Reflow-Worker—November 1886.
ভারতী ও বালক। অগ্রহারণ ১২৯০।
লব্য ভারত। মাদ ঐ।
বামাবোদিনী অগ্রহারণ ঐ।
বোধা। ঐ ঐ।
বাধা। ঐ ঐ।
বাধা। ঐ ঐ।
বাধা। ঐ ঐ।
বাধা।
বাধান আন্তর্গানিক ও অন্তর্গান ঐ।
আর্থা-প্রতিক্তার অগ্রহারণ ঐ।
আর্থা-প্রতিক্তার অগ্রহারণ ঐ।
বাধান আন্তর্গানিক ও অন্তর্গান ঐ।

বিজ্ঞাপন।

বহুকাল হইল আদি প্রামা-সমাজের গৃহ নির্মিত হইয়াছে। এখন ইহা নিভান্ত জীর্ণ 🗀 ১১ মা বের উৎসব উপলক্ষে বহু লো-কের সমাগম হয়। ইহাতে বিল-ক্ষণ অনিটের আশঙ্কা আছে। এ জনা টুটীরা এস্থানে ঐ উৎস্ বের অনুষ্ঠান করিতে নিথেধ,ক পরে আদি ব্রাক্ত রিয়াছেন। স্মাজের অধ্যক্ষেরা শ্রীমৎ প্রধান আচার্য্য মহাশয়ের নিকট প্রার্থনা করাতে তিনি অপিনার বাটার विश्वशाकरण भारयाध्मरदेव स्वान স্থির করিয়া দিয়াছেন। 'অত এব আগামী ১১ মাঘ রবিবার প্রাতঃ-কালের ত্রক্ষোপ্তাননা আদি ত্রাক্ষ সমাজের তৃতল গুহেনা হইয়া শ্রীমং প্রধান আচার্য্য মহাশরেয়র বাটীর বহিঃপ্রাঙ্গণে হইবে। ঐ দিন সৰ্বদাধারণে প্রাতঃকাল ৮ ঘটিকার সময় ঐ স্থানে উপস্থিত হইয়া ত্রন্মোপাস্না করিবেন।

> ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর। সম্পাদক।

আদি ত্রাক্ষমনভের নিযুক্ত কর্মচারী।

गर्मार्ग रः

बीयूक ताबनावायमं वह ।

160 (2002)

कामुक कारतन्त्रनाम शिष्ठ ए ११ (द्वाराज)

- . ु, प्राणानीम स्थल्यानाम ।
 - ,, जसनीरमा**रन** ५८५ विश्वास ।
 - , यह अमन वर्षानीय ।
 - .. खेनाच चिंदा
 - ,, 'लगक्तान ग्रेक्ट ।
 - ,, প্রিয়নাথ নার্থা।
 - ,, पाश्रदाचाध (छोत्रवी।
 - , जिम्मनाव मृत्रावृत्ताम ।
 - ः वनीन्द्रनाथ ठीक्ता।

St. 20 11 10 250 1

शिमुक तरीलनाव क्रीकृत।

स्टब्लाडी सम्मामक ५ ४०० प्राप्ताः

त्रीयुक्त नीनगर्न प्रद्वानाचात i

भगा पाक स्था

শ্রীসুক্ত শ্রীনাথ মিতা।

তথ্যনিদিনী পাত্রকার সম্পাদক। । শ্রীযুক্ত দিজেন্দ্রনাথ ঠাকুর ।

্ণনী পতিকার সদকালী সন্দাদক। শ্রীযুক্ত হেমচন্দ্র বিদ্যারত্ব।

আধ্র বায়।

स्रोवन क्षेण्**ड क**ार्कित । अ खाक्र श्वर ४१।

णापि जाश्रानगाय।

u.	A13		***	>988Ne/o	
Т	পুর্বাহার স্থিত		***	2 Ston	, Eg
			the second applies on their	fig in the se definition to	
	সমষ্টি ু	***	4 > 1	भवर्याङ	Ç
	ব্যন 🔭 🐽	•		২°৩১॥	Ç,
		•	region at reference in it repr	graph to a supplement	
	145	* 6 4		২ ১৯৪৩/	į

, ,	, •
जार ।	
्खाकामस्य	> > কার্ন্ত
माभक भान	-
अभग्रहिषं (+) अञ्चनाथ ठोतूत्र	
্থন্ধ শৃথীত বিদ্যালয়ের সংহা	T Paky
শ্রীকু জ বাবু স্ববীজনাথ ঠাকুর	Str. u
" " अम्पीरमस्य एट्ट्रालीशा	म् २८
" " শ্ৰীনাথ মিট্ৰ	31
" " देवकुर्श्वनीध टमन	₹,
मुचिदम्शिक मन्ति ।	
तात तमनीत्यासन क्षित्री कृताला	त २ ८

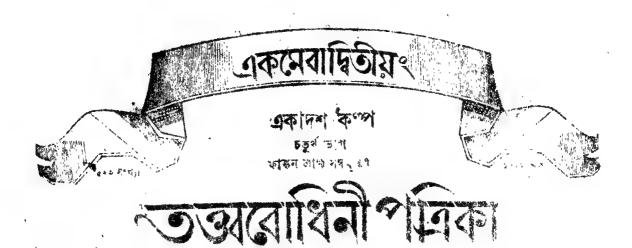
প্রায়ুক্ত থাবু জ্যোত্রিজনাথ ঠাকুর

গগণেজনাথ ঠাকুর

कानीगाध कछ

नीलकरन मूर्वादीधाप

প্ৰিয়ক বাব ভূমেশচন্ত্ৰ কন্ত্ৰ		
" বৈলাশচন সিং	₹	3/
" " নকুড়চন্দ্ৰ বিখাদ	1	*
७ ७ ज दर्	त्र मान ।	
লীমুক্ত কান শ্যামা প্রসম চটে	ीर्था ग	5
, नामाधारत क्षां छ		• ७५॥५
	ingentaria e del negoni fratganego, ao	
ভত্তবেংধিনী পত্ৰিকা	* > *	રમ્યાહ
্বস্থকালয়	***	(१०१०)
रखाना 🕌		৮৩৯।০
্দক্তি ত	• • •	২৩৯ /৯
ব্ৰাক্ষণ্ডি গ্ৰন্থ প্ৰকা দে ৰ	মূলধ ন	હરમુ
্মাণ্ডাগম ভাগার	***	801
দাতব্য	••	b-64.
. অ্ধংশপ্ল রাম্যেও		2218
স্যৃষ্টি	1 (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1	>9aBrieto
` ব্যয়	1	
डाकाः गाज	9.4%	७५३॥ /७
তত্ত্বোধিনী পত্তিক।	• • •	୬ ୧୬]୬
अक्रकोस्य		* 98/8



व्यानाम्बद्धिकप्रवासीकार्यत् (त्तन्त्रभाविद्धं सम्बद्धावारः तात् जित्रः त्राममन्तः व्यानाद्रत्यः व्यानाद्रश्यः वर्ष्यदेशिषः स्वात्र्यन्तः स्वीत्रवस्यवित्रम् सर्वत्रः द्वात्वनम्बद्धारम्बद्धारम्बद्धारम्बद्धारम्बद्धारम्बद्धारम्

माराज्यस्थात् राज्यसम्बद्धाः सर्वित । सर्वित । सर्वित । स्थित । स्थित ।

আদি ব্ৰাদ্যনাজ।

৪ মার হাসদার ভাগ্য স্থ, ১৭ ট

का (गरकात है भागा-

আস্যা প্রতিক্রেই আপনাতে আপ-নাকে সুই,ভাবে দেখিতে প্ৰতি,—নিখিল সমতের সহিত সংযুক্ত ভাটুল, এবং নিখিল সমস্ত হইতে বিচিহ্ন লাবে! সমস্তের পাহিত সংসূক্ত ভারই পারমাথিক ভাব, আন ংমন্ত হইতে বিজ্ঞিল ভাবই সাংখ্যারিক ভাব। बहै भातगार्थिक लातम भून किन्त यथर भ्रमाञ्चा, এवर এই मारमातिक ভाद्यत भूल कि को वोजा। भद्रमा**जा**द **मा**र् की वा-श्चात (राज -शत्रमार्ट्यत महिन्छ मेश्नादात যোগ—অকাল মহাকালের দ্ধাহত বর্তমান कात्मत्र त्यान-ेहेहाई अशार्क त्यान । अ-ধ্যাত্ম-যোগের নানা পদ্ধতি দানা পাত্তে উপদিপ্ত ছইয়াছে, কিন্তু যে পদ্ধতি আৰা দ-গের পর্কে সর্বাপেকা শোর ভাষাই ভাষা-वर्ष छेश्रान्छ इहेब्राट्ड; छाड्। बहै,-

"अन्दर्भाष्ट्रः भाषाणाया सम् काष्ट्राह्याः अथ-बहस्य दर्बनाः भन्नदर कत्याः ग्राक्टनरः"

তভার ধরু সর্জাপ ক্রীবাছা পর স্বরূপ

·447、1077和1700、新原,在1077、107、107、40元,40元至。 <u>ই</u>পা জাপে **গেই** শ্ব পিয় বালে বাল জালত প্ৰব্ৰক্তে উল্লেখ্য ১৯৮ এক। हैं। राज्य क्ष्रिय काका आया प्रमुखा क्षाक्रा व श्रमात नुना हरे हर हरेटन अभारतः भूत कहिन এং অন্তঃকরণ হইতে উচ্ছিত করা আন্দাক। প্রমানের মূল ফাবণ আমানের আগ্রপরিমা ; লার পারমার উচ্ছেদের একমাত্র উপায় वके - भवगाया इरेट रिक्टिय रहेटन की বাস্থা যে কি এগাড় হীনাক্ষণে নিপতিভ হঃ ভাগ আপনাতে সাক্ষাৎ উৎএলি কর।। জাপনার এ**কান্তিক আ**কক্ষুত: উপলক্ষি কলা, পার, পরমাত্মার অপার মাধ্যালা উপ-লান্দি করা—এ তুই উপনাধি-কার্যা আন্তবি-करे किছू बात. धुरे कावा नरह--हेंहा अवहें কার্মোর তৃই পৃষ্ঠ। আপনার প্রগাড় ছাকিঞ নতার উপলব্ধিতেই পরিমান্নার মাহাজ্যের উপলব্ধি হয়, এবং পর্যাত্মার অপার মাহাজোর উপলব্ধিতেই আপনার প্রগাঢ় অকিঞ্চলতার উপক্রি হয়। এ কথার স্তাদিতা যদি পরীকা করিতে চাও—তবে দিপ্রহর রক্ষরীক্তে একাকী কোন বিল্লিকা-নিনাদিত গ্রহন অর্ণো প্রবেশ কর— পর্বান্ত

क्राप्तरण अगन करनेक जबना जारक दिश्यादन জিল অন্তৰ গতিবিদ্ধিনাই—সেইরূপ কোন অর্থী দিপ্রহর রজনীতে একার্নী প্রবেশ কর, তাহা হইলেই—এক দিকে আপনি धनः षातुः,धन फिटक निषित्त मगल- ७ है চুনের তুন্ত ব্ আপনার প্রার্গাঢ় স্থাবঞ্চত। (मनीअन्यान इहेश छेठिता; स्मृष्टे निछक মুছুটে নিপিল ক্ষুম্প্ত ভেদ করিয়া শ্বন ঈশ-্রের পাইত্র চক্ষুব্রারত আ্রার গভীরে নিপ্তিত হইবে -জিখন পাপ কল্মিত আছা আপাদ-মন্তক প্রকশ্পিত হইয়া উঠিয়া লুকা-ইবার আর ভান পাইবৈ না; এই সময়ে यथेन शाधक केटिक:श्रदत अहात कि किका-**রণ করিয়া পরমাত্যার অপ।র করণার অভা-**ভাষে প্রাবেশ করেন, তথনট ওল্পার ধন্ত অবর্ষপুনে ্কীরাফারপ শর পরবক্ষরণ नत्याहरू जमतीकृट श्रेश गांत !

গর্মাত্মার সহিত যোগযুক্ত 💘ইতে ছইলে যায়াই তাহার একমাত্র দার-ভিড়িল দিতীয় দার**্নাই। আত্মার** দার তিনটি--জান প্রেম এবং কর্মা; তাই অ-ধ্যাত্ম-খোগ বিধা-বিভক্তে ভান-যোগ,তে,ম-খ বৈলি এবং কর্মিবলৈ। স্মাপনার ভাগাড় া আছ্ডলে। ছানে ছার দিয়া **ঈর্বনের সর্ক**-का उनम्बि कताई कान-स्याद्भन था-तक मूख है। जागता जनका स्नानि ना "हुई चात छूटत शाँ। इरा" कानि ने — देशे चाना-দের শভাতার লক্ষণ নতে,—কিন্তু দাসলা , मठा क्रांनि ना - अक गाहि कुछ कुर्यव छ था-कृष्ठ उप कानि ना-हैशह बाबाएन व्यख्न-'তৃই আৰু তুয়ে পাঁচ হয়" क्षत्र लक्ष्म । ইহা আমরা জানিও দা—কানিতে চাইও ना, এই खना जागता छारा जानि मा क्रिके जाभारत्व (शरमंत्र क्लान कात्रण नाहे। क्राह्म महिल शहात चामरवह देवान में न्त्रक नाह अंतर गडा श्रामक श्रामिन ना

यनिशा रेजिलिशोत जातिरका चंड छ त्यम এক ক্রিয়া সাবেদ ; কিন্তু পত্নী আরু कुट्य शांह" दर्गमन इंडेटेंट्डे शाद्य ना-পূর্ত্ত পতি থেমন ইটড্ডেই পারে মা, म्ब्रीतान कारनत महिल अटकवादतर मन्नार्क-রহিত—এরণ সতা হইতেই পারে না,— অত এব তাহা না জানার জনা খেদের কোন কারণ দেখিতে পাওয়া সায় না। অবশ্য, এমন অনেক সুক্ষা সতা আছে, যাই आंगाटण्य कूम खाटनत बरगाहत,—किस्र यार। একেবারেই ছভানের আগোচর—ঈশ-রের ও জ্ঞানের অ্লোচর—এরপ দ সতা হই-তেই পারেনা; "ছুই আর ছুয়ে পাঁচ্" যেমন অসপত, ওরণ অন্ধ সত্তাও সেই-রূপ অন্সাদ্ধ অত্রব ওরূপ স্ক্রিজান-বহিভূতি ম**ত। আমরা ভানি না বলিয়া**— অগতা জানি না বলিয়া—আয়াদের খেদের कान कावन नाहै। याबाहुमव द्थटम्ब का-রণ কেবল এই বে, আমরা একগাছি ভূণেরও প্রত্তত্জানিনা, অণচ্**আমরা আপ**-নাকে বিপর্যায় জ্ঞানী **খনে ক**রি। ^১ **আন্তর**ি দে কত অভ্যান্ত্য বিদ্যোমরা একবার প্রণিধান-পূর্বক ছাদয়ক্ষ্ম করি, তবে সেই প্রে আমর। এই মছানু সভাটি অদয়ক্ষম করি যে, ঈশক সমস্তই জানিতেছেন। व्यक्त व्यायादमद्भी व्यक्तकार्वाम् इच्द्रिंगुनी र्षक्तकावादमञ्जनात्र मुनीक बहुद्दिनहामाशूर्न নুহে, কিন্তু আমাদের অজ্ঞত**ি ক্**বর-প্রায়ালে जिल्ला है कारन शतिन इहेत्स शाकित वह রূপ আশার পরিপূর্ব।

ওপর, আন-যোগ কি । জাপ্রার্থ জন্তা-উপজ্জির মধ্য বিষা প্রশাস্থার পুর আরে বৃত্ত হয়্যাই জান-যোগ ; আপস্থার অভ্যতা-জান একানে নার-ম্বর্গ ও প্রথান জ্বার প্রভাগ জন্ম বিদ্যান্ত ব্যবস্থা প্রথান ব্যবস্থা জ্বান জন্ম বিদ্যান্ত জনিত ব্যা- -

কুলতার মধ্য দিয়া পরমান্তার প্রশানশে যুক্ত হওরা; অভ্যকরণের বাাকুলতা এপানে লর-সরপ ও পরমাত্মার পূর্ব আনন্দ এখানে লক্ষ্য-সরপ। কর্ম যোগ কি ? না আপনার প্রগাড় বিজ্ঞাত দৈনের মধ্য দিয়া পরমাত্মার মদলময় শক্তিই লক্ষাযর্ত্তা এইরূপ যত প্রমাত্মার অধিকনতা এবং পরমাত্মার করণাই সমস্তেরই সার সহল।

হে পরমাত্মন্। এই ভয়াবহ সংসারসমুদ্রে ভূমিই আমাদের একমাত্র কর্ণধার।
আমরা অজ্ঞান ও মোহে আচ্ছন হইরা
বিপথে পড়িলে ভূমিই আমাদিগকে জ্ঞানালোক প্রদর্শন কর; আমাদের প্রাণ অধারে
কলন করিলে ভূমিই তোমার প্রেম-মুথ
প্রদর্শন করিয়া আমাদের ব্যাকুলতা হরণ
কর; আমরা দীন হীন অসহার হইরা আমাদিগকে অমোঘ আত্রয় প্রদান কর; ভূমি
আমাদিগকে পরিত্যাগ কর নাই—আমরা
বেন তোমাকে পরিত্যাগ করিয়া সংসারের
বিষ্ময় পথে বিচর্গ না করি—ভূমি কুপা
ক্রিয়া আমাদিগকে তোমার প্রসাদ বিতরণ

🐃 🖑 🐧 একমেবাদিতীয়ং 🕞

সপ্তথকাশ সাংবৎসরিক ব্রাক্ষমাজ।

>> याच द्रविवात ६१ छात्र मन्दर।

লোড:কাল।

थरादत शृक्षानाम क्षेत्रद ८ थान काहार्य। महानदार्वे ताणित क्ष्युक्तानद्व ३५ गाँउवन श्राप्तकार्मीन ग्रहादम्बक्तस्यक्ति। क्यान অতি বিস্তীর্ণ চন্দ্রাতপের , নিম্নে ও বাহিরে
বাহ সংখা লোক উপবিপ্ত হন। প্রাত্তঃকালে
এরপ জনতা ও উৎসাহ কখন দৃত্ত হয় নাই।
ভক্ষানামের কি গুড় ও গলীর আকর্ষণ। এই
নাহোৎসর্বে কোন বাহাাড়ন্দ্রর নাই অথক
লোকের এইরপ অনুরাগ। ইহা বাস্তবিকই
ভাক্ষের মনে ভবিষ্যতের আশা প্রদীপ্ত
করিয়া দেয়। ক্রমশ জন-কোলাহল নিস্তর্ব্ব হইলে বন্দনাগীত আরম্ভ হইল। পরে
আচার্যোরা বেদি প্রহণ করিলে পতিত প্রীহেমচন্দ্র বিদ্যারত্ব দক্ষায়মান হইয়া নিম্নের
উপদেশ ও উদ্বোধন পাঠ করিলেন।

ধর্মসাধনই ত্রমালাতের কারণ। কিন্তু
কথাটী বড় সহজ নয়। ইহার জনা ইচ্ছা
চিন্তা ও কার্সের ক্রমণ সম্প্রসারণ আবশক।
কিন্তু কোন্ উপায়ে ইহা সহজ। মতুয়ের
যথন সমাজবন্ধন হয় নাই তখন প্রস্তুতি
তাহার নিম্তুর ছিল। এই প্ররুতি হইতে গ
সার্গের জন্ম এবং আর্থ হইতে গাহ্ছাের
ভিত্তি নির্মাণ হয়। এই অবস্থায় ক্রেল
সার্গের আর একারিপতা থাকিতে পারে না।
সমাজের ছিতির নিমিত্ত পরার্পও ত্রপণেয়
হইয়া উঠে। আমি যথন সমাজ্বর্নুত্রে, আর
পাঁচ জনের সহিত সম্বদ্ধ তখন তাহােদের
সার্থ জামার উপাক্ষার বিষয় ইইলে চলে
সা। স্তরাং গাহ্ছাই আজ্যুক্রাসারণের
সহজ ও স্কার উপায়।

একবে দেখা বাক্ কোন্ সমাজের গাহ'বা বলেবা ইহার অমুক্ল'। তুমি পূথিবীর
বৈ কোন সমাজ পরীকা কর তথাধো ভার্থ ও
পরার্থের সঙ্কোচন ও প্রসারণ কেখিতে
পাইবে কিন্তু প্রাচীন ভারতের গার্হ সার্থনি
পেকা সভক্ত। এখানে পরার্থই সার্থ এবং
পরমার্থ ভারার নিয়ন্তা। এই শর্মার্থের
নামান্তর সার্কভাল মহাত্তত। অর্থাৎ
ইয়া কোনকাল নিরপেক বিভাল ধ্মনিয়ম।

জীবন নিয়মিই ছইত । আমি এই প্রসঙ্গে ,অ্রিক বলিতে চাই না, ছত্তিশ বৎসর তৈনে-িক ত্রত স্থাপনের পদ্ধ গার্ছয়ে প্রবেশ ালিয়া লোকে যালা করিত ভাহারই একটী উল্লেখ করিব। প্রাচীন সমস্ত গার্ছা কা-র্যোর একমাত্র পৃষ্ঠবংশ প্রক্ষমভ্য। এই পঞ चक्क भारक इश्राह्य जातीरक सान क्षिए পারেন ইহা প্রাচীন কালের কুদংস্কারোপহত बैंकरी गःकीर्न जिल्ला याजा। বান্তর ইহা ক্রিয়া বটে কিন্তু ইহার প্রসার শিশব্যাপক। পুখনকার পার্ছরা নিয়নে সগৃহহর বড় জেনা প্রতিবাদীর কডকটা শ্রেম সম্বাধিত হয় কিন্তু अहे थांडीन शक्कानुष्ठाही गृहोत गृहा धर्म ক্ষুত্রনির্বিশেকে দার্বডে)নিক মঙ্গলে প্রসা-ির্ত**্র্**য়াছে। এই জনাই বালয়াভি পর• मार्थ हैहान निका। कनठ हेश शृहोत रिमान विक्रिके जनविश्वार्य कार्य हिन। ইহাতে এইক ও পার্যত্তিক সমস্ত প্রেয় সম্পূর্ণ লিজর করিভ এবং ইহা ছারা ইচ্ছা চিন্তা 🕊 কার্যা ক্রমণ সম্প্রদারিত ইইয়া পরম প্রিক্ষার্থ স্নাতের পথ উন্মুক্ত করিয়া ্দিত 🖟

দেব, ঋরি, পিভূ, মনুদ্য ও তির্বাক্জাতির লেল এই পৃথিষজ্ঞের **স্বস্ত**ূত। **उभाषा**। न 🖟 खक्षानूका (त्पवटमदा । 🖯 व्यक्षायन ७ व्यक्षायन বা ষ্টেম্ব /। লোকান্ত্ৰিত আত্মাই সারণ থিত-সেবা 📝 অভাগতের অনুদান মনুষাদেবা। चात्र विञ्चलक्यातिक ज्लिमायन क्रिट्रमा। ल्यान यसु रामशाट्यन यिनि क्षां अनिन এह পঞ্যজ্ঞের অনুষ্ঠান করেন জিনি ব্রহ্মকে उचा मर्द्धरााशक 🚱 मभनगी। প্রাপ্ত হন। ভাঁছার 🖂 🧸 জন্ত নাই, স্লেহের পান্ধ নাই। তিনি এক পলকে আমাদের ইহ কার ও প্রকাস উভয়হ প্রতাক ক্রিতেছেন। এই यहान कान्द्रन कुछ शाक्षनीक धामात्रत्यत

এই মহাজতে প্রাচীন ভারতের গাঁহত। চেষ্টাই হিন্দু । জানাখন ও ফেনেব।। প্র ক্ষুদ্ৰৰ এই কএকটা কাৰো তাহাই বিদ हरेश शहर । काम बाता धनाटक त्यार-मुख्य करी जरशका राष्ट्रक कार्य जात नाहे, এই বুকিয়া यहेजिश्में वर्मदत्ते मश्रष्टि छन-নের উল্ল আরও লাহনণ ও মুক্ত হতত ভাহা বিভঃণ করা হইত। িহা জ্ঞান**যোগে** জন্মমাজে আত্মপ্রারণ। প্রাচীন হিন্দুর হ্মদয় কেবল জীবিতের শুভ কামনায় তৃপ্ত নয় এই জন্য যে সমস্ত আত্মাপৃথিবীর মারা-বন্ধন ছিড়িয়া লোকভিরে বাস করিভেছে, বেবাং ন মাতা, যাহাদের মাতা নাই ঈশ্বরই যাতা, ন পিতা, পিতা নাই ঈশ্বরই পিতা, न तक्षुः, वक्षु नाष्टे धेयत्रहे वस्तु, रेनवाधिनिक्तिः, অর্চনিদি নাই ঈশরই অন, শ্রেদার সহিত প্রতিদিন গ্রাগাদিগকে শ্বরণ ও ভাহাদিগের উর্নেহিক ওছ ফামনা করা হইছ। ভাদ্ধালে লোকভিনে আত্মসম্প্রসার্থন গ্রাচীন হিন্দুর দৃঁচ় বিশ্বাস নিক্ষের নিমিত্ত গাক করা পাপ আহার করার তুলা, এই कना य अवशृनीत जालोकिंगार डाङारनत একমৃষ্টি ছিল তদারা বর্ণ ও জাতি নির্কি-শেষে কুৎপিপানার আন্ত ক্লান্ড অভ্যাগত খন্ধ আতুর সকল প্রকার লোককে তৃপ্ত করা इंहेज। हेश मामार्यारण ष्याज्ञश्रमात्र्य। পুথিবীর পশু পক্ষী প্রভৃতিকে আর কে কু-পার চন্দে দেখিয়া থাকে, উহারা তো মনুযোর जन्म अनुष्करण है पिल्ड इह, किन्हें शृद्धित গার্ছা নিয়মে তাহাদিগেরও ক্ষুৎ্পিপাস্ উপেক্লিত হইত না। ইহা কর্পারোলে আত্মপ্রগারণ দ

> এই তো পঞ্চত ি এখন বুৰিয়া দেশ **এहे ममख** कार्या (करते हैं भन्नार्थ अंदर अहे नदार्थ यार्थ ब्रह्म उ। এই का भृद्य निव्रम ক্ষেত্ৰ নিজের জ্বাতিবানীর নগা কিবা সাক্ত ficia non gina placete

ইহা প্রমার্থে কি না সার্বভোগিক মঙ্গলে প্রাকৃতিত।

हेिल्युर्किहै विजिलाय यहान खामर्ग कूं जाक निक्क धानात एवं एक हिन्दूत वर्ष्मिमाधन ७ (फबरमदा । क्यू मनूषा अनल কাল ভাহাই করিবে। যে কাৰ্যা অনন্ত কালের জনা হিন্দুর গার্হস্থো তাহারই প্রতিষ্ঠা এবং পঞ্চাকে তাহারই পূর্ণ বিকাশ। ফলত এই একটি কার্যো ঐহিক ও পার্যত্রিক উভয় केष्ट्रभारे माधिक इहेट्टए । हेहा जक पिट्रक (यमन आञ्चन क्रिक्ट श्रमांतन ता धर्मामाध-**নে**র উপযোগী তেমান আর এক দিকে সা-शांकिक छेरकर्न भागतनव छेरादयांनी। तनन-সেবায় আধাত্মিক শক্তি, ঋষিদেবাল দিন্য জ্ঞান, পিড়মেবায় লোকস্তিরে বিশ্বাস, মন্ত্রমান সেবায় সামা, এবং ভুত সেবায় বিশ্বভ্নীন দয়া ও স্নেহ। ইহার একটাকে ছাড়িলে মনুদেরে धर्भभागने षामकुठ इहेचा छिटो । भक्ष्युख्वत এই হইল পার্যাত্রক উপযোগিত।। ইহার ঐহিক উপধোগিতা কতদুর তাহাত 《中華 】

জনসমাজের সকাপান প্রির্দ্ধি করা দেহ
পারণের অপর একটি উচ্চ লক্ষ্য। কিন্তু এই
বিষয়ে হখাত এই কলকটি গুণ থাকা চাই।
আধাাত্মিক বল, জ্ঞান, প্রাচীন স্থানস্থার
প্রতি সম্মান, সামা ও দ্যান পর্মন্তর দ্বারা
তাহাও সিদ্ধ হইতেছে। কর্ত্রা সাধনের
ক্রিডি উপেকা থাকিলে সংমারের ত্রিতি নপ্ত
হয় । ইহার জনা আধাাত্মিক বল চাই।
আবার স্ক্রাপেকা দেবনেকাই মনুষ্যের ভ্রেট
কর্ত্রামাধন্। ইহার প্রভাবে অনাানা
ভাল সকল ও সুসক্ষয়। স্প্রত্রাৎ দেবনেব। হইতেই মনুষ্যার কর্ত্রাসাধনে আন্
ভালিক বল। জ্ঞান ব্যতাত হিতাহিত
উৎকর্ষাণকার ক্রিয়ান্ত্রিক বিদ্ধানীর
বিদ্ধিক বল। জ্ঞান ব্যতাত হিতাহিত
উৎকর্ষাণকার ক্রিয়ান্ত্রার ক্রিয়ান্ত্রার

জীবন পরস্পানায় এবাহিত হইয়া জনস্মা-टेंबत धर्मा नीि ও खाठावानि निर्कातर्ग प्लाहे কথায় সমাজগঠনে তোমার মহকারিতা করি-**তেছে। তোমার ত**রুণ জ্ঞানের ইহাঁর নিকট নতমস্তকে থাকুক নত্বা সমস্তই বিপর্যাস্ত হঁয় এট জনা পিতৃদোৱা অর্থাৎ প্রাচীন স্বাধ্যম্য সন্মান। কোন ব্রেধান ना गानिया कगमगाहकत माजिएम निवादिनत बना कां छि दर्ग निर्मित्माम अस्रामाण्डत म्यान नृत्सा अर्थाए मानादका। अकारत भन्न्या निर्श्वत ताकम, एषाएँ। 5 मा-भाजिक दक्षरन्त्र मुद्दमांस छिन्न विच्छिन स्ट्रेग याश कृशि की होनि छ्० स्वत्य (महे विश्व-खनीन पत्रा। फंजल हेशार अविष्टिक छाजिएल ঐহিক উৎকর্ম-দিদ্ধি বা সমান্তবিংতি অ্নস্ভব रहेश छट्छ। आणीन हिन्द्र दह नक्षण्य । গাহঁছেরে একটা নিয়মে ইহকাল ও পরকাল অনুসূতে রহিয়াছে। এই জনাই ব্লিয়াছি हिन्दूत शाह्या भवमार्थ कि न। मार्कर छोमक বিভদ্ধ ধর্মনিয়নে প্রতিষ্ঠিত।

এই शक्षरक्छत्र **चत्रु**क्षेत्र हिन्दूत्र निरु। कारी हिल। कीरत्नत्र এই सहए छैएम्टना সহায়তা করিবার **নিমিত্তই** তালার দার প্রহণ। এই জন। হিন্দুজীর অপর নাম সহ-ধর্মিণী হইয়াছে। क्षी**लाट**कड़ শिकारे निका। धवनकात नाग्न श्रृक्तकारन স্থীশিক্ষার বিশেষ যে কোন প্রণালী ছিল তাহা বোধ হয় ন। কিন্তু স্বামীর এই দৈনিক শ্রমকার্য্যে তাছারা যার পর নাই হাদয়ের भिका नांच कतिछ। य দোৰ গৃহহत छी नहें করে প্রাচীন গাহস্থার পরার্থপ্রতা প্রা-লোকের দেই আছাভারত। নিমা ল ক্রিয়। फिछ। गृह्हत हु**क बा**छूत जी बालक करें षिणिथ ও পত्रशक्तानि वृत्त रहेटन भटत मन्त्राचीत बनन्त्राम क्रिकेट यायमा। এই कना बहार्य मन्त्र विकास द्वार प्रमुख राज्या

নির্দেশ করিয়াছেন্য কলত এইরপ ধর্মান বোগে করাচার করতে করিছা সংকার, সহতে মুদ্ধ হালরের পারল্গা, সহতে বাক্ শক্তিবান পশুপ্রাদি দিয়া প্রকালে এই সমস্ত কার্যা জীজালির কার্যের শিক্ষায় কত দূর না কর্তুল হিলা। আমার ক্ষুণে ব্যারিছে বোগ হয় গাইছো বিসারতী অলেকা ক্ষণান বতীই পূজা। করেন উদার জীজনা সংসার-দার গন্ধ গুলার সাক্ষণান্ত হয়। কলত প্রাদীন বাহছো ল্লাপ্রব নিবিশ্বে জনসমাজের প্রান্তির ভারাল হইত।

কৃতিবিদা বোকাগ্ৰ, ইছাই, ডিন্দুর পঞ্চ भक्ता अहे अक अभूष्ठीहरू विक उद्याद्धत मेक्ल अभाव लिक्षात्र दीखं विद्ना कि ধৰ্ম কৈ জনস্থাৰ হি কাতিগত কি কাৰ্চ अंक नक्त नाष्ट्रे हैशन ब्लब्स व विद्यात् । हिन्द्र निरावि सार्वेष्ठत अरे निरावि अन्तिन । **उ**ष्टामता वर्गस्य द्वास दिला मुक्त मन्द्रात मजाडा ८१ ८कान विचयात्र श्रक्रियोदन की-कुन कर मनंदलद शिक क्षे कर अपलादन सूर्व विकास आईश्रा इता। हो। कि एक कि भर्डीत कि बतानक । छानावन्त्र (७, मशा तनहे काल्टिड अक्रिशाल प्रतः जानगरम र जागता েতই সমস্ত প্ৰাঞ্জির একমাত উত্বা-निकानी रहेमार । किस्न साविद्व सदकरल হয় তেইমানের সংখ্যার-কুঠার থাত সংগ্রান্থ ও शाह शह मार्ड मिर्याम । जन्म (र उन्हरू अहिद्धां वामर्न दमवाहेलाम व्यानि ३ जावा हिंद्यानतम्य चात्रद्व विश्वाद्यः। स्विवित्न भूस्तानमध आवनीय रुव, याच ग्रह है कन-সাংগ্রেম্ব জী আর্শাক হয় ইহা কথাচ নিশ্ম ল का ब का । वान भामका थारक वह रिशत क्रिक में न्याम्न कत किन्त जनगटन कमाह नियान कात अना। यहबान भाराकीय स्थान कृति अब अर शाहीन भक्षाटल एमने कि यमा हर व क्ष्मी वर्ष हरेटव ।

(केश्वाचित्र) (**टाव्या** उन्नाटा अ ४ गृह ছমুপ্রাণিত কর ট্র জামি নিজে অকিক্স, व्याभाद या निष्ट्र ममण्डे है नित्यत अना अनदः এইয়াণ দানত। সক্ষ ন। করিলৈ তুর্গম ধর্ম-भर्ष हैं। इंटिंग वड़ किरिन। विसूद अहे लाहीन शर्रका एक्तिहें एक जिला ! ধর্ম্মের ফততভাল উদার মত অভিকার করিয়া এক দিনলের সামাজিক উপাসনায় প্রর্ণা-भारत होते गा। अहे कना तिन पिन, शर्मी আপনার আদন উন্নত করা সর্দরণভাবে कर्त्ततः । केशत गलदलर ब्लाममानः। वक्रनालः, ভাষার দিকট আভি বর্ণের কোন ব্যবধান भारे । ेहें भारत्य आनंति आतिमात পুত্র জিলেছিল সংশাংশাত্র কর ে করিব २३२ वर्णभावतील १८७ **७ जनत उ**लाय । (क्लावर कार्रकार ६००, म**्स् रिक् । अङ**-তের এক্ট লৈছিক প্রকৃতিকালা, **বেদান্তে**র ক্তব্যান এবং সাহতিষ্ঠা এই ক**ৰ্কাষ্ট্রে** ভাৰেণণে সহল ক্র। ইহাতে ভোমার মুখুল, আমার মঙ্গল, সম্ভে দেশের মঙ্গল ।

আৰু ১১ নাছের মহা মচোৎসর। আজ এই সংক্ৰোবণেৰের জনতা দেখিয়া জন্ম केळ भित्र हरेश किंत्रिक**रह। त्कान् क**थाम স্থাৰ্কৰা ক্ৰিন উছেল কদত্তে বিভুট্ আসি-रण्डं मा। मध्यमगारण वाताह खालाह জ্ঞায় পিতার ক্লেড়ে মালিয়া মিলিলাম। গ্লামরা অৰ্দ্ধ শতাকার অধিক কাল ছেপুতে <u> अर्थ गर्दश</u>्माततः 'बाद्मालम कुलाम काक छोराव है है के भीने। किस तिनदर विद्यात क्रिडे हरेव भा जाति रमहै बीर शृत्व अववह जागात्मत अख्यम व्यक्ति ८७८ई। अहे जाक्रममार्जक के कि किरित एक्षिर हरे उन्हर खेशका का का वातज रहेगाहिली ज्यन त्म झामित्र शाहिश दिलम अका देशा विक नार TOTAL CARE MATERIOLETE CAR MAT ধানি জার্ব ইপ্তক আৰু আমাদের এই আশা কুমুকাকরিরী দিতেছে। সতোর দার কদ করে কাহাব সাধা। আর্জ নেই সভা প্রশ-রেরই উৎপ্র। আ্লি প্রারন্ত সন্তি টেন প্রেক সকলকে উদ্যোধিত কার্যা দিলান ভোষরা তাহা উপদোগ কর।

পরমেশ্র ভিন্মারদির্শের স্বস্থিত বাদ করুন।

ও সাত্ত প্রি ফলিং।

बचनको छ।

শুর্জনি বাং বিদ্যানটো বার বাং বিশ্বস্থান প্রতিষ্ঠিত বিশ্বস্থান প্রতিষ্ঠিত বিশ্বস্থান প্রতিষ্ঠিত বিশ্বস্থান বিশ্বস্থান প্রতিষ্ঠিত বিশ্বস্থান প্রতিষ্ঠিত বিশ্বস্থান প্রতিষ্ঠিত বিশ্বস্থান প্রতিষ্ঠিত বিশ্বস্থান ব

দত্ত ,ভাষাৰ নাহি নাহ। বামকেল। - কাওয়ালি।

শ্ৰুকটো দেনিৰ তোফালে কলেনি বাসনা গান।
চাহিব নাহে চাহিব নাকে দ্ব দ্বাসৰ প্ৰান:
কাষিব ভোষাৰে গৃহ মাঝালে, জননী লেকে নাড় এনে
শ্ৰুক্ত মহল নকলে।
চাহিব উদ্ধান মাধ্যে, সকল কাজে, প্ৰতিদিন হেমিব
কাল

হৈরিব উজ্জন বিমল মৃশ্রি তব শোকে তৃংগে মরণে, হেরিব সলনে নরনারী মৃশ্বে হেরিব বিজনে বিরলে হে গভীব অস্তব জাসনে।

্ অনন্তর ভক্তিভাগন আচার্য শ্রীযুক্ত হিজেন্দ্র-নাথ ঠাকুর এই উদোধন পাঠ করিলেন।

মাথের গ্রকাদশ দিবদ—নিখিল ত্রাক্ষআনের লোচন আনন্দকর মাথের একাদশ
কিবস, প্রেম-ভক্তির প্রস্তাণ উম্মোচনকারী
ক্রম-কণাট উদ্মাচনকারী অয়ত সাগরের
শীকরবাহী মাথের একাদশ দিবক আমাদের

সন্মে, উপস্থিত। বৃদ্ধনিষ্ঠ আক্ষমগুনীর बद्धा विषेशी अंगा विश्वहुक्। या विन्त्रुष्ट हरे-গতেল, ধনী মানী খল ধন্মান বিস্তুত হই-अध्यम, मीन परिक्र जना महिका पुराव विस्तृष्ठ হট্যাছেন,পরাগ্রীন কণ্যচাবী অদাপর বীনতা াৰপুচ হ্ট্যাচ্ন;—আদ্য আলব; এন মারের প্রেম নিকেতনে অশিসান ব্যিয়াহি, অবং তাঁহ'র গ্রম্ম দ্য-তে চিত্তে খামানেব भक्त पुरुष जनगान १६ । दर्-मदन অভারের পশিস্থাতি কর্যাকে; অধ্যান্থ भा नमूक गडरे किंग प्रकार नक्षा मा-लात्या आगारमर शहम विकास भवम माधान र । ए इ कियारिश स्त्रेश र - अन्यक्राल हैन নীত হঠয়াহি -- খাল ভামাদের ভং এটা : लागादकत अहै भीम होन खदि वन स्टास পরে হত্তান্তে—্থেক শোক শাস্ত্রাপের গ্রান্তবে—বাসার স্থাকানল হত এলা এই অমূত ভাওারের গ্রাটা**ন্টান কবিয়া** িল 🔊 তিনিই 'অন্নাদের মান। অত্যাদারার অত্যা-চারের উপর কাংলি নেনিয়েষ নালন ছাঙোত वार्शित्त-(मन्दिन्शे भाषु बरनी एन ব্যৱতে কাহার অভেন্ন প্রাক্তম অবর্তার ছইটেছে ? তিনিই আমাদের রাজা। মোছ-রজনী চেল্ল ভিত্ত করিয়া কাছ্য জ্ঞান-রশ্বি খাঝাতে প্ৰকৃতিত ক্**ইতে**ছে? আমাদের গুরু। সমস্ত অমস্থানি বুলি প্র সারণ-জরিয়া কে আমাদিগকে খঞ্চ প্রে আহ্বান করিতেতে ? তিনিই অ্যাদের পিতা। কে আমাদের ভূদয়ে আসিয়া ওদয়কে শীত্র করিতেছেন ? তিনিই আমাদের क्षान-वक्ष्य जाना जाना तमहे माजाह कार्ष শৈই পিতার মঙ্গল-ছান্নায়, সেই গুরুর ভান-জোভিতে, সেই রাজার শান্তি-রাম্ম্যে, সেই গ্রাণ-দথার, অমৃত ুসহরাদে, দকল সন্তাণ मूटर विगर्कन मिन्ना चान्य भागरेत निमध हरेत, हेरावर जमा जामारमत अरे गरहादमव।



अर्थ और, जाना चामारणत यन इहेर्ड मम्ख ত্ৰিভা-সমস্ত বিষয় িস্তা-সমস্ত পাপ ভাপীমোছ-দ্ব হইয়া যাক, এবং প্রমা-আকে ল্ইয়া ৰাজ। জাগ্ৰত তইয়া উঠক্। অগ সমস্ত আবাশ ভেদ করিয়া – সমাগরা পুথিবী কম্পিত করিয়া—আত্মাংইতে ওলার ক্ষনি উল্ভ হউক্, সমস্ত 'বাকাশমগুল दगरे क्वाने भे भून हरेशा शांकेक — (भारे क्वान জোতিকসভল দুর্গ হইতে ৷ ৮ছটারপে निःगाति र राष्ठेक—ागानिगी श्टेट दन थागा ফল পুষ্পারূপে উথিত হউন্, বেদী হইতে বেল্বেনিরপে উদ্বোষ্ট হউক্—সঙ্গী ৫-মঞ্চ হইতে মুখাও রবে উপিত হইয়া প্রশাস্ত দশলিক্ মাধুষ্যে জনীভূত কাইয়া অন্য আমাদের শরীরের আজা আন্তার আহার সহিত সম্বন-সূত্রে প্রাথত '**হইতেভে—এই** সপন্ধ-সূত্ৰ জোতিশায় আইত ্ৰ জীবনের একমাত্র নিদান। ভার্মধন্ধ-দূতি দিয়া বেমন গর্ভ্ত শিশুতে মাতার প্রাণ সঞ্চারিত হয়, তাহা অপেকা শতগুণ আক্রা অনির্বাচনীয় সম্বন্ধ-সূত্র দিলা অ্যাটের বাস্ত্ত পর্যায়ার বয়ত জীবন সঞ্জিত ইইডেইছ; আমাদের গজান এর-কার সম্প্রকার-ভাঞার হইতে পরিপুরিত হ্ইতেতে - আমাদেব ফ্রন্থের পিগানা স্থা-ভীর প্রেস-সমুদ্র হইতে পরিপুরিত হইতেছে; जाबाद्धाः मीन-शैन चक्किन ह। चन्नास শক্তিভাতার হইতে প্রিপ্রিত হইতেছে। প্রম জেলাম্পদ প্রমানার সহিত আমাদের এরপ অ' ছেদ্র খনিপ্ত এবং নিগুড় সম্বন্ধ যে, তাহা অনোদের রক্তে রক্তে, নিশাদে নিখাদে চিন্ধায় চিন্ধায় প্ৰাণে প্ৰাণে মিশাইয়া ৰহি-ब्राट्ड-डाहाटक छाड़ाहिया अध्या स्ट्रांबर অসাধ্য ি পরমাতার পরম পরাহশর জান-ट्यादम मीमा काशाय ? संशाय के किन्यू थे-माप-वादिए शृथवीत कृष की एवंव-लाटकत

নীমা কোপার ? আমাদের এই কুট জীন
প্রেমের অভান্তরেই কি যে এক পর্মান্দর্বা

অমতের দার প্রচলন রহিল্লান্ডে, নেইখান
হইতে অদ্য পারত্রলোর অমোঘ প্রভাব আমাদেব আত্মাতে পরিব্যাপ্ত হইলা আমাদেব

ম্পান্তী উত্তলে করিতেছে; সেই অমৃত

দাবে আমাদের অভ্যকরণের প্রার্থনা প্রজীভূত হইলা পার্ম কর্মণাম্মের অমোঘ প্রান্ত

দাদে বারিছে প্রার্থিত হইছেছে। আইন

আম্বা সেই দার উদ্যাত্তন করিয়া উৎসবের
প্রাণকে—

প্রাণকে সংহত আহ্বান করিন অন্যাত্তা এই

উৎসবের প্রাণ্ডা করি।

আনালের গান আরাধ্য দেবতা, তিনি জাংত খাবন্ত দেবতা। তিলৈ অন্তেভনের অভারতের সাঞ্জি—সচেতনের অভান্তরেও জাগ্রত, ক্ষানাও তিনি নিচ্চিত ন**হেন**। এই সে. এভাতসূম্কির্ণ, ই্সুব অভ্য-স্তরে তিনি জাগিতেছেন, এই যে নায়ু রহি-ভেছে ইহার অভা**ন্তরে তি**নি আগি**তেছেন**, নিখাস প্রাধ্যের অভাস্তরে ,তিনি আলিতে-হেন, আণের ,অভান্তরে তিনি, জাগিতে-ছেন,—কোথায় না তিনি ছাএত-ক্ৰন না তিনি জাঞ্ত। আদ্য দুখা ধ্যন, নুতন, জাগ্রত হইতেছে, তখন তাহার অভান্তরে তিনি জাগ্রত,—পুত একটি ত্রাণের বনন কলিকা বখন উমেষ্ত হইতেকে ওখন ভাষার শভাষ্করেও তিনি জার্মান্ট, জানো-ু ন্দান আন্ধার, অভাস্করৈও তিনি ক্ষাগ্রন্ত, প্রেমরসাত হলয়ের অভ্যন্তরেও ডিনি আ-এত, স্বৰ্গত্ৰই তিনি জাগ্ৰত জীবন্ধ। গৰ্ভই পৰিত্ৰ দাধুদ্যাগমের মধ্যে এই খানেই এই बहुर्क्ट जिनि जावाज विशेषमानि वेटैं नेत्तर जाहात यहिया प्रताक शरेट विक শ্লীকে অন্তর্গন হটতে তালোকে উভাগিত

হইতেছে; আমানের সন্তর্জনীয়—ভূতুবঃ
বিঃ তিন লোকের সন্তর্জনীয়—এখানে আঃ
প্রত্তর বিরাজনান; অতএব প্রজা-ভক্তিতে
বিনম হইয়া—প্রেমে প্রাকিত হইয়া ক্রদযের কপাট উদ্যাটন করিয়া আইদ আমরা
তাহার সাক্ষংসরিক মহিমা গানে প্রত্ত
হই, ও তাহার চরণে প্রতি-কুসুমাঞ্জনি

হেমধেম চে হাল।
সংব মিলি গাওরে, মিলি সক্ষণচারা,
ভাকি লহ হুদলে প্রিগতমে।
মঙ্গল গাও আনন্দ মন্দে,
সঙ্গল প্রচারো বিশ্ব মাকে।

আসাববি — কাণ্যালি।
ভানেক দিয়েত নাথ, আমার বাসনা তবু প্রিল না।
দীন দশা প্রচিল না অক্রাবি মুছিল না,
গভীপ আবের তুমা মিটিল না নিটিশ না।
দিয়েত কীবন নি প্রাণপ্রিষ্ঠ পরিজন
ত্বালিয় সমীরণ, নিলকাত অধ্ব

শ্বামুখি শোলা ধরণী। এত যদি দিলৈ দথা আবো^{নি}দতে হবে ছে, ভোমারে মা পেলু-আমি ফিলিব না ফিরিব না।

্ব **খনন্ত**র আচার্য্য নিম্নের প্রাথনা পাঠ করিলেন।

হে প্রনাজন নিদ্ধিত। বিধাতা।
অদ্য তোমার দীক্ষ্পেরিক পূজার মান্দে
আমরা এথানে সমাগত হইয়াছি, তুমি প্রদার হইয়া আমাদের পূজা গ্রহণ কর। তুমি
তোমার পরিশুদ্ধ জ্ঞান নেত্রে সকলেরই
মনোগত অভিপ্রায় পরিদ্ধার দেখিতেছ—
আয়াদের যাহার যাহাতে আজার পরিভৃত্তি
ইর সেইরূপ শান্তি-পীয়ুষ বর্ষর কর,—এখান
হইতে আমরা কেহু বেন পুনা পাত্রে ফিরিয়া না যাই। বাহারা তোমার চরণের
ভল্গ-ইতামার প্রেক্তিয়ার ক্রিন্তির জনবুলা অর্ক্তির মন্তের্গ্রিকেও পুনা হল্বের
বিষ্ণাল আমিতে পানি মা

ব্ৰেম্ছ ভাষাদের জীবন—ভেমাির প্রেমই जीशाद्यंत कान, त्यागीत श्रम है जीशादमत ধানি, নির্মানক্ষয় অশান্ত সংগারের অভ্যন্তরে ভাঁহারা কি গভাঁর আনন্দ ও শান্তি উপু-ভোগ করেন \ পৃথিবীর কর্মশালায় তা-হারা কর্মা কর্মান – পুনিবীক্ষা পান্ত-শালায়ঃ তাঁহারা ভোজন করেন— পৃথিবীর রঙ্গ-শ্লায় তাহারা নাটা দর্শন কবেন, কিছু আহাটের **অন্তঃকরণের নিভ্**ত নিপ্রয়েওতি নার । গ্রহান দের বিমল আনন্দ নিয়ন্তর জাগিতেছে – किङ्क राष्ट्रां का मारे **शतम**माखि नारे; তাহা বিনা-ইন্ধনে প্রস্থালত, ভাষা নিভিত্ত षारम ना ; ए। श विमा-मिनारम भण्यानिक, তাহা মহতে জানে বা; পেই তেখোর হা মোঘ ভোষায়ত বগৈর বিন্দু-মান্তের অভি-नायी रहेग्रा जामता जनाकात कहे छेरगव- . ক্ষেত্র সন্মিলত হইয়াছি--ভোষ্টা অসীম করুণাই আমাদের একমাত্র ভরষা। জানা-দের এই মহোৎসব তোমারই পূজার মহোৎ-সব,—তুমিট **ট**ছার প্রবর্ত্তক – তুমিই ইছার অধ্যক্ষ-ত্রিই ইহাব অধিনেবত।। আমাদের **७१** नीन शीन (न**८न्**-भीनशीन श्रमात्र-जन ভূমি সহস্র হল্ডে কল্যাণ বর্ষণ ক্রিবে তাই আ্যাদিগকে এখানে একত্রিত করিয়াত: অধিরা ভাজ হৃদয় ভরিয়। তোমার অমৃত-রস পান করিক, হৃদয়-থাল-ভার ভ্রীত্-পুষ্পা-হার তোমার চরণে সমর্পণ করিয়া আজ আমরা আযাদের জীবনকে সার্থক করিব, আর্মাদের वाक कर ना बानना ए कीवरनंत्र कीवन প্রাণের প্রাণ; তুমি তোমার প্রেমায়ত-কণা বিতরণ করিয়া আমাদের এই উৎসবকে আ-প্রত করিয়া ভোলো—এবং এই স্থানন্দের ত্রোত যাহাতে বৎসর বৎসর প্রবাহিত থাকে সেইরূপ উৎস আমাদের অন্তরে উন্মুক্ত क्तिशादम् । अनाकात भे उ वित्र निन्दे जूनि আশাদের হাদয়ে ভীতি ভক্তির করিব।

বিতে নাক, আর আমরা তোমার প্রাটন বলী হইরা—তোমার মৃত্যঞ্জীবনী কর্লী মৃত্ত প্রমায়ত ও আনন্দায়তে প্রাণ পোইরা উ-সিয়া দিগ্দিক্সরে তোমার মহিমা ঘোষণা করিতে থাকি—এই আমাদের প্রার্থনা।

७ अक्ट्रमना चिछीयः।

গোড়ুনারং তি জাল।
প্রথাত সন্ধান তব অন্ধর্মানী
ভাতরে দেখেছি তোমারে।
ভাতত ল আলোকে হলর শতলল সাবে
হেলিজ এ কি অপরাপ ক্রপা।
কোথা ফিরিভেছিলান পরে পথে হারে হারে,
মাতিয়া কলরবে।
ক্রপা কোলাইলমানে ওনেছি তব আহলান,
নিভত হলর মাঝে
মধুর গভীর শান্তবাণী।
বোগিয়া বিভাস—একভালা।
নর্মন তোমারে পায় মা দেখিতে
রয়েছ নরনে নয়নে।
হল্ম তোমারে পায়না জানিতে
হলমে ররেছ গোপনে।

ৰাসনার বশে মন অধিয়ত বাম দশদিশে পাগলের মত, স্থিয় আঁথি ভূমি মরাম সতত

জাগিছ শয়নে সপনে।

গবাই ছেড়েছে নাই বাব কেহ,

কুমি আছ তার আছে তব লেহ,
নিয়াশ্রম জন পথ বাব গেহ,

শেও আছে তব ভবনে ।
জুনি ছাড়া কেই সাধী নাই আছ কুন্ধ খনত জীবন বিজ্ঞান,
কুলি পালাবায় ক্রিভেছ প^গ

কৈছ সাহি আনে কেবনে।
কানি ওয়ু তুমি আছু তাই আছি,
তুমি প্রাণনর তাই আমি বাঁচি,
বঙ্গ পাই লোমায়, আনে তত বাঁচি,
তত কানি তত আনিনে।
কানি আমি তোমায় পাৰ নির্বার,

ত্ৰি আৰু শীনি মাৰে কিব নাই, কোন বাধা নাই ভুবৰে।

সার্থ-নীপভাল।

অদীম রহসা দাবে কে তুমি দহিষামর।
কাত শিশুর মত চবলে লুমারে রর।
অভিমান অহলার মছে গেছে নার্চি আরি
ফুচে গেছে শোকতাপ, নার্চি ছঃশ নাইি ভর।
কোটি রবি শশি ভারা, ভোষাতে গরেছে হারা,
অযুত্ত কির্নি ধারা ভোমাতে পাইছে কর।

ভৈরবী---দাঁপভাল।

তোমারে জামিনে হে তব্ যন ভোমাতে ধায়। তোমারে না জেনে বিশ্ব তব্ ভোমাতে বিরাম পার। অসীম সৌদ্ধা তব কে করেছে অসভব হে,

সে মাধুনী চিন্ন নব,
আমি ন: জেনে প্রাণ গঁপেছি তোমার।
ভূমি গোতির ডোতি আমি অন্ধ আধারে,
ভূমি মত মতীবান আমি ক্রমণীন,
ভূমি অস্থীন আমি ক্রমণীন,
কি সপুন্ধী মলন ভোমাব আমার।

হৈছবোঁ – ঝাপভাল।

বাণী তথ নাহি গুনি নাগ হে। অন্ধ জনে নয়ন দিয়ে অন্ধ কারে ফেলিলে,

বিরহে তব কাটে দিন রাত হে।
স্থান সম নিশাবে যদি কেন গো দিলে চেতনা,
চকিতে শুধু দেখা দিয়ে চির মরম বেদনা,
আগনাপানে চাহি শুধু নয়ন জল পাত হে।
পারশে তব জীবন নব নহসা যদি জাগিল,
কেন জীবন বিশ্বল কর মরণ শর্মাত হে।
ভাহতার চুর্ব কর প্রেমে মন পূর্ব কর
হাদর মনু হল্প করি রাখ তব সাথ হে।

দেওগিরি—পুরক কিভাল।

দেবাধিদেব মহাদেব। অসীম সম্পদ অসীম মহিমা। মহাসভা তব অনত আকাশে কোট কঠ গাহে কৰ কৰা কয় হৈ।

তৈতে ।—একভালা।
ভয় হয় পাছে তব নামে আমি
আমানায়ে ক্ষি প্রচার ছে।
মোহৰলৈ পাছে ছিলে আয়ার, ভব

ক্ষামান ভালে ভাল দাহিত ক্ষতালো ক্ষান্ত কৰা ভূমি নৰ জালো, আমি কত কীন, আমি কত হীন, কেছ নাহি আনে আৰু হো প্ৰাণান, কৈছে চলে তোমায় অনুহ গো প্ৰাণান, তাই আমান কাছে জাগো অভিমান, গ্ৰাহে প্ৰতাৱনা কৰি আগনাহৈ, তোমান আগনে বসাই আমাৰে, নাথ মোহ ক্ষত নাথ তন হতে নাথ নাথ বাব বাব হে।

নিশ্রে বিভাস — আড়াঠেকা।

এবার সুষ্টেছ সগা এ থেলা কেবলি থেলা।
মান্য জীবন লয়ে এ কেবলি অবছেলা।
ভোমারে নহিলে আরু ঘূচিবে না হাহাকার
কি দিয়ে ভ্লায়ে রাথ কি দিয়ে কাটাও বেলা।
স্বথা হাসে রবি শাল ব্রথা আসে দিবানিশি,
সহসা পরাণ কাদে শ্না হেরি দিশিদিশি!
ভোমারে খুঁজিতে এসে কি লয়ে রয়েছি শেষে,
ফ্রিগো কিসের লাগি এ অসীম মহামেলা!

कालाहेश— अक्काला।

गत्म चाहि द करव अनिव कामात्र वाणी।
करव वाहित हरेंब जगरू मध्य जीवन धना मानि।
करव आण जागिरव क्षत्र दक्षम शोहिरव,
बारत किति गतात काम हास्टित,
सत नाती मन किता हत्य हत्य हास्टित,
सत नाती मन किता हत्य हत्य हिस्त,
विकट्ण गीज ज्यान,
कामात्र वहन कींच बहन हायाँ माहि नाहि।
कृति ना किरित कमरन नव, जावन कर्मत वाणी जब,
क्षत्र वा बिरत कार्ट विनय, न्यांच कित्र मा जानि,
क्षत्र ना बिरत कार्ट विनय, न्यांच कित्र मा जानि,

Algaires arminivalidas cela midifi nathères ridica règlige duffus michia e milateria ser na compartation delle massaggio di partital calcala capaggio algun merchal sulpula capaggio algun

পঞ্জি জীয়ুক্ত ব্রিহরাথ শাস্ত্রী দভার্মান क्रमा निरमत अर किश्वन मही माठे कतितन-विशेषां भागा रमेरे में जातानुसर्यंत कला।।-गर पट कर वाकद्र वाकद्र व वाक्र हरेगा এই छेना-गनाब**ंदल** भग्रद्वज हरेशाहि। ञ्चात शिवज मुर्कि वित्रकाल है मसूया-मगाकरक এইরবেপ একত্তে আনয়ন করিতেছে, পরস্পা-বের প্রতি প্রেম ও সন্তাব শিক্ষা দিভেছে এবং জ্বানার দীলনে ও আন্তার উন্নতি দাধনে প্রায়ত করিতেছে। ধর্মাবহ পর্নেশ্বর ভাঁহার পবিত্র ধর্মান্দলিলের প্রাস্তব্ব-ছার উন্মৃত্ত করিয়া দিয়া **মনু**ব্য-কুলেব অশেষ মঞ্চল সাধন করিতেছেন। ধন্য সেই বিধাতা। ধনা সেই করুণাময়, কলাাণময় পুরুষ। ভাঁহারি প্রা**নাদে আম**রা" বিষয়-কোলাহল হইতে মুক্ত হইয়া এই উপাসনামগ্রপে তাঁহার গুণ কীর্ত্তন করিতেছি এবং তাঁহার চরণে কৃতজ্ঞতাভ্রে প্রণিপাত করিতেছি। সেই মহান্ সত্য পুরুষের মঙ্গল জ্যোতি চতু-फिटक विकीर्ग त्रश्चित्राटक, रमञ्जू कल्लगायरमञ्ज কক্ষণা সকলের হাদয়ে আৰিছু ত হইতেছে। চারিদিকে কেবল ত্রাক্মধর্মেরই মহত্, ত্রাক্ম-ধর্মেরই অয়। সেই অনাদি অন্ত জাগ্রত দেবতা আৰু সমস্ত দিনই আমাদের সন্মুধে। নয়ন উন্মালন করিলে সেই **भानस्यग्र** অমৃত্যয় পুরুষকে এই পোভাষ্ক ভিকেত-নের প্রত্যেক পদার্থে দেখিতে পাই; এই ুওল দীপপুঞ্জের আলোক-কিরণে তাঁসুরে अम्म (काछि अरः मार् मक्त्रमाद्वत मूथ-ক্ষাব্য তাহার প্রিত্ত মক্ষ্স-ভার স্থান্ত্র कृति 🛊 व्यक्ति यथेन रनज नियोगन किविया मख्दा दम्बि, ख्रान दम्बि ख, त्मरे श्रान शकि सामादम्ब समय-नि-शामदन उन्धिक रहेश त्थानात्क सम्छ यन-वाकात्क नम्-ज्लेक किर्म्हरून। यहित है। स्वर्काहरू अवदर्भ द्वारात ८ मार्किश वाहित्व छ। हात

আনন্দ, অন্তরে ভাষার আনন্দ। তান কাছেবে সমস্ত প্রার্থকে শুভাকরণে হ্রেণাভিত্ ু রিয়া খ্তকে আত্মাকে হেছামভাবে,পবিত্রতারে व्यक्तिक क किर्दा के किरियाद किकाभ मक्तिक मिलाका न क्रका न व्यक्ति छ। मध्य भाग्मात्नाहरका কিন্তু বেক্সজ্ঞ থাক্ষ ভাঁহাকৈ কোথায় জাতাৎ कीरंखकरण प्रिया श्रीन १ व्याकार्ण अह যে তিনি ওত্তপ্ৰাত ভাবে ব্যাঞ্জির্হিনছৈন रमशास काराक, खेलनानि कतिशा**रे** छाटणत ব্ৰহ্মদূৰ্ণন কৈ চাৰতাৰ্থ হয় প বাহিৰে ভাহাকে दम्या मर्फ्युर्ग सिक्छे कविश्वा (मथा **नश्**। संग्रः দয় জগতে ভাহার গুলিরীপ্র কিন্তু কাছাতে তাহার রূপ দেখা যায়ল সেই হিরন্তর পরে কোষে আছাতে তিনি নাকাৎ বিরাজ-মান্। আহার অন্তরে সেই এক্ষণাম্। সে-খানে তাঁহার নিশাল নিরবয়র স্থার মূর্ছ প্রকাশ পাইতেছে। অমৃ ১পানেচছু সাব-কের্ডিরে জাকাশে কোন সপ্তথ সংগ্র अभूमकान कवियोद हारा क्षेत्र मेहि। अल्डा শাস্থাতে দৃষ্টি করিলে সেই অভরাস্থাকে দেখা যায় তবং দেখানে এবেশ ব্রারিলে অমৃত পানে সাহার অনন্ত দীবন ও মানল শালি উগাচিত হয়। দেখাৰে দিনি ছাপন মহিনাতেই বিরাজিত। তিনি লোক-ভন্ন, নিঝারণার্থ সেতুসরূপ ইছিয়া সমুদায় ধারণ করিতেছেন। এই জাস্থারূপ সেত্র এ পারে দিন রাত্রি নিয় নিও ছই ডেছে, 'গু-পারে দিনও নাই রাজিও নাই; সুকৃতও नाहे जुक्क नहें : क्यान हरें जिलान-. भक्त প्रकिनिश्व हम् हैशे श्री-ब्लाविश्व সর্বাই পবিত্র রহিয়াছে। পাণুতাপ-রচিত এই তক্ষলোক। এই দেছুর পরপারে **उद्योग हो अक हम अनक रहा है** मरमाद्रत पूर्व द्वार की कि कि रम व्यक्ति हुई; त्व भारत ७ कारव **छ ग**ाली दम अपूर्व তাপী হয়। এই দেতৃকে বুৱীৰ হাঁট্যা গাতি पिटनत मुक्ति बाटनाक स्त्रिक व्यव

खनात्नाक : अहर विकास अविकासिक बहिन शाद्ध।

নৈনং দেত্যভোৱালে ত্রতঃ। ন জরা ম মৃত্যু , সিবভিত্তে। অপহতপাপ্নাছেব ভকলোকঃ। ভক্ষাদা শ্ৰিভং দেতুং তীৰ্ব। সাধঃসলনকো ভব্তি। বিদ্ধঃ **স**ল-বিলৈ ভবতি। উপতাপী সময়পতাপী ভূবতি। ভন্মায়া এতং সেহং তীৰাপি ন জমহরেবাভিনিশদ্যতে। मङ्गिष्टांद्रणाद्यादेश त्रयात्वाकः।

সংগারের আপাত মনরঞ্জন বিষয়্-**দক্ত্র** এক দিকে আমাদিলের চিত্তকে **আ্কর্বন**ং করিতেছে, আর এক দিকে আমাদের ভিন্ন-তম প্রমেশ্র। একদিকে তুগতি আন্তিত্ত দিকে অনুভের জেন্ডে অনন্ত উমতি। আ-মরা এই তুইয়ের সন্দিহলে দ্রাধ্নান। আমানের মধ্যে যে বেং সংসারের তুর্গতি হইতে গাড়িত্রাণ চাহেন ভাঁহাকে শান্ত, দান্ত, উপরত, তিলিফ্ ও মুদ্ধাহিত হইয়া ভক্তি-ষোগে প্রমান্নার সন্থিত যুক্ত থাকিতে হুইবে। যিনি এইর**েপ প্**রত্ত**ের পবিত্ত** সহবাস লাভ করিতে পারেন তাঁহারি জীবনে পত্র মন্ত্রল সাধিত হয়। তাঁধার প্রেমের ইগন্ধ তথন চতুদিক আমোদিত ব্ৰৱে এবং তাঁছার জ্ঞান-নেত্র প্রস্ফুটিও হইয়া অভিশর উন্ত্ৰ দীপ্তি গারণ করে। তথন তিনি ব্ৰেক্ষপ্ৰেয়ে তদগ্ৰ হইয়া হৈ দিকে নয়ন निएकश करतम रम्हे फिरक्ट रेमरे शतम मैंक्स নিলয় পর্যেশকের আবিভাব সদর্শন করেন 🅍 সর্বত্ত তাঁহার আনন্দ ও সর্বত্ত তাঁহার ম-হিমা দেখিতে পাইয়া তাঁহারই ইচ্ছাবুগারে, क्षीकरमत्र छाव९ कंषी मिस्तीष्ट कदाम अतः সংসারে ফলকামনা পরিপূন্য হইষ্যু উাহাইই প্রতিতি ধর্মপথে বিচরণ করিতে থাকেন স্বার্থপরতা আর ভাহাকে কলন্ধিত করিছে भारत ना । क्रिक्ट्रब लिय कार्या नापनर ভাহার একষাত্র টেক্স হয়। অতএব জিন্তি , त्नाक हरें एक क्या कियन, भाग हरें।

ভত্তি নিম্ভা করি চিবজন প্রত্যা নিতর
কালের জনা আখনাকে প্রতিষ্ঠিত দেখেন
এবং এই বিশ্বরাকে ছবে জানালে বিচরণ
করিতে থাকেন পাপ ইহাকে স্পাণ
করিতে পারে না ইনি সম্পায় পাপকে
ভাতিক্রম করেন, পাপ ইহাকে স্ভাপ দিতে
পারে না, ইনি সম্পায় পাশের সন্তাপক
হয়েন। ইনি নিজ্পাপ নিজ্ঞা ও পরবেক্রের সহাতে নিঃসংশয় হইছা পর ব্যোগ্র

শনৈনং পাণ্না তর্তি সর্বাহ পশ্যানং তরতি। নৈনং পাশ্য তপ্তি নর্বাং পাশ্যানং আপতি। বিপাপো বিরজোহবিচিকিৎদোরাজনো তবতি।

ওঁ এক্ষেবাদিতীয়।

অনস্তর শ্রহ্মান্সদ স্বাচার্য্য শ্রীগুক্ত শস্ত্রাথ গভুগড়ি নিম্নের এই উপাদেশ পাঠ করেন।

वामा ১১ই भाषात जिल्लादमन । সমস্ত ভারত ভুমির উৎসব – সমান্ত বস্তৃমির উৎস্ব – প্রতি পরিবারের উৎস্ব, श्रमदात्र , खेट्नव । धिनि प्राचनन-प्राचा गरा-রাম্বাধিরাজ ত্রিভুবনপালক—বিনি সকলের দারিছা-ভঞ্জন যিনি আনন্দর্রপময়তং, বার भानम हहें एउ पर हुए मकन छेंदेनह हहें-**ু হৈছ**ু 'ভানুনামের খলিয়ানি ভূতানি नामरक, मिन निवश सम्बदः, यात अञ्च तर्मा-সার্বার হায়া এই সৃষ্টির উপর পতিত হই-शदह जिनिसे सामाद्यक छेर मदवत अधिर्शाणी **ट्रम्बर्ण। जिसि हिमा कतिया आब पाया-**रमत स्थान-न्यायक मण्डल विताय कति-**एक्ट्रन । कीराबी भानमा विद्यत अस्त** वाहित रुक्षिद्व विश्वीर्थ दार्विद्धाः दम्हे PRESIDENT PRESE कान नावत के काम हिंद क्रिकेट्स दगरे

কুৰ্নে অন্ধ টাৰার পূজা করিব বলিয়া, উইসাহের নহিত, ওেনের সহিত, ভজিব
দহিত আমরা উৎসৱ-কেত্রে সন্মিলিত
হইয়াছি। তিনি এখন শিবং স্থলরং রূপে
আমাদিগকে অন্তরে বাহিরে দেখা দিতেছেন, এবং আমাদের পূজা এইই করিকেন
বলিয়া আমাদিগকে স্লেহের সহিত আহ্বান
করিতেছেন। কি মনোইর দৃশা। কি
পবিত্র মৃতুর্ভ। এখন অন্তর বাহিরে তাহার
সৌন্দর্গা দেখিয়া আমাদের স্থলিন্থিত প্রোন
উছে, মিত ইইরা ভাহার দিকেই গমন করি-

যিনি আপনার অপার সৌন্দর্যা-সাগরে আপনিই প্রেমেনিত্য বিভোর হইয়া আছেন. তিনি মনুষ্যকে কুনা করিয়া, তাঁর এই শোভার ভাণোর সংসারে স্থাপন করিলেন, এবং তাহার হাদয়ে প্রেম দিলেন। প্রেম না দিতেন, তবে কে এ শোভা অমুভব করিয়া প্রথী হইত ? স্বাত্মার সাভাবিক্ গতিই শোভা ও সৌন্দর্ব্যের দিকে। কেবল याज वाहित्तत भाषा प्रिया हैश मच्छ হইতে পারে না। ইহা আর । কিছু চায়, আরও কিছু অনুসন্ধান করে 🕍 সঙ্গল শোভা ভেদ করিয়া সে সেই শোভার আকৃত্ব আনে याहेटल व्याबिक हा। दमहे व्यक्त वस-তের দৌন্দর্যা সম্ভোগ বাতীত কিছুতেই ভাহার প্রেম চরিতার্থ হয় না। তিনিই ভাহার পর্য পড়ি—তিনিই ভাহার পর্ম লোক। সেই লোকে বাস করিতেই ভাছার विलिय जानमा। मधुकद रायम शूल्य विमा। খননা মনে ভাহার বধুপান করে, আছা। তেমনি প্রমেশুরে অবস্থিতি করিয়া ভাঁছার প্রীত্তি-মুখা পান করিতে ভাল বালে।

দেই কি গ্রামী—সেই কি কোপী যিনি গৃহত্যাগী হুইয়া কেবল মাত্র ব্যায়াম-জুলা নিশাস বোধ কাঁছ্যা বোগ অভ্যাস করেন গ ুন।—কথনই নহে। তিনিই যোগী— যিনি প্রেনিক, যিনি এই প্রেমের সাহাযো সেই শোভার আকর পরমেশ্বরে উপনীত হইয়া নিঃসংশয়ে আপনাকে তাঁহাতে প্রতিষ্ঠিত কেট্রন এবং নিঃসংশয়ে বলিতে পারেন এধাসা পর্মা গতিঃ এধাসা পর্মা সম্প্রথ এফোসা পর্মার্থিক এবোলা প্রম

যিনি প্রকৃত প্রেমিক তিনি তাঁহাকে আপনার পিতা মতে। জানিয়। প্রিয়রূপে ক্ষম-মন্দিরে পূজা করেন। অকুগত পুত্রের নায় তাহার আদেশ সকল—কঠোর আদেশ সকল পালন করিয়া তাঁহার প্রদাদ অনুত্ব কবেন। এবং বিশেষ অনুরাগের সহিত তাঁহার বেন-মুখ নিরাকণ করেন।

আমর। যাহাকে ভালবাদি, তাঁহার জন্য কি ন। করিতে শার ? সেইরূপ ঈবর-প্রেমী — যিনি তাঁহার হৃদয়েশরকে প্রেমের চক্ষে দেখেন, তাঁহার প্রেম-মুথ ভাল করিয়া দেখিবার জন্য — আরও ফুটন্তরূপে দেখিবার জন্য কি না করিতে পারেন ?

উাহার সেই স্কর আনন তার নিকট
বেমন সধুর, এমন আর কিছুই নহে। সেই
প্রান্থ মুখ — সেই প্রেম-মুখ থানি করিতে
তাহার বিশেষ আনন্দ। তিনি তখন প্রেমাযান।
তাই কেলির আবেশে তাহাতে তুবিয়াযান।
সেই দৌন্দর্বা-নাগরে সিমগ্র হয়েন। তখন
আর তিনি আপনার নহেন, সমাকরপে
তার। তাহার অন্তরে তখন কি প্রেমের
গান নিনাদিত হয়, তাহা এ জগতে অপ্রকাশ
থাকে, তিনি প্রেমে বিভার হইয়া কি
তাহাকে নিবেদন করেন তাহা যিনি বাকেরে
বাক্য প্রোজ্যের শোত্র, তিনিই শুনিতে পান।
সেই প্রেম্বাতাও তখন কি মোহন মবে
তাহার সাধক্কে আহ্বান করেন—কি অপার
সেহের গৃহিত তাহার নিকটে প্রকাশিত হন,

কি অপ্রতিম সৌন্দর্যা ভারাত উদ্বাদা করিয়া তুলেন, কেছই তাহার সন্ধান বীরি না। সে অন্তরের ব্যাপার অন্তরেই থাকে। এবং চির দিন ই অন্তরে থাকিবে। কি ক্রথের সন্মান । তাহার স্পর্শ কথ কি গভীর—, কি বচনাতীত।। কোগায় প্রেমময় এ সময়ে। তুংখী অকিকন আমলা। আমরা এখন তোমাকেই চাহিতেছি, তোমাকেই ঘাচিতিছি। দেখা দেও—দেখা দেও—দেখা দেও – দেখা দেও ক। আমরা তোমার প্রেমের ভিধারী— চির:মুলত – চিরাপ্রিত। তোমার প্রেমের স্পর্শ-মণির আলোকে – দেই স্লিগ্ধালোকে, আমাদিগকে শীতল কর।

এই সংশার মৃত্যুর প্রতিকৃতি। এই
সংসারে থাকিয়া, কত দুংখ কত সম্ভাপই
ভোগ করি। তুমি কৃপা করিয়া আমাদিগকে
ভোমার অয়ত নিকেতনের দার খুলিয়া দেও।
আমরা তথাল প্রবেশ করিয়া পরম শাস্তি
লাভ করি।

ওঁ একমেবাদ্বিতীয়ং।

ইমন কলাবি — তেওৱা।
সভ্য মঙ্গল প্ৰেম্মন্ন ভূমি
গ্ৰহাজি ভূমি অন্ধানে
ভূমি সদা যার হুদে বিরাজো
হ্ব আলা দেই পাশরে,
সর হুব আলা সেই পাশরে।
তোমার জানে ভোমার ধ্যানে
ভব নামে কত মাধুরী
কেই ভকত সেই জানে,
ভূমি আনাঞ্ভ বাবে সেই জানে
গুনে আনাঞ্ভ বাবে সেই জানে।
কেলারা কুন্তমাকভালাব

चर्ड सगड यमन तारे नहीं महाना ।



তিনি নিজ অন্তমণ মহিমা মাঞ্চেনিনীন, সন্ধান তাঁর কে করে নিজন রেদ বেদা হ, পরস্কু পরিপূর্ক অতি স্থান, তিনি আদি কারণ ডিনি বর্ণন অভীত।

ভানিক চোডাল।
ভানিক ব্যাহে জাগি ভ্ৰনে তোমার
ভূমি সদা নিকটে আছ বলে।
ভৱ্ম অবাক নীলাখনে ববি শশি ভারা
গাঁথিছে হে ভেল কিরণ মালা।
বিশ প্রিবার ভোষার ফেবে হথে আছাশে,
দ্বোমার জোঁড় প্রসারিত বোমে বোমে।
ভামি দীন সভান আছি সেই তব আল্পার্ক

ক কর্ম শাসতাল।

কি ভর অভ্য ধানে, ভূমি মহারাজা,
ভর বায় তব নামে।
নিউয়ে অযুত সংশ্র লোক ধায় কে
গগনে গগনে সেই অহুয় নাম গায় হে।
ভব নলে কর বলী ফুরি রূপাময়

লোক ভূর বিপদ মূতুট ভয় দূর হর ভারা,
আশা বিকাশে সব বন্ধন ঘুচে,
নিউতা অযুভ্যস পায় হে।

রামপ্রসাদী প্রর।

আমরা নিলেছি আৰু মাহের ভাবে।

মরের হরে পরের মিতন

ভাই ছেবুড় ভাই ক দিন খাকে!

আবের মাবে থেকে থেকে

আর বলে ওই ভেকেছে কে।

সেই গভীর সবে উনাস করে

আর কে কারে ধরে রাবে।

বেধার থাকি বে যেখানে,
বীধন আছে প্রানে গ্রামে আবে,

সেই প্রানের টানে ট্রেন আবে

त्मदे श्वालंब देवन बारन ना त्य नान चनमान ताद्ध पूर्क, नंबदनव चन श्रीष्ट मृत्यू, बनोन चारन देवन कारन डाहेरबंद चीरन कार्यक त्यदम् । डाहोरबंद नावन करने मिरगदि हार्यक मरकारक भाग बहुबन टब्टेन नवाई मिट्नै। टाम्हा पिटा भाग ला मारक !

নোঁড়—চোতাল।

ভূমি আগিছ কে।
তব আঁথি কোতি ভেন করে ন্বন্গহন তিনির রাতি!
চাহিছ হলতে অনিমেব নালন,
সংশাক্তপল প্রাণ কম্পিত তালে।
কোণা পুকাব তোনা হতে সামি,
এ ক্লান্ডিত জীবন তুমি দেখিছ জানিছ,

প্রভুক্ষা কর হে ! তব পা প্রাত্তে বদি একাতে বাও কাদিতে মামায় শ্মার কোলা ঘটি !

মুলতান-একভালা।

শানার ছ'জনার ফিলে পথ দেখার বলে
পাদে পদে পথ হলি হে।
নানা কথার ছলে নানান মুনি বলে
সংশয়ে তাই ছবি হে।
তোমার কাছে যাব এই ছিল দাধ,
তোমার বালী শুনে ঘুচাই প্রনাদ,
কানের কাছে সুবাই করিছে বিবাদ

শত লোকের শত বুলি হে।
কাতর পাণে আমি ভোমায় বখন যাচি
আড়াল করে সবাই দীড়ায় কাছাকাছি,
ধরণীর ধূলো তাই নিয়ে আছি

পাইনে চরণ গুলি ছে ।"
শক্ত ভাগ মোর শত নিকে ধার
আপনা আপনি বিবাদ বাধার,
কারে সামালিব, এ কি হল দার,
একা হে অনেক গুলি হে ।

আমার এক কর তোমার প্রেমে বেঁথে এক পিও আমার দেখাও অবিক্রের, বাঁদার মাঝে পড়ে কত মরি কেঁদে চরণেতে কর ভূসি হেঃ

भूत्रवी-किंजाम ।

ভোষা লাগি নাও খানি খানিছে
ছথ নাই খীৰনে ভোষা বিনা।
সকলে চাল যায় ফেলে চিন্ন শ্ৰুব হৈ,
ছমি কাৰ্ফে লাক হথে ছবে নাথ
পালে ভালে খান্ত কেই নাই।

বেহাগ – চোডাল ৷

শ্বামী ভূমি এল আজ, শ্বজ্ঞার হন্ত্র মানে, পাণে রান পাই পাল, ভাকি হে ভোমারে! জন্ম উঠিছে প্রাণে, মন পান্তি নাহি মানে, পাণ ভরু নাহি আনে আপন আখানারে। শিক ধিক জনম মন, বিফল বিষয় প্রথ, বিফল ক্ষণিক প্রেম টুটিরা বায় বারবার। নতাপে স্বর্ম দহে নয়নে অঞ্চবারি বঙে, বাড়িছে বিষয় পিপাসা বিষয় বিষ বিকারে।

মিশ্র বিভিন্ন কাওয়ালি।

চাহিনা তথে থাকিতে হে।

হের কত দীন জন কীদিছে।

কত শোকের জন্দন গগনে উঠিছে,

জীবন বন্ধন নিমেষে টুটছে,

কত ধৃলিশায়ী ভন মলিন জীবন

সবমে চাহে চাকিতে হে।

সরমে চাহে চাকিতে হে।
শাকে হাহাকারে ব্যিন প্রবণ
শুনিতে না পাই তোমুার বচন,
হানব বেদন করিতে মোচন

কারে ভাকি কানে তাকিতে হে।
আশার অত্ত ঢালিলাও গ্রাহণ,
আশীর্কাল কর আত্তর সন্তানে,
শিষ্ধারা জনে ভাকি গৃহ পানে

চরণে হবে রাখিতে হে। প্রেম দাও, পোকে করিতে সাখনা, ব্যথিত ক্ষমের পুরুতে ব্যক্তা, তোলার কিরণ ক্ষম প্রেরণ অক আকৃত ক্ষাভিতে হে।

निह यहात—(हांडान।

कित्र निवन मन यांच्यी मय (गांडा मय विष्य,
नय क्ष्म गांव नय शींड नय आनम्।
नय स्मांडि विकानिड, मत खांग विक्रानिड,
नय खींडि खवार दिखाएंग।
कार्तिन्दक हिबानिन नवींम खांचना

তৰ প্ৰেম নৰ্ম ছটা। ক্ৰম বাৰী ত্ৰি চিল প্ৰাৰীণ, ত্ৰি চিল ন্বীন, চিল ক্ৰম্ম চিল ক্ৰম্ম ।

त्मन किंदू-प्रकल्पाना

শাৰাৰ বা আছে আৰি সকল বিজে পাৰিকি কোনাতে কাৰ। আমার লাজভর আমার মান অগমার ইব হুব ভাবনা।
শাবে রয়েছে আবরণ কড় শত কত মড়
তাই কেনে ফিরি; তাই ভোরারে না পাই,
মনে থেকে যায় তাইকে বনের বেদনা।
যাহা রেখেছি তাহে কি হুব, তাহে কেনে মরি

ভাই দিয়ে যদি ভোমারে পাই (জানি সা) কেন তা দিতে পারি না,

আমার জগতের সৃত্তোমারে দেব, দিলে ভোমার নেব বাসন।।

নাহানা—কাওয়ালি।
আজ বুঝি আইল প্রিয়তম,
চরণে দকলে আকুল ধাইল।
কত দিন পরে মন মাতিল গানে
পূর্ণ আনন্দ জাগিল প্রাণে,
ভাই বলে ডাকি দবারে,
ভূবন স্থম্ব প্রেমে ছাইল।

মিশ্র জয়জয় ত্রি— একতালা।

ত্রি বছু, তুমি নাণ, নিশিদিন তুমি আমার,
তুমি তথ, তুমি গাতি, তুমি হে অনুক্ত পাথার।
তুমিইত জানন্দ লোক জুড়াও প্রাণ, নাশ শোক,
তাপ হবণ তোমার চরণ অসীম শ্রণ দীন জনার।

বিজ্ঞাপন।

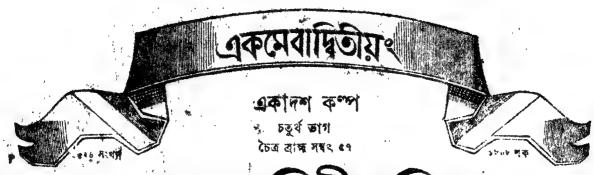
বর্তুমান মাস হইতে বাঁহার। পতাদি অথবা মনি মর্ডার প্রভৃতি পাঠাইবেন তাহা ক গাঁধাক তীযুক্ত করিনীকার চক্রবর্তীর নামে আদি আক্রসমাজের কাগালেরে পাঠাইবেন।

श्री अदीक्षनोष श्राक्ष

मञ्जापका ।

আগাদী ১৬ই ফাস্ক্রন রবিবার কর্মনান ভাষাসমাজের সন্তবিংশ মাসংসরিক উৎসক কুটবে

विव्यक्षिक हिन्द होने का



তভারোধিনী পারকা

मधाना व्यक्तिहरू स्वाधिक्षा त्यान् विक्रण विक्रियां प्रतिक्षेत्र कियां प्रीयमनन्तः सिव समन्ति हर्षय विक्रियां समाधिक् सर्व्यक्षेत्र प्रत्यानयम् सर्व्यात्रवस्य विक्ष्य प्रतिक्षय देश्य पूर्वमणितस्मिति । एकस्य तस्तेवा प्रायन्ति स्व पार्यस्व केस्टिकां व स्वेभविकाः निक्षण प्रतिस्व स्व सिथकार्थ्य साधन व सद्यासन्तेतः ।

অভিনন্দন পত্র।

ভক্তিভাজন জীমগাহণি দেবেক্তনাথ ঠাণুর এবানাচার্য মহাশয় জীচরণেযু।

वार्गा!

অদ্যকার দিন আমাদিকের পক্ষে হাদিন, যে দিন আম্রা, দাধারণ আক্ষ্যমাজের সভ্য-গণ, পবিত্র মাঘোৎসবের তানন্দকর সময়ে, আপনাকে আনাদের স্থানয়ের ভক্তি ও ক্বত-জ্ঞতা জানাইবার জনা আপনার সন্নিধানে উপস্থিত হইতেছি। দিন দিন আপনার भद्रीत खताकीर्व ७ विद्यमञ्जू हरेरिकट्ट (प्रविधा আমরা বছদংখ্যক নরনারী আমাদের ভক্তি শ্রমার উপহার দইয়া আপনার স্মীপে উপস্থিত হইয়াছি/৷ আমরা জানি, আমা-त्मत्र ममानुद्रम जानात मदन देव अद्भवना হইবে, তাহাঞ বাপনার শরীরের বর্তমান व्यवद्याद्य सार्थभीय नरह; ख्यानि वागा-मिट्रां मेंदेश- वांटनटक जाननाटक प्रिथात অন্য ও আপনার ওই পবিত্র মুখের কয়েকটা क्या खनिका जना कुछ উৎস্ক, हे बाया-निगरक बीरा रहेश याशनात्क अरे क्रिय

অপিনার ন্যায় তালান্ম কের হিতকীনী বন্ধা কৈ? মহাজা রাজা রামমোহন রাগ ইহলোক হইতে লক্ষ্য হইলে, তাঁহার বস্তুদিগের মধ্যে আয় সকলেই ঘখন ইহাকে পরিতাগি করিলেন, যখন ইহার অভরের তুর্বলতা ও বাহিরের প্রবল বিপক্ষকুল ই-হাকে অক্সেম দশায় পতিত করিল, যখন দেশব্যাপী ুঘন নিবিজ্ অন্ধকার ও বিবিধ पूर्नीरिंद गर्मा अहे मगाच युज्छोत्र इहेता পড়িল, গথন ইহার অন্কুরিত দেহে জল দেচন করিবার কেহই থাকিল না, **য**খন উৎসাহ দিবার ও সাহায্য করিবার লোক অধিক ছিল না বরং নিরাল ও ভয়োদাম. ক্রিবার সকল কারণই বিদামান ছিল, তখন আপনি বিধাতার মঙ্গল হস্ত ছারা নীত হইয়া ব্রোক্সমাজকে প্রাণের সহিত আলিঙ্গন ক-রিয়া ও ইহার কার্য্যভার নিজ মস্তকে লইস। ইহাকে রক্ষা করিয়াছেন, এবং ইহার দে-বাতে আপনার সময়, অর্থ ও সামর্থা অক!-" তরে নিয়োগ করিয়া ইহার অবসন দেহে জীবন, সুক্রি করিয়াছেন। " আপনার জাগ-মুনের পুর্বেষ জালীসমাজের আধ্যাত্মিক অবস্থা **শ্তিশয় হীন ছিল। ইহার চেট্রা গ্র**ধানতঃ

কতক্তলি কুদংস্কারের প্রতিরাদে ও কড্ছ-ভিলি বিভদ্ধ মত প্রচারে পির্যাবসিক্ত হইত। कार्यानहे मडा-यक्षरंगं कर्छन। विधिन्त्री প্রবর্ত্তিত করিয়া ত্রাক্ষসমাজের আর্থারিক ভিত্তি মুপ্রতিষ্ঠিত করিয়াছেন: এবং সেই জীবনের উৎসের সহিত আমাদের আছার যোগ স্থাপন করিয়া আমাদের আগাভ্যিক পিতার কার্য্য করিয়াছেন। আপনি ত্রাক্ষ-ুসমাজকে অনেক কুদংস্কার স্ইতে উন্মুক্ত े किरिয়াছেন; আপনি শান্ত্রসিদ্ধু মন্থন করিয়া ্রিনেক দত্যায়ত উদ্ধার পূর্বেক আমাদিগকে শুক্ত জীবন শাভ করিবার পথ প্রদর্শন করি-লাছেৰ; আপনিই সর্বাত্তে নিজ চেঙা এবং বিদ্যালয় স্থাপন ও প্রচারক নিয়োগ প্রভৃতি মার্ন্ত দেশ্যধ্যে পবিত্র ক্রাক্সধর্ম্ম প্রচার করি-বার প্রবাদ পাইরাছেন; আপনিই সর্বাত্তে ব্যাকাধর্মের অপৌতলিক গ্রণালী অনুসারে ু গাছ বা শ্রুষ্টানের পথ প্রদর্শন করিয়াছেন; भाशनिह मर्वाद्ध विश्वष छेशामना अशानी , लाबस्यः प्रदेश उपयुपादत नित्क माधन व-রিয়া অধ্যাত্রযোগের ভাব প্রকাশ করিয়া-रहन ; এবং | निक जीवरत खान शीं छ। अ प्रेमंतरमवात बीमाब्रातन मृक्षीख अमर्गम कविशा ব্রাকাধর্মের প্রকৃত ভাবকে উচ্চল করিয়া-ছেন। পত্এই ব্রাহ্মসমাজ আপনার নিকৃট हिद्रनिद्रनत् जना थागी।

কেবৰ ব্যাহ্মশাজ কেন, সমগ্র ভারত্ব সমাজ আপনার নিকট থানী। পবিক্র-সর্ত্তন পরবেশকের আধ্যাত্মিক পূজা বহুদিন হইতে এনেশে নির্প্তপ্রাহ্ম হইয়াছিল। আপনি ভারতের ক্রি-টিভাকে জার্রত প্রজাধান ভারতে ক্রিন্তাহেন প্রত শাভ নাম নারীয় ক্রিক ভারত আকার্তন ক্রীপির ক্রিয়া-

জিয় ও পাপাসনিক কৰাল ক্ষাত্তিক বন্ধা কৰিয়াছেন। জায়ড়ের একন বন্ধ কর জন গুলামরা এই সকল উপকার আবণ করিয়া আপনার চরটো ক্ষায়ালের ভাজি, শুদ্ধা ও কৃত্ত্বতার উপকার কর্পণ করিন তেছি।

चामता जानमातरे जागाजिक नेवाम है আপনারই শ্রম ও কার্ষ্যের উত্তরাধিকারী। আপনি যে গুরুভার, উৎদাহ, অমুরার 💇 পার্থ-ত্যাগের সহিত চির্নিদ্য বহন হারিয়া আসিয়াছেন, আশীর্কার করুন আমরা বেন বৈই ভার সেইরূপ বিখাদ নির্ছর ও আত্ম-স্মর্পণের সহিত বহিতে পারি। আপনি 🖟 আমাদিগকে যে গভীর আধ্যাত্মিকভার পথ श्रामन क्रियार्थन, श्रामीर्याम क्रून धन ভাগ্। ভামরা প্রাণপণে সাধ্য করিছে পারি। "তাহাকে প্রীতি করা তাঁহার প্রিয়কার্ মাধন করাই ভাহার উপাসনা"—এই অফ্রা সঙ্গা আপ্নিই আমাদিগকে পিকা দিয়াছেন 💝 चानीक्तान करून देशन कहे चेशदनम सामदा কখনও বিষ্যৃত না হই। বাশনার ক্লারোর শক্তি যত দিন ছিল 🗰 দিন মর্বতে ভাবে खाकाम्यादकत दगरा कहित् कि के दबन नाहै। এখন আপনি জয়া ও সমূহতা বশতঃ যাইছ কাৰ্য হৈতে অৱস্ত হইয়াছেন,তথা শিএখন প্ৰ विश्नात कीरम यामानिगतक विश्वत ने दूर ত্রীতির উচ্ছল দৃষ্টান্ত প্রদর্শন করিতেটা এবং এখনও আমরা ব্রাক্তসমাক্তির বিধ্ निमेन्छीरन पार्शनात श्रामाण नार्शिक थाल इरेटलिहा याननि अवन्त्र यामा-(मन ब्रांट्सा फोल्डन, हेरा छावित्स ब्रामा-ेटमत कोनन्स । काठवर जेपटतत ठतटन काया-(यत के चाचतिक शार्थना, त्र चिनि वर्षनक ्निक्र में भागातक जागातम् नरका बाह्य भाग में निक्शाप्त ना डाड की सहस्र

বিষয়ে উন্নালের প্র পরাধানের মারা ব্যানাথনা ও কেই বাভার্ত্রমান্তের নার প্রাণালে উবিলা-হিত করুর। স্থান্ত্রা আপনার করে ও আলীস্থাদ মন্তকে বাহাণ করিয়ালুনা পরিত ইয়ালোর প্রতি প্রতি উন্নাল করি : এবং উবিলা-হের সহিত দেশ বিদেশে তাঁহার বানা প্র-চার করি ; আপনি দেশিয়া স্থা ইউন। যে ব্রাক্ষান্যাকের উন্নতিতে আপনার এত আনন্দ, নেই ব্রাক্ষান্যাকের দৈনন্দিন উন্নতি দেশিয়া আপনি জীবনের শেষ অবস্থা পর্যা পরিত্তির লাভ করুন।

আন্ত একবার আমাদের প্রতি দিসেহ
দৃষ্টিতে চাহিয়া দেখুন; এনন দিন ছিল
যখন আপনার প্রিয় ত্রাক্সধর্ম অতি অল্প
সংখ্যক লোকের মধ্যে আবদ্ধ ছিল; এখন
দেখুন ঈশর-ক্নপার কত শত নহনাণী দেই
পবিত্র অগ্নি হৃদ্ধের ধারণ করিয়াছিন। দেখুন
কত মহিলা কত পরিবাব আব্দ এই কৃততত্তার উপহার লইয়া আপনার সমিধানে
উপন্থিত হইয়াছেন। আপনি দুশ্বেত সকদক্ত সেহাশীর্কাদ করুন। ইতি।

আননার আনীর্ব্বাদীকাজনী নীধারণ ভাষাসমাজের সভাগণ।

ব্রাক্ষদমাজের প্রধান জাচার্য প্রামমহর্ষি দেবেন্দ্রনাথ গাকুরের প্রভাৱর।

প্রীতিভাষন

क्षिमर नाशास खामानेहा स्व नेहान

CAPAL S

नाकि वक्त इरिकाश-हेश क्रमात्त बदनव मार्क वार्व करणित हिस की वर्ज कार्य वर्क क्तिरे। स्मा यागात कि यामुट्यत विन। শশুৰী ধৰন কোল এক জন তালাকৈ আমি দেখিতে পাইতাম, তখন ভাঁচাকে দেখিয়া ক্ষামার স্থানন্দ হৃদয়ে আর ধরিত না। এখন এশালে শত শত নর নারীকে ভাক্ষণর্শ্যে দী-ক্লিড ও অনুবৰ্ত দৈখিয়া আমার কত আ-নন্দ। স্থাদ্যে স্থানে অনুরাগের সহিত অমুরাগ শিশ্রিত হুইয়া কি এক অপূর্ব্ব আন-.. ন্দের পার। এখানে প্রবাহিত হইযাছে। আনন্দের এমন আসাদ আমি আর কবনই भारे नाहे। "এयदाकानम्याण्।" होनह षानम विधान करतन। विक्शानन क्यांटन, ্ধর্মানুষ্ঠানে বিশুদ্ধ পরিবারবন্ধ ভাক্ষদিগকৈ এজীবনে দেখিয়া মাইব ইহা আমার চিন্তার ও আশার অতীত। এমন কি মাল, কি পুণা বে, এই প্রাণত্তম, উন্তত্য আল্বর্ণককৈ জনকে ধারণ করিয়া ব্যোগাসমাভেক আৰি উপায়ুক্ত সেবক হুইতে পারি। তামাধর্মের জাক্ষাসমাজের উন্নতির बना याहा किছू बनिशाहि, याहा कि कति-সাছি তাহা কেবল তাহাবই কুপাতে—**ভা**ৰা-प्रदे माहारका। व्यामात सप्रदेश जिनि प्रा দীনু হইয়া ত্রাকাধ**ের্র উন্তির জনা** মে ভুড বৃদ্ধি ভোরণ করিয়াছেন ভারমার ৰামী চলিয়া **এডটুকু বাহা কিছু কৰি**ছে পারিয়াছি। সম্দার আকুনে বাহার ক্লার বহন ক্রিতে পারে না, আযার তুর্ব রুদয়ে দেই ভার পড়িয়াছে। ইহাতে আ-ক্ষৰা কি। ভাষার ক্সপাতে যাদী বে, দে লোবা হয়, পদু গিরিকে সক্ষম করে। একা-कृता है (करनर-उन्नक्ता हि (कर्मर, उन्न কুলা হি কেবলং পাপনাশহেত্রের জন গাহি কেবলং।" তোমনা **তাহার লা**

न शार्यना कत. डाशादक कम्ट्रा

ভাঁহার আদেশ অনুযায়ী অটল ভাবে চলিতে থাক, রাসাদ্যাজের অশেষ উন্নতি হইবে। চিরদিন ডোমরা তাঁঘাতে বিশ্বাস, নির্ভর ও আত্ম নমর্পণ করিয়া ভাঁহার পবিক্ল উপাদনার দৃষ্ট।ন্ত সর্বাত্র প্রদর্শন কর, ইহাতে আর অার मक्रान्त्र सम्हारक आकर्षन कविश्व एकागारनह সঙ্গা করিয়। লটতে পারিবে ৷ **েগালা**দের সহিত এমন প্ৰিক্ত সন্মিলন স্থা এ জীবনে আর উপভোগ করিবার আমার আশা নাই, সামার তো কথাও শেল ইইয়া আফিহাছে। কায়্য একাণে জোমাদের নিকট হইতে বি-গার লই; তৌমাদের মঙ্গল হউক, জো-गता मकरण अक्रमना इहेग्रा, खरक करक মিলিয়া, উদ্ধ্যে--ভাছার সিংছাদনাভিমুখে অটল ভাবে চলিতে থাক, তোমাদের মধ্যে মঞল বিবাদ কলছ তিরোহিত হউক, শান্তি-স্থ বিস্তার হউক। তোগালের ধর্ণেতে সতি হউক, ঈশবুরর গ্রেস-মুখ দর্শন করিয়। ভোগালের হাদয় নিম্পাপ ও পরিত্র হউক দি , ভোমাদের প্রাকৃ পারিবার মর্কের পারিবার ভউক, ভোমাদের কুলে যে**ন হেছুছ** প্রাক্ষ না খে। তথানৱা দকলে ভকাবান্ ও ভকা-এই দভাস্ব এতোক নরনারীর स्वद्य देशद्य श्रमान व्यवजीर्ग इंडेक, बहे আমান মেহপুর্ব শেষ আশীব্রার

সাধীর নমাজের অন্তর্গত ছাত্র সমাজের অভিনন্দন পত্র।

के उदगह।

দ্রম উক্তিভাজন

্ৰীমশ্বছর্ষি দেকে জনাথ ঠাকুর প্রধানাচার্যা মহাশয় জীচরতৈর ুধ

(ध्वा

আমাদের ভারতম মাছোৎদবে আমিরা লাধানণ ত্রাহ্মসমাজের অন্তর্গত ছাত্রসমাজের

সভাগণ ভক্তিপূর্ অন্তরে হৃদয়ের গভীর গ্রদা কড়জতা চিহ্ন-মুরুপ এই যৎসামান্য প্রীতি-উপহার লইয়া আপনার চরণ-প্রাপ্তে উপস্থিত হুইতেছি। यिष्ठि षांशारमत भएगी অনেকে আপনার সঞ্জি দাকাৎভাবে পার-চিত নহে, এবং যে সময় আপ'ন জালু-দ্মাজের বেদিকে অলভ্ত করিয়া আঞ্চী গিরির অন্যাৎপাতের নায়জ্বভ ও জীবন্ত সভা সকল বৰ্ষণ করিতেন গদিও আয়র৷ তৎ-পরকালব হী বলিয়া দেই উপদেশ এবণে স্বদজোগ কলিতে পারি নাই, তথাপি জা-মর। সকলেই বা দিন হইতে জ্পিনীর ভাষ ৯ সদয়ের ্নভুত স্থান গভার শ্রেমা ও কত-চ্ছতার সহিত ব্রেণ করিয়া অটিটেডছি, এবং আপুর্বা আধাত্মিক তান্ত্রের পণির-জরূপ **আপ**-নার বাখননমান। পাঠ করিয়া জামরা প্রভৃত উপকার লাভ কবিয়ারিও অদ্যাণি করি-তেছি। আপনি নিজ জীবনে যে প্রসাঢ় ঈবরগ্রীতি, আধ্যাত্মিকতা ও মতাপরামণতার উজ্জান দুরান্ত প্রদর্শন করিয়াছেন, আমরা «দুৰ্মল শক্তিতে যথাসাধা দেই পদবীর অনু-সর্থ করিতে চেপ্তা করিতেছি।

ভাষাদের অনিকাংশেরই প্রদেশা। ছাত্রগণের মধ্যে প্রভাব উদ্দাপিত করা,শিক্ষাকে
ঘর্ষের মৃদ্ ভিত্তির উপর স্থাপিত করা,
মৃশকদিগের মনে কর্ত্বা জ্ঞানকে উজ্জ্ঞা
করা, তাঁহাদিগকে ধর্মা ও নীতির মনেয়ে
স্প্রতিষ্ঠিত করা, এবং সকল প্রকার সদমুচানে উৎসাহিত করা, ছাত্রসমাজের লক্ষা।
জামানের এই ছাত্রসমাজকে আপনার পূর্কপ্রতিষ্ঠিত ব্রেমাবিদ্যালয়ের কার্যাের উত্তরাধিকারা বলিলেও হল। আমরা অদ্যকার এই
বিশেষ দিনে আপনার সেইনিরির-নিকট প্রাক্ষা
কর্মন, যেন এদেশে বিশা বিতারের সক্ষে
সঙ্গের মুবকগণ আপনার

হইতে পারে, যেন আলাদের শিক্ষা আমাদিন করিতে পারে, যেন জ্ঞান লাভ করিয়া আয়ের। এত্রের মহিমা অমুভব করি এবং-বর্মের জির সঙ্গে সংক্রের বিশুদ্ধ-চরিত্র থাকিয়া স্বার-প্রীতি ও স্বার-সেবাতে আত্মসমর্পন করিতে পারি। ইতি।

স্থানার বং করি আপনার আলীর্নানাকাজনী ছাত্রসমানের সভাগণ,

শ্রীমথাহর্ষি দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুরের প্রভারতার।

के जदमंद ।

নেবলপদ হাজসমাতের সভাগৰ ্লামীপেয় :

প্রিরদর্শন।

খাঁমাুর প্রতি ভোয়াদের শ্লুদ্যাের কৃত-শ্বস্তার ও প্রীতির উপঁহার আমি জাদরের **সাহিত্র** জানন্দের সহিত গ্রহণ[া] করিলাম। জ্যানা ইন্দ্রিয়দিগকে সংযত করিয়। হাদ য়কে পবিত্র কর এবং ভাহনতে যে ব্রাঞ্জ-ধর্ম-বীক রোপ্লিত হইবে তাহা ভক্তি ও अकात महिज शालन कतिए थाक, कारम जिल्लिए देश केन किनात (म कन इहेर्ड নিশ্চয় প্রতিষ্ঠাত হইবে। ভোমরা ধাহা विष्टु निविद्य, जाहाटक श्रीममृना इहेटव। ट्यामैंबा जियदतब लटण वंज्यूक् वज्ञमत हहेटव य देव जारा तका कतिता। जित्रार् बाक्तरे के के कि दिल्ला के अर्ज कि ৰ্ভন কৰিতেছে। ভোমনা জ্ঞান লাভ কৰিয়া यद्भित गरिया 'अपूर्व कर अवर रात्राहितत मृत्य गरम , हड़िकरक विश्व के ब्रिया मे बत-लीकि मेर्ड-खाराटण पान नमर्गन करी। रेहाटक देशमान्द्रकार रेहकारमद ७ शतकादमन गणन रहेडको द्वारात्के पाक द्वारात्क

শারীর মন আত্মা কুণলৈ থাকুক এই আমার্র আশার্কাদ।

ব্রাক্ষাধারণের প্রতি ব্রাক্ষানাজের প্রধান ক্ষাচার্যা শ্রীস্মাহর্ষি দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুরের উপহার।

.डॉ. ख**्म**ः ।

হৈ থিয় বেকিলেন ।

"সংগ্ৰহন নবেশন সংগ্ৰহন নবাংকি ভানতাং ব

দেৱা ভাগং বহা প্ৰে সংহানাল উপাসতে।।"

কোনৱা সকলো এক সত্ত্ব নিজিত হ'ও,
এক সত্ত্ব জানো । প্রাহন দেবাতারা ধ্যন্ন
এক্যত হইয়া ইনিউলা গ্রহণ ক্রেন—তো-

শ্ৰমানীৰ আক্তিঃ স্থানা প্ৰয়ানি বং । স্থানমন্ত বো মনো গোৰঃ প্ৰহাস্তি॥"

মরাও দেইরূপ এক্যত হও।

তোমাদের সংকল্প-এবং অধ্যবস্থা সমান ১উক, তোমাদের স্থান সমান হউক, তো-মাদের মন সমান হউক -- থাহাতে ভোমা-ধের মধ্যে স্থানোভন দশ্মিলন প্রাদুধ্ত হয়।

তোমবা সকলে এক-স্বদ্য এক-বাকা

হইয়া চল বেদ্বেচনে ভোমাদের প্রতি এই

যে আমার স্লেচের আশীর্হাদ ও হিত-কামনা
প্রকাশ করিলাম, এই বিবাদ কলছের মধ্যে
তাহার এতি তোমাদের বিশেষ দৃষ্টি রাধা
কর্তবা। ইহার জনা তোমনা এই প্রত্তীতি যদি অবদ্যন কর, তবে ইহাতে সিদ্ধা
কাম হইবে। পদ্ধতিতি এই আমারা আদি
আন্যা কোন রূপ তালা বা মন্ত্রাহী তালা বা
আন্যা কোন রূপ তালা, এই ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র ভাব
বিশ্বত হইয়া, আমরা ত্রালা—এক সম্বরের
উপাসক, এক পিতার প্রে, মনুষা আমাদের
ভারা, এই মহৎ ভাবতির প্রতি আত্রার

সমল্য ঝোঁক স্মূপণ করা। এই পদ্ধতিই मध्यनत्नेत्र लेखि । এই পছতি खरनयन করিলে ভোমাদের মধ্য হইতে সকল বিবাদ চলিয়া যাইখে শান্তির অভাদয় হাইবে এবং लानाश्चित क्रि हरेता।

- ১। ব্ৰাক্ষাপৰ্ম আপ্ৰাজিক ধৰ্ম। তা-হার বীজ এই যে, আন্ধার দারা পরমান্তাকে কানিবে। আ**ন্থাতে ঈ**শরকে দেখিলে স-र्वजर छ। हाटसं (पथा, यात्र। विनि नकल বৈচিত্রের মূল, সকল সংসারের একাধি-পতি, ভাঁহার প্রিয় আবাস-ভান নর-নারীর व्यक्ति। व्याजाटक यपि ना बाटना उदर म-किल भूना । शाकार भन्नाक खाटनत मृत ।
- २। वह भतीदवन मटना ८घ भनीती আত্মা, ভাহার অভান্তরে বিশুদ্ধ জ্ঞানালোকে ওদ্ধ-বুদ্ধ অশরীন পরনান্ধাকে দেখিনে---শান্ত, দান্ত, উপরত, তিজিকু, ম্যাহিজ হ-हेशा श्रीष्ठ व्याचाटल श्राद्यारक ट्राप्टिंट । बार्ड जावा जारवा था। ভক্তিৰ সহিব এই शासा युक्त इहेटल भक्त थान इहेटल নিত্ি পাইবে, মুক্তির দোপান লাভ র্ভার পরে শরীর পড়িয়। থাকিবে কিন্তু এই যোগে যুক্ত হইয়া আজা পরমাত্মার সহিত অনন্ত কাল বিচরণ করিবে।
- ৩। শরীরের স্থতার **জন**া যেমন প্রতিদিন নিয়মিত আহার কর, দৈইরপ আত্মার স্থতার জন্য প্রতি দিন ঈশবের উপাসনা করিবে ৷ ঈশরের উপাশনা খা-ত্মাৰ অন।
- 48 ৷ "ভশ্মিন্ ত্ৰীভিন্তদ্য প্ৰিম্বাধাৰ্যাদাখ-नक उठुनामनत्यर।" दम्भकानाती प व्यक्त रमगकालवाभी नर्समाकी मजा ग्राम्य ব্ৰহ্মকে পিড়া যাজু হবং, আনিয়া বৰ্ণানী হাদয়ের প্রভু ক্মনিয়া প্রেম-তরে নিতা স্থা-রাধনা করিবে এবং সংসারের বিত্কারনীয় ठाहात श्रित वर्षा-कार्ता-किल भा तिराज मान्य के भाषाचिक केनान मानदक वर्षा

धन कतिट्र थाक्टिन किंद्रा अभाजनाव এই নিতা-যুক্ত তুই অসংকে কদাপি বিচিহ্ন क्रिंदिर ना।

- ৫। কুলপাবন সৎপুত্র হইয়া সর্বাদা সর্ব-প্রয়ত্ত্ব পিতা মাতার সেবা করিবে। ভাঁহাদের প্রতি কদাপি কর্কশ বাবহার করিবে না। আপনার স্থভোগের কামনা পর্ব্ধ করিয়াও ভাঁহাদিগকে স্থগী ও সন্থপ্ত : गिचिवात (छ्डे। कतिरव ।
- ও। গরমেখরের ভ্রীতি-কামনায় ভাতা, ভাগিনী, ভাষ্ণা, পুত্র, কন্যা সন্ততিদিগকে অপরাজিত চিত্তে প্রতিপালন করিবে এবং তাথাদের শারীরিক মানসিক ও আধ্যাত্মিক কল্পাণ সাধন করিবে।
- भागानव्यक्रिका माधुनीमा क्रीटकः विवर्ष क्रिटिं। ऋधा वा जन-हीना वा जून-রিত্রার পাণি-গ্রহণ করিবে না। স্ত্রী ও পুরু-যের মধ্যে কেছ চারিজ্ঞাহী**ন হইলে অংশষ** অন্তুল উৎপন হয়, অত এব পরস্পার পার-স্পারের সুশীলতা অবগত হইয়াবিবাহ-বলনে **আক্ষ হইবে।** পত্নী স্বামীর **সহ-**धर्मिनी इटेटनम, महकर्षिनी इटेट्रन, मह ट्लिनिनी इट्रेंट्रन। मूला कात्रा अञ्जीकत कतिरत ना এवः निष्क वर्षमानुश रहेश পত্নীগ্রহণ করিবে না, ভাষা ধর্মের সক্ (यापिछ गटर।
- ৮। सामीत शिवकातिनी, रिष्कातिनी, নদাচারা, জিতেজিয়া, ত্রজাপরায়ণ প্রতি বেমন মনুষোরা সম্ভুট হন, সেইরা তাহার প্রতি ইশর সম্ভই থাকেন রূপ স্ত্রী ঐতিক পারত্রিক মঙ্গল লাভ করিয়া कृषार्थ एव अरा काहात की कि भूभिनीर ए जमाना जीपिगरक नार् कर्ण्य केंद्रनाक लान
- **৯। खाट्यामा छोत्र मात्राम**

নেন, সতুপদেশ প্রদান ও সাধু-দৃষ্টাত প্রদাদরের দান করিবেন, এবং প্রীতি ও সুমাদরের সহিত তাঁহাকে প্রতিপালন করিবেন। স্থাধী স্থাকে পুরুষ কদাপি পরিভাগে করিবেন না।

১০। তুর্বিনীতদিগের বে অভতে দর্শনে, অভতে শুবনে মন অভত ছইতে পারে, বে সকল আমোদ প্রযোদে ধর্মভাব মলিন ই-ইয়া যায়, যেখানে পাপ-প্রলোভন মনকে বিচলিত করে, তথায় তুঃসঙ্গে অবস্থান ক-র্ত্তবা নহে। বিশেষতঃ স্ত্রীলোকদিগকে এই সকল তুঃসান ও তুঃসজ ছইতে অতি যক্ত্র-পূর্বক রক্ষা করিবে। পাপ-সংসর্গে পাপের

১১। যাহা কিছু শরাধীন তাহা দুংথের করেন। অতা
করেন। আত্মবল দকলি সুথের করেন। অতা
করেন। আত্মবল দকলি সুথের করেন। অতা
করিকেন। আত্মিনিতা আত্মনিত্র
আত্মাদ করিবেন। আত্মিনিতা আনোর
গলতাহ হইবেন না। মিত্রবায় অভ্যাদ করিয়া অতিলোভ পরিত্যাগ করিবেন। মিত্রবায় ছালা আপানার ও পরিবারের ও সমাক্রের কুশল রক্ষা করিবেন। কদাপি কুপণতা
দোবে লিপ্ত হইবেন না।

১২। আত্মার ধারা যে আত্মা বশীভূত। হইরাছে, সেই আত্মাই আত্মার বন্ধ। আ স্মাই নিয়ত বন্ধু আত্মাই নিয়ত রিপু।

১৩। উত্তম মানব জন্ম প্রাপ্ত হইয়া এবং ইন্দ্রিয়েনোষ্ঠব লাভ করিয়া যে ব্যক্তি আর-ছিত্ত লাজানে দে আত্মহাতী হয়।

১৪। ঘতই বিষয় ভোগ শ্বিবে, বিষয়তৃষ্ণা ওড়ই বৃদ্ধি পাইবে। অভএৰ সন্তোয শ্বিকাশন করিবে এবং প্রাক্ত ভৃত্তি-হান সংসাবের অতীত শ্বিনা। সংসারের আসক্তি
প্রিড্যাগ করিবে।

১৫। স্থই ছউক আর দুঃখই হউক, শ্রেম ঘটনাই হুউক আর অপ্রিয় ঘটনাই হউক, সুক্ষাই এই লক্ষ্য রাখিবে যেন তাহাতে হান্য অভিভূঠিনা হয়। ঈপবের মসলস্করণে অভাষিত চিত্তে একান্ত নির্ভর করিয়া হার তুঃখ ও সম্পদ বিপদকে পরাজ্যা করিবে। শির ঘটনায় আফ্লাদে মত্ত হইবে না, অভিয়ে ঘটনায় বিঘাদে মিয়মান হইবে না। মনের মধ্যে অভান্ত সন্তাপ উপস্থিত হইতে নিবে না। সন্তাপের কারণ উপস্থিত হইলে ধৈর্য ও বিবেচনা পুল্লক আপনাকে রক্ষা করিবে।

১৬। আত্ম-প্রশংসা ও গরনিদা পরি ত্যাগ করিবে। সর্বদা সভায়েত থানিবে। মনকে সভ্যের অসুগত করিবে, বাকাকে গতেরে অসুগত করিবে, এবং আচরণকে সত্ত্যের অ**মুগত করিবে।** ধাহ'তে সত্ত্যের ন্দ্ৰ**লপ হয় না অ**খিচ কোনেন্দ্ৰ প্ৰীতি ও কল্যাণ উৎপন্ন হয় তাদৃশ বাকাই কহিবে। ধাহা দতা কিন্তু তাহ। কঢ়িলে কাহারে। স্দুৰ্থে আঘাত দেওয়া হয়, তাহা সংযক্ত করিয়। রাগিলে, ধর্মের **-অনুরোধে তাবশকে** না হইলে কহিবে না। প্রিয় অথচ মিখন একেবারে পরিত্যা<mark>প করিবে। বা</mark>ক্যে সভা-বাদী ও ব্যবহারে সত্যপরায়ণ হইবে। স-তোর স্থান আর ধর্মানাই—স্পা হইতে প্র**কৃ**প্ত বস্তুত আর কিছুই নাই। ইছুলোকে মিধার পর ভীরে পদার্থ ও-আর নাই।

১৭। বাহাতে মদল হইবে ভাহারই
অনুষ্ঠান করিবে। পাপকারার প্রতি পাপাচার করিবে না। কেই অন্যায় করিলে অন্যায়
করিয়া ভাহার প্রতিকার করিবে না। সকলি সাধু থাকিবে। সাধু উপায় অবলম্বন
করিয়া অসাধুভার প্রতিবিধান করিবে। ন্যায়পরে থাকিয়া অন্যায়াচরপের প্রতিবিধান
করিবে। অসাধুকে সাধুজার ছারা জয়
করিবে। কেই অস্থাবহার করিলেও ভাহার
প্রতি স্থাবহার করিবে।

" >৮। यद्भृत्रिक गामुगक किति व मर-সারে সামারিধ অবস্থায় পদ্মিত ইন্টডে হয়, ভাহাতে অভংকরণ নানাবিধ ভাবে আক্রমন্ত 'ও বিক্ষিপ্ত হইতে পারে। বর্মভানি,মান তুইতে পারে, পণিত্র উৎসাহ নির্মাণ ইইতে পারে, দাধু আশা নৈলাশ্যে পদিবত ফ্ইতে शास्त्रभार छैद्धान सरेहा की तनत्क शानन ক্রিতে পারে ৮ এরপে অবস্থায় সার্গট্রর মংস**গ আত্মানে** প্রকৃতিক করিতে পারে। দাধুদক্ষ প্রভাবে মুম্রুদ আত্মা জীবন প্রাপ্ত হর, হারাশ **মনু**য়া **এআ**শা লাভ করে এবং: নিরুৎদাহ চিত্র উৎসাহিত হয়। ধেষন मूर्विक कारलोक क्र**भशेन, क्**रुंक क्रभवान করে, মেইরূপ সাধ্যপের সাধ্তা অনাগু कीदनत्त ७ भविज ७ भूगानीम करत्। माश्र মঙ্গের এই মহৎ গুল যে, ভালতে অসাধ ভাবের দমন হয়, শাধু ভাবের উত্তীপন হয়। অভ্এব ধৰ্মাধীগণ দাধুসঙ্গু সেণ্ডে অবছেল। क्तित्वनं ना।

্রিটা অযাধ্যম প্রিটাগ করিবে।
বাহার সঙ্গে অব্সান করিলে নীচ কামনা
ও নীচ ভার উৎপদ হর, ভাহা হইতে আপনাকে বক্ষা করিবে। অসাধু বাজিদিগের
মুহলানে সম্ভ নোহের উৎপত্তি হয়। অসাধনঙ্গে গাপের প্রাভ হব। ও ধর্মের প্রতি শ্রাধা
মধাস্থত হয়। অভব ভোমর। অসাধ্-মঞ্চ
পরিহার প্রতি সর্বাদ। সাধু-মঞ্চ করিবি।

কং। কছারে। সহিত বিশাদ করিবে

না। জেল্প সম্বরণ করিবে এবং কুম্মা ও

শীতির সহিত সকলেন করিবে এবং কুম্মা ও

শীতির সহিত সকলেন করিবে সহিত করিব।

হৈবে। মৈত্রীই খেন অনোর সহিত করিবহিত্রে নিয়ান হিয়।

ত তিপ্রার প্রতি তৃত্ত হইবে। কেহু সামান। উপকার করিলেও তাহা বিদ্যুত হুইক কাল কৃত্ত তার বিপ্রতি ভাব কৃত্ত হুতা হেন তোনালের মনে স্থান মা গায়। যেহেতৃক কৃতভের খনই বা কেথাির, স্থানই বা কোথায়, স্থই বা কোথার ? কৃতত্ব বা ক্রি প্রাক্তার পাত্র নক্ষেত্র নিক্তি নাই।

২২। অন্নই হউক আন অনন্নই হউক
আৰু। পূৰ্ব্যক সংলাতে দান কৰিবে। দাতার
ভাৰা, পাত্রের উপযুক্ততা অনুসারে দানের
উৎকর্যতার তারত্যা হয়। যাহাকে দান
করিলে অসং কর্মো উৎসাহ লেওয়া হয় তাদুশ অসং পাত্রে দান ধর্মোর অনুমোনিত
নহে। যে বাজি বাস্তবিক অভাবে নিপী
ডিত হইতেছে, দাতালগের অনুগ্রহই যাহার
একমানে ভরমা সেই বাজিই দানের উপগ্রুভ পাত্র। তাদৃশ সংপাত্রে এজা সইকারে
ঘণাসাসা দান করিয়া তোমরা পুণা উপা
ভলন করিবে। ইহাতে তোমাদের আল্লা

হত। দানের জনা জ্নার প্রবিক ধনোপার্জন কবিবে না। তাদৃশ দানে প্রালাভ হয় না, প্রত্যুত ভাহাতে মহৎ পালে পাতে হইতে হয়। অভ্যুত্র যদি ধন নানে গামগা না থাকে তবে জার ব্যুক্ত ভিলাজ জুলারি করিয়া ধন আহরণ করিবে। ক্রিয়া প্রকাশ জ্বাহিন সাম্প্রায় করিয়া ধন আহরণ করিবে। ক্রিয়া প্রকাশ জ্বাহরণ করিবে।

২৪। আপনার জীবিকা ও অব্যা-পোকা পরিবারগরের প্রতিপালনের জনাও অনায় পরিক ধনোণার্জন করিবে না। ঈশ্বর যে ধর্মজ্ঞান প্রশান করিয়াছেন তাহার জ্যানেশ প্রতিপালনক্ষা এ ক্ষণ-ভন্তর জীবনকে ক্ষলা করা অপেকার পরীয়ান্। যদি অনায়ে পাৰে থাকিয়া জীবন ধারণ করিতে হয়, তাহা হইলে দে জীবন বাস্তবিক হত্য এবং ধরি নায়ে রক্ষার অসুরোধে মুগ্রার্থই মৃত্যু উপস্থিত হয় তবে দেই মৃত্যুই আমানিগের জীবন।

২৫ । মহরহ আপনাকে গিকা দান করিবে—আপনাকে শাসনা করিবে মার্ নাকে ধর্মপরায়ণ করিব। বিদ্বি আপিনার ইন্দ্রিয়গণ ও অন্তঃকরণ বলীভূত হক্তরিতে পারেন, তাহার কেশ ক্রেন করিবার কোন কারণ থাকে না। যিনি আপনাকে দমন ক-রিজে না পারেন, ভাহার চতুর্দিকেই যন্ত্রণা।

ইউ। পরশ্রীতে কাতর হইবে নাছ পরশ্রীতে কাতর্তার তুলা কুংসিত বুলার আর কিছুই নাই । অনোর মঙ্গলের প্রাক্তি যাহার
বিষেষ হয়, ভাহরে আর মনের আরাম থাকে
না, ভাহার আর শান্তি থাকে না। শাই
সংসারে যে যত উন্নত হইয়া শুভ ফল ভোগ করিতে থাকে, সে অন্তাতসারে ইয়াকারীল মনে তত আলাভ দিতে থাকে। মন্ত্রীদ সকলের মৃত্তাের মনো আপনার মহল সহি-বিম জানিয়া ভোলার। ইর্ল স্কুড্ডা হাদ্রে হান বিরুষ।

२१। कुलाम निशंदन देवनातक पन করিবে। যে ব্যক্তি যনে। ক্লচিত ক্ষম। ধ।-थन। क्ली गह्य भारके भारति इहेरलङ खाग**िक केश्या** कृदिर । বিকার-জনক শ্রেলাভনে পরিবৈষ্টিত থাকিলেও অন্তঃকরণ যাহাতে বিফার লাপ্ত ন। হয় এইরাপে তা-ভাকে বলীপুত বিরিয়ে। সামীর মজ্যাত্যারে ষা প্রভারণ। পূর্কক অথব। বলপ্রক পর-अवा धर्ग कतित्व न। क प्रिक, यानांभक, বীচনিক দোষ-দকল প্রকালন করিয়া দর্ক-श्राकाद्र**क स्रथी हहेग्रा शाकित्य। हि**स्मिग्रननरक শাসন করিবে, বুদ্ধিকে মার্জিত করিবে, জ্ঞান অনুনাস করিবে, সভা কথা কহিবে এবং জোধ मर्गतम कतिर्ग। रेष्ट्रारे धटकात जिक्कन ह

২৮। অনের মুখ ছইতেও একটি আইনে বাকা প্রেনিলে যাহার লক্ষা বোদ গ্রাচ দৈই ছীলান। ত্রীমান রীজি পাঁপকে অভিনার রুগা করেন এক অভার সম্পর্ক হতুতে সূর্দ্ধে থাকিতে সভাবিত ইচ্ছা করেন—ভাষা হী বাহিত হয়। বাহার হ্রা নত হয় ভাহার পক্ষে ছবিত পাধা-পথ সহজ হয়—কল্যানক ধর্মপ্রেক তাহার বাধা জ্বেক্ষান্তবং জগতে পতিত হইরা জীহীন এ মলিন হয়। অত এক-তোমরা কথাতে, ভাবেতে, বেশ-বিন্যাদে যত্তপূর্বক হীকে গকা ক

মিকতা" বিনি গ্রালা গরপুরং কিনাঃ গুড় মিকতা" বিনি গ্রালার শুড়াকাক্ষা কলেন ভিনি বিমন আপনাকে ভেগনি প্রকে দে খেনা খেনন আপনাকে অনেল প্রীতিভার্ত্তর দেশিলে স্থী হও, সেইকল এনোর প্রতিভার্ত্তর দেশিলে স্থী হও, সেইকল এনোর প্রতিভার্ত্তর করিয়া ভাষাকে স্থী করিছে। সেকা অনোর বিদেশে করিও বেশাকর, সেইবাধ আনাকেও বিনেম করিয়া করিয়া করিয়া করিছে আপনার মহিত করিয়া আনার বিদেশে করিয়া আপনাকেও বেরাপা করিয়া করিয়া করিয়া আপনাকেও বেরাপা করিয়া করিয়া আপনাকেও বেরাপা আনাকেও সেইবাপা আপনাকেও বেরাপা আনাকেও সেইবাপা আপনাকেও বেরাপা আনাকেও সেইবাপা আপনাকেও সেইবাপা আলাকারণই কলাবে আক্রেড সেইবাপা আলাকারণই

৩০। শিনি।**ঈশ্বরেক ভক্তি করেন এ**বং शबुवारत लीकि **कर**तन, जिनिश्च मध्या कि কথন মনুষাকে অপবাদ প্রদান করিয় কাননিত হন লা। তেকননা মুমুষ্য ভাঁহাঃ প্রিয়। জিনি কাছারৌ দৌষ দেখিলে তুংগিত হন এবং শ্রীতির সহিত তাহা সংশোধন্ করিতে চেপ্তা করেন। जिनि ग्रथार মনুষ্য বলিয়া প্রীতি করেন, এই ব্যুমা 🚅 কাঁহারে। সদস্প দেখিলে আন্দ্রিত হুন এবং काशाद्या दमाय दम्भिटन वृश्थिक रूने। उं:-হার প্রথ ও চুঃখ উভয়ই গ্রীভি হইতে উৎপদ্ম হয়। স্বতরাং তিনি জাহলাদের সহিত কাহারো দোষ ঘোষণা করিতে পা ব্রৈন না। পিতা যাতা যেগন প্রকে পুত্র विभाग्ने की जिक्दान करे बना भूरवायु छन सिशिदन अभी इन जवर दिशय दिश्वत कर्मा বাৰ্ডি পান, সেইরপু, মনুষাকে কেবল ম-কুয়া বলিয়াই প্রীতি করিতে শিক্ষা করিবে।

তাহা হইলে অনোর অপ্যাদে বিদ্যা আনিবিদ্ আনন্দিত হইবে নান যে ব্যক্তি অনুন্দির দোষ দেখির। ও অন্যের দোহ ঘোষণা ক-নিমা হৃদ্ধে স্থা অনুভব করে, তাহার হৃদ্ধ অত্যন্ত কুন্দ। ভাদ্ধা কুদ্রতার সংশোধন করিতে সর্বাদা যভুৱান থাকিবে।

৩১। বিনয় বিজিই বশ্বাভ বিরিতে
সমর্থ হন এবং বিনহী ব্যক্তিই সংসারে
উল্লিড করিছে পারেন। বিনাহীন
বাজি সকলেরই বিদিপ্ত হয়। যদি সম্পতি
থাকে, বিনহী হইলে ভাহার শোভা ইদি
হইবে; যদি বিপতি হয়, বিনহত্তবে ভাহা
হইতে মুক্তিলাত হইবে। জতএব ঈহর অভ্যে
হে সকলে সদল্প প্রদান করেন এবং বাহিরে
ব্যুবকা বেনি প্র প্রদান করেন ভাহাব
বিনহিত এক দিন্ত অহলার কিবি না।

- 🏸 ७ई। "यिनस्य दमस्य दशस्यादा स्थापन राज्य यम, तृषि । उत्वक्त-माकि निरस्क ৬ ব্লাহীন হইয়া পড়ে, সদক্ষেত্র পবিজ ভাগ দক্ত অসাড় হইয়া যায়, পাতার আর न्य कि लाटक ना। त्य शतिवात विद्धा धरे गहा भाषा आदंतर करत, तम शतिकादेवते छूत-किर जीशे जेखें, मोरें। जेरे विपटण्टन कर्फ एक् छ मनन नाकि अरे बहालाने समा शका হারাইতেছে, অকালে বার্ক্তন্য প্রাপ্ত হই-্টিছে এবং ্র্যুস্থ্য স্থাতানে পতিত ধৃহিভেছে। কভ কভ ব্দিলাৰ ও বিদান ब्रांकि धरे बहाशां जना जामनामिद्रात वृक्ति ত বিদ্যা ছাত্ৰাইয়া লোকের সন্মুখে ব্লণিত ও ীম্প্যানিত হইতেছে। কত কত বিচক্ষ নিজি বিবেক-শক্তি-চুতে হইতেছে এবং রিপুগদের বলীভূত হইয়া পশুর ন্যায় আচল রণ করিতেছে। কত কত বা**জি আছার** ण्यमिष् कृतिया नियत छाटन अनिधिकाती इहेशा व्याननां निर्देशत स्वास्ति निर्देश के के রোপুণক রিভেছে। অতএব সার্ধান। তো-

मामिटमा सर्था देन और शाल करवन ना करता द्वामता जनाएक समा करव नाम जाशनाता सनामान कतिहत ना-कादकवादत जाहा भाग कतिहन ना। आहे महाजन धर्मा।

তাহাদ, তাহা ধর্মাত্র নৈর আছাতাহাদ, তাহা ধর্মাত্র হৈনের প্রাথিক লা।
আত্ম প্রদাদেই ঈশরের প্রদাদ অনুভূত হয়।
আত্ম প্রদাদেই ঈশরের প্রদাদ অনুভূত হয়।
আত্ম প্রদান বাতীতে আত্মা পরিবৃত্ত হয়।
হার্মের অনুষ্ঠান বাতীতে আত্মা পরিবৃত্ত হয়
না। বিষয়-স্থেথ মন স্থী হইতে পারে,
কিন্তু আত্মাতে যদি গ্লানি পাকে তাহা হইলে
রাশীকৃত বিষয়-স্থেও বার্থ হইয়া যায়।
অতএব ধর্মানুষ্ঠান বারা আত্মাকে শরিবৃত্ত
রাথিকে এবং ঘাহাতে আত্ম-প্রসাদের হানি
হয় তাহা পরিত্যাগ করিবে।

৩৪। ধর্মকার্যোর ত্যুষ্ঠানের নিমিন্ত নাধ্যানুদারে গড় করিবে। সমুদার শক্তি নিয়োগ করিয়া ক্রতকার্য ছইতে না পারি-লেও পুণা লাভ হববে। ঈশরের অশেষ কার্যা কে কতনুর সম্পান করিল, ঈশর তাহা গণনা ক্রেন না। তিনি যাহাকে যে শক্তি প্রদান করিয়াছেন সে তাহা অকপটে নিয়োগ করুক ইহাই তাহার ক্রিপ্রায়। তাহা হই-লেই তিনি তাহাকে ক্রতক্তা করেন।

তে । সারবী দেখন অব-সকলের সংঘদ করে, ততাপ বিষয়ে প্রবৃত্ত ইন্দ্রিয়-সকল লকে সংগ্রম করিবে। যে সকল বিষয় ইন্দ্রিয়াগোচরে উপস্থিত হইলে অভঃকরারো অগৎ ভাবের উদয় হয়, ইন্দ্রিয়াগতে তাদুল অপরিত্র বিষয়ে নিয়োগ করিবে না। পরিত্র বিষয় উপভোগের দ্বারা ইন্দ্রিয়াগতক পরি-তৃপ্ত করিয়া অহরহ জীবনের উদ্দোগাধনে প্রবৃত্ত থাকিবে। যখন যে প্রবৃত্তি উঠে ভাহাতেই ইন্দ্রিয়াদিক ধর্মের আদেশে মনকে প্রতিশিক্ত ও বনীকৃত করিয়া ইন্দ্রিয়া দিগতে দমন করিবে। মন যদি সেচ্ছাতারী ইন্দ্রিয়-সকলের অনুগামী হয়, তবে বায়ু যেমন নৌকাকে জলৈতে মগ্র করে মনও ভদ্রপ পুক্ষের বৃদ্ধিকে নত্ত করে। যথন প্রলোভন-সন্থল সংলারে অবস্থান করিয়াই ধর্ম সাধন করিতে হইবে তখন মনকে দমন করিতেনা পারিলে পাদে পদেই বিপদ ঘটিয়া উঠে। মন ইন্দ্রিগণের অনুকুল হইলে মধ্যা হলচেতন ইয়া প্রপ্রে যেতে মুগ্র হয়। অভ-তব খালতে শ্রার ক্ষাণ না হল এমত উপাল নারা মন ও ইন্দ্রিয়-সকলকে বনীপুত করিয়া স্থিতিখান্ত করিবে।

তথা লাপ চিতা, লাপানাল, পাল অনুষ্ঠান কলিবে না। বিছার। শন ও বাবন ও কর্ম ও বান দারা পালাচরণ না কাবন, সেই মহাস্থারাই তথ্যা। করেন। বাহার। শবীর শোষণ বলেন, তাহারা তথ্যনা করেন। না। অভ্যান ভোষণা দাগ হইতে বিরত কইয়া ভাত করেন। গালিবে। পর্মান্ত থাকিয়া জীবিকা লাভ করিবে।

२१। मर्घ-भर्थ थाकिश निकास वर्ध-मन इंटेजिं व्यथार्थ गत्नानितन कृतित ना ८ जागा धानभार्न मर्धाक नका कन, मर्घ जागामिनार्क् कैका कृतितन।

০৮। পরলোকে সহায়ের নিসিত্তে পিতামাতা স্ত্রী পুত্র জ্ঞাতি বলু কেইই থাকেন। একাকী মনুষ্য ক্ষমগ্রহণ করে, একাকী মত হয়; একাকী দ্বীয় পুণা-ফল ডোগ করে এবং একাকীই সীয় তৃষ্ঠত কুল ভোগ করে। বান্ধবেরা ভূমিতলে মন্ত শরীরকে কার্চ লোভ-বং পরিজ্ঞাগ করিয়া বিমুধ হইয়া গমন করেন, ধর্ম তাহার অনুগানী হন। অতএর আপনার রাহার্যার্থে জনম জনেম ক্রেম ক্ষান্ধায় বিশ্ব করে, ধর্ম তাহার অনুগানী হন। অতএর আপনার রাহার্যার্থে জনে জনেম ক্রেম ক্রিমে জনেম ক্রেমি ক্রেমির করা, ধর্ম করিবে। ধর্ম ইংকালের বন্ধ, ধর্মই পর-লোকের নেতা। "ধর্ম সংক্ষমং ভূতানাং

मद्।" थर्षा गरुतलत शरक मन् अतिरी पर्या गरुतनतरे शरक गन् अतन्।

৩৯। বিশ্বনের ব প্রাক্তরা ন কর্মনা তালেইনকেনায়তম্বান ৬৯। ব প্রের দানা মুক্তে লাভ হয়, কেবল একমাত্র তালেগর দানাই মুক্তি লাভ হয়। আর্নানামী বহাসী হইলা সংগার তালে করা নহে, কিন্তু সুহে থাকিছ মুগোরী হইলা ক্ষিতিক কামনা ক্ষুক্ত তালেছ

শিন্য সংগ্ৰা**প্ৰান্ত্যকে** কান্যবিষ্ঠা থানি(শ্ৰহা: প্ৰথমন্ত্ৰীয়ুক্ত হোডিল নামা নামা নামাণুতত প

रभन अल्टात कायगान्यका नित्र हर ভপন মাৰ্ভা অমূভ হয় এবং এখানেটি অঞ্চল रेप्परमान करता शी पूर बाधोपन्धित मकोश्रम्बद्धः स्थायन अजितन अन्य निष्कि नि কাম হট্যা ফল তেপ্তেটত আগত্তি ভাগ্ড করিনে, জনে মুভিনর নোগোনে আরোছন कतिएक भागित्व । इष्टात्र श्र्व लाम्स् एकः केशता स्थित (मध (क्यम अनाही) একটি কটি পতক্ষেরও আহার দিতে তিনি ভূলেন নাঃ - কৈঠোৰ পৰ্লতের গ্রন্তের মধ্যেও তিনি জাব জন্তকে অন গোগানতেছেন। किञ्च किन प्यौभनात कना ठिपूरे शर्यन नी, दिवन गकनंदक निट्छें भारतन। अहे আদর্শ অনুমারে তোমনাও আপনাকে 🛫 নিয়া সংগারের মন্ত্রন কর্ন্সে রেডী আকিবে। তাঁহাতেই যুক্ত হইয়া সংখ্যার ধর্মোর অসু-ষ্ঠান করিবে। যাহা ভাহার আদেশ বলিয়া **জানি**বে তাহা প্রাণপণে প্রতিপালন করিবে। যাছা ভাগার ইজার বিরুদ্ধ বলিয়া জানিবে ভাষা বিষৰৎ পরিভাগে করিবে ৷ ভূমি যদি আপনাকে ভুলিয়া এইকণে ভাঁহার কার্যা করিতে থাক, নিশ্চয় জানিও তিনি তো यात्क पूर्वित्व ना। ट्यामात त्य मकन অভাব তাহ। তিনি পূর্ণ করিবেন।

তাল্লাকি বাদা দেন তাহাই বাদে বিশিল্পানিক তাহার কোন্দ্র কর হইলা এইণ করিবে। তিনি তোমাকে তের আহার নাবেল সেই অনুসাতেই সম্ভঙ্ক থাকিবে। সাম্পুৎকালে ভাহারই অনুসাত আহার কালেক তাহারই অনুসাত আহার করণান করিতে পার; পালে ভালেক হইলে না। কর্মের করিতে হইলা সম্ভঙ্ক চিত্তে ভাহার প্রমাদনার করিতে পার; কিন্তু এই ভর্মান্দর তাহাতে থাকিয়া কর্মা করিবে বিশ্রান করেবে বিশ্রান করিবে। এই শরীর পৃথিবীতে সকরণ করিবে। ক্রিকে হাইলা মথন ভাহার ইচ্ছার অধীনে ভোমার আত্রা পারসাত্বাতে মুক্ত থাকিবে। বিশ্রান করিবে। এই শরীর পৃথিবীতে সকরণ করিবে। বিশ্রান করিবে তাহার আত্রান পরিবাতে সকরণ করিবে। মুক্তাতেও আত্রান সহিত পারমান্নার এ প্রার্থনা কিয়া এই একটি প্রার্থনা ভাহার বিশ্বান ভাহান বি

৪০। পাজরাজ্যে কার্নিতা নাই।

সৈপর আতাকে কার্নিতা-অন্তার নিরাছেন্। এই দ্বাধীনতা থাকাতেই লোমাদের
পদ্ম কার্নো—শুভ কর্মে অধিকার হইয়াছে,
ভোষাদের ক্ষেত্র কর্মেতে অধিকার হইয়াছে
বিশি ভাষার ক্লেতে নহে। ফল ফল-

"क करिना वाधिकांत्रटल मा कटनम कनांटन।"

স্বাট্রেরে কর্ম করিলে বিজ্ঞ তাহার क्ल-लाउडत कमा रतकुण श्रहेरव गा। ুঠি। মাদের এই নৃত্ বিশ্বাস হউক বে, জগ-্তির মঞ্লের সহিত তোমাদের সঞ্ল সাহা খাঁধা আছে তাহা তিনি নিশ্চয়ই বিধান করিবেন। ভোমরা ভাষা মস্তক পাতিয়া গ্রহণ ক্রিবে। তোমাদের শরীর মনের অবঙ্গা তিনি ছাড়া কে আর অধিক কাটেন ? ভোষাদের ভতি স্নেছ ও দলা ভাষার মত আর কাছার আছে ? তিনি তোমাদিগাক ধেমন রক্ষা করেন তেমন আর কে ক্রিবে ? অত এব ভাঁহার মঙ্গলভাবের প্রাক্তি পূর্ণ বি-शाम वार्षिश याद्या उ जानमाव क्यानि कारमाः তোমরা প্রাণপণে নেই কম্মের অনুষ্ঠান করিতে থাকিবে। ভাছার ক্ষপ ভিনি ভিশ এই ভয়াকীৰ युक्त करण विश्वान करिट्युन ।

ড়ের পালার লইতে পার; রোগে, শোকে, দারিজ্য ভূটবে নিশভিত হইলে ভাহার নিকট জ্বন্দন করিতে পার; পালে, ভাগে অর্জনিত ইইয়া সত্ত চিতে তাহার প্রসাদ-বারি ভিকা করিতে পার; কিন্তু এই ভয় তুংখাকে অতিক্রম করিয়া পাপ তাপ হইতে निकृष्टि পाইशा यथन ठाँदात रेज्यात ज्ञासन ভোষাদের ইচ্ছাকে নিয়োগ করিতে পা-রিবে, ধ্বন ভোমাদের হৃদত্য হইতে দকল প্রার্থনা পিয়া এই একটি প্রার্থনা তাঁধার দিংহাসনাভিম্থে উত্তিত জাবে যে, হে ঈশর। তোমার ইচ্ছা দল্পার হউক, অগ-তের মঙ্গল হউক, তথনি অমুঠিছ তোমীদেব হস্তগত হইতে, ভীবন্মুক্তি লাভ করিলে। যথনি ভোষর। আপন আপন-মনের স্কুক্ত**্** অপদারিত করিতে এবং হৃদয়ের কঠিন গ্রান্ত-দক্ষ ভাঙ্গিয়া ফেলিতে তণনি সেই মহতো মহীয়ান সৌন্দর্যা-সাগরে ভোগাদের **এম মগ্ন** হইয়া যাইবে, লোক লোকান্তরে অনন্ত লোকে সেই প্রেম্বর্ধা (छ। शादमब फेलकी विका इहेटव अवर छ। हात বলে বলীয়াৰ হইয়া সেই প্রেমদাতার সহচর অবুচর হইয়া পাকিবে।

8>। "বিশ্বনি দার্থিইস্ত মনঃপ্রথহসারসঃ দোহকানঃ পারম'প্রোতি তহিফোঃ প্রথং প্রথ

বিজ্ঞান যাহার সার্থী, মন যাহার নশীভূত, সে সংসার-পথের পার সেই বিক্র পরম পদকে প্রাপ্ত হয়। তদিকোঃ প্রমাণ্ড পদং পদা পশান্তি সূর্য়ঃ দিবীব চক্ষ্রাতভাগী সেই বিশ্ব পরম পদকে জ্ঞানীর। বিব্যাহ সেইবিশ্ব পরম পদকে জ্ঞানীর। বিব্যাহ সেইবিশ্ব ব্যস্ত্র আকাশে বিস্তৃত বস্তু

কেই আজাই কুডাজা, নেই আজাই ভাষাবাদ, বে নাচম্ভ চন্তের ন্যায় বি-ম্পাপ ও শইজা হইয়া, শরীবের অভিনাম ্রমাজাত্ত অবস্থিত

विकारमाक्टन पर्क (डाइन कारकरू कारि पर्नातिक मीखि भार कार्य एक के निकरे পারে তরদময় সংসার ও পাকেলাটিত হয় কৈটি একাক, মধ্যে ক্লয়ং ঈশ্বর দেতৃস্যতে পাকে 🕥 উভৱের স্থাদা রকা করিতেছেন প্রশান্ত ভগ্ন সেতৃকে লজ্যন করিয়া জন্মনোকে উদ্পাহইয়া🏅 **रुरेट**७ मा भारत दिन ताजि – नः भारत औ। মৃত্যু শোক—না স্কুত ব; চক্কত : সকল কৌৰ্ প্রকার পাপ এশান হইতে প্রতিনিয়ন্ত হয়। নিষ্ঠাপ এফলেকে পাপের পরাক্রন নাই। মূজ বাজা সংসারের পাপ-তাপ সম্মানে াপিয়া দংসারপার ত্রন্ধালোকে উট্টার্ন হন 🖟 रमथारन अन्न रा रम जनक धरा, भागविह्य মে সে অপাপবিদ্ধ হয়, উপতাপী যে দে অনুপ্তাপী, হয়। দেখানে রাত্তিও দিন হটঃ। যায়, যেহেৰুক ন্তৰ্নালোক প্রকাশ--সে প্রকাশের অন্ত নাই।

"সংলক্ষিণিতরেষাং কোকানালনাজনাম। নৈনং নেত্মধোরাতে ভরতঃ ন জরা ন নৃত্যুন্নোকো ন জ্ করঃ ন ভ্রুজং। সংকা পাপ্যানোহতো নিবলাও অপ-হতপাপ্যাহোষ একলোকঃ শুভনাধা এতং সেতুং নীত্র ক্ষাং প্রনকোজনতি বিদ্ধা নামবিলোভনতি উপভাপী সমস্পালাণী ভবতি। তথালা এতং সেতুং তীর্ষণিধ নক্ষমহারবাভিনিশাদাতে। স্কৃষ্ণিতাহোটন্য বন্ধ-শোকঃ ।"

ত্রাক্ষণক্রের পূর্ব্ব পূর্বর উপদেশ-দকল
অনুসরণ করিয়া তোমাদিগকে আমার এই
শেষ কথা উপহার দিলান। তোমরা ইহা
ভাবনে পরিণত কর এবং অক্ষয় মুক্তি লাভ
কর এই আমার প্রার্থনা।

ৰ শান্তিঃ শান্তিঃ শান্তিঃ হরিঃ ।

ক্ষমিদ্ধৰ্মে দীকাণী এক বাগকের উপৰ গর্ম ও ক্ষমিকাশ বিষয়ক প্রোপ্তর উত্তর।

जेश्र ।

পরনেশ্বর আমানের আলার অন্তর্তম ইইনেও-আমানের না না গল্পভাবশতঃ তাঁ-হাকে দেখিতে গাই না । এখন তাঁহাকে ইন্ধিতে পাই না বলিয়া আমবা চট্ করিয়া সিদ্ধান্ত করিয়া বাস যে তিনি নাই ইহা গামানের ভারি ভ্রম। আমানের এই ভ্রম দেখিলেই জগতের প্রত্যেক বস্তু যেন আনা দের উপহাস করিয়া উঠে— ফুল জনন

ন্দির্গি করে—থোর বিরোধা হইয়া দাঁড়ায়।
নাগল্পী কারিবানে এত হোলাজিত। এক সৌল
দের মনে, বর্তুমান অর্থচ ভাহার মূলে এক মধ্যর
একতা আছে দেখিতে পাই। ইহাতে আমাতের মূলে একতাইজ্পতের মূলে যে এক মহান
একতা সাপেক। খুভাহা জাগিয়া উঠে। জগ
ভাষা হালে একতা আছি—পূর্ণ। জনেকতা
ভাহা হইলে জগত বিশুজার দি জনেকতা থাকিত
হইগা যাইত; বৈচিত্রা সৌল্প বিদ্যমান না রহিত
লোপ পাইত—বিশ্বুই রহিত না। হইগা ছারখার

रैकांठ्या स्नीनका (यथात्नरे जाह्य अस्कवादा थात्नरे अंक्छात्र निष्ट्य;—वः छित्तरक वि ত্তা দোশৰা ক্লাপি তিষ্ঠিতে পারে নাছে দে-*এই বৈচিত্ৰা সৌন্দৰ্যোৱ আধার একড় ই নেই ্জানস্কপ ্রেস্করণ এবনেবাদিতীয়ং। তিনি আমাদের হৃদয়-রাজ্যের একমান্ত রাজা। শতিনা আছেন বলিয়াই আমরা আছি। তিনি ছয়ং সতন্ত্র, ষাধীন,মুক্তমভাব পূর্ণ পুরুষ, এই হেড় তিনি আমাদিগকেও স্বাধীন কারহা স্বাস্টি করিয়া ছেন ও ক্রমাণত অপূর্ণাবছা হইতে পূর্বভার দিকে লইয়া যাইতেছেন। ভাঁহার সহিত जामा निरंशन একবশামাত্র वादवान नाहै।

देवियोज दनवे 👫 🔭 विवासित चौता शिक्षतीन जन द**र्शने** शक्ता कारण श्रीप्रिक टम 🗱 : हाई कर्टन : विनेष्ट देखा करें निक ৰ ছেই পুনৰ্কীৰ পতিত ইৰ কেইবুল আৰু ব जारी रहेट उहा उरेंग अवादन लाहि शाहित जामदा जिल्ला १८१८में छती कुछ इहेर में পুরুরায় খালাদিনের ভাভার দাফত দাক্ষ্ **े चिम् । १रेट्रा । इस्म**् क्यून्टमा के मु**रस**् নিলা একটা বৃহত্বপাত্র হইতে হায়ু শোষৰ কুৰিয়া যদি ভাষাত্ৰ অভ্যন্তৰে একটা বায় श्चर्य निर्मित्र वार्यनः क्षेत्रं कार्यः करेरमः विश्वः। दिसहै निनियमाद यात् भारक विद्याहित एवं सिहे-জিকু**্ৰেড্** শিৰিৱাপ বাধা ভগ্ন ভূৰ বা ভাকিয়া **বিশ্বিবার সহিত মিলিত** 💖 🥫 মর্যারে : 🔞 গোর क्रम जागारमंत्र जान्या (गाइन म्या) श्रीमंडे मधका প্রধান্ত্র নিনিও চটতে যে কেন্ কর্ম করি মুক্তিক প্রামানিক কর্মটেরে কন্ত প্রামাকিক, দেখি i হে দিকে গৰন করিপ্রাস আবোধণ কবি কিবা मक्तमरकंदे केंद्रावश्वान न करे एकन आमादनत १८० नक्ति। इत्रों गर्भ जात्वत चेमा इत्र छ मह्मज्यो हन्ह र अधून भानतमा छेनस हम ননে যে কোল কালৰ ডিমিনি সেই মধান পুৰুদের ভক্তাভি ব স্থানালের অন্তরে নিহিত ক্রেছে বলি-शाहित्य कारनत मार ११३, उद माहा अन्-मौत मामक्रमा कार्। । एति लाहे यायहा উচ্ছাসত হইলা পড়ি৷ প্রাকৃতির মহছুম হইতে স্থতন বিষয় প্ৰান্ত প্ৰান্তনাট্ৰী করিলে ভাষার সভার অনুপদক্ষি বিভূতেই इत ना. रक्वल हेशहे बरन थाइरम-"बद्दा में त्वरता कांगर्कि **करकाश्री एउडेरक क्**षर । क्रः अभिक्ति बाजासा उना गर्कः अवीवास ४" ং হেড় সেই পারমবেশ জাগরিত রহি-

थ। हिन् (म**रे अप्रकार** हिन्दी ने संस्थि। ए

वाकि हिल्ला कार्य वाकि हिल्ला कार्य वाकि हिल्ला कार्य करता विद्याल कार्य करता विद्याल कार्य कार्य कार्य कार्य क्रिक काल्य कार्य केर्य क्रिक काल्य कार्य कार्य क्रिक का कार्य कार्य

ধর্ম ।

মহান অন্ত গুরুষকে লাভের জন।
আমর। হাল্য-লাজে যে নিমানের প্রতিষ্ঠা করি
সংক্রেপতা ভাছাই ধর্ম। সে নির্দের হত
ভিংকর্ম সামিত হইবে আন গর্কেরও মাধুর্ম।
আমাদের অমুভূত হইবা নামিয়া চম্বিত
হইবা তথন একাকা নহি—এই কথাল
টাই আমাদের প্রাবে োভিধ্বনিত ছাইছে

ধর্ণাই মনুবোর শ্রেষ্ঠ বিজ্ঞান। এই বিজ্ঞান হাঁহার **স্বাহত উন্তার কথনই ছিলে** জুল হয় না। গর্ক স্বহর্তাই হার্টে কর্ম করিতে পাবে না, তিনি স্বল্পাইট ভাই ভাই—নিকট্য দেখিকে পান্ত্র কারণ করি অহলার বড় তিকে ড্লা বি অনেক দুরে

মনুষা স্বয়ং অনা মনুষা হইন অনেক দুরে

অবহিতি করে, দেই দূর হয় ত দৃষ্টি করাতে

অপর মনুষাদিপকে তাহার তি কল বলিয়া
বোধ হয়; কিন্তু আশ্চয়া কেনা তাহাকেও

আপরদো নিকটে অতি কুলা দেশা। সে

আনে ধন্মের সহ প্রভাব নের বানে কিনা
ভাগের প্রভাব নাই হয়। কর্মা
ভাগের প্রভাব কিনা
ভাগের ক্রামান ক্রামানের নার

আইবার ইচ্ছা হয়—বিবাগিন্দ্র প্রভাব বির্বাগিন ক্রামান ক্

शरकान :

নহাম নাম — তই সর্ভান ইটু ছাত্।
আর সকলি কতিকাল। তই মুকুট সমটো
সোলিছিল আছি কাইল পাই আনেল ধলই
কা চন্ত্ৰ ইজা প্ৰিৰ জন্তই হল মাদিলের প্
কাৰণাৰ হইকে কাৰকাল জাতজ্ঞ কৰিবা
আইতে হুইবে। জনতই ভালিজ্য কাৰ্য্য প্রতিত হুইবে। জনতই ভালিজ্য কাৰ্য্য প্রতিত হুইব। জনতই ভালিজ্য কাৰ্য্য প্রতিত হুইব। জনতই ভালিজ্য কার্য্য প্রতিত হুইব। ইতিকামাণ হুইলা বাইলে ভ
ক্ষিত্রক ভিয়েকার্য সাধ্যাপে গুল্লাহ ন্দ্র
আজার ধারণ করিব।

কৃদিকের উন্নতি যেমন আক্রকার উন্নতিকে অপেকা করে; পরকালের উন্নতিও দেইরূপ ইহকালের উন্নতিকে অপেকা বরে।
এত এব ইহকালের উপর আনাদের ভালিন্দ্র কৃষ্টি রাথিকা চলিলে প্রকালের বিষয় ভাবিতে হইবে না। ইহকালে আনরা সরল মানুষের মত যদি থাকি পরকালে আনরা

ছिल।

অহন্তার বড় টিকে ভূল ই বনেক দুরে বাহার। ইংকারকে শর্কা করে ভারাই বিবিধিক পরকালকে শ্রন্থ করে।

बि हि, ना, ठैं।

সংশয়বাদের পরিণাম।

खास काल मना खनाएक मरमहानाहरू জীবীঘ দেখিলা **অনে**কে নিল্য হইকে-(छ्न---भातिराक्ट्रास स्थानशहास भाव । ८५१३ ন্যান্তিকতা আফিল। বেলাকের জনসংক ভাষি-ার কবি**বে।** কিন্তু শন্ব-লাদ্য নান্তিকতার বিবেশা—নাতিকভার ধহিত ত'হার টিং অব্ভিতি অস্থান । পর্ত্যান দংশয়বাদ পর্ন অগতিকভাৱ- পূৰ্ ইবা-ভোষকভায় পাত-শ্ম চহতে, ইহা আনাদিশের স্থির বিশাদ। प्राप्त कारणव मध्यत्वाम वर्णमान भडा मान्य क्लीत निरम्धनम् क्रान स्कर्णन লাভের জ্যা ক্যালেম্ক অভাবিক প্রবল ্দ্রা ক্রিয়াজ বাহা সংখ্যারটা পৰ ৰস্তান্ত ক্ৰিবৰ্লেল্ডো আছ্ৰু-পত্ৰতার। शिवाहतः क कु श्रमार । जार । भगा छ । स्त्राप् কৈটিতে চাহেন, তাল 🗀 😅 পারেন না বলৈলা ভাঁহার। উপত গ্রাবল্লাকক জ তেবে মাল্লক নামতে নামের ক্রেন। প্রা क भतना वादक इर ।ता विषय ५०० वहिल्य । বিষয় কৰিছেও তাতেম্য এবং তাত্ত লাভাত পারিতে ইহাঁবা সে অ.ড উত্ত । প্রবীর ভড়। **इहेट**७ भवित्सम् ए अतः भवनः ५११। **উপর ও পরকালকে ক**খন ভৌতিক জিলাল (नन अहीन कवा धार्श्यक ना वहने, दिन्ह ভোতিক বিজ্ঞানের শাম্বই এতদুর উপ্রতি ১৮১ वात्र (विश्व ८५%) शहेद उद्ध 🐠 🐧 🔊 😁 প্রিক জগতের উপ্লভা ও 🎉 সহিত আধাজিক উপ্লি 🕶 লেশকর কিন্দিন 👸

নি প্ৰথাৰ প্ৰতিষ্ঠিত লৈ প্ৰতিষ্ঠিত বিশ্ব কৰিছে লগত প্ৰথাৰ প্ৰথা প্ৰথাৰ প্ৰথা প্ৰথাৰ প্ৰথা প্ৰথাৰ প্ৰথা প্ৰথাৰ প্যাম প্ৰথাৰ প্ৰ

भश्काका

(明年 色年 11年12年 4日

े रहे हिन्द भिष्टा रहा है है। इस सार के कर देखा है। के स्वार के स्वर देखा है कि स्वर है। इस साम है। के स्वर क

1 3 4 1

्रिमः भार्ष ब्रिट्सं भारत्व प्रश्ना । यह काइतः व्याचात्रः वामित्रांत कालां । स्वव सार्यः । वि । वाद्यः व्याचात्रः भारत्वः व्याचात्रः भारत्वः व्याचात्रः भारत्वः व्याचात्रः व्या

क्षित्रीकार कुन वर्कीक भारता (उस, स्ट्राह्म स्वाह स्वकृत कि. हि. इतिह्यू (कानवा) क्ष्मातीक त्रीनम स्वाह व्यक्त (के. हि. १०० है. मार्गाहा गाड़िया देश त्रीवया ज्याको के.क इतिहास स्वाहतीक राजा क्षित्रा स्वीहरूक

राक्ष्यक स्थाप क्षा अक्षा अस्त नियम् अस्त अस्त ।

कारणा कर है। साहा कि कामाना

ক্ষিত্ৰ (৩৫) ক্ষিত্ৰ প্ৰতিষ্ঠানি ক্ষিত্ৰ ক্ষ্ম ব্যক্তি উপত্ত ক্ষিত্ৰকৈ চৌচ প্ৰতিদ

्मार्थः, शाधः, क्योनेसिकाना याध्येतः आस्पाकतः जन्तः । ा केयम सिर्वासम्बद्धान्य स्थान

নিবাকৰ থাকি নিজম ও নি**স্তৰ্যমন্ত্ৰ প্ৰেন**ত চকতি নিবোৰ জনা নিবিস **আ**ৰেছা।

আগোন ব্যালাকে ভয় করিছেন বিদা কন।
আগোন আগ্রালা লওকজা ও জ. ব্যাকালী হতু।
(১৯)

ভাষি ও বংলা**ণ পথ কোন মতে**ত পাৰ্<mark>ভাঞ্না</mark> কৰাৰ নামত হিন্

(80)

ি আনাচিন্তন চিক্তার উপর আনাদিশের জন থেবক ডিপ্রদিন্দির কাই পান্তার । নাজার যে ১৯৮ প্রেবল, অফার ডিও, তেল্পবালী হলতে দেখা বাস। চিন্তার উপন্যান্ত গ্রেলার সমা কর্মান্তা প্রিট্ড হল্যান

(60)

জীরেলে থাক। বলৈ ও তারা জুমাত মান্ত, কা এইর দি ক্রিটার, কিন্ত এটা এ**ডগুর মন্ত্রকার্ড রা**ফলপ্রের কর্ন। বলা তাহা করিছে কাল ক্রিবে না ফ্রি

্ (৪২)

স্কল শত্তার প্রিত সভাবততে আন্দর ২৬,
কিছ ভার্টিটোর পালেক স্কলি চিন্তুলকতা নিয়ক